अद्भुत सृष्टि चरित्र

अर्थात्

अजायबुल्मख़्लूक़ात

का नागरी उल्था

जिसमें

पृथ्वी पर जितने अपूर्व वृक्ष व पशु पक्षी जीव जन्तु
हैं उन सबका वृत्तान्त और आकाशके ग्रहोंका
भी वर्णन चित्रोंसहित वर्णित है

जोकि

मुन्शी नवलकिशोर मालिक मतबाकी आज्ञानुसारफ़ारसी
से उर्दूमें तर्जुमा किया गया उसीको उक्त मुन्शीसाहब
की अनुमति से उर्दूसे जीवारामजाट ने हिन्दीमें
प्रारम्भ किया और पण्डित प्यारेलाल
बैकुण्ठनिवासीने पूराकिया

पहिली बार

सम्पूर्णविद्याभिलाषियों के अनुरागार्थ

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के छापेख़ाने में छापागया
अगस्त सन् १८८६ ई०

अजायबुलमख़्लूक़ातकी तसवीरोंका सूचीपत्र ॥

नम्बरशुमारमुसलसल किताबफ़ारसीकृत	हिन्दुस्तानसफ़ा	नम्बरकिताबहिंदी	बयान
३२१	४६५	२७७	खंजीरअर्थात्सुवरका वर्णन ॥
३२२	४६६	२७८	दब अर्थात् रीछका वर्णन ॥
३२३	४६७	२७९	दिलक़ अर्थात् जंगली बिल्ली का वर्णन ॥
३२४	४६६	२८०	ज़ैबअर्थात्भेड़ियाकावर्णन ॥
३२५	५००	२८१	सनाद अर्थात् हाथीके सदृश जीवका वर्णन ॥
३२६	५००	२८२	संजाब अर्थात् चूहेके सदृश जीवका वर्णन ॥
३२७	५०१	२८३	सनूर अर्थात् बिल्लीकावर्णन ॥
३२८	५०२	२८४	सनोवहल अलबर अर्थात् जंगली बिल्ली का वर्णन ॥
३२९	५०२	२८५	शेरास नाम जीवका वर्णन ॥
३३०	५०२	२८६	शादावारनामजीवकावर्णन ॥
३३१	५०४	२८७	ज़बह अर्थात् हुंडार जीवका वर्णन ॥
३३२	५०४	२८८	उनाक़ अर्थात् सियाहगोशका वर्णन ॥
३३३	५०४	२८९	अतरह नाम पशुका वर्णन ॥
३३४	५०५	२९०	फला नाम पशु का वर्णन ॥
३३५	५०५	२९१	फहद अर्थात् चीताकावर्णन ॥
३३६	५०७	२९२	हाथीका वर्णन ॥
३३७	५०८	२९३	क़रद अर्थात् लंगूरका वर्णन ॥
३३८	५१०	२९४	करगदन अर्थात् गैंड़े का वर्णन ॥
३३९	५१३	२९५	कलब अर्थात् कुत्तेका वर्णन ॥
३४०	५१३	२९६	निमरअर्थात्तेंदुआकावर्णन ॥
३४१	५१४	२९७	यामूरनाम जंगली जानवरका वर्णन ॥
३४२	५१५	२९८	अबूबराक़श अर्थात् बोकलमूं नाम पक्षीका वर्णन ॥
३४३	५१५	२९९	अबूहरखननामपक्षीकावर्णन ॥
३४४	५१६	३००	अवज़ अर्थात्बतख़काकावर्णन ॥
३४५	५१७	३०१	बाज पक्षीका वर्णन ॥
३४६	५१७	३०२	बाशक अर्थात् बाशा पक्षीका वर्णन ॥
३४७	५१७	३०३	बबग़ाअर्थात्तोताकावर्णन ॥
३४८	५१८	३०४	बुलबुलका वर्णन ॥
३४९	५१९	३०५	बूम जानवरका वर्णन ॥
३५०	५१९	३०६	तदर्ज अर्थात् चकोर पक्षीका वर्णन ॥
३५१	५१९	३०७	तानूत नाम पक्षीका वर्णन ॥
३५२	५२०	३०८	ख़ास तुलअबई नाम पक्षीका वर्णन ॥
३५३	५२०	३०९	हुबारीनाम पक्षीका वर्णन ॥
३५४	५२१	३१०	हदात अर्थात् चील पक्षी का वर्णन ॥
३५५	५२३	३११	हमामा अर्थात् कबूतर पक्षी का वर्णन ॥
३५६	५२४	३१२	ख़ताफ़ अर्थात् अबाबील पक्षी का वर्णन ॥
३५७	५२५	३१३	ख़ंफ़ास अर्थात् चमगादरपक्षी का वर्णन ॥
३५८	५२५	३१४	दुज़ाज अर्थात् तीतर का वर्णन ॥
३५९	५२७	३१५	दीक अर्थात् मुर्गा का वर्णन ॥
३६०	५२८	३१६	दजाज अर्थात् मुर्गी का वर्णन ॥
३६१	५२८	३१७	रख़म अर्थात् करगस का वर्णन ॥
३६२	५२९	३१८	जाग़ अर्थात् कव्वा का वर्णन ॥
३६३	५३०	३१९	ज़र जोर अर्थात् सारपक्षी का वर्णन ॥

नम्बरशुमार मुसलसल किताबफ़ारसीकलां	हिन्दुसासफ़ा	नम्बरकिताबहिंदी	बयान
४४३	५८५	३९८	मनुष्य सदृश दो मुखवाले जीवों का वर्णन ॥
४४४	५८५	३९९	दो मुख और बहुत पैरवाले मनुष्य समान जीवों का वर्णन ॥
४४५	५८५	४००	शिर मनुष्य के और सब शरीर सर्पोंके समान जीवोंका वर्णन ॥
४४६	५८५	४०१	मुंह और आंखें हृदय पर ऐसे जीवोंका वर्णन ॥
४४७	५८५	४०२	आधा शिर एक हाथ एकपैर वाले नसनास नामक जाति के मनुष्यों का वर्णन ॥
४४८	५८५	४०३	मुख मनुष्य के सदृश और पीठ कछुवे की तरह के जीवों का वर्णन ॥
४४९	५८५	४०४	ज़राफ़े अर्थात् ऊंटके सदृश जीवका वर्णन ॥
४५०	५८६	४०५	खच्चर का वर्णन ॥
४५१	५८६	४०६	ऊंट और ताज़ीघोड़े से उत्पन्न जीवोंका वर्णन ॥
४५२	५८६	४०७	मनुष्य और रीछके मैथुन से उत्पन्न जीवोंका वर्णन ॥
४५३	५८६	४०८	भेड़िये और हुंडारसे उत्पन्न जीवोंका वर्णन ॥
४५४	५८६	४०९	भेड़िये और कुत्तेके मैथुन से उत्पन्न जीवोंका वर्णन ॥
४५५	५८६	४१०	पालू और पहाड़ी कबूतरकी संगति से उत्पन्न जीवों का वर्णन ॥
४५६	५८७	४११	ऊकके पुत्र बड़े पराक्रमी ऊज का वर्णन ॥
४५७	५८८	४१२	अद्भुत बड़े डीलके समुद्र के बहेहुये मनुष्य का वर्णन ॥
४५८	५८८	४१३	पहाड़ी पन्द्रह वर्षकी उमर वाले बड़े बली नव गज के लंबे लड़केका वर्णन ॥
४५९	५८८	४१४	कमर से नीचे स्त्रीके सदृश और ऊपर का शरीर अलग दो शिर दो मुंह चार हाथ वाले जीवका वर्णन ॥
४६०	५८९	४१५	मुख मनुष्य का और सब अंग कव्वेकेसदृश जीवकावर्णन ॥
४६१	५८९	४१६	दो परवाली बिचित्र लोमड़ी का वर्णन ॥
४६२	५८९	४१७	एकस्त्री के पैदाहुये दो शिर वालेलड़के का वर्णन ॥
४६३	५९०	४१८	शिरपर एकसींग वाले बिचित्र घोड़े का वर्णन ॥

नोट—नम्बर किताबहिन्दी में कम्पोज करने में ग़लती हुईहै इसलिये नाजरीन नम्बरशुमार और हिन्दुसह सफ़हसे और जिस बयान पर वह तसवीर दर्ज है उसमे सिलसिलह नम्बर मुसल्सलका सह करलेंगे और इस तकलीफ़ को माफ़ करेंगे ॥

मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा २
तसवीर नं० १
तारामण्डल
शनिमण्डल
बृहस्पतिमण्डल
मङ्गलमण्डल
सूर्य्य मण्डल
शुक्रमण्डल
बुधमण्डल
चन्द्रमण्डल
अग्निमण्डल
वायु मण्डल
जलमण्डल
भूमण्डल
मध्यरेखा
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा ४
तसवीर नं० २
ऊँचाई
चन्द्र बिम्ब
बाहिरीकेन्द्र
पृथ्वीकाकेन्द्र
नि़चाई
सूर्य्य मण्डल
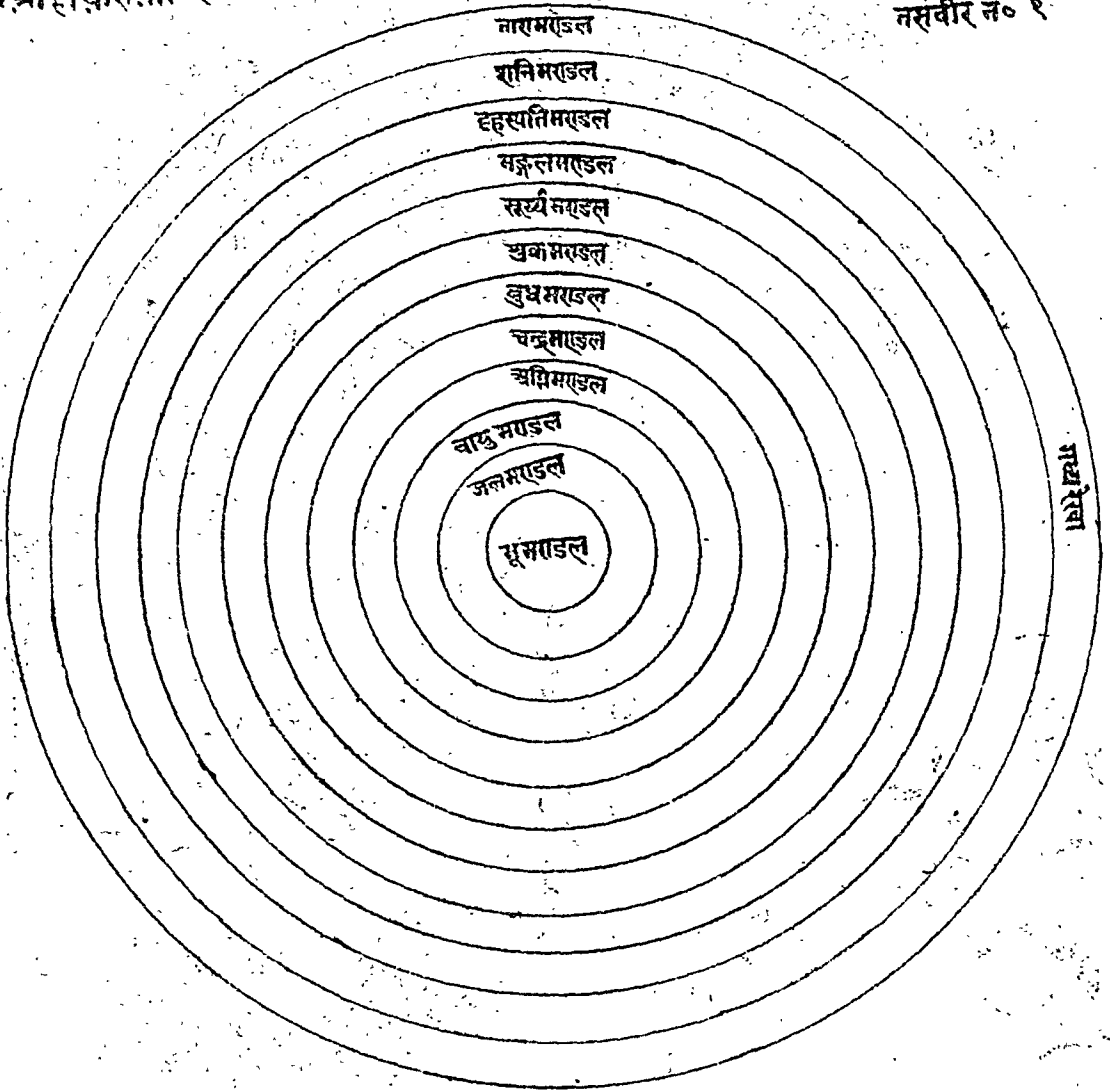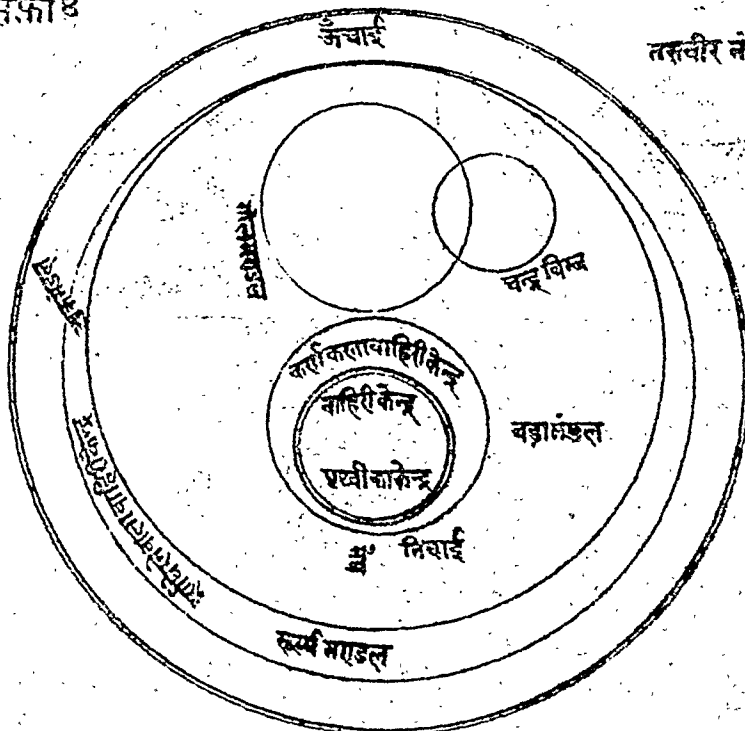
मुतअल्लिक़े सफ़ा ४
तसवीर नं० ३
तसवीर नं० ४
भूमंडल
मुतअल्लिक़े सफ़ा ५
तसवीर नं० ५
सूर्य मंडल
चन्द्रमंडल
मुतअल्लिक़े सफ़ा ६
तसवीर नं० ६
मुतअल्लिक़े सफ़ा १२

तसवीर नं० ७

मुतअल्लिके सफ़ा २२

तसवीर नं० ९

मुतअल्लिके सफ़ा २३
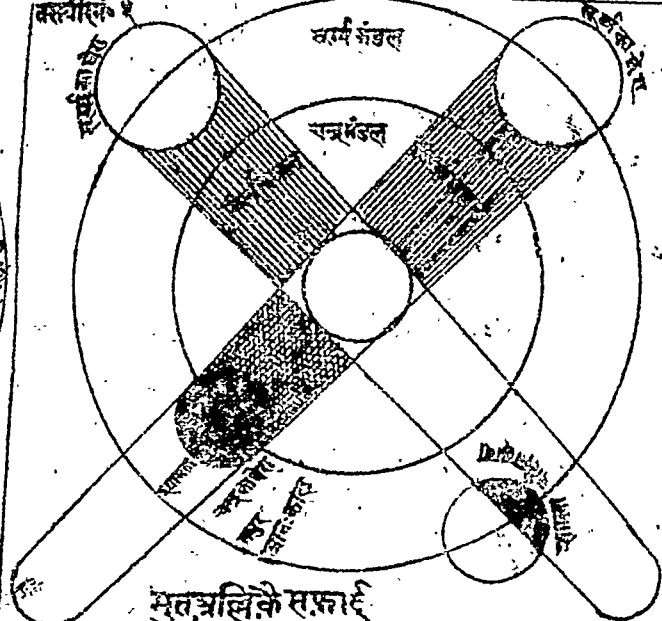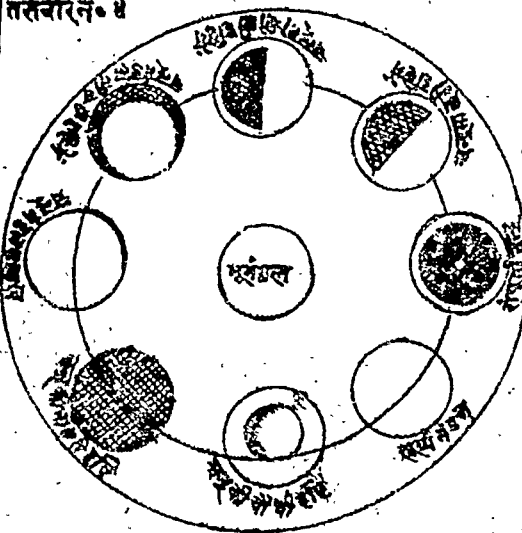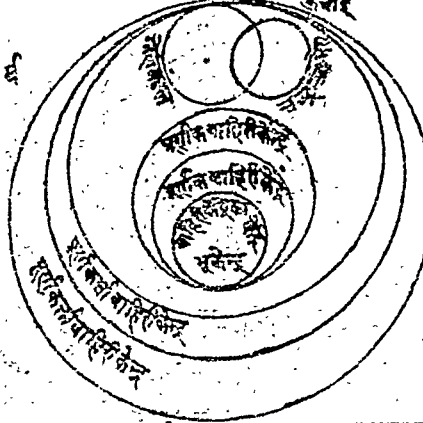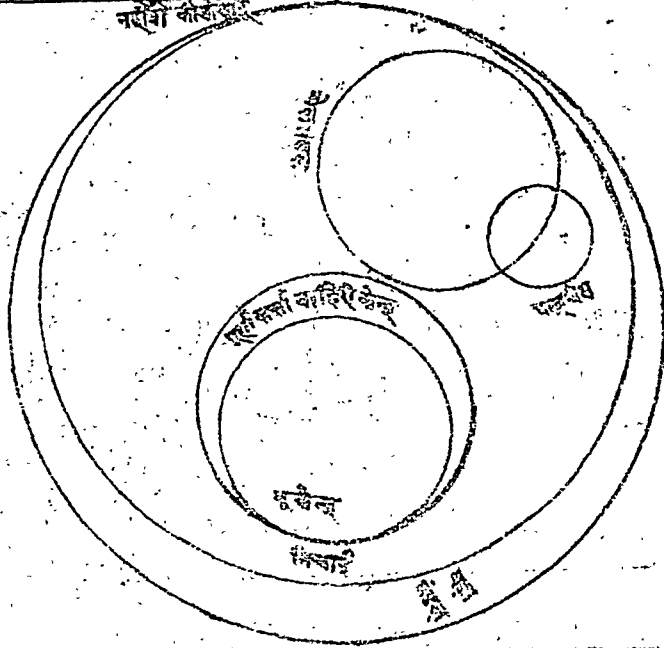
तसवीर नं० १७
मुतअल्लिके सफ़ा २३
तसवीर नं० १८
मुतअल्लिके सफ़ा २४
मुतअल्लिके सफ़ा २५
तसवीर नं० १९

तसवीर नं० २०
मुतअल्लिक़ सफ़ा २५
तसवीर नं० २१
मुतअल्लिक़े सफ़ा २६
तसवीर नं० २२
मुतअल्लिक़े सफ़ा २६
तसवीर नं० २३
मुतअल्लिक़े सफ़ा २६
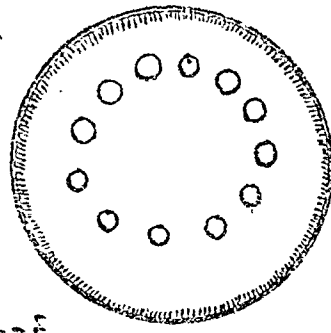
मुतअल्लिक़े सफ़ा २७
मुतअल्लिक़े सफ़ा २८
तसवीर नं० २८
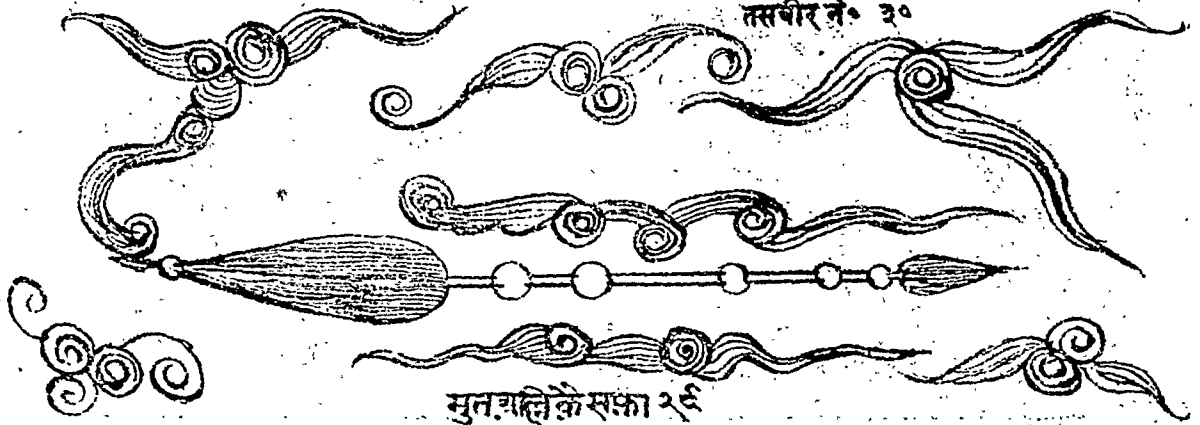
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २८
तसवीर नं० २९
तसवीर नं० ३०
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २९
तसवीर नं० ३१
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २९

मुतअल्लिके सफ़ा २९

तसवीर नं० ३२

मुतअल्लिके सफ़ा २८

तसवीर नं० ३३

मुतअल्लिके सफ़ा ३०

तसवीर नं० ३४

मुतअल्लिक़ सफ़ा ३०
तसवीर नं० ३५
मुतअल्लिक़ सफ़ा ३०
तसवीर नं० ३६
मुतअल्लिक़ सफ़ा ३२
तसवीर नं० ३७

तसवीर नं० ३८
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २१
तसवीर नं० ३९
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २२
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३२
तसवीर नं० ४०

तसवीर नं० ४३
मुतअल्लिके सफ़ा २३
तसवीर नं० ४४
मुतअल्लिके सफ़ा २३
मुतअल्लिक़े सफ़ा २७
तसवीर नं० ४५

तसवीर नं० ४६
मुतअल्लिके सफा ३६
तसवीर नं० ४७
मुतअल्लिके सफा
तसवीर नं० ४८
मुतअल्लिके सफा ३५
तसवीर नं० ४९
मुतअल्लिके सफा

मुतअल्लिक़ैसफ़ा ३५
तसवीर नं० ५०
तसवीर नं० ५१
मुतअल्लिक़ैसफ़ा ३६
मुतअल्लिक़ैसफ़ा ३७
तसवीर नं० ५२
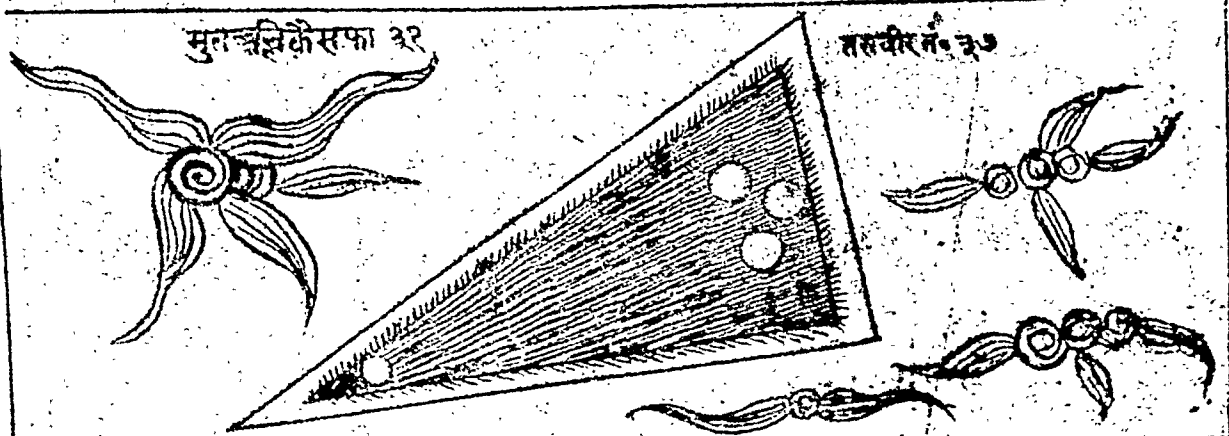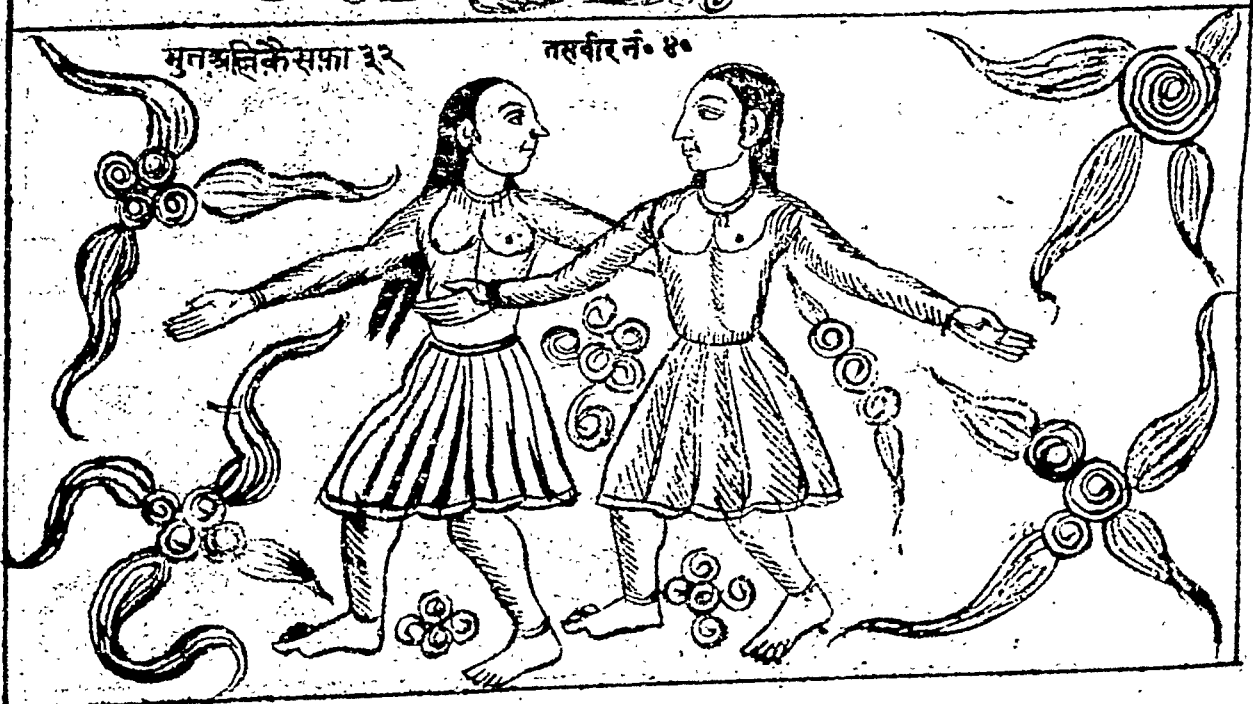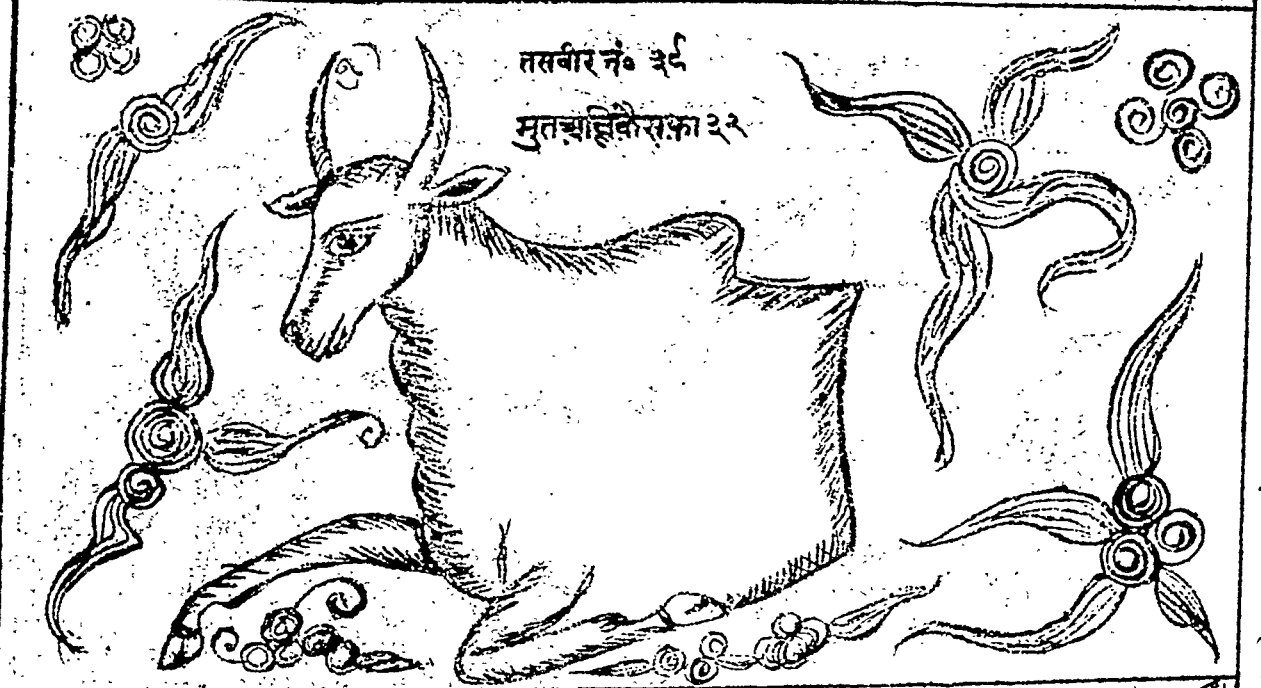
तसवीर नं० ५३
मुतअल्लिक़े सफ़ा २७
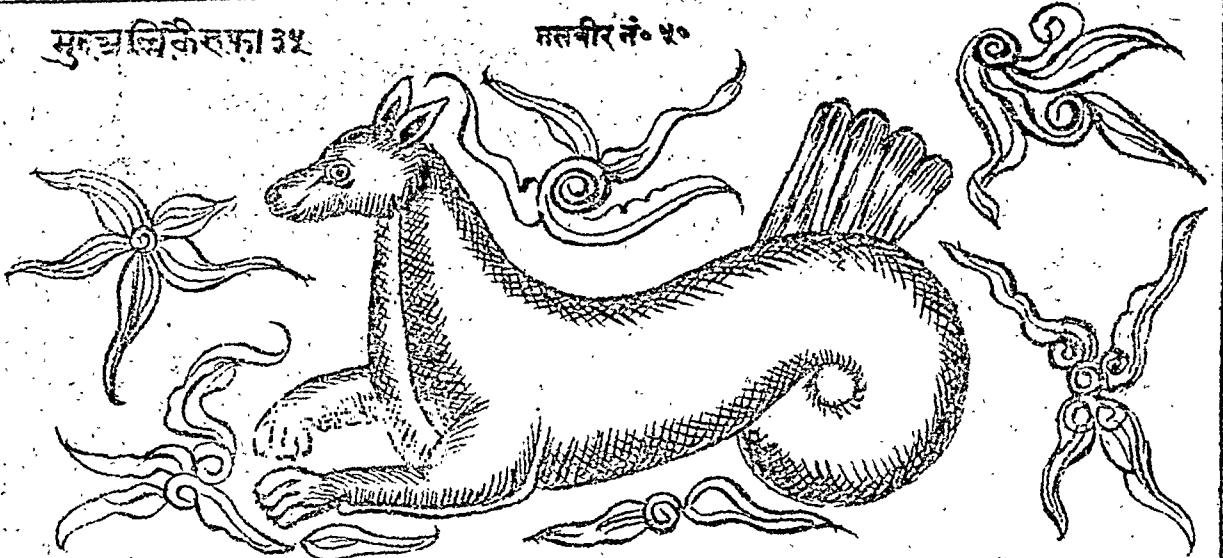
तसवीर नं० ५४
मुतअल्लिक़े सफ़ा २७
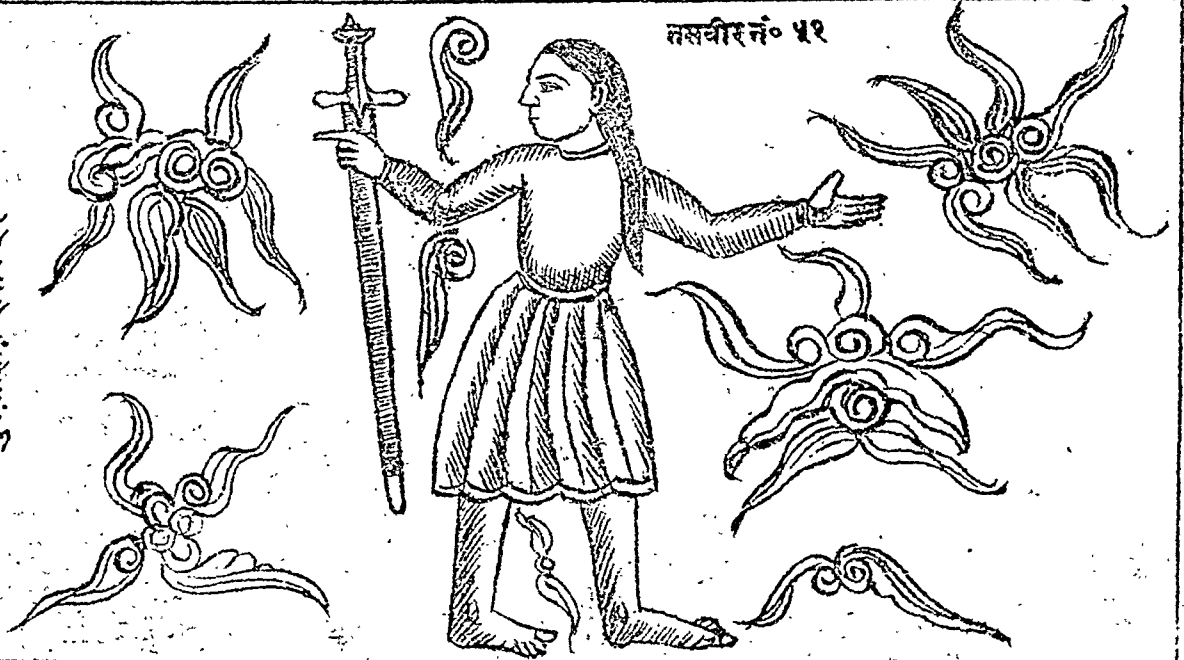
तसवीर नं० ५५
मुतअल्लिक़े सफ़ा २८

तसवीर नं० ५६
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३८
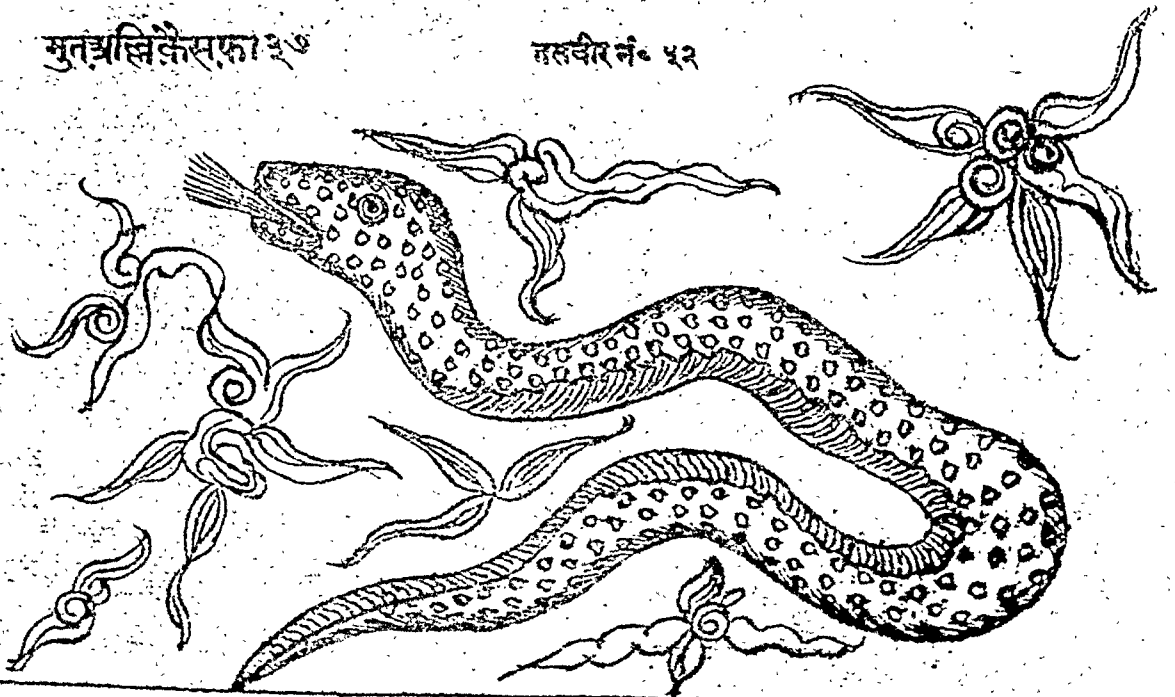
तसवीर नं० ५७
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३८
तसवीर नं० ५८
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३६
तसवीर नं० ५६
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३६

मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा ३९
तसवीर नं० ६०
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा ३९
तसवीर नं० ६१
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा ४०
तसवीर नं० ६२
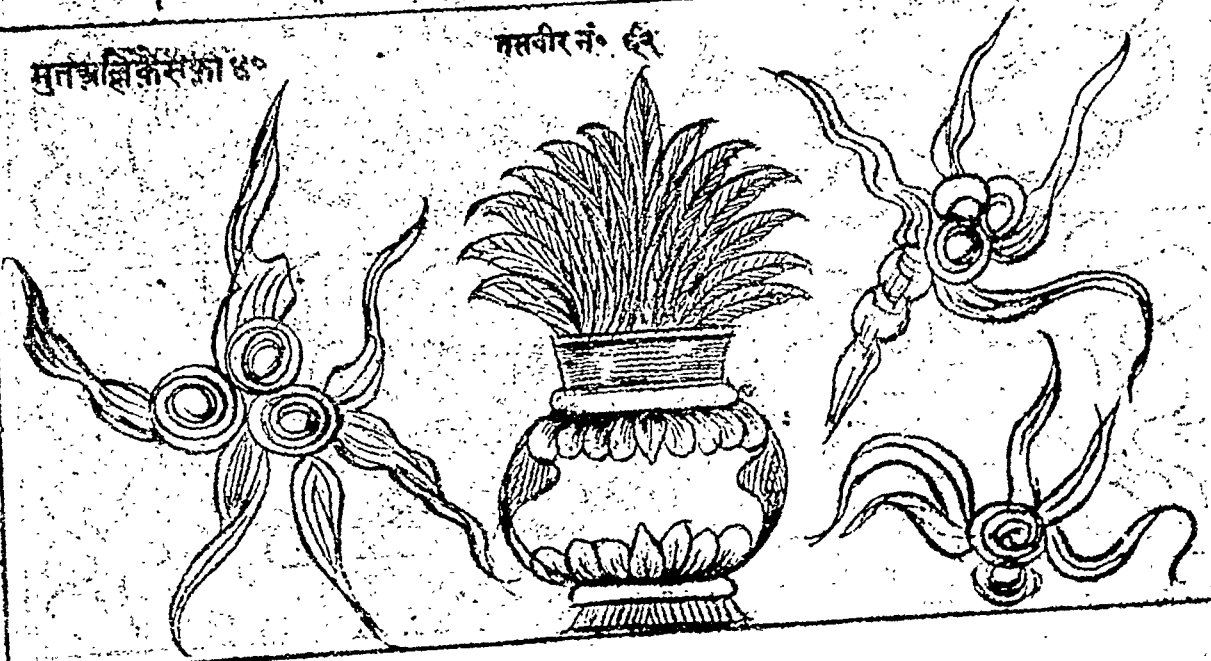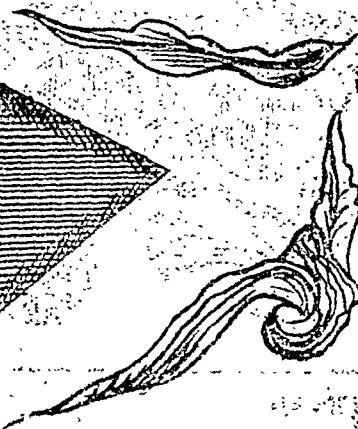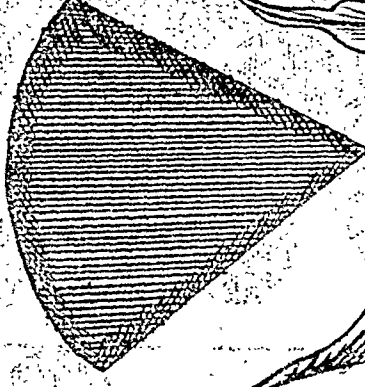
तसवीर नं० ६३
मुतअल्लिके सफ़ा ४०
तसवीर नं० ६४
मुतअल्लिके सफ़ा ४०
तसवीर नं० ६५
मुतअल्लिके सफ़ा ४१
तसवीर नं० ६६
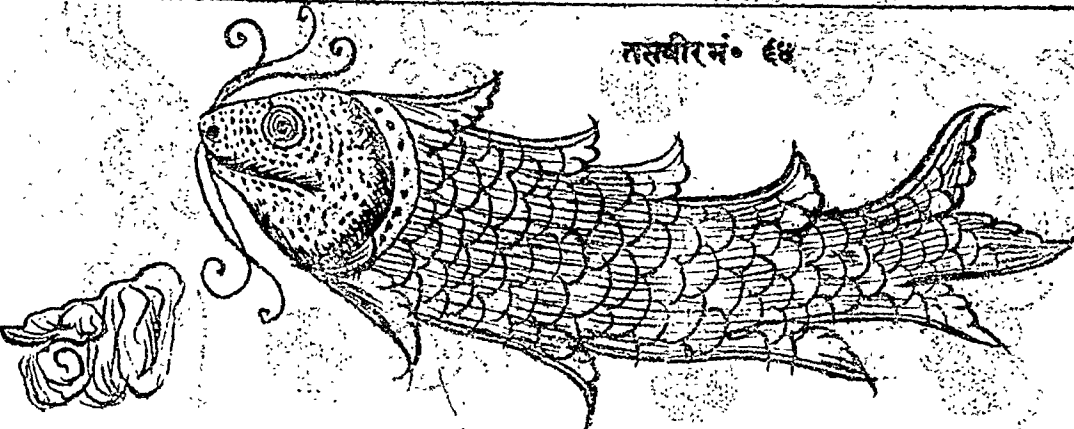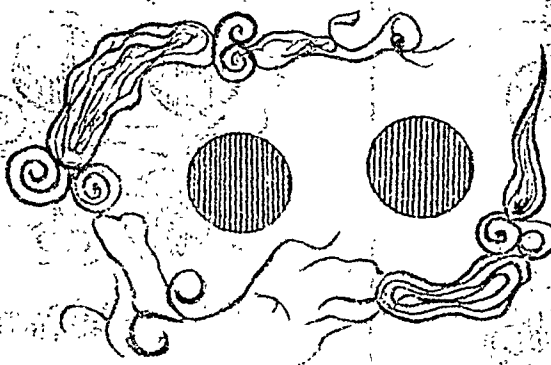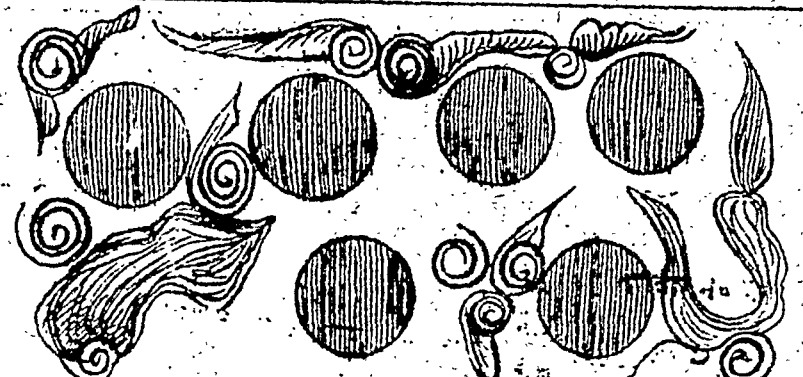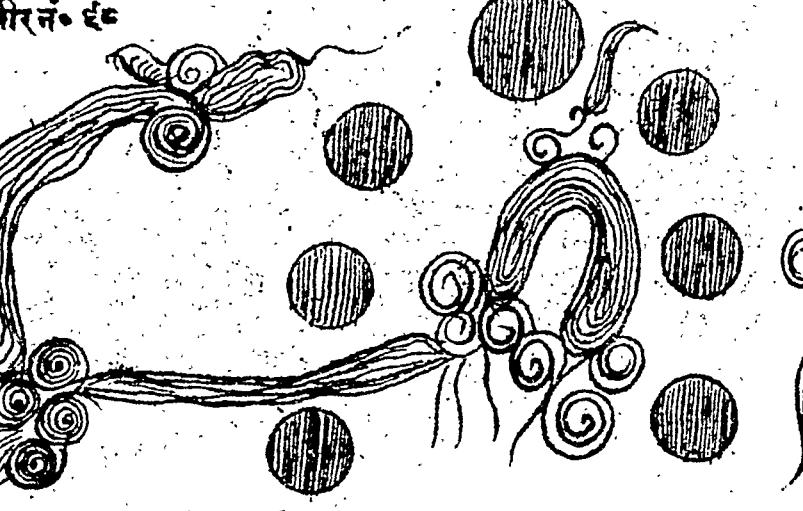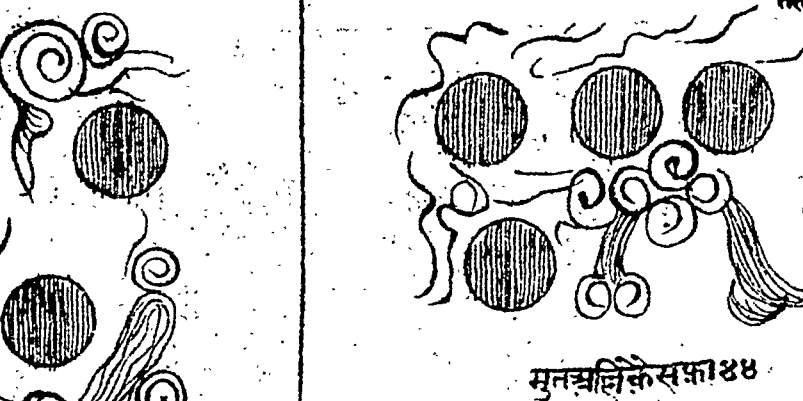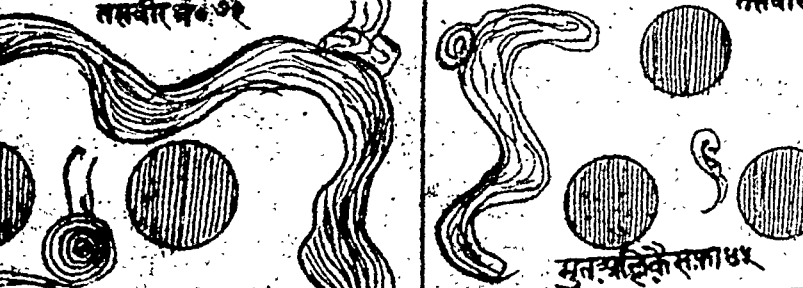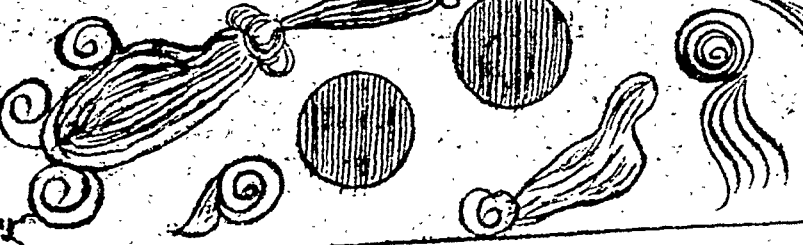
मुतअल्लिक़े सफ़ा ४६
मुतअल्लिक़े सफ़ा ४७
मुतअल्लिक़े सफ़ा ४८
मुतअल्लिक़े सफ़ा ५०

तसवीर नं० ८८
मुतअल्लिके सफ़ा ५३
तसवीर नं० ८९
मुतअल्लिके सफ़ा ५३
तसवीर नं० ९०
मुतअल्लिके सफ़ा ५३
तसवीर नं० ९१
मुतअल्लिके सफ़ा ५४

मुतअल्लिकेसफ़ा ५९

तसवीर नं० ६१

मुतअल्लिकेसफ़ा ६०

तसवीर नं० ६२

तस्वीर नम्बर ६४
तस्वीर नम्बर ६५
तस्वीर नम्बर ६६

तस्वीर नम्बर ६७
मुतअल्लिके सफ़ा ६३
मुतअल्लिके सफ़ा ६६
तस्वीर नम्बर ६८
तस्वीर नम्बर ६९
मुतअल्लिके सफ़ा ६६

मुतअल्लिक़े सफ़ा ६६
तसवीर नम्बर १००
मुतअल्लिक़े सफ़ा ६७
तसवीर नम्बर १०१
मुतअल्लिक़े सफ़ा ६७
तसवीर नम्बर १०२
तसवीर नम्बर १०३
मुतअल्लिक़े सफ़ा ६७

मुतअल्लिके सफ़ा ६७
मुतअल्लिके सफ़ा ६८
मुतअल्लिके सफ़ा ७२

तसवीर नम्बर १०७
फाल्गुन
चैत्र
माघ
ज्येष्ठ
शनि·
सोमवार
रविवार
मंगल
शुक्र
बुध
रवि·
तसवीर नम्बर १०८
तसवीर नम्बर १०९

मुतअल्लिके सफ़ा १२७

तसवीर नम्बर ११०

मुतअल्लिके सफ़ा १४८

तसवीर नम्बर १११

मुतअल्लिके सफ़ा १३२

तसवीर नम्बर ११२

मुतअल्लिके सफ़ा १३३

तसवीर नम्बर ११३

सताबिली

तसवीर नम्बर ११४

अजायबुल्लिकी सफ़ा २३३

तसवीर नम्बर ११५

अजायबुल्लिकी सफ़ा २३४

तसवीर नम्बर ११६

अजायबुल्लिकी सफ़ा २३७

तसवीर नम्बर
११७

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २३८
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २५४

तसवीर नम्बर १२८

मुतअल्लिके सफ़ा १५२

तसवीर नम्बर १२९

मुतअल्लिके सफ़ा १५३

तसवीर नम्बर १३१
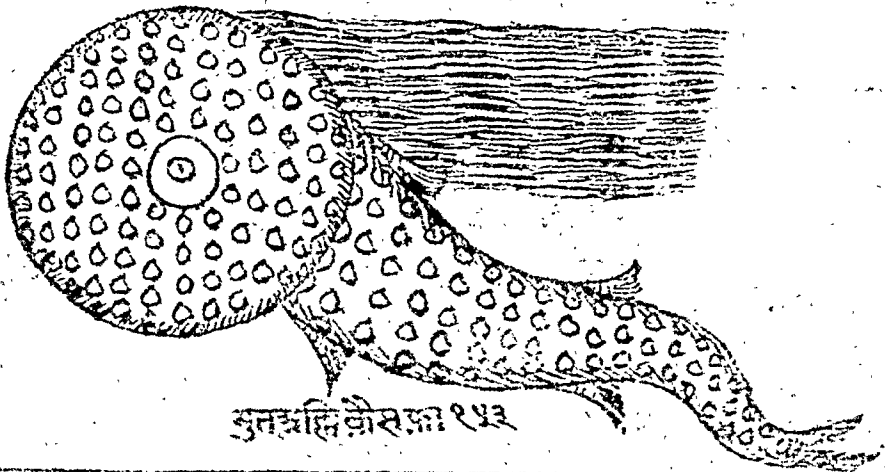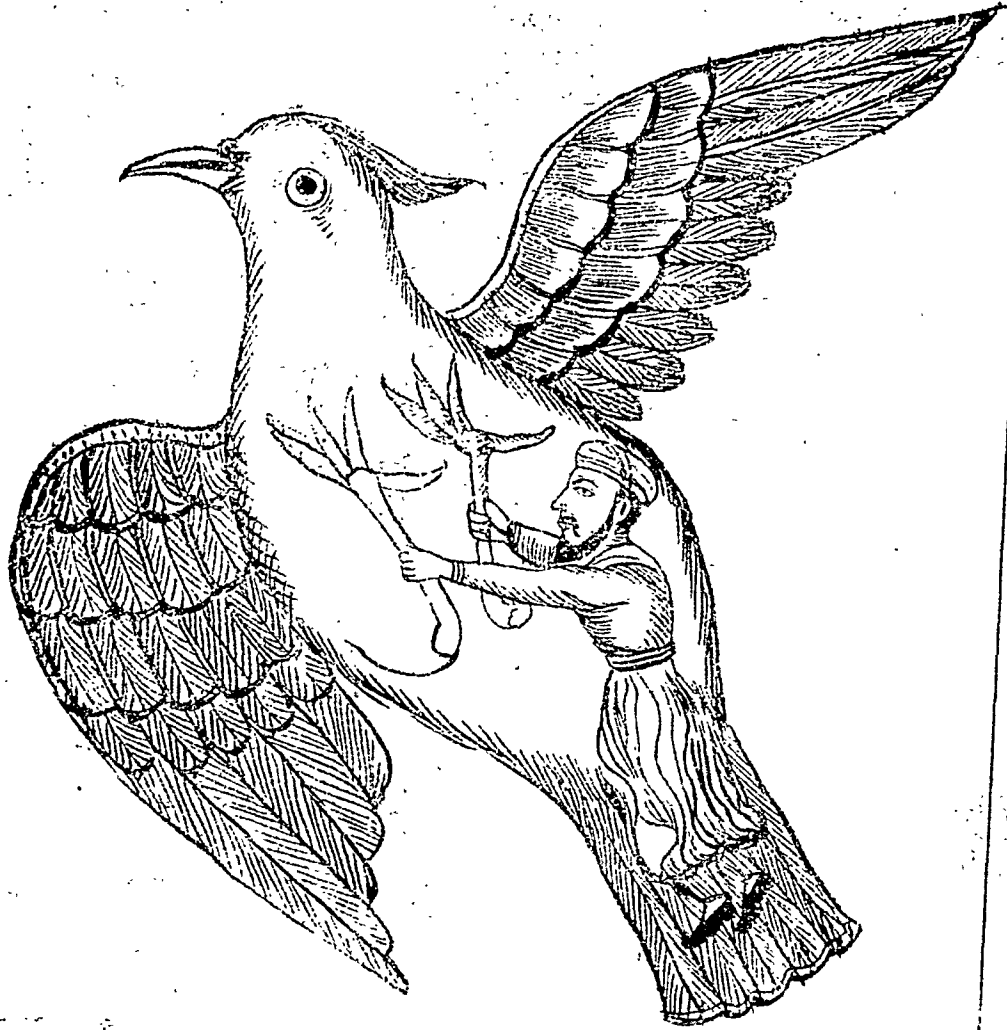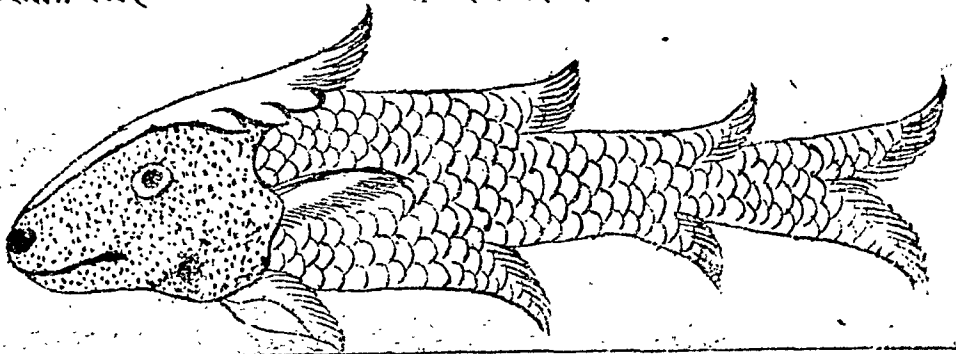
मुतअल्लिके सफ़ा १५३

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २५८

तसवीर नम्बर १३१

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २५६

तसवीर नम्बर १३२

तसवीर नम्बर १३३

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २५७

तसवीर नम्बर १२४

मुतअल्लिक़े सफ़ा ९७

तसवीर नम्बर १२५

मुतअल्लिक़े सफ़ा ९७

तसवीर नम्बर १२६

मुतअल्लिक़े सफ़ा ९८
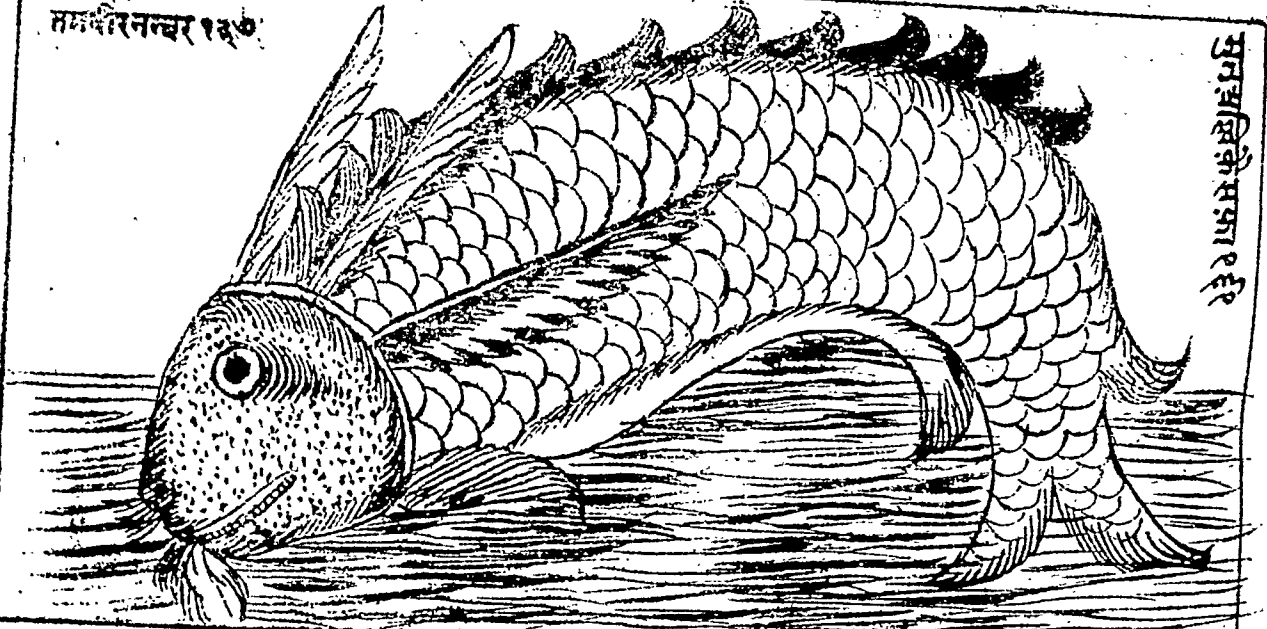
नम्बर १२७
मुतअल्लिक़े सफ़ा १६१
तसवीर नम्बर १२८
मुतअल्लिक़े सफ़ा १६२
तसवीर नम्बर १२९
मुतअल्लिक़े सफ़ा १६६
मुतअल्लिक़े सफ़ा १६७
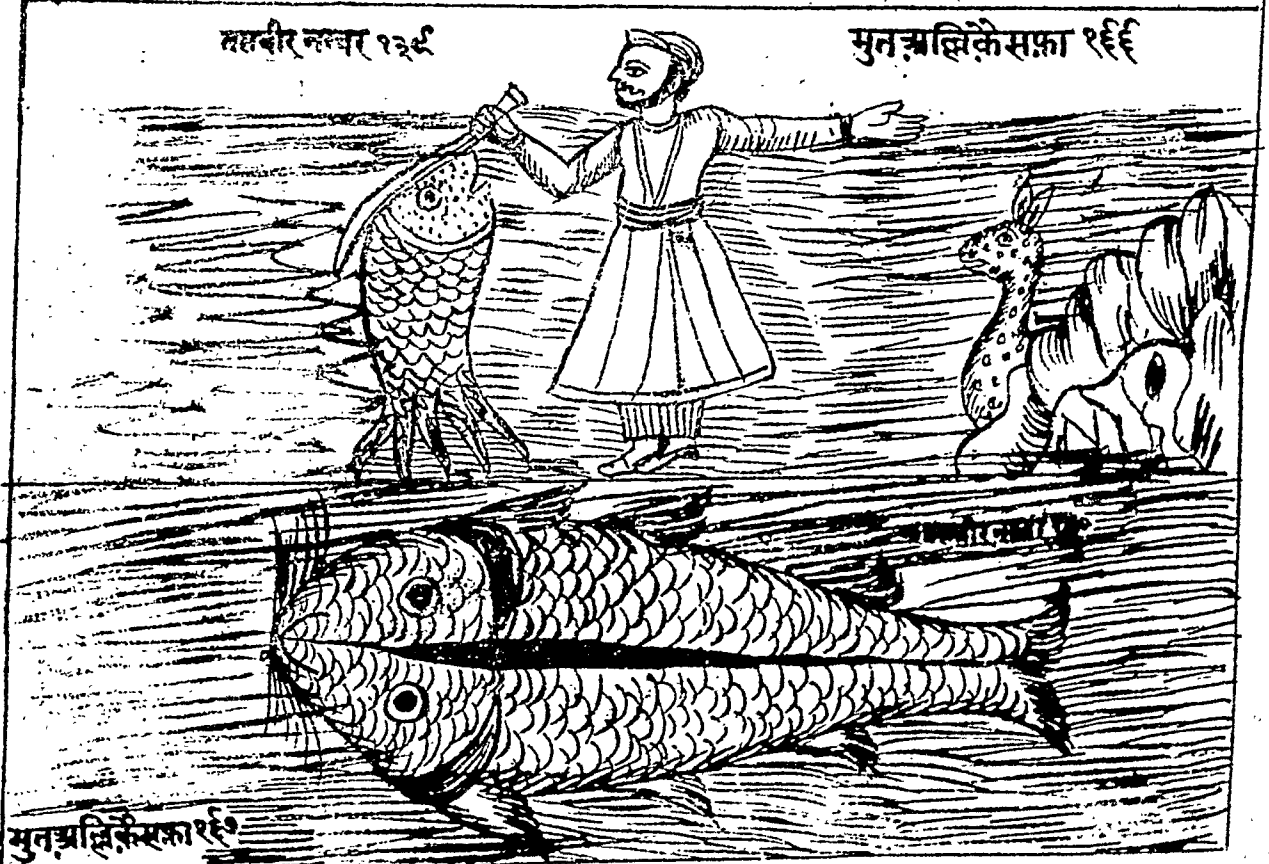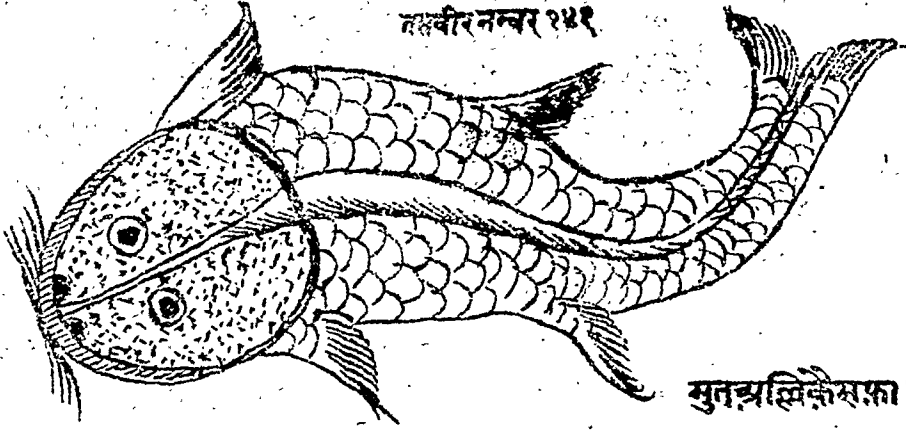
तसवीर नम्बर १४१

मुतअल्लिक़े सफ़ा १६७

तसवीर नम्बर १४२

मुतअल्लिक़े सफ़ा १६८

तसवीर नम्बर १४३

मुतअल्लिक़े सफ़ा १६८

तसवीर नम्बर १४४

मुतअल्लिक़े सफ़ा १६८
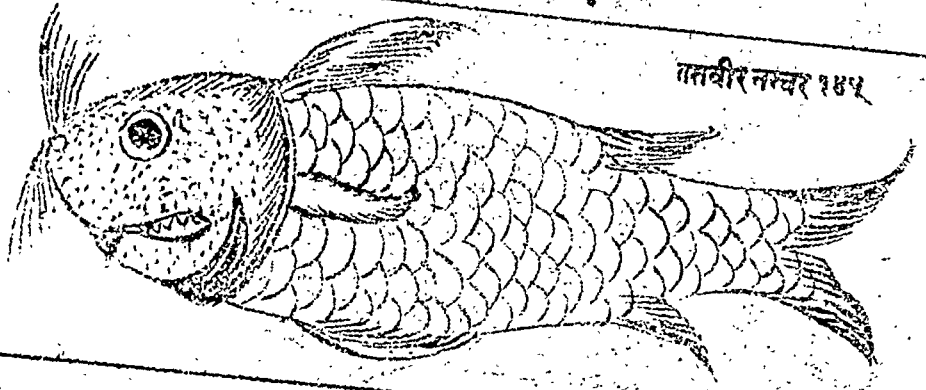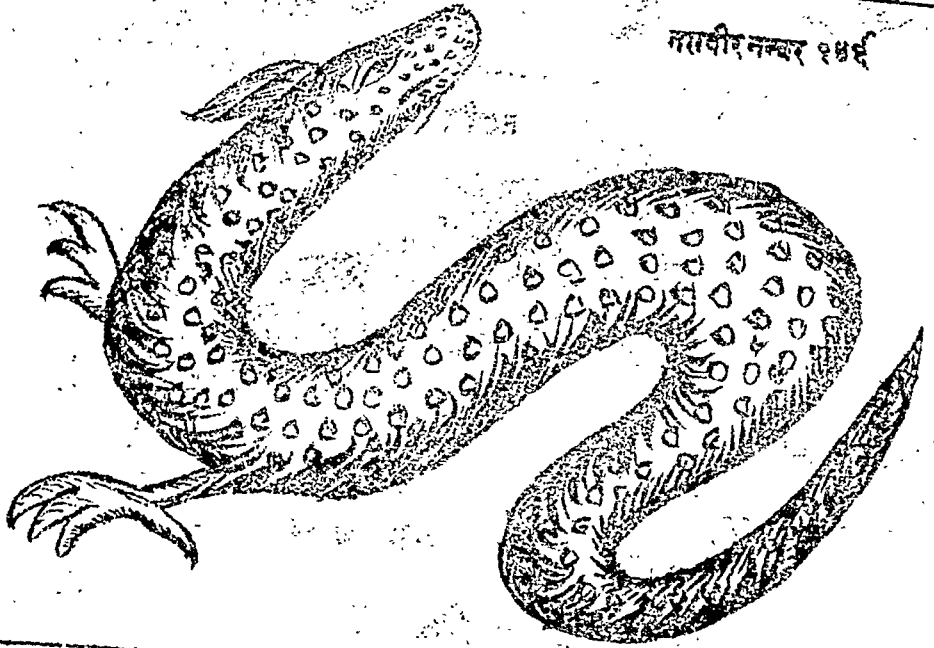
तसवीर नम्बर १४५

तसवीर नम्बर १४६

मुलाहिज़ै सफ़ा ९७१

तसवीर नम्बर १४७

मुलाहिज़ै सफ़ा ९७२

तसवीर नम्बर १४८

मुलाहिज़ै सफ़ा ९७३
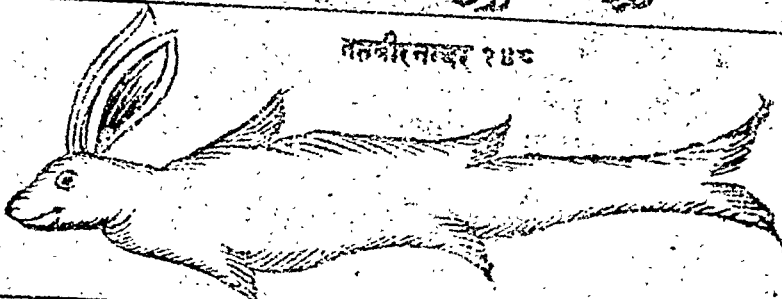
तसवीर नम्बर १४९

मुतअल्लिके सफ़ा १७२

मुतअल्लिके सफ़ा १७३
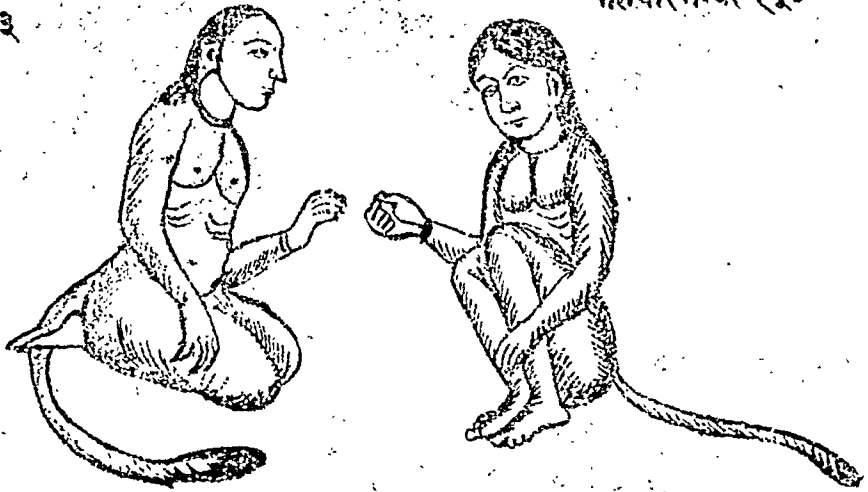
तसवीर नम्बर १५०

मुतअल्लिके सफ़ा १७४

तसवीर नम्बर १५१

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा १७६
तसवीर नम्बर १५२
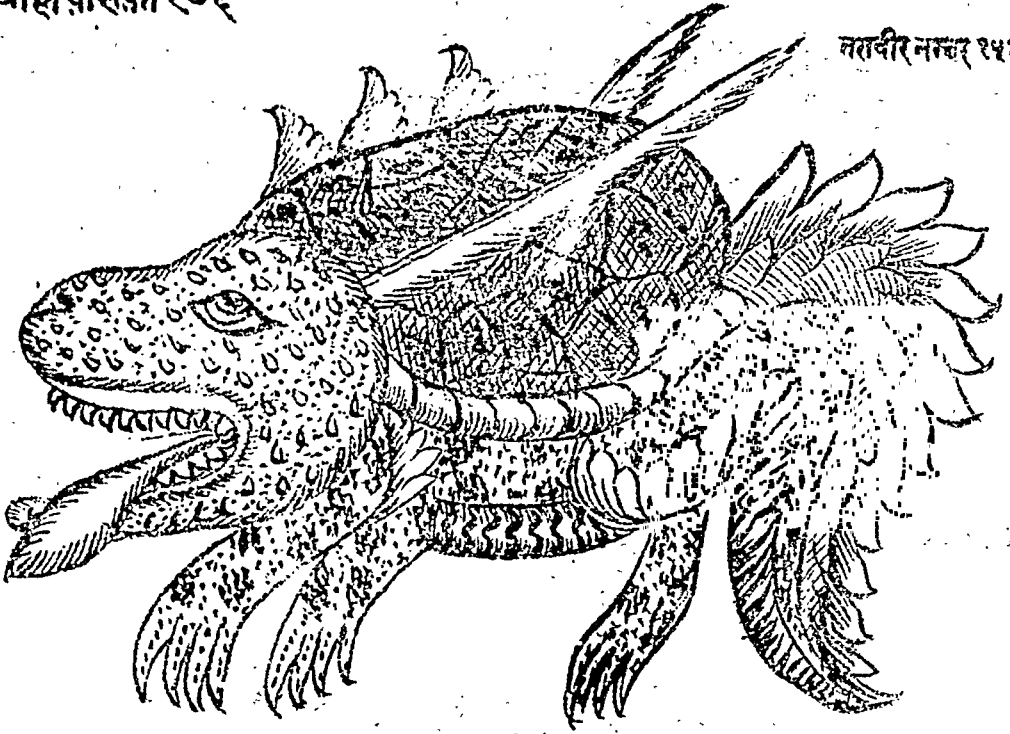
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा १७७
तसवीर नम्बर १५३

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा १७८
तसवीर नम्बर १५४

तसवीर नम्बर १५५

मुतअल्लिक़े सफ़ा १७८

मुतअल्लिक़े सफ़ा १७८

तसवीर नम्बर १५६

मुतअल्लिक़े सफ़ा १७९

तसवीर नम्बर १५७

तसवीर नम्बर १५८

मुतअल्लिक़े सफ़ा १७९
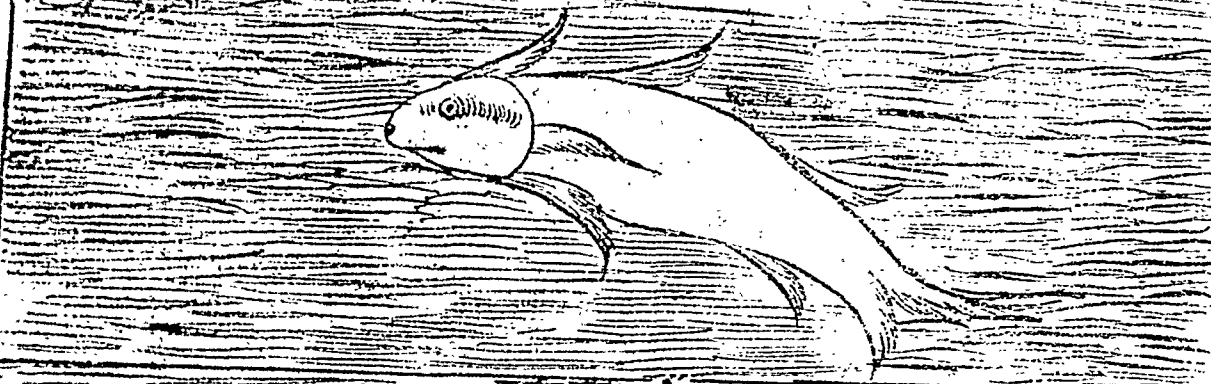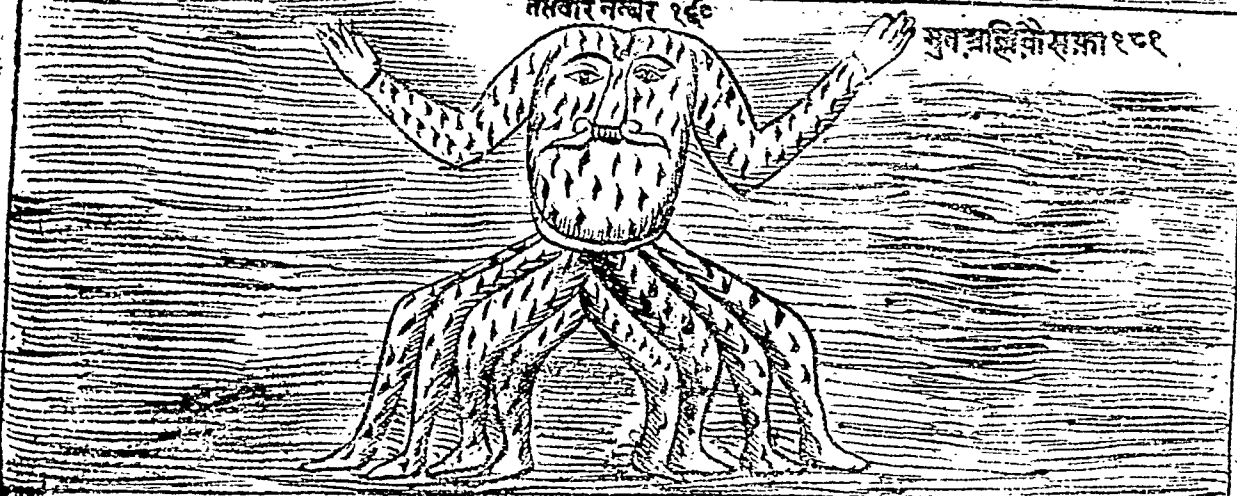
मुतअल्लिके सफ़ा १९०
तसवीर नम्बर १५९
तसवीर नम्बर १६०
मुतअल्लिके सफ़ा १९१
मुतअल्लिके सफ़ा १९२
तसवीर नम्बर १६१
तसवीर नम्बर १६२
मुतअल्लिके सफ़ा १९२
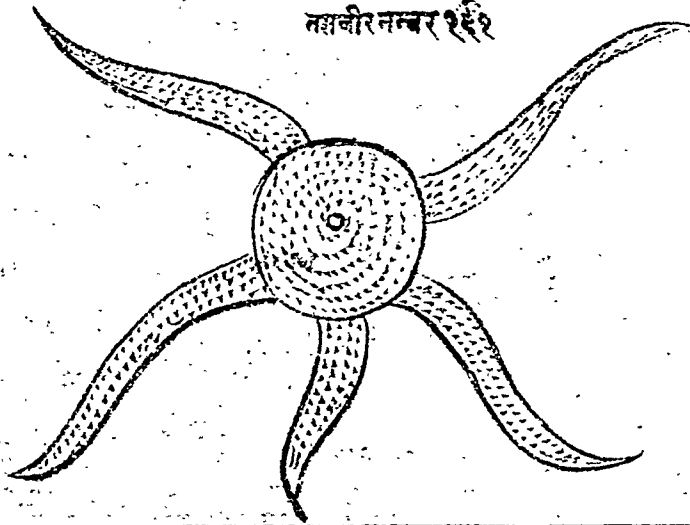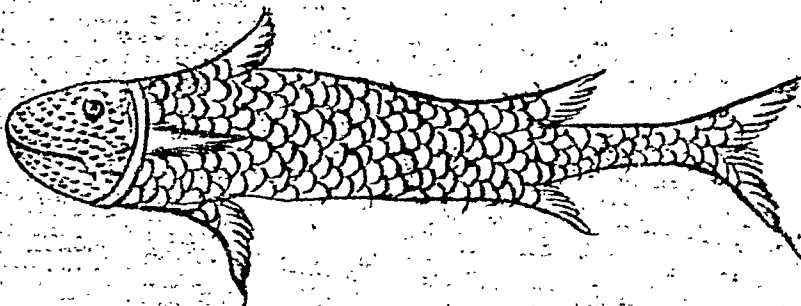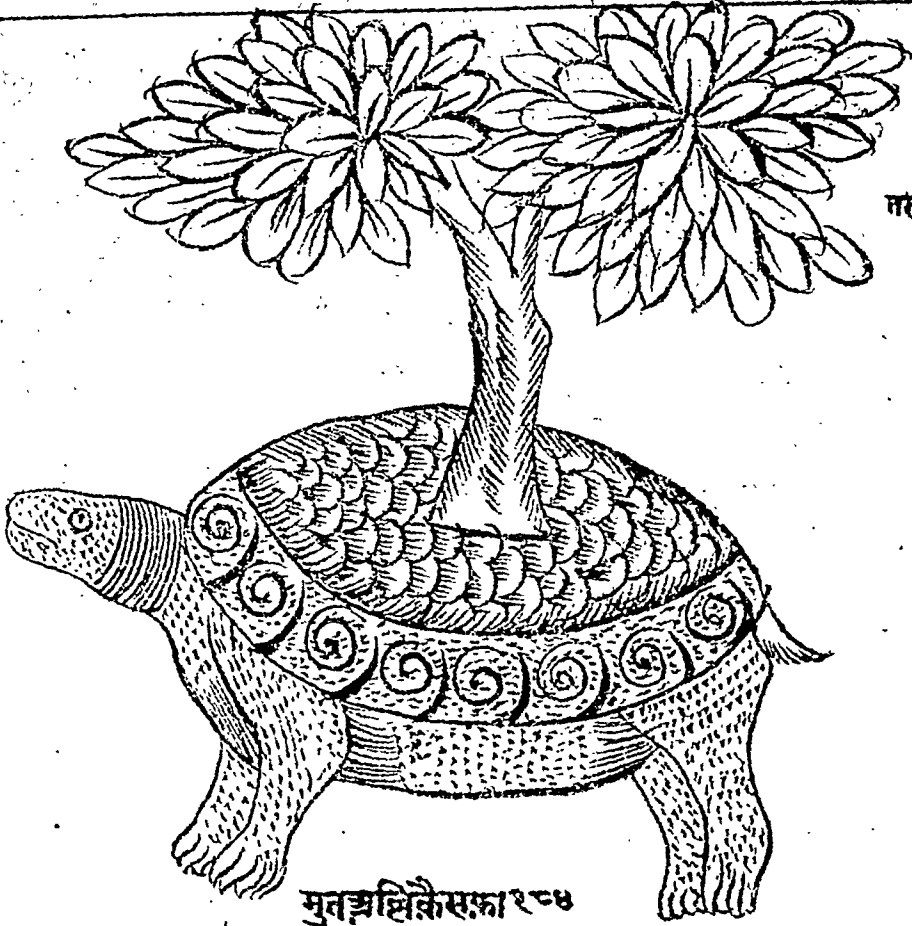
तसवीर नम्बर १६३

मुतअल्लिके सफ़ा २८४

तसवीर नम्बर १६४

मुतअल्लिके सफ़ा २८५

तसवीर नम्बर १६५

मुतअल्लिके सफ़ा २८५

मुतअल्लिक़े सफ़ा १८५

तसवीर नम्बर १६६

मुतअल्लिक़े सफ़ा १८५

तसवीर नम्बर १६७

मुतअल्लिक़े सफ़ा १८७
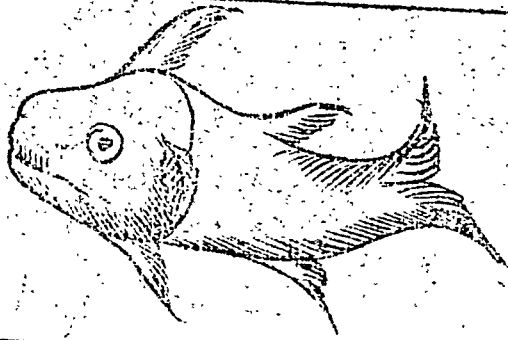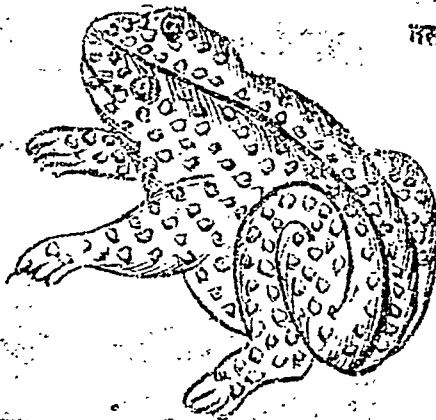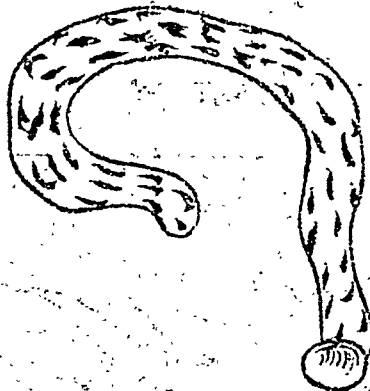
तसवीर नम्बर १६८

मुतअल्लिक़े सफ़ा १८८

तसवीर नम्बर १६९

मुतअल्लिक़े सफ़ा १८८

तसवीर नम्बर १७०

तसवीर नम्बर १७१

सूरत अफ़्लिकैसका १८८

तसवीर नम्बर १७२

सूरत अफ़्लिकैसका १८९

तसवीर नम्बर १७३

सूरत अफ़्लिकैसका १९०
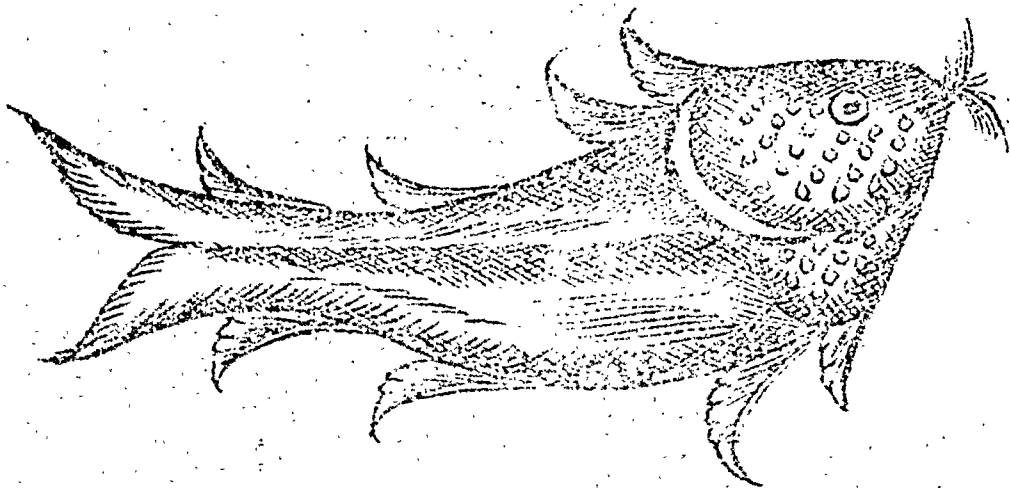
तसवीर नम्बर १७४
तसवीर नम्बर १७५
तसवीर नम्बर १७६
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २९२
तसवीर नम्बर १७७
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २९३

तसवीर नम्बर १८१

तसवीर नम्बर १८२

तसवीर नम्बर १८३

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २३६
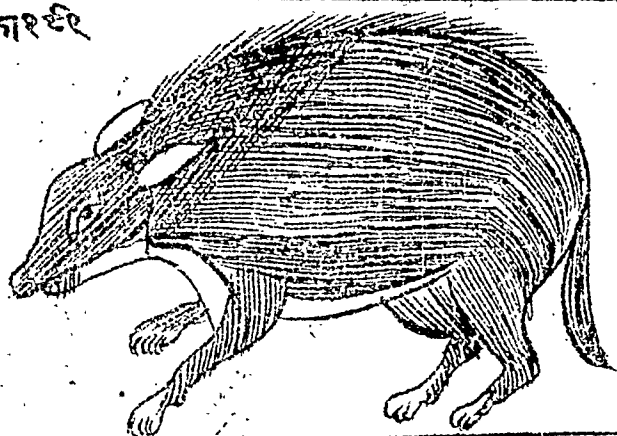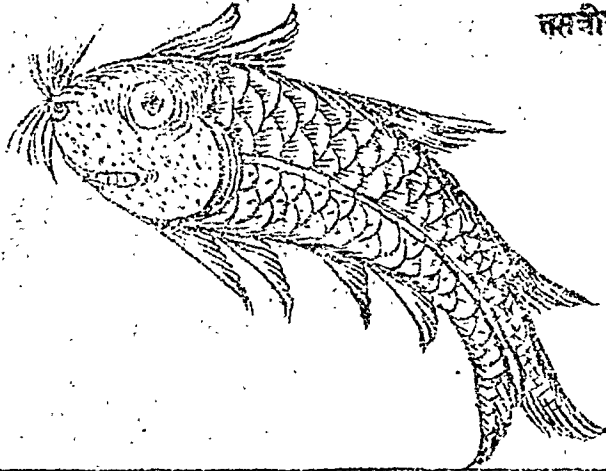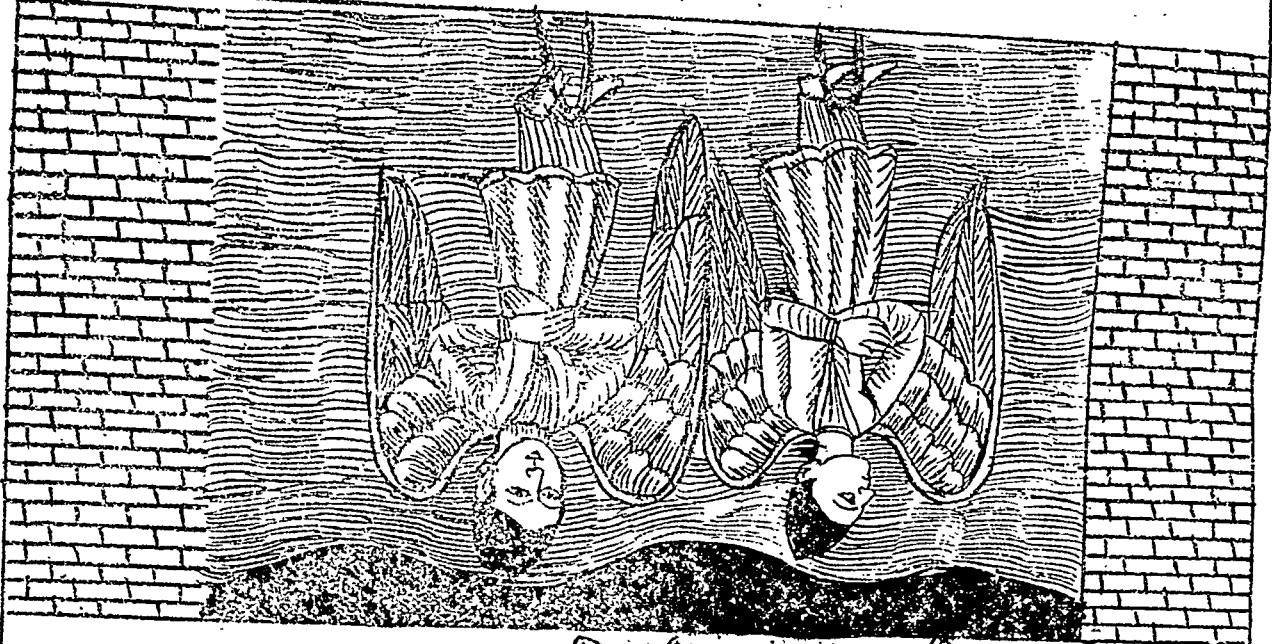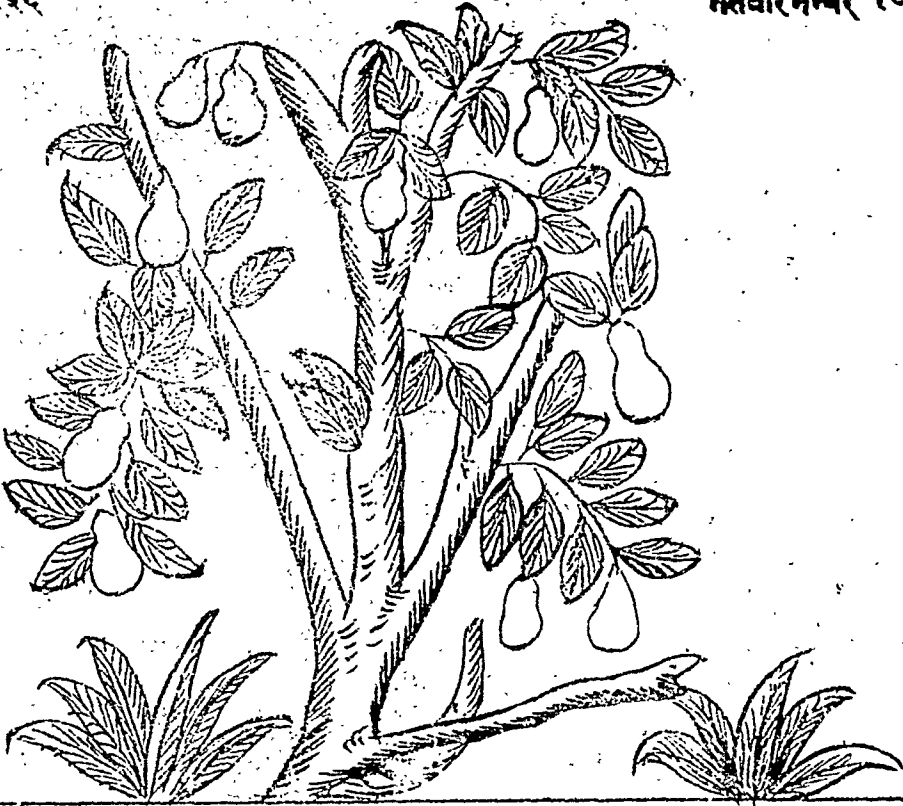
तसवीर नम्बर १८४

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३३६

तसवीर नम्बर १८५
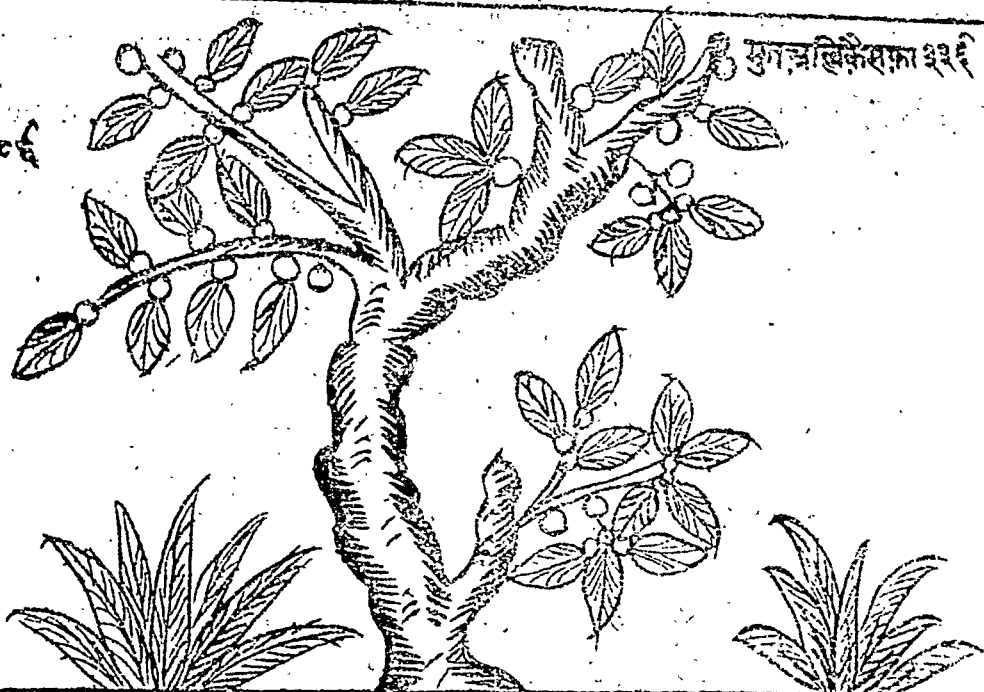
तसवीर नम्बर १०६
मुतअल्लिके सफ़ा ३२६
तसवीर नम्बर १०७
मुतअल्लिके सफ़ा ३२६
तसवीर नम्बर १०८
मुतअल्लिके सफ़ा ३२७

तसवीर नम्बर १८९
मुतअ़ल्लिके सफ़ा ३३७
तसवीर नम्बर १९०
मुतअ़ल्लिके सफ़ा ३३८
तसवीर नम्बर १९१
मुतअ़ल्लिके सफ़ा ३३८
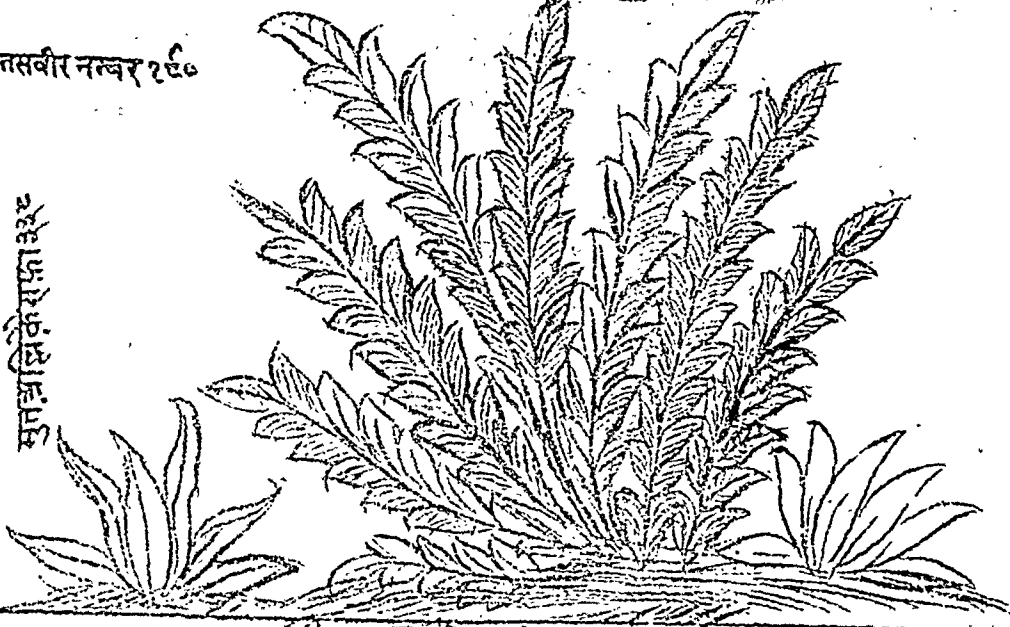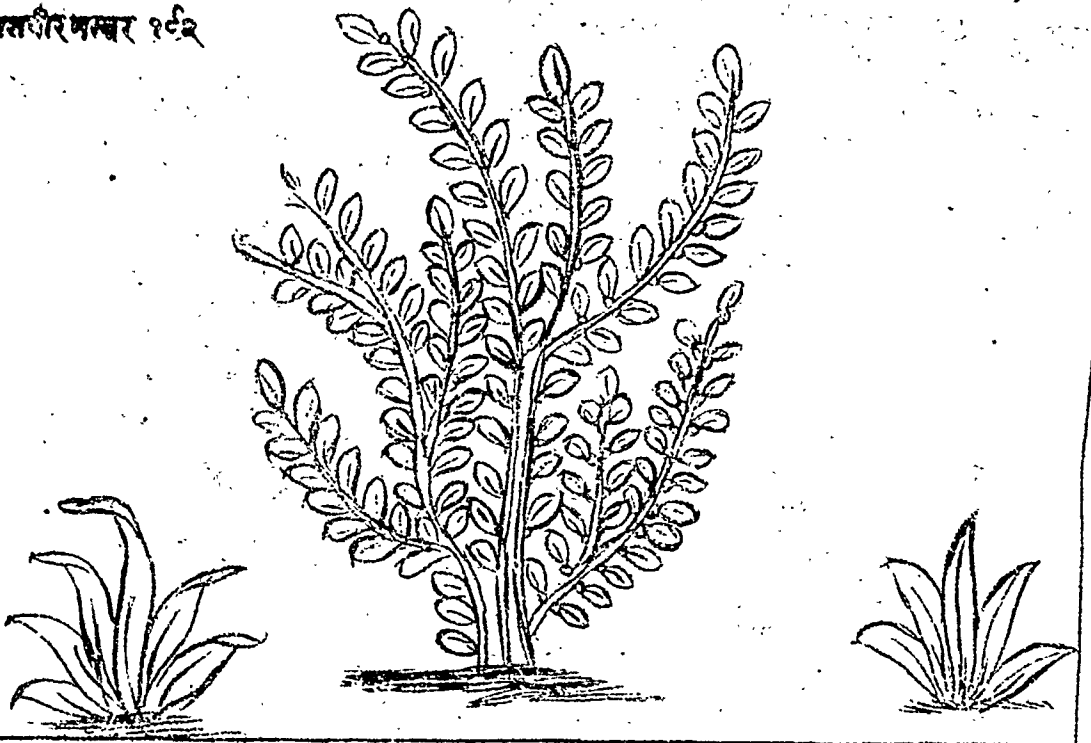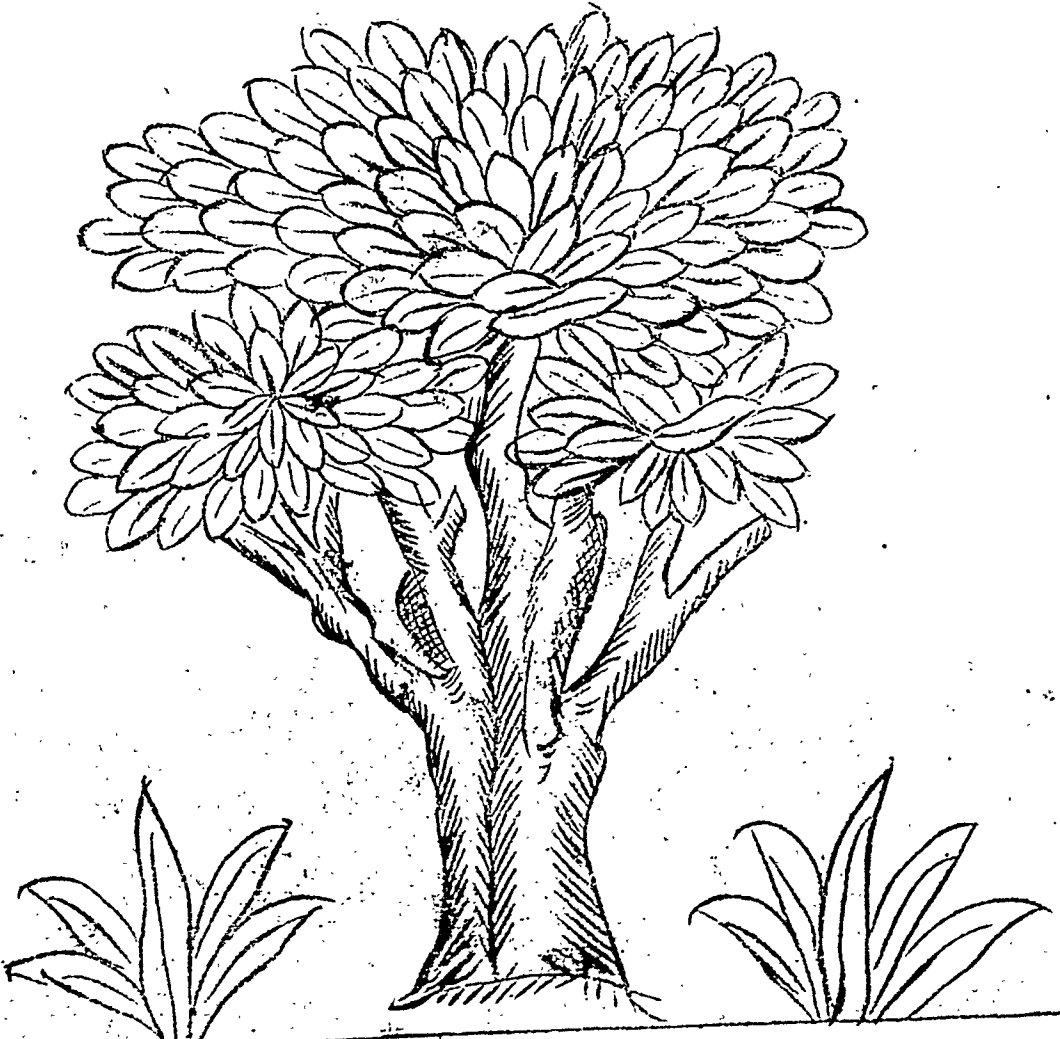
मुक़ाम ज़िक्र सफ़ा ३२९

तसवीर नम्बर १९३

मुतअल्लिके सफ़ा २३९

तसवीर नम्बर १९४

मुतअल्लिके सफ़ा २४१

तसवीर नम्बर १९५

गुन अह्लिकैस फ़ा ३४१
तसवीरनम्बर १९६
गुन अह्लिकैस फ़ा ३५१
तसवीरनम्बर १९७
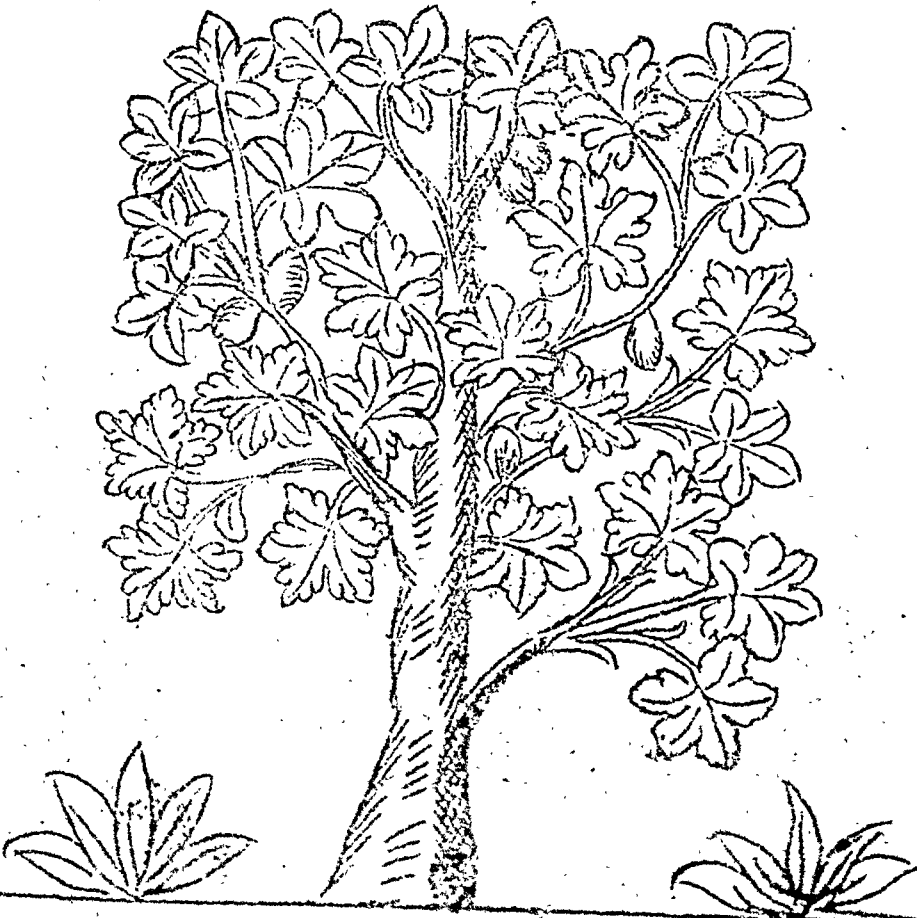
मुतअल्लिके सफा ३४२
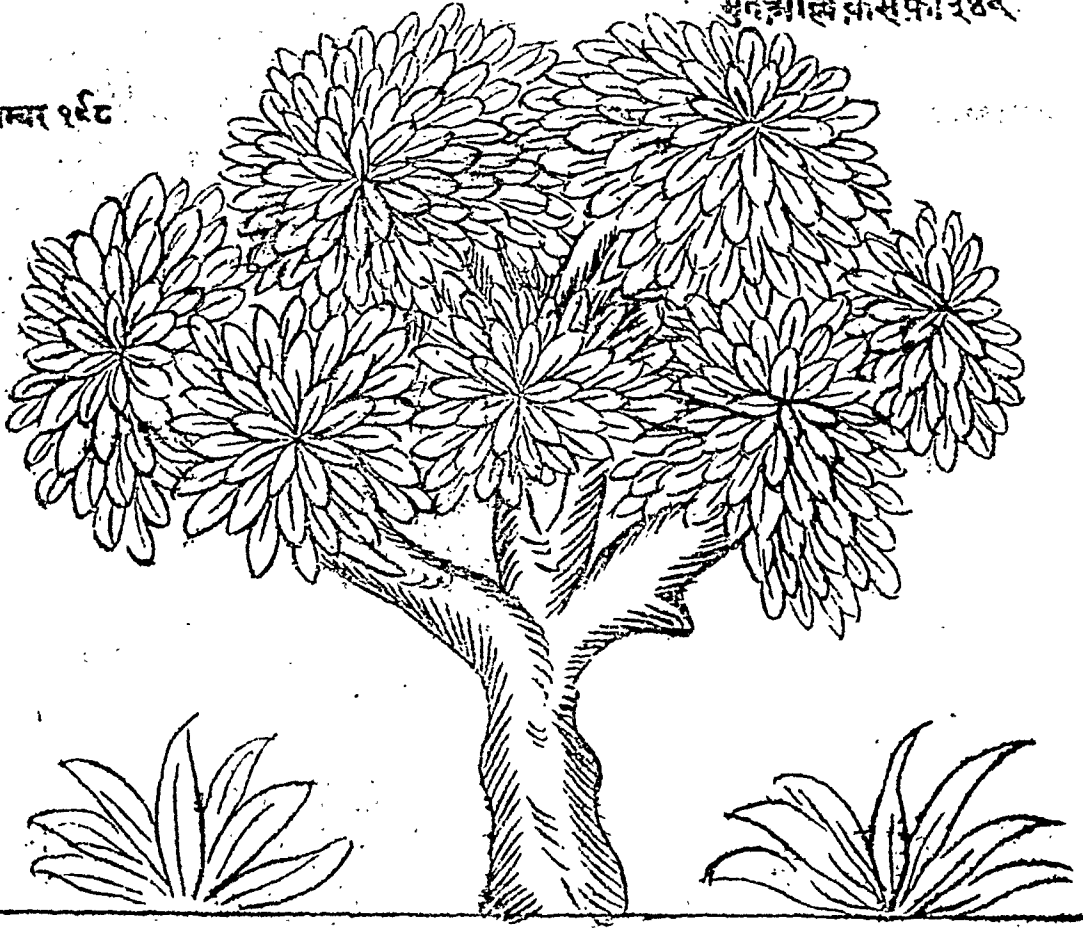
तसवीर नम्बर १९८

तसवीर नम्बर १९९
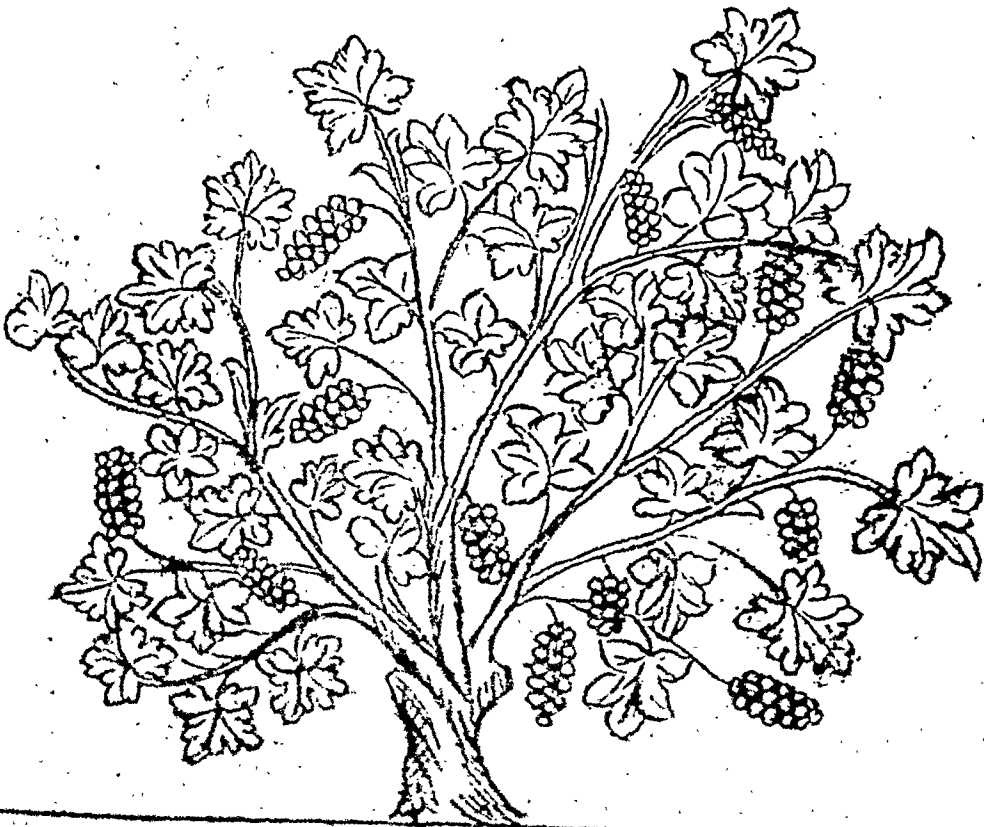
मुतअल्लिके सफा ३५२

तसवीर नम्बर २००
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३५२
तसवीर नम्बर २०१
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३५३
तसवीर नम्बर २०२
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३५३

तसवीर नम्बर २०३
मुताबिक़ सफ़ा ३७३
मुताबिक़ सफ़ा ३७४
तसवीर नम्बर २०४
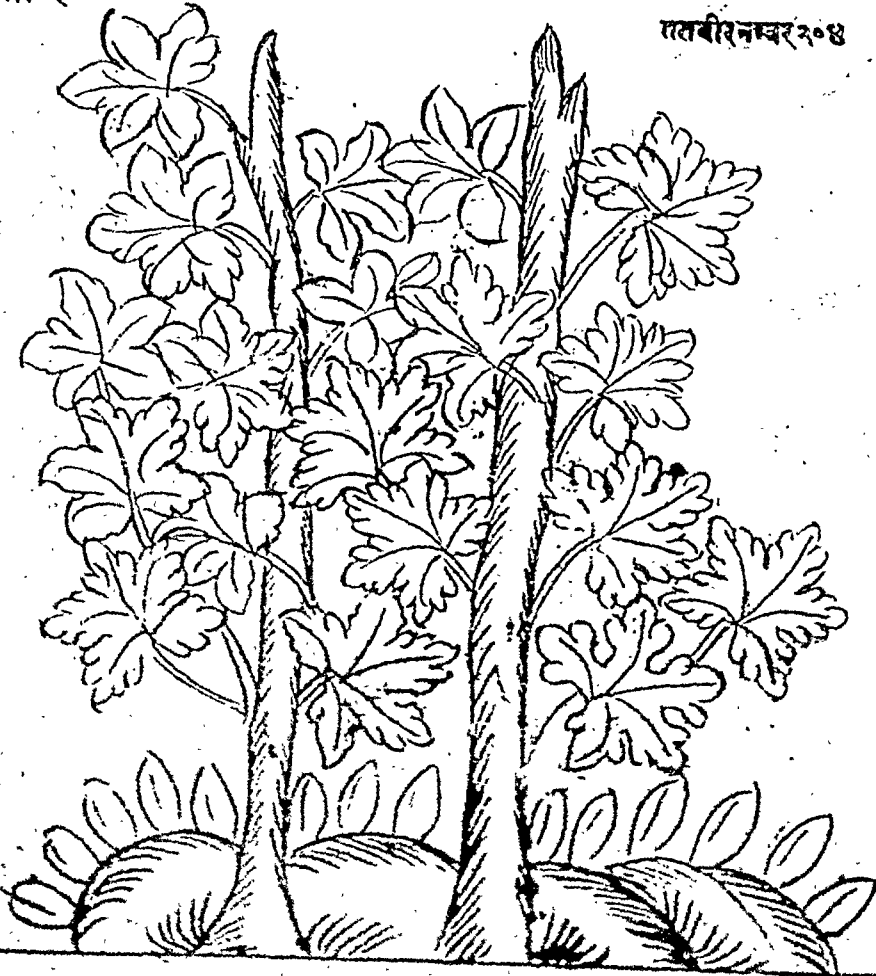
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३४४
तसवीर नम्बर २०५
तसवीर नम्बर २०६
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३४५
तसवीर नम्बर २०७
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३४७
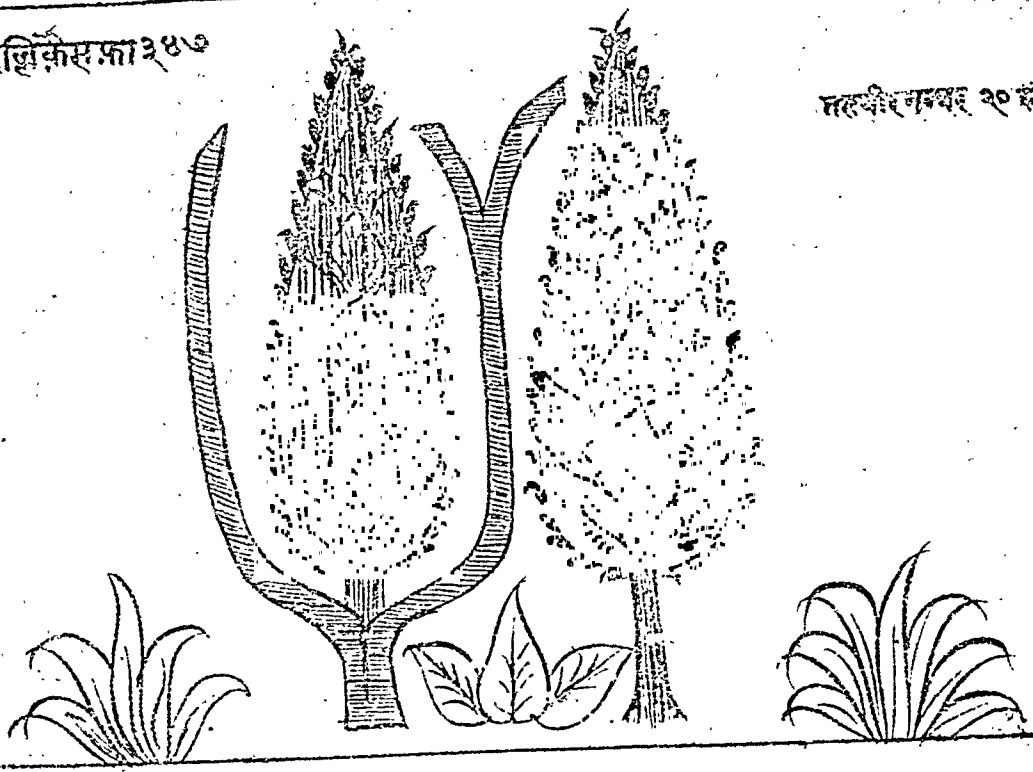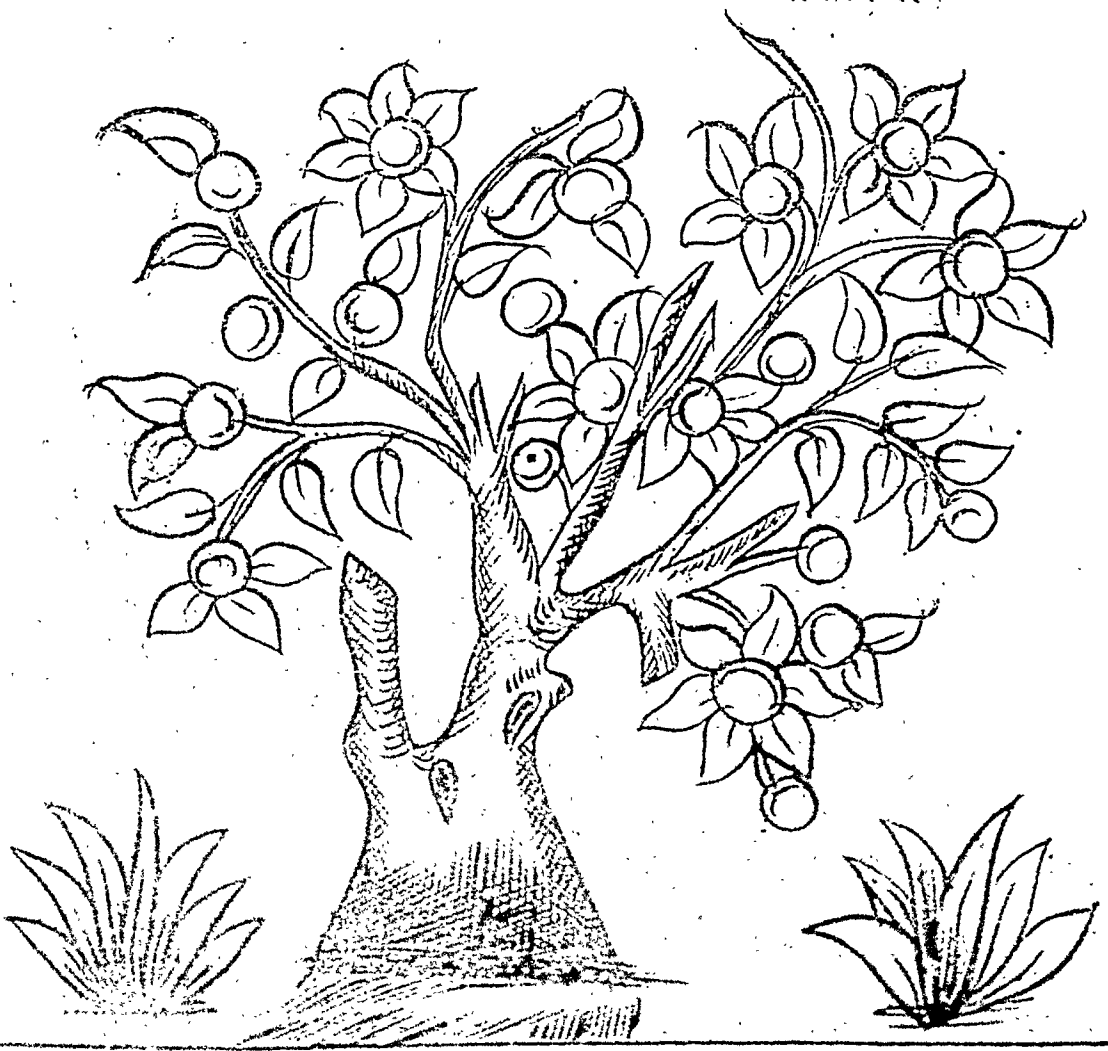
मुतअल्लिक़े सफ़ा २५७
तसवीर नम्बर २०८
मुतअल्लिक़े सफ़ा २५८
तसवीर नम्बर २०९

मुतअ़ल्लिके सफ़ा २४८

तसवीर नम्बर २१०

मुतअ़ल्लिके सफ़ा २४८
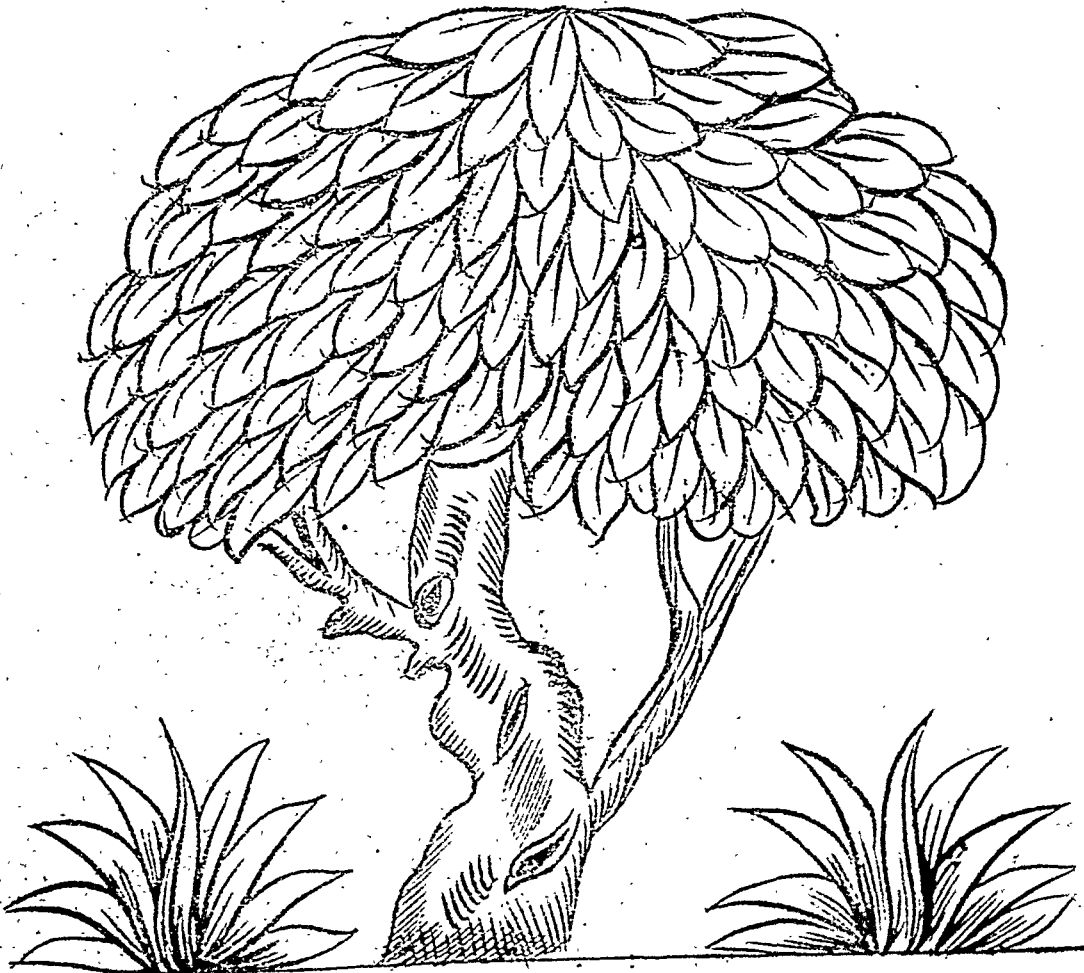
तसवीर नम्बर २११

तसवीर नम्बर २१७

मुतअ़ल्लिके सफ़ा ३४८

तसवीर नम्बर २१८
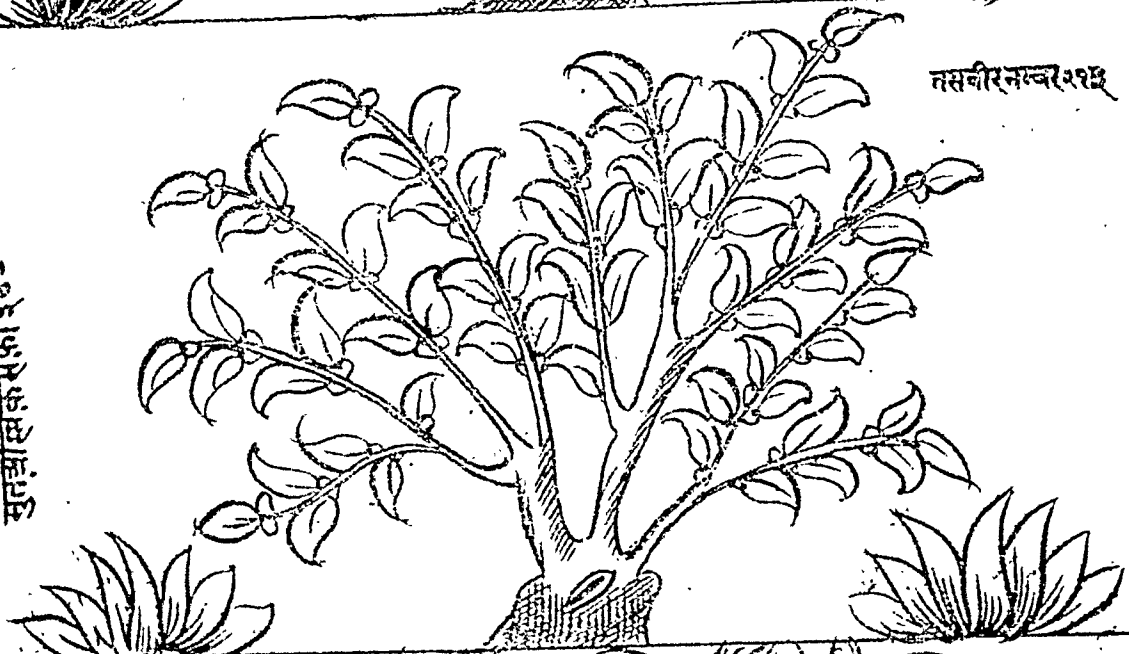
मुतअ़ल्लिके सफ़ा ३४९

तसवीर नम्बर २१९
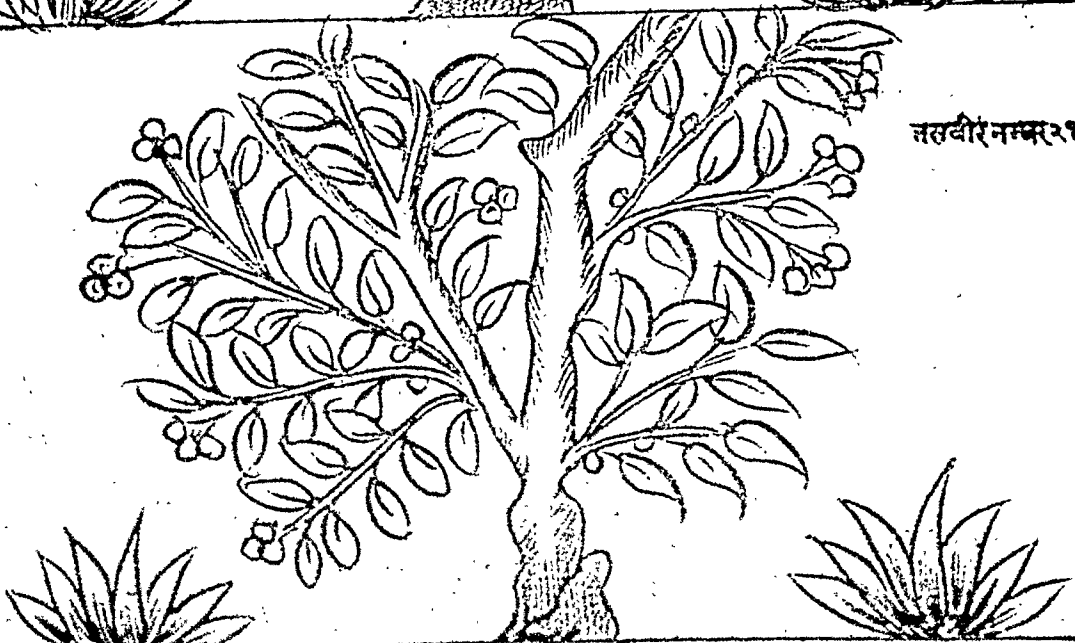
मुतअ़ल्लिके सफ़ा ३४८

मुतअल्लिक़े सफ़ा ३४९
तसवीर नम्बर २१५
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३५०
तसवीर नम्बर २१६
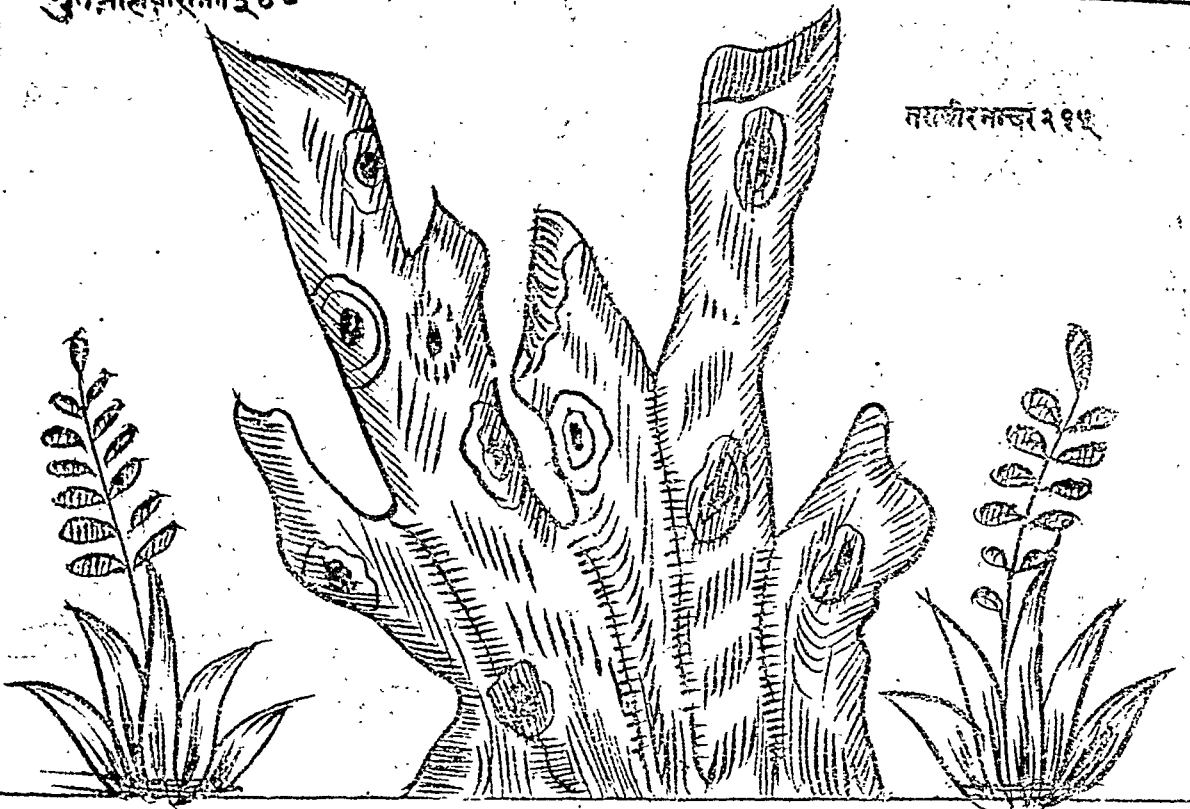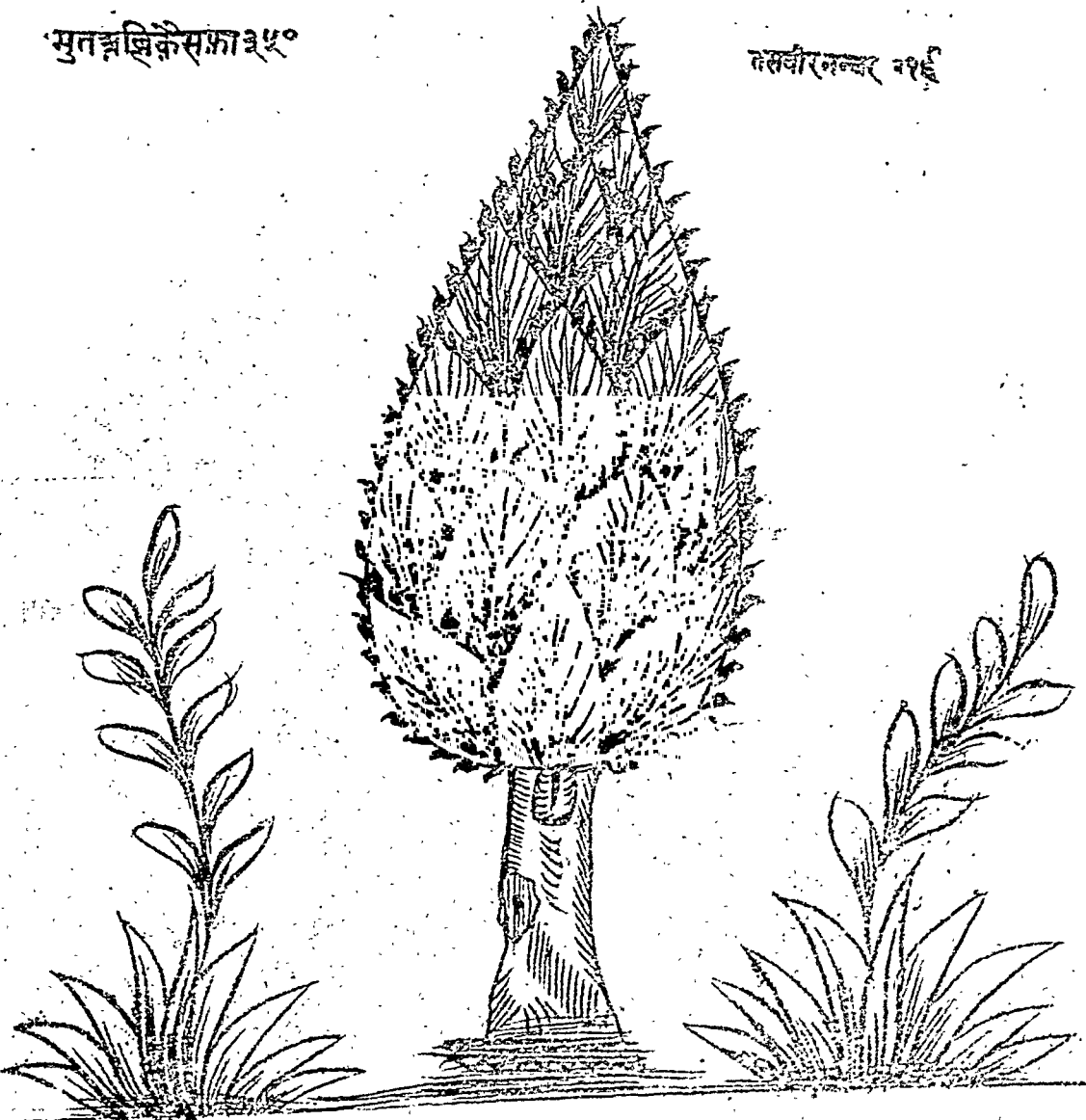
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३५०
तसवीर नम्बर २१७
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३५०
तसवीर नम्बर २१८
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३५०
तसवीर नम्बर २१९
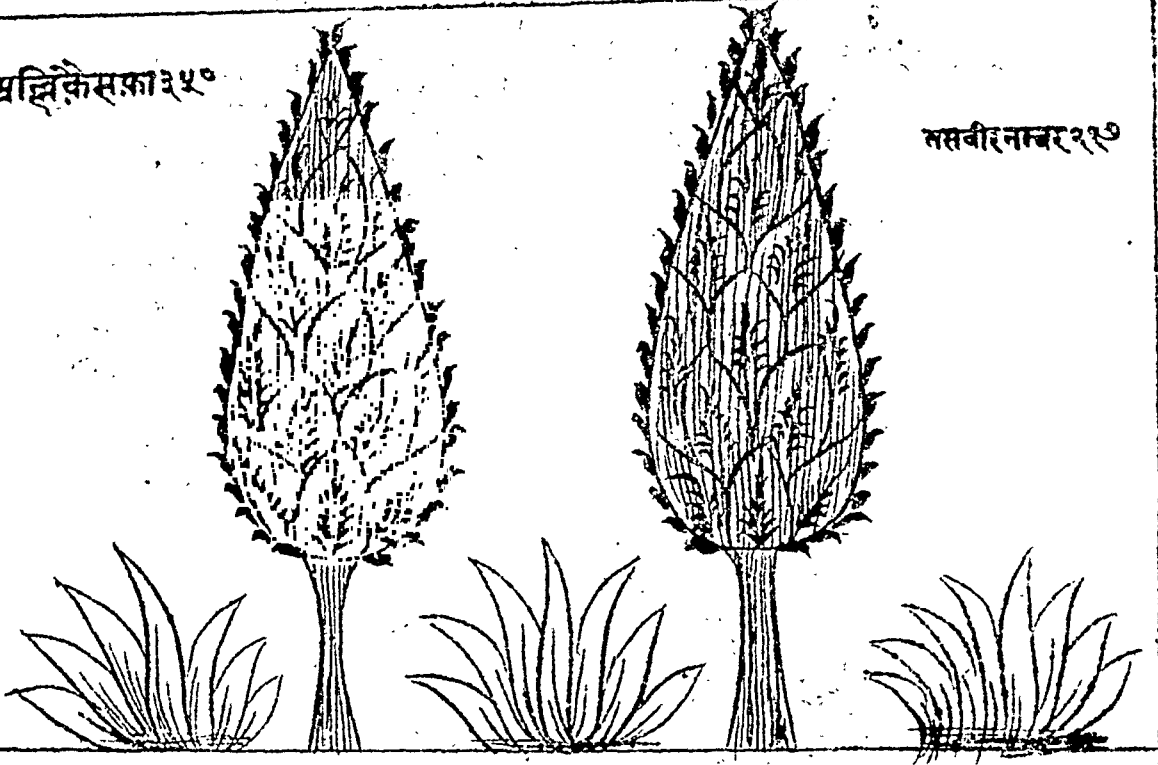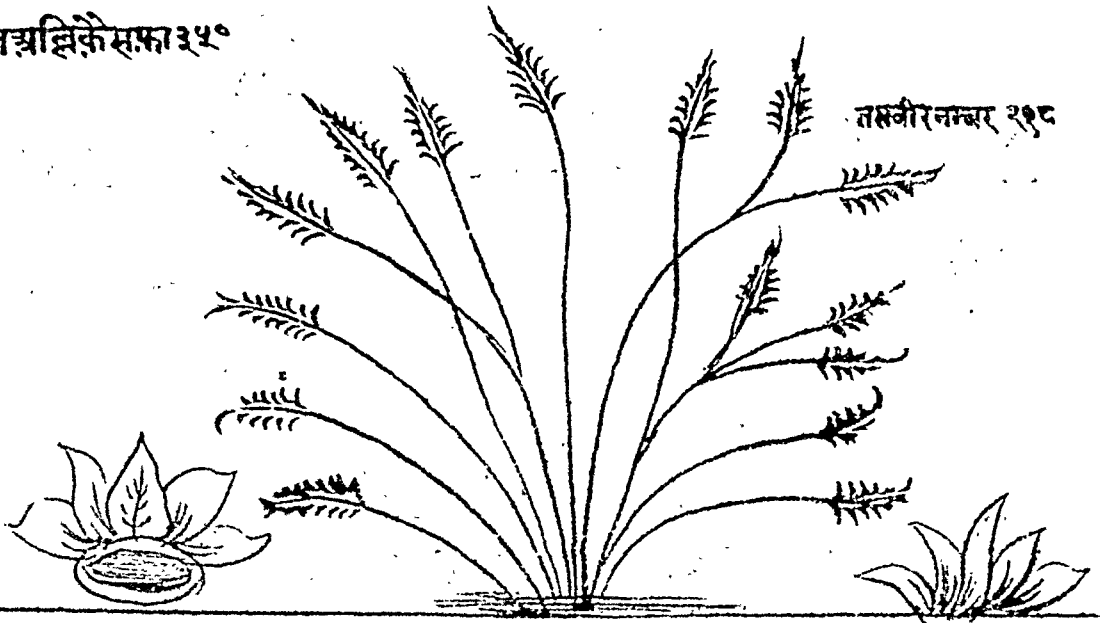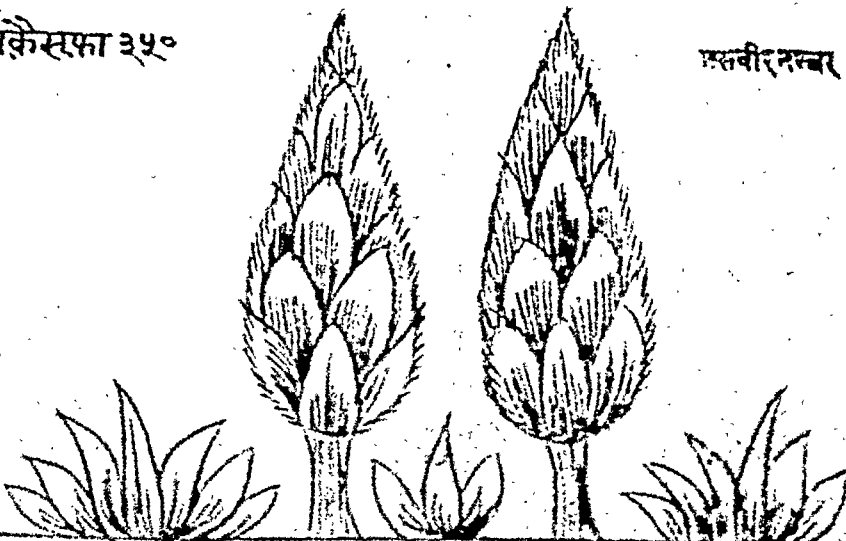
मुतअल्लिके सफ़ा २५१
तसवीर नम्बर २२०
मुतअल्लिके सफ़ा २५१
तसवीर नम्बर २२१
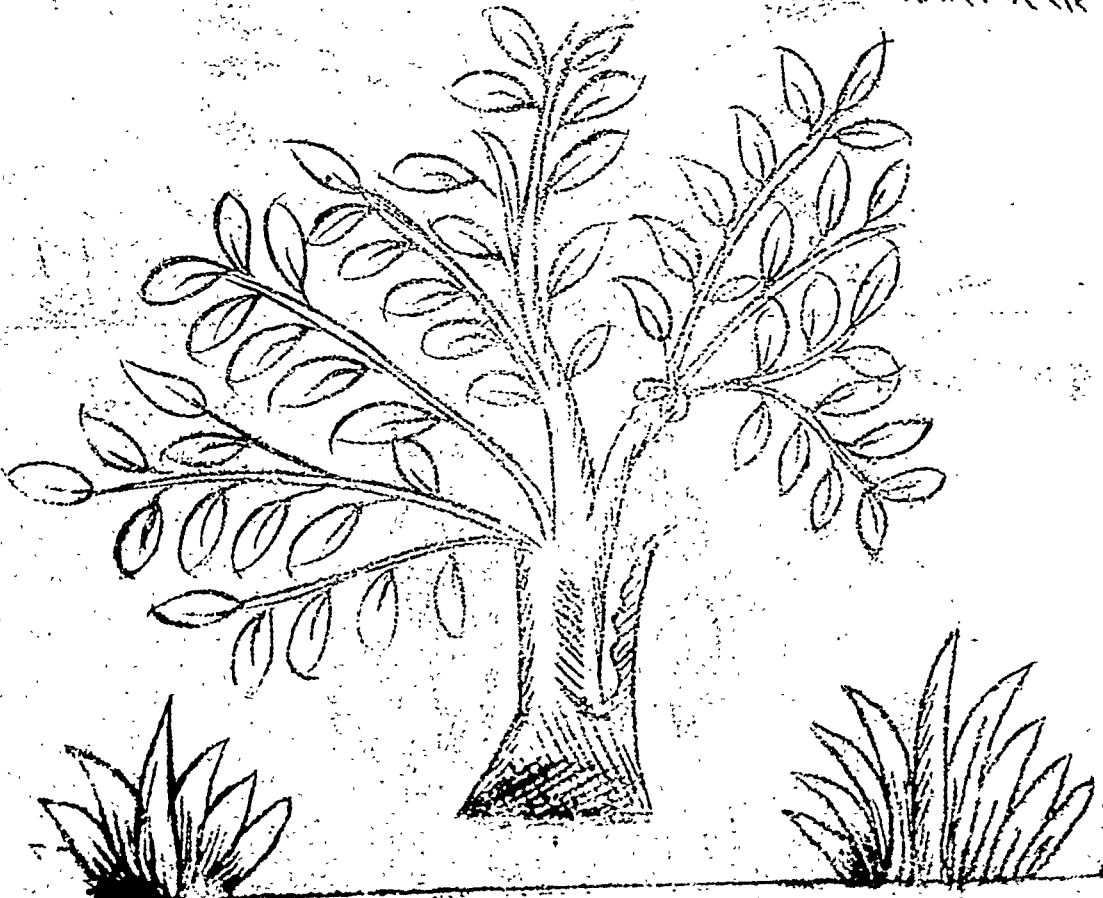
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३५२
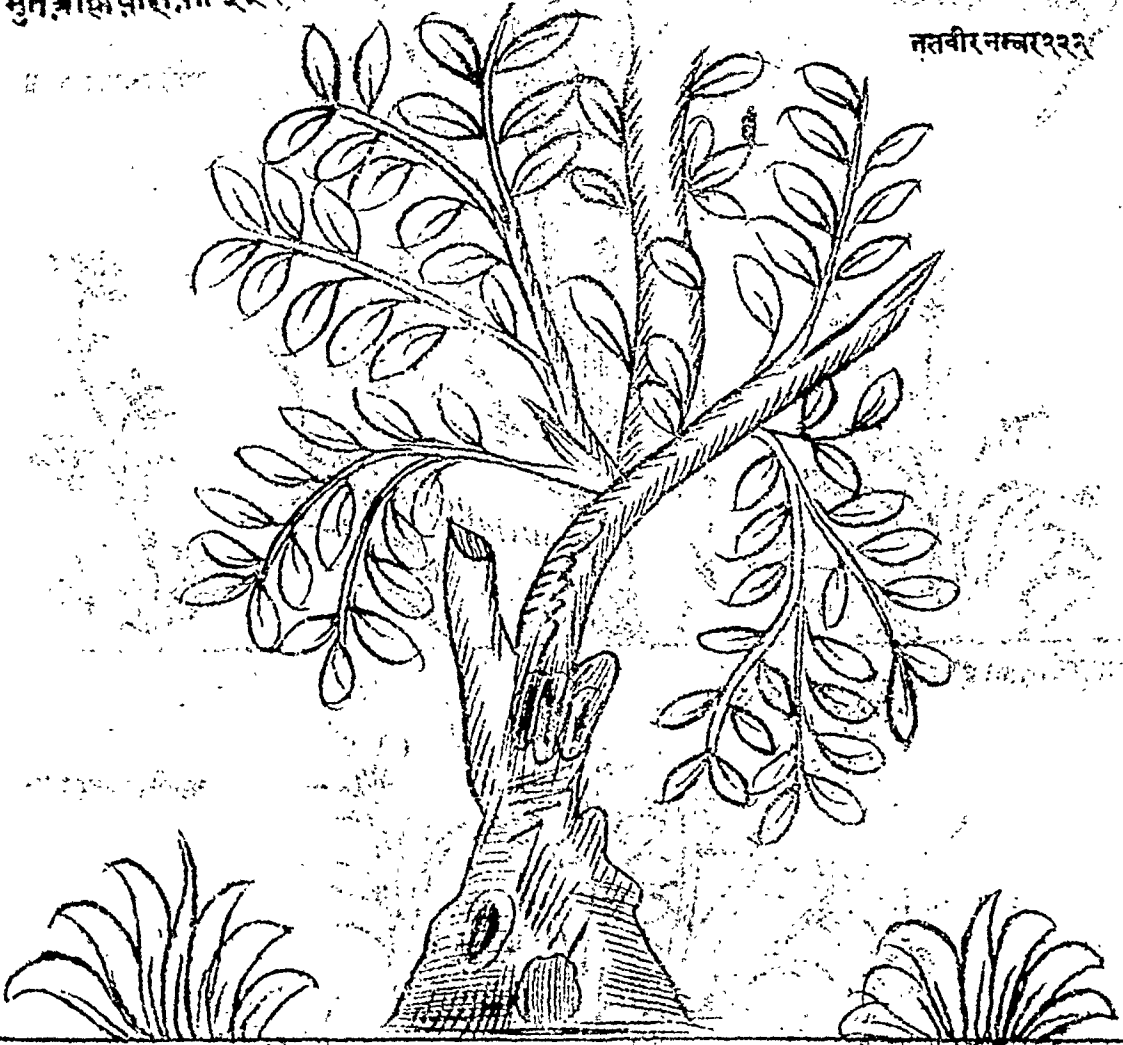
तसवीर नम्बर २२२
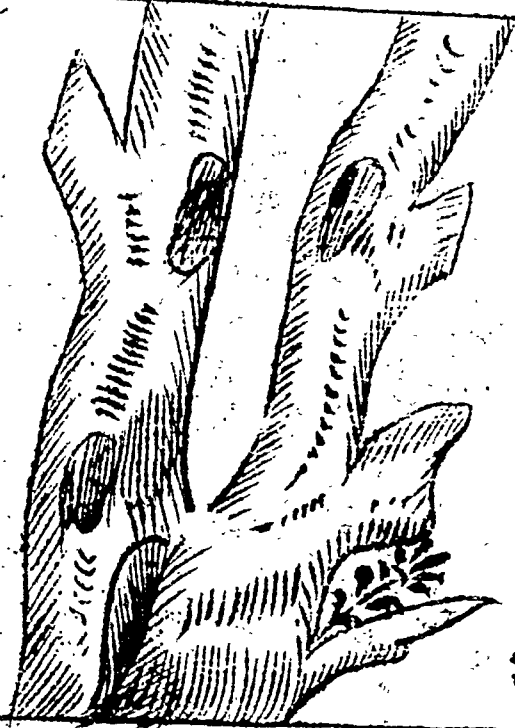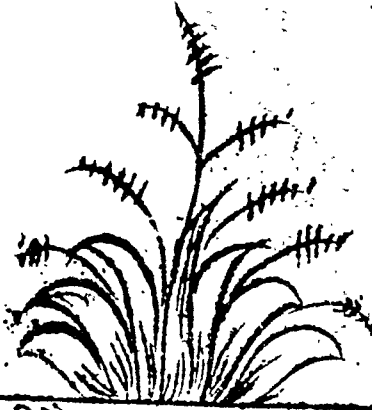
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३५२

तसवीर नम्बर २२३

मुतअल्लिके सफ़ा २५२
तसवीर नम्बर २२४
मुतअल्लिके सफ़ा २५३
तसवीर नम्बर २२५
मुतअल्लिके सफ़ा २५३
तसवीर नम्बर २२६
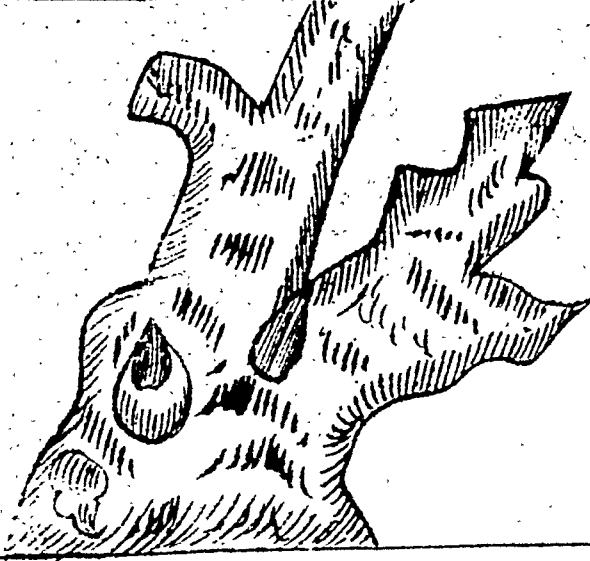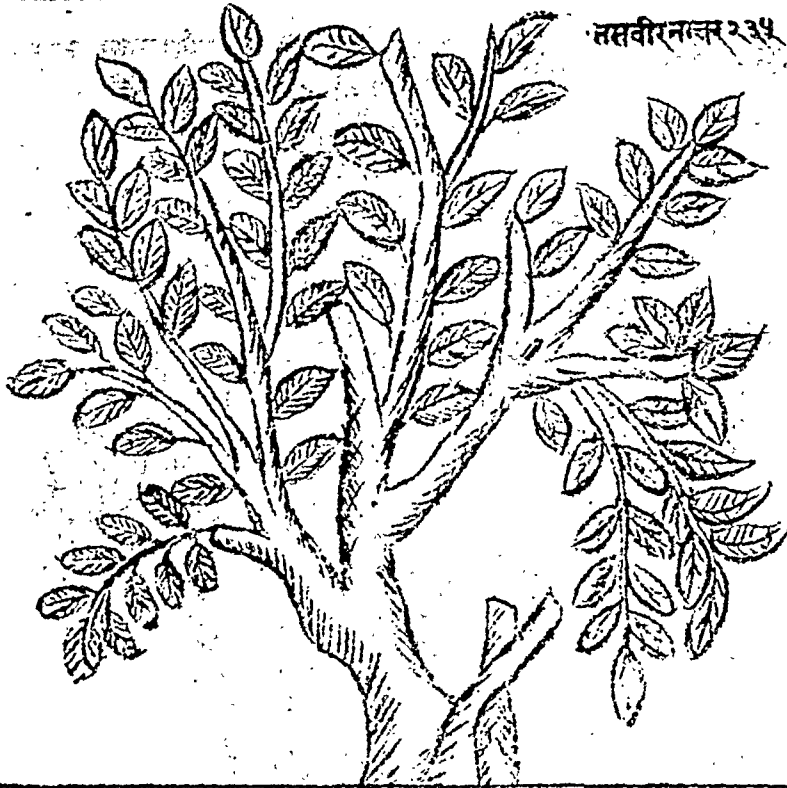
तसवीर नम्बर २३५
मुतअल्लिक़े सफ़ा २५३
मुतअल्लिक़े सफ़ा २५४
तसवीर नम्बर २३६

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३५५
तसवीर नम्बर २३०
मुतअ़ल्लिके सफ़ा ३५५
तसवीर नम्बर २३१
मुतअ़ल्लिके सफ़ा ३५६
तसवीर नम्बर २३२
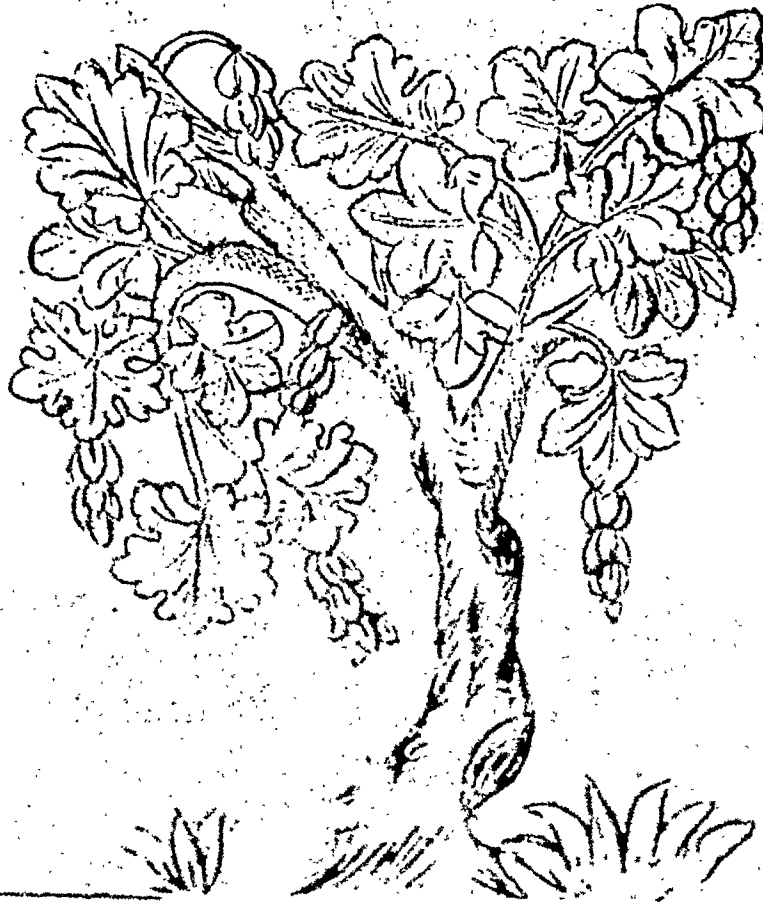
मुतअल्लिके सफ़ा २५७
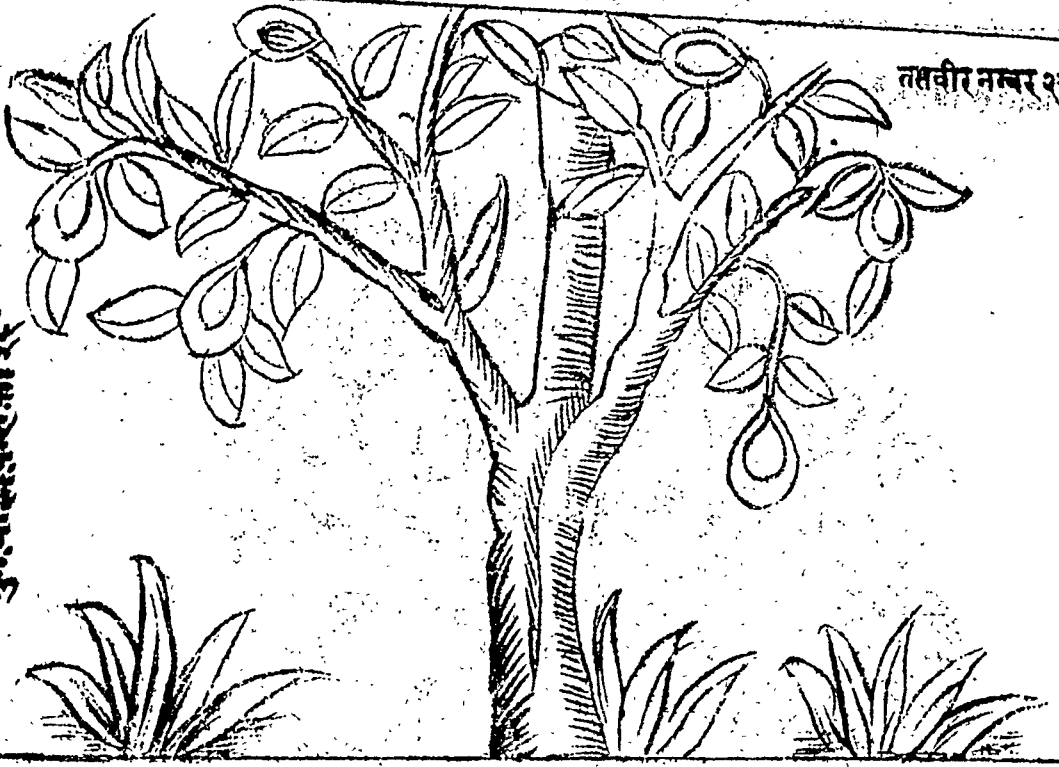
तसवीर नम्बर २३३

मुतअल्लिके सफ़ा २५८

तसवीर नम्बर २३४

तसवीर नम्बर २३५
तसवीर नम्बर २३६
तसवीर नम्बर २३७

मुतअल्लिक़े सफ़ा ३६१
तसवीर नम्बर २३८
तसवीर नम्बर २३९
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३६३
तसवीर नम्बर २४०
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३६४
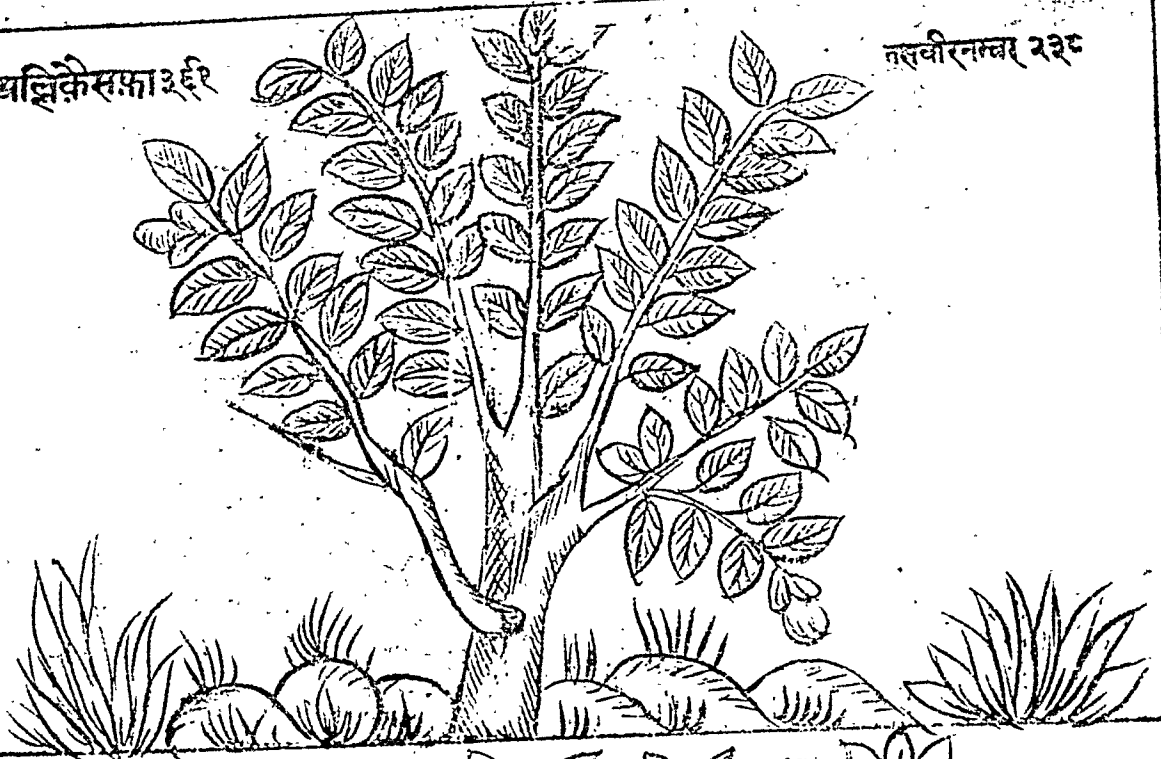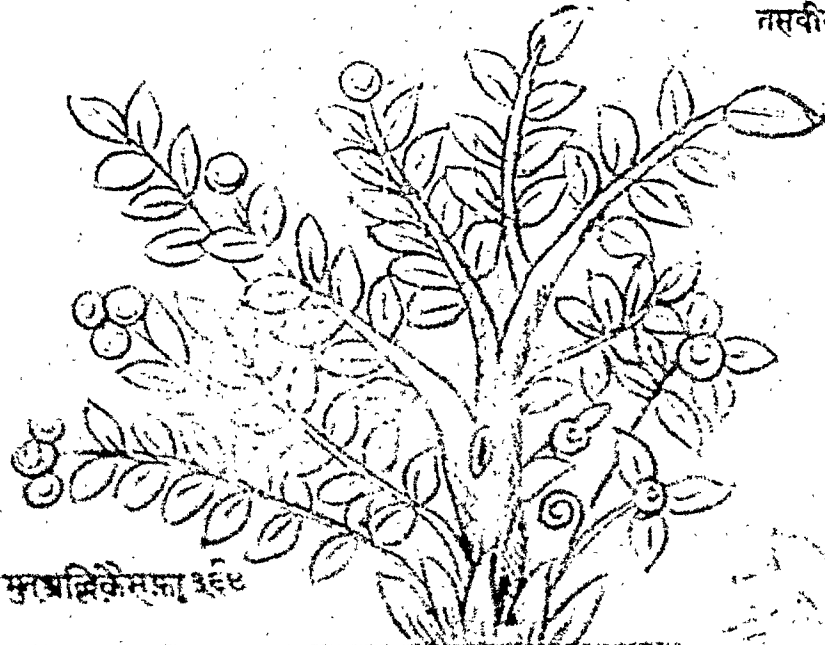
मुतअल्लिक़ेसफ़ा २६४ तसवीर नम्बर २४१
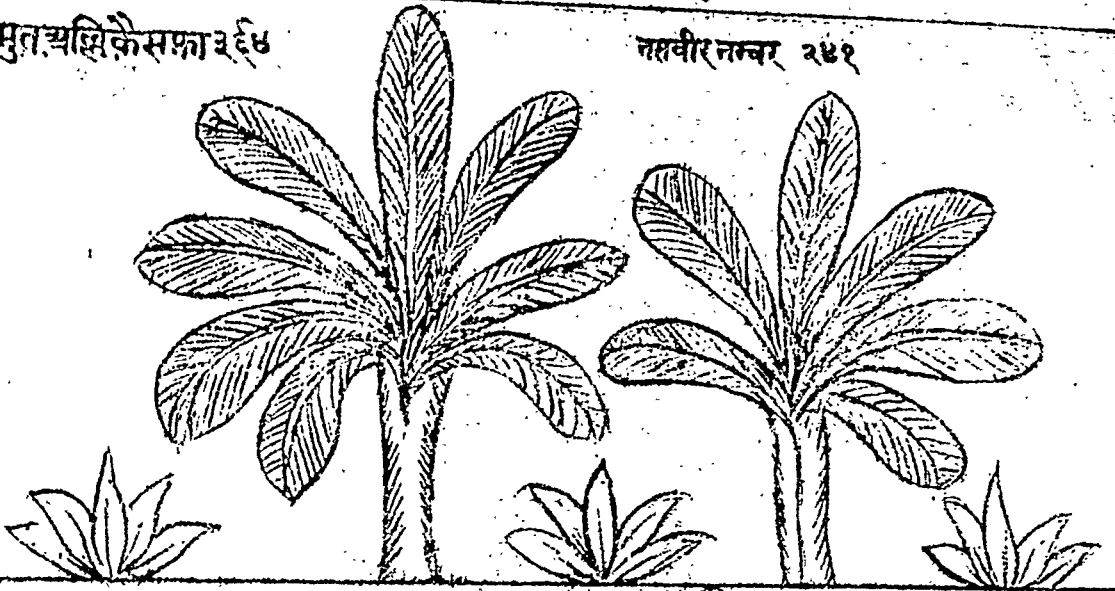
मुतअल्लिक़ेसफ़ा २६५ तसवीर नम्बर २४२

मुतअल्लिक़ेसफ़ा २६५ तसवीर नम्बर २४३
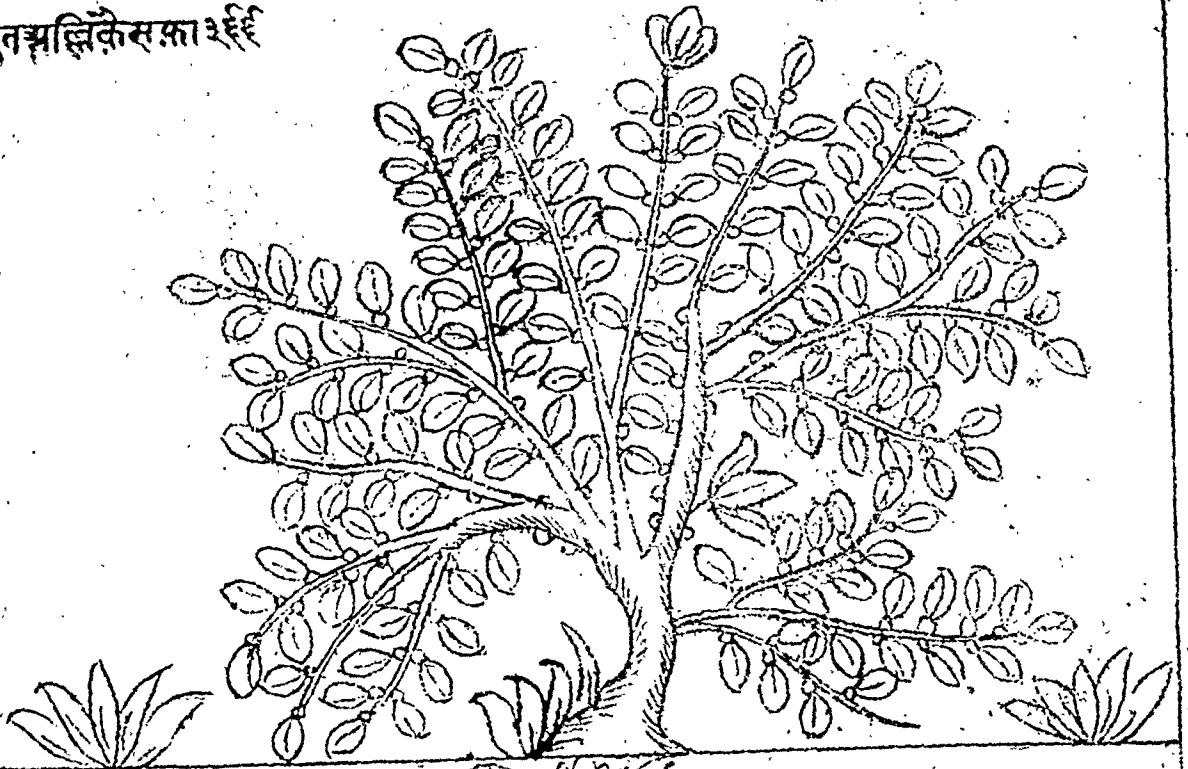
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २६६
तसवीर नम्बर २४४
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २६८
तसवीर नम्बर २४५
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २६९
तसवीर नम्बर २४६
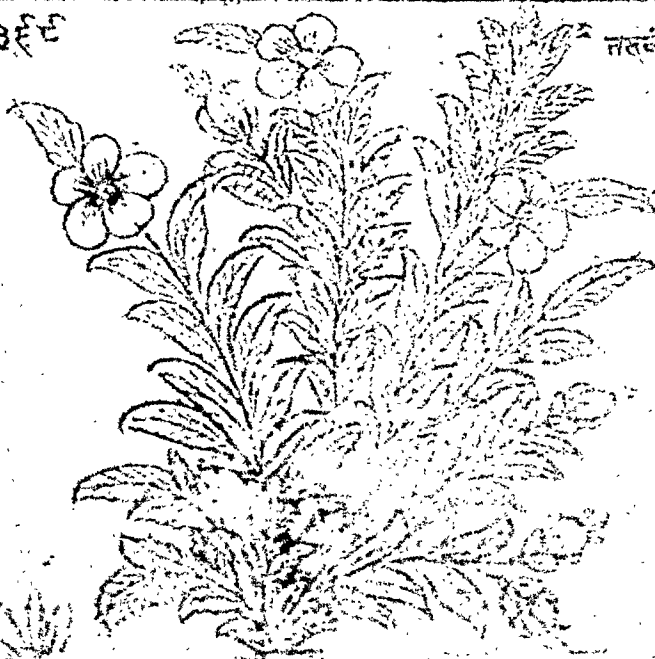
तसवीर नम्बर २४७

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३६९
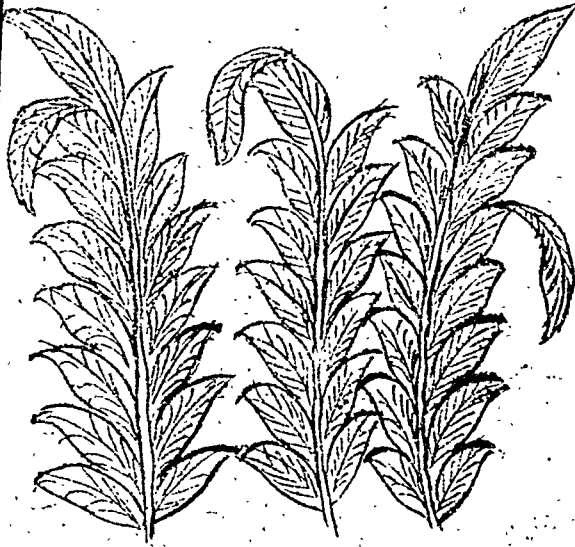
तसवीर नम्बर २४८

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३७०
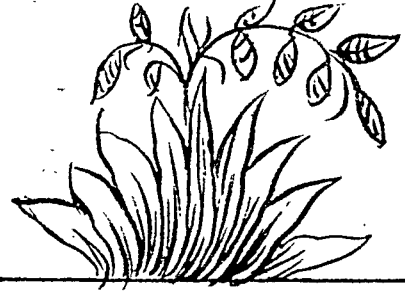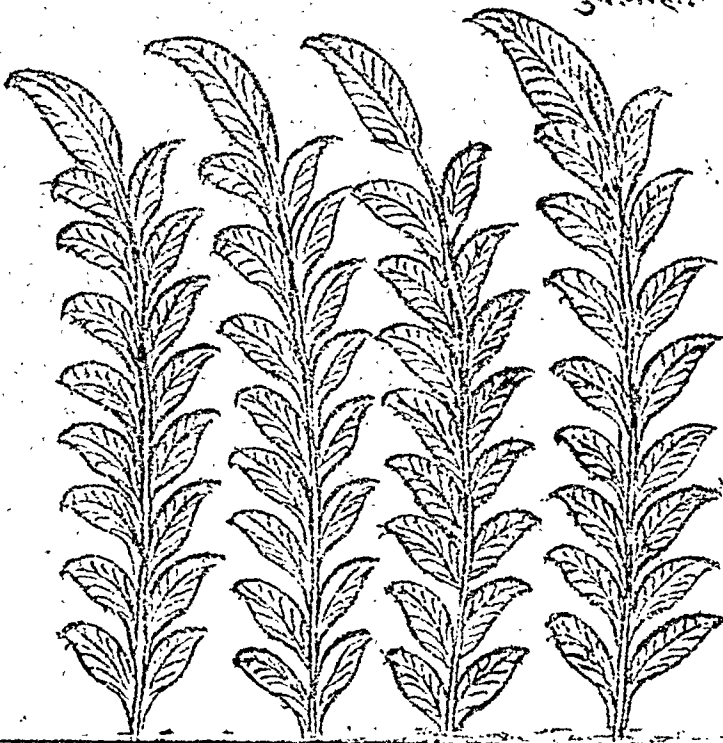
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३७१

तसवीर नम्बर २४९

तस्वीर नम्बर २५०
मुतअल्लिक़ेसफ़ा ३७१
तस्वीरनम्बर २५१
मुतअल्लिक़ेसफ़ा ३७१
तस्वीरनम्बर २५२
मुतअल्लिक़ेसफ़ा ३७२

तस्वीर नम्बर २५९
मुतअल्लिके सफ़ा २७५
तस्वीर नम्बर २६०
मुतअल्लिके सफ़ा २७६
तस्वीर नम्बर २६१
मुतअल्लिके सफ़ा २७६
तस्वीर नम्बर २६२
मुतअल्लिके सफ़ा २७६
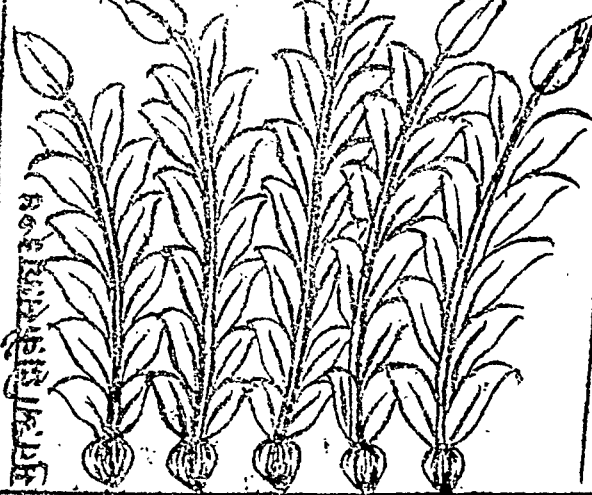
तसवीरनम्बर २६३

मुतअल्लिक़ेसफ़ा २७६
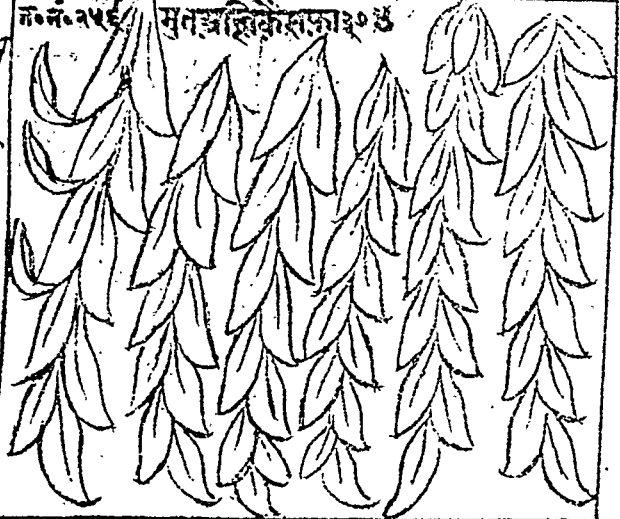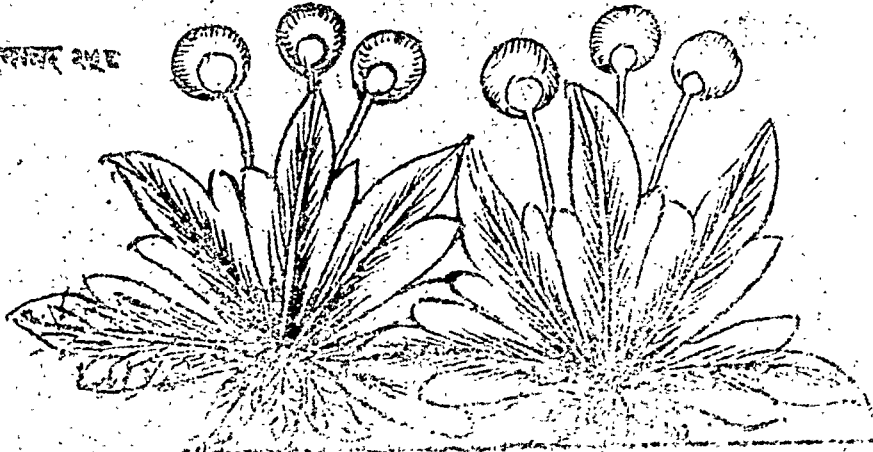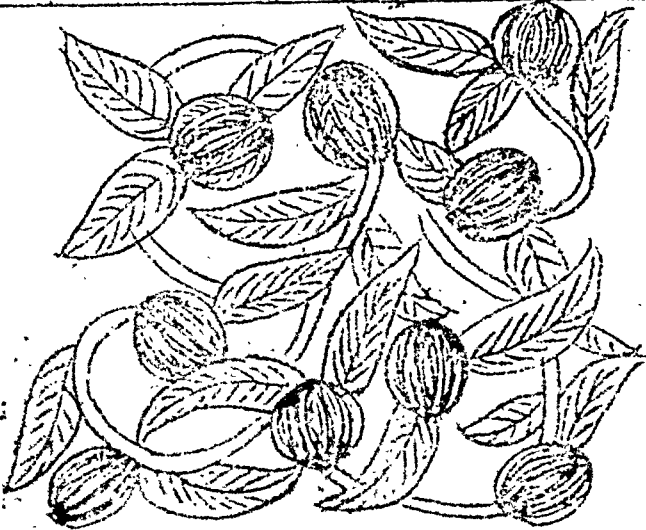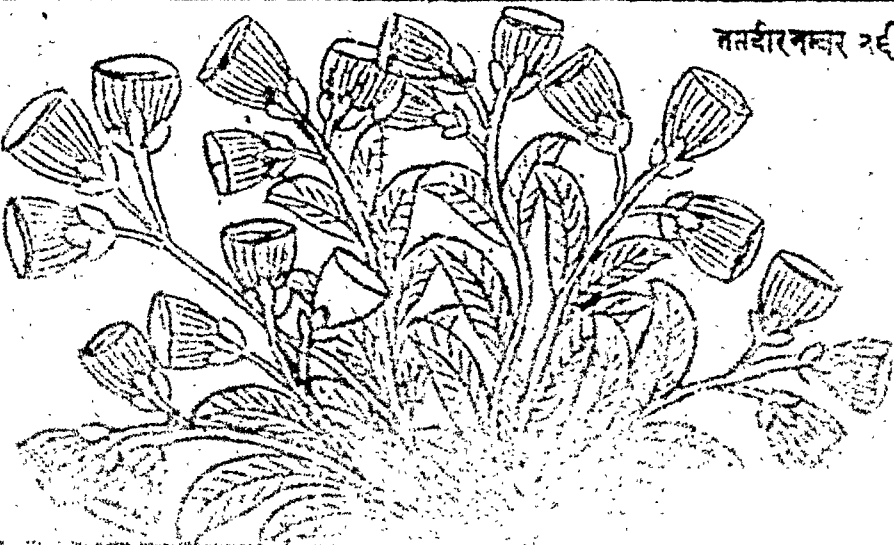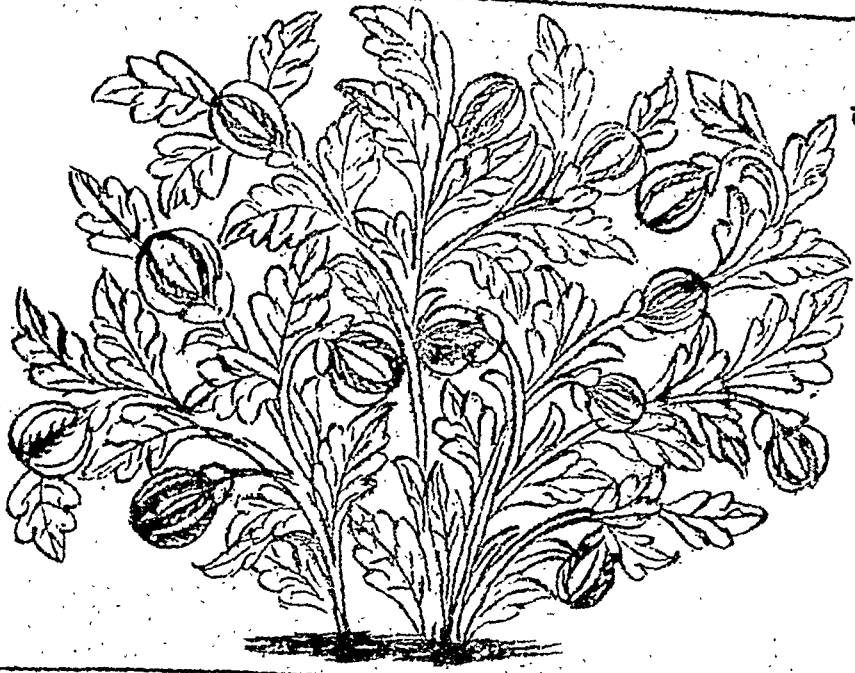
मुतअल्लिक़ेसफ़ा २७७

तसवीरनम्बर २६४

तसवीरनम्बर २६५

मुतअल्लिक़ेसफ़ा २७८

मुतअल्लिक़े सफ़ा ३७८
तसवीरनम्बर २६६
तसवीरनम्बर २६७
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३७८
तसवीरनम्बर २६८
मुतअल्लिक़े सफ़ा ३७९
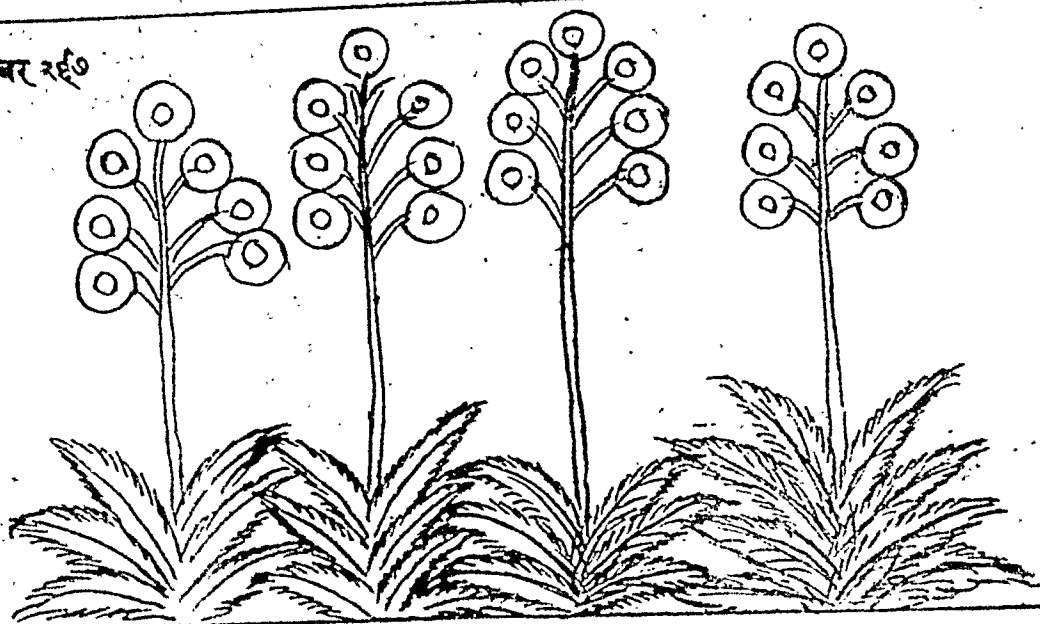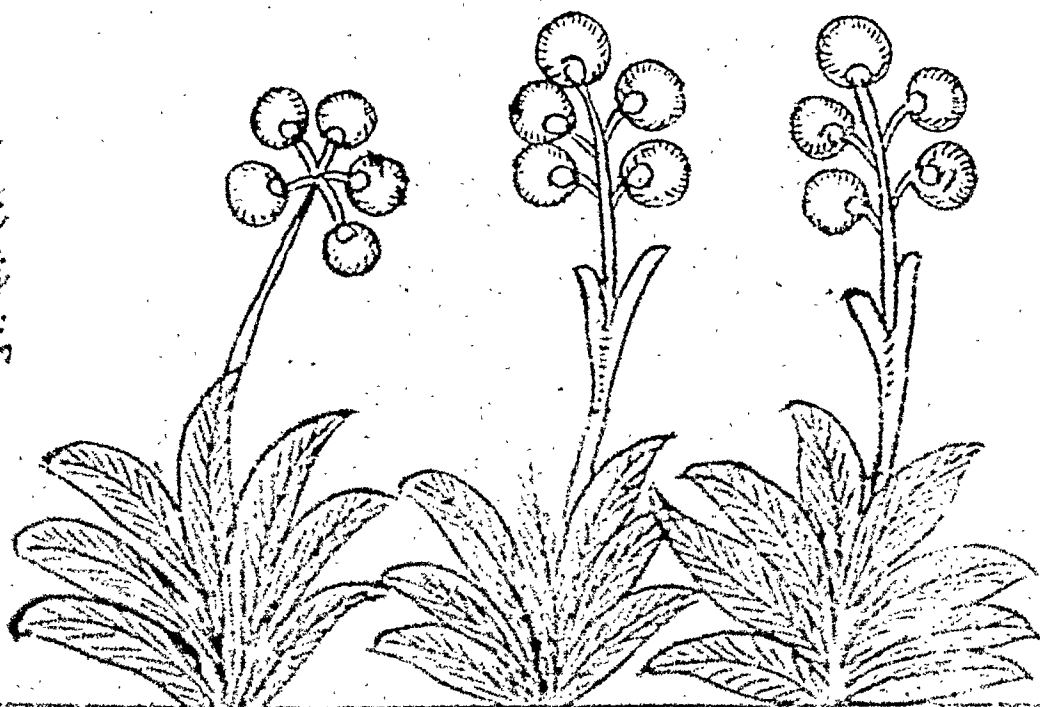
मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा २७९
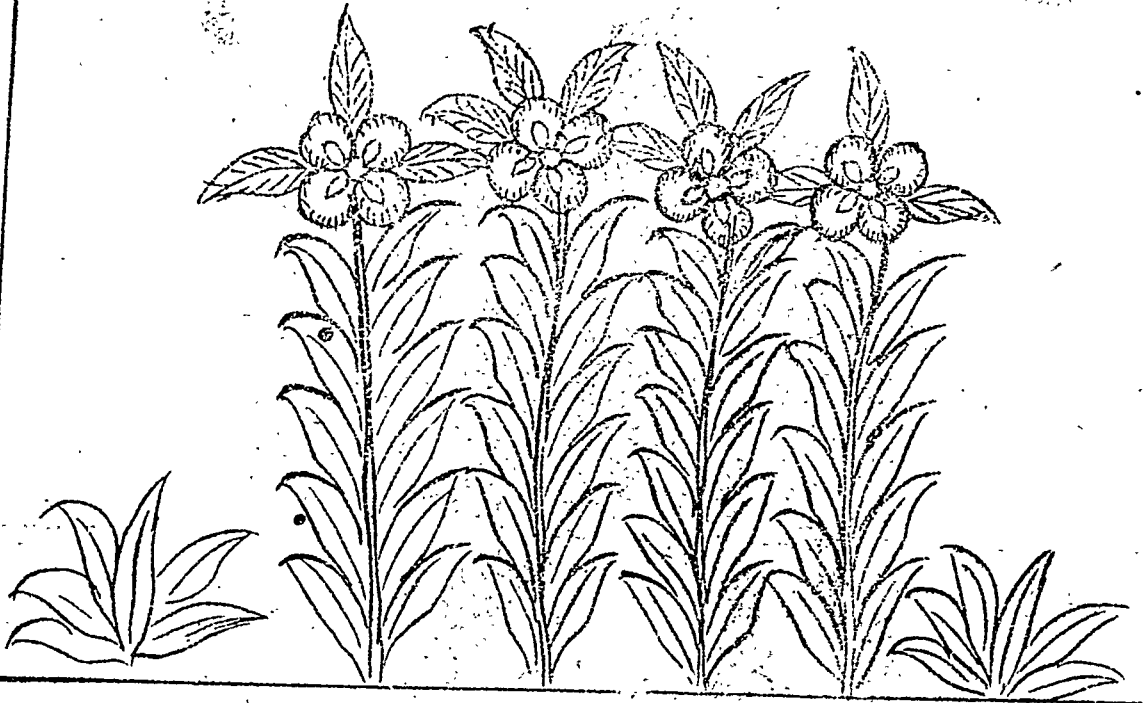
तसवीरनम्बर २६९

मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा २८०

तसवीरनम्बर २७०

तसवीरनम्बर २७१

मुतअ़ल्लिक़ेसफ़ा २८०

तसवीर नम्बर २७२
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३८०
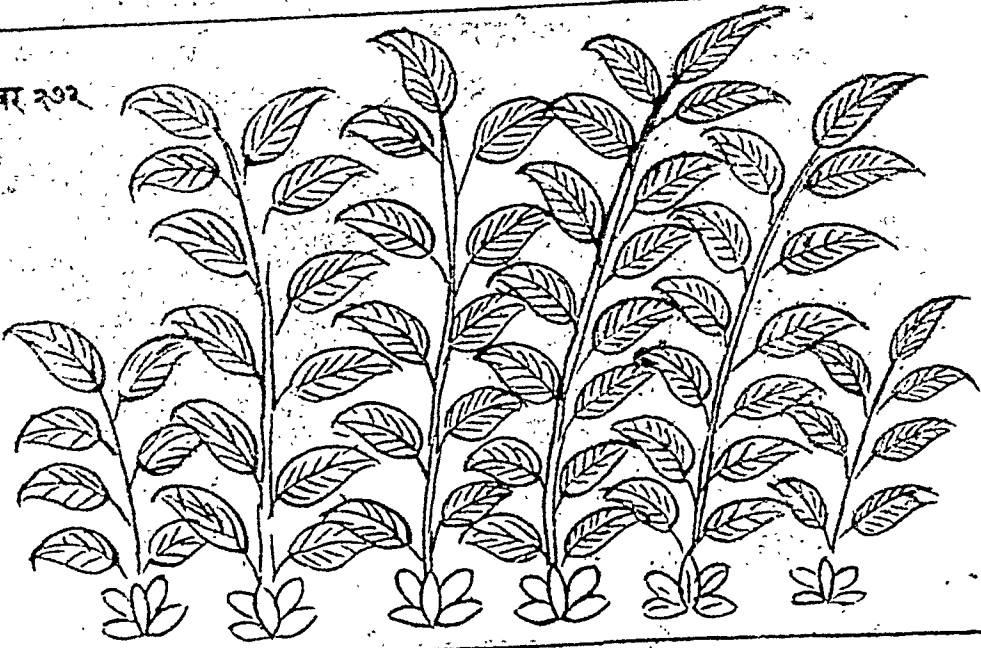
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३८१
तस्वीर नम्बर २७३
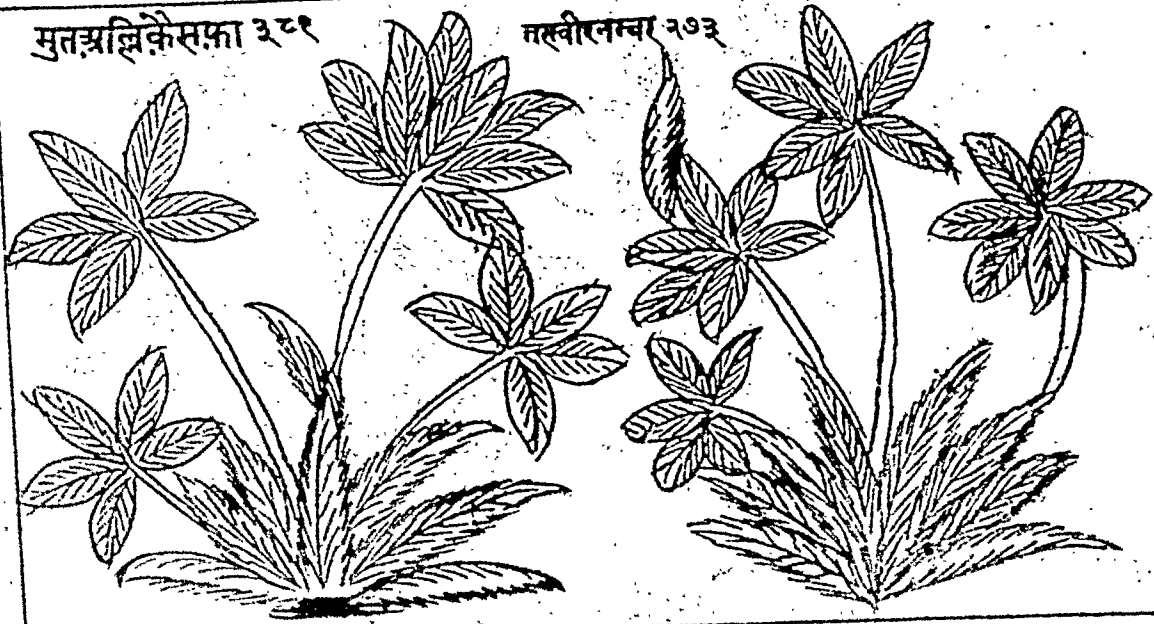
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ३८१
तसवीर नम्बर २७४
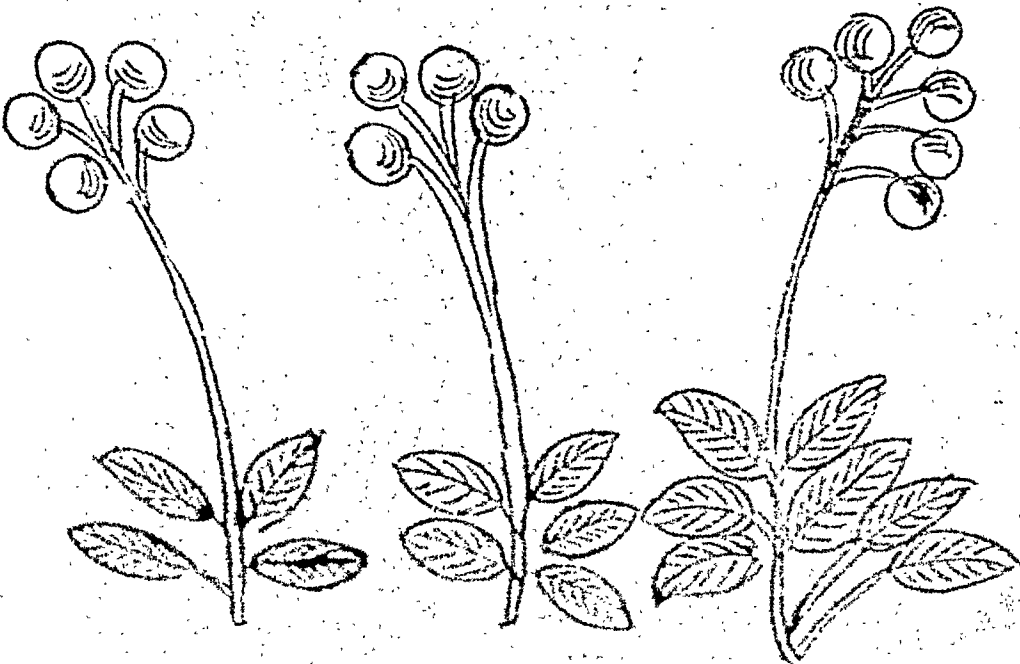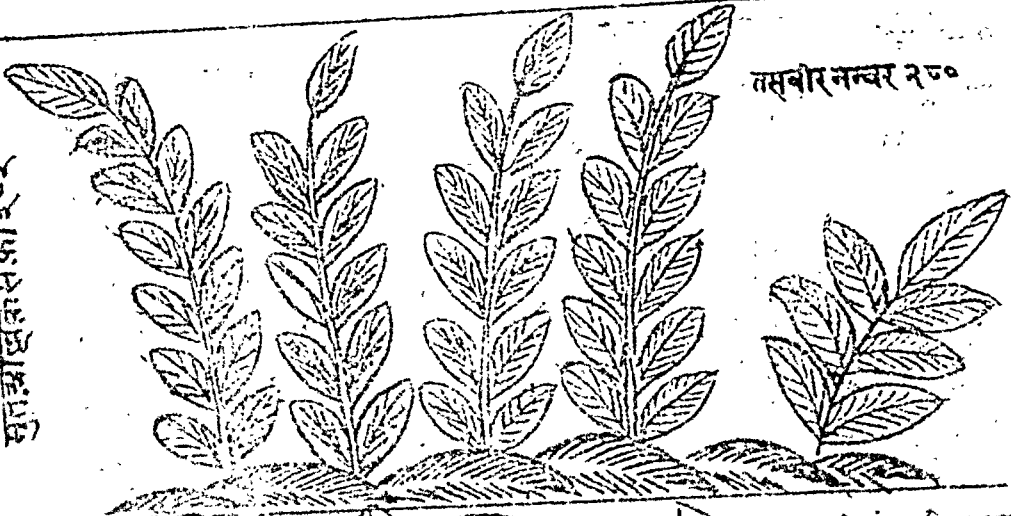
मुतअल्लिक़ै सफ़ा ३०३
तसवीर नम्बर २७९
तसवीर नम्बर २८०
तसवीर नम्बर २८१
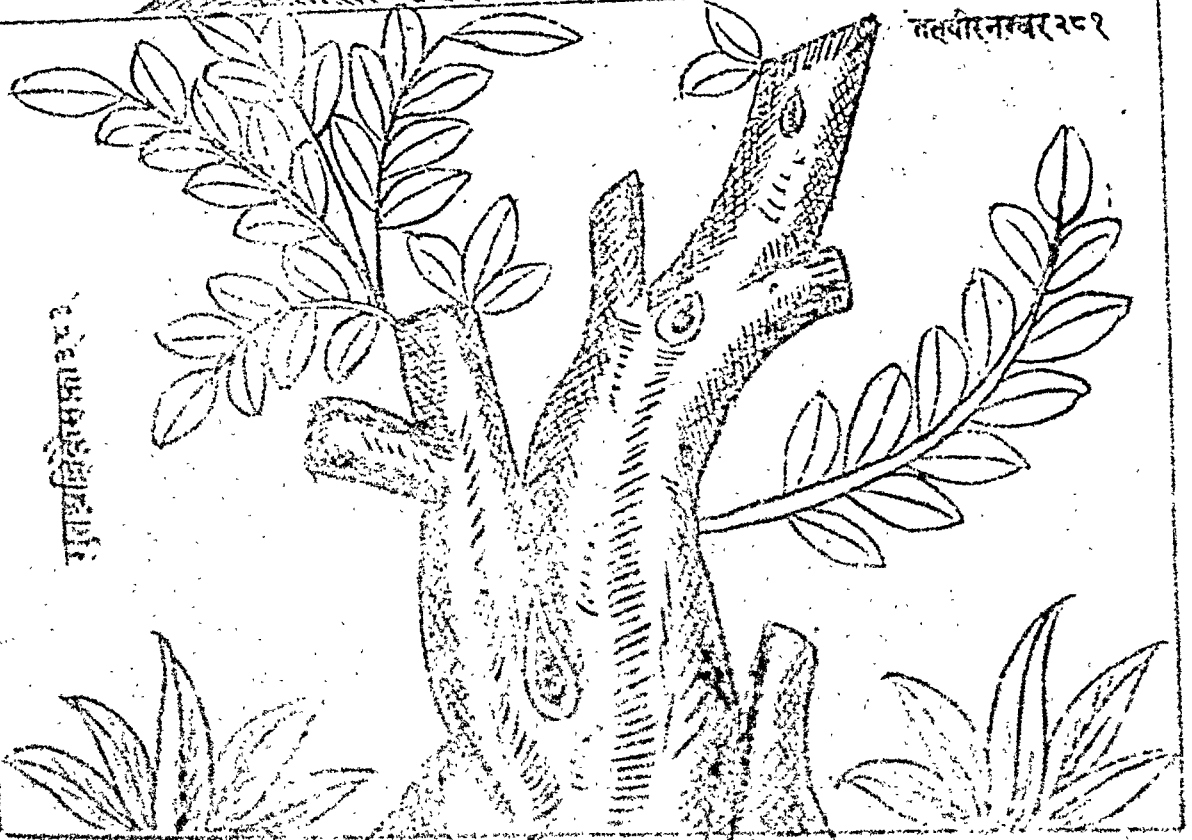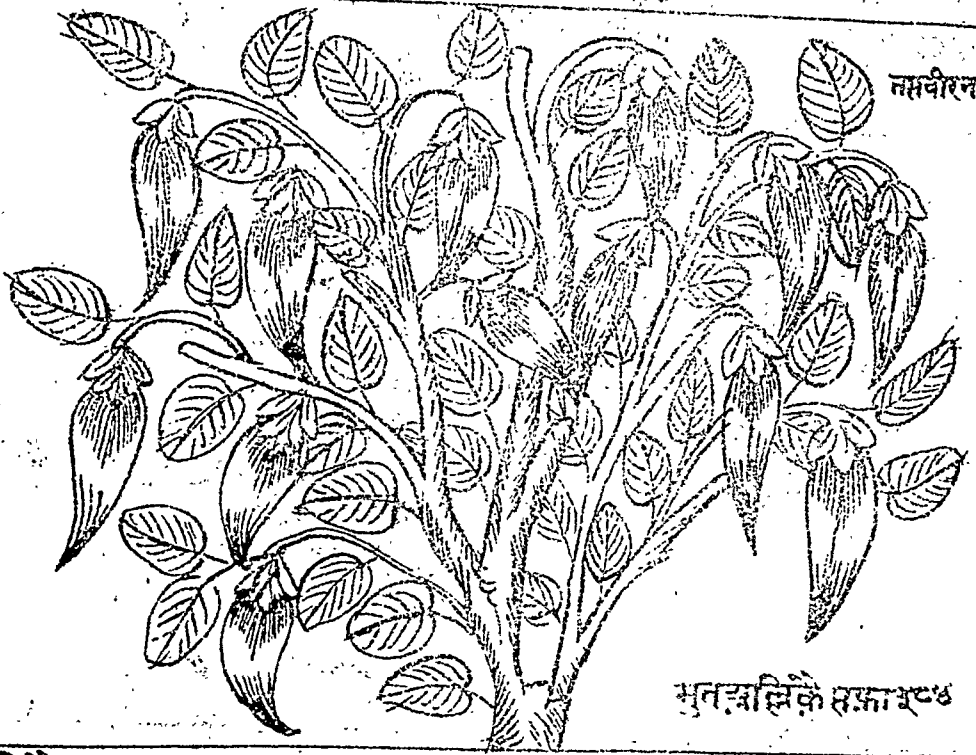
तसवीर नम्बर २८२

मुतअल्लिके सफ़ा ३८४

मुतअल्लिके सफ़ा ३८४

तसवीर नम्बर २८३

मुतअल्लिके सफ़ा ३८५

तसवीर नम्बर २८४
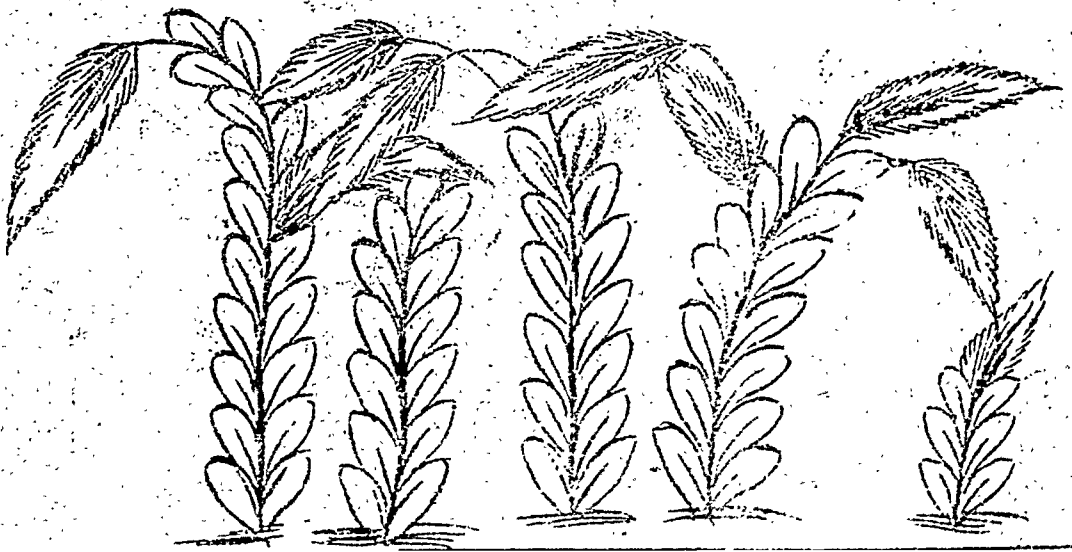
मुतअल्लिक़ै सफ़ा ३९५

तसवीर नम्बर २९५

तसवीर नम्बर २९६

मुतअल्लिक़ै सफ़ा ३९५

मुतअल्लिक़ै सफ़ा ३९६
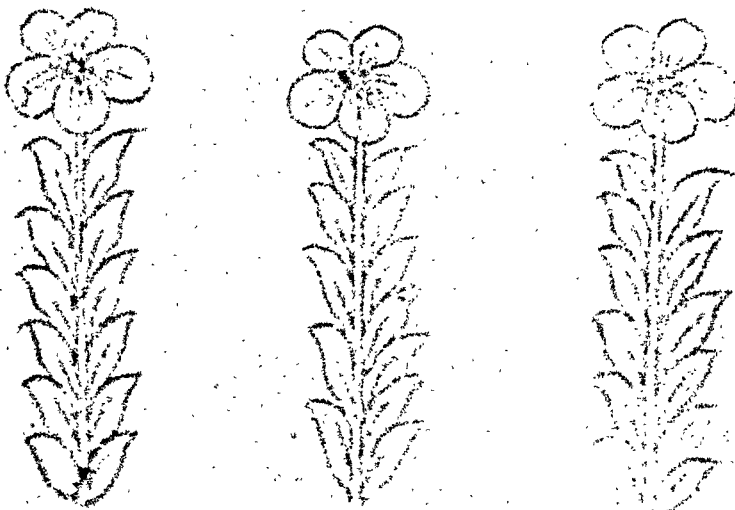
तसवीर नम्बर २९७
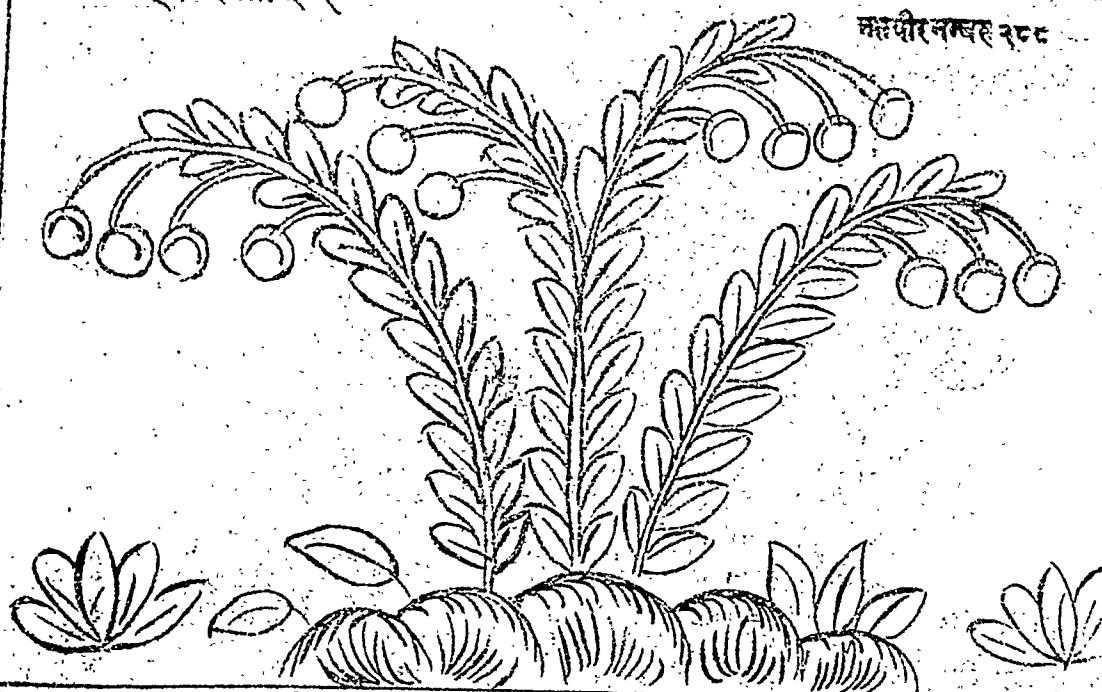
मुनअक्सि को सफ़ा ३०६
तस्वीर नम्बर २८८
तस्वीर नम्बर २८९
मुनअक्सि को सफ़ा ३०७
मुनअक्सि को सफ़ा ३०७
तस्वीर नम्बर २९०

मुतअ़ल्लिक़ैसफ़ा ३८७
तसवीरनम्बर २९१

मुतअ़ल्लिक़ैसफ़ा ३८८
तसवीरनम्बर २९२

मुतअ़ल्लिक़ैसफ़ा ३८८
तसवीरनम्बर २९३

मुतअल्लिक़े सफ़ा २८९
तसवीर नम्बर २९४
तसवीर नम्बर २९५
मुतअल्लिक़े सफ़ा २८९
तसवीर नम्बर २९६
मुतअल्लिक़े सफ़ा २९०

तसवीर नम्बर २९७ मुतअल्लिक़ै सफ़ा ३९०

तसवीर नम्बर २९८
मुतअल्लिक़ै सफ़ा ३९१

मुतअल्लिक़ै सफ़ा ३९१ तसवीर नम्बर २९९

तसवीर नम्बर ३००

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४६७
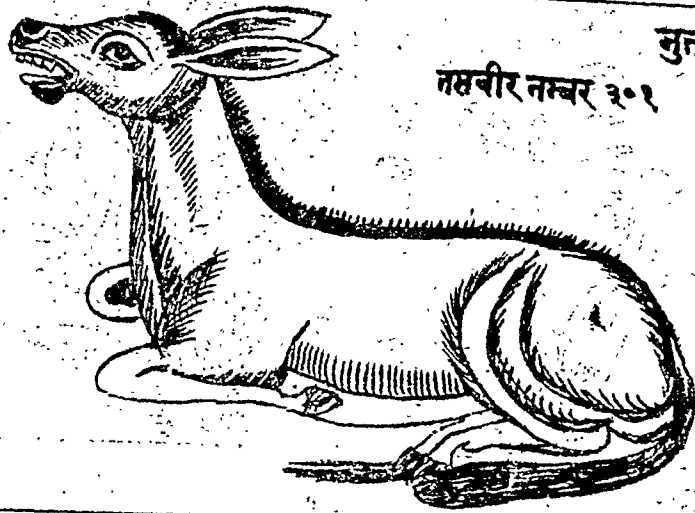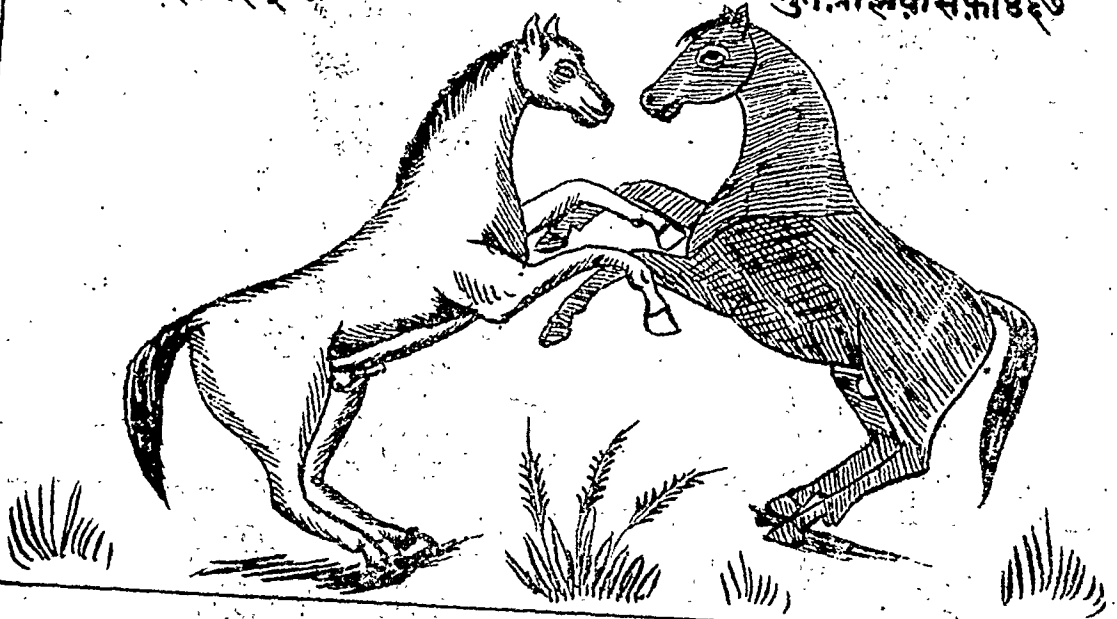
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४६८

तसवीर नम्बर ३०१
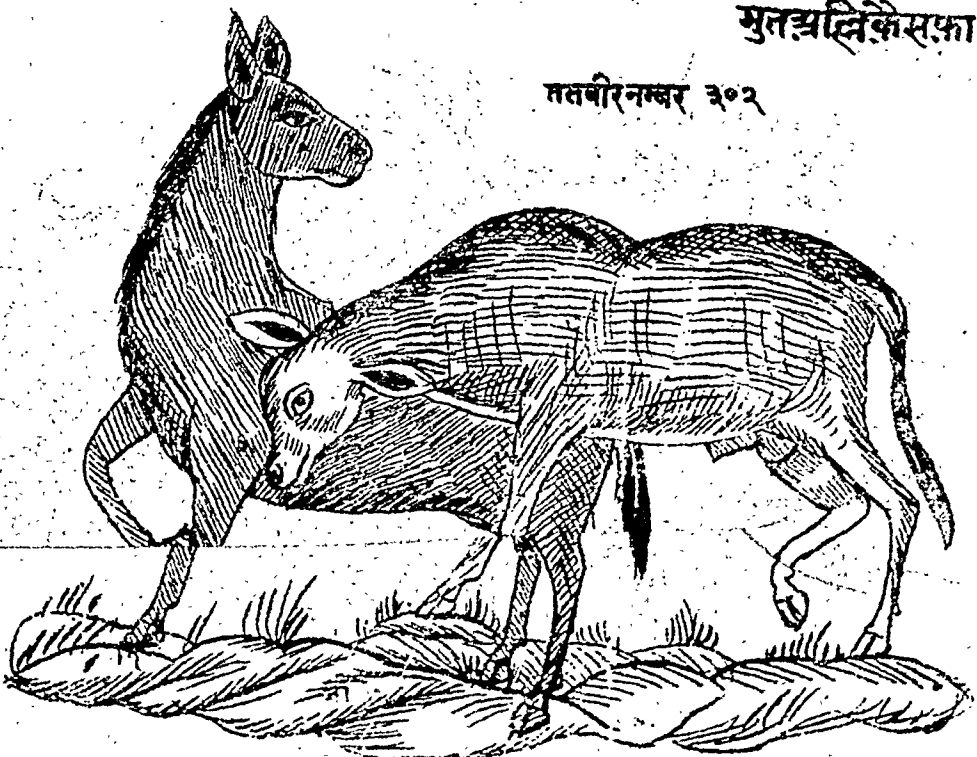
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४७०

तसवीर नम्बर ३०२
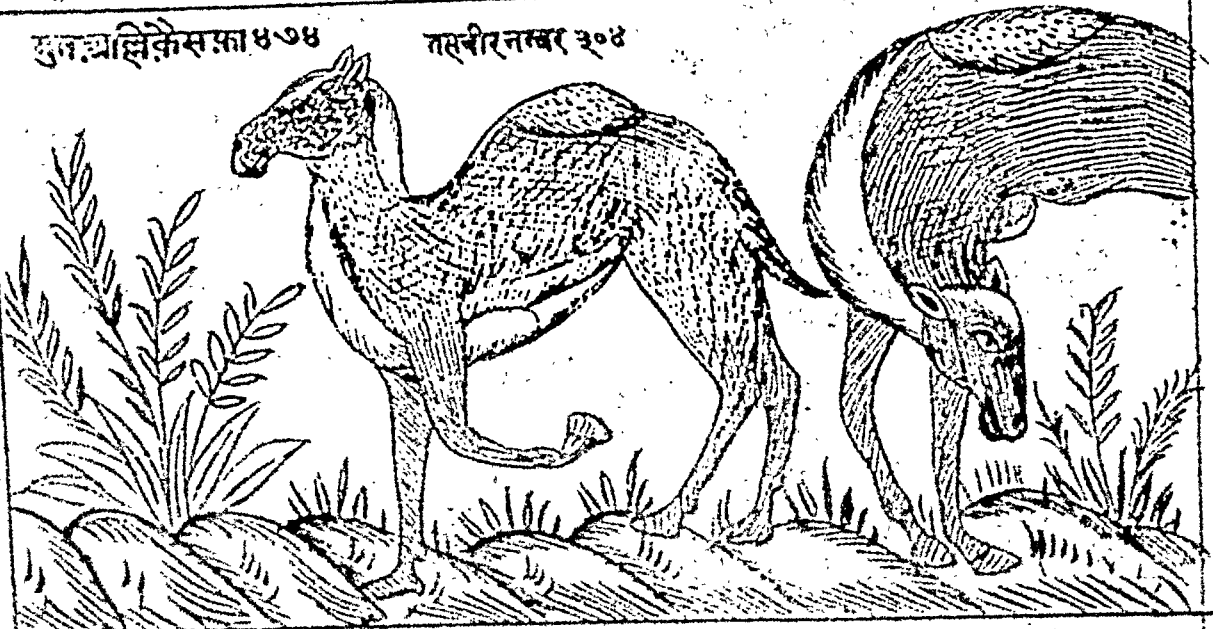
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४७१
तसवीर नम्बर ३०३
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४७४
तसवीर नम्बर ३०४
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४७७
तसवीर नम्बर ३०५

तसवीर नम्बर २०६
मुतअल्लिक़ सफ़ा ७७८
मुतअल्लिक़ सफ़ा ७७६
तसवीर नम्बर २०७
मुतअल्लिक़ सफ़ा ७७६
तसवीर नम्बर २०८
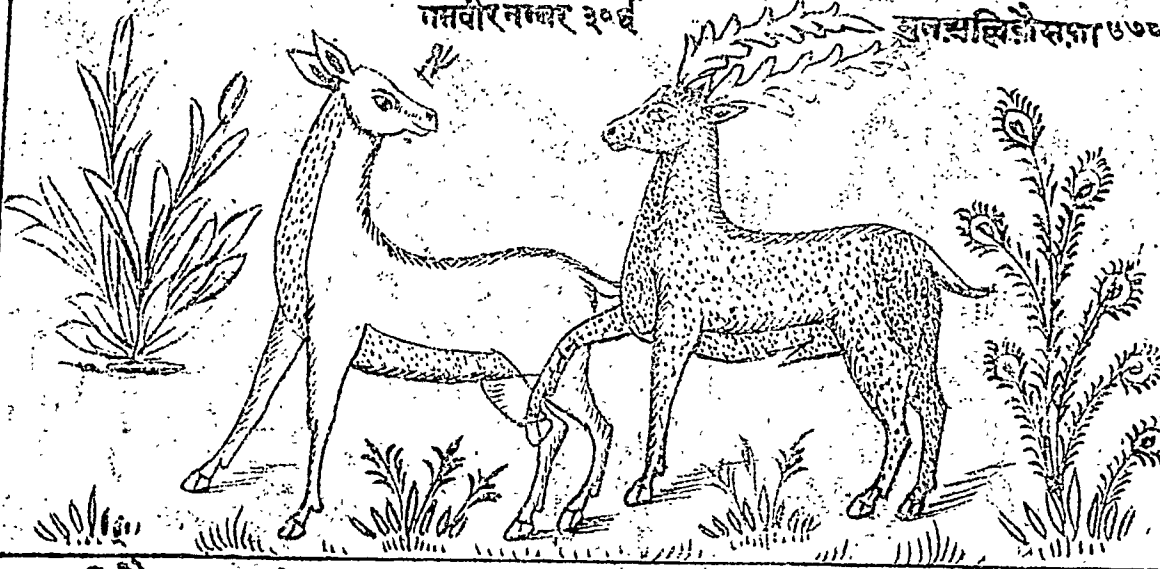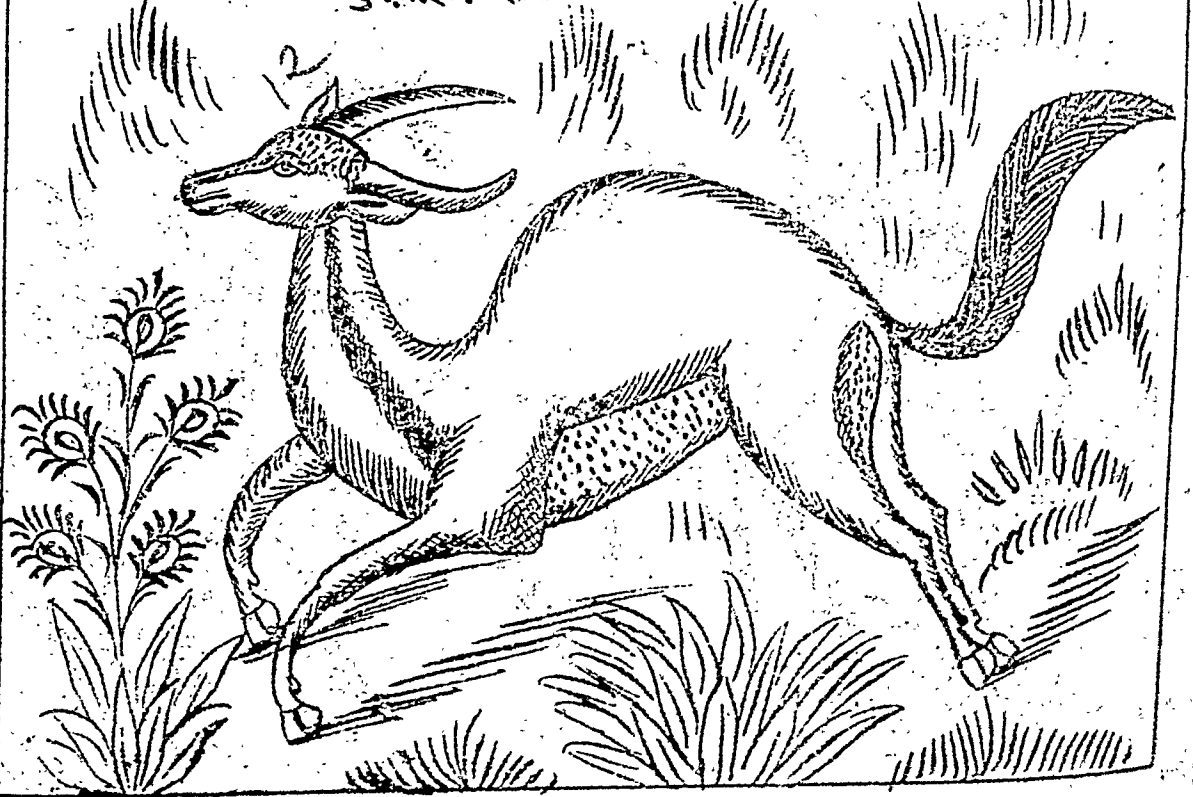
मुतअल्लिक़ेसफ़ा ४८० तसवीर नम्बर ३०९
तसवीर नम्बर ३१० मुतअल्लिक़ेसफ़ा ४८२
तसवीर नम्बर ३११
मुतअल्लिक़ेसफ़ा ४८३
मुतअल्लिक़ेसफ़ा ४८५
तसवीर नम्बर ३१२
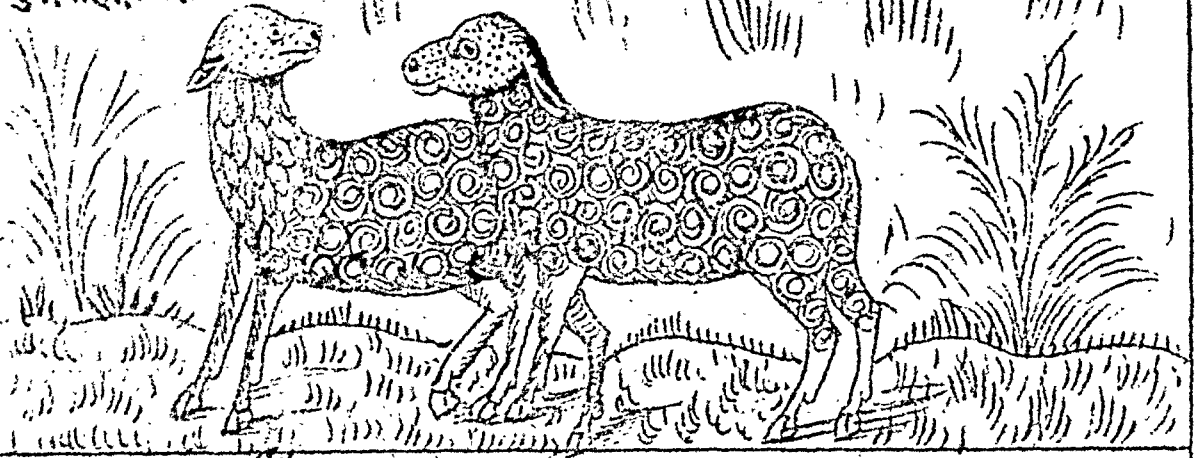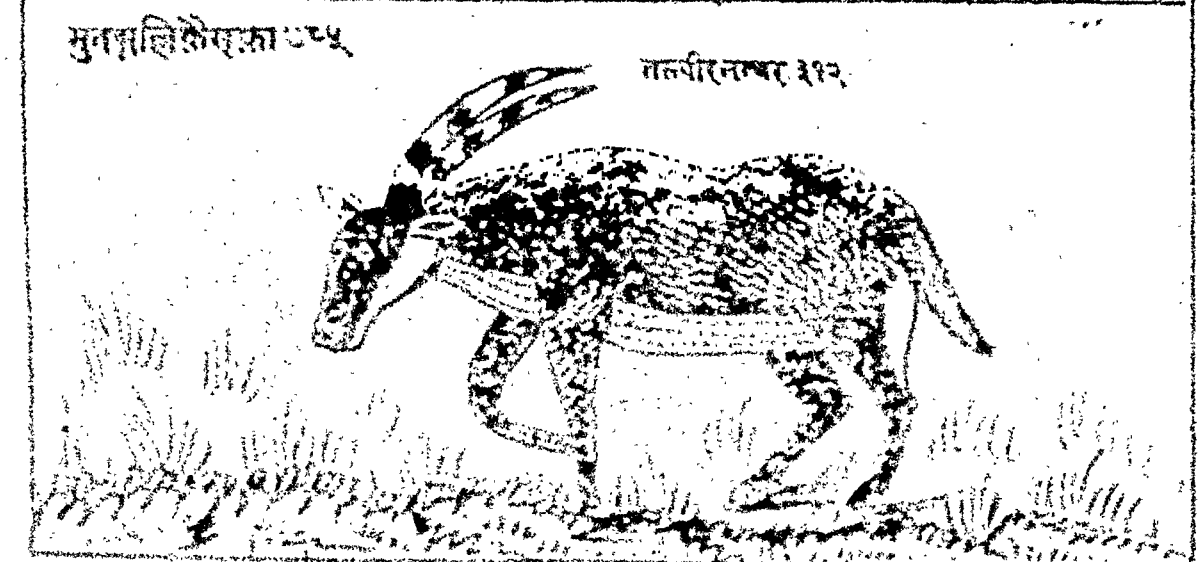
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४८५
तसवीर नम्बर ३१३
तसवीर नम्बर ३१४
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४८६
तसवीर नम्बर ३१५
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४८७
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४८८
तसवीर नम्बर ३१६
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ४८९
तसवीर नम्बर ३१७

मुतअल्लिक़े सफ़ा ४८१
तसवीर नम्बर ३१८
तसवीर नम्बर ३१९
तसवीर नम्बर ३२०
तसवीर नम्बर ३२१
तसवीर नम्बर ३२२

तसवीर नम्बर ३२३
अजायबुल मख़लूक़ात सफ़ा ४९७
तसवीर नम्बर ३२४
तसवीर नम्बर ३२५
तसवीर नम्बर ३२६

तसवीर नम्बर ३२९

तसवीर नम्बर ३३१

तसवीर नम्बर २३२

मुतअल्लिक़ह सफ़ा ४०४

तसवीर नम्बर २३३

मुतअल्लिक़ह सफ़ा ४०४

तसवीर नम्बर २३४

मुतअल्लिक़ह सफ़ा ४०५

तसवीर नम्बर २३५

मुतअल्लिक़ह सफ़ा ४०५

तसवीर नम्बर २३६

मुतअल्लिक़ह सफ़ा ४०६

त० नं० ३४२

त० नं० ३४३

त० नं० ३४४
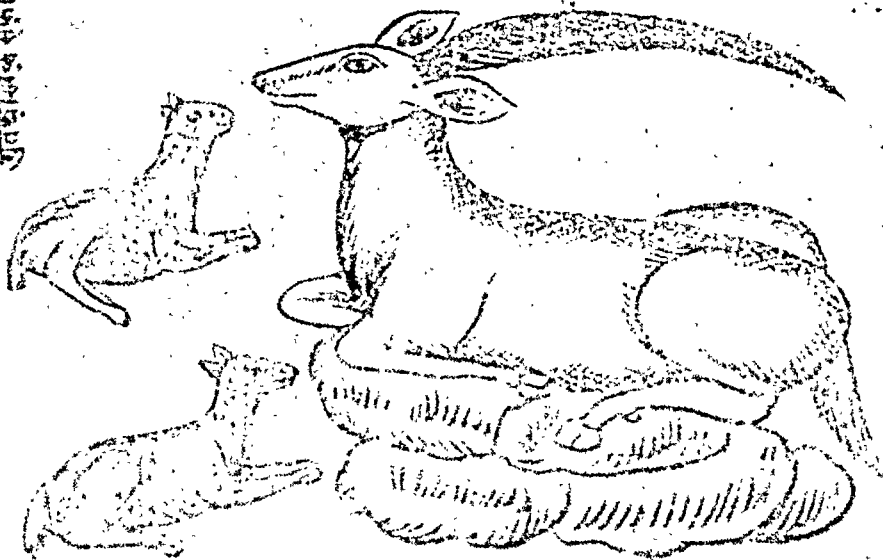
तसवीर नम्बर ३४५

तसवीर नम्बर ३४६

तसवीर नम्बर ३४७

तसवीर नम्बर ३४८

तसवीर नम्बर ३४९

तसवीर नम्बर ३५०

तसवीर नम्बर ३५१

तसवीर नम्बर ३५२

तसवीर नम्बर ३५३

मुतअ़ल्लिके सफ़ा ५३३
तसवीर नम्बर ३७४
मुतअ़ल्लिके सफ़ा ५३३
तसवीर नम्बर ३७५
मुतअ़ल्लिके सफ़ा ५३४
तसवीर नम्बर ३७६
मुतअ़ल्लिके सफ़ा ५३६
तसवीर नम्बर ३७७

तसवीर नम्बर २७८
तसवीर नम्बर २८०

तसवीर नम्बर ३८५
तसवीर नम्बर ३८६
तसवीर नम्बर ३८७
तसवीर नम्बर ३८८
तसवीर नम्बर ३८९
तसवीर नम्बर ३९०
तसवीर नम्बर ३९१
तसवीर नम्बर ३९२
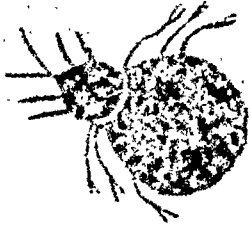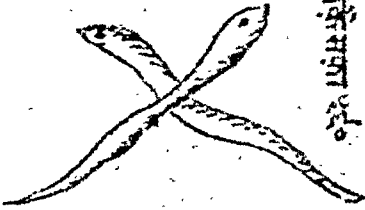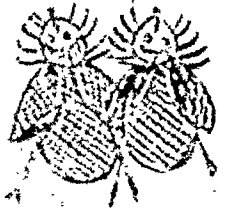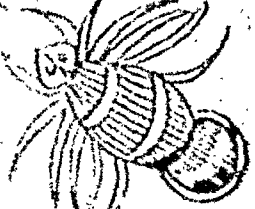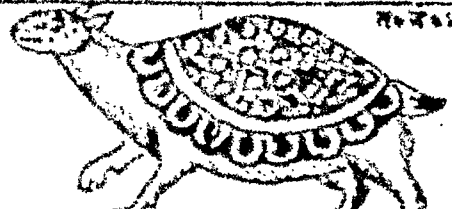
तसवीर नम्बर ३६२
तसवीर नम्बर ३६४ मुताबिक़ सफ़ा ५५५
मुताबिक़ सफ़ा ५५६

तसवीर नम्बर ४०५
तसवीर नम्बर ४०८
तसवीर नम्बर ४११
तसवीर नम्बर ४१५

तसवीर नम्बर ४१७
खतख़ालिकी सफ़ा ५६७
तसवीर नम्बर ४१८
तसवीर नम्बर ४१९
खतख़ालिकी सफ़ा ५६८
तसवीर नम्बर ४२०
तसवीर नम्बर ४२१
तसवीर नम्बर ४२२
तसवीर नम्बर ४२३
तसवीर नम्बर ४२४
तसवीर नम्बर ४२५
तसवीर नम्बर ४२६
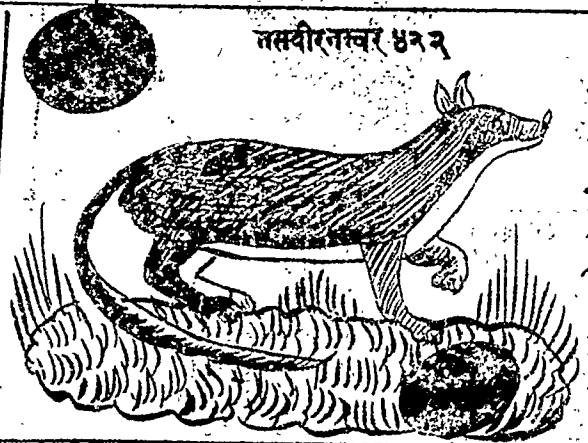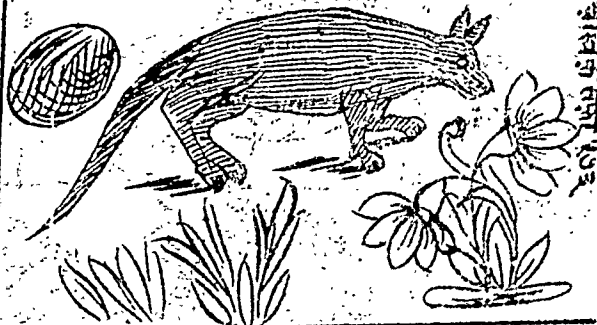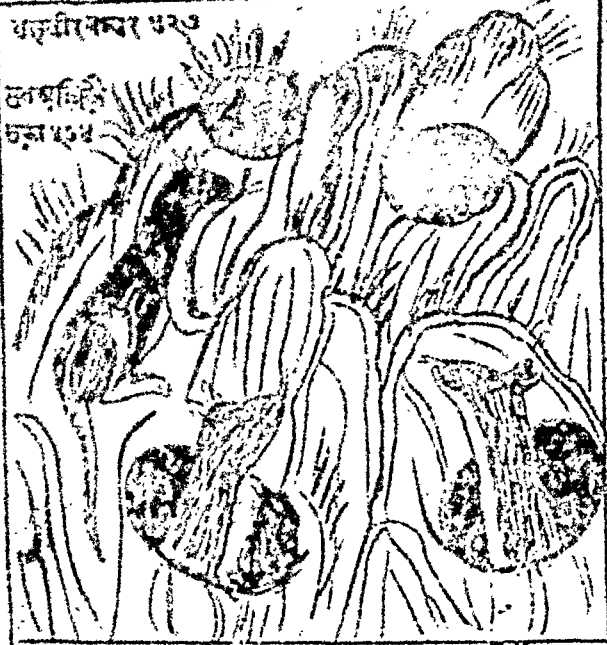
तसवीर नम्बर ४२७
तसवीर नम्बर ४२८
तसवीर नम्बर ४२९
तसवीर नम्बर ४३०
तसवीर नम्बर ४३१
तसवीर नम्बर ४३२
तसवीर नम्बर ४३३
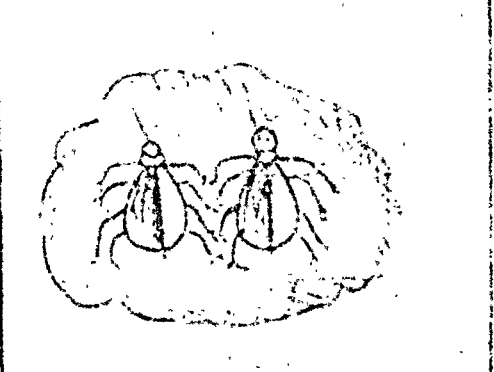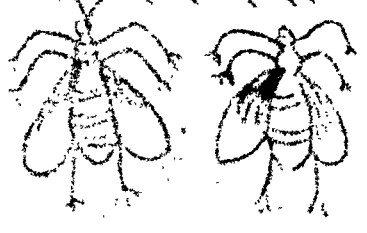
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५८३
तसवीर नम्बर ४३४
तसवीर नम्बर ४३५
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५८३
तसवीर नम्बर ४३६
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५८३
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५८३
तसवीर नम्बर ४३७
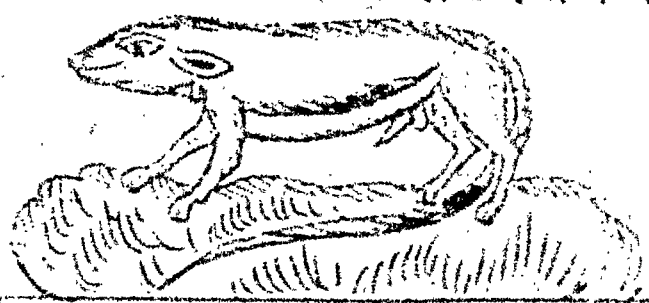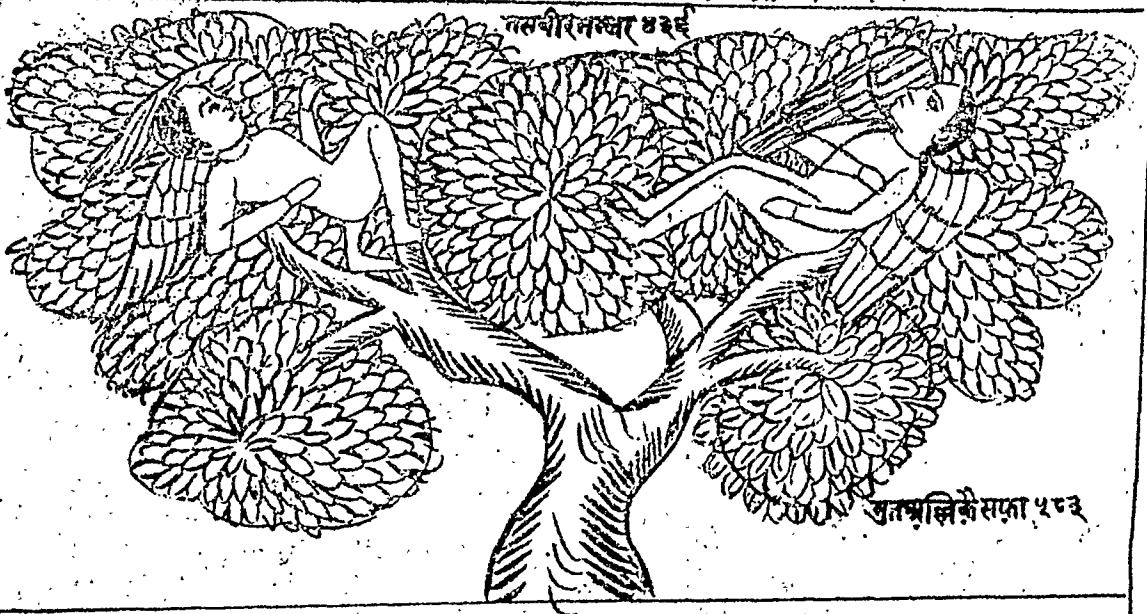
तस्वीर नम्बर ४३८
तस्वीर नम्बर ४३९
तस्वीर नम्बर ४४०

मुतअल्लिके सफ़ा ५८४
तसवीर नम्बर ४४१
तसवीर नम्बर ४४२
मुतअल्लिके सफ़ा ५८४
मुतअल्लिके सफ़ा ५८५
तसवीर नम्बर ४४३

तसवीर नम्बर ४४८
मुतअ़ल्लिके सफ़ा ४८५
तसवीरनम्बर ४४९
मुतअ़ल्लिके सफ़ा ४८५
मुतअ़ल्लिके सफ़ा ४८६
तसवीरनम्बर ४५०

तसवीर नम्बर ४५२
तसवीर नम्बर ४५३

मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५८६
तसवीर नम्बर ४५५
तसवीर नम्बर ४५६
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५८७
मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा ५८८
तसवीर नम्बर ४५७

मुताबिक़ सफ़ा १८८
तसवीर नम्बर ५५८
मुताबिक़ सफ़ा १८८
तसवीर नम्बर ५५९
मुताबिक़ सफ़ा १८६
तसवीर नम्बर ५६०
मुताबिक़ सफ़ा १८६
तसवीर नम्बर ५६१

इति

आकाश कि उस पर कोई ग्रह नहीं अतलसकी तरह सादाहै औ
सबसे बड़ाहै व सबको घेरे है इसलिये उसको अतलसका आका
व बड़ा आकाश भी कहते हैं और प्रत्येकआकाशको एकस्थान मुक़
नियतहै कि वह अपने स्थानसे दूसरे स्थान पर नहीं जाता परन्
अपने स्थानपर चलायमानहै एक क्षण भी नहीं ठहरता और चक्र
आकाशकीअतीवशीघ्रहै जिस पदार्थकी शीघ्रतामानलीजाययहांतक
बीज गणितमें साबित हुआहै जितनी देरमें बड़ा दौड़ने वालाघोड़
अगले दोनों पांवउठाकर पृथ्वीपर रक्खे उतनीदेरमेंबड़ा आकाश३
सहस्रकोशचले अबजाननाचाहिये किबड़ा आकाश चलायमान होता
है पूर्व्वसे पश्चिम ओरको और शेष आठ आकाश आकाशोंके आकाश
के विरुद्ध पश्चिमसे पूर्व्वको चलतेहैं और ग्रह अपने२ आकाशों के
साथ चलते हैं परन्तु चर ग्रहें आप भी चलाय मान हैं और एक
आकाश दूसरे आकाशको पूरे तौरसे घेरेहै इस रूपसे जोकि नीचे
रूप बनाहै ॥

तसवीर नम्बर १

दूसरी दृष्टि चन्द्रित आकाशके वर्णन में ॥

चन्द्र आकाशके दोसतह गोल हैं और प्रत्येक समास्त हैं और
व्यास दोनों वृत्तका व्यास पृथ्वी है और उसकी बड़ी सतह आल
अर्थात् ऊर्द्ध सतहसे मिलीहुई है और सतह अर्द्ध बुधके आकाशसे
और सतह ऊर्द्धचन्द्रमाके आकाशसे कि वह अर्थात् नीचेकी सतहसे
मिलीहुई और सतह औंधाअग्निचक्रसे और चन्द्रमा की गति अपनी
निजचालसे२८दिवसमेंपूरीहोतीहै और चन्द्रित आकाशका दौरा१४
दिवसमें इसलिये २८ दिवसमें कि उसमें चन्द्रका दौरा पूराकरताहै
उतने समयमें बड़ामण्डल दोबार चक्रदेताहै पहिले दौरामें चन्द्रमाका
प्रकाशितमुखपृथ्वी की ओर होताहै अर्थात् द्वीजसे लेकर पूर्णमासी
तक औरदूसरा मध्यमें ऊपरकी ओरहोताहै तो उस समय अप्रकाशित
मुखचन्द्रमाका पृथ्वीकी ओरहोताहै उससमय से संसारमें अंध्यारा
होताहै मानोपृथ्वीके केन्द्रकी ओर चन्द्रमाकी पीठिहोती है इसलिये

पूर्णमासीसे लेकर अमावस तक चन्द्रमाका प्रकाश दिन प्रतिक्रम-
होताजाता है, इसलिये सम्पूर्ण मण्डल के चारभाग होते हैं उनमें
से तीनतो पृथ्वीकी परिधिहैं और चौथा जो छोटाहै परिधि नहीं हैं
जो परिधिहैं उनतीनोंमेंसे प्रथम जिसको शुक्रका मण्डल कहते हैं
उसकी दीर्घ धरातल बुध मण्डलकी धरातलसे मिलीहै, दूसरे को
सूर्य मण्डल कहते हैं कि बड़ी धरातल उसकी नीचेके मण्डलशुक्र
की धरातलसे मिलीहै तो उसकी धरातल का भीतरी अंग अग्नि-
मण्डलसे मिलीहै और मायल उसको इसकारण कहतेहैं कि वह
शुक्रकी ओर झुकाहै और केन्द्र उसका पृथ्वीका केन्द्रहै(तीसरे) को
बाहिरी केन्द्र कहते हैं क्योंकि उसका केन्द्र पृथ्वी के केन्द्र से हटा
है और बड़े मण्डल की तरफ दबाहुआ है, इसप्रकार से कि उसके
नीचेकी धरातल बड़े मण्डल की धरातल को एक बिन्दुपर छूतीहै
और बिन्दुको औज अर्थात् उंचाई कहते हैं और इसी प्रकार से
उसकी भीतरी धरातल मिलीहुई है पूरे मण्डल की छोटी धरातल
से एकबिन्दु पर जो उनदोनो के बीचमें है इस बिन्दु का नाम
हज़ीज़ कहतेहैं तो अब इससे दो रूपहोतेहैं और वे दोनो एकदूस-
रेसे चाल और रूपकेकारण भिन्नहैं इनमेंसे एक तो घेरताहै उस-
मण्डल को जिसका केन्द्र बाहिरी है और दूसरे की चाल घेरती
हुई ऊपरको ओर होतीहै और शक्ति उसकी उस बिन्दुहज़ीज़ की
ओर होती है और चाल और शक्ति उस घेरनेवाले मण्डल की
उसके विपरीति होती है और दोनो में से प्रत्येक को मुतम्मिम
कहतेहैं और चौथाछोटा मण्डल अर्थात् तावक मण्डल कहते हैं
इसको फ़लक तदवीर कहतेहैं चन्द्रमाका मण्डल इसीमें जड़ाहुआ
है, और यह मण्डल चन्द्रमाके मण्डलकेसाथ चलताहै और मण्डल-
के चलको सिवाय उसकी एक चाल निजकी भीहै इस बात पर
सम्पूर्ण विद्वानोंकी मति एकहै कि चन्द्रमण्डल और चन्द्रमण्डलकी
धरातल से ११८०६२ एक लाख अठारह हज़ार छ्यान[illegible]
[illegible]रहै और स्वरूप चन्द्रमाके मण्डलका यहहै॥

तसवीर नम्बर २

बतली मूसनामक (ज्योतिर्विद्) ने अपनी किताब में मण्डलों की चाल प्रभाव अंग और रूपके बिषय में लिखा है और उनकी तर्कणाओंको गणितसे सिद्ध कियाहै और इसबात के सत्यहोनेमें किसीको भी सन्देह न होगा परन्तु हां केवल उसीको जो गणित नहीं जान्ता और जिसने रेखा गणितका दूसरा अध्यायभली भांति पढ़ाहै उसको तो यह सम्पूर्ण अतिही सरलहै जो थोड़ा भी चित्त इसओरको लगावेतो, ॥ अब चन्द्रमाका यथार्थ जानना चाहिये- चन्द्रमा एक तारा है और नीचे का मण्डल मानाहुआ स्थान है बास्तवमें उसका मण्डल तो स्यामहै परन्तु प्रकाश सूर्य्यसेलेता है क्योंकि स्वरूप बिपरीति हैं इसलिये निकट और दूरके अनुसार प्रकाश मिलताहै और प्रत्येक ग्रहस्थान में २ ½ दोरात्री और दो बटेतीन रात्री रहताहै और सम्पूर्ण मण्डलके चारोंओर एक महीना में फिर आताहै, सम्पूर्ण मण्डलोंसे इसका मण्डल छोटाहै परन्तु सबसे अधिक शीघ्रगामीहै इसीसे इसको तारापति कहतेहैं, इसके मंज़िल अर्थात् स्थान अट्ठाईसहैं प्रत्येक रात्रीमें एक स्थानजाताहै इसी प्रकार महीनाके अन्तमें छिपजाताहै और जिसरात्रिकोछिपा रहताहै उसरात्रीको भी एक मंज़िल जाताहै तिसउपरान्त ज्यों २ सूर्य्य के सन्मुख होताहै त्यों हीं हीजदृष्टि आतीहै, सदैव समदर्शी ईश्वरने कहाहै कि मैंने चन्द्रमाहीके लिये ये चालें बनाईहैं यथार्थ स्वरूप चन्द्रमा का यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३.

बिद्वान् इस बातको मानते हैं कि मण्डल चन्द्रमा का उन्तीस भागों मेंसे एक भागहै और मण्डल उसका चारसौबावनमीलका है और ब्यास उसका एकसौ चवालीसमील कहाजाताहै और यही मति गणित कारोंकीहै ॥

चन्द्रमाके अधिक और न्यून प्रकाशके बिषय में ॥

चन्द्रमाका मण्डल मैला और काला है उसमें प्रकाश करनेकी

आताहै,, जिससमय चन्द्रमाका कुछभाग आगेबढ़नेको न रहै तोउस समय सम्पूर्ण मण्डल चन्द्रमाका पृथ्वीके गाजरकेसे रंगमें होगा तो उससमय सर्वग्रहण होजायगा और जो चन्द्रमाका मण्डलकुछ चलनेको शेषभाग रहगयाहै तो कुछ ग्रहण परैगा और कुछ नहीं और कभी गाजर के छाया से मिलाहुआ होताहै—अर्थात् कनारा उसका मिलाहोगा गाजरके रंगके सायाके कनारासे तो उसदशामें कुछभी ग्रहण न परैगा और यह उसीसमयमें होगा जब कि अर्द्ध- व्यास चन्द्रमा का अर्द्धव्यास छायाका दोनों बराबरहों और अर्द्ध- भागसे कुछ कमहोगा तो एक टुकड़ा ग्रहण पड़ैगा और उस समय चन्द्रमाका ऐसा स्वरूप होगा॥

तसवीर नम्बर ५

व्याख्यान—चन्द्रमाके गुणफल और स्वभावके बिषयमें,, विद्वानों केनिकट यह बात सिद्धिहै कि चन्द्रमाका जो गुणहै सोतरीके कारणहै जैसे सूर्य्यका ऊष्णताके कारण और व्यापारका भरोसा इसतर्कणा का सिद्ध समाधान है, उसमें से नदी के पानी का घटना बढ़ना है जैसे जब कि किसी देशके नदीके पूर्व अथवा पश्चिम में होताहै तो उस तरफ का पानी बढ़जाता है और ज्यों २ चन्द्रमा ऊंचा होता जाता है त्यों २ वहांका पानी बढ़ताही जाता है यहां तक कि जब चन्द्रमा उसगांव के बीच आसमान पर पहुंचे तो पानीउस ठौरका बहुत बढ़जाताहै और जब उस देशके बीचसे चन्द्रमा हटनेलगताहै तो पानी नदियोंका घटनेलगताहै अर्थात् जब चन्द्रमा उसदेशके पश्चिम पूर्वमें पहुंचै उस समय नदियों का पानी अतिही कमहो- जाता है, जब फेरचन्द्रमा उसगाँवके पूर्वसे आगेबढ़ताहै तो फिर यथापूर्वक पानी नदियोंका बढ़नेलगता है यहांतक कि जब चन्द्रमा ठीक मध्य में पहुंचे उस समय नदी का जल परिपूर्ण होजाता है और जब चन्द्रमा उस नदी के पश्चिम को होजाता है तो फ़िर उसी प्रकार कमहोने लगता है और जब पूर्व में आता है तो फ़िर यथा पूर्वक बढ़ता है प्रथम बाढ़में तो वायुवेग से चलती है

और नदीमें लहरें उठने के कारण शब्दाघात अधिक होताहै फिर ज्यों २ चन्द्रमाका मण्डल फिरता जाताहै त्यों २ क्रम२से कमहोता जाताहै उस समय सब लहरें आदिभी कम होजातीहैं" जो कोई मनुष्य नदी के तटपर बैठकर देखे तो यह घटने बढ़ने का सम्पूर्ण हाल उसपर विदित होजायगा प्रथम पानी उसठौरसे बढ़ने लगता है जहां कि गहराई अधिकहो और जगहमें फैलाव अधिकहो और पृथ्वी कड़ी हो और चन्द्रमा उसके निकट हो जिसमें नदीकी गहराईमें भापका अधिकरहो और घुटकर निकलनाचाहैं पर निकल नसकें इस कारण नदी में लहरैं और शब्दाघात अधिक होता है औरजलऊंचाहोताजाताहै और जहांपर ये सम्पूर्णबातें नहीं तो वहां जलका घटना बढ़ना नहोगाऔर घटाव बढ़ाव उस ठौरकाहै जहां कि दिनरात सूर्यके उदयअस्तसे होताहै—और जो ज्वार भाटा कि महीनेमें एकबारआतीहै उसके विपरीतिहोताहै औरसमुद्रके निकट निवासी कहतेहैं कि सूर्य और चन्द्रमा के घटाव बढ़ावसे सागर बढ़ता है और जब चन्द्रमा कमीपर होताहै तो दूसरे चन्द्रोदय तक कम होताजाताहै फिर यथापूर्वक बढ़ताहै इसीप्रकार प्रत्येक मास में घटा बढ़ाकरताहै जैसे चन्द्रमाके गुणोंमें से एकगुण तो यहहै कि जबचन्द्रमा बढ़ताहै तो जीव धारियोंकी रगें रक्तसेपरिपूर्ण होती हैं और ज्यों२चन्द्रमा बढ़ताजाताहै त्यों २भरती जातीहैं और स्वभाव गरमहोता है और जब चन्द्रमा घटताहै तो रक्त जीवधारियों का कमहोताजाताहै और दुर्बलहोतेजाते हैं और कफपित्तवातादि भीतर की ओरको झुकते हैं और रगोंका सम्बन्ध रक्तसे कमहो जाता है और स्वभावमें रूखापन अधिकहोता है वैद्यजनोंपर यह भलीभांति विदितहै और वैद्यों की यह वाक्य (क़ौल) है कि समय को देखना और दिनोंका अन्तर निकालना चन्द्रमाके घटाव बढ़ावके अनुसार जैसे कोई मनुष्य शुक्लपक्षमें बीमारहो तो उसका चित्त रोगशान्ति की ओर अधिक होगा उसकी अपेक्षा जो कृष्णपक्ष में बीमार हो किस हेतुसे कि चन्द्रमाकी वायु चित्तको बलवान् करतीहै अर्थात

आताहै,, जिससमय चन्द्रमाका कुछभाग आगेबढ़नेको न रहै तोउस समय सम्पूर्ण मगडल चन्द्रमाका पृथ्वीके गाजरके से रंगमें होगा तो उससमय सर्वग्रहण होजायगा और जो चन्द्रमाका मगडलकुछ चलनेको शेषभाग रहगयाहै तो कुछ ग्रहण परैगा और कुछ नहीं और कभी गाजर के छाया से मिलाहुआ होताहै–अर्थात् कनारा उसका मिलाहोगा गाजरके रंगके सायाके कनारासे तो उसदशामें कुछभी ग्रहण न परैगा और यह उसीसमयमें होगा जब कि अर्द्ध-व्यास चन्द्रमा का अर्द्धव्यास छायाका दोनों बराबरहों और अर्द्ध-भागसे कुछ कमहोगा तो एक टुकड़ा ग्रहण पड़ैगा और उस समय चन्द्रमाका ऐसा स्वरूप होगा॥

तसबीर नम्बर ५

व्याख्यान–चन्द्रमाके गुणफल और स्वभावके बिषयमें,, बिद्वानों केनिकट यह बात सिद्धिहै कि चन्द्रमाका जो गुणहै सोतरीके कारणहै जैसे सूर्य्यका ऊष्णताके कारण और व्यापारका भरोसा इसतर्कणा का सिद्धि समाधान है, उसमें से नदी के पानी का घटना बढ़ना है जैसे जब कि किसी देशके नदीके पूर्व अथवा पश्चिम में होताहै तो उस तरफ का पानी बढ़जाता है और ज्यों २ चन्द्रमा ऊंचा होता जाता है त्यों २ वहांका पानी बढ़ताही जाता है यहां तक कि जब चन्द्रमा उसगांव के बीच आसमान पर पहुंचे तो पानीउस ठौरका बहुत बढ़जाताहै और जब उस देशके बीचसे चन्द्रमा हटनेलगताहै तो पानी नदियोंका घटनेलगताहै अर्थात् जब चन्द्रमा उसदेशके पश्चिम पूर्वमें पहुंचे उस समय नदियों का पानी अतिही कमहो-जाता है, जब फेरचन्द्रमा उसगाँवके पूर्व्वसे आगेबढ़ताहै तो फिर यथापूर्वक पानी नदियोंका बढ़नेलगता है यहांतक कि जब चन्द्रमा ठीक मध्य में पहुंचै उस समय नदी का जल परिपूर्ण होजाता है और जब चन्द्रमा उस नदी के पश्चिम को होजाता है तो फिर उसी प्रकार कमहोने लगता है और जब पूर्व्व में आता है तो फिर यथा पूर्वक बढ़ता है प्रथम बाढ़में तो बायुवेग से चलती है

नदीमें लहरें उठने के कारण शब्दाघात अधिक होताहै फिर
२ चन्द्रमाका मण्डल फिरता जाताहै त्यों२ क्रम२से कमहोता
ताहै उस समय सब लहरें आदिभी कम होजातीहैं" जो कोई
ष्य नदी के तटपर बैठकर देखे तो यह घटने बढ़ने का सम्पूर्ण
उसपर विदित होजायगा प्रथम पानी उसठौरसे बढ़ने लगता
तहां कि गहराई अधिकहो और जगहमें फैलाव अधिकहो और
री कड़ी हो और चन्द्रमा उसके निकट हो जिससे नदीकी गह-
में भापका अधिकत्वहो और घुटकर निकलनाचाहें पर निकल
कें इस कारण नदी में लहरें और शब्दाघात अधिक होताहै
रज लऊंचाहोताजाताहै और जहांपर ये सम्पूर्णबातें नहीं तो वहां
का घटना बढ़ना नहोगाऔर घटाव बढ़ाव उस ठौरकाहै जहां
दिनरात सूर्य्यके उदयअस्तसे होताहै—और जो ज्वार भाटा कि
निमें एकबारआतीहैं उसके विपरीतिहोताहै औरसमुद्रके निकट
वासी कहतेहैं कि सूर्य्य और चन्द्रमा के घटाव बढ़ावसे सागर
ता है और जब चन्द्रमा कमीपर होताहै तो दूसरे चन्द्रोदय तक
म होताजाताहै फिर यथापूर्वक बढ़ताहै इसीप्रकार प्रत्येक मास
घटा बढ़ाकरताहै जैसे चन्द्रमाके गुणोंमें से एकगुण तो यहहै कि
बचन्द्रमा बढ़ताहै तो जीव धारियोंकी रगें रक्तसेपरिपूर्ण होती हैं
र ज्यों२चन्द्रमा बढ़ताजाताहै त्यों २भरती जातीहैं और स्वभाव
रमहोता है और जब चन्द्रमा घटताहै तो रक्त जीवधारियों का
महोताजाताहै और दुर्बलहोतेजाते हैं और कफपित्तवातादि भीतर
ी ओरको झुकते हैं और रसोंका सम्बन्ध रक्तसे कमहो जाता है
र स्वभावमें रूखापन अधिकहोता है वैद्यजनोंपर यह भलीभांति
दितहै और वैद्यों की यह वाक्य (क़ौल) है कि समय को देखना
र दिनोंका अन्तर निकालना चन्द्रमाके घटाव बढ़ावके अनुसार
से कोई मनुष्य शुक्लपक्षमें बीमारहो तो उसका चित्त रोगशान्ति
ी ओर अधिक होगा उसकी अपेक्षा जो कृष्णपक्ष में बीमार हो
कस हेतुसे कि चन्द्रमाकी बाढ़ चित्तको बलवान् करतीहै अ

कृष्णपक्षमें बलवान् दुर्बल होजातेहैं और एक गुण यहहै कि जः चन्द्रमा बढ़ताहै तो जीव धारियों के बालतन के बहुत शीघ्र ऊगते और बलवान् ऐसे होते हैंकि उनका उखाड़ना बहुत कठिन होता है और जब चन्द्रमा कमी की ओर होताहै तो उसके विपरीति अर्थात् बाल देरको निकलते हैं और बहुत कम ज़ोर होते हैं और उसके सिवाय जीव धारियोंके दूधकी वृद्धि होतीहै अर्थात् पहिले की अपेक्षा उस समय में कि जब बिधु पूर्ण होताजाता है जीवों की कुचोंमें दूध अधिक होजाताहै॥ इसी प्रकार जब चन्द्रमा न्यूनता पर होताहै तो दूध जीवधारियोंका उसीक्रमसे जैसे बढ़ाथा कमहो-जाताहै" यह बात तो प्रकटहै क्योंकि गूदा आदमी के शीशका और सफेदी अण्डोंकी चन्द्रमाके पक्षमें बढ़जाताहै और अर्द्ध मास में फिर उसके बिपरीति होजाताहै और बिद्वानोंने कहाहै कि यह सम्पूर्ण बिवस्था चन्द्रमा के बिचल होने से एक ही दिनमें बदल जाती हैं अर्थात् जब कि चन्द्रमा पूर्व में होताहै तो दूध जीव धारियों का अधिक होताहै और गूदा उनकी हड्डियों का बढ़जाताहै और जो कदाचित् पक्षीके पेटमें अण्डाहोताहै तो बड़ाहोता है और अण्डों से और जब चन्द्रमापश्चिममें हो तो उसके बिपरीति होताहै और जब चन्द्रमा पश्चिम में होता है तो तत्काल इन सम्पूर्ण वस्तुओं में न्यूनता होजाती है जो मनुष्य इन सब बातों को भलीभांति परखा चाहै अच्छीतरहसे परखसक्ताहै, उसमेंसे एकबात यहहै कि आदमी चांदनी में बहुत बैठे तो उसके शिर में दरद और शरीर में आ-लस्य और ज़ुकाम अर्थात् श्लेश्मा होजाता है और चांदनी में मांसको धरदे तो उसकी बास और उसका स्वाद बदल जाताहै दूसरी बात मछलियों की है कि चन्द्रमा के प्रथम भागमें बहुत और मोटीहोती हैं और अन्तके भाग अर्थात् पूनोंसे अमावस तक कम और दुबली होती हैं इसको छोड़के और जीवों की ओर देखो चन्द्रा के प्रथम भाग में सर्प, बिछू, सिंह, व्याघ्र चीता और इसी प्रकार के मांसाहारी जीव अपनी भाट बिलों से दूसरे पक्षकी

अपेक्षा अधिक निकलते हैं बहुधा अहेर करने वाले जीव चन्द्रमा के प्रथम भाग में शिकारकी अधिक चाहना करतेहैं ॥ दूसरे वृक्षों को देखो कि जो वे चन्द्रमाके प्रथमभाग अर्थात् शुक्लपक्षमें लगाये जावें तो बहुत जल्द बढ़ते हैं और फलोंकी अधिकता होती है और जो वे कृष्णपक्षमें लगायेजावें तो देरमें बढ़तेहैं और कम फलते हैं- और बहुधा सूखजाते हैं इसको छोड़ सम्पूर्ण वस्तु खेती तरकारी आदिदे जितनी वस्तु शुक्लपक्ष में बोईजातीहैं और उगती हैं वे सब बहुत जल्दी बढ़ती हैं और कृष्णपक्षकी अपेक्षा जिह्वा को स्वादिष्ट मालूमहोती हैं जैसे सफ़तालू, वरबूज़, खीरा, ककरी, लौकी, तुरई और यहबातें तो किसानों को भलीभांति मालूम हैं इसके सिवाय जब चन्द्रमाका प्रकाश मेवोंपर परता है बहुत लाल पीलारंग नि- कलताहै उनकी अपेक्षा कि जिनपर शुक्लपक्ष का प्रकाश न पहुंचा हो और केवल शुक्लपक्षही में उनकी रंगत अच्छी होगई हो— दूसरा दृष्टान्त चन्द्रमा और कतांका (एक प्रकार का कपड़ा होता है जो चन्द्रमाको देखके टूक२होजाता है) देख लो कि चन्द्रमा को देखतेही टूक२ होजाताहै ॥

यहप्रभाव प्रथम अर्द्धभागमें अधिकहोतीहै उत्तरार्द्धकी अपेक्षा ॥ इसके सिवाय खानिकी वस्तुओं को देखो कि जो रत्न जवाहिरादि शुक्लपक्षमें निकलतेहैं उनकी सफ़ाई और चटक भड़क उन रत्नोंकी अपेक्षा जो कृष्णपक्ष में पैदाहोते हैं अधिक होतीहै ॥ विद्वान् तो इसको मानते हैं कि जो मनुष्यचाहै परीक्षा इसकीकरै कि अपनी बुद्धि कितनी बढ़तीहै और सरस्वती कैसी प्रबलहोती है और चांद घटनेलगता है तो कैसी हीनहोतीजाती है और परीक्षक को उचित है कि जब चन्द्रमा शुक्रके निकट सूर्य्य अर्थात् वृषराशिके स्थानमें हो तब नूरा अर्थात् बाललुप्त होने की औषधि का सेवन करै उस समय प्रकट होजायगा कि चन्द्रमा की अधिकता और न्यूनता के कारण कितना अन्तर होता है क्योंकि जब चन्द्रमा की बाढ़होती है उससमय बुद्धि चित्त बलवान् होताहै तो बाल छीजते नहीं और

कृष्णपक्षमें बलवान् दुर्बल होजातेहैं और एक गुण यहहै कि जब चन्द्रमा बढ़ताहै तो जीव धारियों के बालतन के बहुत शीघ्र उगते और बलवान् ऐसे होते हैं कि उनका उखाड़ना बहुत कठिन होता है और जब चन्द्रमा कमी की ओर होताहै तो उसके विपरीति अर्थात् बाल देरको निकलते हैं और बहुत कम ज़ोर होते हैं और उसके सिवाय जीव धारियोंके दूधकी वृद्धि होतीहै अर्थात् पहिले की अपेक्षा उस समय में कि जब बिधु पूर्ण होताजाता है जीवों के कुचोंमें दूध अधिक होजाताहै॥ इसी प्रकार जब चन्द्रमा न्यूनता पर होताहै तो दूध जीवधारियोंका उसीक्रमसे जैसे बढ़ाथा कमहो जाताहै" यह बात तो प्रकटहै क्योंकि गूदा आदमी के शीशका और सफेदी अण्डोंकी चन्द्रमाके पक्षमें बढ़जाताहै और अर्द्ध मास में फिर उसके बिपरीति होजाताहै और बिद्वानोंने कहाहै कि यह सम्पूर्ण बिवस्था चन्द्रमा के बिचल होने से एक ही दिनमें बदल जाती हैं अर्थात् जब कि चन्द्रमा पूर्ब में होताहै तो दूध जीव धारियों का अधिक होताहै और गूदा उनकी हड्डियों का बढ़जाताहै और जो कदाचित् पक्षीके पेटमें अण्डाहोताहै तो बड़ाहोता है और अण्डों से और जब चन्द्रमापश्चिममें हो तो उसके बिपरीति होताहै और जब चन्द्रमा पश्चिम में होता है तो तत्काल इन सम्पूर्ण वस्तुओं में न्यूनता होजाती है जो मनुष्य इन सब बातों को भलीभांति परखा चाहै अच्छीतरहसे परखसक्ताहै, उसमेंसे एकबात यहहै कि आदमी चांदनी में बहुत बैठे तो उसके शिर में दरद और शरीर में आलस्य और ज़ुकाम अर्थात् श्लेष्मा होजाता है और चांदनी में मांसको धरदे तो उसकी बास और उसका स्वाद बदल जाताहै दूसरी बात मछलियों की है कि चन्द्रमा के प्रथम भागमें बहुत और मोटीहोती हैं और अन्तके भाग अर्थात् पूनोंसे अमावस तक कम और दुबली होती हैं इसको छोड़के और जीवों की ओर देखो चन्द्रा के प्रथम भाग में सर्प, बिछू, सिंह, व्याघ्र चीता और इसी प्रकार के मांसाहारी जीव अपनी भाटे बिलों से दूसरे पक्षकी

अपेक्षा अधिक निकलते हैं बहुधा अहेर करने वाले जीव चन्द्रमा के प्रथम भाग में शिकारकी अधिक चाहना करतेहैं ॥ दूसरे वृक्षों को देखो कि जो वे चन्द्रमाके प्रथमभाग अर्थात् शुक्लपक्षमें लगाये जावें तो बहुत जल्द बढ़ते हैं और फलोंकी अधिकता होती है और जो वे कृष्णपक्षमें लगायेजावें तो देरमें बढ़तेहैं और कम फलते हैं और बहुधा सूखजाते हैं इसको छोड़ सम्पूर्ण वस्तु खेती तरकारी आदिदे जितनी बस्तु शुक्लपक्ष में बोईजातीहैं और उगती हैं वे सब बहुत जल्दी बढ़ती हैं और कृष्णपक्षकी अपेक्षा जिह्वा को स्वादिष्ट मालूमहोती हैं जैसे सक़्तालू, खरबूज़, खीरा, ककरी, लौकी, तुरई और यहबातें तो किसानों को भलीभांति मालूम हैं इसके सिवाय जब चन्द्रमाका प्रकाश मेवोंपर परता है बहुत लाल पीलारंग निकलताहै उनकी अपेक्षा कि जिनपर शुक्लपक्ष का प्रकाश न पहुंचा हो और केवल शुक्लपक्षही में उनकी रंगत अच्छी होगई हो— दूसरा दृष्टान्त चन्द्रमा और कतांका (एक प्रकार का कपड़ा होता जो चन्द्रमाको देखके टूक२होजाता है) देख लो कि चन्द्रमा को देखतेही टूक२ होजाताहै ॥

यहप्रभाव प्रथम अर्द्धभागमें अधिकहोतीहै उत्तरार्द्धकी अपेक्षा ॥ इसके सिवाय खानिकी बस्तुओं को देखो कि जो रत्न जवाहिरादि शुक्लपक्षमें निकलतेहैं उनकी सफाई और चटक भड़क उन रत्नोंकी अपेक्षा जो कृष्णपक्ष में पैदाहोते हैं अधिक होतीहै ॥ बिद्वान् तो इसको मानते हैं कि जो मनुष्य चाहै परीक्षा इसकीकरै कि अपनी बुद्धि कितनी बढ़तीहै और सरस्वती कैसी प्रबलहोती है और चांद घटनेलगता है तो कैसी हीनहोतीजाती है और परीक्षक को उचित है कि जब चन्द्रमा शुक्रके निकट सूर्य्य अर्थात् वृषराशिके स्थानमें हो तब नूरा अर्थात् बालउड़ा होने की औषधि का सेवन करै उस समय प्रकट होजायगा कि चन्द्रमा की अधिकता और न्यूनता के कारण कितना अन्तर होता है क्योंकि जब चन्द्रमा की बाढ़होती है उससमय बुद्धि चित्त बलवान् होतीहै तो बाल छोजते नहीं और

ओषधी का कुछ गुण नहीं होता वरन उससमय में जो कोई बाल उखारै तो कष्टहोता है और कड़ेपन से उखड़ेंगे चाहै उसको बाल उखाड़ने की आदतभी हो इसलिये ये सम्पूर्ण बातें इसीका समाधान करती हैं कि जब चन्द्रमा बाढ़पर होता है तो चित्तकी वृत्ति बहुतही प्रबल होती है शरउलसमा एक सफ़ेदी आसमानपर कि अरबदेश निवासी उसको शरउलसमा कहते हैं और फ़ारस के कहकशां और हिन्दुस्तान के हिन्दूपन्थ कहते हैं इसकी निर्ण किसी बिद्वान ने आजतक उसके वृत्तान्त में कोई बार्त्ता सत्य नह वर्णन की कि बुद्धि उसको अंगीकारकरे इसलिये कि जो कुछ उसकी प्रशंसा में लिखा है वह बुद्धिमें नहीं आसक्ता कोई कहते है कि छोटे२ उड़गण हैं एक२ के पास और अरबदेश वाले इसको उम्मुलनुजूम कहते हैं इसकारण से कि यह उड़गण उसमें एकत्रित होजाते हैं और पहिचाने नहीं जाते हैं और बादल के टुकड़े के सदृश दिखाईदेते हैं जाड़ों में पूर्वार्द्ध रात्रि में आकाश के किनारोंपर और गर्मियों में आकाश के बीच में उत्तर से दक्षिणतक और बनिस्बत हमारे चक्की की तरह घूमते हैं फिर दिखाईदेते हैं अर्द्धरात्रिको कि पूर्व से पश्चिम की ओर जाते हैं और परार्द्धरात्रि को दक्षिण से उत्तरको जो पश्चिमीय है, वह दक्षिणीय होजाता है और जो दक्षिणीय है वह पश्चिमीय अतएव माता की दया से सम्पूर्ण उड़गणोंके वृत्तान्तकी खोजमेंहै और परमेश्वर उनके वृत्तांत को अच्छीतरह से जानता है कि वह गोल आकाशपर है और हमारी निस्बत चक्कीकी सदृश घूमता है या किसी और आकाश पर है उन आकाश से जिनका वृत्तान्तहुआ (तीसरीदृष्टि) वृहस्पति के आकाश के वर्णनमें ॥ और वह अपने हद्दमें दोसतह गोल देखताहै एक दूसरे के सामने है दोनोंसतह की कीली दोनों संसारकी कीलीहैं औंधासतह उसका सतहमुक़ाअर शुक्रके आकाशसे मिलाहुआ है और सतह मुक़ाअर उसका सतह मुहद्दब चन्द्रितआकाशसे मिला है और १ वर्षकी मुद्दत में उसकादौरा पूर्वसे पश्चिम तक

सम्पूर्ण होताहै और जिसतरहपर अन्तरित चन्द्रित आकाशमें एक और आकाश खारिजुलमर्कज़है उसीप्रकार इस आकाशके अन्तरित-मेंभी एकआकाश और है कि उसका मर्कज़ संसारीमर्कज़से अलग है और खारिजुलमर्कज़ है कि उसको गोल आकाश कहते हैं और गोला आकाश के बीचमेंभी एक और ऐसाही आकाशहै कि उसको खारिजुलमर्कज़ आकाश कहते हैं और गोल आकाश वृहस्पति इस दूसरे आकाश खारिजुलमर्कज़ के बीचमें है और वृहस्पति उसीआ-काश में गड़ाहै इस सूरतमें वृहस्पति के दो उंचानहुये एक कुल्ली आकाश में और दूसरा गोलआकाशमें और ऐसेही दो निचानहोते हैं और हकीमलोग कहते हैं कि बीच मुतादिद आकाश का अर्थात् मसाफत दर्म्यिान सतह उच्च और सतह निम्न उसके तीनलाख अट्ठासीहज़ार चारसौ बयासीमील है और यह सूरत वृहस्पतीय आकाशकी है॥

तसवीर नम्बर ६

वृहस्पति के फल का वर्णन॥

यह कि वह एकनक्षत्रहै किज्योतिषी उसकोव्यतिरिक्त कहते हैं इसवास्ते कि वह अच्छेके साथ अच्छाहै और नीचके साथ नीच है इसकेफल येहैं कि चपता व ज्ञान और बुद्धिका दाताहै और विद्वानों के अनुसार तन इसका बाईस भागोंमेंसे एक भागहै अर्थात् पृथ्वी का बाईसवां भागहै और उसके तनका घेरा दोसौछियासी फर्सख़ है और व्यास उसके घेरेका दोसौतिहत्तर मीलहै और वह प्रत्येक स्थानमें सत्तरदिवस निवासकरता है उसकी चालबहुत धीराहै और सूर्य्यके चारों ओर हर दिवस फिरताहै ज्योतिषी कहते हैं कि जो वह आनन्द में अर्थात् शुभराशि के निकट हो तो उस समय जो लड़का पैदाहो तो वह लड़का अत्यन्त चतुर विद्वान् औ बुद्धिमान् होता है और न्याय और गणित में बड़ा प्रवीण होता है और जो अच्छी दशामें नहीं अर्थात् अशुभ राशि के निकट होताहै तो उस सायत का जन्मा लड़का अतिही छली कपटी और झगरेलू होता

सत्य ईश्वर जानने हाराहै स्वरूप बुधकायहहै जो नीचे लिखाहै॥

तसवीर नम्बर ७

चौथा व्याख्यान शुक्र के विषय में॥

इसके दोमण्डलहैं और एक दूसरेके विपरीत हैं उसके मण्डल की धरातलका बाहिरी अंग मिलाभयाहै सूर्य्य मण्डलके धरातल के भीतरी अंगसे और उसकी धरातलका भीतरी अंग मिलाभया है बुधकी धरातल के बाहिरी अंग से और केन्द्र उसका पृथ्वी का केन्द्रहै और उसका फेरा पश्चिमसे पूर्व को अपनी नियत चाला-नुसार एक वर्षमें पूरा होताहै परन्तु इतना भेदहै कि उसके भीतरी मण्डलकी चाल कभी शीघ्रभी होती है और कभी न्यूनता के साथ प्रथमदशामें तो शुक्र सूर्य्यके आगे होता है और दूसरीदशामें पीछे होजाता है ईश्वर ने चाहा तो उसका सबिस्तर समाचार ग्रहों के वृत्तान्तमें आवेगा और उसके ऊपर और नीचेकीधरातलके बीचमें अन्तर तीनहज़ार सातसौपच्चानवे मील काहै और मण्डल उसका सूर्य्य मण्डलके सदृशहै और शुक्र मंडलकी सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ८

व्याख्यान शुक्रके फलके विषय में॥

ज्योतिषी लोग शुक्र को सादअसग़र अर्थात् थोड़ा शुभकर्त्ता कहतेहैं क्योंकि शुभता में वृहस्पतिसे कमहै और स्वरूप शुक्र का एक भागहै चौंतीस भागों में से अर्थात् पृथ्वी का चौंतीसवां भागहै॥ उसके मण्डलका व्यास बारसौ चौरानवे मील है और एकसेदश अर्थात् $\frac{1}{10}$ मील है और प्रत्येक स्थान में सत्ताईस दिन रहताहै और बुधके सदृश सदैव सूर्य्यके चारोंओर फिरता है ज्यो-तिषी कहतेहैं कि यह आनन्दका स्वामी है और कोई २ कहता है कि उसके दर्शनों से आनन्द होताहै यहांतक जिस किसी पुरुषको किसीके विरह का दुःखहो जोवह शुक्रको देखा करै तो बिरहाग्नि की ज्वाला कमहोजाय यथादोहा॥

दो॰ बिरहानल की ज्वाल को सकत न हृदय सँभार॥
सुनो शुक्र बिनती करहु हर मम दुःख अपार १

और कोई२ कहताहै कि यह प्रीतिधाम है यहांतक कि बिवाह के समय शुक्र देखताहो और शुभस्थानमें हो और उससमय पति अपनीस्त्री से रतिकरै तो उनदोनों स्त्री पुरुषमें ऐसीप्रीति होवे कि जिसके देखनेसे मनुष्योंको आश्चर्यहो और स्वरूप शुक्रकायहहै॥

तसवीर नम्बर ९

पांचवां व्याख्यान सूर्य्यमण्डल के विषय में।

सूर्य्यकामण्डल घिराभयाहै सन्मुख दोधरातलोंसे जोमण्डलाकार हैं और केन्द्र उन दोनों धरातलोंका पृथ्वीका केन्द्रहै उसकी धरातल का बाहिरी भाग मिला भया है मंगल की धरातल के भीतरीभागसे और सूर्यमण्डलकी धरातल का भीतरीभाग मिला भया है शुक्र की धरातल के बाहिरी भाग से और चक्र उसका पश्चिमसे पूर्वको ३५६ दिन और एक चौथाई में पूराहोताहै और उसके मण्डल के भीतर एकमण्डल औरहै और केन्द्र उसका पृथ्वी के केन्द्रसे हटाहुआ है जैसे तीन पूर्वोक्त मण्डलोंके विषयमें लिख चुकेहैं उनमें कुछ भेदनहीं बरन यहां पर सूर्यफलकतदवीर अर्थात् मण्डलको चक की ठौर है सूर्य्यमण्डल में मण्डल को चकनहीं है इससे ईश्वर की अत्यन्त दयाहै क्योंकि जो इसमें कोचक मण्डल भी होता तो और दूसरे ग्रहोंकी भांति यह भी फिरताहुआ जाता तो छः महीने गरमी रहती और छः महीने जाड़े की ऋतुरहती तो इसदशा में सूर्य्य एकध्रुव की ओर रहता तो अति गरमी होने के कारण बहुधा जीव मरजाते और बनस्पति जल जातीं और इसी प्रकार जो छःमहीनेतक सूर्य्य ध्रुवसेहटारहता तो जाड़ा बहुतहोता और गर्मी मिटजाती और जीवोंकी प्रकृति बदलजातीचक्र सूर्यका ऊपर और नीचे की धरातल के बीच तीनलाख पचपनहज़ार चौहत्तर मीलका है और स्वरूप सूर्य मण्डलका यह है॥

तसवीर नम्बर १०

जिर्म अर्थात् स्थूल सूर्य्यका सबग्रहों से बड़ा और प्रकाशवान् है और पृथ्वीके सदृशतीनसौ छप्पनवार है और व्यास सूर्यमण्डल

का यकताळीसहज़ार नौसे नब्बेमील है और निवास इसका स
स्थानोंमें एकसा नहींहोता किसीस्थानमें तो तीसदिन और कि
में तीस से अधिक और किसीमें उन्तीसदिन और नित्त एकस्था
को छोड़के दूसरेमें जाताहै ॥ ज्योतिषी लोग मानते हैं कि १सू
सम्पूर्ण तारात्र्यों में राजा के समान है और २ चन्द्रमा मन्त्री औ
युवराज है और ३बुध लेखक और ४मंगल सेनापति और ५बृ
स्पति न्यायकार और ६ शनिश्चरकी साध्यक्ष और शुक्र सेवक
और जो मगडल हैं सोई खगड हैं और जो स्थानहैं सोई शहर
और जो क्रमहैं सोई गांव और विस्तार उसका मकान है और य
उपमा बहुत ठीक है और ईश्वर की आश्चर्य्ययुत माया यह है वि
उसने सूर्य्य को चौथे मगडलपर जड़ा है जिसमें उसकी गरमी से
संसारिक बस्तु स्वाभाविक स्वभाव को लिये रहें ॥

क्योंकि जो वह तारा मगडल पर होता तो तत्त्व उससे दूरपरते
तो सम्पूर्ण तत्त्व संयुक्त पदार्थ खराब होजाते ॥ और जो प्रथम
मगडल अर्थात् चन्द्रमाके मगडलपरहोता तो मारे गरमी के पदार्थ
जलजाते एक भलाई ईश्वर ने और की है कि उसको दौड़ने हारा
नियतकिया है और एक ठौरपर ठहरने भी नहींदिया क्योंकि एक
ठौर ठहरता तो वहां ऊष्णता अत्यन्त होती और दूसरी ठौर शीत
होता इस विषय में ईश्वर की अत्यन्त बुद्धिमानी है कि पूर्व से
उदय होकर पश्चिम में अस्तहोता है इसलिये कि पृथ्वी खुलीहुई
है जिसमें इसकी किरणेंपरनेसे पृथ्वी फलदायकहो प्रत्येक सम्वत
में दो झुकाव करता है एकबार सम्बतभर में उत्तरायण और एक
बार दक्षिणायन जिससे ये दोनों किनारे भी उससे लाभ उठावें
प्रथम उत्तर की ओर को जाता है क्योंकि वह देशान्तर का भाग
बहुत विस्तारिक है फिर उसओरसे फिरता है दक्षिणको इसलिये
ईश्वर की वाक्य से यही प्रयोजन है ॥

व्याख्यान सूर्य ग्रहण के विषय में ॥

ग्रहणपरनेका यह कारण है कि चन्द्रमाका मगडल हमारी दृष्टि

और सूर्यके मध्यमें आजाताहै क्योंकि चन्द्रमा का मण्डल श्याम है वहसूर्य्यका अवरोधकहोजाताहै इसलिये वहहमारी दृष्टिसे छिप-जाताहै जब किचंद्रमा सूर्य्य के निकटहो किसी एक अथवा दो वि-न्दवोंपर ध्रुवकेहोतो चन्द्रमा सूर्य्यकेनीचे२चलताहैतो सूर्य्य हमारी दृष्टिसे छिपजाताहै क्योंकि चन्द्रमा हमारीदृष्टिऔर सूर्य्यकेबीचमें होनेके कारण अवरोधक होताहै प्रकाशका क्योंकिजो किरणेंहमारी आंखोंसे निकलतीहैं तो पहुंचकर मखरूती छायापर परतीहैं और त्रिकोण उसका दृष्टि विन्दु है निदान जब दृष्टि हमारी निकलतीहै वह प्रथम चन्द्रमापर परतीहै इसीसे सूर्यनहींदृष्टिपरते हैं फिर जो चन्द्रमा से सम्बन्ध अपने स्थान से न होगा तो उससमय चन्द्रमा चन्द्रमण्डल के बीच में होगा तो सूर्य्य बिल्कुल खुलारहेगा और जो चन्द्रमा अपनी ठौरपर हो तो मण्डल उसका दृष्टि के सन्मुख होगा उससमय सूर्य्य कुछही दृष्टि आवेगा और थोड़ासा छिपार-हैगा यह उससमय होताहै जब कि मण्डल थोड़ाहो अर्थात् दोनों सूर्य्य और चन्द्रमाके व्यास आधेहों अर्थात् दोनोंके सदृश तो जब मखरूत अर्थात् गाजर के रंगका छाया चन्द्रमापर पूरा आयजाय-गा तो उससमय सूर्य्य अलगहोने के कारण प्रकाश होनेलगेगा इसदशा में ग्रहण थोड़ीदेर तक परैगा और समयकी थुराई और बहुताई मनुष्यों की दृष्टि और देशानुसार होती है और किसी २ शहर में ग्रहण नहींपरता और सूर्य्यग्रहण की सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ११

सूर्य्य के गुण और स्वभाव के विषय में ॥

जाननाचाहिये कि सूर्य्य के स्वभाव बहुतहैं और गुण और स्वभाव सूर्य्यके उल्विपात अर्थात् आकाशसम्बन्धी समाचार और सफिलिपात् अर्थात् पृथ्वी सम्बन्धी में अपूर्व्व आश्चर्य्यक हैं स्व-भाव जो उल्वियात अर्थात् आकाशी समाचारके अनुसार ये हैं कि उसका प्रकाश अद्वैत है और सम्पूर्ण तारागणों का प्रकाश उसके सन्मुख छिपजाता है और जो गुण चन्द्रमा में हैं वे सम्पूर्ण

सूर्य्य से प्राप्तहोते हैं स्वभाव उसका सिफ़लियात् अर्थात् पृथ्वी सम्बन्धी समाचार के अनुसार यह हैं कि जब सूर्य्यकी गरमी नदी समुद्रादि पर परतीहै उससूर्य्य की गरमी के कारण जलमेंसे भाफ उठतीहै तो वही भाफ़ जो जल के अत्यंत छोटे२ कण ऊपर जाकर ठयढपाने से जमकर बादल होजाते हैं और वायु उन बादलों को दूर२ उड़ालेजाती है और जहां पर जलकी आवश्यकता होती है वहां जल बर्षताहै वही संसारका हिसाबहै और उनसे नहरैं और सोते बहते हैं जिससे जीव और बनस्पति और धातु आदि बनेरहैं उनमेंसे जो बस्तु पृथ्वी से निकलतीहैं उनका व्याख्यानहै कि जल के कण माटीके साथ मिलते हैं तो एक प्रकार की चिकनाहट पैदा होतीहै और सूर्य्य उनको उगाता है तो नानाप्रकारकी बस्तु धातु-संज्ञक पैदाहोतीहैं जैसे सोना, चांदी, तांबा, लोहा, शीशा, लाल, हीर पन्ना, गन्धक, हरताल, लौन, फिटकरी आदि पदार्थ निकलते हैं औ जोर२ गुण उनके हैं, सो छिपेनहीं हैं फिर अब बनस्पतिको देखो कि जहां सूर्यकी गर्मी पहुंचतीहै वहांवृक्ष उत्पन्नहोतेहैं और घनेहोते हैं और घास होतीहै जहां सूर्य्यकी गरमी नहींपहुंचती वहां कुछ नहीं जमता देखो जैसे बड़े२ वृक्षोंके नीचे जहां सूर्य्य की धूपकी गरमी नहीं पहुंचती वहां कुछभी नहींउगता जोकोई सूर्य्यके गुण स्वभाव की परीक्षा लेनाचाहै तो कमल और सूर्य्यमुखीको देखले कि भानूदयके समयसे ये बस्तुकैसी बलवान् होतीजातीहै जब सूर्य्य आसमानके मध्यमें आताहै तो इनका बलपूरा होजाताहै और जबदोपहर केसमयसे सूर्य्यकमीकीओर होताहै तो ये बस्तुभी कम और निर्बल होतीजाती हैं और जब दूसरे दिन सूर्य्योदय होताहै तो फिर सम्पूर्ण बस्तु यथापूर्वक शक्तिवान् होजाती हैं इसी प्रकार जीवों को देखो कि जब प्रातःकाल सूर्य्य उदयहोताहै तो उनके शरीर में शक्ति और चित्त प्रसन्नहोता है और ज्यों २ सूर्य्य ऊंचा चढ़ताजाता है त्यों २ उनकी शक्ति और आनन्दबढ़ता जाता है और जब सूर्य्य मध्य से पश्चिम को ढुलताहै तो उनकी शक्ति आनन्दघटता जाता है उसी

समय तक जबतक सूर्य्य अस्तहोवे औ जब सूर्य्यअदृश होजाता है तो जीव अपने घरों की ओर झुकते हैं और वहां मृतक की भांति परेरहते हैं जब रात्रिविहाय प्रातःकाल होताहै तो सम्पूर्ण जीव अपनी पिछली दशामें आजाते हैं॥ सत्य तो ईश्वर ही जानता है परन्तु सूर्य्य के सम्पूर्ण गुणोंमें से एकगुण यहभी है कि जिन देशों के ध्रुवकी ओर सूर्य्य रहताहै जैसे हबशी तो वहांके निवासियों का रंगकाला होताहै और मारेगरमी के उनका चेहरा काला और कुरूप होता है और शरीर आदमियों का रूखा और स्वभाव और प्रकृति उनकी मांसाहारी पशुवोंकीसी होती है और जो लोग ऐसे देशोंमें बसते हैं कि जो सूर्य्य से दूरहैं जैसे रूस और सक़ालिया॰ दि तो वहांके निवासियों का रंग रूखा और श्वेत करता है और उनके चेहरों को चौड़ा और शरीर को मोटाकरता है और आदतें और कर्म्म स्वभाव उनके पशुओंके सदृश होते हैं सूर्य्यके गुणोंमेंसे एक यहभी है कि ब्राह्मिन लोग कहते हैं कि सूर्य्य प्रत्येकस्थानमें तीनहज़ार वर्षतक ऊंचा रहताहै और छत्तीसहज़ार वर्ष में मण्डल भरमें फिरताहै॥ इनदिनों सन् ६६४ हिजरी में वास उसकाऔज अर्थात् मिथुन स्थानमें है॥ ब्राह्मिन इसीबात पर आरूढ़हैं कि जब दक्षिणागन स्थान बदलता है तोपृथ्वीकी रचना बदलजातीहै इस प्रकार जो बसगितहैं सो तो उजाड़ होजाती है और जो उजाड़ है वहां बसजाता है नदी सूख जाती हैं और जंगल नदी होजाती हैं उत्तर दक्षिण होजाताहै और दक्षिण उत्तर होजाता है इसकेसत्या-सत्यका जाननेहारा तो ईश्वरहीहै॥

तज़किरात्भान--मंगलके मण्डल के विषय में॥

इसके मण्डल में दो धरातल हैं और एक दूसरे के सन्मुख हैं और उनदोनों धरातलों का केन्द्र पृथ्वीका केन्द्र है अर्थात् उसकी धरातलका बाहिरीभाग वृहस्पति के मण्डल के भीतरी भाग को स्पर्श करताहै और उसके मण्डलका भीतरीभाग सूर्य्यमण्डल के बाहिरी भागको स्पर्श करताहै चक्र उसका अपनी चालानुसार

दक्षिण से पूर्वकी ओर एकवर्ष दोमहीना और बाईस दिन में पू
होताहै और उसके मण्डलकी सूरत चन्द्रमा अथवा शुक्रके मण्ड
की सी तद्रूप है इसलिये कुछ उसके व्याख्यान की आवश्यक
नहीं और उसके स्थूलका व्यास अर्थात् उसके गोलाकार
मुटाईवतलीमूस (ज्योतिर्विद) के वाक्यानुसार बीसकरोड़ तीनला
छिहत्तरहज़ारनौसैअट्ठानबेमील है गुण और प्रकृतिउसकीये हैं।
ज्योतिषी लोग उसको नहस असगरअर्थात् छोटी अमांगल्यकह
हैं इसलिये कि वह शनिश्चर से कम अमंगलहै और क्रोध औ
वधादिक कर्म्म सम्बन्धी है और स्थूल उसका पृथ्वी के स्थल
ड्योढ़ा १½ है और उसकाव्यास नवलाख अस्सीहज़ार आठसै पैंती
मीलहै और जब एकस्थान को छोड़ दूसरी ठौर जाताहै तो वह
४० दिनरहताहै और प्रत्येकदिवस में ४० दर्जे जाताहै और जो
कोई मनुष्य प्रमाणचाहै तो नहसवती किताब (मुसल्मानों में एक
ज्योतिषकी पुस्तक) कोदेखै॥ स्वरूप मंगल का यहहै॥

तसवीर नम्बर १२

सातवां व्याख्यान--बृहस्पति मण्डल के विषय में॥

इसके मण्डल के भी दो धरातल हैं धरातल का बाहिरी भाग
शनिश्चर मण्डल की भीतरी धरातल से मिलाहै और धरातल का
भीतरी भाग मंगल के धरातल के बाहिरी भागको स्पर्श करताहै
केन्द्र दोनों धरातलों का पृथ्वीकाकेन्द्रहै और अपनी चालके अनु-
सार ग्यारह वर्ष दशमहीने पन्द्रहदिन में पूरा होताहै और उसके
स्थूलकी मुटाई अर्थात् भीतर और बाहिरी कनारों का बीच बीस
करोड़ तीनलाख बत्तीस हज़ार चारसौ बत्तीस मीलहै और सूरत
बृहस्पति की यहहै॥

तसवीर नम्बर १३

प्रकृति और स्वभाव येहैं कि ज्योतिषी इसको अत्युत्तम कहते
हैं कि यह मंगल मयहै किसहेतु से कि शुभ और मंगलमें शुक्रसे

रहै और बड़प्पन इसमें बताते हैं और स्थूल उसके मण्डल
पृथ्वीसे ८४ $\frac{1}{3}+\frac{1}{4}$ चौरासीसही और एकतिहाई और एक चौथाई
बड़ाहै और व्यासउसका ४ $\frac{1}{10}$ चारसही एकबटाहुआ दशगुणा
के व्याससे अधिकहै और नित पांचदर्जे जाताहै और उसका
ल तद्रूप चन्द्रमा कासाहै उसकावर्णन करनेकी कुछ आवश्य
नहीं है किसहेतुसे कि पूर्वोक्त मण्डलों के देखनेसे सबविदित
ायगा॥

आठवां व्याख्यान–शनिश्चर के स्थानके विषय में॥

इसके दो धरातल हैं और एक दूसरे के सन्मुख हैं और केन्द्र
ों धरातलों का पृथ्वीका केन्द्र है और इसकी धरातल का बा-
ी भाग तारा मण्डल की धरातल के भीतरी भागको स्पर्श
रता है और धरातल का भीतरीभाग वृहस्पति के मण्डल के
हिरी अंगसे स्पर्श करता है और चक्र उसका पश्चिमसे पूर्व को
तीस बर्ष पांचमहीने छःदिन में पूरा होजाता है और मण्डल
सका पूर्वोक्त मण्डलोंके सदृशहै अर्थात् शुक्र शनिश्चर वृहस्पति
गलादि इसलिये उसके व्याख्यानकी कुछ अवश्यकता नहींहै॥
तलीमूस (एकज्योतिर्विद) कहता है कि उसके मण्डलके स्थूलका
ल २१०३३६६०६ इक्कीस करोर तीनलाखछत्तीस हज़ार छासौ
ःमीलहै और स्वभाव ज्योतिषी लोग कहतेहैं कियहअत्यन्तअशुभ
इसकी अशुभता मंगलसे अधिकहै और मृत्यु, नष्टता, और शो-
कका दाता है और स्थूल उसका पृथ्वीके स्थूलसे ८१ $\frac{1}{10}$ इक्यासी
सही एकबटा हुआ गुणाअधिकहै और व्यासउसके मण्डलकापृथ्वी
के व्याससे ४० $\frac{2}{3}$ चालीस और दोतिहाई गुणा अधिकहै॥ ज्योति-
षियोंके निकट शनिश्चर के दर्शन शोक, दरिद्रता और अमनाकादा-
ताहै जैसे वृहस्पति के दर्शनों से आनन्द और लक्ष्मी प्राप्त होती
है इसी प्रकार इसके दर्शनोंसे ये अशुभ वस्तु प्राप्तहोती हैं स्वरूप
शनिश्चरका यहहै॥

तसवीर नम्बर १४ ।

व्याख्यान ९ नखत, उनकी चाल और सिधाईके विषयमें ॥

जिससमय मण्डलकोचककीचाल बड़े अर्थात् घेरेहुएमण्डलकेअनुसार होतीहै तो उस समय नखत ठीक२ औरसूधे दृष्टिआतेहैंकिस हेतुसे कि बड़े और छोटे दोनों मण्डलोंकी चाल इकट्ठाहोती हैं इसलिये नखतों की चाल बढ़जाती हैं और सिधाई को चकमण्डलके धरातल के बाहिरी कनारेसे होतीहै और केन्द्रछोटे नखतोंका कोचक मण्डल परहोवे तो कोचक मण्डलकी चाल घेरनेवाले मण्डलके विपरीत होती है इसलिये जबतक छोटे मण्डल की चाल मण्डलसे कमती रहती है तोउस समय नखत सीधादृष्टि आता वरन जिस समय वह कमचलताहै तो उसकी चालमालूम नहींहो और जब उसकी चालबड़े मण्डलसे अधिक होतीहै तो नखतफिर दृष्टिआता क्योंकि यद्यपि बड़ाही मण्डल छोटेको चलाताहै तदपि उसकी चालबड़े मण्डल से अधिक होती है जैसे बड़ा मण्डल एक हिस्सा चलताहै तो छोटादो चलता है एक हिस्सा बड़ेसे आगे रहताहै तो एकहिस्सा उससे अधिक रहताहै तो इसदशा में नखत फिरता दृष्टिआता है और जबचालें बड़े और छोटे दोनों मण्डलों की सम होती हैं तो नखत सीधादृष्टि आता है ॥ जो उसका यथार्थ जानना चाहें तो मानलेंगे उसकी सिधाईके अनुसारनहीं ॥ जैसे एकरेखा पृथ्वी के केन्द्रसे हटीभई इसप्रकार खड़ी खींचें जो नखतके स्थूलको काटतीहुई ऊपरके स्थान तक पहुंचे और इसीप्रकार चालकेसमय एकरेखा और मानलें तो इसप्रकार उसकीचाल और सिधाई ठीक२मालूमहोजायगी और स्वरूपनखतोंकायहहै॥

तसवीर नम्बर १५

अध्याय नवां--तारामण्डल के विषय में ॥

तारामण्डल के दो धरातल हैं और एक दूसरके सन्मुखहै और केन्द्र उनदोनोंकापृथ्वीका केन्द्रहै ॥ उसकी धरातलकाबाहिरीभाग महामण्डल की धरातल के भीतरीभाग से मिलाहै और वहमण्डल

सम्पूर्ण मण्डलोंको घेरेहुये हैं और फिराताहै इसके धरातल का भीतरी भाग मिलाहै शनिश्चर के मण्डल के बाहिरी भागसे यह मण्डल भी पूर्व से पश्चिमको चक्रदेताहै और अपनी चालके अनुसार एकसौ वर्षमें एकदर्जा से दूसरेपर जाताहै इसप्रकार छत्तीस हज़ार वर्षमें इसका चक्र पराहोताहै और दोनों ध्रुव मध्यरेखा के दोनों कनारों से मिलेभये हैं कि जिसपर सूर्य्य चक्रदेता है ईश्वरने चाहा तो उसका बयान वहुत वतलीमूस और नैयरस्द (ज्योतिर्विद) और दूसरे ज्योतिर्विद विद्वानों से जो इसके पहिले बीतजाचुके हैं प्रकटहुआहै कि सम्पूर्ण तारागण इसीमण्डल में जड़ेहैं और अपने मण्डल की चालानुसार भ्रमित हैं और उसके मण्डल की मुटाई भीतरी और बाहरीकनारोंके बीच चौंतीसहज़ार सातसौ चवालीस मीलहै बतलीमूसने लिखाहै कि महामण्डल का व्यास एकअरब इक्कावनकरोड़ पांचलाख तीसहज़ार एकसौ चौरासी मीलहै व्यासः स्थूल उसतारा का जो महामण्डल के ऊपर है ९४ चौरानबेसही एकबटा पांचगुणा पृथ्वीके स्थूलसे अधिक है और छोटेसितारों का स्थूल जो छठे दर्जे भारी हैं पृथ्वी से अट्टारह गुणा अधिक है जो कदाचित् कोई मनुष्य सन्देह करके इसको झूठ कहै कि यहतो पृथ्वी पर रहता है इसने आकाश और वहांके तारागणों की माप क्योंकरकी तो यहबात उसकी सुनने के योग्य नहीं इसहेतु से कि जो वस्तु उसको न नमालूमहो तो क्यायह अवश्यहै कि दूसरा भी न जाने जो मनुष्य गणितविद्या में अभ्यास रखताहो तो उसको कुछ समझना कठिननहीं क्योंकि प्रत्येक कामके लिये एक मनुष्य है क्योंकि ईश्वरनेकहा है कि हमने अपनीसृष्टिमें मनुष्यको सर्वोपरि कियाहै और बुद्धिदीहै उसको वहुतसी वस्तुजाननेके लिये ॥

व्याख्यान—तारोंके विषयमें—जानना चाहिये कि तारामण्डल परइतने ताराहैं कि वे मनुष्यकी बुद्धिसे बाहिरहै कि वह उनकोगिन सकै परन्तु पुराने विद्वानोंने लिखाहै कि एक हज़ारबाईस नखतहैं उनमेंसे नौसौसत्रह नखततो ऐसेहैं कि उनसे अड़तालीस सूरतें

बनताहैं और प्रत्येक सूरतमें कईतारा हैं बतलीमूसने अपनी किताब मजसतीमें लिखाहै कि कुछेकतो उत्तरीय अर्द्ध मण्डल पर औरकुछेक मध्यमें जो सितारोंका रास्ता है और कुछकोंको दक्षिण अर्द्ध मण्डल पर और प्रत्येक सूरतका नाम अलग २ करके इसप्रकारसे कि जो ताराजिसचीज़ अथवा जीवके सदृश दृष्टिआया उसीके नामसेउसको प्रसिद्ध कियाहै,, जैसे जिसका स्वरूप मनुष्यके सदृश दिखाई परा उसको मनुष्यके नामसे और जो पशूकी सूरतके समान देखाउसको उस पशूके नामसे कोई मनुष्यके नामसे जैसे मिथुन और कोईजल-चारीकेसमान जैसेसरतां अर्थात् कर्क और कोई थलचारीके समान जैसेहमल, अर्थात् मेष कोई पक्षीकीसूरतके समान जैसे उक़ाब और कोईऐसे किजिसकीसूरत प्रकट नहीं जैसेमीज़ां अर्थात् तुला और कोई ऐसेहैं कि जिनकी सूरत पूरीनहीं उनके सदृश हैं जैसे क़ता-तुलफ़रस—और बहुतसे ऐसी सूरतहैं कि जिनका आधाअंग तोएक जीवका और आधा दूसरे जीवका जैसे रामी और कोई २ स्वरूप ऐसेहैं कि वे पूरेही नहींहोते जबतक उनके साथ दूसरे ताराकासं-योग न हो जैसे ममसकुलअना—कि जिसका स्वरूप पूराही नहीं होता जैसे तारा नैयर जो उत्तरकी तरफ़ वृषके पासहै और उसके साथ न मिलायाजावे तो वृषके निकट शनिश्चरके ऊपर ममसकुल अनाहोंगे परन्तु इन सूरतों का इसलिये बर्णन इन नामोंके साथ किया है जिसमें प्रत्येक सितारे को उसनामसे पहिचान लेवें और उसकी औरइशाराकरसकैं किउसका स्थानकहांहै और उसकीबना-वट कैसीहै और फिर उत्तर दक्षिण उस रेखासे जो धन और मकर के बीच उत्तरीय ध्रुवके ऊपरसे जातीहै कितनीहै और इसीकाबिचार भलीभांति करसकें शेष एकसौ अठारहताराहैं उनमेंकोईसूरतसंयुक्त नहींहैं इसलिये जो ताराजिस सूरत के पास वहहै उसीके नामसे उसको प्रसिद्ध किया है और ख़ारिजुल सूरत (स्वरूपके बाहिर) उनका नामरख दियाहै जैसे वह तारा जो मेषके ऊपरहै अरबदेशीय उसको नाज़िम कहते हैं उन अड़तालीस सूरतों मेंसे इक्कीस अर्द्ध

उत्तरीय भागमें हैं और बारह फ़लकुलबुर्ज परहैं और पन्द्रह अर्द्ध दक्षिणीय भागमेंहैं इसलिये अब हरएककी सूरत और नामपृथक्२ और जितने तारा उनसे सम्बन्ध रखते हैं अरबदेशीय ज्योतिर्विदों के अनुसार लिखते हैं॥

सूर्य शुमालिया (पुस्तक—अबदुलरहमान अगले दिनों अरब में ज्योतिर्विद हुआ) वह इक्कीस सूरतें हैं और जिनका कोई स्वरूप नहीं वे उन्तीस हैं तो इसलिये अब अर्द्ध उत्तरीयमण्डल में तीनसौ साठहैं दुब्बय असग़र (दुब्ब—रीछ) (असग़र—छोटा) उत्तरीय ध्रुव के निकटहैं और उसकी मुख्य सूरत अनुसार सातसितारेहैंजिनके स्वरूप नहीं लिखे वे पांचहैं अरबदेशीय उनसात को बनातुलनाश लड़कियोंका खटोलाकहते हैं और उनमेंसे चारसूरतें समकोण चतुर्भुजकेसदृशहैं उनकोनाश(खाट) कहतेहैं और तीनतारे जो दुम्बाल की ओर हैं उनको (लड़की) बनात कहतेहैं और उन चारतारोंमें से दोको जो उन्हींके तारे हैं फरक़दां बोलतेहैं और जो तारेदिनियाल की ओरको हैं उनको मकर कहतेहैं इसीसे दिशा अर्थात् पूर्व पश्चिम जानीजातीहैं॥

जब सम्पूर्ण तारों कि जिनकी सूरत है और जिन की नहीं है एकट्ठासमक (मछली—उँचाई) की ओर देखें तो और समके सदृश मालूम हों तो उनको फांस कहते हैं क्योंकि वह उसी की सूरत हैं और कुतुब बीच में रहता है और कुतुब दायरय मोहल उलक़ार मकर बहुत निकट है दब्बय असग़रो (छोटारीछ) की यह सूरत है जो लिखी है॥

तसवीर नम्बर १६

कोकबदुब्बकबीर (सितारा बड़ेरीछसमान) ये लिखीहुई सूरत में उन्तीस हैं और ८ तारे बाहिर स्वरूप हैं अरबदेशीय चार को जो समकोण चतुर भुजके समानहैं और तीन जो दुम्बाल अर्थात् पूंछपरहैं उनको बना तुलनाश कुबरी अर्थात् लड़कियोंको बड़ी खाट बोलतेहैं येचारनाशहैं और तीनबनात फिर इन तीन तारोंमें से जो तारा किनारे दुम्बाल पर हैं उसको क़ायद कहते हैं और जो बीच

मेंहै उसको अनाक़ और जो नाशके निकट दुम्बाल परहै उसको जज़्रकहते हैं और अनाक़के पास एकछोटासा तारा है उसको सुहा कहतेहैं और उससे अपनी दृष्टिकी परीक्षा लेतेहैं और छहतारे और हैं उसकी राहमें एक २ क़दम पर दोतारे उनको अरबदेशीय क़फ़रातुलतबा कहते हैं और वह सितारा कि जो दाहिनी पांवपर है उसके पास एक सितारा और है उसको सफ़ा कहते हैं और वह सिंहकी पूंछपरहै और थोड़े से तारे सफ़ाके ऊपर एकट्ठाहैं उनको नैयर थावान कहतेहैं और सात सितारे औरहैं उनकी गरदन, छाती और जांघोंपर अर्द्धघेरा के समान दृष्टिआते हैं उनका नाम शरीर नवातुलनाश कहते हैं और कोई २ उनको हौज़कहते हैं और कुछ तारे नाक, कान, और उसकी आंखों के पासहैं उनको तवाकहते हैं मानों असदसनाके हौज़पर खड़ाहै और दोतारे उनआठ तारोंमेंसे जिनका स्वरूप नहीं लिखा कि जो सलवा और क़ायद के बीचहैं और एक उनदोनोंका अधिक प्रकाशितहै अरबदेशीय इसको क़ायद उल्लासूद कहते हैं और छहसितारे जो बाक़ीहैं वह दाहिने हाथपर हैं जो तीन उनमेंसे प्रकाशवान्‌हैं उनको तवा और शेषोंको औलाद तवाबोलतेहैं और सूरत दुब्बय अकबरकी यहहै (बड़ारीछ) ॥

तसबीर नम्बर १०

क़वाकिबुत्तनीनअर्थात् अजगरकेसदृशतारा--इसमें इकतीसतारे हैं और सबकी सूरतमें हैं कोईतारा ऐसानहीं जो स्वरूप से बाहिर हो और जो तारा उसकी ज़बान परहै उसको अरबदेशीय रवाक़िब बोलते हैं और चारसितारे उसके शीशपर हैं उनको अवायद और एक सितारा छोटासा अवायदमेंहै उवा अर्थात् ऊंटका बच्चाकहतेहैं और दो सितारे जो पीछे ज़ेवयन अर्थात् दो भेड़ियोंके हैं उनको नैयरैन कहते हैं और दोसितारोंमेंसे जो एक प्रकाशमें कमहै और ज़ेवयनके आगेहैउनको मुतफारज़ैव कहतेहैं और जो थोड़ेसे सितारे ज़ेवयनके और नैरयनके बीचमें मोड़के निकट रिवा (ऊंटके बच्चे समान) पर स्थित हैं अरबदेशीय इनकोज़ेवयन इसलिये कहते हैं

; वे मानो भेड़ियेहैं और ऊंटके बच्चेपर टूटरहेहैं और अवापद को
ग्माद्दीहै चारउनमेंसे जोघेरेहुये हैं वह मानो उसकोचाहतेहैं कि
ड़ियोंसे बचालें और एक तारा और मुख्य दुम्बाल (पूंछ) पर है
ह अधिक प्रकाशवान है उसको अरबदेशीय ज़ावह कहते हैं
योंकि वह कफ़तारबिज्जूका पुल्लिंगहै ॥

तसवीर नम्बर १८

तारा-- फ़िक़ा ऊश तुलक्षुलत हव (भड़कने वालेकेसमान)इसके
वरूपमें इक्कीस तारेहैं और दश स्वरूप के बाहिर हैं ताराजातुल
;र्सी(कुर्सीपरबैठनेवाली)और मकरके बीचमें जो दुजाजा (मुर्गीरूप)
; पूंछ पर प्रकाशितहै उसको रुफ़ और जो उसकी छातीपै है उस
ो क़रहा कहतेहैं और जो उसके दाहिने कन्धे पर है उसको फ़र्फ़
हते हैं जो तारा ज़रआ और बाहिरी तारा और दुजाजा (मुर्गी)
 भुजासे बनताहै उसको क़दर कहतेहैं और जो दाहिने पंखपरहै
उसको राई अर्थात् चरवाहा और जो पैरोंके बीचमें छोटासा तारा
ायें पैरकी तरफ़ झुका हुआहै उसको कलीब् उलराई अर्थात् चर-
ाहेका कुत्ता कहतेहैं और जो छोटे २ तारे उसके पैर और मकरके
बीचमें हैं उनको अरब देशीय भेड़ें कहते हैं आगे सांच का बताने-
वाला तो ईश्वरही है ॥

तसवीर नम्बर १९

तारासैयाह— अर्थात् फिरने वाला इसमें तेईस तारे हैं जिनमें
से बाईस तो स्वरूपमें हैं और एक स्वरूप के बाहिर है और वह
मनुष्यके स्वरूप समानहै दाहिने हाथमें आसा (दण्ड) लिये बना-
तुलनाश लड़कियों की खाट और फ़िका के बीच में खड़ा है और
तारा उसके दाहिने मूढ़े परहैं उनको सना कहते हैं और जो कि
बांयेंहाथ और बाज़ूपर और जो उसकी गरदन पर छोटे२ तारा हैं
उनको सना की औलाद कहतेहैं और बाहिरी तारोंमेंसे एकतारा
उसकी दो रानोंके बीचमें प्रकाशित है उसको अरबदेशीय समाक-
रामा—हारिसुल समा--हारिसुलसुमाक कहते हैं क्योंकि वहसदैव

प्रकाशित रहताहै और सूर्य्यके प्रकाशसे छिपता नहीं जो सितारा उसके बांयें टांगपरहै उसको रमा कहतेहैं ॥

तसबीर नम्बर २०

तारा अकलील शुमाली (अकलीलताज़ अर्थात् उत्तरीयताज ये तारे अफ़क़ा परहैं यह आठ तारे मिलकर स्वरूप बनताहै औ सैयाह के आसाके (दण्ड) पीछे हैं और अच्छी तरह गोल नहीं है किन्तु टूटे कटोराके समानहैं इस लिये फ़ारसदेशीय इनको कासय दुर्वेश अर्थात् भिक्षुक पात्र कहतेहैं और इन तारोंमेंसे एक तारेका नाम इफ़का कहतेहैं और स्वरूप उसका यहहै ॥

तसबीर नम्बर २१

ताराजासी (नाचने वालेकी सूरत) इसको राक़िस (नाचनिया) भी कहते हैं यह आदमी के स्वरूप के समान है दोनोंहाथ फैलाये हुये और दोनों जांघोंको टेढ़ी कियेहुयेहै और दाहिना पांव उसका सैयाहके आसाकी ओरहै और बांयांपांव उन तारोंकी ओरकोहै जो तनीन (अजगर) के शीश पर हैं और उनको अवायद कहतेहैं (बीच में पड़नेवाले) और इसमें अट्ठाईस तारे हैं उस ताराको छोड़के जो इसके और सैयाहके बीचमें है और एक तारा स्वरूप के बाहिर है और स्वरूप यह है ॥

तसबीर नम्बर २२

तारे नस्रवअक़ा (तारेगीधरूपी) ये दशताराहैं और दशोंइसके स्वरूप में हैं और इन तारों का नाम नस्रवअक़ा (गीध) इस हेतु से रक्खाहै कि अरब देशीय इनकी उपमा गीधके साथदेते हैं दोनों बाज़ू अपने इस भांति समेटेहै कि मानों गिरना चाहता है संसारी इसको अनाफ़ी कहते हैं इसके पांखपर एक तारा प्रकाशित है और अरब देशीय इसको अज़फार कहते हैं और नस्रव अक़ाक स्वरूप यहहै ॥

तसबीर नम्बर २३

तारादुजाजा(मुर्गीरूपीतारा)इसके १६ तारा है सत्रह तो इसके स्वरूपमेंहैं और दो स्वरूपके बाहिर हैं चार तारे जो एक पंक्तिमें

जो आकाश पंथको काटजाते हैं उनको फवारिस (घुड़चढ़े) कहते हैं इस हेतु से कि मानो चार सवार अलग२ घोड़ा दोड़ारहे हैं उनमें से दो सितारे प्रकाशित पक्षी(तापर)की तरफ है उनको रदाफ पीछे जानेवाले कहते हैं क्योंकि उन चारोंके पीछे जातेहैं मानो उन के अनुगामीहैं और कोई २ कहतेहैं कि वे सब तारे जो उस बाजू परहैं सब फवारिस (सवार) में सेहैं और जो छाती परहैं उनको रावआ कहतेहैं और दो दाहिने और दोबांयेंपरहैं और एक स्वरूप के पीछेहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २४

तारे ज़ातुल्लुल कुर्सी (कुर्सीपर बैठने वाली) यह तारा एकस्त्री का स्वरूप है जैसे कोई स्त्री कुर्सी पर तकिया लगाये पैर पर पैर धरेहो रास्ता में उस ताराके ऊपर जो मुलतहब के ऊपर है इस में तेरह तारा हैं उनमेंसे जो बहुत प्रकाशित हैं उनको अरबदेशीय कफ़ुलख़ज़ीब (रंगेहाथ) बोलते हैं और यह हाथेली (कफ़) सूक्ष्म है सुरइयाका इस तारा को हाथ फैलेहुये से उपमा दी है और जो उसके भीतर छोटे २ तारे हैं उनको अंगुलियों से सूरत है ॥

तसवीर नम्बर २५

तारा परसिया ऊश--उसके छब्बीस सितारे हैं जिनसे उसका स्वरूप बनाहै और तीन तारे स्वरूप के बाहिर हैं और एक पुरुष किसी सूरत दृष्टि आता है दाहिना पांव उठाये अपने बांयें पांवपर खड़ाहै दाहिनेहाथ में नंगीतलवार लिये अपने शीशपर धरेहै और बांयें हाथ में देवका कटाहुआ शीश लटकाये है इसी से उसको-- हामिलउलरा सुलगोल (देवका शीशउठानेवाला) कहते हैं सूरत उसकी यह है

तसवीरनम्बर २६

तारा—मम् सकुलअना इसका स्वरूप एक मनुष्य के सदृश है और सुरइया और दूध अकबरके बीच में (बड़ारीछ) नखत हामि-लरासुलगोल (देवका शीश उठानेवाला) के पीछे खड़ा है इसके स्वरूपमें तेरह सितारे हैं और कोई स्वरूप के बाहिर नहीं हैं और

इनको खयाम तम्बूके समान बोलतेहैं इसलिये कि वे खीमे अर्थात् तम्बूके सदृशहैं और दश तारे उसके शीशपै हैं उनको अयक़ और जो घुटने पर हैं उनको अरवान और जो बांईं कलाई पर हैं उनको जदैन (मकरकाबहुबचन) कहते हैं और अयून अनज़भी कहते हैं और रक़ीब अर्थात् इैते सुरइया कहते हैं इसलिये कि वह कभीर सुरइया के साथ उदय होता है और जो कावयन पर हैं उन तीनों को तबाबाउलअयूक़ कहतेहैं और सूरत उसकी यहहै॥

तसबीर नम्बर २७

ताराहौ अलहैया—यह एक स्वरूपवान् मनुष्यके सदृश अपने दोनों हाथों से सर्पको पकड़े हुये खड़ाहै उसके स्वरूप में चौबीस सितारेहैं और पांच स्वरूपके बाहिर हैं इनमेंसे जो तारे हौआ के शीशपै हैं उसको राई अर्थात् चरवाहा कहते हैं और जो राई के शीश परहैं उनको कलीबुलराई (चरवाहेकाकुत्ता) कहते हैं औ जो दोमें से मुख्य है वह हौवाका केन्द्रहै और दाहिनेकन्धे पर उसको भी कलीबुल राई कहते हैं और हईयाके स्वरूप में आ ताराहैं उनमें से जो गरदन पर है इसको अनकुल हैया कहते और जो पंक्ति हैयाके शीश पर है नुस्क़शामी कहते हैं इस हेतु कि वे शाम (देशकानाम) के तरफ अस्त होतेहैं और जो पंक्तिउसक गरदनके नीचे हैं उनको नुस्क़ई मानी कहते हैं इस हेतुसे कि व यमन (देशकानाम) की ओर अस्त होतेहैं और जो दोनों नुस्क़ बीचमें जो तारा हैं उनको रोज़ह कहते हैं और जो रौज़ह के बी में हैं उनको आनाम कहते हैं और सूरत उसकी यह है॥

तसबीर नम्बर२८

तारसहम अर्थात् तीरसमान उसमें पांच तारा हैं बाणके सदृश उनका मुख पूर्व और रोदा पश्चिम को ओर वह पंथमें दुजाजा (मुर्गी) की चोंच और गिद्धपक्षी पर स्थित हैं और उसकी लम्बाई में चारतारा दृष्टिआते हैं और जब समाके बीचमें पहुंचते हैं तो दो गज़ मालूम होतेहैं और सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर २६

तारा उक़ाब (पक्षी) इसके स्वरूप में ६ तारेहैं और एकस्वरूप के बाहिरहै और जोस्वरूपके भीतरहैं उसमेंसे तीनतारेहैं उननाम गिद्धपक्षी है इसहेतु से कि गिद्ध सन्मुखहै और दो तारोंको सभर कहतेहैं और देखनेमें दोगज़मालूमहोते हैं औरसूरतउसकीयहहै॥

तसवीरनम्बर ३०

तारादफ़ैन ॥ उसके स्वरूप में दशतारा हैं नस्रतायर अर्थात् गिद्धपक्षीके पीछेहैं तारानूरानी अर्थात् चमकदार उसकी पूंछपरहै उसको दिलफ़ैन कहते हैं और अरब देशीय उन चार तारों को जो उसके बीचमेंहैं उलअयूद कहतेहैं और संसारी लोगउनको सलीस कहतेहैं और जो दुम्बाल परहै उमूद असलीव कहतेहैं और सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३१

ताराकतातुलफ़र्स—इसमें चार तारेहैं जो दिलफ़ैनकी पीठ पै हैं उनमेंसे दो तारे एक दूसरेसे बहुत निकटहैं उनके बीचमें एकबीता का अन्तर होगा ये उसके मुंहपर हैं और दोतारा हैं उनके बीचमें अन्तर एक गज़काहै वे उसके शीशपरहैं और उसकी सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर ३२

तारा फ़र्सुल अज़ीम अर्थात् बड़े घोड़ाकेसमान इसके स्वरूपमें बीस तारेहैं और घोड़ाके समानहैं इसका पीछेकाधर नहींहै केवल शिर और गर्दन और अगले पांवहैं और पुट्ठे और पीछेके पांवनहीं हैं प्रथम तारा इसकी नाभीपैहै और वह मिरातुल मुसलसलापरहै अरबदेशीय उसकोसरतुलफरसकहतेहैं और जोतारा उसकीपेशानी पर है उसको जिवाह तुलफ़रस और जो उसके दाहिने कंधेपर है उसको मंकबुलफ़रस कहतेहैं और जो तारा उसकी पीठपर गर्दन केपासहै उसकोमर्तीउतफ़र्स कहते हैं औरजो उसके मुखपरहैउसको क़मुलफ़र्स बोलतेहैं अरबदेशीय इनचारों प्रकाशित तारोंको क़मुल-फ़र्स—जिनाहुलफ़र्स और मंकबुलफ़र्स कहते हैं और जिनाहुल फर्स और जो दो तारे मध्यमें हैं समकोण चतुर्भुज के सदृश हैं ८

दिलोकहते हैं और जो दोतारे इनमेंसे मुख्य हैं उनको अरकूह कहते हैं और जो जिनाह के नीचे है उसको अक़रब कहते हैं और इन सबको उरमुरस से उपमा इस लिये देतेहैं कि वे मध्य आसमान हैं और दिनोके शीशवाले तारों में से जो स्वरूप के शीश परहै उनको सादुल ख़वैया कहतेहैं और दो तारे जो घुटनों परहैं उनकोसादुलनज़र कहतेहैं और जोउसकीछातीवाले तारोंको सादुलयारा कहते हैं और सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३३

तारा मिरातुल मुसलसला– यह तारा एक स्त्री के सदृश अपने दोनो हाथ फैलाये हुयेहै उनमेंसे दाहिना उत्तरकीतरफ और बांयां दक्षिणकी तरफ और उसके पैरों पर बहुतसे सितारे हैं सो मानों एक जंज़ीर पड़ीहुई है इस कारण उसका नाम मिरातुल मुसलसला (जंज़ीर वाली स्त्री) कहतेहैं इसके स्वरूपमें तीसतारेहैं और जो तारा उसके शीशपर सरतुल फर्स अज़ीमके सन्मुखहै वह बाहिरहै और वह प्रकाशित तारा उन तारोंमेंसे है जो मकर के नीचेहै उसको हौतका पेट कहतेहैं और सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३४

कोकबतुल फरसुलताम (तारापूरेघोड़ेकेसमान) इसमें यकतीस तारेहैं और यह फर्स अर्थात् घोड़ा दूसराहै अत्यन्त शोभायमान फर्स अज़ीम (बड़ेघोड़ा)के सदृशहै और कोई२ तारा इसके स्वरूप में फर्स अज़ीमकेहैं और उसकी गर्दन तरफ इतने अधिक तारे हैं कि उनसे उसकेशीशकाआकारहोगयाहै और स्वरूपउसकायहहै।

तसवीर नम्बर ३५

कोकबतुल मुसल्लस अर्थात् त्रिभुज रूपीतारा यहतारा त्रिभुज दीर्घके सदृशहैइसके स्वरूपमें चार ताराहैं और एकतारा प्रकाशित इसके बांयें पांव त्रिभुजकी श्रेणीपर स्थितहै सो बाहिरहै और उन चार तारोंमें से एक तो त्रिभुजके शीशपरहै और तीनि उसके पृष्ठ की ओरहैं और स्वरूप उसका यहहै॥

तसवीर नम्बर ३६

व्याख्यान बारह बुर्ज अर्थात् राशोंके विषय में ॥

जानना चाहिये कि सूरतें जो मुन्तक़तुल बुर्ज (ग्रहोंकास्थान) के दायरामें सितारोंकी राहमें हैं वे बारह हैं उनको राशि कहते हैं और प्रत्येक राशि अपने स्वरूपानुसार उसी नामसे प्रसिद्धहै इस लिये प्रत्येक राशि और उस के तारों की संख्या स्वरूपानुसार अरब देशीय ज्योतिर्विदों के मतानुसारका वर्णन होगा अब प्रथम राशिसे आरम्भ करतेहैं ॥

कोकबतुलहमल अर्थात् मेषराशि—तेरहतारे तो उसकेस्वरूपमें और पांच स्वरूपके बाहिर हैं आगेका अंग उसका पश्चिम और पीछेका अंग उसका पूर्वकी ओर है और उसका मुख पीठकीओर फिराभया है दोतारे जो उसके सींगोंपरहैं उनको शुरतैन कहते हैं और एकतारा जो स्वरूप के बाहिर उसके सींगपर उसको नात्यह कहतेहैं और जो तारा उसके लिंग और जांघोंपर समत्रिभुज के सदृश उसकोवतीन अर्थात् पेटकहते हैं और शुरतैन और वतीन दोनों चन्द्रमा के स्थानहैं सूरत मेषकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३०

को कबतुलसूर अर्थात् वृष—यह बैलकी सूरत है इसका आधा अंग पीछेका नहीं है ॥ आगेका अंग इसका पूर्व को और पीछेका अंग दक्षिणकीओर और शीश अगले पहलूकी तरफ झुका है और दोनोंसींग पूर्वकी ओर हैं इसके खुर और दोनोंपांव नहीं हैं इसके स्वरूप में बत्तीसतारे हैं और जो प्रकाशित तारा उत्तर की तरफ मम्सकुल अना के पांवपर स्थित हैं वे उनतारों के बीचमें हैं जो स्वरूप के बाहिर हैं और वे ग्यारह इस के आधे फटे अंगपर चार तारे एक पंक्तिमें हैं उसकी दक्षिणकी आंखमें जो लालताराहै उस कानाम धबरान है और ऐनुलसूर अर्थात् बैलकी आंखभी कहतेहैं और अरब के निवासी कामिलुलसूर अर्थात् पूरा बैल के तारे की सुरइया कहते हैं और वह दोतारे प्रकाशित और तीनअंगूरके दु

के सदृश एकठौर एकट्ठा हैं और क्योंकि ये तारे आपस में अत्यन्त निकट२ हैं इसीकारण से एकतारा दृष्टिआते हैं इसलिये उसको नजम कहते हैं और जो सितारे चोंचदार बैल के कान के स्वरूप सदृश हैं उनकानाम कलवैन हैं और योंभी कहते हैं कि ये दोनोंतारे देरानके कुत्ते हैं अरबके निवासी उसको अशुभ कहते हैं कि कोई नजमके सन्मुखहो तो उसे क्षेमनहीं उनकी गरदन में कुछ सितारे हैं उनको फलास कहते हैं और फलासकोसआदनोंक कहतेहैं अरब केबासी कहतेहैं कि देरां नखतमें बर्षानहींहोती वरन यहबात उन के मतानुसार प्रमाणिक नहीं है सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर ३८

को कबतुल्तवामीन—याज़ोजा अर्थात् मिथुन इसके अट्ठारह तारा तो स्वरूप मेंहैं और सात स्वरूपके बाहिर हैं उसकी सूरत सदृश दो मनुष्यों के शीश जिनके उत्तर और पूर्व और पैर दक्षिणओर हैं और इसके और उन सितारोंमें भेदहैं और प्रत्येक स्वरूपके शी पर वह जो दो सितारा प्रकाशित हैं उनके नाम अरबनिवार लोगोंने ज़िरामल सूतकहाहै और जो दोसितारे हाथोंपर हैं उनव नामहक्रिया कहतेहैं कि इनदो तारोंमेंसे एकका नाम मनेसाहै औ एकका नाम ज़रा है और जो दो सितारे आगे के पांवपर हैं उनव नज्जाशीकहतेहैं सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर ३६

कोकबतुलसर्तां अर्थात् कर्क के सदृश तारा (कर्क) इसके स्व रूपमें नौ और स्वरूपके बाहिर चारतारेहैं अरबदेशीय इनमेंसे प्र काशित तारोंको नशरा कहते हैं और दोतारा जो नशराके पीछे उनको हमारैन कहते हैं प्रकाशित तारा और जो पीछे के दक्षिण पांवपरहैं उसको तरफ़ा कहते हैं और स्वरूप सर्तांग (कर्ककायहहै

तसवीर नम्बर ४०

को कबतुल असद अर्थात् सिंह रूपी तारा(सिंह)इसके स्वरू मेंसत्ताईस और स्वरूपके बाहिर आठतारेहैं जो तारे मुहको घेरेहै उनको तरफ़ कहते हैं और गरदन पर जो चारताराहैं उनको मस्तक

कहतेहैं और पेटकेतारे और ख़िर्क़यफ़िक़ा (फ़क़ीरके चेला) कोशुक्र कहते हैं और पीछे दुमवालोंको सिंहका दिलकहतेहैं और मुज़्कर के सितारोंको सर्फ़ा इसलिये कहतेहैं कि जब वह उदय होताहै तो गर्मी कमहोजाती है और जब पश्चिम में जाके अस्तहोता है तो सर्दी कमहोजातीहै स्वरूप उसका यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४१

कोकबतुल सम्बुला (फूलोंवाली) अर्थात् कन्याराशि इसके स्वरूपमें छत्तीस और स्वरूपके बाहिर छहतारा हैं इसका स्वरूप स्त्रीकाहै और शीश इसका सर्फ़ाके दक्षिणमेंहै और वह तारासिंहकी पूंछपर स्थित है और दोनों पांव ज़ुबैन (भेड़ियों) के आगे हैं और जो तारे तुलाके ऊपर हैं उनको अवा (भूकनेवालाकुत्ता) कहते हैं और यह चन्द्रमा का तेरहवां स्थान है कोई २ कहता है कि अवा (भूकनेवालाकुत्ता) तेरह तारे हैं जो मुख्य स्वरूपके पेट और पेट के नीचे स्थित हैं ये कुत्ते हैं सिंह के पीछे अफ २ करते हैं (भूकते हैं) इसके उदयमें सरदी आतीहै और जो तारा उसके हाथोंके निकटहैं उसको समाक एज़ाल कहते हैं और जो समाकरामाके सन्मुख है उसको एज़ाल कहतेहैं क्योंकि उसके पास हथियार नहींहैं इसका नाम सनीला कहते हैं और कोई २ इसको सिंहकी टांग कहते हैं इसके बायें पांवके ताराको अज़र इसलिये कहते हैं कि इसके तारे वृषमेंहैं सो मानो स्वरूपको छिपाये हुयेहैं और सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४२

कोकबतुलमीज़ां अर्थात् तुलाके समान तारा इसके स्वरूप में आठतारे हैं सो कन्या और वृश्चिक के बीचमें हैं और नौ स्वरूपके बाहरहैं और कोई तारा नहींहै स्वरूप यह है ॥

तसवीर नम्बर ४३

कोकबतुल अक़रब अर्थात् बिच्छू के समान तारा (वृश्चिक) इसके स्वरूपमें इक्कीसतारेहैं और तीनतारा स्वरूपके बाहिरहैं अर-बदेयीप इसके मस्तकके तीनतारोंको अकलील अर्थात् ताजकहते हैं

(कूट) और जो तीनतारा इसके शरीरके ऊपर हैं उनको क़लबुल अक़रब (वृश्चिकका हृदय) कहते हैं और जो तारा हृदयके सन्मुख और हृदयके बीचमें हैं उनको बनात (लड़का) कहते हैं और जो थोड़ेसे तारे खज़रातमें हैं उनको कफ़रात कहतेहैं और जो तारादो ज्घनकी तरफ़हैं उनको सोलह अर्थात् डंककहतेहैं सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ४४

कोकबतुलरामी (धनराशि) इसका नाम कूसमी है इसकेस्व-रूप में यकतीस ताराहैं और कोई तारा इसके गिर्द प्रकट नहीं हैं और जो तारा इसके आधीन दक्षिणकी तरफ दाहिने हाथके पासहै उसको जूयआव अर्थात् पानीकी नहर कहते हैं और जो तारा उसके ऊपर और बगलके नीचे पूर्वकी तरफ हैं उनको नआयम कहते हैं और जो तारा इसकी कमानके उत्तरहै उसको तलीमैन कहतेहैं औ जो तारा बायेंजांघ और टांगपरहैं उनको मरदैन कहतेहैं सूरतयहहै

तसवीर नम्बर ४५

कोकबतुलजदी अर्थात् मकर के समान तारा (मकरराशि इसके स्वरूप में अट्ठाईस ताराहैं और कोई तारा इसके आसपास नहींहैं उसकी पूंछके दो सितारोंको सादज़िवह कहते हैं और कारण इसका यहहै कि इनदोनों सितारोंमेंसे एक अत्यन्त छोटाहै उसको ज़िवहसग़ीर (छोटा) कहते हैं अर्थात् छोटे की ग्रीवा काटनेवाला और जो दोतारे पूंछपैहैं उनको मखतीन कहतेहैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ४६

कोकबतुलसाकिबुल मादहौअलवलद अर्थात् (कुम्भराशि) इसको देवकहतेहैं इसके स्वरूप में बयालीस तारेहैं और तीनस्व-रूपके बाहिर हैं अरबदेशीय उसके दाहिने कन्धेवाले सितारों को सादुलमलक कहतेहैं और बायें कन्धेवालेको और उसको जो मकर कीपूंछपरहै सादुलसऊद कहते हैं और बायें हाथवालों को सादव लवाकहतेहैं और इनतारोंमें सादज़िवहसे अन्तर बहुतहै सोइसदूरी को फैलेहुये मुखसे उपमा देतेहैं मानो इस चौड़ाईमें होकर निकल

जायगा कहतेहैं कि जिससमय इसको प्रकाशित कियाहै उससमय यह आज्ञाहुई कि जो तारा इसकी भुजापर है और जो तीनतारा इसके बायेंहाथपर हैं इनको सादुलअहइया इस कारण कहते हैं कि जिस समय वह प्रकाशित होताहै उस समय जाड़ों में दुखदाइयोंको छिपाताहै और जो ताराहौत (मीन) के मुखमें है उसको सफ़दअौवल कहते हैं॥

तसवीर नम्बर ४७

कोकबतुलसहमगी अर्थात् मछली के समान तारा (मीन) चौंतीसतारे तो इसके स्वरूप में हैं और चालीस स्वरूप के बाहिर हैं और मछलियां हैं इनमेंसे एकको तो समकतुल मुक़द्दमा कहते हैं और दक्षिण में फ़र्सअज़ीम (दीर्घअश्व) के पीठपर स्थितहै कोकबमिरातुल मुसलसला (रस्सीवाली) और इन दोनों के मध्य दक्षिणमें एक रस्सी तारोंकी मानलीहै जो इनदोनों मछलियों को एकमें लपेटतीहै और सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ४८

अनाउलसूरुल जनूबतह—ये पन्द्रहतारे हैं प्रथम तारा क़तीस यह वह ताराहै जो अद्र्द दक्षिणमें स्थितहै सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ४९

इसतारेका स्वरूप पशुकाहै और उसके निवास की जगह ग्रहोंके मण्डलपर लिखीहै और नाम उनके अरबदेशीय लोगोंके निश्चयके अनुसार लिखेजातेहैं॥

बकीयतुल शराक़तीस—इसका शीश मछली के शीश समान पश्चिम में स्थितहै और जो मेषताराके दक्षिणमेंहै और पूंछउसकी पश्चिममें उनतीन बाहिरीमेंहैं उनके पीछे स्थितहै जो साकिबुलभाहैं इसके तारे बाईसहैं अरबदेशीय इसके सरके सितारोंकोकेवत फुलजदना कहते हैं इस हेतुसे कि इसकी आकृति कफुलख़ज़ीबके सदृश उसके नीचेहै जो पांचतारे इसके शरीर परहैं उनका नाम अनामातहै और जो दुमपर हैं उनको निज़ाम कहते हैं और जो

सितारा तायफ़ा (झुण्ड) दक्षिणीमें हैं उनको सफ़दासानी कहते हैं॥

कोकबतुलज़िवह—अर्थात् मत्थेवाले इसके स्वरूपमें अड़तीस तारेहैं और स्वरूप इसका पुरुषके सदृशहै और नाहियाकेदक्षिण में हाथमें लकड़ी पकड़ेहुये खड़ाहै और उस लकड़ीके भीतर तलवारहै इसके मुखवाले तारेका नाम अरबदेशीयने हक्कारक्खा और अतानीभी कहते हैं इसके दाहिने कन्धेपर जो दो बड़े तारे प्रकाशितहैं उनको मंकबुलजौज़ कहते हैं और जो प्रकाशित ताराइसके बायेंकन्धे परहै उसका नाम नाहिदहै और मर्दुमभी कहते हैं और जो इसकीकमरपै तीन सितारे एकपंक्तिमें हैं उनकोमुन्तक़तुलजौज़ कहते हैं और जो तीन तारा एक पंक्ति में इकट्ठे हैं उनका नाम सयफुलजवार है और एक तारा जो इसके बायेंपांव में है उसका नाम रजुलजवार है और नवतारा जो बटेहुये बाहूँ पर हैं उनको ताजुल जौज़ाकहते हैं और जवायब जौजह भी कहते हैं और सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ५०

कोकबतुलनहर अर्थात् सर्परूपी तारा—इसके स्वरूप में चौंतीसतारेहैं और बाहिर स्वरूपके कोई तारा नहीं है इसकी आदि उस प्रकाशित तारेसेहै जो जौज़ाके बायें पैरपर स्थितहै औरपश्चिम में उनतारोंकी तरफको चढ़ताहै जो क़तीसकी छातीपर हैं इसलिये पूर्वमें तीन तारोंपर होकर दक्षिणकी ओरजाताहै अर्थात् तीनतारों पर दृष्टि करताहै पूर्वमें होकर तीनतारोंपर दृष्टिकरता है इसलिये दक्षिण होकर पूर्वको जाताहै और वहांसे दक्षिणमें होकर तारोंके झुण्डपर मुखकरके अलग होताहै और जो जनूवनदोतारा निकटरहैं उनके पासहोकर पश्चिम से निकलता है और इकट्ठे तीन तारोंपर पहुंचता है अरब निवासियों ने इसके प्रथम द्वितीय और तृतीय तारेकानाम और नहरकेचारोंतारोंकानाम औजीउलनअमरक्खाहैऔर जगह इसकी बैज़हहै और जोआसपास तारेहैं उनको बैज़हकहतेहैंऔर आखिर नहरमेंजोताराहै उसका नाम तिलिस्महै

इसतिलिस्म और उस तिलिस्म के बीचमें जो ताराहै हौतके मुख में उसका नाम फ़राजुन अमहै-सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ५१

कोकबतुलअरतब अर्थात् खरगोश रूपी तारा- इसके स्वरूपमें बारा सितारे हैं और इसके स्वरूपकेबाहिर कोई तारा नहीं जड़ाहै यह तारा जवारके पाईनहै और इसका मुख पश्चिम और पांव पूर्व की ओर हैं अरबदेशीय लोगों ने इसके चारतारों को जो दो हाथोंमें और दो जो पैरों में हैं उनका ना कुर्सीउल जौजा अर्थात् मिथुन की कुर्सी रक्खा है — सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ५२

कोकबकलबुल अक्बर अर्थात् बड़े कुत्तारूपीताराइसके स्वरूप में अट्ठारह तारेहैं औरग्यारह स्वरूपके बाहिरहैं औरकुत्ताकी सूरत है और मिथुनके पीछेहै इसीसे इसका नाम कुत्ताहै अरबवाले उस प्रकाशित तारेको जो चन्द्रमाके स्थान में है शारी अबूर नाम कहते हैं और शारईमानीभी कहतेहैं क्योंकि मजरासे बढ़ाहै और सोहेल के निकटहै और एमानी कहने का यह कारणहै कि यह यमन की ओरहै और जो ताराइसके शीशपर है उसका मर्जुमुल अबूदनाम है और चार सितारे कन्धे और दुम और रानपर हैं उनको अज़ारी कहते हैं और जो चार तारे स्वरूप के बाहिरहैं एक पंक्तिमेंहैं उनको फ़रूद कहतेहैं और जो प्रकाशित तारे जो स्वरूपके बाहिरहैं उनको हज़ार कहतेहैं और स्त्री भी कहतेहैं और कोई२ अरब देशीय उसका नाम महली फ़यन कहते हैं इस हेतुसे कि सुहेलके प्रथम उदयहोता है और उनको अपने प्रकाशसे छिपा लेतेहैं-सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ५३

कोकबतुलकलबुलमुक़द्दम अर्थात् आगेके कुत्तासमान ये दो तारे नैरयन के बीचमें हैं जो तवाईन के शीशपर और कलबुल अकबर के (बड़ाकुत्ता) पीछे हैं एक उनमें से अधिक प्रकाशित है अरबदेशीय इसका नाम शारीशामी कहते हैं और कारण यह है कि यह शाममें

सितारा तायफ़ा (झुण्ड) दक्षिणमेंहैं उनकोसफ़दासानी कहतेहैं॥
कोकबतुलजिब्रह—अर्थात् मत्थेवाले इसके स्वरूपमें अड़तीस तारेहैं और स्वरूप इसका पुरुषके सदृशहै और नाहियाकेदक्षिण में हाथमें लकड़ी पकड़ेहुये खड़ाहै और उस लकड़ीके भीतर तलवारहै इसके मुखवाले तारेका नाम अरबदेशीयने हक़ारक्खा और अतानीभी कहते हैं इसके दाहिने कन्धेपर जो दो बड़े तारे प्रकाशितहैं उनको मंकबुलजौज़ कहते हैं और जो प्रकाशित ताराइसके बायेंकन्धे परहै उसका नाम नाहिदहै और मर्दुमभी कहते हैं और जो इसकीकमरपै तीन सितारे एकपंक्तिमें हैं उनकोमुन्तक़तुलजौज़ कहते हैं और जो तीन तारा एक पंक्ति में इकट्ठे हैं उनका नाम सयफुलजवार है और एक तारा जो इसके बायेंपांव में है उसका नाम रजुलजवार है और नवतारा जो बटेहुये बाहँ पर हैं उनको ताजुल जौज़ाकहते हैं और जवायब जौजह भी कहते हैं और सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ५०

कोकबतुलनहर अर्थात् सर्परूपी तारा—इसके स्वरूप में चौंतीसतारेहैं और बाहिर स्वरूपके कोई तारा नहीं है इसकी आ[illegible] उस प्रकाशित तारेसेहैं जो जौज़ाके बायें पैरपर स्थितहै औरपश्चि[illegible] में उनतारोंकी तरफको चढ़ताहै जो क़तीसकी छातीपर हैं इसलि[illegible] पूर्वमें तीन तारोंपर होकर दक्षिणकी ओरजाताहै अर्थात् तीनतार[illegible] पर दृष्टि करताहै पूर्वमें होकर तीनतारोंपर दृष्टिकरता है इसलि[illegible] दक्षिण होकर पूर्वको जाताहै और वहांसे दक्षिणमें होकर तारों[illegible] झुण्डपर मुखकरके अलग होताहै और जो जनूवन दोतारा निकटर[illegible] हैं उनके पासहोकर पश्चिम से निकलता है और इकट्ठे तीन तारोंपर पहुंचता है अरब निवासियों ने इसके प्रथम द्वितीय और तृतीय तारेकानाम और नहरकेचारोंतारोंकानाम औजीउलनअम- रक्खाहैऔर जगह इसकी वैज़हहै और जोआसपास तारेहैं उनको वैज़हकहतेहैंऔर आखिर नहरमेंजोताराहै उसका नाम तिलिस्महै

इसतिलिस्म और उस तिलिस्म के बीचमें जो ताराहै हौतके मुख में उसका नाम फ़राजुन अमहै-सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ५१

कोकबतुलअरतब अर्थात् खर्गोश रूपी तारा- इसके स्वरूपमें बारा सितारे हैं और इसके स्वरूपकेबाहिर कोई तारा नहीं जड़ाहै यह तारा जवारके पाईनहै और इसका मुख पश्चिम और पांव पूर्व की ओर हैं अरबदेशीय लोगों ने इसके चारतारों को जो दो हाथोंमें और दो जो पैरों में हैं उनका ना कुर्सीउल जौजा अर्थात् मिथुन की कुर्सी रक्खा है — सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ५२

कोकबकलबुल अकबर अर्थात् बड़े कुत्तारूपीताराइसके स्वरूप में अट्ठारह तारेहैं और ग्यारह स्वरूपके बाहिरहैं और कुत्ताकी सूरत है और मिथुनके पीछेहै इसीसे इसका नाम कुत्ताहै अरबवाले उस प्रकाशित तारेको जो चन्द्रमाके स्थान में है शारी अबूर नाम कहते हैं और शारईमानीभी कहतेहैं क्योंकि मजरासे बढ़ाहै और सोहेल के निकटहै और एमानी कहने का यह कारणहै कि यह यमन की ओरहै और जो ताराइसके शीशपर है उसका मर्ज़ुमल अबूदनाम हैं और चार सितारे कन्धे और दुम और रानपर हैं उनको अज़ारी कहते हैं और जो चार तारे स्वरूप के बाहिरहैं एक पंक्तिमेंहैं उनको फ़रूद कहतेहैं और जो प्रकाशित तारे जो स्वरूपके बाहिरहैं उनको हज़ार कहतेहैं और स्त्री भी कहतेहैं और कोई२ अरब देशीय उसका नाम महली फ़यन कहते हैं इस हेतुसे कि सुहेलके प्रथम उदयहोता है और उनको अपने प्रकाशसे छिपा लेतेहैं-सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ५३

कोकबतुलकलबुलमुक़द्दम अर्थात् आगेके कुत्तासमान ये दो तारे नैरयन के बीचमें हैं जो तवाईन के शीशपर और कलबुल अकबर के (बड़ाकुत्ता) पीछे हैं एक उनमें से अधिक प्रकाशित है अरबदेशीय इसका नाम शारीशामी कहते हैं और कारण यह है कि यह शाममें

अस्त होजाताहै और इसको शारी अमीज़ा भी कहते हैं क्योंकि यह सुहेलका बड़ा मित्रहै और एमानिया मजरा से निकला है इसलिये नाहिया सुमालिया में रहा और सुहेलकी बिरहमें यहांतक रोया कि आंखें डूबगईं इन दो तारों को जो तवामीन के सर पर हैं जराबुल असद मकबूज़ा कहते हैं—सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ५४

कोकब तुरस फीनत—इसके स्वरूप में पैंतीस तारे हैं और आस पासमें कोई तारा नहींजड़ाहै बतलीमूसने लिखाहै कि जो सितारा बड़े मख़ज़ाफ़ जनूबी परहैं वे सुहेलहैं यह तारा सब तारों से बहुत दूरहै इस्तिरलाब में इसकी सूरत बनाते हैं परन्तु अरबमें भेद है कोई तो कहताहै कि यह जो तारा मख़ज़ाफ़की तरफ़हैदूसरा सुहेल है और दक्षिण ध्रुवके नीचे मख़ज़ाफ़ के निकट है उसीपर स्थितहै और सफ़ीनतकी—सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ५५

कोकब तुशुजआ इसके स्वरूप में पच्चीस तारे हैं इसका शीश कर्कके दक्षिण में है यह तारा शारी और अमीज़ा के बीचकलबुल असद (सिंहकाकुत्ता) से कुछेक दक्षिण दबा हुआहै और फिर पूरब दक्षिणकी राह लेता है और मित्रों की ओर होकर दूसरे तारोंकी ओर होताहै इसकी पीठपर चार ताराहैं उस प्रकाशित तारेके उत्तर और उस ताराको जो उन्कपर अरब देशीयएकफ़र्द कहते हैं क्योंकि जो कुछ उसमें रह जाता है सो एकही है और शेषतारे शुजआ के नामसे प्रसिद्ध हैं अरबदेशीय उनको कईप्रकारसे कहते हैं कोई य कहतेहैं कि फ़रद (एक) और जवारकेबीचमें एक बड़ाताराहै उसका नाम शरासीफ़ है जवार तारा मुस्तदीर है और उसको मुअलक़ कहते हैं उसका नाम बातिया है सत्य बतानेवाला आगे ईश्वर है स्वरूप शुजाअ यहहै॥

तसवीर नम्बर ५६

कोकब बातिया ये सात सितारे शुजआके उत्तरमें स्थितहैं अरब

देशीय इसका नाम मौलिअबो कहते हैं और ठीक२ पूरब पश्चिम बातियाके सरपर स्थित हैं और जो तारे पीछेके अंगमें वे पश्चिम और दक्षिणके कोण परहैं और—सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ५७

कोकबतुलगराब यह बातिया के सातों तारों के पीठपर समाक एज़ाल के उत्तर दक्षिण में स्थितहै अरबदेशीय इसका नाम अज-उलआसद कहते हैं और अरशसमाकएज़ाल और हम्मालभी कहते हैं और——सूरतयह है॥ तसवीर नम्बर ५८

कोकबक़न्तूरस—इसके स्वरूपमेंसैंतीसतारेहैं यहएकपशुकी सूरत है कमर से ऊपर भाग तो मनुष्य के सदृश है और धड़के नीचे से घोड़ा का स्वरूप है इसका मुख पूर्व और पूंछ पश्चिम तरफ़ है इसकी सूरत ऐसी है कि एकहाथ में तो दो गुच्छे अंगूरके हैं और एक हाथ में सवा अर्थात् बाघहै इसके पेटमें जो तारा है उसको वतन अर्थात् पेटकहते हैं दाहिने हाथ में हसारनामक तारा और दूसरे हाथमें वज़ननामक तारा है और ये वे तारे हैं जिनका नाम महलीफैंन और महसतैनहैं जैसा कि ऊपर व्याख्यान हुआहै और मित्रोंके मज़रापर होकर सुहेलपर जाताथा तो अब एक दूसरे के बिपरीत हैं और एकस्वरूप होने के कारण कोई तो कहता है कि यह सुहेल है और कोई सुहेल नहीं कहता निदान इसको सुहेल कहना ठीक नहींहै—सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ५६

कोकबसवा अर्थात् बाघरूपी तारा यहसूरत उन्नीस तारोंकीहै कोई २तारे इनमें से क़न्तूरसके तारोंसे मिलेभये हैं क़न्तूरसने बाघ का हाथ पकड़ा है अरबदेश निवासी इसका नाम क़न्तूरस और मसवा और शुमारिया कहतेहैं इनमेंमैलापन और अंधियारा बहुत है और कोई इसके आसपास तारा नहीं है—सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ६०

कोकबतुलमजरा--इसके तारों की संख्या सातहैं अरबदेशीय इसका कोई नाम नहींकहते और—सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ६१

कोकतुल अकलीलजनूबी--अर्थात् दक्षिणीकीट इसके स्वरूप में तेरह ताराहैं इसके आगे दो तारे हैं जो रामीके पैरोंपर हैं कोई २ इसका नाक़वा बतलाते हैं और कोई बख़ीउलनाम कहते हैं और वे अशरीं इसकारणसे हैं कि वे नाअमसके दक्षिणमें हैं—सूरतयहहै

तसवीर नम्बर ६२

कोकबहौतजनूबी अर्थात् दक्षिणीमीन--इसके स्वरूप में ग्यार और बाहिर सूरत के छःतारा हैं देवके दक्षिणमें पूर्वकीतरफ मु और पश्चिमकी तरफ पूंछहै इसकानाम क़मुलहौत है और इस आसपास कोईतारा प्रकटनहींहै — सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ६३

चन्द्रमाके स्थानों के बिषय में ॥

ये चन्द्रमाके अट्ठाईसअस्थानहैं प्रतिरात्री एकमें इनस्थानोंमें ई बास करताहै द्वीजसे पूरणमासी तक चन्द्रमा पूरा होजाता है जे महीना उन्तीस दिनका होताहै तो चतुर्दशी के दिन चन्द्रमा छि जाता है और तीसदिन का महीना हुआ तो अमावस के दि चन्द्रमा अदृश होजाताहै इस अस्त होनेकी दशामें भी एक स्था जाताहै इन्हीं अट्ठाईस स्थानों में से चौदह तो ज़मीनके ऊपर औ चौदह पृथ्वीके नीचे हैं जबइन अट्ठाईस नक्षत्रोंमें से कोई की हा होतीहै तो उसके पलटे दूसरा उदय होताहै अरबदेश निवासी इन अट्ठाईस स्थानोंमेंसे चौदहको शामी कहतेहैं और चौदहको एमानी कहते हैं मनाज़िल शामी अर्थात् शामी स्थानोंमें से प्रथम स्थान कर्क और अन्तका स्थान एज़ालुहुमाक अर्थात् मीनहै एमा स्थान प्रथममें अकार और आखिर रशाहै अरबदेशीय इसको सकूतुलनज़म भी कहते हैं वर्षभरमें एक सम्पूर्ण स्थान पूरे होजातेहैं नये सम्वत में फिर उसी रीति से प्रथम स्थानसे आरम्भ होताहै कोई २ कहते हैं कि जिस समय नजम सकूत नजम तकरहताहै तेरहदिनहैं इस लिये जो कुछखेदहोताहै वह सम्पूर्णप्रभाव उन्हीं साक़िततारोंकाहै

द्वान् इन स्थानों के विषयमें बहुधा सन्देह करते हैं प्रकटहो कि
ामीके स्थानों में से प्रथम स्थान कर्कहै लोग कहतेहैं कि ये दोनों
ारे मेषके सींगहैं;इसका नाम नातहहै जो दोनों सींगों के बीच में
और इनकी सूरत यहहै कि एक तो कैदुलसमानाहिया उत्तर में
हतीहै और दूसरा दक्षिणमें इसलिये जबसूर्य्य इसस्थानमें आता
ै तो वह मध्यमऋतु होतीहै और रातदिन बराबर होताहै साजाने
लिखाहै कि जिस समय कर्क उदय होताहै तो समयके सम्पूर्ण अंग
समान होतेहैं और बिदेशी लोग अपने२ देशोंको आतेहैं और सब
मनुष्य अपने२ इष्ट मित्रों को सोगात भेजतेहैं और नैसां(रूमीमही-
नाका नाम) महीनामें उदय होताहै और सकूतनशरी उल आख़िर
(रूमीमहीनाकानाम) अट्ठारहवीं को उदय होताहै और अज़ार की
अट्ठाईसवीं को सूर्य्य इस स्थान में आताहै इसलिये जब सूर्य्य
कर्क का होताहै तो एक साल होता है और इसका नाम सरता-
अर्थात् कर्क इसकारण कहते हैं कि यह नए सम्वत् का चिह्नहै
इनमें से अशरात नामक एक सायतहै वह इसका चिह्न है तारा-
णीरीसे क्षेमके चिह्न प्रकट होतेहैं और वृक्षोंमें फलउत्पन्न होतेहैं
और जौकीफसल काटतेहैं और सरता का द्वितीय अक़रहैं ॥

तसबीर नम्बर ६४

दूसरी (मंजिल) व तीनकी—दूसरास्थान—व तीन पेटवाले
इसका नाम बत्तीनुलहमलहै यह तीनतारा छिपेहुये हैं मानों आ-
सानीहैं और सुरइयाके बीचमें यह सूरतहै

तसवीर नम्बर ६५

नैसाकी अन्तकी रातको उदय होताहै और नशरींउलअौवल
की रात को अस्तहोताहै इसके अस्तके निकट नदी हैं इसलिये
संतुष्ट होताहै और जख़्म और ख़ुतातीप और बेहदादादि नाना
प्रकार के पक्षी अहेर करनेवाले अपने २ घोसलों में चलेजाते हैं
मोरचाको चलनेकी सामर्थ्यनहींरहतीहै साजा(नामज्योतिर्विद)
ने लिखाहै कि जिससमय वतीन उदय होताहै उससमयपक्षीकआ

तसबीर नम्बर ६१

कोकतुल अकलीलजनूबी--अर्थात् दक्षिणीक़ीट इसके स्वरूपमें तेरह ताराहैं इसके आगे दो तारे हैं जो रामीके पैरोंपर हैं कोई २ इसका नाक़वा बतलाते हैं और कोई बख़ीउलनाम कहते हैं और वे अथरीं इसकारणसे हैं कि वे नाअमसके दक्षिणमें हैं—सूरतयहहै॥

तसबीर नम्बर ६२

कोकबहौतजनूबी अर्थात् दक्षिणीमीन--इसके स्वरूप में ग्यारह और बाहिर सूरत के छःतारा हैं देवके दक्षिणमें पूर्वकीतरफ मुख और पश्चिमकी तरफ पूंछहै इसकानाम क़मुलहौत है और इसके आसपास कोईतारा प्रकटनहींहै—सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर ६३

चन्द्रमाके स्थानोंके विषय में॥

ये चन्द्रमाके अट्ठाईसअस्थानहैं प्रतिरात्री एकमें इनस्थानोंमें से बास करताहै हीजसे पूरणमासी तक चन्द्रमा पूरा होजाता है जो महीना उन्तीस दिनका होताहै तो चतुर्दशी के दिन चन्द्रमा छिप जाता है और तीसदिन का महीना हुआ तो अमावस के दिन चन्द्रमा अदृश होजाताहै इस अस्त होनेकी दशामें भी एक स्थान जाताहै इन्हीं अट्ठाईस स्थानों में से चौदह तो ज़मीनके ऊपर और चौदह पृथ्वीके नीचे हैं जबइन अट्ठाईस नक्षत्रोंमें से कोई की हानि होतीहै तो उसके पलटे दूसरा उदय होताहै अरबदेश निवासी इन अट्ठाईस स्थानोंमेंसे चौदहको शामी कहतेहैं और चौदहको एमानी कहते हैं मनाज़िल शामी अर्थात् शामी स्थानोंमें से प्रथम स्थान कर्क और अन्तका स्थान एज़ाल हुमाक अर्थात् मीनहै एमास्थान प्रथममें अक़ार और आखिरस्थाहै अरबदेशीय इसको सक़ूतुलनज़म भी कहते हैं वर्षभरमें एक सम्पूर्ण स्थान पूरे होजातेहैं नये सम्वत् में फिर उसी रीति से प्रथम स्थानसे आरम्भ होताहै कोई २ कहते हैं कि जिस समय नजम सक़ूत नजम तकरहताहै तेरहदिनहैं इस- लिये जो कुछखेदहोताहै वह सम्पूर्णप्रभाव उन्हीं साक़िततारोंकाहै

विद्वान् इन स्थानों के विषयमें बहुधा सन्देह करते हैं प्रकटहो कि ग्रामीके स्थानों में से प्रथम स्थान कर्कहै लोग कहतेहैं कि ये दोनों तारे मेषके सींगहैं;इसका नाम नातहहै जो दोनों सींगों के बीच में है और इनकी सूरत यहहै कि एक तो कैदुलसमानाहिया उत्तर में रहतीहै और दूसरा दक्षिणमें इसलिये जबसूर्य्य इसस्थानमें आता है तो वह मध्यमऋतु होतीहै और रातदिन बराबर होताहै साजाने लिखाहै कि जिस समय कर्क उदय होताहै तो समयके सम्पूर्ण अंग समान होतेहैं और बिदेशी लोग अपने२ देशोंको आतेहैं और सब मनुष्य अपने२ इष्ट मित्रों को सौगात भेजतेहैं और नैसां(रूमीमही-नाका नाम) महीनामें उदय होताहै और सकूतनशरी उल आख़िर (रूमीमहीनाकानाम) अट्ठारहवीं को उदय होताहै और अज़ार की अट्ठाईसवीं को सूर्य्य इस स्थान में आताहै इसलिये जब सूर्य्य कर्क का होताहै तो एक साल होता है और इसका नाम सरता-अर्थात् कर्क इसकारण कहते हैं कि यह नए सम्वत् का चिह्नहै इनमें से अशरात नामक एक सायतहै वह इसका चिह्न है तारा-शीरीसे क्षेमके चिह्न प्रकट होतेहैं और वृक्षोंमें फलउत्पन्न होतेहैं और जौकीफसल काटतेहैं और सरता का द्वितीय अक़रहै ॥

तसवीर नम्बर ६४

दूसरी (मंजिल) व तीनकी—दूसरास्थान—व तीन पेटवाले इसका नाम बतीनुलहमलहै यह तीनतारा छिपेहुये हैं मानों आ-सानीहैं और सुरइयाके बीचमें यह सूरतहै

तसवीर नम्बर ६५

नैसाकी अन्तकी रातको उदय होताहै और नशरींउलअौवल की रात को अस्तहोताहै इसके अस्तके निकट नदी हैं इसलिये संतुष्ट होताहै और जख़्म और ख़ततीप और बेहदादादि नाना प्रकार के पक्षी अहेर करनेवाले अपने २ घोसलों में चलेजाते हैं मोरधाको चलनेकी सामर्थ्यनहींरहतीहै साजा(नामज्योतिर्विद) ने लिखाहै कि जिससमय वतीन उदय होताहै उससमयपक्षीकज़ा

करताहै अनीति और झगड़ेका आरम्भहोताहै जिसकिसी के पास जिसकी धरोहरहै देनेसे स्वामीको नहींकरता है और इससमयका प्रभावहै कि मनुष्यको सुगन्धकी इच्छाहोती है और लुहारोंको भी अपने हथियारों की इच्छाहोतीहै एक अरबदेशीय जिसने इनतारों कावतीन और देरांताम धराहै कहताहै कि इनमें से एक वर्षका नखतहै जिसकेनामसे प्रतिसम्वत्के आदि में जलबर्षताहै नहीं तो अवर्षण होजाय यह रुखके निकटहै अत्यन्तबुरा है और वर्षामें सब से कमहै किसहेतु से कि यह बहुतकम होता है कि सुरइयाइस के निकट पहुंचाहो सुरइया अतिही उत्तम ताराहै और सब तारों से अधिक प्याराहै वतीन के समय में चरागाह सूखजाते हैं और गेहूं काटने के प्रथम उदय होताहै इसका द्वैतजवांतान है १ ॥

मंज़िल (स्थान) तीसरी सुरइयाके विषय में यहतारा मेष का लिंग (आलत) है और स्थानों की आपेक्षा यहस्थान अधिक प्रसिद्धहै ये छःतारे हैं और बहुतसे तारे इस में छिपेभये हैं और सूरत सुरइया की यहहै ॥

तसवीर नम्बर ६६

कोई २ इसको हम्मार कहते हैं और उपमा इसकी गुच्छासेदी है विद्वानों के निकट अस्तहोने के समय इसकास्वरूप गुच्छेकेसदृश होताहै अर्थात् छोटे२तारे अंगूर के गुच्छाके सदृशहैं उनको अनकूद (गुच्छा) कहते हैं साजा कहता है कि जिससमय सुरइया उदय होताहै उससमय संसार में गर्म्मीका आरम्भ होता है घासजंगलों मे सूखजाती है पशुओं के रोम निर्बल होजाते हैं जाड़ों में इसके उदयका समय सोनेके समय होताहै जिससमय रातको यह उदय होताहै उससमय चरवाहा पशमीनहपोश होजाते हैं और जोप्रावकाल उदय होताहै तो गर्म्मी अत्यन्त होती है और जो शाम के समय उदय होताहै तो चरवाहोंको प्यास की अधिकता होती है जिससमय सुरइया उदयहोताहै उससमय कोईबला संसारमें नहीं रहती और वृक्षोंके फल निरोग्य होते हैं सुरइया हज्जाज में उदय

होताहै उससमय जंगल हराभरा होताहै और जो सुरइयाकेतारों का झुण्डहै वह दशमीके तारोंसे अत्योत्तमहै अकरमा के बेटे सुलेमानने कहाहै कि जिससमय सुरइया उदयहोता है उससमय नदी आगसे जातीहै और वायु बड़ेवेग से विपरीति चलतीहै उससमय ईश्वर पानी के ऊपर पहरुआ नियत करताहै अर्थात् जो मनुष्य सुरइया के उदयके उपरान्त जलमें पंथचले वह मुसल्मानी धर्म्म के बाहरहै सुरइयाके उदयमें गर्म्मीका अधिकत्व होताहै सेवऔर ज़रदआलू उत्पन्न होतेहैं और अंगूर सूखजाते हैं सुरइयाकेअन्तमें नीलनामक नदी बढ़तीहै और पशुओं के दूध अधिकहोता है और द्वैत इसका अकलील (ताज)है॥

चौथी—मंज़िल (स्थान) देरांकीहै यह लालतारा प्रकाशित है और चारोंओर छोटे २ तारा घेरेहैं वृषके शीशपैसे होकर सुरइया के पीछेसे उदयहोताहै और इसकोतावाहुलनज्म (तारों के आधीन) भी कहते हैं यहतारा अशुभहै अरबदेशीय इसके प्रकाशको त्रिस्कार करते हैं यह नशरींउल अवलमहीनाकी छब्बीसवीं को उदय होताहै साजा (नाम)नेलिखाहै कि इसके उदयमें गर्म्मीआतीहै और पृथ्वी गर्म होजाती है इसके उदय के समय पृथ्वी का स्वभाव त्रंगखारा और आतिशफरोख्ताका होजाताहै कुछतारे इसके स्वरूपके सन्मुख हैं उनमेंसे जो छोटे दोतारे हैं वह मानो चाहतेहैं कि देरांसे चिपक जायँ अरबदेशीय इनदोनों का नाम सगान (कुत्ते) बतातेहैं और शेष तारोंको क़लास और एक लालतारा जो देरांके पास प्रकाशित है उसका नाम महल है और हावीउलनज्म (तारा घेरनेवाला) भी कहते हैं इसके उदय में अत्यन्त गर्म्मी होती है और वायु गर्म्म चलती है और स्याह अंगूर की पैदायश होती है और द्वैत इसका क़ल्व है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ६०

पांचवां मंज़िल (स्थान) हक़ाकीहैं विद्वानोंके निकट हक़ा जौज़ा अर्थात् मिथुनका शीशहै इतिहास कहतेहैं कि किसीने अपनी आंखें

कहा कि तू आकाशके तारोंसे सम्बन्ध रखती है तब इब्नअधास
(प्रसन्नहो) ईश्वर उसपर) कहा कि काफ़ीहै तुझे हकउलजौज़ा
इसीसे उसको हका कहतेहैं क्योंकि दायरुलकुसके सदृश है॥

तसवीर नम्बर ६८

यह नहमखरीज़ां में उदयहोताहै औ कानूनुल औवल की न
को अस्त होताहै इसका तारा प्रकटनहींहोता बरन(जौज़ा)मिथु
से प्यारहोने के कारण उसके साथ रहता है साजा कहता है
हका जब उदय होताहै तो मनुष्य आपसमें एक दूसरे कोतुहफ
देते हैंदीप प्रकटहोतेहैं और गर्म्मी अत्यन्त होतीहै॥

मंज़िल हिनाकीहै—इसमें पांचतारेहैं दो सफ़ेद इन्हींमें से है
इनके बीच में दूरी एककोड़ा की बराबरहै और बारह हका हैं इन
दोनों तारों मेंसे एकको आज़ और दूसरेको मसान कहते हैं और
शेषतीनतारे इनदोनों को घेरेभये हैं इन पांचमें से चार तो दाहिनी
तरफ़ और एक बांयें तरफको है और—सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ६९

औ हम अबदी कहताहै कि हनाजौज़ा (मिथुन) की कमानहै
जिससे सिंहके हाथ पर तीरमारता है और ये आठतारे कमान
सदृशहैं और कमानकी मूठिकी ठौर दो तारे श्वेतरंगकेहैं और ख
रीज़ांकी बाईसवीं रात्री को उदय होताहै और क़ानून की बाईस
रात्री को अस्तहोताहै उसके सम्पूर्णतारे जौज़ा (मिथुन)के तारोंमें
सेहैं सुरइया के उदयसे लेकर अन्तहोने तक सोसमारका शिकार
खेलते हैं और इसअन्तरमें अत्यन्त गर्म्मी होतीहै तबछोहारा और
अंज़ीर पकताहै और फिर छिपजाताहै रक़ीब इसका नाम है॥

मंज़िल सातवीं ज़िराउल असदकी इसका नाम ज़िराउलअसद
मक़बूज़ा है अर्थात् सिंह के हाथ में एक मक़बूज़ा अर्थात् बधा
हुआ और दूसरा मसबूता अर्थात् फैलाहुआ है फैलेहुये की नाक
तो यमन की ओर सिमटे हुयेहाथ की नाकशाम की तरफ़है तो
चन्द्रमा सिमटे हाथ की ओर बास करताहैऔर ये दो तारेहैं कि

प्रत्येकके बीचमें अन्तर एककोड़ा के अनुमान होगा और यहीहाल फैलेहुये हाथकाहै और स्वरूप यहहै॥

तसवीर नम्बर ७०

कानूनुल आखिर की रात्रीको अस्तहोताहै इसका ताराशुभहै दृष्टियोगकभी अरिष्टता होताहै अरबदेशीय लोगोंको इसकानिश्चय हैकि जो इसकेसालमें बर्षाकम भी होतो भी खेतीअच्छी होती है और जो बर्षा अधिकभी हो तो भी फसल बुरी नहींहोती जिसके उदयमें सूर्य्य भलीभांति तप्ताहै और मद्यपोंकी सभाजमती है और गर्मी के दिनों में गर्मी अधिकहोती है अनार, सिरका, ऊखादिका आधिकत्व होताहै और पानीइतना होताहै किमनुष्य जलकोबाग और तलावों में काटलेजाते हैं और ऋतु के अन्त में वृक्ष फलते हैं इसकाहैत ज़िरा वल्दहहै॥

मंज़िलआठवीं अनफुल असदकीहै—ये तीनतारे हैं मानोसिंहके प्यारेहैं तमूज़की सत्रहवींको उदय और कानूनुल आखिरको अस्त होजाता है साजा लिखताहै कि नसराके उदय में मनुष्यों के मुख लाल होजातेहैं और सन्तानकी अभिलाष होती है इसलिये वीर्य्य कोरोकनहीं सकते इसलियेउसकेस्वभावकेअनुसारकर्मकरते हैं जिसमें वृद्धिहो और नसरा अस्तहोताहै जो लकड़ियों से पानी बहने लगताहैइसकेअस्तमें अत्यन्त गर्मीहोतीहै तो अधिकगर्मी के कारण खेतीऔर बागोंमेंबड़ानुकसान होताहैऔरहैतइसकासादकिवह है॥

तसवीर नम्बर ७१

नवीं मंजिल तुरफाकीहै—सिंहकी तरफ ये दो छोटेतारे हैं और फर्कदीन से भी छोटेहैं माह आबकी प्रथम रात्री को उदय होतेहैं और आखिर कानूनकी रात्रीको अस्त होजाते हैं॥

तसवीर नम्बर ७२

साजा ने लिखाहै कि जब ये उदयहोता है तो व्यापार अधिक होताहै और मनुष्यदरिद्रता के हाथ से छूटजाते हैं वृक्षों पर फलअधिक होतेहैं और विषयभोग बढ़ताहै निश्चयकरके मित्र के

देशवालोंको इसकेसमयमें बायु बेगसेचलतीहै और अंगूर बादाम और पिश्ताआदि मेवा अधिक होतीहै और इसकाहैलसादबलाहै॥

दशवींमंजिलजिवहतुल असदकी—ये चारतारेहैंजिनमें चौदह तारेहैं और एकदूसरे के सन्मुख ऊंजाज में स्थितहैं दोनों के बीच ताजिआनहका अन्तरहै इसके उत्तर दक्षिणीताराकोक़लबल असद कहतेहैं यह आबमहीना की चौदहवीं रात्रीको उदय और शाबान की बारहवीं रात्रीको अस्तहोताहै इसके अस्तहोतेही जाड़ेकीहानि होतीहै वृक्षोंके पत्तेगिरजाते हैं और बायुसेबादल होतेहैं और ऊंटिनी गर्भिणी होती हैं साजा ने लिखाहै कि जो ताराजिवहतुल असद उत्पन्न होताहै तो अरबदेशीय लोगोंके स्वरूप का रंगरूप बदलताहै यहतारा शुभहै अरबदेशीय कहताहै कि (जिवहसितारेके पानीसेजंगलपूरा न हुआ परन्तु रातकोपूराथा) और कोई२ अरबदेशीय कहताहै कि जब सुहेलहज्जाजमें जिवहके साथ उदय होताहै तो अंगूरहोतेहैं और ताजेछुहारे मिलतेहैं घास सूखजातीहै मनुष्योंको दृष्टि छाइआती नहीं इसका हैलसादुलसऊदहै॥

ग्यारहवीं मंजिल जुहराकीहै—(शुक्र) ये दो तारे प्रकाशित हैं और अन्तर इनदोनोंके बीचमें एक ताजिआनह(कोड़ा) के अनुमान होगा अरबदेशीय उनकोहरामी कहतेहैं और सिंहकेक्रोधसमय जो रोम उसके अंगपै खड़ेहोजातेहैं उसको जोहरा कहते हैं औरइनको जोहरा कहनेकाकारण यहहै कि इनदो तारोंमेंसे अधिक प्रकाशित है और इनमें कुछ कजभीहै यह आबकी चौथी तारीखको उदयऔर पच्चीसवीं शाबानको अस्तहोताहै इसको उदय और दृष्टिमें वर्षा अधिक होतीहै (दृष्टिसे प्रयोजन वहहै जो और दूसरे नखत और तारों में होतीहै) सो जो विपरीतिहो तो प्रशंसाके योग्य है जिस समय जोहरा उदय होताहै उससमय एराक़देश में सुहेल दृष्टि आताहै औ रातको सर्दी और दिनमें गर्मीहोतीहै हैलइसकासादुल जिवहहै और स्वरूप इसका यहहै॥

तसवीर नम्बर १४

मज़्लिस बारहवीं सर्फ़हकीहै ज़ोहरा (शुक्र) के पीछे एक तारा अधिक प्रकाशित स्थितहै बहुतसे कहतेहैं कि यह क़ल्बुल असद है (सिंहका हृदय) इसको सर्फा कहनेका यह कारण है कि इसके उदय होतेही जाड़ेकी आदि होतीहै यह ऐवाल्की नवीं रात्रिको उदय होताहै और अयाज़ की नवींरात्रि को अस्तहोजाता है और इसके समय में मृत्यु होतीहै अरबदेशीय जब लड़कों का दूध छुड़ाते हैं तो इसीका आसरा देखते हैं साजा कहता है कि इसके उदय होतेही सब व्योपारों में लाभहोताहै और गर्भ बहुत रहतेहैं सरफ़ा के समय मेंरात्री को जाड़ा और पानी बर्षता है और देत इसका फ़रादेउहै—सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर १५

मंज़िल तेरहवीं अवाकीहै ये चारतारे सरफ़ा के असरपर प्रकट हैं औ इनकी उपमा नींदतीय स्वरूपसे दीहै और उसके निन्द्राका चिह्न प्रकटहै और—सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर १६

और उनको कुत्तों के नामसे प्रसिद्ध कियाहै मानों सिंहके पीछे जाते हैं बहुतसे ज्योतिर्विद कहतेहैं कि सिंहकी तरफ़ फिराहै अव्वल महीना की बाईसवीं रात्री को उदय और आज़ार की बाईसवीं रात्री को अस्त होता है साजा कहता है कि इसके उदय के समय बायुभली मालूमहोतीहै और नंगा बैठना अथवा जंगलमें सोना जाड़े के कारण निश्चय करके उनकेलिये जिनकेपास बस्त्र न हो बर्जितहै उसके प्रकाश के समय रातदिन बराबर होता है और यहएतदाल खरीफी है और एतदाल खरीफी उससे प्रयोजन है कि जब सूर्य्य नुक़तय एतदाल खरीफ़ी पर बासकरता है यहस्थान तुलाका है और रातदिन बराबर होता है और जब नुक़तय एतदाल रबी में सूर्य्य आता है मेष है उस समय बराबरी रातदिन की होती है उसदिन से फिर रात बढ़ती है और दिन छोटा होताजाता है

मेषकी आदि से दिन बढ़ता है रात्री छोटी होती जाती है और है इसप्रकारादेव मौखर है॥

चौदहवीं मंज़िल समाक एज़ल की--इसहेतुसे कि समाक राम में सूर्य्य का निवास नहीं होता है यह प्रकाशित तारा है औ इसको समाक एज़ल कहते हैं (एज़ल उसको कहते हैं जो हथ्या बन्द न हो) अरबदेशीय दोनों समाक को सिंह की टांगें बताते और यह समाक एज़ल मकर है मयाज़ और शामियह के बीच तो जिसका स्थान जिसके नीचे है वहीछोटा है उसका नाम एमा नी है क्योंकि वह अर्द्धभाग मण्डल के अर्द्ध दक्षिणीभाग में स्थित है तो वह हिरुसह यमन है और जिन तारों का स्थान समाक क ऊपर है वह शाम है किसहेतु से कि यह अर्द्धमण्डल शामकी ओरहै समाक जलकरि यह की सीमा है॥

खत उस्तवासेन शरीउल औवलको पांचवींतारीख को उदय होता है और वैसां की चौथी तारीख को अस्त होता है इसका प्र-काश प्यारा होता है क्योंकि इसके समय में बर्षा न होना कम सुनने में आता है और बर्षा इसकी खतीवह तक पहुंचती है (ख-तीतह एक देश का नाम है) जहां कि सम्बत् के स्वभाव अनुसा बर्षा होती है और नशर एक प्रकार की चरागाह है कि जहां चरने से रोग उत्पन्न होता है साजा कहता है कि जिस सम समाक उदय होताहै उससमय वह रोग शांति हो जाता है औ उस बर्षा से लाभनहीं होती क्योंकि उस समय उसपानी को ऊं नहीं पीते हैं जब समाक उदयहोता है तो घास काटीजाती है औ बर्षाभी होती है और इसका हैतवतन लहोतहै और यह अन्तस्था है चौदह स्थान शामी नामक से॥

सवीर नम्बर ७०

मनाजिल एमानिया के विषय में॥

इसमें से पहली मंज़िल कअफ़रकी है ए तीन सितारे छिपेहुये हैं उनमें से एकतारा तो अत्यन्त छिपाहुआ दूसरे से चिपकाहुआ

दृष्टिआता है और तीसरा एक कोड़ेकी दूरी पै दृष्टि आता है सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर ७८

इसी कारण इसको अफरा कहते हैं कि उसके उदय के निकट पृथ्वी रमणीक होतीरहती यह नशरींउलओवल की अठारहवीं को उदयहोता है और नैसां की सोलहवीं को अस्तहोजाता है साजा ने लिखा है तो शरीर के रोमथर्राते हैं और वृक्षभी थर्राते हैं औरपृथ्वी अपनी शक्ति से अशक्ति होजाती है और जीवों की वृद्धिभी कम होजाती है और इसके अस्त होनेके उपरांत गर्मी मिटजाती है और सर्दी परने लगती और उसकी आदि में छुहारों की फसलका अन्त होता है और हैत उसका सरतां (कर्क) है ॥

दूसरी मंज़िलजवाना की है—यह मिज़ अकरबकीहै (वृश्चिक) ये दो तारे हैं संसार की दृष्टि में जुदा २ दृष्टि आते हैं परन्तु पांच गज़ की दूरी दोनों के बीच में है नशरींउलओवलके अन्तमें उदय होता है और नैसांके अन्त में अस्तहोता है अरबदेशीय निश्चयकरते हैं कि इसके समय में उत्तर की बायु बेग से चलती है और गर्मी के दिनों में अत्यन्त गर्मीहोतीहै साजा कहता है कि ज्योंहीं उदयहोय त्योंहीं अपने कुटुम्ब के जाड़ेके कपड़ा बनानेकीफ़िक्रकरै—यकली-मअहलमें नजरातमें मनुष्यघरमें आजाते हैं और इसकी सर्दी और बर्सातमाह के खानेमें आतीहै इसका हैतवतीन है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ७६

मंज़िल तीसरी अकलील (ताज) की है यह अकरब (वृश्चिक) का शीश है वहतीनतारे हैं एक सोतरजां स्वरूप बनाहै नशरीन ओ-वलकी प्रथम रात को उदय होता है और तेरहवीं अयाज़ को अस्त होता है साजा ने लिखा है कि इसका उदय फहूलल्लाता है इसके अस्त होनेपै काजल सूखजाताहै और इसकी दृष्टिके समय वर्षा बहुत होती है और सुरया इसका हैत है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ८०

मंज़िल चौथी क़ल्ब की है—यह अक़रब (वृश्चिक) का कल्ब (हृदय) है रंग इसका सुर्ख़ है और इसके पीछे अकलील है औ यह उन दो तारों के बीच में स्थित है जिनका नाम बनात है औ ये दोनोंतारा प्रथम तारा की बराबर लाल नहीं हैं ये दोनों जा की ऋतु में उदय होते हैं छब्बीसवीं नशरींउल औवलको उदय होते हैं और छब्बीसवीं अयाज़ का अस्त जो कुछ पशु आदि इसके उदय में होते हैं वे सरदी का फलदेते हैं भोजन औ ऊंटादि पशुओं का चारा इसके उदय में कम होजाता है साजाकं बाक्य है कि इसके उदय के समय की सर्दी कुत्ता की समानपुका करती है अरब देशीय इसके क़लब और नशर को वाक़यहज़ारै कहते हैं इसहेतु से कि जिमस्तान इसके उदय में पीठ दिखाता है और अरबदेशीय इसको बुराजानते हैं इसलिये जब चन्द्रमा वृश्चिक में आता है उस समय पन्थ चलना बुराजानते हैं क्योंकि इसके समय जाड़ाअधिक होता है दूसरे बायुबेगसे चलती है तीसरेवृक्षों के पत्ते और फलों में पानीहोता है इसका दैवदेरां है ॥

तसवीर नम्बर ८१

मंज़िल पांचवीं सोलह की है ये दो तारे इस प्रकार इकट्ठे स्थित हैं कि मानों वृश्चिककी पूछको छूना चाहते हैं और इसको सोलह कहने का यह कारण है कि इनमें उँचाई ऐसी है कि मानों मदोना को उठाना चाहते हैं इसके और वृश्चिक के पूछ के बीच में एक बादल के टुकड़ा के समान है कानून उलऔवलकी नौवीं तारीखकोउदय और नौवींखरीज़ांको अस्तहोताहै साजाने लिखाहै किइसकेउदयमें कुटुम्बदरिद्र होजाताहै और इसकीदृष्टिके प्रभावसे वृक्षोंके पत्तेगिरजाते हैं और वर्षाअधिक होताहै और जोअरबदेशीय मीज़ावमेंहों वे जहांतहां होजातेहैं इसकादैवहक़ाहै ॥

तसवीर नम्बर ८२

मंज़िल छठींनआयमकी—ये आठतारे सोलहकेपीछे हैं उसमें से

चारतो मजहरमें जिनको नआसमदारदकहतेहैं और कारण इसका यहहै कि वेइसप्रकार स्थितहैं कि मानो उनकी इच्छापानीपीनेकी है और शेष चारतारेजो मजराके बाहिरहैं वे इसप्रकारसे हैं किमानो नहरसे पानीपीके निकलेहैं इनको न आयमसादिर कहतेहैं इनचारों मेंसे प्रत्येकएकदूसरेकी जगहसे मिलाभयाहै बाईसवींकानूनउलऔ- वलकोउदयऔर बाईसवीं खरीजांकी रात्रीको अस्तहोतेहैं साजाने लिखाहै कि इसके उदयमें जीवधारी चलते बहुतहैं मानो चरवाहा नहीं है और पक्षीएकसाथ उड़ते हैं इसके स्वभाव इसकेसिवाय कि ज़िमस्तानका आरम्भहोता है और दिनबढ़ताहै औ रातघटती है लेखे नहींहै इसका हैतहक्काहै ॥

तसवीर नम्बर ८३

मंज़िल सातवीं बलदहकी है—यह एक प्रकारकी फिज़ा अर्थात् रमणीक वरगित आसमान परहै नायम और सादजिबह के बीचमें कोई तारानहींहै और बासमें एक ताराके सिवाय और कुछनहीं है और वहताराभी ऐसा छोटाहै कि दृष्टिकामनहीं करती उसकानाम बलदहहै और उसकीउपमा ऐसीठौरसेदीहै कि जहां सालब (लो- खड़ी) सोतीहै सो वह अपनी पूछफिराती है इससे तारे चारोंओर बिखड़जाते हैं कभी २ चन्द्रमा भी यहां आताहै और क़लावह में से जाताहै क़लावह छहतारेछोटे २ हैं छिपेहुये कमान के सदृश कोई अरब देशीयतो इनको कूसकहताहै औरकोई औज़ो जबालुक़ हस एकतारा है कि उसको सहमुलरामी भी कहते हैं कूससाद जिबहके आगे स्थितहै बलदह कानूनलआखिरकी चौथीरातको उदयहोताहै और महीनातमूज़की चौथीरात्रीकोअस्तहोता है साज़ा कहताहै कि जब बलदह उदयहोता है तबपानीपीनाशुभहै क्योंकि इसके प्रकाशमें चिकनाईहै और पानीस्वादिष्ट भी होजाताहै और जाड़े अधिकपरतेहैं मुख्यलेखतो यहहै कि जिमिस्तान का पत्थर कड़ाहोताहै और बागकूटेसे साफहोजातेहैंऔर अंगूरकेवृक्षनिर्फल होजातेहैं ॥ इसका हैत जराअ है ॥

तसवीर नम्बर ८४

मंज़िल आठवीं सादज़िवहकी है—ये दोतारे हैं और नैरैन के सिवाय कोई तारा नहीं है ॥ इनके बीच में दोगज़का अन्तर द आता है और इनदोनोंमें से एकका तो मुख उत्तरको मालूमहो है और दूसरेका मुख दक्षिणको ॥ इनदोनों के ऊपर एक छोटार तारा और है जो अपने नीचेके बड़े तारों में चिपका है ॥ कानूनु आख़िरकी सातवीं रात्रीको उदय और सत्रहवीं नमूज़ को अर होता है ॥ प्रभाव यहहै कि वृक्षोंकी शाखाओं में पानी पहुंचता और बादाम के ऊपर छिलका पैदाहोता है और पत्ते गिरने लग हैं और दैत इसका नसरा है ॥

तसवीर नम्बर ८५

मंज़िल नौवीं सादबलाकी—ये दोतारे मजरह में बराबर है एक इनमें से अधिक छिपाहै ॥ इनमेंसे बड़े तारेको बला इसका रण कहते हैं कि यह बड़ातारा अपनाप्रकाश छोटेको और पहुंचत है ॥ यह कानूनुल आख़िर की अन्त राजीको उदय और महीन आबकी प्रथम रात्रीको अस्तहोता है ॥ साजाने लिखा है कि ज बला उदयहोता है तब अंगूर इतना पैदाहोता है कि मारे गुच्छ के पृथ्वी मंदजाती है और पशुओंसे बहुत जल्दी फलमिलता है। उससमय में एकपक्षी पैदाहोता है सो मनुष्य उसकी अहेर करते है और पृथ्वी बनस्पति से गहगहाने लगती है और हुदहुद (पक्षी अण्डादेता है और दक्षिणी वायु बहुत चलती है और पशुओं का दूध क्षीणहोता है ॥ दैत इसका तर्फ़ है ॥

तसवीर नम्बर ८६

दशवीं मंज़िल सादुलसऊद की है—ये तीनतारे हैं उनतीनों में से एक दोकी अपेक्षा अधिक प्रकाशित है ॥ अरबदेशीय अपने लड़कोंका नाम इसके नामसे प्रसिद्ध किया करतेहैं ॥ इसी कारण सादुलसऊद कहते हैं ॥ यह शबात की बारहवीं रात्री को उदय औरमहीनाआबकी चौदहवीं रात्रीको अस्तहोताहै साजा लिखता

है कि इसके समयमें धूपबुरी लगतीहै और बसन्तऋतुका आरम्भ होताहै॥ इसके उदयमें पक्षी चहचहाते और कामकलोल करते हैं॥ खतातीफ़ (नामपक्षी) पंख गिराते हैं ऊंट और बैलमोटे होते हैं॥ और फूल बहुत होते हैं ह्वैत इसका जिवह है और स्वरूप सादुल-सादका यह है॥

तसवीर नम्बर ८७

मंज़िलग्यारहवीं साद अजनिवाकी--येचारतारे इकट्ठे स्थित हैं दोतारे लम्बाई और दो चौड़ाई में हैं इनसे ऐसे मनुष्य का स्वरूप बनताहै जो बहुत धीरा चलताहो कहतेहैं कि इनमें एक सादहैवही प्रकाशितहै और शेषतारोंका नाम सादुलआअनिवाहै यह बफ़ासे आगे उदय होताहै और बफ़ा उससमयका नामहै जब जाड़ेकेडर नहींहोता इसके उदय होतेही मांसाहारी ज़ीव बाघ और भेड़िया के तुल्य और काटनेवाले जीव सांप बिच्छू के समान प्रकट होने लगतेहैं इसप्रकारसे कि मानो ये दुखदाई जीव इसकी सेनाहैं यह शबातकी पच्चीसवीं रात्रीको उदय और बाक़ीकी चौथी रात्रीको अस्त होताहै साजाने लिखाहै कि इसका उदय खलोंको फलीभूत होताहै जितने खलजीवहैं वेसबइसकेसमयमें चिकने परतेहैं जितने जाड़े में तनक्षीन होते हैं उतनेही इसके समयमें पीनहोतेहैं इसके उदयमें वर्षा अधिक होजातीहै और अंगूरोंकी फ़सल नष्टहो जातीहै अंगूरोंके गुच्छे टूट २ केगिरजाते हैं ह्वैतइसका ज़ोहरा (शुक्र) है सूरत इसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ८८

मंज़िल बारहवीं फराऔवलकीहै—इसका नाम फराऔवल है दादके औवलस्थितहै ये चार तारे हैं सो इनमेंसे दोको तो फराऔवल और दोको फराआखिर कहते हैं (फ़रा--देउ) फ़रादेउ अकूंवों के बीचमें गिरताहुआ दृष्टिआताहै फराऔवलका उदय आजारकीन रात्री को होता है और ये बलकी नवीं रात्री को अस्तहोता है साजा के अनुसार इसके उदय होनेके समय अंगूर सूख जाता है

मनुष्यस्त्रियोंके साथ विवाह और रति करने में अधिक चितदेते हैं यहतारा अतिही शुभहै जमरहसालिसामें उदय होता है उस समय बादाम, सेब, और आलू बुखारा अधिक होते हैं और इस अस्त होनेके समय रोगी मृत्युको प्राप्तहोतेहैं इसका हैतसफ़ीहै ॥

तसवीर नम्बर ८६

मंज़िल तेरहवीं फ़रासानीकी है (फ़रा-देउ और सानी-द्वितीय इसका व्याख्यान फ़राऔवलके साथ होचुका है, यह बाईसवें रात्री को आज़ारमहीना में उदय और बाईसवीं एवल को अस्त होताहै यहतारा शुभहै इनफ़राका उदय जाड़ेके आदि और अस्त जाड़े के अन्तमें होता है इसके अस्तके समय हज्जीज़ और थानामें वृक्ष काटेजाते हैं और गोराबनाते हैं और शहद निकालाजाता है इसके समयमें जाड़ाहोताहै घास अधिक होतीहै बेर और बाक़ला बहुत पैदाहोताहै रात दिन बराबर होनेलगताहै और हैत इसका अबाहै और इसकी सूरत फ़रा औवलके सदृश है इसलिये अधिक व्याख्यानकी आवश्यकता नहींहै ॥

तसवीर नम्बर ६०

मंज़िल चौदहवीं हौतके बतनमें है (हौत-मीन) (बतन—पेट) इस स्थानमें तारे अधिकहैं और एक मछलीके स्वरूपपर हैं इनको रशाभी कहतेहैं इस तारेका शीश तोशान की ओर और पूंछयमन की तरफ़ है पीछेका धड़ इसका पश्चिमकी तरफ़ और आगे का धड़ पूरब की तरफहै इसतारेका अर्द्धभाग अधिक प्रकाशितहै और आखिर के अर्द्धभाग में एकतारा अतिही प्रकाशवान् दृष्टि आता है और इस मंजिलका हिसाब इसी तारेपर है यह नैसांमहीने की चौथी तारीख़को उदय और नसरींउलऔवल की पांचवीं रातको अस्त होताहै उसके अस्तकेसमय पानी पृथ्वीके नीचेचलाजाता है इसके अस्त होनेके उपरान्त सरतां (कर्क) उदय होताहै तब फिर यथा पूर्वक पानीजारी होताहै साजाने लिखा है कि बतनुलहौत के उदय में जीवोंमें चल विचल होतीहै निश्चय करके जलचारी

जीवोंमें उस समय शिकारी लोग अहेर को जाते हैं इसका द्वैतस-
माकहै इसके समय में वर्षा बहुत होतीहै और अवर्षण कभी भी
नहीं होताहै और इसके प्रकाशके आदिमें जौ काटेजाते हैं॥

तसवीर नम्बर ६१

इति॥

नवां व्याख्यान फ़लकुल अफ़लाक अर्थात् महामण्डलके विषय में॥

इसको फ़लकुलअफ़लाक अर्थात् महामण्डल कहनेका यहका-
रण है कि यह सम्पूर्ण मण्डलोंको घेरेहै और अपनी नियत चाल
से सम्पूर्ण मण्डलों को चक्रदेता है॥ इसकानाम फ़लकअज़ीम भी
है क्योंकि यह सम्पूर्ण मण्डलों से बड़ा है और इसकानाम फ़लक
अतलस भी है क्योंकि इसपर कोई तारा नहीं है॥ इसकाचक्र पूर्व
से पश्चिमको होताहै और ध्रुवइसका तारामण्डल(फ़लकसवाबित)
पर है और इनदोनों में भी एकध्रुवको दक्षिण ध्रुव और दूसरे को
उत्तर ध्रुव कहते हैं और चौंतिसघड़ी में सम्पूर्ण मण्डलों का उनके
तारों सहित चक्रदेताहै॥ इसकीचाल सम्पूर्ण वस्तुओं की चाल से
जो मनुष्य की दृष्टि गोचरमें आसकती हैं बेगतर है॥ यह गणित
से मालूमहुआ है कि सूर्य दूसरे की चालसे फिरता है अर्थात् सूर्य
को फिरानेवाला दूसरा है तिसपर जितनीदेर में मनुष्य पांव उठा
के पृथ्वीपरधरै उतनीदेर में ८०० आठसौकोस जाता है और इस
बातकी प्रतीतकेलिये रसूलखुदा (ईश्वरकादूत) की बार्त्ता साक्षी
है कि जब नमाज पढ़ने से पहिले प्रश्नकिया उसके प्रतिउत्तर में
जिबरीलने कहा—लानअम—तब रसूलने इसकी निर्णय पूछी तब
जिबरीलने कहा कि जितनीदेर लानअम—के कहनेमें लगी उतनी
देरमें सूर्य ५०० पांचसौ कोसगया है॥ महामण्डल के फिरने से
दिन और रात होते हैं इस आसमान के चक्रदेने में जिस समय
सूर्य जिसतरफ़ उदयहोता है उसओरके पृथ्वी,वायु और धरातल
प्रकाशवान होते हैं॥ जीव चलते फिरते हैं बनस्पतिकी वृद्धिहोती
है और जब सूर्य इस आसमानकी दूरीपै जाकर अस्तहोता है तो

वहां के बायु काली होती है और पशू बासालेते हैं और बनस्पति मुर्झाय जाती हैं ॥ जो कोई बुद्धि स्थिरकर के इस मण्डलका हाल जानाचाहै तो उसको विदित होगा कि मानो दोदाण्वह अर्थात् पाट रखताहै उनमें से एकको चैनदेता है और दूसरेको फिराताहै इसलिये जबतक इसमण्डलमें चक्रहै तबतक पशू और बनस्पतिकाभी यहीहाल रहैगा जैसे ईश्वरने कहाहै कि इसलियेजब यह आसमान की चाल बन्दहोगी उससमय यह संसारिक प्रबंध वृथा होजाताहै और वृथा होनेका यह कारण है कि ईश्वर की आज्ञा है और कहना सत्य है विद्वानों ने इस आसमान को घेराहुआ देखा है क्योंकि उनको निश्चय है कि इस आसमान को छोड़ के और न तो आकाश है और न पृथ्वी है अबू अबदुल्ला महम्मद अमर के बेटे ने बात काटके लिखा है कि जोकोई अपनी बुद्धिबल से आकाशना तो बड़ी अन्धी पन्थ में फँसता है किसी २ ने आयतों खबरों हदीस और विद्वानों की बाक्यों को लिखा है कि कुर्सी उस आसमानका नाम है जिसके बिषय में यह सम्पूर्ण लिखागया है और अरशनव आसमान है और वह सब आसमानों से बड़ा है ईश्वर जानता है अरश और कुर्सी के होने में कोई सन्देह नहीं है किस हेतु से कि इनके बिषय में कुरान में आयतें वर्त्तमान हैं और अबूदर्द ने राजी हो ईश्वर उसपर पैग़म्बर से बर्णन किया है कि हज़रत रिसाल तमाल ने कहा कि सातों आसमान ऐसे हैं जैसे जंगल में कुण्डल पड़ाहो तो आसमान कुर्सी अरश (महामण्डल) के सामने ऐसे हैं जैसे कुण्डल और जंगल अरश के समान हैं बड़ाई में अरश ईश्वर ने बड़ा बनाया है और उन सातों आसमान का अरश उसीप्रकार क़िबला है जैसे पृथ्वी वालों को मक्का है हदीस में लिखा है कि मेकाईलने ईश्वरसे छुट्टीमांगी कि मैं अरशका पर्यटन करआऊं ईश्वरने कहा कि अच्छातो मेकाईलने इतना पर्यटन किया कि वह होगया तब उसने ईश्वरसे प्रार्थनाकी कि हे ईश्वर सामर्थ्यहोजाय ईश्वरने कहा एवमस्तु तब उसने इतना पर्यटन किया कि बारह

हज़ार बर्षबीतगये इतने समय के अन्तर में अरश के एक छोटे से टुकड़ाका पर्यटन किया इमामजाफ़र ने कहा है कि अरश में एक स्वरूपहै सो जब कोई सधर्म्म दण्डवत् करताहै अथवाझुकू (झुकना) करताहै तो वह स्वरूपभी उसी प्रकार सब करताहै उससे मालूम होताहै कि पृथ्वीपै किसीने दण्डवत्करी और नहीं तो जानाजाय कि कोई पूजन और ध्यान करनेवाला पृथ्वीपर नहीं है निदानउस स्वरूपके कर्म देखनेसे मालूम होताहैकिपृथ्वीपैसधर्म्म हैंतबमला- यका ईश्वरसे उसके पापोंकोक्षमा मांगते हैं ॥

ग्यारहवां अध्याय आसमान के निवासियों के विषयमें ॥

—— ※ ——

सम्पूर्ण वैद्यऔरविद्वान्कहतेहैं कि मलायकों (देवता) काशरीर पांचतत्वका नहींहै और स्वच्छबुद्धि और अमर हैं जिन और शैतान और मलक में भेदहै किसीने तो लिखा है कि इनमें इतना अन्तर है कि जितना कामिल और नाक़िस (सिद्धि और असिद्धि) मेंहोता है अथवा जितनानेककार और बदकार (साधुअसाधु) में होता है विदितहोकि मलक (देवता) काम क्रोध और मोह के तिमिर से बा- हिरहैं अर्थात् वेजोकाम करतेहैं सो ईश्वर की आज्ञानुसार करते हैं उनका अन्न और जलकेवल ईश्वरका भजनहै और ईश्वर की कथा श्रवण में उनका प्रेम है और उसीमें प्रसन्न रहते हैं ईश्वरने इनके स्वरूप भेदानुसार स्वभाव बनाये हैं और इनकी संख्या और भेद सृष्टिकी रक्षाहेतुरचे हैं ॥

किसीविद्वान् ने लिखा है कि आसमानपर सृष्टिनहो तो ईश्वर सर्वशक्तिवानकी बुद्धि कैसे इसबातको मानेगी जबकि उसने खारी समुद्रमें नानाप्रकार की सृष्टि रची है जो उसका आराधन करतेहैं और मछलीको जलमें वासादिदिया जंगल और पहाड़पैनहीं भेजा और जहां देखोतहां नानाप्रकार के मान्साहारी जीवउत्पन्न किये कोई २ यहकहते हैं कि ईश्वरने आसमान के उपरान्त ऐसे जीव उत्पन्न कियेहैं कि उनके स्वरूप दिवालोंपर अंकित कियेजाते हैं

और इसी सृष्टिके अनुसार हैं जैसाकि और मलायका (देवताओं) को ईश्वर के सिवायकोई नहींजानताहै जहांतक कि रसूल(दूत) ने खबरदी और हदीस (शास्त्र) से पाया जाता है सो लिखता हूंकि सृष्टि में कोई कण किसी वस्तु का ऐसानहीं है जिसपर ईश्वर ने रखवारी के लिये कोई नियत नकियाहो वर्षा विषय एकबूंद भी ऐसी नहीं पृथ्वी पर परती जिसके साथ एक देवता रक्षाके लिये न आताहो (यहां देवता से वरुण प्रयोजन है) भला जब पानी की बूंदोंका यह हालहै तो आसमान,तारागण, वायु, मेघ, पृथ्वी, पर्वत, जंगल, नदी, सोता, खानकी वस्तु, वृक्ष, और जीवधारी आदि को कौनकहै यहां से मालूमहुआ कि सृष्टि का प्रवन्ध देवताओं (मलायक) सेहोता है इसलिये मलायका (देवताओं) का व्याख्यान दोप्रकार से करता हूं प्रथमतो यहकि जो कुछ अपने पुस्तकों (कुरानादि) सेपतालगाअथवा जिसको बुद्धि अतर्क माने प्राचीन शास्त्रवेत्ताओं नेभी मलायका (देवताओं) सेही पतापायाहै जो आकाश को उठायेहैं और वे सम्पूर्ण फरिस्तों में प्रतिष्ठित और निकटनिवासी और प्यारेहैं और उसीसेबाकी और दूसरे फरिस्ते तनमन से याचना करते हैं और उनको दण्डवत् करते हैं और निशिवासर उनको सेवाकरते हैं इसहेतु से कि इनकी प्रतिष्ठा सब मलायक से बढ़कैहैं और ईश्वरकी सेवाकरते हैं और उसके पार्षद हैं अर्थात् निशिवासर उसीके गुणगातेहैं और पापी और दोषियों के तारने के लिये प्रार्थना करते हैं नबीकी हदीस (शास्त्र) में लिखा है कि इनमलायक में से एककी सूरत आदमी कीसीहै और दूसरा पशुके स्वरूप सदृश है और तीसरा गिद्ध के स्वरूप सदृश और चौथा बाघके सदृशहै हज़रत रसूलख़ुदाने अम्बियाबिनअबीउल सल्तकी बाक्यसुनके बड़ा आश्चर्य किया क्योंकि पूर्वोक्त अम्बिया ने हुसामलां अरशके नाम अपनी एकबैतमें (पद्य) लिखाथा और वहउस समय लिखाथा कि मनुष्यनिराक्षरथे ॥

तसवीर नम्बर ६२

इब्न अब्बासने कि ईश्वर उसपरदयालु हो कहाहै कि ईश्वरने जो अरशउठानेवाले पैदाकिये वे अबचारि हैं और जब प्रलय होने को होगीतब दोफ़रिस्ते इनकी सहायताको औरभेजैगा औरइसकी पुष्टता के लिये यहकुरानकी आयत— अखण्डनीय प्रमाणहै आयत येलोग लम्बाई चौड़ाई स्थूलमेंऐसे हैं किमनुष्यकीसामर्थ्य नहीं जो इनकी प्रशंसाकरें क्योंकि सम्पूर्ण देवता इनकी शिक्षा के आशा-वान् रहते हैं इनमें से एकजो मनुष्यका सा स्वरूपहै सोतो मनुष्यों की भलाई के लिये ईश्वरके सन्मुख प्रार्थना किया करता है और वहजो बैल की सूरतहै सो सम्पूर्ण पशुओंकी भलाईऔर आनन्दके लियेईश्वरसेप्रार्थनाकियाकरता हैऔर वहजोगिद्धके स्वरूप सदृश है सोसम्पूर्ण पक्षियोंके आनन्द का याचक हैऔरवहजोबाघके स्व-रूप सदृशहै वह सम्पूर्णजीव मान्साहारी के आनन्दऔर भक्षण के लिये प्रार्थना करतारहता है सम्पूर्ण फ़रिस्तों में से एक फ़रिस्ता अतिही बड़ा है वहअपनेस्थूलके कारण एक पंक्ति में अकेलाही खड़ा रहता हैऔर सम्पूर्ण दूसरी पंक्तिमें गिन्ती से यहभीख्याल किया है किवह श्वास लेताहैतो उसकीप्रत्येक श्वास से एक जीवके प्राण निकलतेहैं अर्थात् प्रत्येकश्वासमेंएकजीव उत्पन्न होताहै यहलिखा है कि ईश्वर ने इस बड़े फ़रिस्ता को इसकाम पै नियत किया है कि जो चन्द्रमा के मण्डल के नीचे मण्डल है उसको चलावे नीचे चन्द्रमा से यह प्रयोजनहै कि तत्वोंको अर्थात् अग्नि, वायु, जल और पृथ्वीको और उनतत्त्वों से जोकुछ पैदा हो जैसे सोना, चांदी, लोहा, तांबा, कांसा, लाल, हीरा, पन्ना, जमुर्रद आदिऔरबनस्पतिजो पृथ्वीसे उगतीहैं चाहै वे बड़ी हों चाहै छोटी और जीवधारी थल चर जलचर और नभचर चाहै मनुष्य हों अथवा पशु यह फ़रिस्ता आसमानसे बहुत बड़ाहै और सम्पूर्ण सृष्टिमें सबसे बड़ा औरप्रति-ष्ठितहै और बड़ा बली है उसको इतनी सामर्थ्य है कि जैसे वह आसमानको चक्र देरहाहै चाहै तो रोक रक्खै ॥

तसवीर नम्बर ६३

इसराफ़ील-यह फ़रिस्ता ईश्वर का निकट निवासीहै अर्था आज्ञाकारी है जो आज्ञा ईश्वर को देनी होतीहै तो इसीके द्वार भेजताहै और जीवों के प्राण यही हरताहै रसूलख़ुदा ने कहा मैं क्योंकर आराम करूं और शूर बजानेवाले ने शूरको (करनाल मुख पै रक्खाहै और आज्ञा पा चुकाहै कि जैसे वह समय पहुंचे तैसेही करनाल को बजादे मक़ातिल ने जो प्राचीन विद्वानों में से है कहाहै कि करण से प्रयोजन सींगसे है सो वह इसराफ़ील अप- ने मुखपै धरेहै इस आसरे में कि जैसेही ईश्वरकी आज्ञाहो तैसेह उसको फूंकदे और वह सींग करनाल की सूरत काहै और उस करनालके मुखका घेरा पृथ्वी औरआसमान दोनोंसेबड़ाहै निदान उसकी दृष्टि अरश की ओर है और ईश्वरकी आज्ञाका आशावान है कि जैसेही ईश्वरकी आज्ञा पावे त्योंहीं उसको फूंके जिस समय यह करनाल फूंकैगा उस समय सम्पूर्ण पृथ्वी और आसमान अचेत होजायँगे जिसको वह ईश्वर सृष्टि करना चाहैगा सो तो चेत में रहैगा और नहीं हज़रत आयशासदीक़ा ने काबुल अहबार कहा कि मैंने रसूलख़ुदा से यों कहते हुयेसुना कि हे ईश्वर मैं क़ुरानके द्वारा जिबराईल और मेकाईल कातो वृत्तांत जाना परन्तु अभी तक इसराफ़ील के समाचार कुछ भी नहीं जानताहूं इसलिये मुझे उसके हालसे सचेत करदे काबुल अहबारने कहा कि यह एक ऐसा बड़ाफ़रिश्ता है जिसके चार पंखहैं उनमें से एक से तो पृथ्वीका पूर्वभाग दबायेहै और एक पंखसे पश्चिम का भाग और तीसरे पंख से आकाश को थांभे है और चौथा पंख मुख पै किये है और इसके दोनों पैर सातवीं ज़मीन अर्थात् पाताल लोककी पीठ पैहैं और शीश ईश्वर के खम्भा के बराबर अरशमेंहै और दोनों आंखों के सामने जवाहिर की पट्टीहै जब ईश्वर को आज्ञा देने की आवश्यकता होतीहै तो क़लमको आज्ञा देताहैकि उसपट्टी पै लिखे तिस उपरान्त ईश्वर उस पट्टी को इसराफ़ील की दृष्टिके सामने

लाताहै तो इसराफ़ील उस तख़्तीको मेकाईलके पास पहुंचा देता है इसराफ़ील के सहायक और भी फ़रिस्ता हैं परन्तु फ़रिस्ता से लेकर सम्पूर्ण और तत्वादि उसके आज्ञाकारीहैं और उनकी तरफ़ से फ़रिस्ता सम्पूर्णसृष्टिमें वर्तमान हैं यहां तक कि तत्वों पर और जो पदार्थ तत्वोंसे बने हैं पैदाहोते समय प्राण वायु उनके शरीरमें फूंकतेहैं प्राण वायुसे प्रयोजन उस वायु सेहै किजिसके बलसम्पूर्ण जीव और पदार्थ सजीव रहते हैंऔर जबप्राण वायुका फूंकना बन्द करदें तो वही कारण मृत्युका है॥

तसवीर नम्बर ६४

जिबरईलअलैउस्सलाम ॥ यह फ़रिस्ता अमीन वही अर्थात् मध्यस्थहैआकाशबाणीका और क़ुदसका ख़ज़ांची अर्थात् ईश्वरका कोषाध्यक्ष है इसीकारण इसको रुहुलक़ुदस और नामूस और मलायका ताऊस कहतेहैं हज़रतरसूल ख़ुदाने कहा कि जिससमय ईश्वर आकाशबाणी देता है तो स्वर्ग निवासी उसको घड़ियाल के शब्दके समान सुनते हैं मानो कोई पत्थर पर जंजीर खींचताहै तब इस भयानक शब्दको सुनके सम्पूर्ण अचेत होजाते हैं और उसी दशामें पड़े रहतेहैं जब हजरत जिबरईल उनके पास आतेहैं तब उनकी घबड़ाहट दूर होती है तो पूछते हैं कि ईश्वर ने क्या कहा उससमय जिबरईल कहते हैं कि अलहक़ यह सुनकर सम्पूर्ण मलायका (देवता) अलहक़ अलहक़ कहने लगते हैं और हदीस में लिखाहै कि मैं बरहक़हूं अर्थात्मैं सत्यपैहूं—धर्म पैहूं अर्थात् मैं धर्मका साथीहूं हज़रतरसूल ख़ुदा मुहम्मदने) जिबरईल से कहा कि मुझे आपको माया रूपी स्वरूपको छोड़ जो आपका मुख्यआदि स्वरूप है उसको देखनेकी अभिलाषहै यह सुन जिबरईलने कहा कि मेरे स्वरूप के देखने की तुझमें सामर्थ्य नहीं है तब हज़रतने उत्तर दिया कि नहीं मुझमें सामर्थ्य है तब जिबरईलने कहा कि अच्छा यकीमें जब चांदनी हो तो आवो तबमैं तुमको अपना स्वरूप दिखाऊंगा निदान उस रातको जिबरईलने अपना स्वरूप धारके

महम्मद साहबके सन्मुख प्रकटहुये तो क्यादेखा कि सम्पूर्ण संसा
को घेरेहैं यह देखके मुहम्मद साहबको मूर्च्छा आगई जबचेत
आये तब जिबरईलको अपनी पहिली सूरतमें देखा और कहा कि
तुम्हारे स्वरूप को देखके यह बुद्धिमें आताहै कि आपके स्वरूपके
बराबर सृष्टिमें और भी कोईहै तब जिबरईलने कहा कि जो इस-
राफ़ील को देखै तो यह आश्चर्य मिटजाय क्योंकि उसका स्वरूप
ऐसा दीर्घहै कि आकाशको अपने कन्धे पर उठाये हुयेहैं और पैर
उसके सातवीं ज़मीनके पीठपर हैं अर्थात् पाताललोक में हैं) इस
बड़ाई पर भी ईश्वर की दयासे चींटीकेसमान छोटे होजातेहैं काबुल
अख़्बारने लिखाहै कि जिबरईल मलायकमें सर्वोपरि हैं उनके छः
पंखहैं औ प्रत्येक पंखमें एकसौ पंखहैं जब जिबरईल महम्मदके पास
आये तो महम्मदने प्रश्न किया कि आपकी ताक़त कितनी है जिबर-
ईलने उत्तर दिया कि मैंने केवलदो बाज़ूपर शहर क़ौमलूतको उठाया
और आसमानपर लेगया वहां के निवासियोंने उसकी खड़ खड़ाहट
सुनी फिरमैंने गिरादिया ऊपरका नीचे अर्थात् बस्तीतो नीचेहोगई
और शहरकी पेंदी ऊपर होगई जिबरईल के आज्ञाकारी सम्पूर्ण
संसार है और इस कामके लिये नियत हैं कि वे जीवोंके शरीरमें
शक्ति देतेहैं जिससे उनको कष्ट न हो॥

तसवीर नम्बर ८५

मेकाईल यह फ़रिस्ता झगड़ा और कष्ट को दूर करता है औ
भोजनों को देता है जीवोंको विद्या और परमार्थ सिखाताहै काबुल
अहबारने लिखा है कि सातवें आसमान पर मसजूर नामक नदी है
उसमें इतने फ़रिस्ता हैं कि उनकी संख्या ईश्वर के सिवा और कोई
नहीं जानताहै और हज़रत मेकाईलउनके सरदारहैंऔर उसी नदी
में नियत हैं इसका मुख इतना चौड़ा है कि जोयहअपना बदन फैलावै
तो सम्पूर्ण आसमान इसके बदन के आगे एक राईके दाना समान
दृष्टि आताहै और जो अपना प्रकाश पृथ्वी अथवा आसमानको दि-
खावे तो सम्पूर्ण निवासी जलजायँ सम्पूर्ण संसार में इसीके मित्र

रसेवकनियतहैंवेगर्भादिमेंसत्यदेतेहैंऔरसम्पूर्णपृथ्वी,बायु,मेघ,
स,जीव और धातु आदि सम्पूर्ण पूर्वोक्त सृष्टिमें जोसहायकनियत
तेहैं वेसबमें काईल के द्वाराहोते हैं॥

तसवीर नम्बर २३

इज़राईल॥ यहफ़रिस्ता प्राणहरता है (मृत्यु) काबुलअहबारने
लखाहै कि परमेश्वरने इसके दोनोंपैर सातवीं ज़मीन (पाताल) के
नीचे और शीश अरशके ऊपर कियाहै इसका मुखलौह महफूज़
की तरफ़ रहताहै इसके सहायक जीवोंकी संख्यानुसार हैं सम्पूर्ण
संसार को अपनी आंखों के आगे रखता है जिसका अन्न जल
बन्द हुआ और समय नियत आपहुंचा उसके शरीर से प्राण
निकालताहै अशावइसलमके बेटा की वार्त्ता है कि इज़राईल से
हज़रत खलीलुल्लाने पूछाकि जो एक मनुष्य पूर्व में और दूसरा
पश्चिम में और एक देशमें महामारी हो और एकमें युद्ध हो तो
तुम प्राणक्योंकर हरोगे इज़राईल ने उत्तरदिया कि उससमय स-
म्पूर्ण शक्ति जीवोंकी मेरी अंगुलियों के बीच आजाती है ज़हबविन
मम्बाने लिखाहै कि दाऊद के बेटे सुलेमान ने चाहाकिमैं मृत्युको
देखूं और उससे मयत्री करूं इसपै मृत्यु आय प्रकटहुई मानोउसके
तख्तके नीचेही बैठीथी और सुलेमान को नमालूमहुआ सुलेमान
ने पूछा कि तुमकौन हो उसने उत्तरदिया किमैं मृत्युहूं इसबात के
सुनतेही सुलेमान को मूर्च्छाआगई तब मृत्युने ईश्वरसे प्रार्थना की
कि हे सच्चिदानन्द इसको मेरे देखनेकी बड़ा अभिलाषथी जब मैं
इसके सन्मुख आईतो इसको मूर्च्छा आगई इसलिये इसको ऐसी
शक्ति औ दृढ़ता देजिस्में यह मुझे देखै इस पै आकाश वाणीहुई
कि अपना हाथ सुलेमानकी छातीपरमल मृत्युने आज्ञानुसारछाती
पर हाथमला तो सुलेमान को चेत भया तब सुलेमान ने पूछा कि
मैंने तुझे सम्पूर्ण सृष्टि में सब से बड़ा पाया इसका क्या कारण है
कि सम्पूर्ण फरिस्ते तेरेही सदृश हैं तब मृत्युने उत्तरदिया कि इ-
सका ईश्वरसाक्षी है कि इससमय मेरेदोनोंपावँ उसफरिस्ता के कंधे

महम्मद साहबके सन्मुख प्रकटहुये तो क्यादेखा कि सम्पूर्ण संसा
को घेरेहैं यह देखके मुहम्मद साहबको मूर्च्छा आगई जबचेत
आये तब जिबरईलको अपनी पहिली सूरतमें देखा और कहा कि
तुम्हारे स्वरूप को देखके यह बुद्धिमें आताहै कि आपके स्वरूप
बराबर सृष्टिमें और भी कोईहै तब जिबरईलने कहा कि जो इस
राफ़ील को देखै तो यह आश्चर्य मिटजाय क्योंकि उसका स्वरू
ऐसा दीर्घहै कि आकाशको अपने कन्धे पर उठाये हुयेहै और पै
उसके सातवीं ज़मीनके पीठपर हैं अर्थात् पाताललोक में हैं) इ
बड़ाई पर भी ईश्वर की दयासे चींटीकेसमान छोटे होजातेहैं काबु
अख़बारने लिखाहै कि जिबरईल मलायकमें सर्वोपरि हैं उनके
पंखहैं औ प्रत्येक पंखमें एकसौ पंखहैं जब जिबरईल महम्मदके पा
आये तो महम्मदने प्रश्न किया कि आपकी ताक़त कितनी है जिब
ईलने उत्तर दिया कि मैंने केवलदो बाज़ूपर शहर क़ौमलूतको उठाय
और आसमानपर लेगया वहां के निवासियोंने उसकी खड़खड़ाह-
सुनी फिरमैंने गिरादिया ऊपरका नीचे अर्थात् बस्तीतो नीचेहोगई
और शहरकी पेंदी ऊपर होगई जिबरईल के आज्ञाकारी सम्पूर्ण
संसार हैं और इस कामके लिये नियत हैं कि वे जीवोंके शरीरमें
शक्ति देतेहैं जिसमें उनको कष्ट न हो ॥

तसवीर नम्बर ८५

मेकाईल यह फ़रिश्ता झगड़ा और कष्ट को दूर करता है और
भोजनों को देता है जीवों को विद्या और परमार्थ सिखाताहै काबुल
अहबारने लिखा है कि सातवें आसमान पर मसजूर नामक नदी है
उसमें इतने फ़रिश्ता हैं कि उनकी संख्या ईश्वर के सिवा और कोई
नहीं जानताहै और हज़रत मेकाईलउनके सरदारहैंऔर उसी नदी
में नियत हैं इसका मुख इतना चौड़ा है कि जोयहअपना बदन फैलावै
तो सम्पूर्ण आसमान इसके बदन के आगे एक राईके दाना समान
दृष्टि आताहै और जो अपना प्रकाश पृथ्वी अथवा आसमानको दि-
खावे तो सम्पूर्ण निवासी जलजायँ सम्पूर्ण संसार में इसीके मित्र

और सेवक नियत हैं वे गर्भादि में सत्य देते हैं और सम्पूर्ण पृथ्वी, वायु, मेघ, वृक्ष, जीव और धातु आदि सम्पूर्ण पूर्वोक्त सृष्टि में जो सहायक नियत होते हैं वे सब में काईल के द्वारा होते हैं ॥

तसवीर नम्बर ८६

इज़राईल ॥ यह फरिश्ता प्राणहरता है (मृत्यु) काबुल अहबार ने लिखा है कि परमेश्वर ने इसके दोनों पैर सातवीं ज़मीन (पाताल) के नीचे और शीश अरश के ऊपर किया है इसका मुख लौह महफूज़ की तरफ़ रहता है इसके सहायक जीवों की संख्यानुसार हैं सम्पूर्ण संसार को अपनी आंखों के आगे रखता है जिसका अन्न जल बन्द हुआ और समय नियत आपहुंचा उसके शरीर से प्राणः निकालता है अशावइसलमके बेटा की वार्ता है कि इज़राईल से हज़रत खलीलुल्लाने पूछा कि जो एक मनुष्य पूर्व में और दूसरा पश्चिम में और एक देश में महामारी हो और एक में युद्ध हो तो तुम प्राण क्योंकर हरोगे इज़राईल ने उत्तर दिया कि उस समय सम्पूर्ण शक्ति जीवों की मेरी अंगुलियों के बीच आजाती है ज़हवविन मम्बा ने लिखा है कि दाऊद के बेटे सुलेमान ने चाहा कि मैं मृत्यु को देखूं और उससे मयत्री करूं इसपै मृत्यु आय प्रकट हुई मानो उसके तख़्त के नीचे ही बैठी थी और सुलेमान को न मालूम हुआ सुलेमान ने पूछा कि तुम कौन हो उसने उत्तर दिया कि मैं मृत्यु हूं इस बात के सुनते ही सुलेमान को मूर्च्छा आगई तब मृत्यु ने ईश्वर से प्रार्थना की कि हे सच्चिदानन्द इसको मेरे देखने की बड़ी अभिलाष थी जब मैं इसके सन्मुख आई तो इसको मूर्च्छा आगई इसलिये इसको ऐसी शक्ति औ दृढ़ता दे जिससे यह मुझे देखै इस पै आकाशवाणी हुई कि अपना हाथ सुलेमान की छाती पर मल मृत्यु ने आज्ञानुसार छाती पर हाथ मला तो सुलेमान को चेत भया तब सुलेमान ने पूछा कि मैंने तुझे सम्पूर्ण सृष्टि में सब से बड़ा पाया इसका क्या कारण है कि सम्पूर्ण फरिश्ते तेरे ही सदृश हैं तब मृत्यु ने उत्तर दिया कि इसका ईश्वर साक्षी है कि इस समय मेरे दोनों पावँ उस फरिश्ता के कंधे

पर हैं जिसके पैर सातवें लोक पृथ्वी के बाहिर पांचसौ वर्षकी राह
पर हैं और शीश उसका सातवें आसमान से ऊपर हजार वर्ष
रास्ता पर है और वह दोनों हाथ फैलाये मुख खोले कह रहा
कि जो ईश्वर की आज्ञा हो तो मैं पृथ्वी आसमान उनके सम्पू
वासी और पदार्थों समेत एकहीग्रास करजाऊं यह सुनके सुलेमा
ने कहा कि यह तो तूने एक आश्चर्य की बातकही तबमृत्युने उत्त
दिया कि जो तू मेरे उस स्वरूपको देखे जिसस्वरूपको धारणकर
जीवोंके प्राणलेताहूं तो न जानै कौन हालहो तब सुलेमानने कह
कि अब तू मेरे देखने को आयाहै या मेरेप्राण लेनेको मृत्युने कह
कि नहीं केवल देखने को आया हूं तबसुलेमानने उससे मैत्रीकीत
तो मृत्यु बृहस्पतिके दिन सुलेमान के मिलनेको नित्त आया करती
और तीसरेपहरतक बैठीरहाकरती एकदिन सुलेमानने मृत्युसेकहा
कि तुम प्राणहरने में न्यायनहीं करते क्योंकि किसीको तो मारते
हो और किसीको छोड़देतेहो तब इसपर मृत्युने कहा कि इसप्रश्न
में हमतुमदोनों बराबरहैं इसका यहभेदहै कि शबरातके दिनईश्वर
के यहांसे एकपाटी आतीहै उसमें सम्पूर्ण ब्योरालिखा होताहै कि
अमुक पुरुष के प्राण इसप्रकार हरने चाहिये मैं उसी अनुसार काम
करताहूंइसीप्रकार आधेमहीना शाबानतक दूसरी तख्तीआतीहै
अहलतौहीद (वेदानुगामी)और योगेश्वरके प्राणतो दाहिने हाथसे
हरतीहूं और श्वेतवस्त्र में लपेटके-अलींईनस्थानमें पहुंचातीहूं और
नास्तिकों के प्राण बायें हाथ से हरती हूं और गूदड़ में लपेट के
सजींईनस्थानमें पहुंचाती हूं और उसके शुभाशुभ चारण का ब्योरा
तो ईश्वर आपही जानताहै अर्थात् मुसल्मान औरकाफ़िर निदान
इनके कर्मानुसार फल देताहै आमशने ख़सीमासे कहा है कि एक
समय मृत्यु सुलेमान के पास आई तो उससमय सुलेमानकी सभा
में एकमनुष्यकी ओर बारबार देखतीथी जब मृत्यु बाहिर गई तब
उसने हज़रत सुलेमानसे पूछा कि हे जगत्पति यह कौनथा सुले
मानने कहा कि यहमृत्युथी तबउसनेकहा कि यहतो मुझे इसप्रकार

देखती थी कि मानों मेरेप्राणलेगी तबसुलेमान ने कहा कि तू क्या चाहता है उसने उत्तरदिया कि मैं उससे अतिही भयातुरहूं सोइसा करके उसके भयसे अभय करिये तबसुलेमान ने कहाकि इसको ब-लाद हिन्दमें पहुंचादो जब दूसरीबार मृत्यु फिरआई तब सुलेमान ने पूछाकि तुमउसदिन मेरे एक सभासद की ओर बारबार क्यों देख-तेथे यहसुनमृत्युने उत्तरदिया कि मुझेकेवल यहआश्चर्य था कि इसमनुष्य के प्राणलेने के हेतु बलाद हिन्द में मुझक्यों कर आज्ञा मिलेगी क्योंकि मुझे आज्ञा हो चुकी थी कि इसके प्राण बलाद हिन्द में लिये जायँ और दिन थोड़े रहगये थे और आपकी सभा में वह बैठाथा सो मैं इसी शोचमें था कि हे ईश्वर इस थोड़ी सी अवधिमें वह वहां इतनीदूरीपै कैसेपहुंचेगा मैं नियत समयपै वहां पहुंचा तो उस उसको वहीं पाया तो उसके प्राणलिये ओहबबिन मम्बाकी बातो है कि एकबार मृत्यु किसी जव्वारके प्राणहरे और आसमान को भजे तब फरिश्ता (गण) ने पूछा कि भला प्राणहरते समय तुझे कभी किसीपै दयाभी आईहै तबमृत्युने उत्तर दिया कि हां आई जब मुझे एक स्त्रीके प्राणहरने की आज्ञा हुई जब मैं वहांगया तो देखा एकजंगल में वहदीनहै और उसीसमय उसके पुत्रहुआथा उससमय मुझे उसस्त्रीकी दीनता कष्ट और उसलड़के की एकाकी पै अत्यन्तदया आई तब मलायका (गण) ने पूछा कि यह जव्वार वही लड़का था कि जिसकी माता के प्राण जंगल में हरेथे मृत्यु ने कहा कि हां यह वही है आगे सत्य जाननेवाला ईश्वर है॥ सम्पूर्ण मलायका (गण) से बढ़के हैं जो निशिवासर ईश्वराराधन के सिवाय और कुछ नहींजानते और सदैव ईश्वरकी प्रशंसाकिया करते हैं हदीस (शास्त्र)में लिखा है॥ रसूलखुदा कहता है ईश्वर ने पृथ्वी उत्पन्न की जो सूर्य्य की सैरकरने की जगह है एक क़ौम ने हज़रतरसूलखुदा से प्रश्न किया कि हमको नहीं मालूमहोता कि एक श्वासलेने में कोई क्योंकर पापीहोसक्ता है तब हज़रतनेकहा कि परमेश्वर ने आदम (शिव) को पैदा किया और ये लोग नहीं

जानते लोगोंने कहा कि शैतान इनकेसाथ कहांहै तब महम्मद ने फिरिकहा कि तुम नहींजानते कि ईश्वरने शैतान को पैदाकिया है तब हज़रत महम्मदने यह आयतपढ़ी कि ईश्वर जिसवस्तुको हम नहींजानते देखो कैसा ईश्वर बड़ाहै ॥

सम्पूर्ण मलायकों ईश्वरके मेंसे सातवें आसमानवाले काबुल अहबारने लिखाहै कि ये वे फरिश्ते हैं जो कि हाथोंसेमाला और जिह्वा से प्रशंसा और आराधन कियाकरते हैं और निशिवासर सुभानअल्लाह व इल्लिल्लाह इल्लिल्ला रटाकरते हैं और इसी प्रकार ईश्वर ने भी उनकी प्रशंसा कीहै कि वे तसबीह करते हैं अर्थात् कहते हैं कि ईश्वर अमलहै दिनमें और रातमें कभी इसको विस्मरण नहींकरते जब प्रलयहोगी तब कहैंगे कि तू अमलहै जैसे तुझे मानना चाहिये वैसा हमने नहींमाना और तू अमल है जैसा तूहै हम नहीं जानते तेरीप्रशंसा हम नहीं करसक्के किन्तु तूही अपनी प्रशंसा करसकाहै ॥ अबदुल्ला बिनअब्बासने कहा कि आसमान की सृष्टिमें मलायकाओं के (देवता) बैलकेबदन हैं ईश्वरने एक मौकिल (नियतपुरुष)का नामइसमाईलधराहै और येसबउसीके आधीनहैं॥

प्रथम आसमान के फरिश्तोंके बदन बैलकेसेहैं और उनकेआधीश्वरका नाम मलकइसमाईलहै ॥

तसबीर नम्बर ६७

द्वितीय आसमान के फरिश्तों के स्वरूप उकाबकेसे हैं कोषमें उकाबका अर्थ फर्स अल्लाहकाह अर्थात् ईश्वरकाघोड़ा इनकेआधीश्वरका नाम मीजाईल है ॥

तसबीर नम्बर ६८

तृतीय आसमान के मलायकोंका स्वरूप गिद्धकाहै और इनके मौकिल (आधीश्वर) का नाम सायदियाईलहै ॥

तसबीर नम्बर ६६

चतुर्थासमान के मलायकों का स्वरूप घोड़ेका है और इनके मौकिलका नाम सलसलाईलहै ॥

तसवीर नम्बर १००

पंचमआसमान के मलायकों का स्वरूप हूरूलऐन अर्थात् परीका है और उनके मौकिलका नाम कल्कलाईलहै ॥

तसवीर नम्बर १०१

षष्ठम आसमान के मलायकों का स्वरूप लड़कों का है और इनके मौकिल का नाम समखाईल है ॥

तसवीर नम्बर १०२

सप्तम आसमानके मलायकोंकी सूरतमनुष्योंकीहैइनकेमौकिल कानाम रोफाईलहै ॥ तसवीर नम्बर १०३

ओहवबिन मंबिधाको निश्चयहै कि आसमान पै थोड़े परदे हैं उन परदोंमें इतने मलायक भरेहैं कि एक दूसरेको नहींपहिंचानते और निशिवासर परमेश्वरका आराधन कियाकरते हैं और नाना प्रकारकी बोलीमें अति भयानक डरनेवाले शब्दउच्चारण करतेहैं ॥

मलायका हिफ़्ज़ । अर्थात् रक्षा करनेवाले इनको किरामुलका भी कहते हैं इब्नजरीह कहता है कि ये दो फरिश्ते हैं मौकिल औलाद आदमके से एक तो दाहिने हाथ पैरहता है और दूसरा बायेंहाथ पै सो दाहिने हाथवाला तो पुण्य और बायें हाथ वाला पाप लिखता है कोई २ कहता है कि चार फरिश्ते हैं उनमें से दो दिनको और दो रात को रहते हैं और अहद अब्दुल्लाह बिन मुबारकने पांच फरिश्ते लिखे हैं कि दो रातिको और दो दिन को और एक कभी साथ छोड़ता ही नहीं और नास्तीकों की भी रक्षाहोती है क्योंकि कुरान में कुफ्फारान् की भी रक्षा लिखी है और उस आयत का यह अर्थहै कि जब मनुष्य पापकरता है तो बायें कन्धेवाला फरिश्ता छःघड़ीतक उस पापको नहीं लिखता जो कदाचित् उसदोषीने इसबीच में तो वह और इस्तगफ़ार किया तो वह उस पापको नहीं लिखता (तो वह और इस्तग़फ़ारका अर्थ है अपने को धिक्कारना और कहना कि अब ऐसा न करूंगा हे क्षमाकर) और जो उसने इस ६ घड़ी के बीचमें तो वहन

इस्तग़फ़ारन चाहा तो ६ घड़ी उपरान्त उसपाप को उसके कर्मों के खाते में लिखताहै दूसरे व्याख्यान में यों लिखाहै कि जबजीव से पापहोताहै तो वह लिखाजाताहै और जब कोई पुण्यका काम करता है तो दाहिनेहाथ का फ़रिश्ता कहता है कि इसपाप को मिटादे मैं इसकी दशनेकियोंमें से नौ लिखूंगा और एक उसकेपाप के पलटे न लिखूंगा इसबातको सुनके बायेंहाथवाला उसके आधीन न होनेके कारण मिटादेता है इन्स बिन मालिक रसूल का कहा कहते हैं कि ईश्वरने प्रत्येक जीवपै दो फ़रिश्ते नियत किये हैं जो उनके शुभाशुभ कर्म्मलिखें जीव जब मरताहै तो वेही दोनोंफ़रिश्ते ईश्वरके सन्मुख जाय खड़ेहोतेहैं और प्रार्थना करतेहैं कि हे सच्चिदानन्द अमुक मनुष्य मरगया अब हम कहांजायँ तब ईश्वर कहताहै कि आसमान तो मेरे मलायका से भरेहैं और पृथ्वी मनुष्यों से भरी है और ये अपनी २ सेवा भक्ति में लगेहैं तो अब तुम मेरे बन्दे (उसीजीवकीक़बुर) की क़बुरमें जाओ और प्रलयतकमेरी स्तुति और गुणगावो अर्थात् निम्नलिखित तीनशब्दोंको कहो कि ईश्वर अमलहै, ईश्वर सर्वोपरिहै और ईश्वर अद्वैत है और उसका फल मेरेबन्देके पुण्यखातेमें लिखो और येहीकिरामुलकातिबीनहैं।

तसबीर नम्बर १०४

मअक़बात--ये चन्दफ़रिश्ते हैं--जो आसमान से सिद्धी लाते है और मनुष्योंके प्राण आसमान को लेजातेहैं और उनके शुभाशुभ कर्म्मोंकोभी लेजाते हैं विद्वानोंने कहाहै कि जो मनुष्य प्रातःकाल नमाज़पढ़े तो फ़रिश्ता उसके पास नित्तआवें और उसको नमाज़ पढ़तेपावें और रातिवाला फ़रिश्ता उससे जुदारहै और उसको नमाज़में पावै और इसीतरह नमाज़ मग़रिब जब अदाकरै तो जो पाप इनदो नमाज़ों के बीचमें होगा तो उसका प्रायश्चित्त होगा और ऐसा हो तो मलायका उसकी भलाईके सिवाय उसकीबुराई आसमान पर न लेजायँगे और यहबात पुष्टहै और इसकोमहाशय अमीर अलेहुस्सलाम की वाक्य पुष्टकरती है वह यहहै ईश्वर ने

बनी आदमका उपनाम देकर कहा कि हे आदम (शिव) के पुत्र हमारे और तेरे बीच में कौन न्याय करनेवाला है कि हमतो तुझे ऋद्धि सिद्धि देते हैं और तू पापकर्ता है तो मेरी भलाई और तेरी बुराई और सदैव हमारा फ़रिश्ता करीम तेरे महापाप लिखलाता है हे आदम के पुत्र मैं जो तेरे कर्म दूसरेसे सुनताहूं और तू उससे कुछसचेत नहींहोता अचेतहै जो कदाचित् मैं उसके अनुसारकरूं तो बहुत शीघ्र तेरे प्राण अन्न हरता और तू महादुःखको प्राप्तहोता ॥ मनकिर और नकीर ये दो फरिश्ता हैं सम्पूर्ण मलायकों में से सो ये आदमी की कबुर में जाके ईश्वर और रसूल से प्रश्न करते हैं इन्सबिन मालिक ने हज़रत से बर्णन किया है कि जब मृतकमनुष्य को दफ़न करके लोग घरोंको पलट आतेहैं और उनके पैरोंकी आहट सुनाई देती है कि इतने में दो फरिश्ते उसमुर्दे को क़बुर के भीतर बैठालते हैं और उससे प्रश्न करते हैं कि महम्मद रसूल खुदा के बिषय में तू क्या कहता है उस समय जो वह मृतक मोमिन (सधर्म्म) है तो कहैगा कि हां मैं साक्षीदेताहूं उसकी किवह सत्य हरिदास है और उसका दूत है तब फरिश्ते उससे कहते हैं कि देख तू अपनी ठौर कि नर्क था यह केवल महम्मद रसूलखुदा की दयादृष्टि से कि यह बदल के बैकुण्ठ होगया इसलिये वह जीव उनदोनों ठौरोंको देखलेगा यह प्रश्नोत्तर तो मुसल्मान मृतक का है और अब काफिरों (नास्तीकों) का हाल सुनो जब येही सवाल करैंगे कि तू महम्मद के बिषय में क्या जानता है वह कहैगा मैं कुछ नहीं जानताहूं जो सब सन्सार कहता रहा सोई मैं भी कहतारहा तब उसको वे जवाबदेंगे कि अरे तूने नहीं पहचाना और तूने नहींसुना उनका यश तिस उपरांत उसको लोहे के कोड़ों से मारेंगे तब वह पुकारेगा कि जिसको तमाम सृष्टि मनुष्य और जिनों के सिवा सुनेगी मलायका सेयाहीन ये फरिश्ते सभाओं से अधिक प्रीतिकरते हैं औरों की बार्त्ता की अपेक्षा अबदुलसईद रसूल का कहा बर्णन करते हैं कि उन्हों ने कहा कि ईश्वर के कुछ

गया हैं वेसन्सारमें फिरा करते हैं और ये उन फरिश्तों से अलग हैं जो मनुष्य के शुभाशुभ कर्म्मों को लिखा करते हैं जब कोई सभा ऐसी पाते हैं कि जहां ईश्वर की वार्त्ता होती हो तब वे अपने साथियों को बुलाते हैं कि आयो तुम्हारा काम होगया तब ईश्वर के पास जाते हैं जब उनसे ईश्वर पूछता है कि तुमने हमारे जीवों को किसकाम में पाया तब वे उत्तर देते हैं कि तेरा धन्यवाद कर जब ईश्वर पूछता है कि क्या उन्हों ने मुझे देखा है तब वे कहैं हैं नहीं जब ईश्वर पूछता है कि जो वेलोग मुझ को देखैं तो उनक क्या दशाहो तब फरिश्ते कहते हैं कि जो देखैंतो और भी अधि मेरा यशगावैं और तेरी भक्ति करैं जब ईश्वर उनसे पूछता है वि कोनसी भयके कारण मेरीशरण में आतेहैं तबवे कहैंगे कि नर्क क ज्वाला के भयसे जब ईश्वर प्रश्न करताहै कि जो वे इसनर्ककी अ ग्निको देखैं तोउनके कितनी भय होगी तब वे कहैंगेहैं किदेखैं तो औरभी अधिक भयभीत हों जब फिर ईश्वर पूछता है कि फिर मुझसे किस बस्तुकी चाहना राखते हैं तबवेकहैंगे हैं कि बैकुण्ठकी जब फिर ईश्वर पूछता है कि क्या उन्होंने बैकुण्ठ देखा है फरिश्ते कहते हैं कि नहीं जब फिर ईश्वर पूछता है कि जो देखैं तो कितनी बड़ी लालसा इसके देखने की हो उस समय ईश्वर कहता है कि मैं तुमको साक्षी दैकै कहताहूं मैंने उनके अपराधोंको क्षमाकिया तब मलायका कहते हैं कि अमुक पुरुष जो उनके झुण्ड में था सो तेरा कभी नामभी नहीं लेताथा वह तो उस समय दैवयोगसे वहां आगयाथा तब ईश्वर कहता है कि यह वहझुण्डहै जिनका सत्संगी अभागी नहीं होताहै॥

इनफरिश्तोंमें से—दोफरिश्ते हारूत और मारूत नामक औरहैं इन दोनोंको चाह बाबुलमें दण्ड दियाजातहै सृष्टिमें जोफरिश्तोंने मनुष्योंको पापकरते पाया तबकहा कि हेसच्चिदानन्द वेतेरी बड़ाई और तेरेदयालु चित्त और प्रतापको नहीं जानते तबईश्वर ने कहा कि जोतुमभीइन्हींके समान रहो तो तुम तो पाप न करोगे उन्होंने

उत्तर दिया कि नहीं जब ईश्वर ने आज्ञादी कि अच्छा विचारो कि दो फरिश्ता पृथ्वीपर जायँ तबहारूत और मारूत पृथ्वीपर आये और मनुष्योंकी विषय इनके भी शरीरमें दीं वहां इन्होंने देखा कि मनुष्य इनमेंफँसे हैं परन्तु उनविषयोंसे न बचसके अन्तको पापभागीहुये तब ईश्वरने कहा कि अब चाहे तो संसारी दुःख भोगो और चाहे स्वर्ग का दुःख भोगो इसपै दोनोने एक दूसरे से पूछा कि क्या करना चाहिये तब उसने उत्तर दिया कि संसारी दुःखतो थोड़े दिनकाहै और स्वर्गके दुःखकी थाहनहींहै इसलिये संसारी दुःख भोगना चाहिये तो इसीसे चाह बाबुलमिला जैसा कि लिखाहै कुरानमें कि हारूत और मारूतको चाह बाबुल जिसने इनदोनों अपराधियों को देखा है वह कहता है कि दोमनुष्य अति दीर्घ उलटे टँगे हैं और एँड़ीसे जांघों तक तौक़ और ज़ंजीरों में जकड़े हैं दूसरी कहावत यों है कि ईश्वरने कहा कि देखो अब मैं तुमको मनुष्योंके पास भेजता हूं और मेरे और तुम्हारे बीचमें रसूल नहीं है पृथ्वीपर जावो परंतु वहां नतो चोरी और व्यभिचार कीजियो और न मेरे साथ किसीकोसाक्षी कीजियो काबुल अहिवारने लिखा है कि पहिलेही निदान आज्ञा भंगको अर्थात् जिनकी नाहीं थी उन्हींकर्मोंको किया तिस उपरांत आसमान पर जाने लगे तो न जाने पाये जब हज़रतइदरीस पैगम्बर हुये तब उन्से कहा कि हमारे अपराधोंको ईश्वरसे क्षमा करादे इसपै पूर्वोक्त पैगम्बर ने कहा कि भला यहकै मालूम हो कि मेरे कहनेसे तुम्हारे अपराध क्षमाहोंगे इसपै उन्होंने कहा कि तेरी प्रार्थनाके उपरांतहम जैसेअब हैं जो वैसेही बनेरहैंतब जानियो कि तेरी प्रार्थना सुनीगई नहींतो इसके विपरीति जाना अर्थात् अपराध क्षमा नहींहुये निदान हज़रतइदरीसने नमाज़ पढ़के प्रार्थनाकी तिस उपरांत उनको तरफ जो देखा तो वे दृष्टि न आये इससे जाना कि वेदुःखमें फँसे और उनको बाबुल नाम पृथ्वी पै लैगये हैं और वहां बन्द हैं॥

जो फरिश्ते कि सृष्टिमें नियत हैं उनमें से कुछ फरिश्ता ऐसे हैं

कि जो सृष्टिकी सहायता करते हैं और प्रत्येक मनुष्य पै नियत हैं अबूअमामाकी कहावत कहते हैं कि खुदाके पैग़म्बरने यह कहा है कि प्रत्येक मोमिन अर्थात् सधर्म पर एक सौ साठि फ़रिश्ते नियत हैं जो दुःखको मिटाते हैं उनमेंसे सात फ़रिश्ता आंखोंपै नियत हैं वे वैसेही कष्टसे बचाते हैं जैसे गर्मी में शहदसे मक्खी दूर कीजावें और वही बातहै जिसकी पैग़म्बरने नबी होनेके कारण पहिचाना॥

तसवीर नम्बर१०७

परन्तु अब हम भोजन और जीवधारीबनस्पतिके विषयमें वर्णन करतेहैं॥

यह समझना चाहिये कि कोई बस्तु हमारे खानेके योग्य नहीं होसकती जब तक वे सातों फ़रिश्ते अपना २ काम न करैं और जो बस्तु निकल जाती है उसकी ठौर दूसरी बस्तु शरीर में न धरैं तो इस दशामें शरीर भोजनके आधीन न होगा फिर यहभी है कि शरीर भीतरी और बाहिरी गर्मीके कारण सदैव गला करता है जब गर्मी तरीमें आती है तो तरीको सुखा देती है और जिमाद अर्थात अंग आदिका भोजन अपना शरीर है परन्तु जब तक कोई बस्तु उसके साथ शरीर में से नमिलै तबतक कोई अंग न बनेगा अर्थात रक्त,मांस,अस्थि न होगा जैसे गेहूंको दाना आपही भोजन है परं रोटी और आटा नहीं होता जब तक उसका पकाने वाला अप काम न करै तब तक रोटी नहीं होती इसी प्रकार प्रगट सृष्टि तं मनुष्य है अलखमलायक इसलिये ईश्वरने अपने जनोंके हेत लक्ष अलक्ष दोनो भांतिके पदार्थों से परिपूर्ण किया है पहिला फ़रिश्त भोजनोंको मांस और हड्डीके ढंगपर करता है क्योंकि भोजन आ पही आप नहीं बदलते दूसरा फ़रिश्ता मुखमें देखता है तीसरा उसको रक्त और मांसके स्वरूपमें लाता है चौथा फ़रिश्ता उसकेदूर दर अर्थात् मलको नियत द्वारासे बाहिर निकालता है पांचवां फ़रिश्ता उनको बांटता है छठा फ़रिश्ता मांसको मांसमें और जोहड्डी के योग्यहै उसकोहड्डी में चपकता है और सातवांफ़रिश्ता उस को देखा करताहै कि ठीकहै कि नहीं निदान सबठौर वैसी बस्तु पहुंचा

वैगा कि जोउसके योग्यहो और खराब नकरै जब कोई अंग खराब होनेलगता है तो उससमय पतले २ कण उस ठौर जानेलगते हैं और नये कण उसठौर इकट्ठे होते हैं और पुराने खींचलाता है और प्रत्येकवस्तु कासांगोपांग देखतारहताहै और यह न हो तो भोजन सम्पूर्ण शरीरमें पहुंचै और पैरोंकी तरफ न पहुंचै तो पावँ आदमीके वैसेही रहैं जैसे कि लड़कपनमें थे और सम्पूर्ण अंग बढ़जायँ और पैर वृथा रहैंगे चलैंगेनहीं इसलिये यहसबकामसातवें फ़रिश्तेका है इसी प्रकार सम्पूर्ण वस्तुओं को जानना चाहिये॥

(बारहवां व्याख्यान) अरस्तातालीस के निकट प्रत्येकसमय महा मण्डल के चक्रसे प्रयोजन है और दूसरे विद्वानों के निकट रात दिनसे प्रयोजनहै समय अथवा काल यों बांटाजाताहै कि काल तो करनपै और करन सालपै और साल महीनोंपै और महीना दिनों पै और दिन घड़ियों पै और घड़ी पलोंपै और पल बिपल पै और बिपल श्वांसा पै इसी प्रकार एक वस्तु दूसरी वस्तुसे मिटती है और किसी २ का निश्चय है कि जो कुछ सन्सार में भलाई बुराई होती है सो सब कारण सन्सार का है परमेश्वर से कुछ प्रयोजन नहीं है वहसब आसमान की चालसे होता है इसीसे मनुष्य समय को निन्दा करते हैं परन्तु यह शरा (कुरान) के विपरीतिहै क्योंकि जो हानिलाभ सन्सार में होते हैं वहसब ईश्वर की आज्ञासे होतेहैं कुरान में लिखा है कि सन्सार को गाली मतदो क्योंकि ईश्वर आपही सन्सार है प्राचीन विद्वानों का निश्चय है कि अगलेदिन अच्छेथे और ज्यों २ दिन बीतते गये त्यों २ बुरा होता गया और आगे बुराहोता जायगा किसी २ के निकटतो समय काल सदाका ऐसाही बुरा है कभी कोई इस सन्सार में सन्तुष्ठ नहींरहा अबूउल-अलामारी ने बदीउलजमा के नाम पत्र लिखा कि समय काल ख-राब नहींहुआ बदीउलजमा ने उसके प्रति उत्तर में लिखा किसत्य सत्य समय काल बुराहुआ भला कौनसमय अच्छाथा बताओ नबी अब्बास के आगे था अच्छा उसका अन्त समय तो हमने दे-

और आदि के समाचार सुनने में आते हैं अच्छा तो मर्द अम्बिया का समय अच्छा था उसके भी समाचार पुस्तकों में लिखे हैं क्या यह प्रमाणिक नहीं है और नवीहरब के समय के भी समाचार जो उस समय हुआ सो विदित है अच्छातो हाशिम का समय अच्छा था जिसके लिये महाशय अमीरुल मोमिनीन ने प्रार्थना की है अच्छा क्या हज़रत उसमान का समय अच्छाथा या खलीफों का समय अच्छा था या जाहिलियत का समय अच्छा था या महम्मद साहब का समय अच्छा था या इसकेभी आगेका समय काल अच्छाथा या हज़रत आदम का समय काल अच्छा था आदम के आगे समय अच्छा था जिस के बिषय में मलायका ने कहा है इन सम्पूर्ण प्रमाणों से प्रकट है कि समय काल सदा से बुराही है हां इतना है कि कुछथोड़ा २ भेद रहाहो ॥

रात दिनके विषय में ॥

सूर्य्यके उदय और अस्तके बीचके समय का नाम दिन है और सूर्य्य अस्त होनेसे सूर्य्यके उदय के बीच के समय का नाम रात और रात दिनमें चौबीस घड़ी होतीहैं उसमें न तो कमहोता है और न अधिक और जो ऋतु के कारणसे रात बड़ी होती है तो दिन कम होजाता है और दिन बड़ा होता है तो रात कम होजाती है निदान दोनों चौबीसही घड़ीके बीचमें रहते हैं सबसे बड़ादिन खरीज़ां की सत्तरहवीं तारीखको होता है और यह उस समय होता है जब कि मीन राशि का अंत होता है उस समय दिन १५ पन्द्रह घड़ी और रात ९ नौ घड़ीकी होती है इससे छोटी रात कभी नहीं होती है इस के उपरांत फिर दिन घटने लगता है और रात बढ़ने लगती है अंत को अट्ठारहवीं ऐवलको रात दिन बराबर होजाता है और यह उस समय होता है जब कन्या राशिका अंतहोता है उससमय दिन और रात १२ बारह २ घड़ीके होते हैं फिर उस समय से फिर रात बढ़ती है और दिन घटने लगता है यहां तक दिन ९ नौ घड़ीका और रात १५ पन्द्रह घड़ी की होती है यह रात की बाढ़का अन्त है इसके

उपरांत फिर रात घटने लगती है और दिन बढ़ने १६ तारीख़ कमी तक कि जब सूर्य्य मीन राशिका होता है यह समय रात दिन की बराबरी का है और उस समय आसमान का चक्र नए सिरेसे होता है उसी समय से रात दिनका हिसाब भी नया होता है बिदित हो कि यह ईश्वर की दया है कि समयको रात दिन में बांटा है और मनुष्य अपने काममें फँसा रहता है इसीसे अधिक परिश्रम के कारण अशक्ति होता जाता है इसीसे नींदकेबश्य होजाता है जिस्में थकवाही मिटावे इसीलिये ईश्वरने रात दिन बनाए कि दिन में काम करै और रातको उस काम करनेकी थकवाही मिटावे और रात दिन जोनहोते तो बड़ी खराबी होती क्योंकि जबकोई किसीसे किसी कामके करने को कहता और वह उस समय सोता होता तो वह काम न होता इसी कारण यह रात दिनमें समयको बांटा है॥

दिनोंकी उत्तमता और उनके प्रभावके विषयमें॥

हनफ़िया पंथ अर्थात् हज़रत इब्राहीम खलीलुल्लाह के पंथ में जुम्मा अर्थात् शुक्रका दिन सैयद है और महाशय रसूल अर्थात् महम्मद भी इसीपंथ में थे अबूहुरेरह रसूल की कहीबात है कि सबदिनों से उत्तमदिन वह है कि जिस दिन सूर्य्य उदय हुआ और वहदिन जुम्मा अर्थात् शुक्र का है और इसी दिन हज़रत आदम पैदाहुये थे और इसीदिन वैकुण्ठ में गये और इसी दिन पृथ्वी पर आये और इसीदिन हज़रत आदम की तो बह ईश्वरने मानी और इसी दिन प्रलयहोगी और इसीदिनमें एकऐसीमहूर्त्त है कि उससमय जो कोई मुसलमान जिसविषयमें ईश्वर सेप्रार्थना करै वह मानीजाती है क्योंकि इसदिन मलायका जीवोंका शुभाशुभ कर्म्म देखतेहैं जब देखा कि कोई जुमा की नमाज़ नहींपढ़ता तो वे आपसमें वार्त्ताकरते हैं कि आज इसको कौनसा काम आलगा कि जिस में इसने अपनी बस्तुमाटी में मिलाई फिरकहते हैं कि हे ईश्वर जो यह मनुष्य मारे फ़िक्र के तेरा आराधन नहीं सका तो तू इसको लक्ष्मीपात्र करदे और जोरोगी है तो आरो

करदे और जो वह कोई काममें है तो उससे रोकदे और खेलमें है तो उसके मनको वहां से हटाके अपनी सेवा की ओर लगा किसी २ पुराने आदिमी ने कहा है कि ईश्वरके पास एक ऐसी अपूर्व बस्तु है जो किसीको नहीं देता परंतु जो बृहस्पति को संध्या समय मांगता है उसको देताहै और जोमनुष्य शुक्रवारको नखकटावेगा उसको रोग न होगा इसमाईल ने कहा है कि मैं एकदिन ख़लीफ़ा हारूंन के पास गया उस दिन शुक्रथा तब हारूंन ने पूंछा किशुक्रके दिन नख कटाना सुनअत है(शास्त्रोक्त) और शोचको भी मिटाता है तब इसपै कहा कि हे धर्म्मैष्ठ तू भी फ़िक्रसे डरता है उसने उत्तरदिया कि मुझसे अधिककोई फ़िक्र मन्द न होगा ॥

शनिश्चरवार—इसदिन यहूदी लोगोंकी ईदहुईहै कलबीने कहा है कि हज़रत मूसाने अपने पंथ वालोंसे कहा कि अठवारे में एकदिन ईश्वरके पूजनकेवास्ते मानलो अवश्य है उसदिन और कोई काम न करो उन्होंने शनिश्चरके सिवा और कोई दिननहीं माना कहते हैं कि यह दिन वही है कि जिस दिन ईश्वर संसार को उत्पन्न करके निश्चिन्त हुआ है यहूदी लोगों का यह निश्चय है कि जो कुछ भलाई बुराई शनिश्चरके दिनहो वह दूसरे शनिश्चर तक ऐसी ही रहैगी अर्थात् सब दिन उसीके अनुसार होंगे इसीसे इसदिन लेनेदेने का व्यवहार नहीं करते परन्तु मुसल्मान इसके बिपरीति हैं क्योंकि रसूलखुदानेकहाहै कि सानोंका यह निश्चयहै कि शनिश्चरके दिन वृक्षादि काटना शुभहै ॥

रोज़य कशम्बा—रबिवार—यह दिन अंग्रेज़ोंकी ईद है और उनके मतानुसार अन्तका दिन रबिवारहीहै और इसीदिन ईश्वर ने सृष्टिकी रचनाका आरम्भ कियाहै यह लिखाहै कि ईसाने अपने पंथवालोंसे कहा कि जुम्आ (शुक्र) मानों उन्होंने कहा कि यह तो हमनहीं चाहते कि यहूदियों की ईदके उपरान्त हमारी ईद हो फिर रबिवारको माना और इसीपै आरूढ़ हैं कि सम्पूर्ण कामों के आरम्भके लिये रबिवार अत्यन्त शुभहै ॥

दोशम्बा—सोमबार—यह दिन शुभहै महम्मद साहबने वृहस्पति और इस दिनको पूजा करनेका आरम्भ किया है महम्मद साहबके मतवालोंने इनदोनों दिनों के उत्तमताके बिषय में प्रश्न किया तब कहा कि इसदिन जीवों के शुभा शुभ कर्मोंका हिसाब आसमानपै जाताहै और मैं इसमें प्रसन्नहूं कि मेरे कर्मोंको भी आसमान पर लेजावें और मैं रोज़हसेहूं (ब्रत) हदीस (शास्त्र) मेंलिखाहै कि हज़रत मुस्तफ़ानेइसीदिन जन्मलिया और इसीदिन से आकाशवाणी आनेका आरम्भहुआ और इसीदिन हज़रतमदीना को पधारे और इसी दिन महम्मद साहब बैकुण्ठ बासीभी हुये

सेहशम्बा—मंगल—इसदिनको हजामतबनवाना और स्नान करना ठीकहै और इसीदिन क़ाबीलने हाबीलको बधकियाहै॥

चहारशम्बा—बुध—इसमें क्षेम बहुत कमहै और इस दिनको अशुभ कहते हैं यह कहावतहै कि एक मसखरा से उसके भाईने कहा कि मेरेसाथ एक कामको चलनाहे तब उसने उत्तर दियाकि आजबुध है इसलिये आज के दिन बैठरहना उचितहै तब उसके भाईने कहा किआजके दिनयूनुस जो पैदाहुयेथे तबउसने उत्तरदिया कि हां यहीतो कारणथा कि वैमरगये और उसकी सिद्धाईमिटगई॥ और उनकी आज्ञा भङ्गहोनेलगी और उनको मछली के पेटमें जानापड़ा फिर उसके भाई ने कहा कि अच्छा हज़रत यूसुफ़ ने जो इसीदिन जन्मलिया तब उसने उत्तरदिया कि हां देखोउनकोउनके भाइयोंने कैसे२ कष्टदिये और उनको अकेले क़ैदमें रहनापड़ा फिर उसके भाई ने कहा कि इसीदिन ईश्वर ने हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाहको आकाशवाणीदी तब उसने उत्तरदिया किहां फिर देखो जब तक वे गलख़न नामक अग्निकुण्डमें न गिरे तबतक वह अग्नि कुण्ड शीतल नहींहुआ फिर उसके भाई ने कहा कि इसीदिन को हमारे पैगम्बर हज़रत अलेह उस्सलाम की जयहुई तब उसने कहा फिर देखो जब आंखों से अन्धेहुये दम छुटनेलगा उसीके पीछे मृत्यु ने आयलिया॥

करदे और जो वह कोई काममेंहै तो उससे रोकदे औरखेलमें है तो
उसके मनको वहां से हटाके अपनी सेवा की ओर लगा किसी २
पुराने आदिमी ने कहा है कि ईश्वरके पास एक ऐसी अपूर्व वस्तु है
जो किसीको नहीं देता परंतु जो वृहस्पति को संध्या समय मांगता
है उसको देताहै और जोमनुष्य शुक्रवारको नखकटावेगा उसको
रोग न होगा इसमाईल ने कहा है कि मैं एकदिन ख़लीफ़ा हारू
के पास गया उस दिन शुक्रथा तब हारून ने पूछा किशुक्रके दि
नख कटाना सुनम्रत है(शास्त्रोक्त) और शोचको भी मिटाता है त
इसपै कहा कि हे धर्म्मंष्ठ तू भी फ़िक्रसे डरता है उसने उत्तरदि
कि मुझसे अधिककोई फ़िक्र मन्द न होगा ॥
शनिश्चरवार—इसदिन यहूदी लोगोंकी ईदहुईहै कलबीने कहा है
किहज़रत मूसाने अपने पंथ वालोंसे कहा कि अठवारे में एकदि
ईश्वरके पूजनकेवास्ते मानलो अवश्य है उसदिन और कोई काम न
करो उन्होंने शनिश्चरके सिवा और कोई दिननहीं माना कहते हैं
कि यह दिन वही है कि जिस दिन ईश्वर संसार को उत्पन्न करके
निश्चिन्त हुआ है यहूदी लोगों का यह निश्चय है कि जो कुछ
भलाई बुराई शनिश्चरके दिनहो वह दूसरे शनिश्चर तक ऐसी
ही रहैगी अर्थात् सब दिन उसीके अनुसार होंगे इसीसे इसदिन
लेनेदेने का व्यवहार नहीं करते परन्तु मुसल्मान इसके बिपरीति
हैं क्योंकि रसूलखुदानेकहाहै कि सानोंका यह निश्चयहै कि शनि-
श्चरके दिन वृक्षादि काटना शुभहै ॥
रोज़ेय कशम्बा—रबिवार—यह दिन अंग्रेज़ोंकी ईद है और
उनके मतानुसार अन्तका दिन रबिवारहीहै और इसीदिन ईश्वर
ने सृष्टिकी रचनाका आरम्भ कियाहै यह लिखाहै कि ईसाने अपने
पंथवालोंसे कहा कि जुम्मा (शुक्र) मानों उन्होंने कहा कि यह
तो हमनहीं चाहते कि यहूदियों की ईदके उपरान्त हमारी ईद हो
फिर रबिवारको माना और इसीपै आरुढ़ हैं कि सम्पूर्ण कामों के
आरम्भके लिये रबिवार अत्यन्त शुभहै ॥

दोशम्बा—सोमवार—यह दिन शुभहै महम्मद साहबने बृहस्पति और इस दिनको पूजा करनेका आरम्भ किया है महम्मद साहबके मतवालोंने इनदोनों दिनों के उत्तमताके विषय में प्रश्न किया तब कहा कि इसदिन जीवों के शुभा शुभ कर्मोंका हिसाब आसमानपै जाताहै और मैं इसमें प्रसन्नहूं कि मेरे कर्मोंको भी आसमान पर लेजावें और मैं रोज़हसेहूं (व्रत) हदीस (शास्त्र) में लिखाहै कि हज़रत मुस्तफ़ानेइसीदिन जन्मलिया और इसीदिन से आकाशबाणी आनेका आरम्भहुआ और इसीदिन हज़रतमदीना को पधारे और इसी दिन महम्मद साहब बैकुण्ठ बासीभी हुये

सेहशम्बा—मंगल—इसदिनको हजामतबनवाना और स्नान करना ठीकहै और इसीदिन क़ाबीलने हाबीलको बधकियाहै॥

चहार शम्बा—बुध—इसमें क्षेम बहुत कमहै और इस दिनको अशुभ कहते हैं यह कहावतहै कि एक मसखरा से उसके भाईने कहा कि मेरेसाथ एक कामको चलनाहै तब उसने उत्तर दियाकि आजबुध है इसलिये आज के दिन बैठरहना उचितहै तब उसके भाईने कहा किआजके दिनयूनुस जो पैदाहुयेथे तबउसने उत्तरदिया कि हां यहीतो कारणथा कि वेमरगये और उसकी सिढाईमिटगई॥ और उनकी आज्ञा भङ्गहोनेलगी और उनको मछली के पेटमें जाना पड़ा फिर उसके भाई ने कहा कि अच्छा हज़रत यूसुफ़ ने जो इसीदिन जन्मलिया तब उसने उत्तरदिया कि हां देखोउनकोउनके भाइयोंने कैसे२ कष्टदिये और उनको अकेले क़ैदमें रहनापड़ा फिर उसके भाई ने कहा कि इसीदिन ईश्वर ने हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाहको आकाशबाणीदीतबउसनेउत्तर दिया किहां फिर देखो जब तक वे गलख़न नामक अग्निकुण्डमें न गिरेतबतक वह अग्नि कुण्ड शीतल नहींहुआ फिर उसके भाई ने कहा कि इसीदिन को हमारे पैग़म्बर हज़रत अलेह उस्सलाम की जयहुई तब उसने कहा फिर देखो जब आंखों से अन्धेहुये दम छुटनेलगा उसीके पीछे मृत्यु ने आयलिया॥

(पंजशम्बा-वृहस्पति) यह अतिही शुभदिन है निश्चयकर प्रार्थना और यात्राहेतु जुहरा ने हज़रतसे कहाहै और हदीसमरफ़ूहै (हदीसमरफ़ू का अर्थयहहै कि उसकीश्रेणी अन्ततक चलीगई अर्थात् धर्म्माध्यक्ष तक) कि जो मनुष्य यात्रा करना चाहे वह इस दिन यात्राकरै और इसदिन हजामत बर्जितहै हमदूंबिन इस्माईल ने लिखाहै कि मैंने मातसिमसे सुनाहै और उन्होंने हारूंनसे और उन्होंने महदी से और उन्होंने मंसूर से और उन्होंने अपने माता पिता से और उसके पिता ने अपने पितामा से और उन्होंने इब्न अब्बास से और उन्होंने रसूल मुकर्रम सलल्लिह्ला अलेहेसल्लम वर्णनकियाहै कि जोकोई वृहस्पतिके दिन हजामत अर्थात् पछने लगवावेगा वह तप मेंआके उसीरोग में मरेगा उसने लिखाहै कि मैं मातसिम के पास बहुतदिन पीछेगया और दैवयोग उसदिनगुरुवारथा तो देखाकि वहहजामत बनवारहा था यहदेख मुझे आश्चर्यहुआ तब उसनेकहा कि हमदूं कदाचित् तुझेमेरा पिछला कहा हुआ यादआया है तब मैंनेकहा सत्यहै इसपै उसनेकहा कि ईश्वर जानता है कि मुझे बिस्मरण होगया परन्तु जब बनवाने लगा तब यादआई अन्तको उसीदिन तपआया और उसीतपमें प्राणगये इब्नमालिक कहताहै कि एकबार रसूलसत्यधामने कहा कि मुझसेलोगों ने पूंछा कि कौनबार अच्छाहै तब मैंने कहा कि शनिश्चरका दिन छलकारी है क्योंकि इसीदिन कुरेश ने दारुलमदूह में जाकर छल किया है और रबिवार का दिन वृक्षलगाने और मकान बनाने के लिये उत्तमहै क्योंकि इसीदिन ईश्वर ने सृष्टिकी रचना करी है और सोमबार यात्रा और व्यवपारका दिनहै क्योंकि इसीदिन शईबअलेहुस्सलाम ने यात्राकी और व्योपार से लाभहुआ और मङ्गलवार खूनका दिन है क्योंकि इसी दिन हौवा (प्रधानप्रकृत) अलेहास्सलाम रजस्स्वलाहुई और बुधवार अतिअशुभहै क्योंकि ईश्वरने इसीदिन आदूस नामक जातिका संहार किया है और फिर उनको उसकी सेना सहित नदी में डुबाया है और गुरुबार रणभूमि और

राज सभामें जानेके लिये शुभहै क्योंकि हज़रत ख़लीलुल्लाहइसी दिन बादशाह कियेगयेथे और बड़ीप्रतिष्ठाहुई और शुक्रबारबिवाह के लिये शुभहै क्योंकि बाबा आदम (शिव) का बिवाह हौवा के (पार्वती) साथहुआहै सो यही दिनथा॥

इति

बर्षमें जो रात और दिन उत्तमहैं उनके विषयमें॥

मुहर्रमकी पहिली तारीख इस हेतुसे उत्तमहै कि वह सम्बत्का प्रथम दिनहै और इस महीने का नवां और दशवां दिन हदीस में उत्तम लिखाहै॥ बारहवीं रबीउल अव्वल इसहेतु उत्तम गिनीजाती है कि इसीदिन हज़रत मुस्तफ़ाका जन्महुआ और अव्वलरज्जब इसलिये उत्तमहै कि हिरामके महीनोंमेंसे अव्वलहै और रज्जबकी पन्द्रहवीं हदीसमें उत्तमहै और रमजानकी सत्ताईसवीं और ईदका दिन इसलिये उत्तमहै कि दो ज़खकी आगसे खलासीहुई औरशेष दिनरोजा रखनेके कारण उत्तमहैं और हदीसमें लिखेजाने कारण उत्तमहै और ईदज्जोहा इस कारण उत्तम है कि उसदिन मनुष्य ईश्वरकी दयादानके पाहुनहैं और जुम्मा (शुक्र) पंजशम्बा (गुरुबार) और शम्बा (शनिश्चर) इनका बर्णनहोही चुकाहै तो अब रातोंका बर्णन करतेहैं सो सुनिये मुहर्रम की पहिली और दशवीं रात और रज्जबकी अव्वलरात और शाबानकी पन्द्रहवीं रात और सब रातकी रात और पांचताक़रातें अशरह आख़िर रमज़ान की उत्तम हैं क्योंकि इन्हींसे बेक़दरहैं और सत्ताईसवीं रमज़ानकी रात इसहेतु उत्तमहै कि उसके लिये हदीसहैं और ईदैनकी रातोंके बिषयमें हदीसहै ये थोड़ीसी सायतहैं इनमें क्षेमहैं और ब्योपार के लिये उत्तमहैं बिदितहो कि जो सौदागर अपना समय ब्यर्थखोताहै उसे लाभ नहींहोता॥

महीनोंका वृत्तान्त॥

प्रत्येक देशके मनुष्यों के महीने अलग २ होते हैं जैसे अरब, रूम, फ़ारस, क़ब्त, तुरुक और रंगादि परन्तु प्रसिद्ध महीनेअरब

(पंजशम्बा-वृहस्पति) यहअतिही शुभदिन है निश्चयकर प्रार्थना और यात्राहेतु जुहरा ने हज़रतसे कहाहै और हदीसमरफूहै (हदीसमरफू का अर्थयहहै कि उसकीश्रेणी अन्ततक चलीगई अर्थात् धर्म्माध्यक्ष तक) कि जो मनुष्य यात्रा करना चाहे वह इस दिन यात्राकरै और इसदिन हजामत वर्जितहै हमदूंबिन इस्माईल ने लिखाहै कि मैंने मोतसिमसे सुनाहै और उन्होंने हारूंनसे और उन्होंने महदी से और उन्होंने मंसूर से और उन्होंने अपने माता पिता से और उसके पिता ने अपने पितामा से और उन्होंने इब्न अब्बास से और उन्होंने रसूल मुकर्रम सललिल्ला अलेहे सल्लम वर्णनकियाहै कि जोकोई वृहस्पतिके दिन हजामत अर्थात् पछने लगवावेगा वह तप मेंआके उसीरोग में मरेगा उसने लिखाहै कि मैं मोतसिम के पास बहुतदिन पीछेगया और दैवयोग उसदिनगुरुवारथा तो देखाकि वहहजामत बनवारहा था यहदेख मुझे आश्चर्यहुआ तब उसनेकहा कि हमदूं कदाचित् तुझेमेरा पिछला कहा हुआ यादआया है तब मैंनेकहा सत्यहै इसपै उसनेकहा कि ईश्वर जानता है कि मुझे विस्मरण होगया परन्तु जब बनवाने लगा तब यादआई अन्तको उसीदिन तपआया और उसीतपमें प्राणगये इब्न मालिक कहताहै किएकबार रसूलसत्यधामने कहा कि मुझसेलोगों ने पूंछा कि कौनवार अच्छाहै तब मैंने कहा कि शनिश्चरका दिन छलकारी है क्योंकि इसीदिन कुरेश ने दारुलमदूह में जाकर छल किया है और रविवार का दिन वृक्षलगाने और मकान बनाने के लिये उत्तमहै क्योंकि इसीदिन ईश्वर ने सृष्टिकी रचना करी है और सोमवार यात्रा और व्यवपारका दिनहै क्योंकि इसीदिन शईबअलेहुस्सलाम ने यात्राकी और व्योपार से लाभहुआ और मङ्गलवार खूनका दिन है क्योंकि इसी दिन हौवा (प्रधानप्रकृत) अलेहास्सलाम रजस्स्वलाहुई और बुधवार अतिअशुभहै क्योंकि ईश्वरने इसीदिन आदूस नामक जातिका संहार किया है और फिर उनको उसकी सेना सहित नदी में डुबाया है और गुरुबार रणभूमि और

राज सभामें जानेके लिये शुभहै क्योंकि हज़रत खलीलुल्लाहइसी दिन बादशाह कियेगयेथे और बड़ीप्रतिष्ठाहुई और शुक्रवारविवाह के लिये शुभहै क्योंकि बाबा आदम (शिव) का विवाह होवा (पार्वती) साथहुआहै सो यही दिनथा॥

इति

वर्षमें जो रात और दिन उत्तमहैं उनके विषयमें॥

मुहर्रमकी पहिली तारीख इस हेतुसे उत्तमहै कि वह सम्बत्का प्रथम दिनहै और इस महीने का नवां और दशवां दिन हदीस में उत्तम लिखाहै॥ बारहवीं रबीउल अव्वल इसहेतु उत्तम गिनीजाती है कि इसीदिन हज़रत मुस्तफ़ाका जन्महुआ और अव्वलरज्जब इसलिये उत्तमहै कि हिरामके महीनोंमेंसे अव्वलहै और रज्जबकी पन्द्रहवीं हदीसमें उत्तमहै और रमज़ानकी सत्ताईसवीं और ईदका दिन इसलिये उत्तमहै कि दो जखकी आगसे खलासीहुई औरशेष दिनरोजा रखनेके कारण उत्तमहैं और हदीसमें लिखेजाने कारण उत्तमहैं और ईदज्ज़ोहा इस कारण उत्तम है कि उसदिन मनुष्य ईश्वरकी दयादानके पाहुनहैं और जुम्मा (शुक्र) पंजशम्बा (गुरुवार) और शम्बा (शनिश्वर) इनका बर्णनहोही चुकाहै तो अब रातोंका बर्णन करतेहैं सो सुनिये मुहर्रम की पहिली और दशवीं रात और रज्जबकी अव्वलरात और शाबानकी पन्द्रहवीं रात और सब रातकी रात और पांचताकरातें अशरह आखिर रमज़ान की उत्तम हैं क्योंकि इन्हींसे बेक़दरहैं और सत्ताईसवीं रमज़ानकी रात इसहेतु उत्तमहै कि उसके लिये हदीसहैं और ईदैनकी रातोंके बिषयमें हदीसहैं ये थोड़ीसी सायतेहैं इनमें क्षेमहै और व्योपार के लिये उत्तमहै बिदितहो कि जो सौदागर अपना समय व्यर्थखोताहै उसे लाभ नहींहोता॥

महीनोंका वृत्तान्त॥

प्रत्येक देशके मनुष्यों के महीने अलग २ होते हैं जैसे अरब, रूम, फ़ारस, क़बत, तुरुक और रंगादि परन्तु प्रसिद्ध महीनेअरब

(पंजशम्बा-बृहस्पति) यह अतिही शुभदिन है निश्चयकर प्रार्थना और यात्राहेतु जुहरा ने हजरतसे कहाहै और हदीसमरफूहै (हदीसमरफू का अर्थयहहै कि उसकीश्रेणी अन्ततक चलीगई अर्थात् धर्म्माध्यक्ष तक) कि जो मनुष्य यात्रा करना चाहे वह इस दिन यात्रा करे और इसदिन हजामत वर्जितहै हमदूबिन इस्माईल ने लिखाहै कि मैंने मोतसिमसे सुनाहै और उन्होंने हारूंनसे और उन्होंने महदी से और उन्होंने मंसूर से और उन्होंने अपने माता पिता से और उसके पिता ने अपने पितामा से और उन्होंने इब्न अब्बास से और उन्होंने रसूल मुकर्रम सललिल्ला अलेहे सल्लम से वर्णनकियाहै कि जोकोई बृहस्पतिके दिन हजामत अर्थात् पछने लगवावेगा वह तप मेंआके उसीरोग में मरेगा उसने लिखाहै कि मैं मोतसिम के पास बहुतदिन पीछेगया और दैवयोग उसदिनगुरुवारथा तो देखाकि वहहजामत बनवारहा था यहदेख मुझे आश्चर्यहुआ तब उसनेकहा कि हमदूं कदाचित् तुझेमेरा पिछला कहा हुआ यादआया है तब मैंनेकहा सत्यहै इसपै उसनेकहा कि ईश्वर जानता है कि मुझे बिस्मरण होगया परन्तु जब बनवाने लगा तब यादआई अन्तको उसीदिन तपआया और उसीतपमें प्राणगये इब्न मालिक कहताहै कि एकबार रसूलसत्यधामने कहा कि मुझसेलोगों ने पूंछा कि कौनबार अच्छाहै तब मैंने कहा कि शनिश्चरका दिन छलकारी है क्योंकि इसीदिन कुरेश ने दारुलमदूह में जाकर छल किया है और रबिबार का दिन बृक्षलगाने और मकान बनाने के लिये उत्तमहै क्योंकि इसीदिन ईश्वर ने सृष्टिकी रचना करी है और सोमबार यात्रा और व्यवपारका दिनहै क्योंकि इसीदिन शईबअलेहुस्सलाम ने यात्राकी और व्योपार से लाभहुआ और मङ्गलबार खूनका दिन है क्योंकि इसी दिन हौवा (प्रधानप्रकृत) अलेहास्सलाम रजस्स्वलाहुई और बुधवार अतिअशुभहै क्योंकि ईश्वरने इसीदिन आदूस नामक जातिका संहार किया है और फिर उनको उसकी सेना सहित नदी में डुबाया है और गुरुबार रणभूमि और

राज सभामें जानेके लिये शुभहै क्योंकि हज़रत खलीलुल्लाहइसी दिन बादशाह कियेगयेथे और बड़ीप्रतिष्ठाहुई और शुक्रवारबिवाह के लिये शुभहै क्योंकि बाबा आदम (शिव) का बिवाह होवा के (पार्वती) साथहुआहै सो यही दिनथा॥

इति

वर्षमें जो रात और दिन उत्तमहैं उनके विषयमें॥

मुहर्रमकी पहिली तारीख इस हेतुसे उत्तमहै कि वह सम्बत्का प्रथम दिनहै और इस महीने का नवां और दशवां दिन हदीस में उत्तम लिखाहै॥ बारहवीं रबीउल अव्वल इसहेतु उत्तम गिनीजाती है कि इसी दिन हज़रत मुस्तफ़ाका जन्महुआ और अव्वलरज्जब इसलिये उत्तमहै कि हिरामके महीनोंमेंसे अव्वलहै और रज्जबकी सत्रहवीं हदीसमें उत्तमहै और रमजानकी सत्ताईसवीं और ईदका दिन इसलिये उत्तमहै कि दो ज़खकी आगसे खलासीहुई और शेष दिनरोजा रखनेके कारण उत्तमहैं और हदीसमें लिखेजाने कारण उत्तमहै और ईदज्ज़ोहा इस कारण उत्तम है कि उसदिन मनुष्य ईश्वरकी दयादानके पाहुनहैं और जुम्मा (शुक्र) पंजशम्बा (गुरुवार) और शम्बा (शनिश्चर) इनका बर्णनहोही चुकाहै तो अब रातोंका बर्णन करतेहैं सो सुनिये मुहर्रम की पहिली और दशवीं रात और रज्जबकी अव्वलरात और शाबानकी पन्द्रहवीं रात और सत्र रातकी रात और पांचताक़रातें अशरह आखिर रमज़ान की उत्तम हैं क्योंकि इन्हींसे बेक़दरहैं और सत्ताईसवीं रमज़ानकी रात इसहेतु उत्तमहै कि उसके लिये हदीसहैं और ईदैनकी रातोंके बिषयमें हदीसहैं ये थोड़ीसी सायतेहैं इनमें क्षेमहै और ब्योपार के लिये उत्तमहै बिदितहो कि जो सौदागर अपना समय ब्यर्थखोताहै उसे लाभ नहींहोता॥

महीनोंका वृत्तान्त॥

प्रत्येक देशके मनुष्यों के महीने अलग २ होते हैं जैसे अरब, रूम, फ़ारस, क़िबत, तुरुक और रंगादि परन्तु प्रसिद्ध

और रूम औ फ़ारसके हैं इसलिये इन्हीं की जो प्रसिद्ध भलाई
बुराईहैं उन्हींकासूक्ष्म वर्णन करतेहैं ॥
(अरबी महीनोंका वर्णन) अरबदेशीय उससमय को महीना
कहतेहैं जो दो द्वीजके बीचमें है और प्रत्येक सालमें बारह महीने
होतेहैं और इनके सालके एकसौचौवन दिन होते हैं इसलिये इसी
हिसाबसे कोई महीना तो तीसदिन का और कोई उन्तीस दिनका
होताहै और जोटुकड़े दिनोंके बचतेहैं वेइकट्ठेहोके एकदिन होजाता
है और उसे ज़ी हुलहज्जा के अन्त में बढ़ालेते हैं क़ुरानशरीफ़
इन की पुष्टता लिखीहै और उत्तम महीने चार हैं एक रजब दूसरे
ज़ीक़ाद तीसरे ज़ीहुलहज्जा चौथे मोहर्रम एक केवल रज्जब
अकेलाहै और महीना तो सब मिलेभये हैं एक दूसरे से और इन
महीनों को हिराम कहतेहैं इसहेतु से कि इनमहीनों की पूजा पाठ
का फल अधिक होताहै और इसीप्रकार जो इन महीनों में पाप
करै तो उसकी भी अधिक वृद्धि होतीहै और इन महीनों में अरब
देशीय युद्धादि नहीं करते थे और जोकोई अपने शत्रुकेडरसे भय
भीतहो वह इनमहीनों में उससे निर्भयरहै यहांतक कि जो किसी
के दरवाज़े पर सङ्घात हो और वह घातिक उसके द्वार पर जाय
और उससे मिलै तो भी उससे कोई न बोलै अबमैं प्रत्येक महीना
को सविस्तार वर्णन करता हूं ॥
(महीना मोहर्रम) यह महीना उत्तम और हर्षकाहै और का-
रण इसका यह है कि इन दिनों में युद्धादि करना अयोग्य है इस
महीनेका प्रथमदिन पवित्रहै उसदिन अरबका बादशाह मजलिस
करताहै और लोग आनन्द मनातेहैं जैसे फ़ारस में नौ रोज़ सुल-
तानी होताहै और अजमका बादशाह इसदिनको आनन्द और हर्ष
का दिन जानताहै और मोहर्रम के दशवें दिनको आशोरह कहतेहैं
यहदिन सम्पूर्ण पन्थवालों के निकट उत्तम इसकारण है कि इसी
दिन ईश्वरने हज़रत आदम (शिव) की तो बह (धिक्कार) को
माना और इसीदिन नूहकी नौका जूदापर्वत पर पहुंचके ठहरीऔर

प्रलय मिटी और इसी दिन हज़रतइब्राहीम और मूसा औरईसाको बिलायत अर्थात् धर्म्माध्यक्षकी पदवीमिली और इसीदिनहज़रत इब्राहीम अग्निकुण्डमेंपड़े तो आग शीतलहुई और इसीदिनईश्वरने हज़रत यूसुफ़ की आंखोंको दृष्टिदी और इसीदिन यूसुफ़ बन्दि से निकले औरइसीदिन हज़रत सुलेमानको ख़िलाफ़त का तख़्तमिला औरइसीदिन यूनुसकी जातवालोंका कष्टमिटा और इसीदिन हज़रतएवब का कष्टमिटा और इसीदिन हज़रतज़करिया की प्रार्थना ईश्वर ने सुनी औ हज़रत यहिया अलैहुस्सलाम ने जन्मलिया और इसीदिन हज़रत मूसाकी प्रतिष्ठाहुई कि वृक्षसे प्रकाश दृष्टि आया यह कहावत है कि जब महम्मद साहब मदीना में आये तो देखा कि यहूदीलोग आशोरा के दिन रोज़ा रखतेहैं जब उनसेपूछा कि इसदिन रोज़ा रहने से क्या प्रयोजनहै तब उन्होंने उत्तरदिया कि इसीदिन परमेश्वर ने फ़िराऊन को उसकी सेना सहित जलमें डुबाया और हज़रत मूसाको उसकी सेना सहित बचाया तब हज़रत महम्मद ने कहा कि मैं मूसा से अधिक माननीय और अधिकारी हूं इसपै आज्ञादी कि नित्त आशोरा को रोज़ह रक्खा जावे मुसल्मान इसदिन को बड़ा मानते हैं क्योंकि हुसेन साहब और सम्पूर्ण उनके साथी इसीदिन शहीदहुये अर्थात् अधर्मियों के हाथ से मृत्युको प्राप्तहुये इसीकारण शियालोगों ने इन दिनोंको शोक माना और अहलत सन्नुत, अर्थात् सुन्नीलोग का निश्चय है जो इस दिन सुर्मा लगावें तो एक वर्षतक नेत्रों में ढरका का रोग न होगा औरसत्रहवीं मुहर्रम को असहाब फ़ील कावाके गिरान को आये और ईश्वरने अपनी शक्ति अबाबील(छोटीचिड़िया) को दिया उसने असहाब फ़ीलपर फ़तेह पाई॥

(महीनासफ़र) इसका कारण यहहै कि इसमहीना में लोगोंके घरकेघर खाली होजाते थे और लोग लड़ाईको जाते थे और कोई उससमय में जब महम्मदी धर्म्मका प्रचार नथा इसमहीनेको हिराम कहतेथे और इससमयमें इनमें एकमनुष्य खड़ाहोकर पुकार

ताथा कि तुम्हारे ईश्वर ने सफ़र के महीना को तुमपर हराम किया है इसलिये तुम भी इसको हराम समझो और इसी अनुसार इसको हराम जानतेथे और ये लोग कभीर काम भी करगुजरतेथे और अरबदेशीय मनुष्य शूरवीर होतेहैं जब तीनमहीने लगातार गोशानशीन रहतेथे तो बड़ेकष्ट से बीतते थे गोशानशीन का अर्थ यह है कि एकान्त में बैठ ईश्वर का स्मरण करना॥

सम्पूर्ण प्रजाका निश्चयहै कि इसमहीनामें घरबैठना युद्धादि की अपेक्षा उत्तम है रसूलअल्लाह सल्लेहो सल्लम ने कहा है कि जो कोई मुझे इसका आनन्द देताहै कि महीना सफ़रका बीता तो मैं उसको बैकुण्ठ का आनन्ददेताहूं कहते हैं कि अव्वल सफ़रको ईद नबी अम्बिया की हुई है और हुसेन का शीश दमिश्क में लेगये हैं कहते हैं कि जिससमय एज़ीद बिनमाबिया ने हुसेनका शीशपवित्र देखा तो कहा कि हे ज़ियाद के पुत्र तुझको ईश्वर नष्टकरे जो इस काम को न करता तो भी तो मैं तुझसे प्रसन्नथा और इमामअल ज़ैनुलआबदीन ने इमामहुसेनके बेटेसेकहा कि मैंने आज्ञा नहीं दी॥

बीस तारीख़ महीना सफ़रको इमाम हुसेनकेशीशकोफेरा और चौबीसतारीख़ सफ़र को रसूल अल्लासल्लल्लाह आलेह वस्सल्लाम खोहा में गये और उनकेसाथ अबूबकर थे॥

(महीना रबीउल औवल) इसमहीना को रबीउलऔवल इस कारण कहतेहैं कि लोग इसमहीना में सब काम छोड़ पुण्य दान और ईश्वर के पूजापाठ में लगते हैं और यह महीना अत्योत्तम है क्योंकि इस महीना में ईश्वर ने संसार में मनुष्यों को भलाई का अधिकारी कियाहै इसमहीनेकी आठवीं तारीख़ को हज़रत मदीना को आयेहैं और इसमहीना की बारहवीं को हज़रत ने मौलूदकियाहै और तेरहवींको हुसेन मुख़्तार सकफ़ीसे हुसेनअलेहुस्सलाम बदला लेकर लौटगयेहैं और यह कहावत प्रसिद्ध है॥

(रबीउलऔवल) इसमहीनाकी तीसरीतारीख़ को हज्जाबिनयूसुफ़ने काबामेंआग लगाईहै जब कि अब्दुल्ला बिनज़ेरने उसकोघेराहै॥

(जमादि उल औवल) इन दोनों महीनों को जमाद कहने का यह कारण है कि येजाड़े और बसन्त में होते हैं इस महीना की नवीं तारीख़ को ज़ाफ़रतय्यारका मौलूद हुआ है और पन्द्रहवीं को बड़ा युद्ध हुआ है॥

(महीना जमादिउल आख़िर) पुराने लोगोंका निश्चय है कि इस महीने में महाशोक हुये हैं और इस महीनेकी पहिली तारीख़ को हज़रत रसूल के पास फ़रिश्ते आये हैं और दूसरी तारीख़ को हज़रत अमीरउल मोमिनीन को विलायत अर्थात् धर्म्माध्यक्ष की पदवी मिली॥

(महीना रज्जब) यह ईश्वर का महीना है कहते हैं कि अरब देशीय लोगों ने इस महीने की ताज़ीम (मान) की है और रज्जब के अर्थ हैं—बड़ा—इस महीने को असम अर्थात् बहरा कहते हैं क्योंकि इस महीना में हत्यारों की आवाज़ नहीं सुनते और इस्म अर्थात् बहरा कहने का यह कारण है कि इस महीनाके पापों का दण्ड नहीं मिलता और इस महीने को असब कहते हैं क्योंकि ईश्वर इस महीना में अपनी दयाका मेंह बर्षाता है और ईश्वर अपने जनों पर क्षमा करता है और बहुत सी हदीसों में भी यह महीना सर्वोपरि लिखा है और प्रत्येक हदीस से यह प्रमाण मिलता है कि इस महीनाके पूजादिका फल अधिक होता है इस महीनामें जो मांगो सो ईश्वर देता है जिस समय में लोगमहम्मदी धर्म्म में न थे उस समय जोकोई दुःखी चाहताथा कि दुःखदायी से पलटा लेय तो वह इस रज्जबके महीना तक संतोष करता था और जब वह इस महीने में ईश्वर से प्रार्थना करता था तो वह सुनी जाती थी और इनबातों के सिवाय यहभी है कि इब्न अब्बासने कहा है कि एक दिनमें अमर इब्नुलख़नाब के पास गया तो देखा कि एक वृद्ध अन्धा लँगड़ाएक मनुष्य का हाथ थाँभे हुये आया उस समय अमर ने कहा कि इस अन्धे मनुष्यके सिवा आज तक किसी और को नहीं देखा तबएक मनुष्य वहां वर्त्तमान था उसने कहा कि हे धर्म्माध्यक्ष आपने इस

को नहीं पहिचाना तबअमरने कहा कि मैंने नहीं पहिचाना तब उ
सने उत्तर दिया कि यह सनाय इसलिमीहै जिसको अइयाज़ने शा
पदिया था तब अमरने कहा कि अइयाज़को बुलाओ जब वह आया
तब अमरने कहा कि जोतेरे और सनाके बीच व्यवस्थाहै सो आद्यो-
पांति फिरकह तब उसने इस प्रकार बर्णन किया कि यह दशमनुष्य
थे और मैं इनका चचेड़ा भाई हूं और मेरे पिताके बंशमें मेरे सिवा
कोई और नथा इन्होंने मेरे पिताका सम्पूर्ण धन व वित्तलैलियाऔर
मेरे साथ बड़ी अनीति करी तब मैंने इनसे बात नकी और ईश्वर का
स्मर्ण किया और मैंने इनकी बहुतसी आधीनताकी परंतु इन्होंनेएक
कान नहीं करी और इनके चित्तमें कुछभी दया नहीं आई तब मैंने
महीना रज्जब तक संतोष किया जब रज्जबका महीना आया तब
मैं ऊपरकी ओर हाथउठाके परमेश्वरसे प्रार्थनाकी सो इसके नौआ-
दिमी थे सो उसी बर्षके भीतर क्रम २ से मृत्युको प्राप्तहुए और यह
एक रह गया सो अन्धा और लँगड़ा होगया जैसा कि आपकी दृ
गोचरमें वर्त्तमान है इसप्रकार इसके हाथ पकरके खैंचते हैं तबअ
मरने कहा कि ईश्वर अमलहै और यह एक अपूर्व बात है कि रज्ज
को पहिली तारीख़को हज़रतनूहनौकारूढ़हुए और इसी महीना क
चौथी तारीखको सफ़ीलोगोंमें युद्धहुआ जिसका नाम जंग सफ़ैन
और इसमहीनाकी पन्द्रहवींको हज़रतदाऊद मरे लिखाहै कि इ
महीनाकी सत्ताईसवींको ईश्वरकी दयादृष्टिसे संसार सुखी हुआ औ
सत्ताईस रज्जबको हज़रत आसमानको गए ॥

(शावान)इसको शावान कहनेका यह कारण है कि इस दिनको
सबलोग एकठौर पै इकट्ठे होते हैं और इस महीनाको शहरनवीअ-
ल्लाहभी कहतेहैं जैसा कि हदीसमें लिखा है कि शावान हमारामही-
ना है और शबरात उसकी हमारी रातहै हज़रत रसूलसललिल्लाह
अलैहुस्सलमकी कहावत है कि ईश्वर जीवोंके पापों को क्षमा करता
है परन्तु जो मनुष्य अपने भाईका शत्रुहै अथवा नास्तिक है उस
के पापों की क्षमा नहीं होती और कोई २ कहते हैं कि शावानकी

अर्द्धरात्री पवित्रहै और हज़रत आयशा की कहावत है कि ईश्वर अपने जनोंके पापोंको शाबानकी अर्द्ध रात्रीभर क्षमा करता है और तेरहवीं शाबानको क़िबलाकी जगह का वह नियत हुआ ॥

रमज़ान—इसको रमज़ान इस कारण कहते हैं कि उस समयसो दिश जुकी सखतीको मसादिक है और मसादिकके अर्थ मिलने के हैं और किसी २ ने इसका कारण यों लिखा है कि इस दिन पापकी क्षयहोती है और हज़रतरसूलने कहा है कि रमज़ान हमारे पंथका महीना है और इस दिन उनके पाप मिटजाते हैं और अबीज़र ग़फ़ारीकी कहावत है कि सहीफ़ाइब्राहीम के लिये आया तीसरी रमज़ान की रातको और रमज़ानकी चौबीसवींको फ़ुर्क़ानमजीद हज़रत महम्मद मुस्तफ़ाको मिला और अठारहवीं रमज़ान की रातको हज़रत दाऊदको ज़बूर मिला और तेरहवीं रमज़ानको हज़रतईसा की इंजील मिली इन्सविन मालिकने लिखा है कि यह हज़रत महम्मद रसूलअल्लाहकी यह कहावत है कि पहिली रात्रीको रमज़ानके महीनामें ईश्वर बैकुण्ठके खज़ांचीरज़वांको आज्ञा देता है कि बैकुण्ठका दरवाज़ा खोलकर इसको सुधार जिसमें महम्मदके धर्म वाले मनुष्य जो रोजा रखतेहैं यहां आवेंगे और जबतकरमज़ानका महीना का अंतनहो तब तक द्वार बैकुण्ठका बन्द न करना और यमराज से कहदेता है कि नर्कका द्वार बन्द करदे महम्मदी धर्मवालोंके लिये जब तक रमज़ानका महीना पूरा नहो तब तक नर्क का द्वार नखोलना तिस उपरांत जिबरईल आलेहुस्सलाम को आज्ञा देता है कि तुम पृथ्वीपर जाकर शैतानोंके पैरों में बेड़ी और गलों में तौक़ डाल दो जिस में वे महम्मदी धर्म वालोंके रोज़ा न भ्रष्ट करने पावें और रोज़ादार लोग आनन्दसे निःकण्टक अपने २ रोज़ा खोलें ईश्वर नित्त रमज़ानके महीनामें नर्कीजीवोंको छोड़ताहै ॥ अब्दुल्लाइब्नअब्बास की कहावत है कि रसूलअल्लाह ने कहा कि एक वर्ष से दूसरे वर्ष तक सम्पूर्ण बैकुण्ठ इस कारण सुधारा जाता है कि जिसमें रमज़ान केमहीनेके रोज़ा रखनेवाले लोग इस में आवें और रमज़ान

की रातों को एकप्रकारकी वायु ईश्वर के स्थानके नीचेसे ऐसी च
लती है किजिस से सम्पूर्ण वृक्ष गहगहा उठतेहैं और उन वृक्षों
अति रसाल मनहरन शब्द सुनाई देते हैं और बरांगणाखड़ीहोक
रजवां से पूछती हैं कि आज क्या आनन्द है तब रजवां (बैकुण्ठ
का कोषाध्यक्ष) कहताहै कि हे परम सुन्दरियो आज रमज़ानकी
पहिली रातहै सो ईश्वर ने आज्ञादीहै कि नर्कके द्वार बन्द करादिये
जांय और बैकुण्ठके द्वार खोलनेकी आज्ञादीहै ईश्वर नित्त रमज़ान
की रात्री को रोज़ा खोलने के समय एक २ हज़ार नर्की जीवों के
अपराध क्षमा करके छोड़ता है और अन्त रमज़ान के दिन इतने
पापियों को छोड़ता है कि जिनकी संख्या सम्पूर्ण महीने पापियों
की बराबर होतीहै इब्न अब्बास ने लिखाहै कि इसी महीना में
शबे क़दर भी होतीहै सो उसदिन जितना बर्षका पाप पुण्य और
अन्नादि पदार्थोंका हिसाब होता है वह इसीरात को लिखाजाताहै
यहरात अति शुभहै जाय ज़हज़रतरसूलकी कहावत को कहता है
कि उन्होंने कहा कि मैं शबेक़दर को रमज़ान के दशदिन अन्त
भूलगया यहरात अति सुन्दर है कि नतो गरमहै और नतो शर्द
दायम हज़रत रसूलकी कहावत कहताहै कि हज़रतने कहा है
शबेक़दर को रमज़ान की सत्रहवीं और इक्कीसवीं और तेइसवीं
बुलाओ बस तिस उपरान्त हज़रत पैग़म्बर तो चुपहोरहे अबी वि
कावने कहा है कि रमज़ानकी सत्ताईसवीं तारीख़ को शबक़दर
और कहतेहैं कि उसरात को सूर्य्य थाल के समान उदय होता
और उसमें किरण नहीं होतीं और कोई२ कहताहै कि सूरे लील
तुल क़दर के औवल से शबेक़दर है अन्तको सत्ताईसवींतारीख़ही
ठीक रक्खीगई और सातवींको माम ख़लीफ़ा ने हरित बस्त्र धार-
णकिये और उन्नीसवीं को हज़रत रसूल ख़ुदा ने मक्कापर जयपाई
और पच्चीसवीं को अब्बासिया का न्योता ख़ुरासान में हुआ और
सत्ताईसवीं को सैदुल मुर्सलैन सलिल्ला आलैहेसल्लम की सहा-
यता को फ़रिश्ते आये ॥

महीना शौव्वाल-इसका कारण यों कहते हैं कि रवि के समय ऊंट अपनी पूछको चाटता है और बीसवीं शौव्वाल कीरात को ईदहै इब्न अब्बास कहताहै कि ईश्वर आज्ञा देताहै जिबरईल को कि तुम फित्न की रात को फरिश्ते लेकर पृथ्वी पर जाओ वे आकर महम्मदी धर्मवालों को आशीर्वाद देते हैं और जो कोई सधर्म नमाज़ अथवा ईश्वरका आराधन करताहै उसकी संगतिरात भर करतेहैं और उसको आशीर्वाद देतेहैं और जिबरईल पुकारते हैं अलरहील अलरहील तब फरिश्ते पूछते हैं कि हे जिबरईल ईश्वरने सधर्मों के साथ क्या किया तब जिबरईल कहते हैं कि आज़की रात को ईश्वर ने इनके ऊपर दया दृष्टिकी और इनपर क्षमा की तब उस के प्रातःकाल को फरिश्तों का झुण्ड आकर कहता है कि हे महम्मदी धर्मवालो बाहिर निकलो जिस्में ईश्वर तुम्हारे ऊपर क्षमाकरे तोजब वे नमाज पढ़ने हेतु बाहिर निकलते हैं तो ईश्वर उनकी नमाज़गाह अर्थात् पूजनकी ठौर पर कहता है कि हे मेरे दासो आज तुम अपनी अभिलाषा मेरे सामने प्रगटकरो मैं सत्यधाम सत्य २ कहताहूं और प्रतिज्ञा करताहूं कि जो तुम्हारी अभिलाषा होगी चाहे वह स्वारथ हो चाहे परमार्थ तत्काल सब पूरी करूंगा और वह बचन इसकारणसे है कि उस दिन ईश्वर अपनी दयाकी दृष्टि करता है और इसी कारण उस दिन का नाम रोज़ रहमत है इसी दिन ईश्वरने हज़रत जिबरईलको आकाशबानी पृथ्वीपर पहुंचानेकी सेवादी और इसीदिन नहलपर वही अर्थात् आकाशबानी हुई और चौथीशौव्वालको शहीद होनेकी इच्छा से हज़रत महम्मदसल्लल्लिाह अलैहोसल्लम नसारा अर्थात् ईसाई लोगोंके सन्मुख युद्धको चले और बीसवीं शव्वालको हज़रत यूनुस मछलीके पेटमें गये और पच्चीसवीं शौव्वालसे अंत तक यह महीना अशुभ है इन्हीं दिनोंमें ईश्वर ने आदनामक जात का संहार किया और महा महा अंधकार पृथ्वी में उत्पन्नहुये जिस वायु और मेघसे उन लोगोंका स्वरूप मुर्दा बालोंकासा होगया था॥

महीनाज़ीक़ाद—इस महीने को ज़ीक़ाद कहनेका यह कारण है कि इस महीनामें अरबदेशीय युद्ध नहीं करते थे किन्तु अपनेऽघरों में बैठे रहा करते थे क्योंकि यह महीना औवल माहहराम है औवल माह ज़ीक़ाद को ईश्वरने हज़रत मूसाको दर्शन देनेकहे और चौथी तारीखको असहाबकहफ़ और पांचवींको इब्राहीम और हज़रतइस माईलने काबाकी नींवदी सातवींको हज़रतमूसाके हेतु नदी सूख गई और चौदहवींको हज़रतयूनुस मछलीके पेटसे बाहिर आये औ उन्नीसवींकोईश्वरनेहज़रतयूनुसके लिये कदूका वृक्ष उत्पन्नकिया

महीना ज़ुलहिज्ज—इस महीना को ज़ुलहिज्ज कहनेका य कारणहै कि अरबदेशीय मनुष्यों ने जाहिलियत के समय अर्थात् जबकोई धर्म न था हज्ज कियाथा इसमहीना के प्रथम दशदि मालूमात के हैं और ईश्वर इनको बहुत प्रसन्न करताहै इसमहीन की दूसरी तारीख को जनाब अमीर और बीबी फ़ातमाका बिवाह हुआ और इसमहीने की आठवीं को रात तरविया है और उसका यहहेतुहै कि उसदिन मक्का मसजितुल हराम में पानी भरा कर ते थे जाहिलियत और मुसल्मानी धर्मों दोनों के समय में प्रलय तक उसपानी को देताहै और हज्जाज़को नवीं तारीखअर्फ़ा है इस हेतुसेकि इसदिन एक दूसरेको पहिचानते हैं और यहभी कहते हैं कि इसीदिन हज़रत जिबरईल ने हज़रत खलीलुल्लाह को हज्ज करनेकी शिक्षाकीहै और इस महीनाकी दशवींको नहरफ़ी अब्दु लज़ही का दिन है और इसी दिन औज ने हज़रत इसमाईल को सौगात भेजी और नहरके तीनके तीन दिनको तशरीक़ इसकारण कहते हैं कि इसदिन कुर्बानी अर्थात् बलिप्रदानका मांस बांटागया है इन तीनमें और अट्ठारहवीं को ग़दीर अर्थात् ताल खम हुआ है और तेईसवीं को हज़रत अमीरुलममिनीन नमाज़के समय बैकुंठ को पधारे और छब्बीसवीं को हज़रतदाउद ने अपने अपराधों की क्षमा मांगी॥

इति

इन महीनों का प्रथम दिन जानने के लिये एक चक्र बनाया है जिससे उसके जाननेमें अतिही सरलता होगी और इसके जानने की यह रीतिहै कि जब कोई जानना चाहै तब सन् लिखकर उसमें से हिजरीसन् निकाललेय और उसपै चार अधिक करके आठआठ करै और उस महीनासे चारचार करके गिनवाजावे तो वही महीना की संख्याहोगी सोई पहिला दिन होगा और भागके उपरान्त आठ शेष बचैं तो उनको छोड़देय जो अन्तकी संख्या है सोई महीना है चक्र यह है जो लिखाजाता है ॥

तसवीर नम्बर १७६

इमामसादिक ने कहाहै कि जब तुमको रमज़ानका प्रथम दिन जाननाहो तब तुम्हें उचित होगा कि जिसदिन तुमने बीतेसाल में रोजह रक्खा था उसके पांचवें दिन जानो कि वर्त्तमान साल का पहिला महीनाहोगा बहुतेरे गणितकारोंने इसइस रीतिकी परीक्षा लीहै सो पचास वर्षतक ठीक आईहै ॥

व्याख्यान—रूमी महीनोंके विषयमें ॥

इन महीनों में दिनों की संख्या एकसी नहींहोती किन्तु कमती बढ़ती होतीहै यूनानके वैद्योंका यह सिद्धान्तहै कि महीना सूर्य्यकी चालानुसार होतेहैं और उसका ब्योरा यहहै कि तीन महीनाउपरान्त सूर्य्यकी चाल बदल जातीहै इसलिये कुछ महीना तो उसके अनुसार होतेहैं और कुछ दूसरीरीतिसे इसीकारण कोईमहीना तो तीस दिनका और कोई इकतीस दिन का और कोई अट्ठाईस दिन का होताहै इसलिये जो महीना जितनेदिनोंका होनाचाहिये उसी संख्या पर नियत कियाहै और सम्पूर्ण दिवस एक वर्ष में तीनसौ साठ होतेहैं और इसके सिवाय वर्षमें पांचदिन और मिलातेहैं और महीना इसरीतिसे नियत किये हैं नशरीउल औवल,१ नशरीउल आख़िर,२ कानूनउल औवल ३, कानूनउल आख़िर,४ शवात ५ आज़ार,६ नैसां,७ अयार,८ ख़रीज़ां,९ तमूज़,१० आब,११ एलूल,१२ एक अरबदेशीय कविने बारहों महीनों के नाम दोचैत

इकट्ठे कियेहैं सो उनदोनों बैतोंका अर्थ यहहै कि नशरीउलसानी और ऐलवल२ और नैसां३ और ख़रीज़ां ये चारमहीना ते। तीस दिनके होते हैं और शबात अट्ठाईस दिनका और शेष इकतीस दिनके होतेहैं (नशरीउलऔवल) यह महीना ३१ दिनकाहै इ महीनाकी पहिली तारीख में तहरीकसवा है और तीसरे दिनदबी रुहाव और चौथी में असहाब कहफ़ का बर्णन है और पांचवीं काबा (यमन धर्म्मस्थली) के निकट तसामा बैतुलमुक़द्दस है वह आसमानसे आगआतीहै तबसे वहां शमाज लाईजाती है सातवीं कोई तवारीक है और नवीं में हज़रत ख़लीलुल्लाह का बर्णनहै और दशवींमें हज़रत ख़लीलुल्लाह अपने पुत्रको बलिप्रदानके लिये लाये हैं और तेरहवीं तारीख को दरिया बढ़ती है और पन्द्रहवीं को सरदीहोतीहै और आंधी ऐसेबेगसे आतीहै कि वृक्ष जरमूलसेउखड़ जातेहैं और जो उसदिन वृक्ष से लकड़ी काटै तो वह घुनती नहीं और टेढ़ीभी नहींहोती और अट्ठारहवींमें नील नदी घटतीजाती है और इक्कीसवीं को ईश्वर नदीकिनारे फिरती है और चौबीसवीं को लोग कोठोंसे घरोंमें आते हैं और छब्बीसवींको ज़करियाके पुत्रका शीश कबुरमें धरागयाहै और अट्ठाईसवींको जाड़ेका आरम्भ होता है और दार दिखानेका मौसम जातारहताहै और तीसवींको बोहदाद और खतातीब और रहम आदि पक्षीपृथ्वीपर बास करतेहैं॥

इति

(नशरीउलसानी) यह महीना ३० दिनका होता है इसके पहिले दिन दक्षिणकी बायु बड़े बेगसे चलती है और दूसरे दिन के प्रथम भागमें मेघ बर्षता है और पांचवींको मांसाहारी दुःखदायी जीव अपनी भाठिमें जा छिपतेहैं और सातवींको शामदेशमें जैतून चुनतेहैं और मेघोंका अधिकत्व होताहै और नदीमारे लह किडग मगाने लगतीहै और नावोंका आनाजाना बन्दहोता है और आठ को भी नदीबाढ़ही पर रहतीहै नवींको प्रथमबार आता है तेरहवं को फ़ारसका दरिया बढ़ने लगताहै जो उसदिन कोई वृक्षकोका

उसमें घुन न लगेगा सत्तरहवीं को सोननाम मेला होताहै और
ह चालीस दिनतक रहता है बीसवींमें बिनहड्डी के जीव मरजाते
और बाईसवींकी रातको ठण्डापानी पीना बर्जित है तीसवीं को
वत में जैतून चुनाजाता है और अट्ठाईसवीं को अत्यन्त कराल
हरें दरियामें उठती हैं॥

(कानूनउल औवल) यह महीना इकतीस दिनका होताहै
हिले दिन दामिशक़में बाज़ार लगाई जातीहै और पानकी डारें
ोतेहैं और बारहवींको अरूनकी बाज़ार होतीहै और चौदहवींको
ौवल अरबातियात है और सत्तरहवीं में गोमांस और नींबूका
ाना और सोनेके उपरान्त जलपीना और हजामत बनवाना और
नूरा अर्थात् बारसफ़ा का लगाना बर्जित है और इनको मैलाद
अकबर कहतेहैं और इसके अर्थ इन किलाय अर्थात् उलट पलट
केहैं और इसदिन नूरहदनुक़सानसे बाहिरआताहै और अधिकत्व
की सीमा से बढ़जाता है और उस जो आदमीका है सो प्रकट
होताहै और जिनोंकी शक्ति कमहोतीहै और नाशको प्राप्तहोते हैं
और उन्नीसवीं को रात बढ़तीहै और दिन घटताहै और इक्कीसवीं
को दानियाल पैगम्बर का वर्णन है और तेईसवीं को नीलनामक
नदी बढ़ती है और वृक्षों के पत्ते और ओस गिरने लगती है और
पच्चीसवीं को ईसा मरियम के बेटाका जन्म हुआहै और छब्बीस-
वीं में हज़रत दाऊद और हज़रत याकूब का वर्णनहै और उन्तीस-
वीं को सोने के उपरान्त पानी पीना बर्जित है क्योंकि उस समय
जिनलोग पानी में वान्तकरतेहैं इसलिये जो मनुष्य उससमयपानी
पीता है उस की बुद्धि नष्ट होती है और यहदशा बायुजल को
ख़राब करती है और ठण्डा पानी पीना शरीर की शक्तिवाली गर्मी
को मिटाता है॥

(क़ानून उलसानी) यह महीना इकतीसदिन का होताहै इ-
सकी पहिली तारीख़में वर्षाकी आशा होती है और इसमहीने में
शाम देशीय अग्नि प्रचण्ड करतेहैं जैसा कि ईसाई लोग निश्चय

के अखज़ा किया शहर के निवासी वह शहर ईसाइयों का है दूसरा दिन गीली लकड़ी काटने का है और छठांदिन बलिप्रदान का है लोग कहतेहैं कि इसदिन में एक ऐसा मुहूर्त है कि जिसमें खारीपानी मीठा होजाताहै और दशवींको रोज़ा का दिन है और सत्रहवीं को फ़ारस के शहरों में जाड़ाहोने लगताहै चौबीसवीं को हज़रत बीबीका रोज़ाहै इसदिन से हरियाली फैलती है और पक्षी प्रसन्न होकर शीघ्र उड़ते हैं पच्चीसवीं को रुई और खरबूज़ा बोये जाते हैं और दूसरे खण्ड में वृक्ष लगाये जाते हैं और मिश्र में अंगूर बोयेजाते हैं और ऊंटको ऊंटनीपर छोड़ते हैं ॥

(शबात) यह महीना अट्ठाईस दिनका होताहै इसकी सातवीं तारीख़ को हमीरा अदना गिरता है और तेरहवींको वृक्षोंसे पानी जारीहोकर नीचेसे ऊपरको जाताहै और चौदहवींको औसत हमीरा भी गिरजाता है और पन्द्रहवीं को खीरा ककरी बोई जातीहैं औ जंगली पशुओं के बच्चे होतेहैं और पक्षी बोलतेहैं और परस्तूर प्र कट होताहै और मकरियां अण्डे देती हैं और गुलाब और चमे और नरगिस बोईजाती है और अंगूर के वृक्षों में पत्ते निकलते और चरागाह में घास अधिक होतीहै और देशमें नानाप्रकार व वायु चलतीहै और अंगूरके समयमें वर्षाहोती है और शाम के दे में कमात पैदा होतीहै ॥

बीसवींको मक्खी और मच्छड़ उड़ने लगतेहैं इक्कीसवींको ती सरे हमीरा का असोठोता है इन हमीरों के अस्तका यह अर्थहै कि अगले दिनों में आतिश परस्त अर्थात् अग्निहोत्र लोगथे वे लोग जाड़ेकेदिनों में तीनमकान छिपेहुयेबनाते थे सो कोई एकइनमकानों में से एक दूसरे की परिधि होतीथे सो उनघरोंमें बाहिरी खण्ड में ऊंट, घोड़ा, बैल आदि रहतेथे और दूसरेखण्डमें बकरी और तीसरे में आप रहाकरतेथे और कोयला अग्नि के कारण सदैवरक्खे रहते थे सातवींको बड़ेजीवों को जंगलकी वायु खवातेथे और छोटे जीवों को उनकीठौर पर लातेथे और आपइन छोटेजीवों की ठौर आते थे

इसलिये जब हमीरा बीतगया तब छोटे जानवरों को बड़े जीवोंकी ठौरलातेथे और जब हमीरा दूमराबीता इसीप्रकार दूसरे अठवारे में आपही जंगलमें जाकर अग्निप्रचण्ड करतेथे क्योंकि बायु ठीक चलने लगतीहै इन्हींको हमीरा कहतेहैं निदान तीनों हमीरा बीत जातेहैं इक्कीसवीं को बायुगर्म चलती है पृथ्वी तपने लगती है और अंगूरों के वृक्ष लगाये जाते हैं छब्बीसवीं को अइयामुलमख़ूर है यह सातदिन तक रहतेहैं इसमें से तीनदिन तो शवात महीना के और चार दिन आज़ार के शवात के अट्ठाईस दिन हैं और प्रत्येक दिनका एकनामहै इसलिये अमरअजोज़ के थोड़ेसे नामहैं कि जिन में सरदी होतीहै और आंधी और विपरीत बायु चलाकरती है बहुत मनुष्यों का निश्चय है कि आंधी और बायु का चलना समय की स्वाभाविक रीतिहै क्योंकि जब अजोज़के दिनआतेहैं तो बायुआदि का चलना अवश्य होता है जिससे संसार में जाड़ाहो और आंधी आदिचले क्योंकि ऐसा कभी नहीं होता कि शीतऋतु में बायु चले और किसीमें न चले क्योंकि जिमिस्तान में अधिक सरदी होती है जैसे गर्मी के अन्तमें गर्मी अधिक होतीहै और ऋतुके अन्तमें ऐसी सरदी होती है कि दीपक की गर्मी मिटजाती है तो काजल कड़ा होजाता है ॥

(आज़ार औवल) इसमहीना के समयमें टीड़ी और मक्खियां अधिक निकलती हैं और अजोज़ में से चौथा समय है और कोई २ जौजके चिह्न इसप्रकार से लिखते हैं कि उसदिन ईश्वर ने आद नामक जातिका संहारकियाहै और उससमय एक अजोज़ अर्थात् वृद्ध स्त्री बचगई थी वह उस समय अपने सजातीयलोगों के लिये बिलाप करती थी इसीकारण इन दिनों को अजोज़ कहते हैं सा- तवीं को बायु बेगसे चलती है और बारहवीं को हज़ामत करते हैं (हज़ामत) यहशब्द अरबी है उसदेशमें इसका अर्थ पछने काहै परन्तु आर्य्य लोगों ने इसशब्द का अर्थ बाल काटने कटवाने का कियाहै और आर्य्यलोगों में मुसल्मानोंकी भी

है क्योंकि आर्य्योंको यहशब्द उन्हीं से मिला—तेरहवीं को गिद्ध ऊपर आकाश के प्रकट होते हैं और सोलहवीं को सर्पों की आंखें खुलतीहैं क्योंकि सर्प्प जाड़ेकेमारे पृथ्वीमें जाबसते हैं इससे उनके नेत्र अन्धे होजातेहैं और अठारहवीं को दिनरात बराबर होजाती है और वहां अजम का प्रथम दिनहै और नदीका पानी जमजाता है क्योंकि सूर्य्य अपनी शक्तिको खींचलेता है कोई२ कहते हैं जो मनुष्य अक़ीम अर्थात् बांझ हो और इसरात को सरव के वृक्ष को देखके अपनी स्त्री के साथ रतिकरै तो निस्सन्देह उसकी स्त्रीगर्भिणी होजायगी और इसीरात्रि को काम कृशानु बढ़ावनहारी वायु चलती है तिसकारण पुरुषों को स्त्री की अधिक अभिलाष है ती इसी दिनगेहूं में बाली पैदाहोतीहै और सम्पूर्ण वृक्ष हरेभरे होजा हैं और कोकनार और अंगूरों की खेतीहोती है और बादाम औ आलूबुख़ारा के ऊपर छिलका पैदाहोता है और नदी में घड़ियाल डरताहै पचीसवीं को नदी में बाढ़होती है और उस दिन ईदनार होतीहै (ईदनार उसदिन को कहते हैं जिसदिन हज़रत ईसामसी कीमाता मरियम को ईसामसी का गर्भ में आना मालूम हुआ)

(नैसां) यह महीना इकतीस दिनका होता है इस महीना के प्रथम दिन बर्षा की आशा होती है चौथा दिन इसका सानीत का है चौदहवीं को ईसाई लोगों का ईदुलफितर होता है अट्ठारहवीं को हाथमें लोहा लेना अच्छा है बीसवींको पुरवाई बड़े वेगसे चलती है और पक्षी प्रसन्न चित्त दृष्टि आते हैं इक्कीसवीं को फ़लमतैनशहर में एक प्रसिद्ध बाज़ार लगती है और मनुष्य बहुत इकट्ठे होते हैं बाईसवीं को दक्षिणी वायु वेगसे चलती है और जंगल हरा होनेके कारण चित्त प्रसन्नहोता है और तेईसवींको हज़रत ऐअब की क़बुर पै मेला होता है और सत्ताईसवींको फ़ात नामक नदीकी बाढ़ बन्द होजाती है और अट्ठाईसवींको रक्त शरीर में फिरता है और वृक्षों पर मेवा फलता है और बादाम नया पैदा होता है॥

(अयाज़) यह महीना इकतीस दिनका होता है इसका प्रथम

दिन आरमियां पैगम्बर के दर्शनों का है दूसरी तारीख़ को लोखड़ी अपने बिलोंमें जाती हैं जंगल में बहुत कम निकलती हैं छठवीं को हज़रत ऐबवकी ज़ियारत होती है सातवीं को ईदसलीब होती है नवींको हज़रत शईबकी ज्यारत होती है पंदरहवीं को ईद सम्पूर्ण मसजिदोंकी है सोलहवींमें नसीम वायु (प्रातःकालकी वायु) जिस को अमृत वेला कहते हैं चलती है और कुमात काटा जाता है जो जलमें पंथ चलने के लिये शुभ होता है और इसी तारीख़को हज़-रत ज़करियाकी ज्यारत होतीहै और तेईसवींको हज़रत शमूऊनकी ज्यारत होती है और चौबीसवींको महामारी दूर होती है और दे-हातमें खेती काटी जाती है लू चलती है और अंगूर काला होता है और मिश्रकी नील नामक नदी बढ़ती है औ पानीके पंथ के लिये उत्तम है पच्चीसवीं को ईदगुल सम्बुल होती यह सम्बुल दूसरे प्र-कार का फूल है उन्तीसवीं को शम्बा क़यामत और इकतीसवीं को शकुन चीनका दिन है॥

(ख़रीज़ां) यह महीना तीस दिनका होता है इसकी प्रथम ता-रीख़को हज़रत हक़ील पैगम्बरकी ज्यारत है ग्यारहवीं को नोरोज़ खलफ़ाय बग़दाद का है सोलहवींको नीलनदीका पानी बढ़के चा-रों ओरको निकल जाता है अट्ठाईसवींको दिन बढ़ता है और रात घटती है इसको इनफिलावसैफी कहते हैं बाईसवींको ख़रीज़ां, अं-जीर, और अंगूर फलते हैं और मर्गी होतीहै खेत काटेजाते हैं और हज़रत ज़करियाके बेटा यहियाका जन्म हुआ है इस दिन बड़ी लू चलती है और हैजून नामक नदी बढ़ती है और अट्ठाईसवीं को व वारहका अन्त दिन है और उन्तीसवींको असहाव तजुरवा परीक्षा लेतेहैं कि जो इसदिन ओसअधिकगिरै तो जानलेंगे कि नीलनाम नदी बढ़ैगी और जो कमती गिरै तो जान लेंगे कि नहीं बढ़ैगी॥

(तमूज़) यह महीना यकतीस दिनका होता है इस महीनाकी पांचवीं तारीख़ को शारी नामक तारा उदय होता है उसके उदय होनेके पहिले किसान लोग एक तख़्तापर सात दिन तक गेहूं -

उर्द आदि अन्न बोते हैं और उसके उदय की रात्री को उस तख़ती को ऊंचेपर धरतेहैं सवेरेके समय उस तख़्ती को देखते हैं जो उसमें वह अन्नजमा तबतो जानतेहैं कि अबकी सालकिसानी अच्छीहोगी और जो नजमा तो उसके विपरीत मान लेते हैं और महम्मदी धर्मके पहिले आतिश परस्त अर्थात् अग्निहोत्र लोग ऐसाही किया करते थे सातवीं तारीख़ को टीड़ीकी मृत्यु आती है दशवीं को बसरा नामक शहर की बाज़ार लगती है अट्ठारहवीं को बाहूर नाम के दिनहैं ये सात दिनहैं इनमें सरदी और गर्मी का विचार किया करते हैं चौबीसवींको गर्मी अधिक होती है बायु गर्म चलती है महामारी जो होय तो मिटजातीहै आंखों में पीड़ा होतीहै और ज्वा और गाजर बोते हैं पच्चीसवीं को अधिक गर्मी होनेके कारण रा करना बर्जित है सत्ताईसवीं को छुहारे और अंगूर तोड़ते हैं औ नदी बढ़ती है ऊख काटते हैं मेवा पकजाते हैं तीसवीं को मरिय ईसामसीकी माताकी ईद होती है॥

(आव) यह महीना इकतीस दिनका होताहै इसके पहिलेदि से पन्दरहवीं तारीख़ तक मरियम के मरनेके रोज़ह रखतेहैं तीसरे को ईसामसी की ज्यारत है चौथी को पन्द्रह दिन तक हज़रत इलियास पैगम्बरकी ज्यारतहै पांचवींमें हज़रत मूसाकी ज्यारत है औ छठीको ईदतजल्लीहै नवींको नानाप्रकार की बायु वेगसे चलती है दशवींको अमाकी बाज़ार लगतीहै बारहवीं को बायु अच्छी चलने लगती है पन्दरहवीं को मरियम की ईदज्यारत है सत्तरहवीं को दूसरी ईदतजल्ली है अट्ठारहवीं को बायु वेगसे चलती है और अनार अधिक उत्पन्न होता है बीसवीं के अन्त में बिषकी बायु चलती है बाईसवींको गर्मी कम होजातीहै छब्बीसवीं को आंखोंमें पीड़ा होती है सत्ताईसवीं को हज़रत यहियाकी माता और ऐसाकी ज्यारत है अट्ठाईसवींको रात अच्छीहोतीहै और पानी स्वादिष्ट होता है और श्लेष्मा होता है और बहुधा कफ उत्पन्नहोताहै और औषधके खाने से चित्त प्रसन्नहोताहै और छुहारा और अंगूर अधिकहोता है और

मन्द २ मेघ बर्षता है और शाम देशमें तुरंजबीन उत्पन्न होती है॥
(ऐलवल) यह महीना तीस दिनका होता है इसके पहिले दिन नये सम्बत् की ईद होती है तीसरे दिन यूशा यूनुस के बेटा की ज्यारतहोती है प्रथम अपनीसभामें अग्निका सेवनकरते हैं पांचवें दिन ज़करियाकी ज्यारत होती है बारहवीं को फ़स्द लेते हैं और औषध पीते हैं तेरहवें दिन नील नदी की बाढ़का अन्त होजाता है और बैतुल मुक़द्दसकी ईदहोती है चौदहवें दिन ईदसलीब होतीहैं सोलहवें दिन लड़कोंका दूध बढ़ातेहैं अट्ठारहवें दिनदिनरात सम तापर आजाता है और वहदिन अजमदेशियोंके निकटवसन्त ऋतु का प्रथम दिन है और कहते हैं कि इस दिन जो बादल प्रकट हो तो वह जीवको चैतन्य करता है और शरीर को नीरोग करता है बीसवें दिन वृक्षोंका पानी डालियों की ओरसे जड़की तरफ़ आता है और पत्ते निकलते हैं असहाब तजुर्बा ने लिखा है कि चौबीसवें दिन एकहवा ऐसी चलती है कि शहरमें चितकबले कौआ दृष्टि आते हैं उनको ऐक़ा कहते हैं और ये ऐसी बातें हैं जोकभी२वर्षमें दो२ बारभी होती हैं अब्दुलक़द्दूसने इस विषयमें एक क़सीदा लिखा है अर्थात् छन्दोक्त कविताई की है सो यह है॥

(व्याख्यान फ़ारसी महीनों के विषयमें)

ये महीने सबतीसदिन के होतेहैं और इनकेवर्ष के तीनसौ पैंसठ दिनहोते हैं इसीसे प्रत्येक महीना तीस दिनका होताहै और पांच दिनजो बढ़तेहैं वे मिलायेजातेहैं फ़ारसियोंकेअठवारे अरबदेशियों की रीति के अनुसार नहींहोते बरन इनकेमहीने में प्रथमदिन से लेकर तीसोदिन के भिन्न२ नाम नियतहैं उसीके अनुसार वहांके बादशाहोंके वस्त्र और भोजन प्रतिदिनके भिन्न२नियत हैं जो उस महीनामें दूसरीबार होतेहीनहीं और महीनाकेदिनोंकेनाम येहैं॥

हुर्मुज़१ वहमन २ उर्दीबिहिश्त ३ शहयूर ४ स्फ़न्दारमुज़ ५ खुर्दाद ६ अमुर्दाद७ दैबाज़ुर८ आदिर९ आबान्१० खुर११ मह्-र १२ तीर१३ गोश १४ दिष्महर१५ म्येहर१६ शरोश१७

रश १८ फ़र्वर्दीन १९ वहराम २० राम २१ ग्वाद २२ दिप्दी २
दीन २४ अर्शसं २५ अशता २६ अशमा २७ रमयाज़ २८ आर्सफ़
२९ अनेरान ३० तीसौं दिनके अलग अलग नाम रखनेका यह कार
है कि प्रत्येक दिन के भोजन वस्त्र नियत हैं वे ही भोजन और ब
जो एक दिन होचुके हैं दूसरी बार उसी महीनामें नहीं होते इनकी
ईदें कोई तो परमार्थ के लिये हैं और कोई देश व्यवहारके अनुसा
हैं जो अगले बादशाहोंने इसलिये नियतकी थीं कि उसदिन शरी
भोगादि और ईश्वर का आराधनकरैं और प्रजा लोग उनकी मान
बड़ाईमें लगेरहें और संसारके लोगोंके लियेभी कुछेक दिन नियत
करदिये थे और ऐसीरीतिसे येदिन नियत किये थे कि जिसमें दान
पात्र और भिक्षुकों की आशा भी भलीभांति पूरीहो और अब तक
उसी रीति पर आरूढ़ हैं परमार्थकी ईदें वे हैं जो उनके प्राचीनोंने
नियतकी थीं और परमार्थके लिये थोड़ेसे दिन हैं अब हम जो बात
जिस महीनामें होती है उसको लिखते हैं॥

(फ़र्वरदीं) यह प्रथम महीना है इसका प्रथम दिन ईद सुल-
तानी का पहिला दिन है अर्थात् नौरोज़ इसका अर्थ कोषमें नये
सम्बत् का प्रथम दिन है क्योंकि उनको पुराने सालसे कोई प्रयो-
जन नहींरहता वहांके विद्वान् कहते हैं कि उस दिन ईश्वरने आ
मान बनाया और तारोंको चलनेकी शक्तिदी और सूर्य्यको उत्प
किया और इसके दिनका नाम हुर्मुज़ है इनके निश्चयके अनुस
हुर्मुज़ ईश्वरका नामहै फ़ारसकेविद्वानोंको निश्चयहै कि आजके दि
ईश्वरने संसारमें सात्विकधर्म्मबांटाहै और इसकेसिवाय व्यापा
लोगोंका यह निश्चय है कि आजके दिन जो कोई प्रातःकाल बि
बोले किसीसे थोड़ीसी शक्कर खायलेय और ज़ीत का तेल अप
शरीरपर लेपनकरलेय तो सालभरकी सम्पूर्णअशुभता उससे दू
रहेगी सत्रहवेंदिन को शरोश कहते हैं शरोश उस देवता का ना
है जो शबका दूतहै कहते हैं कि यह नाम जिवरईलका है वहजि
और जादूगरोंका शत्रुहै और यह रात्रिभरमें तीनबार निकलता

सो पहिली बारमें तो जिनोंको दूरकरता है और दूसरी बारमें जितनी बस्तु पृथ्वी और आसमान के बीचमें जलके सदृश है उनको मीठी करता है और मुर्गा बांग देता है और काम का वेग होता है और तीसरीबारमें प्रातःकालहोताहै उससमय वनस्पति प्रफुल्लित होतीहैं और रोगी नीरोगहोतेहैं और दुखिया सुखीहोते हैं औरउस समय का स्वप्नसत्यहोताहै और फरिश्तोंको आनन्द और परियों को शोक होताहै उन्नीसवां इसमहीनाका दिन फ़र्वरदींहै यह वह ईदहै जिसका नाम फ़र्वरजानहै यह केवल दिनकेकारण करिकैहै क्योंकि जैसादिन होता है उसीके अनुसार त्योहारहोताहै और जिसमहीना में जो ईदहोतीहै उसकानामउसमहीनाहीं के नामसे प्रसिद्धहोताहै फ़ारस के महीनों के निकट भी यहदिन ईदकाहै और वहांके बादशाहों के निकट तो सम्पूर्ण महीना ईदहीका है इसमहीना के छः भाग कियेहैं उनमें से प्रथम पांचदिन तो बादशाहोंकी ईद और दूसरे पांच दिन राज सम्बन्धीय महीनों की ईद और तीसरे पांच दिन राजभृत्यादि की ईद और चौथे पांचदिन बादशाह के कुटुम्ब और संबन्धियोंकी ईद और छठेपांच दिन प्रजालोगोंकी ईद के लिये नियत किये हैं जो पांचदिन प्रथमके जो बादशाहों की ईदकेहैं उनमें तख़्त पर बैठ डोंड़ो पिटवा देतेहैं कि बादशाह बैठा है जिसमें प्रजा लोग आयके सलाम करें और दान सन्मान बादशाहों केसे हों पांच दिन दूसरे जो महीने की ईद नियत है उसमें बड़े२लोग राज्यनिवासी बादशाहके दर्शनोंको आते हैं तीसरे पांच दिनमें मंत्रीलोग सभामें आते हैं चौथे पांचदिनमें बादशाह के कुटुम्बके दर्शनोंको आतेहैं पांचवेंभागमें फ़रज़िन्दानखिलाफत अर्थात् कुवरों की मुलाकात होती है और उनको शिरोपाव मिलते हैं छठे पांचदिनमें जब इन सबसे निवृत्तहोने के उपरांत मुख्य२ पुरुषोंसे बैठकर वार्तालाप करते हैं और जो भेंटादि आती है उसको भली भांति देखि कोषमें धराते हैं॥

(उर्दीबिहिश्त) इस महीनाके तीसरे दिनको उर्दीबिहिश्त कहते

हैं यह ईदका दिन है और इसका कारण यह है कि एकतो महीना का नाम है दूसरे ईदका नाम है तीसरे अग्निके देवताका भी नाम उर्दीबिहिश्त है और यही देवता औषधिओं का भी स्वामी है इस महीनाके छब्बीसवें दिनका नाम अस्तादिन है और यह प्रथम ख़न्हार है ख़न्हार छह हैं और प्रत्येक ख़न्हार की संख्या नियत है और प्रकट तो यह आदिर राज है इनमें पुण्य दान और पूजा पाठ मजूसी धर्म्मानुसार होते हैं॥

(ख़ुर्दाद) इस महीना के छठे दिनको ख़ुर्दाद कहते हैं यहनाम उसदेवताका है जो फल और बनस्पति का स्वामी है और जलको शुद्धकरताहै इसके छब्बीसवें दिनको अश्तारोज़ कहतेहैं और इसी दिन ईश्वर ने वृक्ष और फलादि उत्पन्न किये हैं और इसके तीसरे दिन का नाम अनेरान अथवा अनेरान कानभी कहते हैं जैसे ईद का संयोग आनपड़ा उसी प्रकारसे नामधरागया इसलिये जो दो नाम इकट्ठे आकर पड़े तो इसका नाम ईद रक्खागया इस ईद को शरीर की सफ़ाई और स्नान करते हैं और अस्फहान देश अब तक होती है॥

(तीर) इस महीनाके आठवें दिनको ख़ुर्दाद कहतेहैं यहआनं की ईद नीलोफ़रके नामसे होती है यह नया नाम है इसके तेरहं दिनको तीर कहते हैं और यह ईदका दिनहै और दो संज्ञाओं का एकही नाम होनेके कारण इसका तीर नाम धरागया क्योंकि ईद का भी नाम तीर और दिनका भी नामतीर है इसीदिन ईरान मु- नोछ्रने अफरासिआवको विना जीतेही दैदिया तवरिस्तान में मु- नाछ्र नाम एक पहाड़ हैइसके सोलहवें दिनका नाम म्येहररोज़ है और म्येहर सूर्य्यकोभी कहतेहैं और यहपांचवीं ख़न्हारका प्रथम दिन है इसीदिनईश्वरने दरिन्दे अर्थात् मांसाहारी जीव उत्पन्न कियेपरंतु इतना भेदहै कि ये मांसाहारीपक्षी नहीं किन्तुथलचारी बकरी बैल ऊंटबैलके सदृश हों॥

(अमर्दादमाह) इस महीनाके सातवें दिनका नाम अमर्दाद है

और ईदभी इसी नामकीहै और इसकानाम मरादादगान कहतेहैं ॥
(शहर्यूरमाह) इस महीना के चौथे दिन को शहर्यूर कहते हैं और इसकी ईद का नाम भी शहयूर है निदान दिन और ईदका साथ चला जाता है यह पांचवीं खन्हार का प्रथम दिन है इसके सोलहवें दिनको म्येहररोज़ कहते हैं और बीसवें दिन को बहराम और म्येहरजानसग़ीरभी परिद्ध करते हैं ॥
(म्येहरमाह) इसके सोलहवें दिनको म्येहररोज़ कहते हैं जो एक बड़ी ईदका नामहै जिसका नाम म्येहरजान है इसलिये दोनों ईदोंके नामहैं और इसकेसिवाय सूर्य्यका भी नाम है अगले दिनों में बादशाह लोग अपने लड़कों को सुवर्णका क्रट पहराते थे और उसमें सूर्य्यका स्वरूपभी बनाते थे और फरेदूं इसदिन युद्ध करनेके विचारसे निकला और जोहाककी अजयहुई और मलायक ने पृथ्वी पर आकर इस रणभूमिमें विजयी होनेके कारण फरेदूंको धन्यवाद दिया ईश्वर ने इसीदिन बायुको इस संसारमें चलनेकी आज्ञादी और फ़ारसके विद्वानोंकी वाक्यहै कि जो मनुष्य आजके दिन कुछ अनार खावे और गुलाब सूंघे तो ईश्वर उसके आफातको दूर करदेगा और इसके इक्कीसवें दिनको असररोज़ कहते हैं इसी दिनफरेदूंने जोहाकपै जयपाई और उसको क़ैद कियाहै और जोहाकने अपने बधके लिये फरेदूंसे कहा परन्तु उसने उसको देना बन्द पहाड़में क़ैद किया ॥
(आमनमाह) आमन माह ईद का नाम है परंतु ईद और महीना दोनोंका नाम होनेके कारण इसका नाम अमाकान है और इस महीनाके प्रथम दिनका नाम अस्तारोज़ कहते हैं और उसका नाम फ़र्वरजान है फ़ारस वाले मनुष्य इसदिन को भोजन फरेदूंके नाम बनवाते हैं और कोठोंपर पानी इस निश्चयके कारण धरवाते हैं कि आजके दिन उनके पितृ महाकष्टसे निकलके इस पानीकी ठौर आते हैं तो उनको शक्ति मिलती है और अग्नि में सुगंध की वस्तु छोड़ते हैं जिस्में पितृलोग प्रसन्नहों इसबात पै सम्पूर्ण फ़ारस

वालोंकी एकमति नहींहै क्योंकि कुछलोग तो कहते हैं कि ये पांच दिन आमन महीनाके अन्तमें हैं और कुछ कहते हैं कि ये पांचदिन आदिर महीनाके हैं परन्तु हवन करना उनके मतानुसार सब प्रकार ठीक है ॥

(आदिरमाह) इसके प्रथम दिनको हुर्मुज़ कहतेहैं इसमें गदहा की सवारी है और यह वह रीति है कि एक पुरुषको सज नामक मसखरा हुआ था और इसके समाचार ये हैं कि आजके दिन वा गदहेपर सवार होकर पुराने गूदड़े पहर गरम भोजन कर शरीह में गरम२ बस्तुओं का लेपनकर हाथमें पंखा लिये हुये निकलकर जिस्में लोगोंपर यह बिदित हो कि इसको बड़ी गर्मी लगतीइस दशामें सबमनुष्य हँसर२के कोई तो पानी उसके ऊपर फेंकते और कोई बर्फ फेंकके मारते इस कारण से उसको लाभ होता था निदान इसीप्रकार आगे२तो वह टटोलिया और पीछे२ उसके संसार तारी बजातेहुये दौड़ते थे अन्त को जब बादशाहके सन्मुख होकर निकलता तो वहभी उसीप्रकार उसपै बर्फ फेंकता परन्तु उस तक पहुंचती नहीं थी और उस मसखराके पास लाल माटी घोरी हुई रहती थी उसको उनपै छिड़का करता था जो उसको कुछदेतेनहीं और छेड़ते थे कहते हैं कि इस दिन एकमोती नदीसे ऐसा निकला था जो किसीने आगे न देखा था यह वही दिनहै जिसदिन ईश्वर ने उचित और अनुचित में विवेककिया और यह भी कहतेहैं कि जो कोई आजदिन प्रातःकाल बिहीखाकर नींब सूंघै तो उसको सम्पूर्ण बर्षभर भलाईही मिलै इस महीनेके नवैंदिन को आदि रोज़की ईद होतीहै जिसको खुशैंद कहते हैं इसदिन वहांके लोग अग्निका स्पर्श करते हैं आदिर फरिश्ते का नाम है जो अग्नि का देवता है ज़र्दश्त ने आज्ञा दी थी कि आज के दिन सम्पूर्ण लोग अग्निकुण्ड के दर्शन करैं और बलिप्रदान का उद्योग करैं और आज बादशाह सभासदों के साथ राजप्रबन्धके विषय में विचार करते रहे हैं ॥

(दिप्माह) इसका नाम खुर्शेदमाह भी है इसका प्रथम दिन खुर्शेद रोज़है यह ईश्वरका दिन है आजके दिन बादशाह तख़्त से उतर पड़ा करता था और श्वेतवस्त्र धारणकरके साधारण बिछौना पर बैठ प्रजालोगों के साथ प्रसन्नचित्त होकर प्रत्येकसे भिन्नवार्त्ता करता और उत्तम मध्यम नीच और किसानों से भी मिलता और सबके साथ बैठकर भोजन करता और कहता कि मैंभी तुम्हारे ही समान हूं और बिना तुम्हारी प्रसन्नता के बादशाह नहीं होसक्ता क्योंकि यह तुम्हारे हाथ में है॥ राज्य का प्रबन्ध बादशाह को सौंपागया है और राजा और प्रजामें कोई बड़ा छोटा नहींहै किंतु तुम और मैं दोनों दो भाइयों के समान हैं इसलिये एक को दूसरे से मान करना उचित हैही नहीं इसके प्रथम दिनको क्न्हार और बल और खुर्शेदरोज़ कहते हैं इसदिन ईश्वर ने आसमानकीरचना करीहै इस महीना के चौदहवें दिन का नाम गोशरोज़ और शैरसो कहते हैं इसदिन फ़ारस के निवासी मांस और दूध भोजन करते हैं मांस और तरकारी को मिला के बनाते हैं और शैतानोंके लिये धूनीदेते हैं आजकी धूनीसे प्रेतादि की बाधा मिटतीहै इस महीना के पन्द्रहवें दिन को दिप्म्येहर कहते हैं यह ईद का दिन है और इसदिन आटा अथवा माटी से एक मनुष्यका स्वरूप बनातेहैं और उसको द्वारपर धरते हैं और फिर उसको जलाते हैं फ़ारस के विद्वानों को यह निश्चय है कि आजके दिन जो मनुष्य किसीवस्तुके बिनाखाये से व खाकर नरगिस का फूल सूंघे तो उसका वह वर्ष अत्यन्त आनन्द से बीतेगा और जो कोई आज रात्री को भोजन करै तो वह दुर्भिक्ष और शोक से बचैगा॥ इस महीना के सत्रहवें दिनको म्येहर रोज़ कहते हैं यहदिन ईदका वकीलहै और यह भी कहते हैं कि इसीदिन फ़ारसने तुर्क पर चढ़ाईकरी थी और आजकी चढ़ाई के लिये सेना भी आजहीके दिन चलीथी कहतेहैं कि इसीदिन फरेदूं बैलपर सवार हुआथा और इसीदिन एक चांदी की गौ प्रकट हुईथी उसके दोनों सींग सोने के थे और गोशाला चांदी का

जो कभी प्रकट और कभी छिपताथा और जिसनेउसको देखा उस का न्योतामाना और उनको सज्जनोंके सिवाय किसीनेनहीं देखा॥

(बहनमाह)इस महीना का दूसरा दिन वहवनरोज़है और वह ईदका दिनहै इसका नाम वहमंचाहै और दोनोंका एकनामहोनेके सिवाय यहनाम एक देवताका भी है जो पशुओं की रक्षा करता है फ़ारसी लोग इसदिन नानाप्रकार के भोजन बनाते हैं और शीर सफ़ेद वहमन सफ़ेद के साथ घिसकर पीते हैं इसके पीने से सरस्वती प्रबल होतीहै आज का दिन रोगियों को औषध पीने और तैलादि खींचने और धूनीदेनेके लिये अत्युत्तमहै कहतेहैं कि इसको जामासप और ज़रगुश्तासप किया करते थे जिसकाफल विदितहै इसमहीनाके पांचवें दिनका नामइस्फन्दार और वोसीदा है दशवें दिनका ईदआजन नामहै और इसके सौनामहैं और कारण सौनाम होनेका यहहै कि इस समय से सालके अन्ततक सौवाकी हैं और ज़िमिस्तानजन्मसे इसीदिन निकलताहै और मनुष्य अग्नि जल जाड़ेको दूरकरतेहैं पक्षीभूनकरखाते औरमदिरापानकर विषयभो करतेहैं इस महीना का तीसरादिन अनेरानहै जिसको फ़ारसव आवज़ेरगान कहते हैं इसनाम के अर्थ वर्षा करनेवाले काहै अ अस्फहान में यह ईद अबतक मानी जाती है और कारण इस यहहै कि मेघ घिरके जमजाताहै बादशाह फ़ीरोज़के दिनोंमें मह दुर्भिक्ष पड़ा सो संसार में विदितहै उस समय बादशाह ने अप कोष खोलदिया और प्रजालोगों को बांटा और पृथ्वी का पो अर्थात् लगान छोड़दिया जैसे माता पुत्र की रक्षाकरते हैं उसी कार प्रजालोगोंकी रक्षाकरी किसीको अन्नबिना नहीं मरनेदि और फ़ीरोज़ने ईश्वरसे प्रार्थनाकी कि हेईश्वर तू मेरेदेशको दुर्भि क्षके महारोगसे नीरोग करदे जिसमें मेरे प्रजालोग इसके भय निर्भयरहैं कभी मेरीप्रजा को यह मृत्युरूपीदुःख फेर दृष्टि न आ यहकह आप अग्निकुण्डमें जाय अग्निको इसप्रकार लिपटनेलग जैसे कोई अपने परम मित्रको छातीलगावे इसमें अग्निका प्रज्व

खलिलूल्ला उसकी दाढ़ीतक पहुंचा परन्तु शीतल होगया कुछ अग्निने अपना प्रभाव न किया तब कहा कि हे ईश्वर जो यह अवर्षण मेरे दुष्टकर्म्म करकेहै तो तू मुझपर प्रकटकरदे जिसमें मैं उसपापको न करूं अथवाराज्यका परित्याग करूं और जोकिसी दूसरेके कर्मोंका फलहै तो तू उसका नाश करदे और अपने जीवों को अपनी दया के मेघ से सींच निदान यह प्रार्थना कर ज्योंहीं अग्निकुण्ड में से निकला त्योंहीं एक बादलका टुकड़ा दृष्टिआया उससे इतनाजल बर्षा कि कभी आगे नहीं बर्षाथा तबफ़ीरोज़को निश्चयहुआ किईश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी और नदी ताल जलसे परिपूर्ण होगये और सोता ठौर २ बहनेलगे और संसारी जलसे संतुष्ट हुये निदान उस दिनसे यह रीतिप्रचलितहोगई और अबतक वह रीतिमानीजातीहै ॥

(माह इस्फन्दार) इसके पांचवें दिनका नाम इस्फन्दारन्दईद है और इसका अर्थ बुद्धि और परम चतुरता के हैं और इस्फन्दारन्द उस फ़रिश्ते का नामहै जो पृथ्वी का देवता है और पतिव्रता स्त्री को भी कहते हैं इस ईद को बहुधा स्त्री वाले पुरुष मानते हैं और दृढ़करके सपतिका स्त्रियोंका त्योहारहै और यहईद इस्फहान और अंजवल के शहरों में उसी प्रकार मानीजाती है इस ईद का नाम निज़दुकेरां है इसदिन जादूगर लोग मंत्रादि जगाते हैं और यंत्र लिखते हैं प्रातःकाल से भानूदय तक इसकाम में रहते हैं उनमें से तीनयंत्र तो दीवानख़ानेके ऊपर लगाते हैं और उस दीवार को अपने द्वारके आगे रखते हैं और इसमहीनेके ग्यारहवें दिन मिथुन राशि होतीहै इसीदिन ईश्वरने मेघोंकी रचना करीहै और इसमहीनाके उन्नीसवें दिन फर्वर्दीन है इसदिनको अन्हार कहते हैं और बहते पानी में गुलाब छिड़कते हैं और इसहर्ष के पलटेमें धन्यबाद देतेहैं और यह धर्म्म उनलोगों में अभी मानाजाताहै ॥

वाक्य ॥ अरब और रूम और फारस में इन तीसों दिन के बारह २ महीने हैं और उन बारहों महीनों में चारऋतु हैं इनलोगोंकी बर्षोंमें भेदहै क्योंकि अरबदेशीय अपने महीना को दुइजसे

गिनते हैं इसरीति से वर्ष के तीनसौ चौव्वन दिन होते हैं और र
मियों ने अपने महीना की गिन्ती सूर्य के चालपर नियत की
इसके साल के तीनसौ पांच दिन होते हैं क्योंकि इतनी अवधि
सूर्य आकाश मण्डल पर फिरआता है फ़ारसवालोंने अपनेमहीन
को तीसदिन का नियत कियाहै इस हिसाब से इनका सालती
सौ साठ दिनका होताहै और अरब के हिसाब में इसको क़मर
अर्थात् चन्द्रवत् कहते हैं और रूमके हिसाब से शम्सी अर्थात
सूर्यवत् कहते हैं अरब और रूम के हिसाबसे एकसौ वर्ष में तीन
वर्षका अन्तर पड़ताहै जैसा कि ईश्वर ने क़ुरानमें कहाहै कि तीन
सौवर्ष रूमके हिसाब के अनुसार और अरब की रीति से नव वर्ष
का अन्तर पड़ताहै अरबके वर्षका आरम्भ मुहर्रम से होताहै और
रूमीलोगों के वर्षका आरम्भ उसदिन से होता है जब कि सूर्य
मेषकी संक्रान्तिका होता है॥

फसल—वर्ष की चारऋतों के विषय में॥

प्रकटहो कि रासमण्डल की रेखा दो बिन्दु पर जो एक दूसरे
के सन्मुख हैं काटती है उसमें अर्द्ध उत्तरीय कोनुक़्तै एतदालरबी
अर्थात् उत्तरायण कहते हैं और दूसरे बिन्दुका यह वृत्तान्त है कि
जबउससे दक्षिणकी ओर सूर्य्यबढ़ा तो उसकोएतदालखरीफ़ी अर्थात
दक्षिणायन कहते हैं और अर्द्ध उत्तरीय वहहै कि जबसूर्य्यमध्यरेखा
से उत्तरही में रहै उसको नुक़्ता इनक़िलावसैफ़ी कहते अर्थात
गर्मी की ऋतु कहते हैं और मुनसफ़निस्फ़ वह है जब सूर्य्यम-
ध्यरेखा से दक्षिण की ओर हटा रहै यह जाड़े की ऋतु से प्रयो-
जन है इसका नाम इन क़िलाव शनबीहै तो इस के चारबिन्दु
पै बराबर चार भाग होतेहैं परन्तु रबी जो दो बिन्दु अर्थात् एत-
दाल रबी और इन क़िलावसैफ़ी के बीच में और यह समय उसी
समय तक पायाजाता है कि जबतक सूर्य्य धन राशि के बराबरहो
इस अन्तर को ज़मानारबी कहते हैं और रबी दो बिन्दु इन क़िला
बख़रीफ़ी के बीच को कहते हैं और इस को ज़माना सैफ़ अर्थात्

र्मी की ऋतु कहते हैं किसहेतु से कि जबतक सूर्य इस क़ौस के
नमुख रहता है उस समय तक गर्मीकी ऋतु रहती है और रबी
है जो दो नुक़्ता एतदाल ख़रीफ़ी और इनक़िलाबशनबी है यह
मय ख़रीफ़में पायाजाताहै औरबसेपायज़ कहते हैं और रबी जो
ोनुक़्ते इनक़िलाब शनबी और एतदाल रबीके बीचमें है वह समय
जब जाड़ाहोनेलगता है यहभी ईश्वरकी एक दया है कि उसने
पनी सृष्टि के लिये प्रत्येक ऋतु का स्वभाव एक दूसरी के
वप्रीति बनाया जिसमें चारों ऋतुजीवोंके शरीरमें क्रम २ से प्रवेस
रें जब गर्मीसे जाड़ाआता है जो एकही साथ भरपूरा जाड़ाहोने
गै तो बड़ाउलटापलट होनेलगै देखोऋतु वायु से पलटने लगती है
बीका समय उसवक्तहोताहै कि जब सूर्य्यमेष राशिका प्रथम अंश
र होताहै उससमय दिनराति साधारण अर्थात् न अधिक गर्मी
और न अधिक सर्दीवायु भली बसन्त ऋतुकी बर्फ़ पिघलतीहै नदी
हतीहै हरेरी लहलहातीहै फूलखिलते हैं जीवरोमझोरतेहैं इसकारण
ंसार आनन्दितहोताहै और पृथ्वी स्वरूपसे स्वच्छदृष्ट आतीहै
(सैफ अर्थात् गर्मी) उससमयहोतीहै जबसूर्य्य प्रथम कर्क रासिका
होताहै उससमयदिन अत्यन्त बड़ा और रातअत्यंतही छोटी होतीहै
तिस उपरांतरात बढ़नेलगतीहै और दिनछोटाहोनेलगताहै उष्णता
अधिकहोतीहै बनस्पति औरजीवपुष्ट होतेहैं फल उत्पन्नहोते हैं परन्तु
उनके दाने सूखजाते हैं बहुधा जीवधारीजहांतहांबिकलदृष्टिआते हैं
मक्खी अधिक होती हैं सन्सारियोंका बिषय भोग अच्छा होताहै
नावें चलने लगती हैं मनुष्योंकी जीविका बहुत होती है और दूध
अधिकहोताहै पशुपक्षियोंके लिये चारा अधिक दृष्टि आता है और
पृथ्वीअलंकृत होजातीहै (ख़रीफ़) इस समय सूर्य्य तुला रासि का
होताहैइससमयदिनराति बराबरहोतीहैं और रात्रीइसीदिनसेबढ़ने
लगतीहै यहसमय वृक्ष और बनस्पति और फूलोंका मानोंचिह्न नहैं
औरइससमय वृक्षोंमें पत्ते निकलतेहैं इससमयमें उत्तरी बायुचलती
है पानीकम होताहै नदीनाला सूखजाते हैं बनस्पति और वृक्षोंके

फलफूल मुर्झायजातेहैं मनुष्य अन्न और मेवा इकट्ठा करतेहैं पृ
मक्खी और उखमजी जीव पक्ष्यादि से साफदृष्टि आतीहै ये
जायके ऐसेठौर छिपरहतेहैं जहां न अधिक सरदी और न अधि
गरमीहो जाड़ेका डरसबको लगताहै लोगजाड़े के लिये साम
इकट्ठा कररखतेहैं मोटे और जवानोंकी सूरत वृद्धोंकीसी होजा
है (शितां) इससमय प्रथम कर्करासिमें सूर्य्य आताहै इसस
रात्री अत्यन्त दीर्घहोती है तिस उपरान्त रात्री घटने लगती
और दिन बढ़नेलगताहै और जाड़ा अधिकहोजाताहै वृक्षोंमें
निकलने लगतेहैं पृथ्वीके जीव अपने २ घोसलोंमें जा छिपतेहैं औ
और अँधियारा अधिकहोताहै आईनामें मुर्चालगजाता है अच्छे
पशूमरजातेहैं और पानीमें सर्दीहोतीहै यहसमय ऋतुका पूराव
होताहै जैसे गर्मीकी ऋतुमें अतिकठिन गर्मीहोतीहै और संस
वृद्ध स्त्रीकेसमान होताहै जैसे किसी स्त्रीकी आयुर्बल का अन्त
और यही दशा उससमय तक रहती है कि जबतक मीनके सूर्य्य
अन्त होता है तिस उपरान्त जाड़े की ऋतु का अन्तहोता है
बसन्तऋतु आतीहै और यहीदशा सदैवबनीरहती है॥

इति चारोंऋतुओं का वृत्तान्त समाप्तहुआ॥

फसल चन्द्र अजाय बात अर्थात् अपूर्व बातोंके विषय में॥

कोई २ बिद्वान कहताहै कि प्रत्येक हज़ार बर्ष उपरान्त ईश
एक पैगम्बर अर्थात् धर्म्म उपदेशकउत्पन्न करताहै वह संसार
आपसत्य धर्म्म उपदेश करता है परन्तु इस अवधिके आदि अन्त
विषयमें कुछनहीं कहा परन्तु इतनाहीं कहाहै कि हज़ार बर्षमेंउत्प
न्नहोताहै इससे प्रकट होताहै कि हज़ार बर्षमें दो पैगम्बर अर्था
एक आदि और एक अन्तमें प्रकटहों इसलिये प्रथम हजार बर्ष
हज़रत आदम मनुष्योंकी जड़ उत्पन्नहुये तिस उपरान्त दूसरे ह
ज़ार बर्षमें हज़रतनूह उत्पन्नहुये और तीसरे हजार बर्षमें हज़र
ख़लीलुल्लाह चौथीबार हज़रत मूसा और पांचवीं बार हज़रतसुले

मान छठवींबार हज़रत ईसामसी और सातवींबार जेवअल्लाह महम्मद मुस्तफ़ा उत्पन्नहुये जिसके उपरान्त कोई और नबीनहींहुआ और सातही हज़ारबर्षसृष्टिकोहुये अधासके पोतेसादीकी कहावतहै कि संसारको छःहज़ारएकसौ बर्षबीति चुके हैं बिद्वानोंने कहाहै कि अब हज़रत महम्मद मुस्तफ़ाके उपरान्त एकसौ बर्ष उपरान्त एक महा विद्वान् उत्पन्न होताहै जो धर्म्मका झगडा उड़ाताहै तोपहली सदीमें ईश्वर ने अब्दुल अजीजकेबेटे अमर को प्रकट किया और दूसरी सदीमें ईश्वर ने औरेसउलशाफ़ीकेबेटा महम्मदको उत्पन्न किया और तीसरी सदीमें अबूउल अधास अहमशरीह को उत्पन्न किया चोथीसदी में तवाबुलवाक़लानीके बेटा अबूबकरको उत्पन्न और पांचवीं सदीमें अबूउल महम्मद गिज़ालीको पैदा किया छठी सदीमें अमरुल राज़ीकेबेटा अबू अब्दुल्ला उत्पन्नहुये मालिकका बेटा इन्स कहताहै कि ईश्वरने जिसको चालीस बर्षकी आयुर्बलदी तो ईश्वरने लालच किया और उसको नाना प्रकारके कष्टजैसे काम क्रोध लोभादि जो शैतानीकामहैं उनमें फांसा और जिस किसीको पचास बर्षकी उमरदी वह मुसल्मानोंमें पवित्र हुआ और जिसको साठवर्ष की उमर दी तो मानों ईश्वर ने उसको तोबह अर्थात् धिक्कारको माना (धिक्कारसे प्रयोजन यहहै कि जब मनुष्यनेकोई पापकिया और उसने जाना कि मैंने पापकिया उससमयवहईश्वर के सन्मुख लज्जितहोके कहताहै कि हे ईश्वरमैं पापीहूं परन्तु आगे फिर ऐसा कर्म्म न करूंगा)और जिसकी आयुर्बल सत्तरबर्षकी हुई वह स्वर्ग और पृथ्वीका प्याराहै और जिसको ईश्वरने अस्सीबर्ष की उमरदी उसके पाप काग़ज़से छेकदिये निर्दोष किया और जिसकी उमर नब्बेबर्षकीहुई तो उसके संसारके कियेहुये पापोंको क्षमाकिया औरस्वर्गमें अपनेवंशवालोंके पापक्षमाकराताहै विद्वानों का निश्चयहै कि समयके प्रभावसे संसार में अपूर्व पदार्थदृष्टिआते हैं कि पशुओंसे नानाप्रकारके पशु उत्पन्न होते हैं और बनस्पतिमें नानाप्रकारके फूल औपत्ती दृष्टिआती हैं जिनको देखि आश्चर्य

होताहै और आबादी उजड़ जाती है औ उजाड़ बस आतीहै सूखेमें नदी नदी में जंगल और पहाड़ दृष्टि आते हैं इस फ़सल का निम्न लिखित वार्त्ता पर अन्त किये देते हैं ॥

(इतिहास)कहते हैं कि बनी इसराईलके समयमें एकयुवातपस्वी को देखा कि हज़रत खिज़िर अलैहुस्सलाम उसके पास आतेथे यह समाचार उड़ते २ बादशाह के पास पहुंचे बादशाहने उसयुवा तपस्वी को बुलवाय के कहा कि जब तेरे पास हज़रत आवें तत्काल बादशाही सभा में ला नहीं तो तेरा बधकिया जायगा वह युवा यह कहके कि अच्छा लैआऊंगा चलाआया और इस सन्देह में था कि जब हज़रत ख़िज़िर आये तो उस जवान ने उनकेसामने सम्पूर्ण वृत्तांत आद्योपांत कहा तब हज़रत खिज़िर ने कहा कि अच्छा चलो निदान दोनों बादशाह की सभा में पहुंचे तोबादशाह ने पूछा कि खिज़िर तुम्हींहो खिज़िर ने उत्तर दिया हां मैंहींहूंतब बादशाह ने कहा अच्छा जो कुछ अपूर्व आश्चर्य्य की बस्तु तुमने देखीहो सो मेरे सन्मुख बर्णन करो इसपर हज़रत खिज़िर नेकहा कि मैंनेतो बहुत से अपूर्व पदार्थ देखे हैं परन्तु जो इस समयवर्त्तमानहै उसको कहताहूं वह यहहै कि अभी थोड़ी देर पहिले मैंएक शहरमें पहुंचा कि जहां अमित मनुष्य और बड़े २ ऊंचे मकान बने हुये थे वहां मैंने एक पुरुष से पूंछा कि यहबस्ती कितने दिनसेहुई है उसने उत्तर दिया कि यह बस्ती प्राचीन है मुझे तो क्या मेरे बाप दादा कोभी इसकी आदि नहीं मालूमहै जब पांचसौ बर्ष उपरांत फिर उस शहर में आयातो उसको उजाड़पाया यहांतक एक दहाई बस्तीभी न दृष्टिआई उसठौर एकमनुष्यको घासखोदतेदेखा उससे मैंने पूछा कि यह शहर कब उजाड़ हुआ उसने उत्तर दिया कि मैंने तो सदैव इसको ऐसाही उजाड़ देखा तब फिर मैंने पूछा कि क्या यह शहर कभी आबाद न था उसने उत्तर दिया कि न तो यहां की आबादी का हाल मैंने अपनी आंखोंसे देखा और न अपने बाप दादेसे सुना फिर जो पांचसौ वर्ष उपरांत उस ओरको

आय निकला तो उस पृथ्वी में जलहीजल दृष्टिआता है वहांथोड़े से जहाज़ मिले उनसे जो पूछा कि यह पृथ्वी समुद्र में कबवहगई थी तब उन्होंने उत्तर दिया कि बड़े खेद की बात है कि तुमसमुद्र को पूछतेहो अरे यह तो सदासे जल भूमिही है यहां हमने पृथ्वी का हाल तो अपने बाप दादासे भी नहीं सुना जब फिर पांचसौ बर्षके उपरांत उस ओरको गया तो देखा कि समुद्र सूख के पृथ्वी का धरातल दृष्टिआता है वहां जो मनुष्य घासइकट्ठी करतेथेउनसे पूछा कि यह पृथ्वी पानी से कैसे निकली उन्होंने उत्तर दिया कि यहतो सदासे पृथ्वीही है तब फिर मैंने उनसे पूछा कि क्या यहां कोई नदी अथवा समुद्र न था उन्हों ने मुझे उत्तर दिया कि न तो हमने अपनीआंखोंसे देखा और न कानोंसेसुनाकि यहांकोईसमुद्र था निदान इस के भी पांचसौबर्ष उपरांत जब मेराजानाउस ओर कोहुआ तो देखा कि एक अतिही दीर्घविस्तारिक शहरबसाहुआ है फिर वहां के लोगों से उस शहर की आदि के समाचार पूछे तो उन्हों ने भी यही उत्तर दिया कि यह तो सदा से ऐसाही बसा हुआ है हमको तो मालूम नहीं कि कब इसकी नीव दीगई है यह सुनके बादशाह कहनेलगा हे हज़रत मुझे आप के साथ चलनेकी अभिलाषा है हज़रत ख़िज़िर ने उत्तरदिया कि मुझसे तो यह नहीं होसक्ता परन्तु हां जो तुम इस युवा पुरुष के साथ रहोतो निश्चय है कि ईश्वर तुमको सीधीराह दिखावे विदित हो कि जो कुछ आस-मान के नीचे अपूर्व पदार्थ नदी, पृथ्वी और बड़े २ पहाड़, नहरें धातुओं के गुण और वृक्षों के स्वभाव इन सम्पूर्ण बस्तुओंके जान-ने में बुद्धिमानों की तीक्ष्ण बुद्धि भ्रमित है परन्तु जिन वस्तुओं के जानने में बुद्धिमानों को भ्रम होता है उनको विद्वानों ने जितना अपनी बुद्धि और चतुराई से जानाहै वह ईश्वर की कृतिके सन्मुख इतनाभी नहींहै जैसे नदीके सन्मुख एकबूंद अथवा पृथ्वीकेसन्मुख एककण मैं पूर्वही कहचुकाहूं कि इसपुस्तकमें दोभागहैं सो प्रथम भाग तो बीतगया अब दूसरे भाग का वर्णन कियाजाता है॥

अथ दूसराभाग॥

सिफ़्लियात अर्थात् भूमि सम्बन्धीपदार्थों के विषय में॥

विदित हो कि ये वे वस्तु हैं जो तत्वों के स्वभाव क्रम औ
मेल से आसमान के नीचे वर्त्तमान हैं विद्वान् कहते हैं कि त
बनाये भये हैं और तत्त्व सम्बन्धीसे प्रयोजन शरीर से और शरी
माताकी ठौरहैं और धातु,बनस्पति और जीवधारीको उनकीसन्ता
कहतेहैं अर्थात् उन्हींसेबने हैं और ये चारहैं अर्थात् पृथ्वी,अप,तेज
बायु,अग्निअत्यन्तऊष्महै और चन्द्रमाके मण्डलके नीचे और बा
के ऊपर है बायु शीत ऊष्म आगके नीचे और पानी के ऊपर
पानीसरद तरपृथ्वी के ऊपर और हवासे नीचेहै पृथ्वी सरदखुश
और इसकी नियत ठौर मध्यभूमि है इन चारों तत्त्वों में से प्रत्येक
तत्त्व एक दशामें तो उसके समानहै और दूसरी दशामें उसके बि-
परीति और एक स्वरूप होनेके कारण बायुमें मिलजाताहै तोदोनें
एक ठौर रहते हैं और जब स्वभावमें एक दूसरे के बिपरीत हुअ
तो दोनोंअलगहैं प्रत्येक तत्त्व एक२केन्द्र परहै यह वहां के सिवाय
और कहींनहीं रहता परंतु हां जब उसके मुख्यकेन्द्र पर रहने में
कोई रोकहै और उस समय वह केन्द्रको रोकपृथ्वीपर होतो भारी
अथवा गाढ़ाहोगा और जोवह परिधिकी ओरहोतो हलका अथ-
वा पतलाहोगा बिदितहो कि ईश्वर ने अपनी निर्दोष बुद्धि और
चतुराई से तत्त्वों की अपूर्व और अद्भुत क्रमसे रचना कीहै किजो
तत्त्व हलकाहै वह तो आसमानके निकट है और जो भारीहै वह
आसमान से दूरहै जैसेपृथ्वी कि इसका निवास आसमानके बीच
नियत हुआ और जो तत्त्व इसकी अपेक्षा हलकाहै वह इसके ऊपर
है जैसे पानी कि जिसका निवास बायुके नीचेहै और पानी ऊपर
होने का यह कारण है कि जब माटी पानी पर छोड़ो तो माटी
तोनीचे चलीजाती है और पानीऊपर रहजाताहै क्योंकि माटीकी

अपेक्षा पानी हलकाहै यही कारणहै कि वह आसमानके निकट है तीसरा तत्त्व वायु जो पानीकी अपेक्षा हलका और अग्निसेभारी है तो इसका निवास पानीके ऊपर है, चौथेअग्निजो अत्यन्त हलकी है इसीसे उसका निवास वायुके ऊपर और चन्द्रमण्डलकेनीचेहै॥

फसल इतकिलाअनासिर अर्थात् तत्त्वों के मेल के विषयमें॥

कोई तत्त्व किसी तत्त्वके साथ मिलजाताहै जैसे वायु पानी के साथ मिलजाती है और यह बहुधा देखागया है कि जो बरतन कांसेका बना हो उस में बहुधा पानीके कण इकट्ठेहोजाते हैं जो उसमें कोई वस्तु जमी हुई डालीजावे तो उसके चारोंओर पानी के कण दृष्टिआतेहैं उससे यह मालूम होताहै कि यह बरतनका पानी नहीं है बरन् जो वायु उसके चारोंओर है वही सरदी पाकर जमगई है और पानीभी सूर्य और अग्निकी गर्मी पाके भाफ़ होके वायु का स्वरूप होजाताहै और वायु आगके साथ मिलजाती है जैसे किसी ठौर लूककी दशा देखी गईहै औ पानीमाटी से बदलजाता है जैसे बहुधा देखा जाताहै कि कोई २ पानी माटी और पत्थर होजाता है और माटीभी पानीके साथबदल जातीहै जैसेरसायनवाले इस कामको करते हैं कि उसके कणों को ऐसा महीन करते हैं कि उसमें माटी का अंशनहीं रहता इसलिये इन तत्त्वोंमेंसे जो पतलेहैं वे तो बहुत शीघ्र बदलते हैं और जो गाढ़े हैं वेदेर से मिलते हैं क्योंकि जब हम दो प्रकार का जल जिनमें एक भारी और दूसरा हलका हो इकट्ठाकरें उनको सरदवायुमें धरदें तोउनमें जो पानीकिसरद है वहजल्दी जमजायगा और जो इसीप्रकार इन दोनों पानीको आग अथवा धूपमें धरें तो यहपानी जो अधिकसरदहै जल्दीगर्महोगा॥

निज़र दूसरी अग्नि गोलाकार के विषय में॥

विद्वानोंके निकट अग्निएकस्वरूपहै इसका स्वभाव गरम खुश्क है और अपने स्वभावानुसार चलती है क्योंकि इसका ठौर आसमान के नीचे नियत है और यह अग्नि निःकेवल है अर्थात् किसी दूसरे तत्त्व से नहीं मिली है और उसमें कोई रंग नहीं है और

कहते हैं कि केवल अग्निको कोई देख नहीं सक्ता क्योंकि हम देख-
तेहैं कि जब शमा अर्थात् बत्ती जलती है तो उसका लूक बाती से
अलग होता है और इसमें सन्देह नहीं है कि अग्निकी गरमी
बाती के पास अधिक है और यह भी एक परीक्षा है कि जबलो-
हार भट्ठीको देरतक फूंकते हैं तोवायु उसके पासकी इतनी गरम
होती है कि जोकोई वस्तु उसके निकट धरो तो जलजाती है इस
से मालूम होता है कि अग्निकी शक्ति केवल उसके मुख्य अथवा
यथार्थ में होती है परन्तु वह अग्नि जो तत्वोंके ऊपर है अत्यन्त
बलवान् है इसीकारण से वह दृष्टि नहीं आती और ईश्वर की बुद्धि-
मानी तो देखना चाहिये कि उसने अग्निको चन्द्रमा के नीचे क्यों-
कर बनायाहै जब कि उसकी उष्मता से गाढ़ी भाफ़ जलती है और
मैली भाफ़ स्वच्छहोतीहै जिसमें चन्द्रमाके नीचे संसारमें जोमैली
वस्तुहैं वह स्वच्छहोजायँ और ईश्वरने उसकी एक तवक़ाअर्थात्
एक खंड बनाया (तवक़ाकेमुख्य अर्थतो परतकेहैं) जिस में उष्म
अति कराल है और जो कुछ पदार्थ धुंआं और भाफ़ बनजाते
उनको भस्म करताहै और ईश्वरने इसतत्त्वनिःकेवलको बिना
बनाया क्योंकि जो उसमें प्रकाश और रंगऐसा होता जैसे
हमारी अग्निमेंहै तो निस्सन्देह उसका रंग और बास आसम
के देखने में हमारी आंखोंका अवरोधक होता अर्थात् आसम
दृष्टि नआता और दूसरी बुद्धिमानी ईश्वरकी यहहै उसको (अग्नि
ज़िमहरीर अर्थात् अति करालशीत के बीचमें छिपाया है जिस
अग्नितो शीतको और शीत अग्निकी उष्मताको दोनों एक दूसरे
संसारकी ओर आनेसे रोकें (ज़िमहरीर जो शब्दऊपर लिखआ
हैं उसका अर्थ अतिशीतका है वह शीत कि जिस में अन्तके दि
ईश्वर काफ़िर अर्थात् नास्तिकों की यातना करैगा हिन्दुओं
मतानुसार इसको हिवार कहना उचित है यह केवल उसके गुणों
पायाजाताहै परन्तु हिन्दुओंके मतानुसार हिवारकास्थान अन्य
ग्रह नहीं है) नहीं दुष्टतो मरते परन्तु उनके साथजीव और बन

रूपतिकाभी नाशहोता और जो अग्नि आहिन और पसरके संयोग से प्रकट होतीहै सोभी एक ईश्वर की मायाहै और एक अद्भुत मायाहै कि अकार और मर्ख़ (दोनोंएक प्रकारके वृक्ष हैं) सेअग्नि प्रकट होती है और यह अग्निके बिरुद्ध है क्योंकि इसमें तोतरी अधिक होती है जिसमें से अग्नि प्रकट होती है नहीं मालूम कि दोनोंएक दूसरेके बिरुद्ध एकही बस्तुसे उत्पन्न होती हैं मर्ख़ एक प्रकारका वृक्ष है जिस से अरब देशीय अग्नि निकालते हैं और अक़ार के कई अर्थ हैं एकतो पृथ्वी के समान दूसरे वृक्ष तीसरे पांचवें छोहारे आदि के एकतो ईश्वर की अद्भुतमाया यहहै कि अग्नि से प्रकाश भी होता है और उसमें उष्मता भी है ये दोनों अर्थात् प्रकाश और उष्मता केवल अग्नि के आधीन हैं दूसरी अद्भुत बात यह है कि लोहे और अग्नि को राख कर डालती है निदान मनुष्य की बुद्धि और चतुराई ईश्वरकी बुद्धि और चतुराई के आगे लज्जित होरहती है इसमें जालनाकि सर्व नाम बाचक क्रिया अग्नि की ओर है जालना वह अग्नि है जो बनी इसराईल के लिये प्रकट हुईथी इसमें उनके पखलास का अलंकृत वर्णन भरा है उस की परीक्षा ले तो बनी इसराईल बलिप्रदान की सम्पूर्ण रीतों के उपरांत बलि पशु को एकघेरे में छोड़ देते थे वहां पैगम्बर सल्लिल्लाहोसल्लम आके आशीर्बाद देते तो लोग अपने घरों के द्वारपर होते थे उस समय पैगम्बर के आशीर्बाद से श्वेत रंग की अग्नि आके बलिप्रदान पै प्रकट हो उस को चारोंओर से घेर के उस बलिप्रदान को जलादेती थी ईश्वर ने इसका वर्णन यहूदियों के समाचार के बिषय कुरान में किया है और आगमें से एक प्रकार की अग्नि खूतैन है जो अयसदेश में प्रकट होतीरही जब रातके समय आसमान पै प्रकट होती तो बनीतय अर्थात् तयके बंशवाले उस अग्नि के प्रकाश में अपने ऊंटोंको तीनदिन राह की दूरीसे देखते रहे यहांतक कि ऊंटों की गर्दन दिखाई देतीथी उस अग्नि का प्रकाश प्रत्येक बस्तुपै होता था और जिस बस्तु के चारों

और होती थी उस वस्तु को भस्मकर देती थी और दिन में उसको केवल उसका धुंआं ला प्रकट होता था तब ईश्वर ने खालिद बिन शना को भेजा यह मनुष्य बनी अयस में से था और बनी इसमाईल के उपरांत आया था उस समय कुंआंबना के उस प्रकाश को उसमें बन्द किया तो लोग देखते थे कि वह प्रकाश उस कुंआं में जा छिपा और फिर उसका चिह्न मिला ॥

फसलतारा सम्बन्धीय और उनके नुकसान के विषय में ॥

विद्वानों का वाक्य है कि कभी धुंआं बायुकीओर सीधाहोता धुंआंमें एक मुंह होताहै जिससे अग्निका ज्वाला प्रज्वलित होता और वह बिलकुल आग होकर उसीओर को जाता है जहां से कि धुंआं उठता है और वह बिलकुल आग होके उसके आसपास को जलादेताहै जैसे जब चिराग बुझताहै और उसको दूसरे दीपकके गुलके नीचे लेजावें तो उसकी ज्योति उस धुंआंमें अग्निप्रकट हो जातीहै परन्तु जब पृथ्वीसे उसका सम्बन्ध छूटा तोभी पंतलाही के कारण आग प्रकट होजाती है और उसमेंसे धुंआंका अंश जात रहताहै मानों वह मिटगया और आगेहम इसका बर्णन करचुकेहैं कि केवल अग्नि तो दृष्टि में आही नहीं सकती इसलिये जब आग जलतीहै सो प्रथम उसमें धुंआंके समान कुछ स्वरूप दृष्टिआते हैं कभी तो ताराके समान और कभी पशुके समान कभी मनुष्य के समान और कभी गाजगरके रंग समान और मुख्य इसकी वही चीज़है जो अग्नि मण्डलके पासहै और मखरूत अर्थात् गाजरके समान वहहै जो कुरयज़िमहरीर अर्थात् हिवार के पासहै और कभी २ ऐसा मालूम होताहै कि आसमान पै एक गोलाकारसे कोई बस्तु कभी तो उत्तरकी ओरको और कभी दक्षिणकी ओरको बढ़के खतमहोताहै तनक ध्यानदेके देखो तो मालूमहोगा कि मानोंगोलाकार व्यासवत् है जिसमें आग प्रज्वलित है फिर हवा में खड़ेही के देखो कि चाहे कितनीही आग उस में व्यापै परन्तु अग्नि अधि-

कही प्रज्वलितहोती जायगी इसलिये कि जिसमें वहमिटिजाय॥

इति

कोई २ आगेके विद्वान इसमें अपनी मतिदेते हैं कि मनुष्य के श्वास और आगसे एक ऐसा ऐका है जो और किसी दूसरे तत्वसे नहींहै जब आग प्रज्वलितहुई तो इसका बुझना तो अति कठिन है और जब कमहोतीहै तो उसका बुझना कुछ कठिन नहीं सोई दशा मनुष्यके श्वासकीहै किजब अधिक है तबतो उसका मिटाना कठिन है और जब कमहुई तो बन्दहोजातीहै और एक अद्भुत बात यह है कि जहां अग्नि सजीवहै तहां श्वासभी चलती है और जहांअग्नि मृतक अर्थात् जहां नहीं है वहां श्वास भी नहीं इसी प्रकार जब खानों से धातु निकालने वाले मनुष्य खानों में धातु निकालने के लिये धसना चाहतेहैं तो एक लम्बी लकड़ी के सिरेपै आग जलाके अपने मुखके सामने रखतेहैं जो उस लकड़ीमें आगजलती रही तब तो उसग़ार अर्थात् खोह में धसे और जो बुझगई तो उस में नहीं धसते इसीप्रकार जो किसी कुंआं में धसनाहुआ तो प्रथम कण्डील में दिया धरके कुंआंमें पहुंचाते हैं जो वहदिया उसकुंआं में जलता रहा तब तो उस में धसे और जो बुझगया तो उस में नहीं धसते और दूसरी दृष्टान्त आगकी मनुष्य के साथयहहै कि दीपक में जब तेल नहीं होता और बुझना चाहता है तो प्रथम एकुलोयं दीपक में ज़ोर से चमकती है तिस उपरान्त बुझताहै इसी प्रकार मनुष्य मरते समय अधिक ज़ोरसे श्वासलेने लगता है जिसकानाम ऊर्ध्व-श्वासहै जब यहदशा मनुष्यकी होतीहै तोमरनेमें कुछदेर नहींहोती॥

नज़र तीसरी वायुमण्डल के विषय में॥

वायु एक जिस्मवसीत अर्थात् एक ऐसालम्बा चौड़ा स्वरूप है जिस में कोई वस्तु नहीं मिली है इसका स्वभाव गरम तरहै और अत्यन्त हलकी और पतलीहै और अग्निके नीचे फिरती है विद्वानों के निकट वायु के तीन भागहैं प्रथम तो वह जो चन्द्रमा मण्डलसे मिलीहुईहै दूसरे वह जो सनहअरज़ी अर्थात् सर्वभूत मय है और

तीसरी बायु वह है जो बीच में भरी है परन्तु जो बायु चन्द्रम
आसमान में है वह अत्यन्त गरम है उसका नाम असीर है
बीचकी बायु अत्यन्त सरदहै जिसका नाम महरीरहै और ती
बायु सूर्य्य की किरणें परने से होतीहै उसका इन आकाश ह
मोतदिल में हुआहै और जो ऐसा न होतातो जो बायु दुनिया
वह अत्यन्त सरद होती जैसी कि दशा उत्तरीय ध्रुव के निक
जहां बायु अत्यन्त शीत होतीहै और वहां छः महीनेकी रातहो
और मारे सरदी के पानी जमजाता है और अन्धकार छा जात
वहां जीव और बनस्पति का नाश होजाता है बिद्वानों के नि
बायुकी उंचाई सोलह हज़ार गज़है और छुटाई पृथ्वी के बाह
इसका कारण यहहै कि जो पृथ्वीभरके पहाड़ों से भारी पहाड़
उसकी उंचाईकी बराबर धरतीमें न पहुंचेगी और इससोलह हज़
से यह प्रयोजन है कि वह मेघादि के कारण गरमी को नहीं रो
सक्ता बायुमें तारोंके गरम करनेकी किरणोंके परनेसे गरमीहै अ
यह पृथ्वी के धरातल से मुनकिस होतीहै और घेरा नसीम (ना
बायु) का जो पृथ्वी से मिला है वह गहराई सही पृथ्वीमें है व
फेफड़ा वाला जीव नहीं रहसक्ता जहां हवा और नसीम नहो
कुछ उलटपलट भाफ़, धुंआं और बायुभेद, मेघ, गरजन, बिज
बर्षा औ बायु, छाहीं, ओस, बर्फ़ और प्रकाशादि में होताहै व
कोई तो बायुनसीम और कोई बायुशरीर के कारणसे होता है अ
ब्यौरेवार वर्णन कियाजाता है ॥

मेघ और बर्षा का वर्णन ॥

बिद्वानोंका निश्चयहै कि जबसूर्य्य पानीपर चमकताहै तो पानी
से पृथ्वी के अति महीन अंश घुलजाते हैं और उसे धुंआं कहते हैं
और जब भाफ़ और धुंआं बायुकेसाथ ऊंचे उठतेहैं और बायु उससे
अलग हुई तो ये अन्तरिक्ष में लटके रहजाते हैं और इनके आगे
बड़े ऊंचे२ पहाड़ रोकतेहैं और ऊपर से भाफ़ का संचित अर्थात
मेघ निकट होताहै तो सदा ये भाफ़ और धुआं बहुत से इकट्ठे होके

बायुमें गाढ़े होजाते हैं और बहुधा एकके अंश दूसरे में मिलजाते हैं और यहां तक कि वे जमजाते हैं और भाफ़ और धुंआं के मेल से बादल बनता है और ज्यों२ ऊंचे होतेजाते हैं त्यों२ एक दूसरे में मिलते जातेहैं और फिर बूंदहीबूंद नीचेकीओर टपकता है जो यह भाफ़ रात्री के समय ऊंचेको उठतीहै जबकि बायु सरद चलती है तब तो ऊपर जानेसे रुकजाता है और वहां जमजाता है तो प्रथम तो बायु इसभाफ़ को अति पतला बादल बनातीहै और जो सरदी बहुतही है तो यहभाफ़ जमकेबर्फ़ बनजाता है और क्योंकि सरदी अधिक होने के कारण जमगया है तो उस समय वह पृथ्वी पर ओले और पानीके समान गिरताहै जो सरदी साधारणहै अर्थात् ऐसी सरदी है कि जिससे जीव और बनस्पति को कुछ कष्ट नहीं पहुंचता तो क्रम२ से एकके उपरान्त दूसरा मेघबनता जाताहै जैसे बहुधा बसन्तऋतु में दृष्टिआतेहैं कि पहाड़ोंपर रुईसी बिछीहै और जब उसमें ज़िमहरीर अर्थात् अति शीत हवालगी तो ऊपरही से भाफ़गाढ़ीहोजातीहै और पानीमें जबउसकेअंश मिलतेहैं तो भारी होके हवा और मेघ से बूंदहीबूंद पृथ्वीपर टपकनेलगता है जो ये पानी की बूंदें नन्हीं नन्हीं हों तबलों उनके गिरने के पहिले जाड़ा अधिक होताहै और जो बारिद भाफ़ की हवा न लगी तो अधिक टपकते हैं और जो पानीकी बूंदें कमती हुईं तो रातको सरदी में जमजातीहैं और जो वह पानीकीबूंदें बस्ताहों तो वर्षा नरमहोतीहै और जो वे बूंदें जमगईं तो वही बिजली होजातीहै निदान मेघका बर्षना ईश्वर की दया समझनी चाहिये क्योंकि जहां जीवोंके रहने की ठौरहै वहां प्रति संवत् पानी बर्षता है और ऐसे विद्यावानों में जहां कि जीव रहसकैं परीक्षा लेनेवालोंके निकट एकपरीक्षा यहहै कि जिसठौर में आदमियों के निवास से चालीस दिन की दूरी है वहां रहने के योग्यनहीं किस हेतु से कि वहां मेघनहीं बर्षता और अत्यन्त दया ईश्वर की यही है कि उसने आपने बंदोंपर दया की बर्षाकी है और यह बर्षा न तो ऐसी अधिक होती है कि जिसमें

वनस्पति मिटजायँ और न इतनीकमतीहोतीहै कि जिसमें वनस्पति उगैंहीं नहीं और न मनुष्यों को कुछ हानि होती है जैसी कि दशा नूहकी ज़ातवालों की गति हुई ॥

फ़स्ल वायु के विषय में ॥

वायु पवन की लहरसे उत्पन्न होतीहै जिसतरह समुद्रकी लहर किसी पानीको रोकतीहै सो मानों वायु और पानी दो समुद्र एक पास स्थितहैं भेद केवल इतनाहै कि पानीगाढ़ाहै और चाल भारी है वायुका अंग पतला और चाल इसकी हलकीहै अब इसहवाकी कैफ़ियत सुनना चाहिये कि यह वायु चन्द धुंआंहै जो सूर्यकीगर्मी पाके पृथ्वीसे निकलके ऊपरको जातेहैं जब वह तवक या बारिदा अर्थात् वायुमण्डल तक पहुंचै तो दो मेंसे एकबात अवश्यहोगी कितो यह कि उनकी गर्मीभी वहीमें मिट जातीहै और कियह कि उसकी गर्मी वहांतक बनी रहतीहै जोउसकी गर्मीकमहोगई तबतो कसीफ़ होके नीचे गिरनेका अनुमान करता है और जबनीचेकी ओरको चलातो हवाका झकोरा उसमें भरके हवा होजाता है और जो उसमें गर्मी बनीरही तो ऊपरको जाते२ वायुमण्डल तक पहुंचा तो वहां पवन के झकोरे उसको मेघबनाते हैं और वह हवा होजाता है और वह यह है कि हवा मुहल्लिरियाह होती है तब वह मखरज से ज बाहर निकलती है और कभीऐसा होता है कि और हवायें उस जा मिलती हैं और चन्दधुंआं नीचे से जा पहुंचते हैं और वे वह पहुंच के वायुका स्वरूप बनजाते हैं अथवा कभी ऐसा होताहै कि बिना किसीकी सहायताके सूर्यकी किरणों के कारण वायुआपही आप चलने लगती है क्योंकि सूर्यकी किरण वायु को चलाती है उससे वह अधिक होती है और इसीकारण वायु चलती है परन्तु रोवा उसवायुको कहतेहैं जो अपनेही स्वरूप भरमें फिरती है जैसे मनारा जो मनाराके समान वायु चली वायुमण्डल से उत्पन्नहोके बादलमें पहुंचाकर उसेशीघ्र घुमाया और उसीसमय बादलकेसाथ फिरती हुई भूमितक पहुंचती है कभी इसकी उंचाई गोल होती है

अर्थात् जिसराह से कि वहबादलमें जातीहै वह गोलाकार होकर जाती है इसलिये उसका फसना भी गोलहोता है जैसे घुंघुरवारे बालों से शिर टेढ़ा मालूम होता है और कभी वह रोबादोहवाओं सेमिलती है क्योंकि एकदूसरीका आनानहीं चाहतीतो उसकेबिरुद्ध से एक मुस्तदीर सूरत होतीहै जिसका स्वरूपटुकड़ाकासाहोता है कभीयह हवामदोवा ऊपरआती है और नौकाको पानीके ऊपरचक्र देतीहै और कभीऐसाहोता है कि रोबा वायुपर बादलका टुकड़ा आ जाताहै तो वहरोबाकोगोलकरदेता है तो रोबा ऐसी मालूम होती है कि मानों तनीन अर्थात् अजगरचंद्रमा के आसमान के नीचे से धरती तक उड़ता है मुख्यस्थान बायु के चलनेकेचार हैं प्रथमउत्तरजिस के फिरनेकी ठौर सुहेल से लेकर पूरब में सूर्य्यतक दूसरी बायस बाजिसकी ठौर बनातुलनाश अर्थात् सप्तऋषियोंसे लेकर पूरबतक तीसरी बाददबूर जिसकी सीमा सुहेल से लेकर पश्चिम तक और सूरत उसकी इस प्रकार की होगी ॥

तसवीरनम्बर १०७

उत्तर की बायु शर्द खुश्क लिखी है क्योंकि वह ऐसी ठौर से निकलती है जहां सूर्य्य की किरणें प्रवेशनहीं करतीं और न बरफ और समुद्र उसके पास तक पहुंचते हैं और बायु जब इनका स्पर्श करतीहुई आती है तो बायु शरद होती है और उत्तर में तरी कम है और खुशकी अधिक है उत्तर की बायु दक्षिण की बायु की अपेक्षा अधिक बेगसे चलती है क्योंकि वह एक तंगराहसे निक-लती है जैसे सुराही आदि सँकरे मुहँ के बरतनसे पानी निकलता है और दक्षिण का यह हाल नहीं किन्तु उसका द्वार थाल के समान खुलाहुआ है और इसी कारण उसमें वह बेगनहीं है और उत्तर की ओरकी राह तंग होना इससे भी साबित है कि वह पहाड़ों के बीच में होके निकलती है और उत्तर में पहाड़ बहुत हैं और दक्षिणकी बायु केवल समुद्र पै होहो के आती है जहां कोई पहाड़ नहीं हैं उत्तर की बायु दिमाग को पुष्ट करती है रंग को चमकाती

है चित्त प्रसन्न और काम की सहायक है उत्तर और दक्षिणकीवायु के स्वभाव के विषय में वैद्यों ने लिखा है कि उत्तर की वायु के प्रभाव पुरुष जीव उत्पन्न होते हैं और दक्षिण की वायु के प्रभाव से स्त्रीलिंग जीव पैदा होते हैं और अरब देशीय उत्तरकी वायुकी निंदा करते हैं क्योंकि इसकेचलनेसे शरदी और मेघा उत्पन्न होते हैं जाड़े के दिनों में और वायु की अपेक्षा अधिक वेग से चलती है अरब देशियों के निकट दक्षिण की वायु उत्तम है क्योंकि इसके गुण उत्तरीय वायु के विपरीत हैं दक्षिण की वायु गर्मतर है क्योंकि यह मध्यरेखा पर बहती है वहां अत्यन्त गर्मी होती है क्योंकि सालमें सूर्य्य वहां दो बार जाता है और वहां से दूर भी नहीं होता इसी कारण वहां गर्मी अधिक होती है और दूसरा समाधान यह है कि दक्षिण में समुद्र बहुत हैं और सूर्य्य की गर्मी उनसे निकलती है और बहुधा अंजीर के भाफ़ उस समय दक्षिण वायुलिये होतीहै सो वह अंग में आलस्य उत्पन्न करतीहै शिरको भारी और आंखों को धुंधली करती है ॥

बहुधा दक्षिण की वायु चलने के समय समुद्र में अँध्यारा सा छाजाता है उत्तरीय वायु के समय यह दशा नहीं होती उत्तरवायु को साफ़ करता है और समुद्र के धरातल को बराबर करता है और दक्षिण वायु को खराब करता है और समुद्र के धरातल को नीचा ऊंचा करता है यह एक आश्चर्य्य की बार्त्ता है कि जबदक्षिण की वायु चलती है तो पानी को गरम. खुश्क करती है और जब उत्तरीय वायु चलती है तो उसको अपनी गर्मीसे गलाती है जैसा कि वैद्योंने कहा है कि उत्तरीय वायु चलने के समय समुद्र में गर्मी आय टिकती है जैसा कि जाड़ों में देखा जाता है कि सत्यहीपृथ्वी के अन्तः करण में गर्मी भरजाती है इसी से पृथ्वी के भीतरकापानी गरम रहता है परन्तु दक्षिणीय वायु चलने के समय वह गर्मी बाहिर निकलती है जैसे गर्मी के दिनों पानी के भीतर से गर्मी निकलती है और पानी अपने आप शरदहै अरब निवासी दक्षिणकी

बायुको धन्यवाद देते हैं क्योंकि सिवाय इस बायु के और किसी बायु के चलनेसे पानी नहीं बर्षता सबा एतदाल से निकट है जैसा कि बहना उसका अव्वल सुबाकी शरदी लिये है क्योंकि बहतरीकी ठौर से होकर वह आती है सूर्य्य की दूरी के कारण जो बायुरात को चलती है अत्यन्त अच्छी होती है परन्तु उसके चलने का समय अतिही थोड़ा है क्योंकि सूर्य्य की किरणें निकलने तक है बस सूर्य्योदय होतेही उसको दूर करता है निदान सूर्य्य निकलतेही उसको गरम कर देता है अन्त को साधारण होजाती है और इस-को बादसहरी भी कहतेहैं इसकाबहना आनन्दसे भराहोताहै इसके बहनेसे मनुष्यको सोनेकेउपरांत आनन्दमालूम होताहै रोगी लोगों को आराम होता है निदान इसी बायु का समय शहर कहाता है क्योंकि न तो इससमय गरमी होतीहै और न शरदी होती है और बबूरिया नाम बायु सबा के बिपरीत है यह बायु सूर्य्यास्त होने के समय बहती है तिस पीछे रात होती है और सबाकी गरमी बबूर को गरम नहींकरती है इसीकारण दिन के अन्त को बहतीहै और रातकोनहीं चलती क्योंकि उससमय सूर्य्यउसकेस्थानपै जापहुंचता है और उसकी भाफों को गलाता है सो इसीसमय से इसका चलना अति कमती होजाता है इसका स्वभाव सबा के विरुद्ध है इसका बर्णन तहक़ीक़ मवसूत और रोशन कियागया है आगे ईश्वर जानें ॥

इति

अद्भुत स्वभाव बायों के ये हैं कि जैसे जो बायु आवाजोंसे नि-कलती है वह भाफ और धुआं से खाली है और वृक्षों को फलाती है और खेती को चैतन्य करती है और ज़ारकी खेती को सुखाती है और जीवों की प्रकृति को बदलती है कहते हैं कि हवा पृथ्वी के अन्तःकरण में जाके उगाती है और मनुष्यों के शरीर में आलस्य लाती है और बलवान् निर्बल और रंग को पीला करती है और कोई २ हवा ऐसी है शरीर को पुष्ट और अंगों को बलवान् करती

और रंग को चमकाती है और अद्भुत बायु वे हैं कि किसी मेघ को तो बन्द और किसी को फैलाती हैं॥

फ़सल गरजन और बिजली आदि के विषय में॥

बिद्वानों की बाक्य है कि जब सूर्य पृथ्वीपर चमकता है तो पृथ्वी में जो अग्नि का अंश है सो गलजाता है और अजजाय अ रज़ी अर्थात् वे अंश जो किसी दूसरी वस्तु में होके प्रकट होते हैं उनके साथ मिलजाते हैं और इनदोनों के मेलसे धुआं उत्पन्नहोता है और इन धुओंसे समुद्र के पानी को सहायता मिलती है तब पानी और धुआं दोनों मिलके ऊपर को ऊंचे उठते हैं वहां ये धुआं बँधकर बादल में घिर जाते हैं उस समय जो वह धुआं अपनीही गरमी में रहा तब तो ऊपरही को बढ़ने का अनुमान करता है और जो शरद होगया तो नीचे पृथ्वीकीओर गिरने लगता है उससमय बादल के टुकड़ों को बड़े बेग से तोड़ता है तो उसीसे गरजन का शब्द होता है और कभी उस अग्नि की गरमी से जो उसमें है अग्नि का ज्वाला प्रज्वलित होता है वही बिजली चमकती है जो वह अग्नि का अंश पतला है तब तो चमक के ऊपरही रहजाती है और जो गाढ़ा है तो वह बिजली हो गिरती है जिसको लोग बिजली अथवा चिर्री अथवा गाज कहते हैं और इसी को हम लोग इन्द्रका बज्रकहतेहैं जहां जिस बस्तुपर यह गिरती है उसको जला के भस्म करदेती है कभी तो ऐसा होता है कि लोहे को गलातीहै और लकड़ी को कुछ नुकसान नहीं पहुंचाती और कभी सोने को गलाती है उसके कपड़े को कुछ हानि नहीं पहुंचाती कभी पहाड़ों पर गिरके टुकड़े करदेती है कभी समुद्र में गिरके जल चारी जीवों को भस्म करदेती है विदितहो कि गर्जन और चमक बिजलीदोनों साथही होती हैं परन्तु बिजली गिरने के पहिलेही दृष्टि आती है क्योंकि उसका देखना आंखका काम है और सुनना कानोंकाकाम है और प्रकाश की चाल बायुसे अतिही शीघ्र है इसलिये प्रकाश प्रथम दिखाई देता है और शब्द पीछे सुनाई देता है क्या तुमने

धोबियों को नहीं देखा कि प्रथम तो देखते हैं कि कपड़ा पत्थरपर पहुंचगया तिसके उपरांत शब्द सुनाईदेता है गरजन और बिजली यों नहीं होते परन्तु जाड़े के दिनों में भाफ और धुआं कम होनेके कारण होते हैं और यहीकारण है कि बारिद देशों में पायेजाते हैं और बरफ गिरने की ऋतु में नहीं होते उसका कारण यह है शरदी धुआं वाले भाफों को बुझा देती है और जब बर्षा अधिक होती है तो बिजली गिरतीहै किस हेतुसे कि बादल के अंग कड़ेहोजाते हैं इसका कारणयहहै कि जबबादल कसीफ होजाताहै और पानीउस-में भराहोता है तो जबबलकर बेगसे पानी निकलता है तो ऐसा मालूमहोताहै कि कदाचित् पहिले इसको कोईरोकेथा इसीसे पानी जमगया और अब रोक मिटगई इसीसे इतने बेगसे बहा है और इसतर्कणाका समाधान यह है जैसे कोई अपनी हँसीको रोके तो अवश्य उसको ऐसे ज़ोरसेहँसीआवेगी कि उसको रोक न सकैगा॥

नज़र चौथी पानीके गोलाकारके विषय में॥

पानी एक स्वरूप वसीत अर्थात् ऐसा लम्बा चौड़ा है जिसमें कोई दूरी बस्तु नहीं मिली है इसका स्वभाव शरद है और तरीसे भरासाफ़है और बायुके नीचे मकानकी ओर चलता है और पृथ्वी के ऊपर है बिद्वानों के निकट इसका स्वरूप गोलाकार है उसके सिद्ध करनेमें यह दृष्टान्त देते हैं कि जैसे कोई मनुष्य जहाज़ पर चढ़के किसी पहाड़के निकट पहुंचै तो प्रथम उस पहाड़को उँचाई दृष्टि आवेगी तिस उपरान्त निचाई चाहे कितनाही उस समुद्र से दूरी पै हो जो यह पूर्बोक्त बर्णन सत्य न होता तो उँचाई नहीं किन्तु उसको निचाई प्रथम दृष्टि आनी चाहिये थी परन्तु पानी का गोलाकार होना निस्सन्देह नहींहै क्योंकि ईश्वरने पृथ्वीको जीवों का आधार बनाया है और निज करके मनुष्य जो सृष्टिमें सर्बोपरि है उसके निवास की ठौर नियतकिया है और यह तो प्रकटहै कि जीव बिना बायुकी सहायता के उड़नहीं सक्ते क्योंकि पक्षियों को श्वास लेनेको आवश्यकता अधिक है इसलिये ईश्वर ने पृथ्वी को

शिखा और शृङ्गसहित बनाया जो पृथ्वी की पृष्ठपर प्रकटहैं और यह कुछ इसकी दलील नहीं कि पृथ्वी का स्वरूप पानी के स्वरूपवतहो इसलिये उस ऊँचाईको तो पशुओंका निवासबनाया और पृथ्वी और गारोंको जलचारी जीवोंका वासा बनाया और प्रत्येक तत्त्वअपनी नियत सीमामें घिराहै परन्तु पानी जो ईश्वरकी आज्ञासे पृथ्वीको चारोंओरसे कसेहै वह अलगहै और तर्कशास्त्रों के समाधान से सिद्धहोचुका है॥ पानी दोप्रकारका होताहै एक मीठा और दूसरा खारी॥ इनमें से प्रत्येक में एकगुण है जिसमें खारी पानीका खारीपन तो अजजाय अर्जीके कारण है जो सूर्य की उष्णता से जलके आगमें मिलगयाहै उसीसे पानी खारीहो गया और जो समुद्रका पानी मीठा रहजाता तो सूर्यकी उष्णता पाकेअवश्य बदलजाता और बहुतदिनतक भरारहनेसे मीठापानी सड़जाता और यह समुद्रका पानी खारीही होने के कारण बहुत दिनोंतक एकरस बनारहता है और जो समुद्रका पानी खारी न होता किन्तु मीठाहोता तो सड़के बायुमें अति दुर्गंधि पृथ्वीमें चारों ओर फैलती जिससे सम्पूर्ण पृथ्वी की बायु खराब होजाती वही हुलका और महामारी का कारण होती तो समुद्र सृष्टिका नाश करता इसीसे ईश्वर की निर्दोष बुद्धिने शोचा कि समुद्र का पानी खारीहोना चाहिये जिसमें यह दूषण मिटजाय और इसकेसिवा खारीपानी में अम्बरहोता है और बहुत से लाभ खारीपानी में हैं जिनका बर्णन ईश्वराधीन बहुत जलदी किया जायगा और जवा- हिर अरज़ से जो मलादि पैदाहोते हैं उनसे साव और मुशकिला आदि रोग अच्छेहोते हैं॥ हज़रत जिबरईल ने जमजम के पानी को साफ किया उससे सबप्रकार के रोग अच्छेहोते हैं लिखाहै कि जितने पानियोंको वैद्योंने परखा है जो सबका गुण एकठौर किया जाय तो जमजम के पानी के गुण के सौवंभाग की बराबर भी न होगा अजबके पानी पीनेका बड़ालाभ है क्योंकि वह आयुवर्द्धक है मीठेपानी में वह शक्ति है कि जो उसमें सृष्टिके पदार्थ मिला के

जाय तो जबतक उसमें कोई बस्तु उसका स्वाद पलटने के लिये मिठाई अथवा खटाई कीसी न मिलावे तबतक उसको नहीं खासक्ते और उसका रंग और स्वाद कोई नहींहै और एक अद्भुत बात यह है कि जितने पदार्थ ईश्वरने उत्पन्न किये हैं वे खानेकेयोग्य नहीं होते जबतक उनमें कुछ कमती बढ़ती न कियाजाय परन्तु हां पानी है जिसके लिये कोई यत्न नहीं करनी पड़ती ईश्वर ने इस पानी को अपनेही इलाज पर रक्खा है और सूर्य्य का गुण उसका सहायक नियतकिया है कि जहां चाहे तहां बायुके द्वारा उस पानी की बर्षा करै और नदी नाला झील ताल कुवां मनुष्यों की आवश्यकतानु-सार बहाता भरता है और जो मनुष्य चाहे कि मीठे पानीसे खारी पानीनिकालें तो बड़े परिश्रमका काम है॥

क़सलदरियासें फिरनेके बिषयमें॥

यहउस ईश्वर अद्वैतकी अद्भुत मायाहै कि समुद्रको पृथ्वीके चारों ओर रक्खा जो ऐसा न होता तो बुद्धि से मालूमहोताहै कि सम्पूर्ण धरतीको डुबालेता कहींसूखीठौर न रहती जो ऐसाहोता तो ईश्वर की अखण्डित बुद्धिमानी झूठी होजाती जब ईश्वर ने जीव और बनस्पति की सृष्टिरची तो उससमय उसकी परम चतुरता ने यह बात ठहराई कि कौन भाग पृथ्वी का पानी से खुला रहै जिसमें संसारी लोग अपने रहने के लिये मकान बनासकें इसलिये जिस ओर सूर्य्य गरमहैं उसओर पानी भी गरम रहताहै औ पानी का यहहाल है कि जब गरमहोता है तो उसओर को आप खिचता है और जिसओर को खिचताहै उसओर को पानी अधिक होताहै तो दूसरी ओर अवश्य पृथ्वी सूखी रहजाय और वह ओर सूर्य्य से दूरहै और जिसओर सूर्य्य निकटहै वहदिशा दक्षिणहै और जिस दिशा से सूर्य्य दूरहै वह दिशा उत्तर है इसलिये समुद्र दक्षिण की ओर होजाता है और उत्तर की ओर सूखजाता है इसलिये ईश्वर की यह बुद्धिमानी सदा के लिये होजाती है जो संसारकी कृत्तिही कार्य्य कर्त्ता होजाती है॥

इनटापुओं में से बहुधा बड़े और छोटेहैं और कोई२ मनुष्योंसे बसे भी हैं और उनमें खेतीहोतीहै और वहां गांव और शहरआबाद हैं और टापुओं में से ख़राबहैं वहां जंगल और बियाबान और मैदान और पहाड़हैं और जंगलीजीव और बहुधा भेड़ वबकरी और ऊंटादि उपयोगी जीव भी रहते हैं जिनकी गणना ईश्वर के सिवा और कोई नहीं करसक्ता और समुद्रोंमें से कोईछोटे औरकोई बड़े जिनमें से कोईमीठे और कोईखारीहैं और इनटापुओं में अद्भुत जीवरहतेहैं जिनका व्यौरावार वर्णन ईश्वराधीन किया जायगा॥

फ़सल अद्भुत समुद्रों के विषय में॥

समुद्र के विषय में ये थोड़ीसी बातें हैं कि ऊंचाहोना और लहरैं उठना और गरमहोना जो समयानुसार ऋतु के कारण महीना के आदि अन्त में हुआ करतीहैं पानी ऊंचा होने का तो यहकारण है कि जबसूर्य्य ने स्वच्छजल में प्रवेश किया और वह तहल्लील हुआ अर्थात् गला तो जितनी ठौर वहां है उससे अधिक चाहिये तब उससमय चारोंओरको फैलनेलगताहै अर्थात् पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण और ऊपर को भी तब उस समय इन समुद्रों के किनारे चौबायु प्रकट होती हैं और जो किसी समय किसी समुद्र में चन्द्रोदयसेबाढ़ होती है तो कहते हैं कि इन समुद्रों में संग खारा है सो जब चन्द्रमा इन समुद्रोंके कनारों पर चमका तो चन्द्रमा की किरण उनपत्थरोंपर परती हैं तो उन पत्थरोंपरसे चन्द्रमाकी किरणैं फिर बाहिर को उलटी लौटती हैं सो उसी जोर में समुद्रका पानी गरम और पतला होजाता है इसलिये अधिक ठौर के लिये लहरैं लेता है और कनारों पर उबलता है यहां तक कि उन लहरों से जहां तहां छोटी२ नदियां होजातीहैं और अच्छी बस्तुओंको अपनी ठौर लाता है और यही हाल लौटने के समय भी होता है और सदैव यही हाल रहता है जब तक चन्द्रमा आसमान के मध्य में रहता है और जब चन्द्रमा पश्चिम को झुकताहै तो पानीमें शरदी आजाती है और गाढ़ा होके अपनी गहराई की ओर को झुकता है

फिर यथापूर्वक होजाता है और सदा यही हाल रहता है और जब चन्द्रमा फिर पूर्व में उदय हुआ तो समुद्र की बाढ़ फिर होने लगती है और जबतक चन्द्रमा मध्य आसमान में रहता है तबतक यही हाल रहता है और जब मध्य से उतर के पश्चिम में गया तो बाढ़ कमती हुई और पानी गाढ़ाहोके लौट आता है और जबतक पूर्व में अपने नियत स्थान में न आवे तबतक समुद्र सावधान रहता है बैद्यलोग इसके घटाव बढ़ाव के बिषय में कहते हैं कियह दशा समुद्रकी ख़िलतों के कारण होती है जैसे क़िसी के मिजाज़में कफ अथवा पित्त अथवा बात अधिक हो अथवा सौदा हो तो उसी के अनुसार यह दशा होती है और फिर क्रम २ से थँमती है और इसी बिषय में हज़रत रिसलतमाब ने कहा है किजो फरिश्ता पानीका मौकिल है जबवह अपना पैर समुद्र पै धरता है तो बाढ़ होती है और जब उठा लेता है तो घट जाता है निदान अबइस किताब में समुद्र का स्वरूप और उसका नियम और उसके मुख्य का हाल लिखाजाता है॥

(अलवहरुलमुहीत अर्थात् महासागर जो चारों ओर पृथ्वी को घेरेहै)॥

इसका नाम दरिया औकियानूस है यह बड़ा समुद्र है इसी से सब समुद्र निकले हैं इसका कनारा किसीने नहीं देखा काबुल-अहिवार ईश्वर उसपै प्रसन्न हो कहता है कि ईश्वर ने सात समुद्र उत्पन्न किये हैं उनमें से प्रथम समुद्र यही है जो चारों ओर घेरे है इसकानाम दरिया वन्तसहै इसके बाद और दरियाहैं जिनके नाम येहैं काबीस १ मुजलिम २ असम ३ मरमास ४ साकिन ५ और पाकी ६ इन समुद्रोंमेंसे एक दूसरेको घेरे है और समुद्र जो पृथ्वी परदेखे जाते हैं वे सब इनकी अपेक्षा आखात और नदी ऐसे दिखाई देते हैं इन समुद्रोंमें जीव इतने हैं कि जिनकी संख्या ईश्वर के सिवा कोई दूसरा नहीं जानता॥

अबूउल्रेहाख़्वारज़िमी लिखताहै कि पश्चिमका समुद्र जो ८८

रूसदेश के किनारे है उसका नाम दरियाय मुहीत है और यूनानी भाषा में औक़ियानूस है॥

इसमेंकोई आखातनहीं किन्तु किनारेके निकटसे कुछराह उत्तरकी ओर निकली है उसीराह में एकआखात वन्तसनाम है यहतोनाम यूनानी लोगोंका है और उनकेसिवा उसकानाम बहर तरावरवीदा कहतेहैं और वह आखात कुस्तुन्तुनिया के क़िलेके पास जाके तङ्ग होजाता है और दरिया शाम से मिलकर उत्तरकी ओर होके सक़ालबाकी धरतीके निकट पहुंचतीहै वहां से एकअति बड़ाआखात निकलकर सक़ालिब के उत्तर और पहुंची है और वहां बलगार में मुसल्मान इसकानाम लौरङ्ककहतेहैं तिसउपरान्त पूर्वको फिर के तुर्किस्तानकी धरती में से कुछतो धरती और कुछपहाड़ोंमें होके पूर्वमें चीनके चारोंओर गयाहै इससमुद्र से एक अतिबड़ा आखात निकला है और इस समुद्र का नाम ठौर२ पर अलग २ है पहले चीन की धरती पै है वहां इसका नाम चीनका समुद्र है तिस पीछे हिन्दुस्तान की धरती में हिन्दका सागर और यहां दो आखातहुये जिनमें से एककानाम फ़ारसका समुद्र और दूसरेका नाम दरिया कुलजुम अर्थात् लाल समुद्र है और अन्त को दरियाय बरबर में इसकाअन्त होताहै और अदन से सफ़ालारङ्गतक यहसमुद्र पहुंचताहै इससमुद्र में मारेडरके बहुतकम जहाज़ चलतेहैं तिस उपरान्त यहसमुद्र चन्दपहाड़ों पै पहुंचता है जिनकेनाम का सम्बन्ध चन्द्रमा से रक्खा और दरिया नील और मिश्रकी ओर होके इसी तरह सोदान मग़रबी की धरतीमें होके इन्दलस के देशहोके महासागर में जामिलाहै इससमुद्र में इतनेटापू हैं कि जिनको ईश्वरके सिवा और कोई नहींजानता और रोदस और सकलवा नाम टापू भी इसीसमुद्र में हैं इसके दक्षिणओर जङ्ग और सरनद्वीप और सकुतरा और वहजान और रावहनाम टापूहैं परन्तु दरिया ख़िरज़ के पास कोईटापू नहींहैं और न इसतरह के समुद्रमेंसेहैं यह महासागर गोलाकार है जो कोई इसमें घूमाचाहे तो इसके किनारों पै

होके सम्पूर्ण समुद्र में फिर आवेगा और सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर १०८

अब इस वार्ताका अन्त इसकथातक पूराकरताहूं जो रहमतुल्ला-अलेह समरकन्दीने अपनी किताबमें लिखाहै ज़ुलकरनैनने चाहा कि इससमुद्र के किनारे का पता लगावें॥

इसबिचार से जहाज़ पर सवारहोके आज्ञादी कि बराबर एक वर्ष पर्य्यन्त इसका पर्य्यटन करें कदाचित् इसका कुछ यथार्थ हाल मालूम होजाय परन्तु वह जहाज़ साल भर फिरतारहा पानी की पृष्ठि के सिवा कुछदृष्टि न आया उससमय लौटनेका अनुमानकिया तो जहाज़वालों ने कहा कि अच्छा एकमहीना और सैरकरलीजिये कदाचित् कहीं पता लगहीजाय जिससे कुछ आने की सी होजाय तब एकमहीना और फिरे तो अकस्मात् एक जहाज़ मिला उस पै थोड़ेसे मनुष्य थे परन्तु वहां यह कठिनता आयपरी कि वे आपस में एकदूसरे की भाषा नहीं समझते थे तब ज़ुलक़रनैन के जहाज़ परसे एकमनुष्य उनके जहाज़में से एकस्त्रीलाया उसके साथ रति करनेसे बालक उत्पन्नहुआ वह अपने मातापिताकी भाषा समझता था तो उसलड़के को मध्यस्थ बनाके वार्ता करनेलगे जब लड़केने अपनी माता से पूछा कि तू किस तरफ़ से आईहै तब उसने उत्तर दिया कि उसतरफ़ से फिर उसनेपूछा कि किस प्रयोजन से आई तब उसने उत्तरदिया कि मुझे हमारे बादशाह ने भेजाथा कि इस समुद्रके समाचार लेआव जब फिर लड़केने पूछा कि तुम्हारा बादशाह वहां कौन है तब उसने उत्तरदिया कि तुम्हारे बादशाह की अपेक्षा वह बादशाह महाप्रतापीहै और तुम्हारे देशसे देश उसका बहुत बड़ाहै और इसदेश की अपेक्षा वहां प्रजा अधिक है॥

शेष ईश्वर सत्य जाननेवालाहै बहरचीन अर्थात् चीनका समुद्र यह समुद्र महासागर से मिला है पूर्वसे कुलज़ुम और कुलज़ुम से पश्चिम तक भराहै इसकी बराबर कोई समुद्र दूसरा बड़ा नहीं है इस समुद्र में ज्वारभांटा का बड़ा ज़ोर है और गहराई भी इसकी

अत्यन्त है काबुल अहिवार ईश्वर उसे प्रसन्न हो कहता है कि हज़रत ख़िज़िर के साथ कुछ लोग जहाज़ पै सवार हुये जब इस समुद्र पै पहुंचे तो हज़रत ख़िज़िर ने कहा कि मुझे पानी के नीचे जाने दो तब उन्होंने कहा कि अच्छा तब हज़रत ख़िज़िर कुछ दिन पानी के नीचे रहे जब पानी से बाहिर निकले तो लोगों ने पूछा कि आपने पानी में क्या २ देखा इस पै हज़रत ने उत्तर दिया कि मुझे समुद्र के भीतर एक फरिस्ता मिला तो उसने मुझसे पूंछा कि हे मनुष्य तू कहां जाता है उसे मैंने उत्तर दिया कि इस समुद्र की थाह लेने को कि कितना गहरा है इस पै उस फरिस्ते ने उत्तर दिया कि यह बात तो असम्भावि है इसकी गहराई तुझे किसी प्रकार मालूम नहीं होसक्ती क्योंकि एक मनुष्य हज़रत दाऊद के समय में इसमें गिरा था वह अभी तक पेंदी में नहीं पहुंचा है जिसको गिरे तीन सौ वर्ष वीत गये हैं ॥

दरियाई लोगों की जबानी मालूम होता है कि इस समुद्र में फ़ारस के समुद्र के समान ज्वारभांटा आया करता है जिसका बर्णन आगेकर आये हैं बैद्यों की बाक्य है कि इस ज्वारभांटा का कारण यह है कि पृथ्वी गोलाकार को समुद्र घेरे है अबुउलरेहां ख्वारज़िमी अपनी किताब आसारवाकिया में लिखता है कि चीन समुद्र में जब तूफ़ान आनेवाला होता है तो वहां के निवासी आगे से सचेत होजाते हैं किस हेतु से कि समुद्र की गहराई से एक मछली निकलती है और जब तूफ़ान भरजाता है तो एक प्रकार की चिड़िया है सो समुद्र से निकल के जहां घासफूस इकट्ठा होता है वहां आय समुद्र के किनारे अण्डा देती और इसके अण्डा देने के समय तूफ़ान ठहर जाया करता है इस समुद्र में इतने टापू हैं जिनकी गणना ज़बान से कहने और कलम के लिखने से बाहिर है इस समुद्र में मोती भी अच्छे २ बड़े दानों के निकलते हैं इस समुद्र के किसी टापू में मरवारीद बहुत पैदा होते हैं जहां कि मीठा पानी है और अद्भुत स्वरूप के जीव यहां पाये जाते हैं और इसके सिवाय इस समुद्र में जवाहिरात की

खानभी बहुत हैं निदान अब हम किसीद्वीपके समाचार लिख-तेहैं और समुद्र के अपूर्व अद्भुत जीवादि को जिनको हमने नहीं देखाहै उनके समाचार अपने परम मित्रोंको सुनातेहैं ॥

वर्णन चीन समुद्र के द्वीपों के विषय में ॥

इस चीन समुद्र में बहुत से द्वीप हैं उनमें कोई तो प्रसिद्धहैं और हां मनुष्य भी आते जाते हैं और बहुत से प्रसिद्ध नहीं हैं उनमें १ एक द्वीप अत्यंत बड़ा है और उसका नाम राइह है यह ऐसा ड़ाद्वीप है कि इसकी सीमा चीनकी सीमातक है और शहर उसके हिन्दुस्तान की सीमा से मिलगये हैं वहां के बादशाहको महाराज कहते हैं ज़करियाउलज़ाज़ी के बेटा महम्मदने लिखा है कि महा-राज के कोषमें दोसौमन सोना नित्य खिराज का आता है और मन वहां का छःसौ दिरहम का होता है और दिरहम साढ़े तीन माशा का होता है (बिदित होकि अँगरेज़ी सेर के हिसाब से जो सेर अस्सी रुपैया वेहरेदार भरका होता है और यह रुपैया साढ़े-ग्यारह माशा का होताहै) नित्य इससोने की ईंटें बनवाकर पानी में डाल देते हैं मानों यह पानी उस राजा के ख़ज़ाने की ठौर है इबनुलफ़क़ीहा कहता है कि मैंने इस द्वीप में बहुत से जीव ऐसे अपूर्व देखे कि जिनके समान दूसरी ठौर नहीं देखा उन जीवोंमेंसे ऐसी बिल्ली देखीं कि उनके पर कानोंसे पूंछतक चमगादर कैसे थे और सूरत उनकी यह है ॥

तसवीर नम्बर १०९

दावल यह एकप्रकारकी बकरियां होती हैं यहजीव बैलके सदृश होता है इसका रंग लाल होता है और शरीर में श्वेत बुन्दे होतेहैं और मांस इसका खट्टा होता है और सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ११०

(दावहज़िबाद) दावह बिल्ली के सदृश होता है इससे जिबाद पैदा होता है ॥

तसवीर नम्बर १११

और हिन्दी में इसको मुश्कबिलाई कहते हैं इनके सिवा इस द्वीप में एक पहाड़ है जिसको नसवान कहते हैं जिसमें सांप बहुत होते हैं और बहुधा ऐसे सांप अजगर हैं जो हाथी और भैंसे को निगल जाते हैं इस द्वीप में ऐसे बन्दर बहुत हैं जिनका पेट सफ़ेद और पीठ कालीहोतीहै खाकानके पोते और पहियाके बेटे ज़करिया ने लिखाहै कि मैंने इस राइह द्वीप में ऐसे जीव देखे हैं कि जिनके भोजन वस्त्र तो मनुष्य केसे और पंख पक्षियों के से होते हैं जिनके बलसे एक वृक्षसे दूसरे पै उड़जातेहैं और बातें भी करते हैं परन्तु उनकी बात समझ में नहीं आती इनकी वार्त्ता ज़रज़ोज़ नाम पक्षी की सी होतीहै इनका रंग श्वेत काला और हरा होताहै और एक प्रकार के और देखने में आये जिनका रंग श्वेत लाल और पीला होताहै उनकी वार्त्ता अपूर्व होतीहै सूरतें यहहैं ॥

तसवीर नंबर ११२

और यह भी कहताहै कि उसी द्वीप में हरे और मुनक्कश तोते भी देखे हैं और इस द्वीपमें एक छोटेसे पक्षीका अपूर्वस्वरूपहोता है शरीर तो उसका पढुकी से छोटा होता है परन्तु चोंच उसकी पीली होती है और दोनोंपंख उसके काले और पेट श्वेत और दोनों पांव लाल और बोली भी भली होती है महम्मदीनबहुरुल रकी कहता है कि इसद्वीप राइह में कोई २ फूल लाल श्यामता लिये हुये देखेहैं मैंने थोड़े से फूल श्याम चुनके अपनी चादरमें रखलिये थोड़ी देरमें देखा तो चादर में अग्नि मालूमहुई सो फूल तो जलकर राख होगये परन्तु चादर साबितरही यह हाल देखके वहांकेमनुष्योंसे इसके यथार्थ समाचार पूछा तो उन्होंने कहा कि इन फूलों में बड़े २ फ़ायदा हैं परन्तु यह अनहोनी है कि कोई इनको बाहर निकाल लेजाय ज़करिया राजीकाबेटा महम्मद कहताहै कि इसी द्वीप में एक कपूरका वृक्ष ऐसा बड़ाहै कि जिसकी छायामें एकसौ मनुष्य बैठरहैं इस वृक्षके ऊपर से चन्द प्याला कपूर टपकता

और बहुधा मनुष्य इस वृक्षके नीचे छेद करते हैं वहां से गोंद के समान कपूर निकल जमजाताहै जबवह कपूर निकाल लियाजाता है तो वहवृक्ष सूखजाता है एकद्वीप रामीनामक है यहां बहुतसी अपूर्व आश्चर्य्यक वस्तुहैं इब्नुलफ़तिया ने लिखाहै कि इस द्वीप में एक जातके स्त्री पुरुष हैं वे शीशसे लेकर पांवतक नंगेरहते हैं उनकी वार्त्ता कोई नहीं समझता है और ये वृक्षों पर रहते हैं और इनके शरीर के ऊपर ऐसे लम्बे २ बाल होते हैं कि उनके गुप्तांग छिपजाते हैं और इसजात के मनुष्य इतने हैं कि उनकी संख्या नहीं होसक्ती वृक्षों के फलोंको खातेहैं और मनुष्यको देखकरभाग जाते हैं कहते हैं कि इस जमात में से किसीने एक को पकड़ा था और वह उसको अपने रहने की ठौर जहां मनुष्य रहते हैं लेगया परन्तु वह मनुष्यों से न मिला जो तनकभी आंखबचने में भाग २ के जंगल को जाताथा और स्वरूप यहहै॥

तसवीर नंबर ११३

जकरियाके बेटे महम्मद ने लिखाहै कि इसद्वीप में एक प्रकार के मनुष्य होते हैं कि वे नंगेरहते हैं और उनकी वार्त्ता समझ में नहींआती और उनका शरीर चारबीता से अधिक नहींहोता इनके छोटे २ बाल लाल रंग के होते हैं और ये वृक्षों पर जाने की ढब अच्छी जानते हैं महम्मदराजी कहताहै कि इस द्वीप में गैंड़ा और भैंसा बहुत होते हैं इसद्वीप में बेत और मजीठ के वृक्ष बहुत होते हैं और इन वृक्षोंका बीज बोयके जमाते हैं और इनका फल खनूब कासा और स्वाद अलक़म कासा होताहै सूरत गैंड़ेकी यहहै॥

तसवीर नंबर ११४

इन द्वीपों में से एकद्वीप वाक़वाक़ नामक है यह द्वीप राइह के द्वीपसे मिलाहै लिखाहै कि यहां एक स्त्री राज्यकरती है और इस द्वीप के आस पास एकहज़ार सात सौ द्वीप निकट २ हैं और ये सम्पूर्ण द्वीप उसी स्त्री के आधीन हैं मुबारक़सैरफ़ी के बेटा मूसाने लिखाहै कि मैंने इसद्वीप की आधीश्वरी को देखाहै कि वह तख़्त

पर नंगी शीशपर सुवर्णका क्रीटधरे हुई बैठी थी और इसकी
में चार हज़ार स्त्री अभोगित जिनके मुखारबिन्दु इन्दु के सम
वर्त्तमान थीं इस द्वीप में एकप्रकार का वृक्षहै जिसके फलोंसे व
वाक़ शब्द निकलताहै और इसशब्दको वहांकेनिवासी भलीभां
समझते हैं जकरिया के बेटा महम्मद का लेखहै कि इस द्वीप
भूमि अत्यन्त फलदायक है यहांतक कि वहांके वासी अपने घो
की ज़ंजीरें सोनेकी बनाते हैं और बन्दरों की भवँरकली सोने
और कपड़ा भी सोने के तारों से बुनवाते हैं वाक़ वाक़ के वृक्ष
स्वरूप यह है ॥

तसवीर नम्बर ११५

इस द्वीप में आबनूस का वृक्ष होता है जिसकी प्रत्येक डा
पत्थर के टुकड़ा समान होती है इस वृक्ष के पत्ते हरे होते हैं अ
जबतक यह वृक्ष पौधा रहता है तबतक इसका रंग श्वेत होता
और पुराना होनेपैकालारंग होजाताहै ॥

इन द्वीपोंमें से एकद्वीप सलाही नामकहै यहां की भूमि आनंद
दायक और रमणीक है जो मनुष्य उसओर जाताहै उसका चि
वहां से निकलनेको नहींचाहता है यहां के अपूर्व पदार्थों में अंगू
वरात,शहब और शाहनिहां है इब्नुलफ़तिया अपनी किताब मे
लिखताहै कि इसद्वीपका हाकिम प्रतिसंवत चीनवाले बादशाहको
भेंट भेजताहै यह बड़ेआश्चर्य्य की बातहै कि जो किसी साल में
यहांका हाकिम चीनके आधीश्वर को सौगात न भेजे तो चीन
दुर्भिक्ष होजाताहै और उसवर्ष में वहां अवर्षण होजाताहै उन
एक नवान नामक द्वीपहै यहां एकजाति के मनुष्य नंगे श्वेत
अत्यन्त स्वरूपवान् रहते हैं और बहुधा पहाड़ों की चोटी पर
डरसे रहते हैं कि कदाचित् उनको कोई स्वरूपवान होनेके कार
पकड़ न लेजाय और ये लोग मनुष्य का मांस खाते हैं और इ
पहाड़ के पीछे दो बड़े लम्बे चौड़े द्वीपहैं और उनमें काले रंग
लोग रहतेहैं जिनके शरीर आदनामक जातके से बड़े होते हैं उन

पांव ऊपर के शरीर की अपेक्षा छोटे एकगज के अनुमान होते हैं और उनके चेहरा लम्बे होते हैं और सम्पूर्ण जाति मनुष्यों का मांस खाते हैं एक द्वीप अनूराननामकहै यहांके अपूर्वपदार्थोंमें गैंड़ा होताहै और एक प्रकार के बन्दर बलवान् और शरीर उनका गदहाके समान होता है कहते हैं कि यहां सिकन्दर जुअालकरीन के जहाज़ ठहरे थे उन्हों ने इस द्वीपमें एकजाति को देखाथा किजिनके हाथ पैर तो मनुष्योंके से और चेहरा कुत्ता और दूसरे मांसाहारी जीवों के सेथे जब ये लोग निकट जा पहुंचे तो वह लोग दृष्टि से छिपगये तो सिकन्दर के साथियों ने जाना कि ये लोग जिनों में से मालूम होतेहैं ईश्वरही इनका हाल जानताहै॥

व्याख्यान अपूर्वजीवों के विषय में॥

इसद्वीपके समुद्र में अपूर्व आश्चर्य्य के जीव दृष्टिआते हैं उनमें से बहुधा जहाज़ियों से सुननेमें आयाहै कि जब इससमुद्रमें कराल तूफ़ान आताहै तो लहरों में काले २ स्वरूपके मनुष्य चार अथवा पांच बीताके बहुत दृष्टि आते हैं मानों वे छोटेक़दके हवशीहैं बहुधा जहाज़ों पर आजाते हैं परन्तु कुछ हानि नहीं करते और किसी जात के इनमें से ऐसे होते हैं जो जहाज़ों पर चढ़आते हैं जब वायु ठीक होतीहै और जहाज़ कुशलक्षेम चलाजाताहै तो जहाज़ियों के हाथ लोहेके पलटे अम्बर बेचते हैं और अम्बर को अपने मुँह से पकरके जहाज़ों तक पहुंचाजाते हैं और इनका व्योपार उस द्वीप में भी है जहां एक जात ज़ंगिमों के समान है और इस जात का नाम महकूईहै और अपने दन्तों से आदिमी की छातीफाड़केखाते हैं उनमें से एक ऐसे काले रंग की जातहै कि जब जहाज़ उनके निकट पहुंचताहै और समुद्र बाढ़पर होताहै तब वहलोग जहाज़ों पर चढ़आते हैं बहुधा सागर के व्योपारियों से सुनने में आता है कि कभी २ समुद्र के भीतर से पक्षियों के समान ऐसा सूर्य्य के सदृश प्रकाश प्रकटहोताहै कि जिसकेदेखनेसे आंखेंचौंधाखातीहैं॥

तसवीर नम्बर ११६

जब यह पक्षी जहाज़ पर आय बैठताहै तो समुद्रकी बाढ़ मिटि-जाती है और वह पक्षी भी दृष्टिसे लोप होजाता है और उसका जाना कोई नहींजानता और उसका आ बैठना तूफानके समयक्षेम का चिह्न है इसके सिवाय ऐसे जीव द्वीपों में रहते हैं कि जिनके शीश बहुतबड़े और रंग भिन्न २ होते हैं और दांत उनके लाल के समान और उनके दोपर होतेहैं और वे जलचारी जीवोंको भोजन करते हैं इनमेंसे कोई२जीव तो ऐसेहैं जो महाभयानक शब्द उच्चा-रण करते हैं और छःमहीनातक द्वीपमें रहते हैं परन्तु इनका भो-जन नहीं मालूम इनके सिवाय एक मछली ऐसी बड़ी होती है जो दोसौ गजसे भी अधिक लम्बीहोती है जिसकी चपेट से जहाज़को डरहोता है इसलिये जब कोई जहाज़ निकलता है और जहाज़ि-योंको यह मालूमहुआ कि यहमछली आपहुंची तब पत्थरोंसे मार-ते हैं और पुकार मचाते हैं तो यह भयानक मछली भागजाती है जब यह मछली अपने दोनोंपर खोलती है तो जहाज़ से बड़ी दृष्टि आतीहै बहुधा यह मछली वाक़वाक़ द्वीपके निकट रहती है इसके सिवाय वहां कछुआ ऐसे बड़े २ होतेहैं कि जिनकीपीठ बीस गज़ से अधिक चौड़ी होती है और स्त्री एकबार हज़ार अण्डा देती है इसके सिवाय एकमछली है कि जिस के शरीर पर छिलका नहीं होता केवल पिण्ड मांस और चरबीका होताहै और सूकरकेसमान उसका चेहरा होताहै और स्त्री की भगके तुल्य उस की भग होती है तिसपर रोमभी होतेहैं ॥

इसके सिवाय एक कैंकड़ा अर्थात् गेंगटा होताहै जब समुद्र से निकलताहै तो एक गज और एक बीताका पत्थर होजाता है और मर जाताहै उस समय लोग उसको लाके सुर्मामें पीसते हैं इसका गुण बहुतों के निकट मुजर्रब अर्थात् परचाया है एक प्रकार की मछली सीला नामहै यह मछली पकड़ने के उपरान्त दो दिन तक जीतीहै तीसरे दिन मरतीहै उस समय इसको मनुष्य बनाय खाते हैं

और जो पकाने के समय इसको देगमें बिना ढकना खुली पकावें तो आंचनहीं लगती औ न मान्स उसका पकताहै इसके सिवाय हरिशता नाम चिड़िया होतीहै जो कबूतर से कुछेक बड़ी होती है तोहफतुलग़रायबकी बाक्यहै कि जब यह पक्षी उड़ताहै तो इसके नीचे एक पक्षी करकर नाम भी जल्दी२ उड़ता है और इस आसरे में रहताहै कि जो ऊपरका पक्षी बीटकरै तो मैं खाऊं क्योंकि उसका भोजन यहीहै और हरिशता उड़ते समयके सिवाय कभी बीटि नहीं करता और करकरनाम पक्षी उसकी बीटके सिवाय कुछ और नहीं खाता है इसके सिवाय एक दाबतुल मुशकहै यहजीव कुछेक बतक के स्वरूपवत होताहै जबवह समुद्रसे बाहिर निकलताहै तो मनुष्य उसका अहेर करते हैं तब उसका पेट फाड़ के एक प्रकार करकत जिसे मुशक अर्थात् कस्तूरी कहते हैं निकालते हैं उस समय उसमें कई तरहकी सुगन्ध नहीं आती परन्तु हां जब वहांसे दूसरी ठौर लेजाते हैं तो सुगन्ध प्रकट होतीहै इसके सिवाय दरियाई सांपोंमें से एक प्रकारके सांप होतेहैं जो समुद्रसे निकल कर हाथी गाय और भैंसादिको निगल लेतेहैं और वृक्ष और पहाड़ोंसे चिपट कर बल करते हैं जिस्में जो जीवों को वे समूचे लील गयेहैं उनकी हड्डी टूटजायँ और उन हड्डियों के टूटनेकी आवाज बाहिर सुनाई देतीहै और सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर ११०

इसी समुद्र में मरवारी दादि अर्थात् अमोल रत्न पाये जाते हैं बहुधा शोभाय मान अपूर्व २ भांति के जीव दृष्टि आते हैं उनमें से बहुत से जीव तो ऐसे होतेहैं जो दो२ सौ गज़के लम्बे होतेहैं और कोई दोसौ बीताके होते हैं और वे जानवर एक दूसरेको खाजाते हैं इस समुद्रमें सदैव लहरें उठा करतीहैं जो कदाचित् इस ओरको कोई जहाज़ आ निकला तो सदा भँवरमें पड़ा रहता है वहां से निकलना तो असम्भाविहै परन्तु नाखुदालोग इसठौरको जानतेहैं जहांतक बश चलताहै वहां इस ओरको जहाज़ नहीं चलाते॥

इस समुद्रकी अन्तवार्त्ता ॥

एक अपूर्व बार्त्ता इस समुद्र के बिषयमें लिखी जातीहै कि जब ब्योपारी लोग जहाज़ पर सवारहोकर चले तो दैवयोग बायु वेग से चलनेके कारण जहाज़की सूधीराह छूटगई और बायुके झकोरा ने कहीं से कहीं लै डाला परन्तु उस जहाज़ का सरदार अत्यन्त बुद्धिमान था और वह अंधाभीथा इसकी आदतथी कि वह जहाज़ पर रस्सों के ढेरके ढेर लादाकरता था इसपै जहाज़ वाले कहा भी करतेथे कि इसके पलटे जो हमारा असबाब लादलेता तो अच्छा था परन्तु वह नाखुदा इनकी बात नहीं सुनता था निदान एक बार उस तूफ़ान में वह सब लोगों से हरबार यह पूछता था कि आपुलोग क्या देखते हैं तब मल्लाह लोग उत्तर देते कि हमको पहाड़ दिखाई देता है ॥ एकबार लोगों ने एकसंग यह उत्तर दिया कि हमको एक कालापक्षी दृष्टि आता है जो पानीके ऊपर फिरता है यहसुन कपतान मूड़पीटने और रोनेलगा तब सबलोगों ने पूछा कि इसका क्याकारण है तो उसने उत्तरदिया कि कोईदम में तुम्हैं मालूम होजायगा ॥ जबतक यहबार्त्ता करिहीरहेथे कि इत ने में हमारा जहाज़ उसीभवँर में जापड़ा जिसको काला पक्षी स मझेथे वे जहाज़ दृष्टिआये जिनके सवार उस भवँरके बीच मारे भूख और प्यासके मरगयेथे ॥ जब हमलोगोंने घबड़ाके अपने प्राणोंसे हाथ धोबैठे तब मुअलिम ने हमारी घबड़ाहट को देखके कहा कि हे साहबो जो आपलोग अपने माल में से आधादेउ तो इसजीव घातिनी ठौरसे कुशलक्षेम बचजावो ॥ हमलोगों ने हारमान आधा देनाकहा उससमय उसने अमित रुपैया समुद्रमें डालदिया तो उस रुपैयेके साथही अमित मछलियां इकट्ठीहोगईं तब हमलोगोंने उस शिक्षक (मोअल्लिम) की आज्ञानुसार मृतकोंकी लाशोंको काटरके रस्सोंमेंबांध समुद्रमें एकतरफ़कोलटकादिया और एकएकसिरा उन रस्सोंका जहाज़ में बांधदिया तो मछलियों ने उन मांसके टुकरोंको निगललिया ॥ उससमय उसशिक्षक की शिक्षानुसार नगारे और

ढोल हमलोग बजानेलगे और एकसाथ हल्लामचाया और मछलियां
भागीं तो मांसवाली रस्सी जो जहाज़में बंधीथी और मांसके टुकड़े
। उनकेपेटमें बस उन्हीं मछलियोंकेसाथ जहाज़भी चला जब उस
जीवघातिनी ठौरसे निकलगया तब शिक्षकने कहा कि रस्से काट
दो तब इसयत्न से हमलोगों के प्राण बचे और नये से जन्महुआ ॥

हिन्दुस्तानका महासागर ॥

यह सब समुद्रों से बड़ा और गहरा है इसका हाल कोई नहीं जानता और इसका मेल महासागर घेरनेवाले से प्रकट है और पूर्वके समुद्र के समान नहींहै ॥ इस समुद्र में दोआखात हैं उनमें से बड़ा आखात फ़ारसका समुद्र है और छोटा आखात लालसमुद्र है ॥ फ़ारसका समुद्र उससे जुदाहोकर उत्तर की तरफ़को जाता है और लाल समुद्र उससे निकलकर दक्षिण की ओरकी तरफ़ झुका है ॥ इब्नुलफ़किया कहता है कि हिन्दकासागर फ़ारस के समुद्र से भिन्न है क्योंकि जबसूर्य मीनराशि में अथवा उसके निकटआता है अर्थात् (नौरोज़सुलतानी)जो प्रथम मेषसे प्रयोजनहै तबबड़ेही ज़ोरसे इसमें ज्वार भाटा आते हैं जिसके डर से कोई जहाज़ नहीं चलासकता और यहदशा उस समयतक रहती है कि जबतक सूर्य तुलाराशि में न आयजायँ और जब सूर्य मिथुनराशि में रहता है तब अधिक तूफ़ानका समय है और जब सूर्य कन्याराशिका होता है तो उससमय तूफ़ान कम होजाता है इसलिये जबतक सूर्य फेर मीनका न हो तबतक समय राह चलने के योग्य नहींहोता है निदान उत्तम समय राहचलनेका वह समय है किजब सूर्य बुर्जक़ौस अर्थात् धनराशि का होता है इस समुद्र में जितने अपूर्व और आश्चर्य के पदार्थ और जीव हैं उनका लिखना असम्भावि है ॥ परन्तु उनका सूक्ष्म वर्णन होता है ॥

व्याख्यान—हिन्दमहासागर के द्वीपोंके विषय में ॥

बतलीमूसने कहा है कि समुद्र में बहुत बड़े २ द्वीप हैं और प्रत्येक द्वीपमें इतनी बसगिति है कि उसकी संख्या नहीं होसकती

परन्तु जिन २ द्वीपों में व्यौपारियोंका आवागमन है वे प्रसिद्ध हैं
उनमें एक द्वीप जो तातार्ईलनामक है वह राइह द्वीप के पास है
इसके विषयमें इब्नुलफ़क़िया लिखताहै कि यहां एकप्रकारके मनु
ष्य होतेहैं जिनका मुख तो चन्द्रमा के समान चमकता है औरबाल
उनके घोड़ेकी पूंछके समान होतेहैं इस द्वीपमें पहाड़ बहुतहैं और
प्रात समय वहां से मधुर २ आवाज़ आतीहै और रात्री को भया
नक शब्द सुनाई देताहै दरियाई राह चलनेवालों का निश्चयहै कि
दज्जाल इसी द्वीपमें रहताहै और इसी ठौर से इसका पताळगता
होगा इसठौर लौंगें बिकतीहैं और उनके बिकनेकी यह रीतिहैकि
जब सौदागर लोग वहां पहुंचते हैं तब जहाज़ों से अपना २ माल
उतार कर किनारेपर ढेरकरते हैं और रातको अपने२ जहाज़ोंपर
जायसोते हैं जब सबेरको जाकरदेखते हैं तब वहां अपने२ मालकी
बगलमें लौंगोंके ढेरपातेहैं तो जिसकोमंजूरहुआ वह अपनामाल तो
वहींछोड़आया और लौंगें उठालाया और जिसकोलौंगें अपनेमालके
पलटे थोड़ीदृष्टिआतीहैं तो मालऔरलौंग दोनोंको वहींछोड़आतेहैं
औरदूसरीरातको फिर आसरादेखतेहैं जब प्रातसमय जाकर देखते
हैं तोलौंगें और अधिकपातेहैं और जो व्यौपारी लोग अनीतिकरके
चाहैं कि अपना माल और लौंगें दोनों लेकर चलदें तो जबतक लौंग
अथवालौंगोंकेपलटे अपनामाल नधरदेयँ किनारेपर तबतकजहाज़
चलनहीं सक्ता व्यापारी लोग कहतेहैं कि एकबार हमने उसद्वीप
में थोड़ी वैसके पीलेरंगके मनुष्य कान छिदेहुये तुर्कोंके समानदेखे
जिनके शीशके बाल लम्बे २ और स्त्रियोंकेसे कपड़ा पहिरेथे वेचट
हमारी आंखोंसे छिपगये हमने उनका बहुत साआसरा देखा और
बहुत दिन तक वहां ठहरे रहे परन्तु फिर उनमें से हमको दृष्टि न
आया और फिर कोई लौंगभी नहींलाया इससे मालूम हुआ कि
वे हमारे सामने आना नहीं चाहते तब फिर हारके चलेआये जब
फिर कई बर्ष के उपरान्त गये तो फिर यथा पूर्वक लौंगेंपाई लौं
गोंका स्वभाव है कि जो वहांखायतो उसे बुढ़ापा कम ब्यापता है

और यहभी कहते हैं कि यहां के निवासियोंका भोजन गेंगटा और बस्तर अलूफ नाम वृक्ष के पत्ते पहरते हैं और फल उसका खाते हैं और जिस प्रकार गेंगटा उस द्वीप निवासी खाते हैं वह जब तक पानीमें रहता है तब तक तो मांसका रहताहै और जहां पानी से निकला वहां तत्काल पत्थर होजाताहै कहतेहैं कि वही पत्थर पीसके सुर्मा में परताहै और ये लोग मछली, नारियल, लौंग और केला भी खाते हैं एक द्वीप सलामता है वहां कपूर, चन्दन, और सम्बुल अधिक होता है कहते हैं कि इसद्वीप में एक मछली ऐसी होती है कि जो पानीसे निकल के वृक्षोंके फल खाया करतीहै और मेवाके स्वाद में विह्वल हो पृथ्वी पर गिरपड़ती है तो उससमयम-नुष्य उसका अहेर करते हैं तोहफ़तुलग़रायब नाम पुस्तक का ग्रन्थ-कार लिखता है कि इस द्वीप में एक महा अपूर्व सोता है जिसमें पानी उबलता है और उसीके निकट एक छेद है उसमें जाता है और जो छीटें उसकी चारों ओर को पड़ती हैं वेही संग ख़ारा हो-जाते हैं परन्तु दिन को तो श्वेत रंगके पत्थर होते हैं और रात को उसका रंग काला होजाता है इसके सिवा एक द्वीप क़सर नामक है यहां एक सफ़ेद महल है जहाज़ वाले जब उसको देखते हैं तो उसको क्षेम और मनमानी बायु का शकुन समझते हैं कहते हैं कि यह महल अतिही बड़ा है परन्तु उसके भीतर का हाल कुछ नहीं मालूम है कहते हैं कि उसमें मृतकोंकी हड्डियां भरी हैं और कहते हैं कि बहुधा अजमके बादशाह इस द्वीप में सेना सहित गए परन्तु ज्योंहीं उस क़सरमें गए त्योंहीं नींदने उनको दबायलिया जो कोई उस क़सरके द्वारपर थे वे इस दशा को देखतेही भाग आये और जो उसके भीतर जा चुके थे विह्वल और अशक्ति होके मर गये॥
(वार्ता) कहते हैं कि सिकन्दररूमी किसीरद्वीपमें ऐसे मनुष्यदेखे जिनके शिर तो कुत्तों कैसे और दांत बाहिर निकले हुए थे अन्तको सिकन्दर के जहाज़ से लड़ाई हुई वहां से क़सर का प्रकाश चमका जहांसे इस जातके मनुष्य निकले थे उस समय सिकन्दरने चाहा

कि यहां जहाज़को लंगर करके इस द्वीप की सैर करै परन्तु रामहकी मति नहीं ठहरी और कहा कि जो इस क़सर में जाते वे वहां अचेत होजातेहैं निदान इसमें अपूर्व बस्तु अमित हैं श्वान बदन मनुष्योंका स्वरूप यहहै॥

तसवीर नम्बर ११८

सुलसा द्वीपके विषय में॥

तोहफ़तलुल ग़रायब नाम पुस्तक में लिखाहै कि ये तीनों द्वीप अपूर्व बस्तुओं के बिषयमें एक दूसरेसे बढ़कर हैं पहिले द्वीपमें रातभर आसमान में बिजली चमका करती है और दूसरे द्वीप आंधीबड़े वेगसे चला करती है और तीसरे द्वीप में सदैव बर्षा रकरतीहै एक सीलोन नाम द्वीप आठसौ कोसकाहै मनुष्य कहते कि सरनद्वीप इसी टापूमें है जहां हज़रत आदम (शिव) बैकुण्ठ आयकेरहेथे और अबतक पूर्वोक्त स्वामी के चरणों के चिह्न इस टापूमें बर्त्तमानहैं सत्य जानने हारा ईश्वरहै॥

तसबीर नम्बर ११६

इस द्वीपमें कई बादशाहहैं जो एक दूसरेसे कुछ सम्बन्ध नहीं रखते किन्तु सबस्वीच्छाचारीहैं ये लोग समुद्रकोसलाहिता कहते हैं और यह टापू चीन और हिन्दुस्तान के बीचमें है और इनदोनो देशोंके अपूर्व पदार्थ यहां आतेहैं और यहांकी सौगात जैसे चीनी चन्दन, सम्बुल, लौंग, मजीठादि दूसरे देशों में जाती है इसटापू में रत्नोंकी खानि हैं और इसटापू में एकपहाड़ है जहां अग्निका ढेर है जो रात्रीको प्रकट होती है और दिनको धुआंसा दृष्टि आता है किसीकी सामर्थ्य नहींहोती जो वहां जाय इसटापू में ऐसे मनुष्य बसे हैं जिनके रङ्ग तो सुनहरेहैं और मुखछातीसे मिलाहै यहांतक कि गर्दनका चिह्नभी नहींप्रकटहै इसटापूमें नारियल, केला और ईखादि अधिकत्व से होतीहैं स्वरूप यह है॥

तसवीर नम्बर १२०

लीकालूसनामएकटापूहै वहांकेलोग नंगेरहतेहैं औरमछलीखातेहैं

हैं यहांकेलोग व्योपारियोंसे लोहा मोललेतेहैं एकटापू मारनामक है यहबहुत बड़ा औरअत्यन्त घनाबसा है और बहुधा क़िले आदि परिपूर्ण हैं जैसे कि कोई बड़ेशहर की बसगित होतीहै मकान बहुत बड़े२भांति२के इसमें वर्त्तमानहैं,पहाड़ और वृक्षबहुतहैं ॥ कहते हैं कि यहां एकअजगर अत्यन्त बड़ाथा गौ, भैंस, घोड़ा, ऊंट, आदमी जिसको पाताथा उसको निगलजाताथा जब सिकन्दर रूमी यहां पहुंचा तो वहां के शेष बासियोंने उसके दुःखका समाचार कहा कि हे बादशाह दीर्घआयु इस दुष्टके लिये हमने बारी अर्थात् ओसरी नियत कर रक्खी है इसलिये दो बैल निरन्तर इसको पहुंचाते हैं वह उनके दोहीग्रास करताहै और जो किसी दिन न भेजें तो गांव की ओर चलनेका अनुमान करता है सो अब तो पशुभी कमहोगये इसलिये हमारा न्याय तेरेहाथहै यह सुन सिकन्दरने दो बैलमांगे उनकी खाल निकाल उसमें चूना गंधक और हरतार भरवाय बैल की सूरत समान सिँवायके आज्ञादी कि इनको नियत ठौरपर पहुं-चायआवो ज्योंहीं दोनों धोखेकेबैल उसठौर धरेगये त्योंहींनिकल कर यथा पूर्वक लीलगया ॥

तसवीर नम्बर १२१

पेटमें जातेही अग्नि लगगई और वह मरगया दूसरे दिनजब वह न निकला तो जायके देखा मृतक पाया इस हर्षके समाचार शहरमें पहुंचाये और सिकन्दर के आगेभेंट लेधरी उसीभेंटमें एक जीव खरगोशके सदृश सौगातदियाथा जिसकेसींग तो काले और रंग पीलाथा और जो मान्साहारी जीव उसको देखता वह भाग जाताथा और सूरत उसकी यहहै

तसवीर नम्बर १२२

व्याख्यान उनजीवोंके विषय में जो इस सागरमें मिलते हैं ॥

अजायबुल अखबार कहता है कि इस समुद्रमें फ्यूलनामी एक पक्षी होता है यह अपने माता पिताको अधिक मानता है जब यह पक्षी वृद्धहोता है तो उसके दोबच्चे उसको उठाकर घोंसलामें बैठा

देते हैं और सांझ सबेरे उसकेलिये भोजन पहुंचा देतेहैं ॥ जब यह पक्षी अण्डा देकर सेता है तो चौदह दिनतक जबतक अण्डों से बच्चे न निकलैं समुद्र थँभा रहता है इस चौदहदिनके अन्तर को दरियाई लोग शुभ समझते हैं और समुद्र के थँभने से जानजातेहैं कि इस समय वह पक्षी अण्डा सेता है ॥ एक प्रकार की मछली होती है जिसका संपूर्ण अंग तो मछलीकासा होता है केवल मुख मनुष्यकासा होताहै उसके मुखपै थोड़ेदागहोते हैं जो पानीमें दृष्टि आतेहैं इसीपहिचानसे धीमरलोग इसकी अहेरकरतेहैं और बाहिर निकाल उसके अपूर्वस्वरूपको देखिआश्चर्यकरतेहैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर १२३

इसके सिवाय एक प्रकार की मछली सदैव अपना मुहँखोले फिरा करती है और मुख खुला रहने के कारण और जीव उसके पेटमें चलेजाते हैं वेही उसका भोजन होजाते हैं ॥ एक प्रकार का जीव ऐसा होता है जिसके नाक से प्रज्वलित अग्नि निकलती है इससे उसके आसपास की घास जलजाती है और एक प्रकारका जीव रात्रीको समुद्र से निकल के उड़ता है मनुष्यों ने उसकानाम उड़नेवाली मछली रक्खा है क्योंकि रातभर चरागाहों में चारा खाया करती है और भानोदय से प्रथम समुद्र में चलीजाती और एक प्रकारकी मछली ऐसीहोती है कि जो उसके पानीसे लिखैं तो रात्रीको दृष्टिआताहै परन्तु दिनको दिखाईनहींदेता क्योंकि उसका पानी काग़ज़ही के समान श्वेतहोता है और इस मछली का नाम कारमाही है ॥ एककांटा इसकी पीठपर लम्ब के अनुमान होता है वह अतिही तीक्ष्णहोता है इसके कारण कोई मछली इसकी बराबरी नहीं कर सकती है विदित हो कि समुद्र के अपूर्व आश्चर्य्यक पदार्थोंकी तो मितिनहींहै और मनुष्योंको उसकेमानने में कुछसंदेह होता तो मैं और अधिक लिखता इसलिये इस वर्णन को इतिश्री करनाही उचित है अब ईश्वराधीन जो जीव जलचारी प्रसिद्ध हैं उनका वर्णन कियाजायगा ॥

फ़ारस के समुद्र के विषय में॥

यह हिन्द के सागर की एक खाढ़ी है यह समुद्र बहुत शुभ है और समुद्रों की अपेक्षा इसमें तूफ़ानादि का डर बहुत कम है ज़करिया का बेटा महम्मद लिखता है कि लोगों ने अबदुलगफ्फ़ार शामी से ज्वार भाटा के विषय में प्रश्नकिया तो उसने उत्तरदिया कि बड़े समुद्रों में ज्वार भाटा नित्त नहींआते किन्तु सालमें दोबार एकबार तो पूर्व में उत्तरकीओर छःमहीनातक बढ़ताहै जिस समय बढ़ता है तो चीन में जलका अधिकत्व होता है और पश्चिम में पानी कमहोजाता है और दूसरीबार जाड़ोंमें पश्चिम से दक्षिणको बढ़ता है यहबाढ़ छः२ महीनातक रहती है उससमय पानीकाज़ोर पश्चिमी समुद्रों में हुआ करता है और पूर्व के समुद्रों में जोर कम होजाता है परन्तु फ़ारसके समुद्रका घटाव बढ़ाव चन्द्रमाके ऊपर है और यही दशा हिन्दमहासागर, चीनसमुद्र, और तराबरन्दा की है कि जब इन समुद्रोंमें से किसीके निकट चन्द्रमा होता है तो समुद्र बढ़ने लगता है जिससमय चन्द्रमा मध्यरेखापर पहुंचता है तो समुद्रकीबाढ़का अन्तहोताहै और वहांसेचन्द्रमानीचेकी ओरको झुकता है तो समुद्र भी घटने लगता है यहांतक कि जब चन्द्रमा उस समुद्र के निपट पश्चिम में पहुंचा तो समुद्र में बाढ़ रहतीही नहीं और जब चन्द्रमा फिर पश्चिम की ओरचला तो फिर समुद्र बढ़ने लगता है परन्तु जब चन्द्रमा पृथ्वीके नीचे की ओर जाता है तो बाढ़ निर्बलहोती है और जब चन्द्रमा पृथ्वी के नीचे२ जाताहै तब घटने लगता है॥ जब चन्द्रमा पूर्व से उदयहुआ तो जबतक चन्द्रमा मध्यरेखापर न पहुंचै तबतक बढ़ताहै॥ इसकेसिवाय अबदुलगफ्फार शामी कहता है कि इसके सिवाय चन्द्रमाके घटाव बढ़ाव के अनुसार समुद्र के बढ़ने का एक समय और है अर्थात् जब महीना की आदि में चन्द्रमा उदयहुआ तो ज्यों२ चन्द्रमा बढ़ता है त्यों२ समुद्र भी उमड़ता चलाआता है (यह लेख महीनाका मुसल्मानों का है क्योंकि मुसलमानों का महीना द्वीजसे लगताहै और

कृष्णपक्ष में प्रतिपदाके दिन समाप्त होताहै) इसप्रकार पूर्णमास
तक चन्द्रमा बढ़ता है उसीप्रकार समुद्र भी दिनप्रति बढ़ता जात
है जब पूनोसे चन्द्रमा घटनेलगा तब समुद्र भी क्रम क्रम से घटत
है ॥ इब्नुलफकिया ने लिखा है कि फ़ारस के समुद्र में लहरें बहु
उठती हैं उससमय समुद्र में चलना कठिन है और फ़ारसके साग
में लहरें बन्दहोती हैं तो हिन्द महासागर में लहरें उठनेलगती
फ़ारस के समुद्र में बाढ़ उससमय होती है जिससमय सूर्य कन्या
राशि का होता है और कर्करेखा के निकट होता है और जब तब
सूर्य मीनराशि में न जाय तबतक फ़ारसके समुद्र में ऐसीही बाढ़
बनीरहती है और अतिकराल बाढ़ इस समुद्रकी उससमय होतीहै
जिससमय सूर्य कौस अर्थात् धनराशि में होता है और जब सूर्य
मीन से निकल मेषराशिका होता है कि जिससे नौरोज सलतानी
से प्रयोजन है उससमय बाढ़ कमहोती है और जल ठहरजाता है
उत्तम समय इस समुद्र के चुपहोनेका वह है कि जब सूर्य मिथुन-
राशिका होता है ॥ अबदुल्लाचीनी कहता है कि ईश्वर ने इस फ़ा-
रसही के समुद्र को घटना बढ़ना दिया है क्योंकि यह समुद्र ८-
अस्सीगज गहरा है और इसके मुहरों में अक़ीक़ और याक़ूत -
और सोने, और चांदी, लोहे, तांबे की खान भी हैं और बर्णर की
सुगन्धिक बस्तु भी इस में उत्पन्न होती हैं इस समुद्र में जो भवंर
उठता है तो उसमें से जहाज़ किसीभांति कुशलक्षेम नहीं निकल
सक्ता परन्तु हां जो ईश्वरही कुछ दयादृष्टि करे तब बेड़ा पार हो॥
इससमुद्र में नानावर्ण और स्वरूप के अपूर्व जीव हैं जिनका बर्णन
ईश्वरने चाहा तो बहुत शीघ्र कियाजाता है ॥

व्याख्यान फ़ारस समुद्र के टापुओं के विषयमें ॥

इस समुद्र के बहुधा टापूबसे हैं और ब्योपारियोंकाभी आवा-
गमन है ॥ इन टापुओं में से जैसे टापू क़तीस, हुरमुज़, बरस्त,
दिलारक, खज़ीव, और इन्द्रावी आदि के आबाद और ब्योपार की
जगहहैं जो इनका ब्योरावार समाचार लिखाजाय तो पुस्तक बड़ी

हुई जाती है॥ इनमें से एक खरकनाम टापू है जिसमें हज़रतइमा महम्मदहनाफा की जिसपै ईश्वर प्रसन्नहो क़बुर है॥ कहते हैं कि इसी टापू में मोती निकालेजाते हैं और वह मोती निकलता है जिसको दुरयतीम अर्थात् एकाकी मोतीकहते हैं और यहभी कहते हैं कि जिन समुद्रोंका मेल इससे है उनकेसिवा और मोतीकीसीपी कहीं नहीं उत्पन्नहोती जब रवी अर्थात् बसन्तऋतु आती है और आंधी बेगसे चलती है उससमय समुद्रमें लहरैं उठती हैं तब समुद्र की छींटैं उड़ने लगती हैं और उनछींटोंकी बूंदें लज़ब जल अर्थात् मिलीहोती है तो यहरीति है कि वे छींटें सीपमेंपरतीहैं तो वे मोती होतेहैं और सीपी उनबूंदोंकोबीर्यकेसमान अपनेपेटमें रखलेतीहैंसो कभी तो ऐसाहोताहै कि उत्तमसुडौल बड़ामोती मिलताहै औरकभी छोटे२ इसकाकारण यहहै कि जब सीपकेमुखमेंये छीटैंपरतीहैं तो उसको ग्रासकेसमान मालूम होते हैं फिर सीपीवायुनसीम अर्थात् प्रातसमयकी बायुकेसमय अथवा सूर्य्यके उदयास्तके समय समुद्रके किनारेपरआतीहै और दोपहरकेसमय सूर्यकीगर्मीके कारण किनारे परनहीं आती उस समय सीपी बायु लेने को अपनामुख खोलतीहै तो उत्तरकी बायुके प्रभावसे वे पानीकी बूंदें जो उसके पेटमेंहैं जमके मोती होजातेहैं जो सीपीकामुख मीठे पानीसे भराहोताहै तो मोती साफ चिकना सुडौल और चमकदार होताहै और जो कुछ भी उस में खारी पानीका मेलहुआ तो अवश्य रंग रूपमें कुछ न कुछ भेद होताहै अर्थात् पीला अथवा काला रंग होताहै जिससमय सीपी के पेटमें बूंद जमकर मोती होजाताहै तो सीपी समुद्र की जमीन पै जाके पत्थरोंमें चिपक रहतीहै जबवहां मनुष्य मोती पातेहैं तो बहुत प्रसन्न होते हैं और जीवको लोग गोता मार२ के सीपी को पत्थर से बड़ी कठिनता से अलग करते हैं किस हेतु से कि वह पत्थर से इस प्रकार चिपक जातीहै कि मानों पत्थर का अंगही होजाती है जो मोती सीपीमें जमने से थोड़ी देरके पीछे निकालतेहैं तो वे मोती अच्छे चमकदार होते हैं और जो कुछ दिनों पीछे निकाले जाते हैं

तो उन मोतियोंका रंग मैला होताहै इसकेसिवाय एकटापू हवाली जाशक नाम कतीस टापू के निकट है यहां के निवासी दरियाई लड़ाई में बहुत जल्दबाज होते हैं और तूफ़ानके समयमें स्थिरचित होतेहैं और नाव चलाने और समुद्र सम्बन्धी कामों में बड़े चतुर और सार विद्यामें बड़े प्रवीणहोतेहैं शहर क़बसके निवासी कहते हैं कि अगले बादशाहोंमें से किसीने लौंड़ी सौगात की रीति से जहाज़ पै सवार करके इस ओरको भेजीथी दैवयोग वे जहाज़ इस टापू जाशक में ठहरीं और लौंड़ियां जहाज़ों से उतरके जीव बहलानेके लिये यहां वहां फिरने लगीं कि इतने में जिन लोग उन लौंड़ियों को पकरलाये और उनके साथ रतिकी उनसे इस जातके लोग पैदाहुये इसी कारण ये लोग चपल और शूरबीर होतेहैं और कहतेहैं कि ये लोग जलमें ऐसेशीघ्र चलतेहैं जैसे कोई थलमें चलता है इसके सिवाय एक टापूकैद दिलावरी और मन्दर शिकम ये टापू फ़ारसके समुद्रमें हैं इसटापूमें अम्बर आशहब और स्याहनिकलता है और बहुधा फिरने वालों से सुनाहै कि अम्बर इस समुद्रके पैंदी में होताहै जैसे किसी धरतीमें क़बरान होताहै और अम्बर श्वेत और काला होताहै जब समुद्र में अतिही वेगसे लहरें उठती हैं तो उन लहरों के साथ पत्थरादि समुद्रके बाहिर चलेआते हैं उनमें यह अम्बर चपटा होताहै कभी ऐसा भी होताहै कि बड़ीमछली अम्बरको खा जातीहै तो चट मरजाती है॥

ब्याख्यान अद्भुत जीवों के बिषय में॥

इस समुद्रमें अद्भुत जीवोंमें से एक प्रकारकी मछली होतीहै जो ज्वार भाटा बन्द होनेके उपरान्त पानीपर प्रकट होती है अबूरेहां ख्वारज़िमीने अपनी किताबमें लिखाहै कि इस मछलीको आसार वाक़िया कहतेहैं लिखाहै कि क़ानूनसानी (मुसल्मानों के महीना कानाम) कि तेरहवीं तारीख़को समुद्र में लहरें उठतीहैं तो फ़ारस और असकन्दरिया की ओरको पानी जाताहै और यह हाल कुछ दिन नियत तक रहताहै और हवा बन्द और अँधयारा होजाता है

स समय में जहाज़ और नावों को लंगरकी ठौरपै बाँध रखते हैं
लिखाहै कि ऐसी एक प्रकार की बायुहै जो समुद्र के भीतर प्रवेश
करके समुद्र को उफलाती है और इसका समाधान इससमुद्रके चल
बेचलसे होताहै एकप्रकारकी मछलीहै वह कभी तो एकदिनपहिले
और कभी एकदिन पीछे प्रकट होतीहै इसकेसिवाय अस्तूर, ख़राफ़
और परस्तौज ये मछलियों के नाम हैं जो साल में एक नियत
समयपानीपर प्रकटहोतीहैं और कभी२ ऐसाभी होताहै कि वे कुछ
दिनतक पानी पै बनी भी रहती हैं और बसरा के निवासी इनके
आने जानेके समयको जानतेहैं॥ हाफ़िजको निश्चयहै कि बसरा
देशकी दजलानदीमें नानाबर्णों की मछलियां दृष्टि आतीहैं जो पर-
स्तौज और अस्तूरके सदृशहैं और कारण यहहै कि जब मछलियां
खारी पानीपीते२ अकुतायजाती हैं तो नदीमें मीठा पानी पीनेको
आतीहैं जैसे ऊंट खिला (एकप्रकारकी घास) खाते खाते दिक्क हो
जाताहै तो उसका चित्त चलताहै हमज़ खानेको जो एक प्रकारका
खारी चारा है जो बनस्पति से अधिक करुआ होता है जैसे दमस
असल और तुर्फा अरब देशीय कहतेहैं खिला तो रोटीके समान है
और झाऊ मेवाकी ठौरहै इसलिये जैसे ऊंट खिला घासको खाते२
औंक जाताहै तो झाऊ खानेकी इच्छा करता है तैसेही जब मछ-
लियां खारी पानी पीते२ औंकतीहैं तो नदीमें मीठा पानी पीनेको
आतीहैं निदान खारीपानी मछलियों के लिये रोटीकी ठौर है और
मीठापानी मेवाकी ठौरहै बसरा निवासी कहतेहैं कि इस प्रकारकी
मछलियां बसरामें सालमें दो बार आती हैं जब दो महीना बीतते हैं
तब पहिली आई मछली लौटती हैं और उनके पलटे दूसरे तौर की
मछली आतीहैं इसकेसिवाय एकप्रकार परस्तौज़की जातिकीमछली
जंग शहरकी ओरसे आती हैं और दजलाके मीठे पानीमें परती हैं
जंग के निवासी इस मछली को भली भांति जानते हैं और कहते हैं
कि धीमर लोग परस्तौज मछलीको छोड़ बसरा और जंगके बीच
में और किसी दूसरी मछलीकी अहेर नहीं करते हैं दरियाई लोग

कहते हैं कि जिस समय बसरामें परस्तौज मछली आतीहै तो उस समय इस प्रकार की मछली का जंग में चिह्नभी नहीं मिलता है और इसी प्रकार जब बसरासे जंगकी ओर जाती हैं तब बसरामें इस प्रकार की मछली का चिह्न नहीं मिलता है इसकेसिवा ए प्रकारकी कोसज नाम मछलीहोतीहै यहमछली पानीमें इसरीतिसे शिकार खेलती है जैसे बाघ पृथ्वीपै अहेर करता है जीवोंको अपने दांतोंसे इस प्रकार काटती है जैसे किसी पहलवानके हाथसे तरवार का वार परताहै और लम्बाईमें यह एक अथवा दोगज़कीहोती हैं इसके दांत आदमी के दांतोंकेसमान होतेहैं और इसमछली को देखसम्पूर्णमछली भागतीहैं जो कहीं बड़ीमछलीको पाजाती है तो टुकड़ा२करडालतीहै और जो कहींमनुष्यकोपाजातीहै तो उसकोभी टुकर२ कर डालती है यह बड़ी बला है इस नदीमें यह मछली ऐसी है जैसे नील नाम नदी नाक महाकाल हैं किसी समय बसरा की नदी दजलामें इसमछलीकी बहुतज़ात होती हैं॥ और मछलियोंकी जातोंमें से, रत्यान, ज़क़, ज़ाल और कूयज़ज भी है इन मछलियों आनेके समय नियत हैं उस समय मनुष्य इनका आसरा देखते हैं इसकेसिवाय एकप्रकारका जीव अजगरहोता है जिसको मारकहते हैं यह कोसजसे भी दुष्ट होता है इस जीवके दांत मांसाहारी जीवों केसे होतेहैं और शरीर इसका छोहारेके वृक्षके समान होता है और दोनोंआंखें इसकीरक्तरंग होतीहैं और स्वरूप अत्यंत भयंकर होता है और सम्पूर्ण जलचारीजीव इस दुष्टसे भागते हैं॥ सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १२४

इसके सिवाय एकप्रकारकी मछली हरेरंगकी एक गज़से अधिक लम्बी और पूंछ उसकी एक गज़से कुछेक कम आराके समानहोती है यह मछली अपने पूंछसे जीवों को घायल करदेती है अजायबुलमख़लूक़ात के ग्रंथ करताने इस मछलीको एक टापूमें देखाहै अहेरिया इसका अहेर करते हैं और बाज़ारों में पुकारके बेचते हैं और स्वरूप इसका यह है॥

तसवीर नम्बर १२५

इसके सिवाय एक मछली मदूर ढाल के सदृश होती है उसकी पूंछ तीन गज़से अधिक लम्बी होती है मानो उसकी पूंछ सांपकी सूरत होती है उसकी पूंछके बीच एक कांटा लाल के रंग समान होता है और इस मछलीके सम्पूर्ण शरीर में काले और श्वेत बुंदे होते हैं और इसकी पीठपै नाक और पेटके नीचे मुँह होता है और इसकी भग स्त्री की भगके सदृश होती है॥ स्वरूप उसका यहहै॥

तसवीर नम्बर १२६

अब हम इस समुद्र के अद्भुत जीवोंके वृत्तांत के अन्तमें वह वृत्तांत लिखते हैं जो तोहफतुलगरायबके ग्रंथ करताने अपनी पुस्तक में लिखा है कि मुझसे एक अस्फ़हान के निवासीने कहाकि मैं ऋणी था और कुटुम्ब की फ़िकरसे नाकय आय रहा था निदान देश छोड़ देश विदेश फिरते २ अन्त को दरियाई सफ़र पै कमर बांधी दैवयोग हमारा जहाज़ एक दर्दूर नाम भवँर में जाफँसा और यह दर्दूर फ़ारसके समुद्रमें अधिक प्रसिद्ध है तब शिक्षकने कहाकि यह भवँर अति कराल है इस्में से जहाज़ का निकलना अति कठिन है यहसुन मल्लाहोंने कहाकि हे शिक्षक ईश्वर के लिये जो तुझे कोई यत्न मालूम हो तो बताव देख हम ऐसी जीव घातकी ठौरमें फँसे हैं यह सुन शिक्षकनेकहा कि हां एक बात कहता हूं कि जो एक कोई सब मनुष्योंके लिये अपने प्राण देनेको उद्यतहो तो निस्संदेह कोई न कोई यत्न निकाली जावे तब मैंने उद्यतहो अपनी प्रसन्नता प्रकट की और कहाकि तेरी क्या मति है तब शिक्षकने कहा कि इसटापूमें जो इस भवँरके निकट तीन दिनकी राह पैहै वहां जाके ढोल बजाव और रात दिनमें कभी बन्द न करना निदान शिक्षकने मुझे कुछदिन केलिये भोजनदिये और मैंने उसटापूमें ढोल बजानेको आरम्भ किया तो मैंने देखा कि जहाज़ चला और चलते२ मेरी दृष्टिके बाहिर होगया तो मुझे घबड़ाहटहुई इतने में मुझे एक ऐसा बड़ा वृक्ष दृष्टि आया कि मैंने कभी अपने जीतेजी नहींदेखा और उसवृक्षकी चो-

टी तख़्तके समान चौड़ी थी जब सूर्य्यास्त हुआ तो क्या देखा कि एक अति बड़ा पक्षी श्वेतरंग उस वृक्ष पै आबैठा उसको देखके मैं बहुत डरा और वहांसे दूरजाबैठा इसी शोचमें रात बीती प्रातःकाल होतै वह पक्षी उस वृक्षसे उड़गया इसी प्रकार जब दूसरे दिन संध्या समय जब वह पक्षी फिर आयबैठा तो मैं अपने प्राण होमके उसके सन्मुख जाखड़ा हुआ परन्तु उसने मेरी ओर न देखा और सवेरे उड़गया जब फिर तीसरी संध्याको वह पक्षी आयके बैठा तो मैंफिर उसके पास जाय के जीकड़ा किये बैठारहा जब उस पक्षीने उड़नेके लिये पर खोले तो मैंने उसकी टांगें पकड़ली और वह पक्षी उड़ा तो इतना ऊंचा गया कि सम्पूर्ण पृथ्वी मुझको पानीके हौज़के समान दृष्टि आने लगी उस समय मैं अत्यंत घबड़ाया था और मारे डरकेउसकी टांगेंमेरे हाथोंसे छूटी जाती थीं इतने में एक संग आबादी और मकानोंकेचिह्नप्रकटहुये और वहपक्षी उसओरको झुका और पृथ्वीपर पहुंचा मुझको वहां उतार के वह फिर उड़ गया वहां के मनुष्यों ने मुझको देखके आश्चर्य्य किया और वे मुझको अपने बादशाहके पासलेगये बादशाहने एक मनुष्य को जो हमारी भाषा समझता था आज्ञादी कि इसका हाल पूछ उसके पूछनेपर मैंने अपना सम्पूर्ण वृत्तांत कहसुनाया वह यह सुनके प्रसन्नहुआ और मुझको द्रव्यदी बादशाहकी आज्ञानुसार मैं वहां कुछदिन रहा इतने में मेरा जहाज़ मेरे बिछुरे मित्रों सहित वहां आपहुंचा जबउन्होंने मुझसे वृत्तांत पूंछा तो मैंने सम्पूर्ण वार्त्ता कह सुनाई और उस पक्षीका स्वरूप यह है ॥

तसबीर नम्बर १२०

लाल समुद्र ॥

यह समुद्र हिन्दमहासागर की खाड़ी है इसके दक्षिणी कनारों के शहरोंमें बरबर और यश है और पश्चिम के कनारों पै अरब के शहर हैं और पूरबके कनारों पै यमनके शहर हैं कुलज़ुम एकशहर का नामहै जो इसके कनारेपर स्थित है इसी कारण इससमुद्र का

भी नाम कुलज़ुम रक्खा गया इसकाघटाव बढ़ाव और लहरें हिंदके सागरके समान हैं इसलिये दूसरी बार वर्णन नहीं किया यह वही दरिया है जिस्में फ़रऊनको ईश्वरने बोरा है इसके और यमन के दरिया के बीचमें एक पहाड़ है और इसी पहाड़के कारण यमन समुद्रकी बाढ़से यमनके शहरका कुछ नुक़सान नहीं होता किसी२ बादशाहने इसका पानी निकालने के लिये पहाड़ को काटा परंतु पानी ऐसे वेग से निकला कि बहुधा यमन के लोग मर गये और जद्दा, तबा, और मदीनअईबके निवासमें होकर निकला है और हिन्दसागर और जंग और फ़ारसके सागरके बीचमें है ॥

व्याख्यान इस सागर के टापुओं के विषय में ॥

इस सागर के बहुधा टापू खराब हैं और व्योपारियों का उस ओर को आवागमन नहीं है और संसार में कुछ प्रसिद्ध भी नहीं हैं इसका एक टापू आसिलाके निकटहै उसमें कुछेक बसागित है परन्तु यहांके निवासी दीन और दुःखी हैं और यहांके निवासियोंकी जात का नाम बनोहसद है और भोजन उनका केवल मछली है खेती किसी प्रकार की नहीं करना जानते इस टापू में मीठा पानी नहीं होता इनके निवासके घर टूटे फूटे और नावें डोंगी हैं जो कोई इस ओरसे जानिकलता है तो उससे भोजन और पानी मांगते हैं इस टापूके निकट दो पहाड़ोंके बीच एक बड़े जीव घातिक भवँरको ठौर है और जब वायु चलती है तो भवँर दोनोंओर को सीधा होजाता है और जो नौका इसके बीच पड़जाती है तो तत्काल उलट जाती है इस टापू का विस्तार छः मील का है कहते हैं कि फ़रऊन ठीक इसीठौर अपनी सेनासहित डूबा था इसीमेंसे एकटापू जसासा नामहै और जसासा एक जीवका भी नामहै जो दज्जाल को समाचारदिया करताहै कहतेहैं कि दज्जाल इसी टापूसे निकलेगा शईने क़ैसकी बेटी फातमाका कहाहै कि असरकी नमाज़के उपरांत हज़रत महम्मद हमारे पास आये और खुतबा अर्थात् पढ़के कहा कि हम प्रीतिके कारण तुमको इकट्ठा नहीं करते यह न जानना

चाहिये कि डरदेनेके लिये इकट्ठा नहींकरते इस समय हम तुमको एकहदीस अर्थात् उपदेश सुनानेको इकट्ठा करतेहैं जो इतीमुद्दारी ने मुझसे बर्णन कियाहै उसने मुझसे यह कहा कि एक यूथ हमारी ज्ञातिका इस सागरपर पहुंचा तो एकाएक वायु वेग से चली और इनकी नौकाको टापूमें लैडाला वहां एकदावह को देखा तो उससे पूंछा कि तूकौनहै उसने उत्तरदिया कि मैं जसासाहूं यहसुन उन्हों ने उससे कहा कि हमको टापूके समाचार बता उसने कहा कि जो तुम समाचार चाहतेहौ तो टापूमें जाओ वहां तुम्हारे मिलनेकी एक पुरुष आशा कियेहै निदान ये लोग उसके पास गयेतो उसने पूंछा कि कहांसे आतेहो तब इन्होंने अपनासम्पूर्ण समाचार कहसुनाया तब उसने पूंछा कि दरियाय तबरियाके समाचार कहो इन्होंने उत्तरदिया कि वह जोश में है जब उसने अमान के नखल वृक्ष के समाचार पूछे तो इन्हों ने कहा कि उसके फल अमान के निवासी खातेहैं फिर उसने पूछा कि दरियाशार का क्या हालहै इन्हों ने उत्तरदिया कि उसकापानी वहांकेनिवासी खरचकरतेहैं तब उसने उत्तरदिया किजबदरिया सूखेगा तो हम आमिराकी सम्पूर्ण धरती को मक्का और मदीनाके सिवाय अपने आधीन करलेंगे पहाड़ोंमेंसे एक पहाड़ चुम्बकहै यह लोहेको अपनी ओर खींचताहै इसकारण जो जहाज़ उस ओर को आते हैं उनमें लोहेकी एककील भी नहीं होती (ब्याख्यान) जो जीव मुख्य इस सागरमें हैं उनका वर्णन किया जाताहै क्योंकि जो जीव इसमें हैं और वही दूसरों में भी हैं उनका बर्णन वृथाहै उन जीवोंमें से एक मछली ऐसी होतीहै कि जिसकी पूंछके चपेटासे जहाज़ डूबजाताहै यहमछली दोसौ गज़की हुआ करतीहै और उसके शरीरपै चित्रकारी होतीहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर १२८

उनमें से एक मछली है जिसको अहेर करते हैं और सुखा के धररखतेहैं और सूखने के समय उसकाअंग रुईके मलुआके समान

जाता है उसको मनुष्य कातके अत्यन्त मौलिक बस्त्र बनाते हैं
र नाम उस कपड़ाका सूबसमकीहै सूरत उसकी यहहै ॥

तसबीर नम्बर १२६

उनमें से एक मछली एक गज़की लम्बी होती है उसका बदन
हूकासा होताहै और सूरत यह है ॥

तसबीर नम्बर १३०

एकमछली बीसगज़की लम्बीहोतीहै उसकेपेटमें एकहज़ार अण्डा
ते हैं और एक मछली ऐसीहोती है कि उसका बदन गायकासा
ता है वह बच्चे जनती है और अपने बच्चोंको दूध पिलाती है ॥

जंग का सागर ॥

यह तद्रूप हिन्दसागर के है जंगकादेश इस सागर से दक्षिणमें
हेल के नीचे है जो मनुष्य इस सागर में सवारहोता है तो वह
क्षिण ध्रुव को देखता है और सुहेल भी भलीभांति दृष्टिआता है
र उत्तरध्रुव किसीभांति नहीं दृष्टिआता इससागर के किनारेपै
बर के शहर हैं और यहां हवशियों की जाति बसती है ॥ इस
ागर की सीमा महासागर से मिली हुई है इस सागर की लहरें
ड़ी कराल और पहाड़ के समान ऊंची होती हैं और दूसरे सागरों
विपरीति इसकी लहरें कभी कम नहींहोती हैं और इस समुद्र
कभी फेना नहीं उठताहै और इसकी लहरों का शब्दाघात ऐसा
ोताहै कि हे ईश्वर इस समुद्र में टापू बहुधा बड़े २ हैं और उनमें
क्ष भी बहुतहैं परन्तु फलवालेकोईनहींहैं उनमेंआबनूस चंदनक़ना
ौर साजके वृक्ष बहुतहैं और इससमुद्रके किनारे अंबरमिलता है ॥

व्याख्यान इस समुद्र के टापुओं के विषय में ॥

इन टापुओं मेंसे एकटापू महरकाहै यह बड़ाहै और यह टापू
से ठौर पर है कि उस तरफ़ को मनुष्य कम जाते हैं किसी २
योपारियों से सुना है कि एकबार हमलोग सवार हुये हमारा
ाहाज़ बहकर इस टापू में पहुँचा वहां हमने वासियों की संख्या
ाहुत देखी हम वहां कुछदिन तक रहे वहां के निवासियों की भाषा

सीखी और सबसे मिले तो एकरात्रि को देखा कि वे सब इकट्ठे होके उसतारे को देखते हैं जो उसटापू में उदय होताहै बस उस तारे को देखतेही सबलोग रोदन करनेलगे जब हमने उससे पूछा कि यह क्या कारणहै तब उन्होंने उत्तर दिया कि जब तीस वर्ष उपरान्त यहतारा उदय होताहै तो जितनी वस्तु इसटापू में होती है वह सब जलके राख होजातीहैं यह कहकर अपनी नावें तय्यार कीं और जो वस्तु हलकी लैचलनेवालीथीं और उनका बोझा नाव पर लादसकते थे लादके नावोंपर सवारहो दूसरी ओर दूरचलेगये जब उसका समय बीतगया तो आये तब जो चीज़ें वहां छोड़गयेथे वह सब राख पाईं निदान उनलोगों ने नए सिरेसे अपने मकान बनाये और अपना२कामकरनेलगे इनमें से एकटापू सूसानामकहै वह जंगके शहरोंसे बहुत मिलाभया है बहुधा व्योपारियोंसे सुनाहै कि इसटापू में एकशहर श्वेतपत्थरोंकाहै उससे आवाज़ सुनाईदेती है इसीकारण इस नामसे यह टापू प्रसिद्ध हुआहै यह बड़े आश्चर्य्य की बात है कि वहां कोई मनुष्य नहींहै बहुधा व्योपारीलोग यहां आ केमीठा पीनापीते हैं यहांका पानी अत्यन्त मीठाहै और इस टापूकी सीमाकिसीकोनहीं मालूमहै परन्तु हां इतना तो मालूम है कि इस टापूमें एकपहाड़ बहुत बड़ाहै और उसमें से भयानक शब्द सुनाई देते हैं कहतेहैं कि यह शब्द वहां के निवासियोंका कालका कारण है इसपहाड़के आसपास एक सांपहै जो बर्षमें एकबार निकलताहै और जंगके बादशाह इसको बड़ेयत्नसे पकड़ते हैं और सिवाय उनके ख़ज़ानेके कहीं नहीं मिलता इस सांप में बड़े २ गुणहोते हैं प्रथम तो यह गुणहै कि जो कोई बादशाह इसकी चरबीको अपने शरीर में मले तो उसको ताक़त और डर अधिक होता है और उसका चित्त सदैव प्रसन्न रहताहै और दूसरा गुण यहहै कि जिस किसी कोसल रोगहोतो उसकी खाल पर बैठे तो रोगशान्त होजाय हिन्दुस्तान में इसकी खाल बहुत कम मिलती है और जो मिली तो बहुत दामदेने परतेहैं जंगके बादशाह इसके शिकार खेलनेकी बहुत

न किया करतेहैं तबभी कभी २ हाथ लगताहै एक टापू ऐसा है उसके विषय में इस हक़सराज के बेटे याकूब ने लिखाहै कि मैंने एक रूमके निवासीको देखा कि उसकेमुखपैनखसे नोचनेके चिह्न नेहैं जब मैंने उससे पूंछा तो उसने कहा कि मैं जहाज़ परसवार था दैवयोग वह जहाज़ तूफ़ान में आयके फटगया मैं उसके एक तख़्तापर रहगया अन्तको वह तख़्ता लहरोंके झकोरोंसे एकटापू में जा पहुंचा वहां ऐसे मनुष्य थे कि जिनका शरीर एक गज़का होगा और नखसिख से नंगेथे वे मुझको पकड़के अपने बादशाह के पास लेगये उसने मुझेक़ैद करनेकी आज्ञादी उन्होंने मुझे एक पँजरामें बन्दकिया मैं उस पिंजराको तोड़के बाहिर निकल आया तो उन्होंने मुझे नहींसताया किन्तु स्वतंत्र रहने दिया फिर उनसे और मुझसे बहुत मेल होगया तो एक दिन क्या देखताहूं कि वे लोग लड़ाईके लिये उद्यत होरहेहैं जब मैंने उनसे कारणपूंछा तो उन्होंने उत्तर दिया कि एक हमारा शत्रु आताहै उसीसे लड़नेकी तय्यारी कररहे हैं यह कहहीरहेथे कि इतनेमें एकझुण्ड ग़रानीका जो एक प्रकारके जंगी पक्षी होतेहैं आ पहुंचा वे पक्षी इनकोकाना कर डालतेथे जब मैंने उनका अधिक घबड़ाना देखा तो मैंने एक लाठी उठाके उनको मारने लगा इतनेमें उन्होंने भी अपने पंजोंसे घायल किया और मेरे मुखपै उन्हींके पंजोंके चिह्नहैं अन्तको मैंही जीता और पक्षी उड़गये उन्होंने मुझे धन्यबाद दिया तिसउपरांत मैंने उनसे दो तख़्तलिये उनको वृक्षोंकी डालोंमें बांधनौकासमान बनाया और कुछथोड़ा अन्नजल रास्ताके लियेलिया ईश्वरने मुझे रूममें पहुंचा दिया इस कथानक को अरस्तातालीसने पुष्ट किया है और अपनी किताबहैवानमें लिखाहै कि जब नीलनदी बढ़ती है तो ग़रानीक नाम पक्षी खुरासानसे मिश्रकी तरफ़ जाके उन लोगों से लड़ते हैं जिनका शरीर एक गज़का होताहै एक टापू सकसार नामकहै इसके बिषय में असहक़सराज के बेटे याक़ूब ने लिखा है कि एक मनुष्य ने मुझसे वर्णन किया कि मैं एक नौकापर सवार

होकर चला तो वायु ने ऐसेटापू में पहुंचाया कि जहां कोई मनुष्य नहींजाता ॥ वहां मेरेसामने एकझुण्ड ऐसे मनुष्योंकाआया जिनका मुखकुत्तेकाथा और सम्पूर्ण अंग मनुष्यकासा स्वरूप उनकायहहै॥

तसवीर नम्बर १३१

निदान ये लोग मेरे सामने आय खड़ेहुये और उनमें से एकने मेरेनिकट आय एक लकड़ीलेकर मुझे बकरियोंकी भांति हांका और एक ऐसे मकान में लेगये जहां बहुतसे मनुष्य बन्दथे वहीं मुझे भी बन्दकिया अब यह नित्त नियत किया कि हमको जंगल की मेवा लायके खवावें इतनेमें एकदूसरे मनुष्यने जो हमारेसाथक़ैदथा उस ने कहा कि ये इसलिये मेवा खवाते हैं जिसमें मोटे होजायँ तब ये जंगली हमको क्रमक्रमसे कवाबबनाकर खायँगे यह वृत्तान्त सुन मैं तो थोड़ा खानेलगा और जो मेरे साथी खाय खाय के मोटेहुये उनको वे खायगये और मैं कमखाने के कारण अति तनुक्षीण हो गयाथा सो मुझे उन्होंने खानेपीने के लिये स्वतन्त्र छोड़दिया थ और दूसरा मनुष्य जिसने मुझे बताया था सोभी अतिबीमारहोने के कारण खानेसे बचरहाथा एकदिन उसमनुष्य ने मुझसे कहा कि इनलोगों की यहां एक ईदहोती है उसदिन ये लोग बाहिरजाते हैं और वहां तीनदिन तक रहते हैं इसलिये जो तू अपना छुटकारा चाहताहै तो इसका यत्नकर और मैं तो बीमारहोनेके कारण कहीं जा नहींसक्ता परन्तु इतना जानले कि ये लोग बड़ेदौड़नेवालेहोते हैं और मनुष्य की बासको शीघ्र सूंघतेहैं परन्तु हां इतनाहै कि जो मनुष्य कदानाम वृक्षकेनीचे पहुँचजाताहै तो इनकेडरसे निर्भय हो जाताहै परन्तु वह वृक्ष यहांसे दूर बहुत है ॥ मैंने तो यहसुन चट उसीदिन अपनीराहली और रातदिनदौड़ा और उनजंगलियोंने भी मेरापीछा किया मैं मारा मारा गिरता परता कदा नामक वृक्षके नीचेआया वहां मुझेदेख अपनासा मुहँलगाके लौटगये ॥ जब मुझे उनसे छुट्टीमिली तो मैं उसटापू में जहांतहां फिरनेलगा ॥ इतने में मैंनेदेखा कि एकबड़ावृक्ष मेवासे लदाहै और उसके नीचे बहुतसे

सुन्दर स्वरूपवान् मनुष्यबैठेहैं यहदेख मैं उनकेपास जाबैठा परंतु न तो उनकीबातें मेरीसमझ में आतीथीं और न मेरीभाषा वे समझते थे, इतने में उनमें से एकमनुष्य मेरी गर्दन पै हाथ धरके मेरे ऊपर सवार होलिया और अपने पैरों को मेरी गर्दन में लपेट मुझे चलनेकी सैनबताई मैंने तो चाहा कि किसीबहानेसे इसकोगिरादूं परन्तु उसने ज़ोर से एक थप्पर मारा मानो वे लोग देखने में तो मनुष्यका स्वरूप थे परन्तु उनकीटांगोंमें हड्डी न थी इसीसे वेलोग चल फिर नहींसक्तेथे निदान वह मुझे अपनीसवारी में पाकर वृक्षों केनीचे फिरनेलगा और वृक्षकेफल अपनेमित्रोंकोदेताथा वे खातेथे और हँसतेथे दैवयोगसे वृक्षकीडाली उसकीआंखोंमें लगी सो दोनों आंखें अंधीहोगईं तब मैंने अंगूरका गुच्छानिचोरके उसे पीनेकेलिये सैनदी उसने उस शराबको पिया तो उसके मदमें होनेसे उसकेपैर ढीलेपरे तब मैंने उसको गिरादिया और जो मेरेमुखपै चिह्नहैं सो उसके नखोंके हैं जो उसने मेरे तमाचा मारा था॥ सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १३२

व्याख्यान इस सागर के जीवों के बिषय में॥

एक प्रकारकी मछली मन्शार नाम होती है कोई २ व्योपारी ने कहा है कि हमने उसको पहाड़ के समान देखा है और मूड़ से पूछतक आरा के समान होता है और आबनूस के समान काला प्रत्येक कांटा पीठपै दो गजका दृष्टि आताहै और उसके शीशपै दो हड्डियां दश गजके अनुमानसे दृष्टि आतीहैं जिनके द्वारा समुद्रमें रातदिन जीवोंको दुःखदेतीहै और उसके आनेकी आवाज़ बाहिर वालोंके कानोंतक पहुंचती है इस मछलीकी नाकसे पानी निकलताथा जिसकी छींटें हमतक पहुंचतीथीं और जो कोई जहाज़ इसकी पीठपै आजाताहै तो तत्काल दोटूक होजाताहै स्वरूप उसकायहहै॥

तसवीर नम्बर१३३

इनमें से एक प्रकारकी मछली बालनाम होतीहै जिसके तनकी लम्बाईचारसौ अथवा पांचसौगजतक होतीहै इसकेदोनोंपर जहाज़

के बड़े २ बादमानोंके समान होतेहैं जो कभी २ अपना मुहँ पानी के ऊपर निकाल कर जो फुंकार मारती है तो वह पानी एक तीर के उँचाई तक जाताहै जो नौका उस तरफ़को आती है तो जहाज़ वालेढोल और नक़ारे बड़े ज़ोरसे बजाते हैं जिसमें वहमछली भाग जाय और दूसरी छोटी मछली खाती है और यह दरियाई जीवों के लिये महाकालहै जब इस मछली के अन्यायसे जीव अतिदुःखी होते हैं तो ईश्वर एक मछली को जो एक गजकी होती है इसके लिये काल नियत करता है वह इस मछलीके कानमें घुसजाती है और इसकी खोपड़ीका गूदाखातीहै तब यह मछली इतनी दुःखी होतीहै कि अपना शीश पटकते२ पानीके बाहिर आयके मरजातीहै तोपहाड़ के सदृश दृष्टि आतीहै और सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १३४

दरियाई लोग वर्णन करतेहैं कि जब यह सागर जोरोंपै आताहै तो अम्बरके टुकड़ेकेटुकड़े पत्थरकेसे चट्टान बाहिर फेंकताहै तब उन अम्बरके टुकड़ोंको खाजातीहै और तत्कालमरजाती है और पानीपै तैर आती है तब दरिया के आसपास के लोग जो इसी फ़िकर में रहतेहैं झटरस्साबांधके बाहिरनिकालते हैं और उसकापेटचाककरके उसके भीतर से अम्बर निकालते हैं और इस प्रकार के अम्बर को समकीकहतेहैं और उसको हिन्दुस्तान, फ़ारसऔरएराकमेंलेजातेहैं॥

दरिया पछाहँ॥

यह दरिया तद्रूप शाम के दरिया के समान है महासागरमें से घूमके उत्तर की ओर बलादइंडलसतगया है वहां से बलाद फरंग और कुस्तुन्तुनिया होकर दक्षिण की ओर निकल कर बलादसलानीक और शबीहा और आतंजा में पहुंचा है फिर वहां से शाम में होताहुआ अलज़ाक़िया तक पहुंचाहै इससागर में टापू बहुतहैं जैसे अन्दस, मेवरक़ा, सक़लबिया, अक़ूयतसन और क़रस हैं और रोदस के अख़बार मिश्र की किताब में लिखाहै कि फ़रऊन सेना सहित बूड़जाने के उपरान्त मिश्रकी बादशाहत बनी दिलूका के बादशाह

के आधीन हुई ये लोग बड़े छली और कपटी थे जब रूम ने चाहा कि इनको आधीन करैं तब इन्होंने यत्न शोचा कि बहरजुलमात अर्थात् कालेसमुद्र से एकनहर खोदी उस नहर ने इतनाजोर मारा कि उससे बड़ेबड़े देश के देश बहगये और यह नहर एकनदीहोगई और मिश्र और रूमके बीचमें एक रोकहोगई और यह दरिया वही है जिसका हम वर्णत पहिले करआयेहैं इसरीति से दरिया पछाहँ और दरिया इस्कन्दरिया और दरिया शाम और दरिया रोम और दरिया ज़ंज और दरिया कुस्तुन्तुनिया सब एकहोगये और सबसे बड़ेसागर रोम और पछाहँहैं इसकी चौड़ाई ३ तीनफ़रसख अर्थात् ९ मील है और लम्बाई ३० तीसफ़रसख अर्थात् ९० मीलहै और रूमकासागर इन्दलस के आगे है और पूर्व में भी उसके इन्दलसहै इसका रंग हराहै और पछाहँ के दरिया का रंग काला रोसनाईके समान है यहां तक कि जो कोई उसका पानी बर्त्तन अथवा हाथ में लेके देखे तो काला दृष्टि आता है और पानी उसकासाफ़ है इसका रंग जमीउलबहरैन में मालूम होता है और प्रति दिन यह दिनभर में चारबार तो बढ़ताहै और चारबार घटताहै॥ काला सागर तो भानोदय के समय बढ़ता है औ हरासमुद्र घटताहै और दरिया रोम में कि हराहै दाखिलहोताहै और यहदशा सूर्य्यढले तक रहती है और दिनढले पै कालासमुद्र घटता है और दरिया हरेसे इसमें पानी आता है यहदशा सूर्य्यअस्त तक होती है फिर दूसरी बार कालासागर घटता है और हरे सागर में बाढ़ रहती है आधी राततक तिस उपरान्त हरा सागर घटता है और कालासागर भानोदय तक बढ़ता है॥

व्याख्यान इस सागरके टापुओंके बिषय में॥

अबूहामिद इन्दलसी अपनी उस किताब में जो हबीरा के बेटा वज़ीरके लिये बनाई इस टापूका वृत्तान्त लिखता है बहुत से टापुओं मेंसे एक जमाउलबहरैन नाम है इस टापू में एक पत्थर का मीनार दोसौगज़ ऊंचा है उस पै एक मनुष्य का स्वरूप इस

ढबसे बनाहै कि अपने दाहनेहाथ से एकचादर ओढ़े है और उसी हाथको कालेदरिया की तरफ़ फैलाये है मानो किसीवस्तु की ओर सैनकर रहाहै इसविषय में लोगों ने अपनी२ युक्तिअनुसार बहुत कुछ लिखाहै परन्तु सत्य ईश्वरही को मालूम है और यहभी लिखा है कि दरियाय स्याह में इन्दलसकीओर एकपहाड़है तिसपर एक कनेसा है तिसपर संगखाराका एकमहलहै और वहांपर एकवड़ी क़वा है उसपर एक कौवा अकेला रहता है और उस कनेसा के सन्मुख एक मसजिद है जिसके देखने को मनुष्य दूर २ से आते हैं और कहतेहैं कि इसठौर जो प्रार्थना कीजाय सो मानी जातीहै और जो लोग ईसाई अथवा मुसलमान उस कनेसा अथवा मसजिद के दर्शनों को जाते हैं तो वह कौवा अपनाशीश उस क़वा से बाहिर निकाल जितनी संख्या मनुष्यों की होती है उतनी बार बोलताहै तो कनेसा के मुजाविर अर्थात् पुजारीलोगोंको यात्रियों की संख्या मालूम होजातीहै तो उसकनेसासे निकल के यात्रियों के लिये भोजन लाते हैं और उनको खवाते हैं यह ठौर कनेसा कलाग अर्थात् कौवा के नामसे प्रसिद्ध है क़ैसून को सन्देह है कि यहकौवा कहांसे खाता है क्योंकि सदैव उसी क़वा पर रहता है और कहीं नहींजाताहै॥ इनमेंसे एकटापू तूंसनाम जिसकोदीतन्स भी कहतेहैं अति बढ़ा रोमके सागर में है और सत्य तो यह है कि वह दरिया मग़रिब में है अबूहामिद कहताहै कि इस टापू में सब प्रकार की मछली रहती हैं और वे एक नियत समय तक रहकर चलीजातीहैं तो दूसरीजाति की मछलीआतीहैं और इनमछलियों की जात एक सौ तीस तक हैं॥ तोहफ़तुलग़रायब का ग्रन्थकार लिखताहै कि दरियाय रोम में एकटापू है जिसमें नाना प्रकार के फूल और वृक्षहैं अबूहामिद इन्दलसी ने अपनी पर्यटनमें लिखाहै कि दरियारोममें एकटापू मैंने खालतानाम देखा जिसमें एकमहाड़ पर बकरियों का इतना अधिकत्व देखा जैसे टीड़ी का और वे मारे मुटाई के भाग नहींसक्ती थीं इसलिये जबकोई जहाज़ इसओर को

ता है तो मनुष्य उन पहाड़ी बकरियोंको मनमाने जितनी लै
तेहैं उनमें कोई बकरी तो मोटी कोई गर्भिणी और कोई जवान
र कोई बच्चाहोतीहै निदान इसटापूमें बकरियों के सिवाय कोई
नहींहोता॥ हां इसटापू में वृक्ष घास और चारा अधिकहै मेरे
कट तो सम्पूर्ण जहाज़ जो सागरमें वर्त्तमानहों केवल बकरियों-
से भरलिये जावें तब भी बकरी न चुकैंगी॥ दरियाई लोगों ने
हाहै कि कुस्तुनतुनियाके निकट पूजनीय स्थानहै जो लोग उस
र से निकलतेहैं तो कुछ सौगात वहां चढ़ातेहैं और उसकीपरि-
मा करतेहैं॥ दिनके पिछले हिस्सा से पानी बढ़ने लगता है तब
सारीलोग अपनी २ राहलेते हैं और वह ठौर पानीमें फिर मूंद
ातीहै और दूसरी साल फिर उसीदिन प्रकट होती है झूंठ सत्य
श्वर जाने॥

व्याख्यान इस सागरके अद्भुत जीवोंके विषयमें॥

हारूनुमग़रबी के बेटा अब्दुलरहमानने एक हम्मामी की मज-
लिस में वर्णनकिया कि मैंने एकबार जहाज़पर चढ़के पछाहँ जाने
का मनोरथकिया तो जाते २ रतून नाम ठौरपरपहुंचा तो मेरेसाथ
एकदास सक़लबीनाम था उसकेपास शिस्त अर्थात् मछली पकरने
की डोरी थी उसने शिस्तको सागर में छोड़ी तो उसमें एकमछली
एकबीता की आई उसमछली के दाहनेकान में लायलाह इल्लिल्लाह
और पीठि पै महम्मद और बायें कान पै रसूल अल्लाह लिखा था
अबूहामिद इन्दलसी ने लिखाहै कि जब समुद्र का उतार था जो
मैंने देखा कि समुद्र के उतार की ओर एक पहाड़ है उस पै एक
ऐसी लाल नारंगी रक्खी है कि मानो वृक्ष से अभी टूटके आई है
उससमय मैंने जाना कि कदाचित् किसीजहाज़ वाले की गिरगई
है यह शोच मैंने चाहा कि इसको उठाऊं तो मालूम हुआ कि यह
तो जानवरहै जो कड़ा पत्थरसे चिपकाहुआ मैंने बहुतेरा जोरकिया
परन्तु वह पत्थर से न छूटा उससमय मैंने छुरी से काटना चाहा
परन्तु छुरीनेभी कुछकाम न किया॥ इस जानवर के न तो आंखें

थीं और न शोश मुख अर्जवन अर्थात् शाख के बीचमें था तब रावी
ने उसपै कपड़ा लपेट के खींचा तो लालरंग का मुलायम लम्बा
निकला और नारंगीसे उसमें कुछ भेद न था अन्त को मैंने उसे
छोड़दिया तो वह अपना मुख खोल के श्वास लेनेलगा॥

अबूहामिद इन्दलसीने वर्णन किया कि एकबार मैं रोमकेकिनारे
पत्थर पर बैठा मुंह हाथधोयरहाथा इतनेमेंपत्थरके नीचेसेएकपीले
सांप बुन्दीदारने शिरनिकाला तो मैंनेदेखा कि उसकाशिरख़रगोश
के शिरकेसमानथा और दोनों आंखें वड़ी और फैलीहुईथीं तब मैंने
एककटारमारा परन्तु उसने कुछअसर न किया और वहसांपपत्थर
केनीचेसे निकलके दरिया में पैरनेलगा इस सांपकाफन तो एकथा
परन्तु घर पांचथे और तीनगज़का लम्बाथा तब मेरे साथियोंने इस
प्रकारकेसांपमारे उनकीखाल निकाली तो वह प्याज़से भी अधिक
मुलायमथी और उसकामांस दुम्माकेमांसकेसमान था और सम्पूर्ण
शरीर में उसके हड्डी और कांटेनथे तिसपरभी उसपर कोई हथ्यार
लोहेका असर नहींकरता था समुद्रगामी लोगोंने लिखाहै कि जब
कभी यह सांप जहाज़ पर आजाताहै तो जहाज़ के कुत्तोंको खाता
है और इस जीव को दरियाई ख़रगोश भी कहते हैं इसका व्योरा
और गुण जलचारी जीवोंके साथ लिखाजावेगा और सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर १३५

इनमें से एक प्रकारकी मछली होतीहै जो शेख़ यहूदी के नाम
से प्रसिद्ध है अबूहामिद इन्दलसी ने लिखा है कि इसका चेहरा
मनुष्यकासा होताहै और दाढ़ी भी होतीहै इसके गोशालाकी बराबर
ताक़त होतीहै और यह जीव मेंढ़क के समान होताहै और इस
को शेख़ यहूदी कहने का यह कारणहै कि यह शनिश्चरकी रात
पानीसे निकलके सूखेमें जातीहै और जबतक इतवार की रात
सूर्य्य अस्त नहीं होता तबतक जंगलमें बिना अन्नजल रहतीहै
कदाचित् कोई इसको उसदिन मारे अथवा काटे तो किसी
नहीं मरती जब इतवार के दिन सूर्य्यास्त होता है तो यह

ढकके समान कूदके पानीमें जाता है कहतेहैं कि इसकी खाल न
रसपै (जो एक प्रकारका रोग पैरकी अंगुलियों में होताहै उस से
नुष्यलँगड़ा होजाताहै) बांधना फलदाईहै उसका दर्द उसीसमय
न्द होजाताहै और उसकी सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर १३६

अबूहामिद इन्दलसी ने बर्णन किया कि मैंने एक मछली दो
ाज़की देखी जिसका शरीर चौकोन था और उसकी दोनों आंखें
ा प्रकट थीं परन्तु उसके शीश और मुख का पता न मिला
ौर न यह मालूमहुआ कि यह खाती क्योंकर है और एक प्रकार
ी मछली अस्तर नाम होती है अबूहामिद ने कहा कि मैंने एक
ाछली जमाउलबहरैन में देखी जोपहाड़की बराबरथी और चिल्लार
रोतीथी उसकी बराबर भयानक शब्दरोनेका अपनीसम्पूर्ण उमर
ं नहींसुना और उसके सुनने से मारे डरके कलेजा फटाजाता था
नेदान उसके चिल्लाने से दरिया का पानी हिला और लहरें उठने
लगीं यहदेख मैंबहुतडरा कि ऐसा नहो कि मैं डूबजाऊं दरियाइयों
े कहा कि यह वह मछली है जिसको अस्तर कहते हैं एक कला
केस्म की मछली होती है जो इस मछली के पीछे खाने को दौड़ती
ै और यह उसके डरसे भागती है और चिल्ला २ के रोती है तब
यहभागके दरिया मजमाउलबहरैन में छिपती है और वह मछली
अति बड़ी होने के कारण उसमें नहींसमाती इसलिये लौटजाती है
और सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नंबर १३७

इनमें से एक प्रकार की मछली का नाम मूसा और यूशा है
अबूहामिद इन्दलसी ने लिखा है कि मैंने एक मछली शहर सबा
केनिकट देखी इस मछली की पैदायश उस भूजीहुई मछली में है
जिसको हजरत मूसा और यूशा ने आधी तो खाई और आधी को
ईश्वर ने सजीव करदिया था और इसीके विषय में कुरान में भी
लिखाहै उसकी जाति अबतक इस ठौरपर है यह मछली एक गज़

लम्बी और एक बीताकी चौड़ीहोती है ॥ एकतरफ़ इसकेकांटे और हड्डी होतीहैं उसपर महीन खाल होती है जिसमें उसकी हड्डी न बिखरजायँ और एक आंख और आधा शिर है जोकोई दूरसे देखे तो मांसका लोथरा समझेगा और आधी खाईहुई मालूम होती है इसे लोग शुभसमझ के लक्ष्मीपात्रोंके पास सौगात लेजातेहैं यहूदीलोग इसको खातेनहीं बरन दूर२लेजातेहैं सूरतउसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर १३८

एकप्रकार की मछली कुलाहनसद होतीहै जिसको तुर्कलोगपहरते हैं इसमछली के मुख और शीश नहींहोता औरइसके पेटमें आंत आदिक कुछ नहीं होती हैं केवल गायके पेटके समान होतीहै जब कोई इसका शिकारकरतेहैं तो चलतेही पानीकालाहोजाताहै कदाचित् वह पानी इसीके पेटका होताहै और जब यह मछलीजाल में आतीहै तो जालके फन्दे कालेहोजाते हैं और उसपानीसे स्याहीकी भांतिलिखते हैं वह पानी बहुत अच्छा होता है कभी उसका लिखा मिटता नहीं है सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर १३९

इसमें से एक मछली और इस सागरमें पाईजाती है अबूहामिद इन्दलसीने लिखा है कि जो उसको टुकड़ा टुकड़ा करडालो तब भी उसके टुकड़े चलाकरते हैं और उसको मांसकी तरह पकावें तो आग पर उसके टुकड़ों की ऐसी हरकत होती है कि डेग उलटजाती है यहां तक कि पकने तक तड़प हुआ करती है और इस मछलीका मांस स्वादिष्ट होता है और एक प्रकार की ख़ताफ़ नाम मछली होती है-इसके काले दो पंखहोते हैं यह मछली पानीसे निकल के पक्षीके समान उड़ती है और स्वरूप उसका यहहै॥

तसवीर नंबर १४०

एक मछली मनारा नामक होती है अबूहामिद इन्दलसीने लिखा है कि यह मछली मिनारकेसमान निकलती है और नौकापर ... का अनुमान करती और चाहती है कि जहाज़को तोड़डाले

जिस समय इस मछली को देखते हैं तो जहाज़ वाले बड़े ज़ोर से बाजा बजाते हैं और हल्ला मचाते हैं जिसमें यह मछली भागजाय और सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १४१

एक प्रकार की मछली ऐसीहोती है जिसके विषयमें अबूहामिद इन्दलसीने लिखाहै कि जब पानी सूखजाता है तो उसी कीचड़ में वह मछली छह घड़ी तकतो तड़पा करती है तिस उपरांत उसकी देहकी खाल गिरजाती है और दोपंख निकलते हैं जिनके द्वारा उड़के फिर पानीमें चलीजाती है इस समुद्रमें सांपभी बहुत होते हैं तुराबिलीस कहता है कि बहुधा अद्भुत सांप होते हैं और बहुधा लावकिया और अक़रा पहाड़के निकट भी होते हैं जिस समय ये दुष्ट पानीसे निकलतेहैं तोबहुधा थलचारी जीवोंकी नाश होती है॥

दरियाय ख़ुरज़॥

यह दरिया तबरिस्तान और जरजान का है ये दोनों देश इस सागर के पूर्ब उत्तरकोण पर स्थित हैं इनके उत्तरमें ख़िरज़की विलायत है और पश्चिममें शरवान और फ़ितक़ देश हैं और दक्षिण में एक गीलाननाम बड़ादरियाहै जो किसी सागरसे मेल नहींरखता जो कोई इसके चारोंओर घूमा चाहै तो जहांसे सवार हो वहीं आजायेगा दूसरे समुद्रों की अपेक्षा इस समुद्रमें फिरना बहुत कठिन है इसमें ज्वार भाटा नहींआता परन्तु लहरैं बड़े ज़ोर से उठती हैं इसमें मोती आदिक रत्न कुछ नहीं होते हैं इसके टापू खराब कोई आदमी नहीं रहता है परन्तु टापुओं में पानी और जंगल है लिखा है कि इस समुद्र का दौर पांचसौ कोश और लम्बाई आठसौ कोश और चौड़ाई छह सौ मील है और यह स्वरूप इसको गोलाई लिये है अब इस समुद्रके टापुओं का बर्णन किया जाता है॥

व्याख्यान टापुओं के विषय में॥

अबूहामिद इन्दलसीने अपने पर्यटनमें लिखा कि मैंने एकपहाड़ इस समुद्रमें काली माटीका देखा और यह समुद्र इस पहाड़के चारों

ओर है और इस पहाड़ की चोटीपर एक सोता है जिसमें से पानी निकला करताहै और इस पानीके साथ छोटे २ फल चुन्नीके समान बहते हैं जिनको लोग सौगात दूर दूर लेजाते हैं और इसमें एक अद्भुत टापू सांपों का है और यह टापू उसी काले पहाड़ के पास है यह टापू सांपोंसे भराहै और इसमें चारा बहुत है परन्तु मारे सांपों के किसीकी सामर्थ्य नहीं जो इसमें पाँवधरसके मारे सांपोंके दरियाई पक्षियोंके अण्डोंको ये दुष्ट खाजातेहैं मैंने देखा है कि लोग लकड़ीसे सांपोंको हटाके राह करतेहैं और दरियाई जीवोंके अंडे बच्चों को बचातेहैं परन्तु इतनाहै कि वे मनुष्यसे नहीं बोलते इनमेंसे एक टापू जिननाम है अबूहामिद इन्दलसीने लिखा है कि इसटापूमें मनुष्य और जंगली कोई नहीं हैं कहते हैं कि इसटापूमें जिन्नात बसते हैं जिनकी आवाज़ सुनीजाती हैं एकटापू ग़नमनाम है सलामतरजमान ने कहा है कि मैं अलुवासिक़विअल्ला अमीरुलमोमिनीन का एलची था, मैंने देखा कि इसटापूमें पहाड़ी बकड़ी बहुतहैं और मारे मुटाईके भाग नहीं सकती हैं जब इसटापूमें जहाज़ पहुंचा तो शिकार खेला उसमें सबप्रकारकी बकरीथीं मोटी गर्भिणी और जवान इसटापूमें बकरियोंके सिवा कोई नहीं रहताहै इसटापूमें सोता और चरागाह बहुत हैं कहते हैं कि अलुवासिक़विअल्ला अमीरुल मोमिनीनने अपनी बादशाहीके समय में एक रात्रि को बग़दाद के निकट स्वप्नदेखा कि सद्दज़वायक़रनैन (एक दीवार समुद्रके किनारेपरहै) गिरपड़ी इस स्वप्नके देखने से ख़लीफ़ा को महादुःख हुआ तब ख़लीफ़ाने तुजहामको इसकी शोधके लिये भेजा कहतेहैं कि वह रजज़में पांच दिन ठहरा तो वहां एक अद्भुत वस्तुदेखी अर्थात् वहांएक बड़ी मछली का शिकार किया और उसके कान में रस्सी बांधके उस को घसीटा तो तत्काल उसका कान सूज आया उसमें से एक स्त्री लाल और श्वेत दीर्घ केश अति सुन्दर प्रकटहुई उसको वहांसे लेगये वह दीन बहुत रोतीथी और शीशके बाल नोचतीथी ईश्वर की दयासे उस रोनेवाली स्त्री के शरीरमें नाभीसे लेकर जांघोंतक एक

श्वेत और स्याह वस्तु लपेटी थी और वह पायज़ामाके समान मा-
लूम होती थी निदान वह स्त्री लोगोंके पास मरगई मैंने इस वार्ता
को बहुधा किताबोंमें देखा है निजकरके जो किताब अबूहामिद इंद-
लसीने जीरू के बेटे वज़ीर के लिये बनाई थी उसमें यह हाल सवि-
स्तार लिखा था और इसी भांति शामके समुद्रमें एकसांप है जोजल-
चारी जीवों को दुःख दिया करता है जब उसका अन्याय अपनी
सीमा से बढ़जाता है तो ईश्वर एक ऐसा अब्र पैदा करता है जो उस
दुष्टको उस समुद्रसे निकाल देता है और वह सांप एक काला अ-
ज़गर होजाता है उसका स्वरूप एक मकान अथवा एक बड़े वृक्षके
बराबर होता है इसके श्वासके आस पास वृक्ष और जीव जलजाते
हैं और यह अब्र इस दुष्टको याजूजमाजूजकी ओर फेंकदेता है और
याजूज माजूज आयके इसके टुकड़े २ करडालते हैं और इसके मांस
को वे एक वर्षपर्य्यंत खाते हैं और इसीप्रकार इब्नअब्बासने प्रसन्न
हो ईश्वर उसपै लिखा है और उसका स्वरूप यह है ॥

तसवीर नम्बर १४२

इसी प्रकार एक वार्त्ता नोशेरवां बादशाह की है कि जब वह पू-
र्वोक्त बादशाह सद्दुल मुतहर (एक दीवारहै जो समुद्र किनारे बनी
है) बनानेसे निःचिंत हुआ तब प्रसन्न होकर आज्ञादी कि उस दी-
वारपर एक तख़्त रक्खा जावे तिस पै बैठ कर ईश्वर का आराधन
करूं तिसपै ये बातेंकहीं कि हे ईश्वर यह तेरी दया दृष्टिसे पुण्य का
काम इस दासने पूराकिया अब इसके पलटे मुझे मेरे जन्मभूमि में
भेजदे और इस महाकष्टसे छुड़ादे इसमें बड़ीदेर तक शीश पृथ्वी
पै धरे रहा जब शिरउठाया तब कहा कि अबमुझे ख़िज़र और तुर्कों
की लड़ाई का भय नहीं है तब संसार को बहुतसा दान दिया इस
हेतुसे कि उन्होंने इसके साथ बहुत सी मेहनत की थी इतने में एक
बड़ा अद्भुत जीव आय प्रकटहुआ और उसके साथ जो एक मेघ था
उसने सूर्य्यको छिपा दिया इतनेमें जो राजसी बीरथे उन्हों ने कमा-
न की ओर हाथ बढ़ाया बादशाह ने यह देख के पूछा कि क्या यत्न

शोची है तब भृत्योंने उत्तर दिया कि तीर और कमान से इसबल को मिटावेंगे तब नौशेरवां ने कहा कि ठहरो जब ईश्वर ने मुझको बारहवर्षतक अपनी रक्षामें रक्खाहै तब इससमय इसजीवसे मुझे क्योंकर दुःख पहुंचावेगा यह सुनके सब लोग धीर हुये और वह जीव भी संपूर्ण प्रकट हुआ जिसकी सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर १४३

निदान उस जीवने बादशाह के पास आयके प्रार्थना करी कि मैं इस दरिया के निवासियों मेंसे हूं मैंने सात बार इसी भांति दीवार तय्यार होते और गिरते देखी बहुधा यह दीवारें इस समुद्र के किनारे सिकन्दर और देवदादन आदि ने बनवाईं तब मुझे ईश्वर ने आकाशवाणी दी कि तेरे समय में तेरी सूरत का बादशाह संसार में होगा जो इस दीवार को बनावैगा जो जबतक संसार रहेगा तबतक रहेगी इसलिये आज मालूमहुआ कि आप वही बादशाह हैं बस यहकहकर अदृश्यवान् होगया ईश्वरजाने कि वह आसमानपर चलागया अथवा वह समुद्रमें चलागया ॥

व्याख्यान इस समुद्रके जीवों के विषय में ॥

दरियाई जीवों का हाल तो ईश्वर के सिवाय किसी को नहीं मालूम परन्तु जितने प्रसिद्ध हैं उनका हाल लिखाजाता है ये जीव दो प्रकारके होतेहैं एक तो ऐसे कि जिनके फेफड़ा नहीं होता जैसे मछली सो यह जाति तो पानी के सिवाय और कहीं जी नहींसक्ती और एक मेंढक के समान जिसके फेफड़ा होताहै यह जाति दोनों ठौर रहती है अर्थात् पानी और बायु में और मछली को बायु की ज़रूरत नहीं होती क्योंकि उसके दिलमें पानीकी तरीभरीरहती है और इसी कारणसे उनको फेफड़े की ज़रूरत नहीं है यह ईश्वर की चतुराई और बुद्धिमानी है कि जिस जीवको जिस अंगका प्रयोजन है उसको वही अंग दिया है इसलिये जिन जीवोंका स्वरूप पूरा है और उसकी बनावट पूरीहै तो उसको बहुतसे अंगोंकी आवश्यकता है और जिस जीवका स्वरूप खण्डितहै वह दूसरे जीवोंकी अपेक्षा

गाक़िसहै तौ उसको बहुत अंगोंकी इतनी आवश्यकता नहीं है इस-
लिये ईश्वरकी चतुराई से यही बात ठीकहुई कि जिस जीवको जिस
अंगकी ज़रूरत हुई उसको वही अंग दियागया चाहें उसके अंगपर
छिलकेहों चाहें खाल अथवा और कोई दूसरी बस्तुहो जिस्से उसके
शरीरकी रक्षा होसके और जो अंगहीनहैं उनकी आवश्यकता मिटा
दी ईश्वरकी माया करके जलचारी जीव दो प्रकारके होतेहैं एक तो
सीपी वाले दूसरे छिलकेवाले और जलचारी जीवों को बाज़ू दिये
हैं जिनके द्वारा पानीमें पैरसकैं जैसे पक्षियोंको पंख दियेहैं जिससे
वे बायुमें उड़सकैं इनमें से किसीको तो ऐसा बनायाहै कि वे दूसरों
को मारके खायँ और किसीको ऐसा जिसको मनुष्य शिकारकरके
खायँ इसीकारण सीधे पक्षियोंकी सृष्टि ईश्वरने अधिक रची जिसमें
उनकी नाश न हो जाय अब जलचारी जीवों का बर्णन बर्णमाला
केक्रमसे लिखा जाताहै (अरनबुलबहर) इसजीवकाशीश ख़रगोश
केशीश समान होता है और शरीरका शेष भागमछली की बनावट
का शैखुलरईसने लिखा है कि जो उसको जलाके मंजन बनावें तो
दांतोंकी चमक अधिकहोगी॥ सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर १४४

(अलवस्स)यहजीव मछलीकी जातिका होता है यहजीव महा
भयानक होता है क्योंकि और जीव तो शिकारी भी होतेहैं परन्तु
यह नहीं होता और यह दूसरे जीवोंकी हड्डी खाताहै॥ इसकागुण
यहलिखा है कि जो इसका मांस भून के उनदो मनुष्योंको खवावे
जिन में आपस में मनमैली हो तो दोनों में प्रीति हो जायगी॥
सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १४५

(आदमआवी) यह जानवर तद्रूप मनुष्य के स्वरूपवत् होता
है केवल इसके पूछ अधिक होती है॥ एकमनुष्य एकआवी आदमी
को पकड़लायाथा उसने मनुष्योंको दिखायाथा और सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर १४६

किसी२ने लिखा है कि दरियाय शामके किनारे कभी२ मनुष्य

की सूरत प्रकटहोती है उनके नीचे एकछेद होता है जिसके द्वारा दिसा फिरते हैं और इनको शैख़ुलहजर कहते हैं और जोकोई एक उसको देखताहै तो दूसरोंको भीदिखाता है कहावत है कि किसी ने एक दरियाई आदमी किसी बादशाह के पास सौगात भेजाथा वह वहां बहुतदिन जातारहा बादशाह ने चाहा कि उसका हाल जाने परन्तु वह उसकी बोलीनहीं समझताथा अन्तको एकस्त्री सा प्रसंग कराया तो लड़का पैदाहुआ वह लड़का अपने मा बापकी बार्ता समझता था॥ बादशाह ने उससे पूंछा कि तेरा बाप क्या कहता है तब उसने कहा कि हम पशुओं की पूछ तो नीचेकी तरफ़ होती है और मनुष्योंकी पूछ मुँहकी ओर होती है अर्थात् नाक॥

(बक़रआबी) यहजीव दरिया से चरनेके वास्ते निकला करता है और अम्बरका गोबर करता है इसलिये जो अम्बर दरिया कि नारे परा मिला करता है उसको बहुत से तो कहते हैं कि अम्बर समुद्र केनीचेहोता है सो जब समुद्र लहरैंलेता है तो बाहिर फेंक देता है और बाज़े कहते हैं कि अम्बर सोतों में होता है इसलिये यहमानके कि उसी बैलका गोबर है तो उसके गुणयेहैं कि दिमाग को बली करता है और मन बुद्धि स्थिर रहती है और जोकोई एक दांग रोज़खाय तो बीर्यकी वृद्धि करता है और सूरत यह है॥

तसबीर नम्बर १४०

वाल॥ यह एक प्रकारकी मछली होतीहै जो पचास गज़ की लम्बी होतीहै॥ यह मछली जहाज़ तोड़ डालतीहै जो चीज़पातीहै सो खायजातीहै यह अम्बर को लीललेतीहै तो मनुष्य इसके पेटसे अम्बरको निकालते हैं उस अम्बरको मवलू कहते हैं इसमें सुगंध नहींहोती कभी २ यह मछली बाढ़के समय दरिया बसरा में मि लतीहै परन्तु फिर लौटना अतिकठिनहै क्योंकि वह दरिया तंगहै उस समय धीमरलोग इसका अहेर करते हैं और शिस्तके द्वारा इसको निकालते हैं और तीरों से मारते हैं उसकी खोपड़ी से तेल निकालके चिराग़ जलातेहैं और जहाज़ों के पुरज़े मलते हैं॥

तमसाह ॥ फ़ारसी में इसको नहनंग कहतेहैं (इसदेशमेंइसको नाक कहतेहैं परन्तु यहां की नदियों में छोटाहोताहै) इसका मुंह चौड़ा और साठि दांतहोते हैं बीस तो ऊपरकी ओर और चालीस नीचेकी तरफ़ नीचे के दो दांतों के बीचमें ऊपरका एकदांत परत है इसीसे इसकी पकड़ अति कठिन होतीहै ॥ इसकीजीभ बहुतबड़ी और पीठ कछुआकी पीठीके समान होतीहै जिससे उसपै लोहाभी नहीं बेधताहै इसके चारपांव और पूछचार गज़की लम्बी होतीहै इसका शीश दो गज़ और धड़ आठ गज़का लम्बा होताहै ॥ खाते समय दूसरे जीवों के बिपरीत इसका ऊपरकाकल्ला हिलता है ॥ इस जानवरमेंनतो अगड़ाईलेनेकी सामर्थ्यहै और न शिर झुकाने की किसहेतुसे कि इसकी पीठिमें कोईजोड़ नहींहोताहै और अति भयानक कुरूप होता है ॥ यह मनुष्यका शत्रु है यहांतक कि ऊंट खच्चरादि सम्पूर्ण जीव इससे डरतेहैं और यह जानवर दरिया और दरियाहिन्द में पायेजातेहैं ॥ यह दुष्ट जब आदमीको नदी किनारे देखताहै तो पानीमें बुड्डीमारके मनुष्यके पास आयकूदके दीनमनुष्यको खींचलेजाताहै ॥ यह जीव पक्षी के समान अंडा देताहै और इसके अण्डों में मुशककी बास आती है और इसका बिष्टामुख की ओरहोके निकलताहै क्योंकि इसके शरीरमें मुखके सिवा औरकोई छेदनहीं होता और जब कोई चीज़खाताहै और उसके रेशेदांतों में रहजानेके कारण कीड़ा परजाते हैं उस समय यह पानीके बाहिर निकल सूर्य्यकी ओर मुंहफैलाय के बैठता है तब एक पक्षी तन्नूय (नामपक्षीके) समान आय इसके मुखके कीड़े चुनखाताहै निदान वह पक्षी उसकीड़े बीननेमें मानो उसका रक्षकहै जब किसी अहेरियाको देखताहै तो बोलने लगता है तब वह नहनंग नाम जीव पानीमें चलाजाताहै निदान जब वह नहनंग देखताहै कि कीड़े बिन गये तब मुहबन्द करलेता है और चाहता है कि उस पक्षी को भी लीलजावे परन्तु ईश्वरने उस पक्षीके शीशपर एक ऐसी पैनी हड्डी कांटेके समान बनाईहै कि बहुत उसके मुँहमें बन्द करने के समय

चुभतीहै तो बिकल होकर मुँह खोल देताहै तब उस दीन पक्षी का
प्राण बचता है इसी कारण यह कहावत प्रसिद्ध है कि नहनंग का
पलटा ऐसा होताहै जब यहजानवर पलटजाता है तो सीधा नहीं
होसक्ता उस समय जो इसका शिकार खेलना चाहैं तो उसको
किसीयत्नसे बाहिर लातेहैं और उलटके उसकाहृदय निकाललेतेहैं
और जो कोई उसपै सवार होजायतो भी काबूमें होजाता है किस
हेतुसे कि वह पलट नहीं सकता है और इसके अंगोंके गुण दो हैं
कि जिसकी आंखमें ढरका का रोगहो वह इसकी आंख लेकर
तावीज़ बनावे तो ढरका बन्दहोजाय और इसके दांत जिसके पास
हों तो उसे रति करनेकी सामर्थ्य अधिकहो और जो इसकी पूंछकी
खाल मढ़के मेंढाके माथेपर बांधे तो लड़ाईमें सम्पूर्ण मेंढों से जीते
और इसकी चरबीका फाहा काटेहुये घावपर लगावे तो फलदायक
होताहै इसकीपीठिको घिसिकैलगावे तो आंखोंकीसफ़ेदीमिटिजाय
और इसके हृदयकी धूनी मिर्गी वालेको फ़ायदा करतीहै और जो
इसकी बीटि का सुर्मा आंखों में लगावे तो सफ़ेदी दूरहोती है
और स्वरूपउसका यहहै॥

तसवीर नंबर १४९

तनीन अर्थात् अजगर॥

यह जीव अति भयानक होताहै फ़ारसीमें इसको मार कहते हैं
इसका शीशबड़ा और आंखें सफ़ेद होती हैं मुंह बहुत बड़ा खुला
हुआ और पेटबहुत बड़ा और दांत बड़े२ होतेहैं जलचारी जीवों को
बराबर लील जाताहै जब यह जीव चलताहै तो नदी उलट पलट
होने लगतीहै जब यह दुष्ट अपना पेट जीवों को खाके भरता है
तो उसको झुकाके ऊंचा कमानके समान करताहै उस समय जो
कुछ इसके पेटमें होताहै वह सम्पूर्ण सूर्य्याग्नि से भस्म होजाता
है कहतेहैं कि किसी मनुष्य ने एक मृतक अजगरको दरिया किनारे
देखाथा वह छहमील के अनुमान लम्बाथा और रंग इसका चीते
कासा होता है और मछली के समान इसके भी अंगपर सिफ़ने

होतेहैं और दोबड़े बड़े बाजू होते हैं और शीशटीलेकीबराबर मनुष्य के शीशकेबनावका होताहै और दो कान छोटे२ और दो आंखैं गोल बड़ी२ होती हैं॥ उसकी गरदन से छःगरदन दृष्टि आती हैं और प्रत्येक बीसगज की लम्बी और प्रत्येक गरदन पर सांप का शीश प्रकट है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १४९

सद्दादबिन अफलजकीकहावतहै कि मैं एकबार अमरुलवलीकी सभामेंथा उस समय अजगरकी बार्त्ताचली तो मुझसे पूछा कि तुम जानतेहो कि यह कहां से आता है जब मैंने कहा कि मैं तो नहीं जानता तब उसने यों बर्णन किया कि यह सर्प जंगल में होता है और थलचारी जीवोंको खाया करता है जब वहां इसका अन्याय अधिक होताहै तो ईश्वर फरिश्तों को आज्ञा देताहै वे इसकोदरियामें फेंकदेतेहैं और जब यह दुष्ट जलचारी जीवोंके साथभी वही अन्याय करता है तब ईश्वर दूसरे फरिश्तोंको आज्ञा देताहै कि वे उसको दरियाके बाहिर डालदेते हैं और उसपै एक मेघको नियत करता है कि वह उसको याजूज माजूजकी तरफ़ फेंकदेताहै॥ एक बार मेघने इस सांपको दरिया इन्ताकिया जो फेंका तो यह सांप एक देशके कोटके ऊपर होकर गया तो इसकी पूछ उस क़िले में लगी सो उसकोटके इसकीपूछ की चोटसे उन्नीस बुरज गिरगये॥ कहतेहैं कि वहमेघ इससांपसे वैसाहीसम्बन्ध रखताहै जैसेचुम्बक लोहेसे इसीसे जब वहमेघ इसकोदेखताहै तो तत्कालउठाके फेंक देताहै और यह भी कारण है कि उस मेघके डरसे यह सर्प मुख नहीं निकालता॥ परन्तु हां जब मेघानहीं होते तब मूंड़ निकालता है॥ इसके अंगोंके गुणोंके बिषय में लिखाहै कि इसका मांसखाने से शरीर पुष्टहोताहै॥ जालीनूस (महाबैद्यराज अगले दिनोंहोगया) के मतानुसार इसके मांस के टुकड़ा करके घावपै बांधे तो फ़ायदा होताहै एक क्षणमात्रमें अच्छा होताहै॥

(जरी) इस जीवको फ़ारसी में मारमाही अर्थात् बाम मछली

कहतेहैं प्रत्येक नदीमें प्रकट होताहै और यह जीव सांप औरमछली के संयोगसे होताहै हाफ़िज़ने लिखाहै कि यहजीव जंगली मूसे को खाताहै जहाज़ वाले कहतेहैं कि रातको मूसे पानी पीनेकोआते हैं तो यह जानवर घातकी ठौर छिपा रहताहै मुहँ खोलेहुये इस आसरेमें रहताहै कि ज्योंहीं वह मूसा निकट आवे त्योंहीं निगल जाय सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर १५०

इसका गुण यहहै कि इसका मांस खानेसे आवाज़ साफ़ होती है और फेफड़ाके रोग शान्त होतेहैं और इसके मांस को पीसके जो देही के लहसुन रोगपै लगावे तो मिट जाताहै और इसके पेटका पानी निकालके जो दीवाने घोड़े की नाक में टपकावे तो तत्काल अच्छा होता है ॥

(हलका)यह भी एकप्रकार की मछली है जो कुछेक मारमाही के स्वरूपवत् होती है यहबालू के नीचे रहा करती है और सांझ सबेरे खाने के लिये निकला करती है ॥ इस मछली की हड्डियां अतिही नरमहोतीहैं इसका मांस खानेसे स्त्री अत्यन्त पीनहोती है और सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर १५१

(दिलफ़ीन) इस जीव का दर्शन शुभहोता है जब जहाज़वा इसको देखते हैं तो प्रसन्न होते हैं ॥ यह जानवर जब किसी व बूड़ते देखता है तब उसको पानी से निकाल के तत्काल किनारे करदेता है और उसीभांति इसके गुण भी अच्छे हैं कि डूबने से बचाता है ॥ कहते हैं कि इसके दोपंखहोते हैं जब यह जहाज़ को देखता है तो अपने पंखखोल के जहाज़के साथ होलेता है और जब थकजाताहै तो पंख समेटके पानीकेभीतर बैठजाताहै सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर १५२

(ज़ूबियान) यह भी एकप्रकार की मछलीहोती है जहां तीर की गांसीलगीहो अथवा कांटाटूटगयाहो वहां पै इसकामांस बांधना

फ़ायदा देता है॥ क्योंकि तत्काल बाहिर निकाल देता है और इसके मांसको कालेचनाके साथ पकाके खानेसे जबुलक़रा अर्थात् रोग मिटता है और स्त्रियों के साथ रतिकरने की सामर्थ्य अधिक होती है॥ सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १५३

(रादा) यह छोटीसी मछली है इस जानवरमें मस्ती बहुतहै॥ इसके गुणके विषय में लिखा है जब यह मछली धीमरके जाल में फँसती है और धीमर चाहता है कि जालको खींचें तो इस मछली में सर्दी इतनी होती है कि उसके हाथ कांपने लगते हैं और डोरी हाथसे नहीं थँभती है जो जालकी डोरी लम्बी न हो और धीमर उसको हाथसे छोड़ न देय तो सम्पूर्ण गर्मीकी शक्ति शरीरसे निकल जाय॥ इसलिये जब बधिकको इसमछलीका जालमें आनेके चिह्न मालूम होजाते हैं तो जालकी रस्सी किसी वृक्षमें बांधदेतेहैं अथवा पत्थर में अटकादेते हैं जबवह मरजाती है तब निकालते हैं क्योंकि मरनेपै उसकी सर्दी इतनी तीक्ष्ण नहीं रहती है॥ हिन्दुस्तान के वैद्यलोग इसका सेवन उसीसमय बताते हैं जब कोई रोग गर्मीके कारण होता है इसका खाना अक़्लीम शिशुम अर्थात् देश में मिलतीही नहीं॥ शेख़ुलरईस अबूअली सैनाने लिखा है कि रादा मछली के निकट मिर्गीवाला आयजाय तो तत्काल उसका रोग मिटजाय और यह भी लिखा है कि जो कोई स्त्री इसका थोड़ासा मांस तावीज़ बनाके अपने पास रक्खै तो उसका पुरुष कभी उस से अलग न हो बरन उसकी प्रीति बश्य होजाय और यही कर्म्म जो पुरुष करै तो स्त्री उसकी दासी होजाय और उसकी आज्ञा से मुख न फेरे और सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १५४

(ज़ामूर) दरियाईलोग इस मछली को अत्युत्तम शकुन समझते हैं॥ शिकारी लोग जब इसको देखते हैं तो इसको फँसातेहैं और दूसरी मछलियों को छोड़देते हैं॥ जिस समय यह मछली जहाज़

को देखती है तो जहाज़ के आगे २ चलती है और जब कोई बड़ी मछली जहाज़ पै का अनुमान करती है तो यह उसके कान में जाके उसको दुःख देतीहै तब वह मछली अपने शीशको पत्थर पर दे २ मारतीहै यहां तक कि जब वह मछली मरजातीहै तब उसके कानसे निकलती है और उस दुष्टसे जहाज़ वालों को बचाती है बहुधा यहमछली बैतुलमुक़द्दस की ओरहोती हैं शैख़ुलरईस कहता है कि इसकी खाल जलाके पशूकीआंखोंकी सफ़ेदी मिटातीहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर १५५

सरतांबरीअर्थात् गैंगटा ॥ यह ऐसा जीव होताहै जिसकेशीश नहींहोता और इसकी दोनों आंखेंकन्धे पर होतीहैं और मुहँ छाती पर और आठपैर होतेहैं यह जीव एक अंगपर चलताहै और साल में सातबार कैंचुली छोड़ताहै॥ इसके रहनेके मकान में दो दरवाज़े होते हैं एक तो पानीकी तरफ़ और दूसरा सूखे की ओर जब यह जीवदेही की खाल गिराता है तब पानीकी ओरका दरवाज़ा बन्द करदेताहै जिसमें कोईदुःखदायी उसकोदुःख न देसके और सूखेकी ओरका दरवाज़ा खोलारखताहै जिसमेंबायुका आवागमनरहे और जल्दीनई खाल जमआवे और जब बायु बहुतलगतीहै तो उसकी खालपुष्टहोतीहै उससमय पानीकीओरका दरवाज़ाखोलताहै और दरिया की ओर भोजनों के लिये आता है आधा ऊपर का धड़ तो मनुष्यकासा होताहै और आधानीचेका गैंगटाकासा जब यहकिसी निःफलवृक्षपर चढ़ताहै तो वह उससमय ईश्वरकी आज्ञासे फलित होजाताहै और क्षेमपूर्व्वक रहताहै जो इसका मांस खालसे अलग करकेतीरादिके घावपैलगावे तो फ़ायदाहोताहै और बीछूकेकाटनेके लिये भी फलदायीहै और जो इसकी जलीखाक का शर्बत बनाके पीवे तो कुत्ता के काटनेको फ़ायदा देताहै और उस खालका सुर्मा बनाके आंखों में लगावे तो आंखोंकी सफेदी मिटजातीहै और जो दांतों में मंजनलगावे तो दांत चमकने लगें शैखुलरईसअबूअली

सैना के बेटा ने लिखा है कि जो मनुष्य जिस किसी को सल का रोग हो तो उसको इसका मांस अच्छा है क्योंकि अंगों का कड़ापन नरम करताहै॥ जो इस गैंगटाकी आंखको जबुलफ़ार के साथ किसी सोतेहुये आदमी के बांधे तो अच्छेर स्वप्न देखताहै॥ जो इसकी आंखको जबुलफ़ारके साथ जो लड़का अधिक रोताहो उसके बांधने से उसका रोना बन्दहोताहै और जो उसका पानी आंखोंमें टपकावे तो आंखका ढरका और आंखकी पीड़ा कमहोजाय जो गैंगटाको ऐसे वृक्षपै डालदें जिसके फल गिरजाते हों तो फिर उसके फल कभी न गिरेंगे जिसको चौथेदिन तप आताहो उसको इसके पैरोंकी धूनीदेना अच्छाहै और जिसके कंठमाला हो उसके गलेमें गैंगटाके पैर और कपूर और अम्बरकेलेपकरै तो कंठमाला का रोग तत्काल अच्छाहोजाय और जबतक वह तावीज अपनेपास रक्खैगा तबतक कभी उसके कंठमालाका रोग न होगा और जो गैंगटा मीठेपानी में रहताहै उसके अण्डे मुक्रशर के साथ खाय तो तपादिक मिटजाय और सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर १५६

सरतांआबी अर्थात् पानी में रहने वाला गैंगटा॥

इस दरियाई जानवरका अद्भुत स्वरूप होताहै मानों पांचसांप इकट्ठे हैं और शीश पांचों का एक है देशकूरीदस नामक हकीम लिखताहै कि जो इसकी हड्डी और खालको जलाके झाड़ैं औरवहक़ परमलै फ़ायदा देताहै और दांतोंपै मलनेसे दांत चमकने लगते हैं और लोनके साथ सुर्माबना के आंखोंमें लगावे तो नाखूनाका रोग शांत होजायगा और उसके छिड़कनेसे घाव अच्छाहोजाताहै और खाज अच्छीहोजाती है और सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर १५७

(सक़नक़ूर) शैख़ुलरईस ने कहाहै कि यहजानवर दरियानील में शिकार कियाजाताहै बहुधालोग कहते हैं कि यह जानवर नह-नङ्ग अर्थात् नाकसे उत्पन्नहोताहै और बहुधालोग तमसाह

नाककहतेहैं परन्तु ठीकतो यहहै कि जो यहजानवर अण्डेसे निकलके पानीमें रहता है तब तो उसको सक़नूक़ूर और जो अण्डासे निकल के सूखेमें रहताहै तो उसे नहनङ्ग अर्थात् नाक कहतेहैं इनसक़नूक़ूर में से वह उत्तम है जो उस समय मारा जाय जब सूर्य्य तुला राशिका होताहै और उससमय जो सक़नूक़ूर किसीआदमी को काटे और उसी समय सक़नूक़ूर पानीमें न जानेपावे पहले उसके काटेको अपने मुहँ की लब अर्थात् थूकसे धोयडाले तो सक़नूक़ूर तत्काल मरजाताहै और जो उसघावको न धोवे और वह सक़नूक़ूर दरियामें चलाजाय तो आदमी मरजायगा कहतेहैं कि इसके दो कांटे मछली की तरह होतेहैं और जितना बड़ाहोय उतनाहीं इसकागुण अधिक होता है शैखुलरईस अबूअली सैनाकहता है कि इसकी नाभी का मांस और इसकी चर्बी अत्यन्त वीर्य्यबर्द्धक होती है यहां तक कि आदमी कामकी पीड़ा से बिकल होजाता है और जब तक हजार सुअर न खाय तबतक किसीभांति बिकलता न मिटैगी और जो इसकीपीठ के बीचवाले मुहराको मर्द अपनीपीठ में लगावे तो रति करनेकी शक्ति अत्यन्त होतीहै और उसका मांस ऐसेलड़केकी देही में बांधे जो सोते में चौंक परता हो तो तत्काल यह रोग अच्छा होजाय और सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर १७६

(सलहफ़ात अर्थात् कछुआ) फ़ारसीमें इसको सङ्गपुश्त कहते हैं और यह जानवर पानी और सूखे दोनोंठौरमें रहताहै अजायबुलमखलूक़ात का ग्रन्थकर्त्ता लिखता है कि मैं एक बार जहाज पर सवार हुआ तो एकाएक ऐसा टापू मिला जहां पानीमें से एक प्रकार की हरीघास दिखाई देती थी वहां हमलोग खाना पकाने के लिये उतरे और चूल्हे खोद २ के रोटी बनानेलगे कि इतने में तत्काल टापू की धरती हाली त्योंहीं मल्लाहों ने पुकारा कि जल्दी जहाज़ पर आजाओ यह टापू नहीं किन्तु कछुआ है जो अग्नि की गर्म्मी पाके हिलना चाहता है निदान उसके डीलडौल से एक

टापू का स्वरूप प्रकट था और मालूम होता है कि वह बहुतदिनों से उसीठौर पड़ाहुआथा कि उसके ऊपर माटी का ढेर होगया था और उस माटीपै हरीघास जमगईथी॥ कहते हैं कि यह जीवसमुद्र से निकलके अण्डदेताहै और चराकरताहै और अपने अण्डे आंखोंके नीचे रखता है किसहेतु से कि और तो सम्पूर्ण शरीर पत्थर के समान होताहै उसमें गर्मी नहीं होतीहै॥ जब यह कछुआ पुरुष अपनी स्त्रीसे रति करना चाहताहै और वह स्त्री इसकी आज्ञानहीं मानती तो यह जानवर अपने मुहँसे एक प्रकारकी घास धरलेता है उसमें यह गुणहै कि जब कोई उसको अपने मुहँमें धरलेता है तो सम्पूर्ण जीवधारी उसके बश्य होजाते हैं इसी कारण वह स्त्री भी रतिपै राजीहोतीहै और उस घासको अजमदेशीय महरग्याह कहतेहैं और कहते हैं कि इसकी आदतहै कि यह सांपकी पूछको अपने मुखमें रखलेताहै तब वह दीन सांप अपना शेष धड़ उसके ऊपर पटकता है और पटकते २ मरजाताहै॥ कहते हैं कि जब कछुआ इस दुष्टको खाता है तब अपनी बगल में से कोई बस्तु मुलायमसी खालेता है तो इसके बिषसे निर्भय होजाता है॥ हकीमब्बुलनियास ने अपनी उस किताब में जिस में ओषधियों के गुण लिखे हैं लिखा है कि जहां कछुआ होगा वहां जाड़ेका नुक़सान न होगा और जिसकी आंखोंमें ढरका जाताहो वह कछुआ की आंखों का ताबीज़ बनावे तो फायदा होगा आदमी का जो अंगदर्द करताहो वही अंग कछुआका लेकर उसअंगपैबांधे तत्काल दर्द जातारहेगा परन्तु इतनाहै कि जिस पांवमें मनुष्यके पीड़ाहो वही पांव कछुआका भीहो॥ बगल के बार और गुप्तकेश अर्थात् अधोकेश बनवाके उसपर कछुआ का रक्तमले तो किसी भांतिबाल नहीं जमेंगे यह स्त्रियोंके लिये तो बहुतही अच्छा होताहै॥ इसके पेटका पानी शहद में मिलाके आंखों में लगावे तो नेत्रोंका ढरका बन्द होजाताहै और पीना उसका खुन्नाक़को मिटाताहै औरनाक में टपकानेसे मिर्गीदूर होतीहै जो कछुआकी पीठिका ढकनाबनाके

क़िसी देगपैदकें और आग नीचेसे जलावें तो उवाल कभी न आवैगा और इसके अण्डे की ज़रदी तीन मिस्क़ाल (एक मिस्क़ाल ४॥ साढ़ेचार माशेकाहोताहै) गायके दूध में मिलायके पीवे तोसआल अर्थात् खांसी वालेको फायदा करता है॥ स्वरूप यहहै॥

तसवीर नम्बर १५६

(समारीस) यह एक प्रकार की प्रसिद्ध मछली है शैखुलरईसने लिखाहै कि इसकाशीश जो जिन्दा अर्थात् ऊष्मवत् होताहै और इसके मांसमें रेशा बहुत होतेहैं और मुख और कानकेघावको बहुत गुण करता है और मसाके दाने दूरहोजाते हैं और सब प्रकार के दाद मिटजाते हैं॥ समक यह भी मछलीही की जातिहै और इस जातिकीमछली बहुत होतीहैं कोई तो इतनेसेबड़ी और कोई छोटी होतीहै और बड़ाईमें भी ऐसी लम्बी होती है कि इसके आदि अन्त का पतानहीं मिलता है॥ किसी २ व्योपारी से यह कहावत सुनी है कि हमारे जहाज़ को एक मछलीने आगेको न बढ़नेदिया और चार महीना तक इसी आसरेमें रहे कि जब यह आगेको बढ़जाय तब हमआगे चलें॥ इतने दिनों के उपरांत उस मछली की पूछ मालूम हुई और कोई २ ऐसी छोटी होती हैं कि उनका देखना कठिनहै॥ जो मछली मीठे दरिया में होतीहै उसका मांस स्वादिष्ट होताहै जिन लोगोंने इस मछलीको रति करते समय देखाहै वे कहतेहैं कि यह पुरुष मछली स्त्रीसे प्रसंग करना चाहता है तो अपनी पूछको उठाताहै जिसमें लिंग प्रकट होय और स्त्रीभीअपनी पूछको उठाके भगको प्रकट करतीहै तब स्त्रीपुरुष दोनों मिलजाते हैं और जब अण्डा देनेका समय आताहै तब मैदान में आके गढ़हा बनाती उसमें अण्डा धरके कूड़ासे बन्द करती है उस गढ़हे में वे अण्डा ईश्वरकी मायाबल मछलीहोजाते हैं॥ बुलनियासने लिखा है कि जिस समय ताज़ी मछली की बास बेहोश आदमी के दिमाग में पहुंचै तो वह बेहोश उससमय चैतन्य होजाता है सैनाके बेटा शैखुलरईस बूअली ने लिखाहै कि ढरका वालेको मछलीका मांस

उपयोगीहै और शहदके साथखाना आंखोंका प्रकाश अधिक कर-
ताहै और शैखके सिवा और लोगभी कहतेहैं कि वीर्यबर्द्धक भी है
और उसका पित्ताख़ुन्नाक अर्थात् पीनस वालेको उपयोगी हैचाहे
खाय और चाहे शक्करके साथ उसके हलकमें डालदें॥

(शबूत)यह मछली एक गजसे कुछेक लम्बी होतीहै और एक
बीताकी लम्बी होतीहै॥ यह जानवर बसराकी नदी में बहतेहैं॥
हाफ़िज़ ने लिखाहै कि मुझसे शिकारी लोगों ने यह बर्णन किया
कि जब शबूत मछली जालमें आतीहै तो चाहती है कि निकलजायँ
तब उछलती है और उछाल इसकी दशगज़ ऊंचेतक होती है और
इतनीऊंचीहोकर फन्दा काटजालसे निकलजातीहै॥ सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर १६०

(शफ़ीन) यह एक दरियाई जानवर है और इसीनाम से प्रसि-
द्धहै॥ इसके पांच दुम होती हैं मिलीहुई दूसरे जीवों के बिपरीति
जहां दुम होती है उसके विपरीति इसकी पूछें होती हैंइसकी खाल
दांतों की पीड़ा को उप योगी होती है यह औषध प्रतीत की हुई है॥
सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर १६१

(शेखयहूदी) अबूहामिद इन्दलसीने लिखाहै कि इस जानवर
का चेहरा तो मनुष्यकासा और शेषअंगमेंढक की बनावटकाहोता
है इसका शरीर कुछेक गोसाला से मिलताहै और खाल इसकी
गालई रंगकीसी होतीहै इसको शेख यहूदी कहनेका यह कारण है
कि यह शनिश्चरकेदिन पानी बाहिरसे निकलताहै॥ सूरतयहहै॥

तसबीर नम्बर १६२

(सैर) यह मछली छोटीसी होतीहै इसका ग़रग़रा मुहाके लिये
अत्यन्त उपयोगीहै॥ सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर १६३

(ज़फ़दा अर्थात् मेंढक) यह जानवर पानी और सूखे दोनों में
रहता है इसकी दोनों आंखें बड़ी होती हैं और इसमें सुन्ने और

क में चलीजाती है यह रीतिहै कि शीशागर लोग जो शीशा बना
ते हैं तो शीशाको भट्ठीमें डाल के धुआंदेतेहैं जिसमें शीशाकड़े हो
जायँ जो उससमय कोई जोंक उस भट्ठी में गिरजाय तो ततूकाल
सब शीशा टूटजायँ और इसीप्रकार जोकोई जोंक तनूरमें गिरजा
तो तनूर की सबरोटी छूटके आगमें गिरपरैं जब यहजानवर किसी
के हलक में चिपकजाय तो उसकी औषधी यही है कि लोमड़ी के
बाल जराके उसका धुआं उसके हलक में पहुंचावें ततूकाल जोंक
छूटजायगी जो इसजानवर की धूनी मकानमेंकरै तो मक्खीमच्छ
रादि मिटिजायँगे जोंकको शीशामें बन्दकरदें और जबवह मरजाय
तब उसको पीसिकै उसके मैदा की जहां किसीठौर के बार उखाड़
के उसठौरलगावैं तो वहां कभी बार न जमैंगे॥ सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर १६५

(अता) यह (जानवर सदफी) अर्थात् सीपीवाला है और बहुधा
हिन्दुस्तान में बँधे पानी में मिलताहै (इसको हिन्दुस्तानमें घोंघी
कहते हैं) और निजकरके वहां होताहै जहां सिवार होता है और
नीलनाम नदीमें भी होताहै यह एक अद्भुतजीव होताहै और सीपी
की भांति इसका घर बना होता है और अति नाज़ुकहै और इसके
आंखैं और शिर और पूंछ हैं जब यह जानवर अपने घर में जाता
है तो आदमी समझता है कि मानो सीपी है और जब घरसे
बाहर निकलता है तब दृष्टि आता है और अपने घर को अपने
साथ खींचताहै इसमें सुगन्ध होतीहै जो इसकी धूनीदेवें तो मिरगी
वालेको उपयोगी है और इसको जला के इसका मंजन बनाके
दांतोंमें लगावें तो दांतोंको चमकाताहै और जो जलीठौरपै इसको
लगावें तो भी उपयोगी है॥ सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर १६६

फ़रसआबी अर्थात् दरियाई घोड़ा॥

कहतेहैं कि यहजानवर थलचारी घोड़ाकेसमान होताहै इसका
रूपरूप शोभायमान और पूंछ लम्बी होतीहै और इसके खुर फटे

होतेहैं और खरगोशसे भी अधिक शीघ्र दौड़ताहै जाहिज़ने कहाहै
के यहघोड़ा दरियानीलमें मिलताहै और यहनहनंग अर्थात् नाक
कोखाताहै और स्वरूपइसका यह है॥

तसवीर नम्बर १६०

यह जानवर दरियासेनिकर थलचारी घोड़ियोंसे रतिकरताहै
इसके वीर्य्यसे जो घोड़ी अथवा घोड़ाहोताहै वह अत्यन्त शोभाय-
मानहोताहै यह कहावतहै कि शैखअबुउलफ़ासिमग़रक़ान प्रसिद्ध
जो खुरासान के मशायखमें से है वहदरियाके किनारे उतरे उनके
साथ एकघोड़ी अच्छीसी थी इतनेमें दरियासे एकबड़ाघोड़ा जिस
के शरीरमें सफ़ेद दिरहम के समान दाग थे निकला उसके प्रसंग
से उस घोड़ी ने एकबच्चा जना वह अत्यन्त शोभायमान था इस पै
शैख को लालचहुआ सो बच्चालेने के कारण फिर मराजियत के
समय वहांआये और घोड़ी और बच्चाकोभी साथलाये तो दरियाई
घोड़ा निकला और थोड़ीदेर उस बच्चा को सूंघ के आप दरिया में
चला उसके साथ वह बच्चा भी दरिया में चलागया फिर उन्होंने
यह यत्नकिया कि घोड़ी तो हरसाल लाते परन्तु बच्चा नहीं लाते थे
और उसीभांति घोड़ियां गर्भिणी होती थीं फिर तो उन्हों ने हर-
साल यह नियत करलिया और इसी कारण उनको अबूउलक़ासि-
मग़रक़ान कहते हैं साद के बेटा उमरने लिखा है कि दरियाई घोड़े
मिश्रके दरियानील में प्रकटहोते हैं और उस देशवाले उसदरिया
के चढ़ाव से समझ जातेहैं कि अब वह घोड़ा आनपहुंचा इसघोड़ा
के गुण लिखे हैं कि जो किसी के पेट में पीड़ाहो और इसघोड़ा के
दांत उसके बांधदें तो तत्काल दर्द बन्द होजाय इसीप्रकार मिश्र
के कुछलोग अन्न जल खराब खाते हैं और उनके पेट में दर्द होता
है तो दांत इसीघोड़ा का बांध चट अच्छे होजाते हैं इसकीहड्डीको
जलाय चरबीमें मरहमबनाय गेंगटाके काटेपै लगानाउपयोगीहै॥
और उसके अंडकोश को पकाके खाना बिच्छू सांपआदि के विषको
अत्यन्त उपयोगी है॥ जो इस खाल को किसी करिया में गाड़

देखें तो उसपै कोई आफ़त न आवेगी और इसकीखाल सूगन। भी बांधना उपयोगी है ॥

(फ़ातूस) यह एक बड़ी मछली है जो जहाज़को तोड़डालती बहुधा जहाज़वाले रजस्वला के रक्त के कपड़े जहाज़ पर चपका हैं इस टटका से वह मछली जहाज़ की ओर मुख नहींकरती है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर १६८

(क़स्त।) यह मछली इतनीबड़ी है कि इसकीहड्डीका पुलबन है और उसपर होकर सबलोग जाते हैं इसकी चरबी कोढ़ बर रोग पै लगाना उपयोगी है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर १६९

(क़न्दस) यह एक थलचारी जीव होताहै जो ऐशो शहर क बड़ी २ नदियों में रहाकरताहै ॥ इस जानवर के घरमें दोदरवाज़ होतेहैं एकतो सूखेकीतरफ़ और दूसरा पानीकीतरफ़ और उसक मकान कईदरजेका होताहै उसमें एकदरजा तो अपनेलिये बनात है जो अति स्वच्छहोता है और दूसरा दरजा अपनी स्त्री के लिये नीचे की तरफ़ बनाताहै और घरके उत्तर की तरफ़ अपने बच्चोंके लिये एकमकान बनाताहै और उसके नीचे अपने नौकरों के लिये मकान होताहै॥ जिससमय कोई शत्रु आजाय तो चट पानी की ओर अथवा सूखेकीओर जैसा समयहो निकलजाताहै यह मछली और बेरकी लकड़ी खाता है और इसके नौकर इसके लिये बेरकी लकड़ी लाते हैं ॥ सौदागर लोग इसका और इसके सेवकों की खालको भलीभांति पहिँचानतेहैं क्योंकि जो जानवर इसके सेवक होतेहैं उनके कन्धेपर बालनहींहोतेहैं किन्तु छिलेहोते हैं किसहेतु से कि वे लकड़ी खींचते हैं और इसी पहिँचान से सौदागर लोग पहिँचान लेते हैं ॥ सेवकोंकी खाल बहुत अच्छीहोतीहै और इस के अण्डकोश को जुन्दबेदस्तर कहते हैं और यह रीह और मिर्गी बिसिपान, अर्द्धंगी, लकवा औरम्बीनभ्रमादि रोगोंके लिये उप

योगी होतीहै और इसके खाने की यह रीति है कि एक रत्तीभर जुन्दवेदस्तर को जल्लावमें घोरके देतेहैं ॥ शैखुलरईसने लिखा है कि जुन्दवेदस्तर बहुतसे रोगों के लिये उपयोगी है जैसे सब प्रकार के तो घावों को और राशा अर्थात् कपकपी, फालिज और निसियानादि रोगोंकी और इसका गुण यह भी लिखा है कि बच्चाकोबच्चादानसे बाहर लाताहै और हवामके काटे को भी अत्यन्त गुणकरताहै ॥ सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर १७०

(क़नफ़ज़ुलमाय) साही पानी में रहनेवाली ॥ इस जीव का अद्भुत स्वरूप होता है इसका ऊपरका धड़ अर्थात् शिर और कन्धा और दोनोंहाथ और पेट तो साहीकासा होताहै और नीचेका धड़ मछलीकासा और मांस उसका अत्यन्त स्वादिष्ट होता है ॥ इसमें बड़े बड़े गुण निज़ करके मूत्र बहने के लिये और पथली के लिये तो अतिही गुणकारीहै ॥ इसकी खाल बहरापन को मिटाती है ॥ जो इसकी खालसे तबला मढ़ावें और बजावें तो उसकी आवाज़ से सम्पूर्ण काटनेवाले जीव भागजायँगे ॥ कहते हैं कि यह साही डीलडौल में गायकी बराबर होतीहै और रंग काला और इसके शरीर में बालनहीं होते और करमकी ओर होती है मज़्सी लोग इसको खातेहैं ॥ स्वरूप इसका यह है ॥

तसवीर नम्बर १७१

(क़ौक़ी) यह एक प्रकारकी मछली होती है इसके शीश पर एक सींग होताहै उससे अपने को बचातीहै ॥ कहतेहैं कि जब यह मछली भूखी होती है और कोई छोटा शिकार इसकोनहीं मिलता तो उससमय किसी बड़ी मछली के आगे जातीहै जब वह इसको लील जातीहै तो अपने सींग से उसका पेटफाड़ के उसको खातीहै और जो कोई जीव इसपै टूटताहै तो यहमछली अपने शीशके सींग से उसे रोकती है और इसी सींगसे जहाज़ में छेद करके जहाज़ वालोंको खा लेतीहै ॥ इसीसे मल्लाह लोग इसकी खालका कपड़ा

पहिरतेहैं क्योंकि उसका सींग उसकी खाल में नहीं बेधता है॥ सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ५:२

कल्बआबी अर्थात् दरियाई कुत्ता ॥

यह छोटसा जीव प्रसिद्धहै इसकेपैर हाथोंकीआपेक्षा लम्बेहे हैं और यहजीव अपनेकोमाटीमें ऐसा मिलाताहै जिसमें नाक जा कि यहमाटीका ढोलाहै जब नाक उसकोइसधोखेमें खा लेताहै उसकेपेटमें जाके उसके दिल और कलेजा को खाता है और फि पेट फाड़ के बाहर निकल आता है कोई २ कहते हैं कि जुन्दवेद स्तर इसी जानवर के अण्डकोश हैं इस जात की आपस में बड़ी प्रीति है जो एकभी जाल में फँसता है तो झुण्डका झुण्ड आय के इकट्ठा होजाता है ॥ जो कदाचित् स्त्रीजालमें फँसती है तो उसका पुरुष दूसरी स्त्रीकेसाथ रतिनहीं करता है और जो पुरुष फँसजाता है तो उसकी स्त्री दूसरे पुरुष से प्रसंग नहीं करती है ॥ कहते हैं कि जब पुरुष जाल में फँसा और उसको यह प्रतीति होगई कि अबमेरा छूटना असम्भावि है तो अपने अण्डकोश अपने दांतों से काट के अहेरिया के आगे फेंकदेता है परन्तु स्त्री खाल के कारण कोई यत्ननहीं छूटनेकीकरसक्ती कि किसहेतुसे कि उसकीखाल अति उत्तम है और पुरुष के अंडकोश जुन्दवेदस्तर होनेके कारण बहुत प्यारे हैं जब एकबार अंडकोश निकालेगये और दूसरीबार फिर वही कुत्ताआके जाल में फँसा तो वह कुत्ता अपने पावँ उठाके दि- खाता है कि मेरे अंडकोश नहीं हैं तब अहेरिया उसको छोड़देतेहैं और यहजीव मछली और गेंगटा खाता है ॥ इसके गुण ये हैं कि इसके दिमाग़का खाना नेत्रोंकी धुन्धको दूरकरता है ॥ शैखुलरईस ने कहा है कि जो कोई इसका पित्ता एकमोठ के दानेभरखाय तो एक अठवारेमें मरजाता है इसके अंडकोश सांप और बिच्छूके विष केलिये और रीह और अलसबियान रोगोंको उपयोगीहै और पर- चय कियाहुआ ॥ इसकापोस्त किसी दूसरी पोस्त में मिलाके देवैं

और उसका कपड़ा बनाके नकरस रोगवाले को पहरावें तो उप-योगी है॥ सूरत यह है॥

तसबीर नम्बर १०३

(कोसन्न) यह एकप्रकार की मछली बसराके आसपास होती-है॥ मनुष्य के दांतोंके समान इसके भी दांतहोते हैं और जीवों के टूक टूक करडालती है॥ जो इस मछलीको रात में मारैं तो इसके चरबी बहुत निकलती है और जो दिनमें मारैं तो कुछनहीं निक-लती है और सूरत यह है॥

तसबीर नम्बर १०४

नजर पांचवीं पृथ्वी के गोलाकार के विषय में॥

पृथ्वी एक स्वरूप लम्बा चौड़ा है उसका स्वभाव सर्द खुश्क अर्थात्‌शीत और रूखाहै और नीचेकी ओर झुकी है इसका स्वरूप गोलहै और पानीके ऊपर स्थितहै और विद्वानों को इसका निश्चय होनेका यहकारणहै कि एक ग्रहण जो संसारमें परता है पूर्व और पश्चिम के शहरों में एकही समय पै नहीं दृष्टि आया किन्तु भिन्न भिन्न समय पर प्रकट हुआहै जो उसका उदयास्त सम्पूर्ण पूर्व और पश्चिम देशों में एकही बार होता तो किसीभांति अन्तर न पड़ता पृथ्वी शीतहै और कारण इसका यहहै कि जो यह बारिद अर्थात् शीत न होती तोयह न तो ठोसहोती और न चिपकाहट इसमें होती और जो यह बात न होती तो इसकी पीठपर जीवोंका ठह-रना और खानोंमें धातु आदिका उत्पन्नहोना असम्भाविथा निदान विद्वानोंके निकट पृथ्वी के तीनि परतहैं और वह केन्द्रके निकट हैं सो वह केवल पृथ्वीहै और वह तह माटी है और एक ऐसी तह है कि कोई२ अंग तो उसका खुलाहै और किसी२ को समुद्र घेरे है और वही ऊपरके मण्डलों का केन्द्रहै और ईश्वरकी इच्छासे संसार के मध्यमें स्थितहै और वायु और जल उसको चारों ओरसे घेरे हैं मनुष्य जिस ठौर पृथ्वी पर खड़ाहो तो उसका शीश तो आसमान की ओर और पृथ्वी पांवके नीचे रहैगी और मनुष्य आधे आसमान

को देखता है और जब दूसरे ठौरको जाय तब उसको दूसराभा
दृष्टि आने लगताहै महासागरने पृथ्वी को चारों ओरसे घेरलिय
है और खुलीहुई पृथ्वी बहुत कमहै जो समुद्रसे दृष्टि आतीहै औ
उसका दृष्टान्तयहहै कि जैसे दरियामें एकअण्डापराहो और केव
उसकी चोटीखुलीहो इसमें पृथ्वीका दृष्टान्त नतो अण्डाकी लम्बा
है और न गोलाई वरन पृथ्वी उसीके सदृशहै जो अण्डा दरिया
पड़ाहो और उसकीचोटी कुछेकखुलीहो पृथ्वीके भीतरबड़े २ कन्द
बहुतसा जंगल बड़े २ खोहा और आखात अर्थात् नहरैं हैं और
सब पानीभाफ और तरीसे भरेपरेहैं और इन सब रतूबन अर्थात
नीलेपन में चिकनाईहै जिसकी चरबी से खानोंके सारबँध जाते है
और येपनीर और भाफ सदैवइस्तहाला अर्थात् एकदशासे दूसरं
में पलटा करतेहैं और बदलते रहतेहैं और कभी ईश्वर की दया
प्रकटहोतेहैं और कभी नाशमान होजातेहैं और प्रत्यक्ष तो पृथ्वीप
पहाड़,जंगल,ऊँचाई, निचाई,बालू,हरेरी, नद्यादि बहुत हैं जिनमें
कोई२तो सदैव बहाकरतीहैं और कोई कभी२ बन्दहोजातीहैं औ
बायु,मेघ,बर्षा ये किसीसमय अलग नहींहोते बरन सदैव बर्त्तमान
रहतेहैं परन्तु हां ठौर२ जैसे जाड़ेकीऋतु में एराक़ (नामदेश) और
फ़ारसादिमें बर्षा होती है और हिन्दुस्तानमें गर्मियोंमें बर्षाहोतीहै
तो इससे यह सिद्धि हुआ कि मेघकी बर्षा पृथ्वीपर कभी बन्द नहीं
होती किन्तु किसी न किसीखण्डमें पृथ्वीके पूर्वपश्चिमउत्तर दक्षिण
में बर्षा बनीही रहती है संसारके समाचार तो गर्मी,सर्दी,दिन,रात
बसन्तादि ऋतुओंके समान भिन्न २ हैं और संसारमें बहुत से शहर
हैं जिनकी चाल ढाल और वहांके निवासियोंके स्वभाव एक दूसरे
से अलग हैं और धातु,जीव,बनस्पति तो सदैव कमती बढ़ती में हैं
कभी सजीव और कभी नाश है पृथ्वी पै कोई ऐसा ठौर नहीं जहां
ये सम्पूर्णबस्तु न हों परन्तु हां स्वरूप,स्वभाव,प्रकृति,जाति,बर्णोंमें
तो अवश्य भेद होता है सो उसका ब्योरा तो एक ईश्वर के सिवाकोई
जानताही नहीं सो श्रीमुख आप भाषता है कि कोईपत्ता और दाना

।है अंधकारही में हो और कोई सूखी गीली वस्तु ऐसी नहीं है
जिसको ईश्वर न जानता हो॥

फसल वेद औ बिद्वानोंकी मतिभेदके बिषय में॥

पृथ्वीके स्वरूप और चालके विषयमें बड़ा भेद है परन्तु जिसको
बहुतसे मानते हैं वह यह है कि पृथ्वी गेंदके समान गोल और आ-
समानके भीतर बनीहै जैसे अंडाके भीतर जर्दी होती पृथ्वीकी चाल
चारों ओर बराबर है अर्थात् ऊपर, नीचे, उत्तर, दक्षिण, पूर्व और प-
श्चिममें हुकम मुतकल्लम के बेटा हुशाम का निश्चय है कि पृथ्वी की
निचाई एक स्वरूप है और उसकी प्रभुता से ऊंचा होता है परन्तु
पृथ्वी से नीचे जाने से रोका है इसीकारण वह सहारे के आधीन
नहीं है क्योंकि उसको नीचेजानेकी इच्छा नहीं है वरन ऊंची होने
की अभिलाष है और सहारे से प्रयोजन है कि लम्ब और खम्भके
आधीन नहीं कि जिसपै वह ठहरै बरन ऊंची होने की अभिलाष
रखती है अबूउलहज़ील ने लिखा है कि ईश्वरने अपनी बुद्धिमानीसे
पृथ्वी को बिना खम्भा और बिना किसी लगाव के स्थित किया है
और दीमक़रातीस का निश्चय है कि पृथ्वी वायुपर स्थित है और
उसके नीचे वायु भरीहुई है वह कोई राह निकलनेकी नहींपातीहै
इसलिये घबड़ाके जहांकी तहां थँभ गई और यही सम्मति हुक्ममु-
तकल्लिम के बेटे हुशामकीहै किसी२ बिद्वान्का मतहै कि पृथ्वी आस-
मानके बीच एक नियत सीमापर स्थितहै और आसमान उसको
चारोंओरसे घेरेहुयेहै इसलिये यही कारणहै कि बराबरवह केवल
एकहीओरको आसमानको झुकतीहै क्योंकि उसकेसबअंगोंकी शक्ति
बराबर है जैसे चुम्बक लोहेको अपनी ओर खींचता है उसीप्रकार
आसमान अपनी आकर्षण शक्ति से पृथ्वी को चारों ओर से खींचे
और कसेहुयेहै कोई२ बिद्वान् कहतेहैं कि पृथ्वी बीचमेंस्थितहै और
इसकेखड़ेहोनेकाकारण आसमानका शीघ्रचक्रहै और वहआसमान
पृथ्वीको चारों ओरसे कसे हुयेहै जिसमें वह अपनी कीली अर्थात्
बीच पैही थँभीरहै जैसे माटीऔर पत्थर को किसी शीशा में रखके

जो हिलाओ तो हिलने की शक्ति से माटी और पत्थर दोनों स
होजायँगे ॥ महम्मद ख्वारज़िमी ने लिखाहै कि पृथ्वी आसमा
भीतर नीचेमें है और पृथ्वी गोलाकार गेंदके समान है और इ
पहाड़ और टीले और गड़हा दन्दाने हैं सो यह बात सिवाय
के नहीं होसक्ती और जो पहाड़ादि मिटा दिये जायँ तो कदा
गोल होने का अनुमान सत्य ठहरै जैसे गोलाकार का व्यास
अथवा दो गज़का है उससमय कोई वस्तु अर्जनादिके दाना स
न ऊगे अथवा मिटजाय तो सब प्रकार गोल होने से बाहिर
होगी और जो ये पहाड़ न होते तो निस्संदेह जो जल चारों
से घेरे है इसको ख़राब कर देता और ऐसा ख़राब करता कि इ
के चिह्न भी न बचते तो इसदशामें जो ईश्वरकी चतुराई जीवध
री बनस्पति औरधातु आदिके बनानेमें है वह सब मिथ्या होजा
वह ईश्वर जिसकी मायाकाभेद उसके सिवाय और कोई नहीं ज
नता है पवित्र है ॥ मम्बाका बेटा वोहब्ब जिस पै ईश्वर प्रसन्न
कहताहै कि पृथ्वी चारों ओर को डगमगाती थी और नौका समा
चल विचल होती थी तब ईश्वर ने उसके ठहरने के लिये अत्य
दीर्घ औरबलवान् फ़रिश्ता उत्पन्न किया और आज्ञा दी कि इस
नीचे आके अपने कन्धों पर धर ले तब उस फ़रिश्ता ने ईश्वर
आज्ञानुसार एक हाथ तो पश्चिम और एक हाथ पूर्व को निकाल
के पृथ्वी की रक्षा की परन्तु उस फ़रिश्ताके पैरोंके नीचे कोई वस्
नहींथी जिसपै वह ठहरता तब ईश्वर ने एक चौकोणपत्थर याकूत
का उत्पन्न किया और उस पत्थरमें सातहज़ार छेद किये तिन छेदों
में से प्रत्येक छेदमें एक समुद्र उत्पन्न किया और उसकागुणईश्वर
के सिवा कोई नहीं जानता और उस याकूत के पत्थरको आज्ञादी
कि उस फ़रिश्तेके दोनों पैरोंके नीचे जाय तब वह पत्थर ईश्वर की
आज्ञानुसार अपनी नियत ठौर पर गया परन्तु उस पत्थर के भी
ठहरने की ठौर न थी तब ईश्वर ने एक गौ ऐसी उत्पन्न की कि
जिसके चालीस हज़ार तो आँखें और चालीस हज़ार कान और

चालीस हज़ार नाक और चालीस हज़ार मुख और चालीसहज़ार ज़बान और चालीसहज़ारहाथ पैरहैं और उस गौ के अगले और पिछलेपावोंकेबीचमें पांच पांचसौ वर्षकीराहका अन्तरहै तब ईश्वर स्वप्रकाशीने उस गौको आज्ञा दी कि उस पत्थर के नीचेजाय तब उसगौने ईश्वरकीआज्ञानुसार उसपत्थरको अपनेशीशपै उठालिया और नाम उसगौका क़सूबानहै परन्तु उसगौ के पैरोंतर भी कोई वस्तु न थी जिसपै वह ठहरती तब ईश्वरने एक मीनऐसी उत्पन्नकी कि जिसकी बड़ाई और प्रकाश नेत्र और दीर्घता के कारण किसी की दृष्टिगोचर में नहीं आसक्तीथी और स्वरूप इतना बड़ा था कि सम्पूर्ण समुद्र जो उसके एक नथुने में छोड़ेजायँ तो ऐसा दृष्टिआवे जैसे जंगलमें एक राईका दाना गिर पड़े उसको ईश्वरने आज्ञादी कि उस गौकेनीचे जाके ठहरै और उसका नाम हूतबहुमूतहै तिस उपरांत मछलीके नीचे पानी और पानीके नीचे वायु को नियत किया और तिसके नीचे ज़ुलमान अर्थात् अंधकार नियत किया तिसको सृष्टिमेंसे न तो किसीने जाना और न जानेगा कि उस अंधकारमें क्याहै उसे केवल ईश्वरही जानता है ॥

व्याख्यान पृथ्वी की लम्बाई चौड़ाई मुटाई बस्ती और उजाड़के विषय में ॥

अबूउलरैहां लिखताहै कि पृथ्वीके व्यासकी लम्बाई दो लाख एकसौ तिरसठ फ़र्सख़ और एक तिहाई ऊपर है (एक फ़र्सख़तीन मीलका होताहै) और घेरा पृथ्वीका छह हज़ार आठसौ फ़र्सख़ है इसी रीतिसे जो पृथ्वी पानीसे खुलीहुईहै वह चौदह हज़ार सात सौ चालीस फ़र्सख़ लम्बी है और चार हज़ार दोसौ बयालीस और ½ एक बटाहुआ पांच फ़र्सख़है और महन्दसीन गणित की रीति से निश्चय करताहै कि जो कोई मनुष्य पृथ्वी में गढ़हा खोदे तो अवश्य उसके अन्तमें जाके दूसरा छेद निकलैगा ॥ जैसे नोसह की धरतीमें छेदकरें तो अवश्य उस छेदका अन्त चीनकी धरती में होगा और महन्दसीन के विद्वान् इसी समाधान पर निश्चय करते हैं ॥ जबसे महम्मदी धर्म्महुआ तबसे मामूख़लीफ़ा के समयमें पृथ्वी की

माप ध्रुवकी उंचाई के अनुसार हुईथी ॥ विद्वानोंकी मति अनु
आसमानका प्रत्येक खगड ५६ ½ छप्पन सही एकबटा तीन म
है और बतलीमूस ने चाहाथा कि सम्पूर्ण पृथ्वी कितनी
जिससेबिदित हो कि बसगित कितनी है और ऊजड़ कितनी है
भानूदयास्तमे माना और उससे एक दिन रात से प्रयोजन, ति
उपरान्त उसके चौवीस भाग किये और प्रत्येक भाग का ना
दगड रक्खा और एक दगडके चौबीस भाग किये तब तीनसौ स
टुकड़े हुये आसमान के तीनसौसाठ खगड अथवा अंशों के बराब
तिस उपरान्त उसने चाहा कि यह भी मालूम होजाय कि आस
मान का प्रत्येक अंश पृथ्वी के कै मीलकी बराबर है तो उसने
सूर्य्य ग्रहण से मालूम किया कि एक शहर से दूसरा शहर मील
के हिसाब से कितनी दूरी परहै और इन दोनों शहरों के बीच
में समय के हिसाब से कितनी दूरी है अर्थात् कितनी देर में एक
शहर से दूसरे में जायगा अथवा कितनी देरमें यह दूरी समाप्त
होगी ॥ जैसे एक शहर से दूसरे तक पहुंचने में एक दिन लगा
तो १२ बारह दगड हुये जो केवल राह में बीतेंगी परन्तु इतना है
कि उसने राह भी चली हो और दगडको सम दगड भी जानताहो
ऐसा न हो कि वहसायत मऊज अर्थात् वह दगड जिसका नियम
नहीं कमती बढ़ती भी हुआ करती है जानता हो ॥ समदगडपन्द्रह
अंश से कमती बढ़तीका नहीं होता और मऊज उसके बिपरीत जो
वह कभी जाड़े में दशसमदगड का दिनमान जानसकैकि जबप्रथम
मकर राशिमें सूर्य्य होताहै जो दोसौ दशअंशसे प्रयोजन और यह
दिनकी अत्यंत न्यूनताहै और रात्री चौदहसमदगडकी यहभी दोसौ
दश अंश से प्रयोजन है परन्तु दगड माऊजा वहहै कि उन्हींडेढ़सौ
को १२॥ साढ़ेबारह अंशपै रक्खे और जो बिपरीत हो अर्थात् दिन
चौदह दगडका कर्क राशिके सूर्य्यके समान हो और रात्री दशदगड
अर्थात्डेढ़सौ अंशकीहो तो रात दिन दोनों समहों तबउन दोसौदश
अंशको बारहसे भाग देतेहैं और लाभ प्रत्येक भागको दगड मऊ-

जा कहते हैं॥ इसी प्रकार वतलीमूस ने पृथ्वी के मीलोंको दरजों पर बांटा तो मालूम हुआ कि आसमान को प्रत्येक अंश धरती के ७५ पचहत्तर मीलका बराबर है तब फिर १५ पन्द्रह से ग्रहों के अंशों को गुणा किया जो तीनसौसाठ हैं तो गुणनफल सत्ताईसहज़ार २७००० मील पृथ्वीहुई बतली मूसके निकट पृथ्वी गोलाकार बायु में लटकी हुई है और आसमान का चक्र जो पृथ्वी से प्रयोजन है सत्ताईसहज़ार मील है तिस उपरान्त उसकी बसगित और उजाड़का अनुमान किया तो मालूम हुआ वह बसे भये टापू हैं जो पश्चिम में स्थित हैं और वह टापू खालदातका चीनकी सीमातकहैतोजबइसटापूमेंसूर्य्यउदयहोताहै तोचीनमेंसूर्य्यास्तहोता है और जब यहां अस्तहोता है तो चीनमें उदय का समय होता है यह पृथ्वी का गोलार्द्धहै और यह तेरह हज़ार मील है और यह लम्बाई सम्पूर्ण बसगितकीहै तब बसीभई धरती का हिसाब किया तो मालूम हुआ कि बसीधरती दक्षिणकेकिनारेसे उत्तरके किनारेतक अर्थात् जहां से दिन रात बराबर है वहां से लेकर जहां गर्मी में दिन बीस घड़ी का और रात चौदह घड़ीकी होती है और जाड़े की ऋतु में इसके विपरीत उसकी रात बीस घड़ी की और दिन चौदह घड़ी का होताहै तो हिन्दुस्तान और हवशके देशमें रात दिनकी बराबरी दक्षिणके किनारेसे है और जिसठौर दिन साढ़े बीस घड़ी का होता है वह उत्तर की अंतसीमा है और इनठौरों के बीचमें साठ भाग हैं तो सम्पूर्ण चारहजार पांचसौ मील हुआ और वह पृथ्वी का छठा भाग हुआ॥

॥ व्याख्यान पृथ्वी के चार भागोंके विषय में॥

अबूउलरैहां खारज़िमीने लिखाहै कि सतहमुअदलुनहार अर्थात् मध्यरेखा जो पृथ्वीके दो भाग करती है वह मध्यरेखापर है इनदो में से एकतो उत्तरीय और दूसरा दक्षिणीयहै तो जब तो उसको पृथ्वीके पूरे गोलाकारपरबांटें जोदोनों मध्यरेखाओं पर होकर जाताहै तबपृथ्वीके बीचसे दोभागहोजातेहैं तो इसप्रकार पृथ्वीके चारभाग

होजाते हैं उनमेंसे दो तो दक्षिणीय और दो उत्तरीय जो प्रकट हैं अ
र्थात् यहां पानी नहीं है और इसको चतुर्थांश अर्थात् बसगित क
हते हैं और यह चतुर्थांश उससंग्रह में संयुक्त है जो पहाड़, नदी, टापू
धातु, शहर और गांवादिके समान पहचाने गये हैं और क्योंकि यह
भाग पृथ्वी का उत्तरीय ध्रुव के नीचे स्थित है और उसमें शीत और
बर्फ का अधिकत्व है इसीकारण इसमें बसगित नहीं है अबूउलरै
हांने लिखा है कि मुअद्दलुनहार अर्थात् मध्यरेखा पृथ्वीको दोभाग
करती है उसमेंसे दोभाग अर्द्धदक्षिणीय और दो अर्द्धभाग उत्तरीय
उसमेंसे उत्तरीयदोभाग येराक़से लेकर टापूशाम मिस्र, रोम, फ़रंजिया
रोमियांसोस और सादातके टापू तक हैं कोई २ इन्हीं टापुओंमें से
खालदातके टापू कहते हैं यह पृथ्वीका पश्चिमोत्तरीय चतुर्थांश है
और येराक़से यहबाज़तक और कोहिस्तानखुरासान और तिब्बत
से चीनतक और चीन से अक़बाम तक यह चतुर्थांश पूर्वोत्तरीय है
और इसी भांति दक्षिणी गोलार्द्ध के भी दो भाग हैं पूरब दक्षिणमें
हबशी ज़ंग और नोबह है और पश्चिमी चतुर्थांश में कोई नहीं गया
है वह सरके भर पानी में डूबा है एक कहावत है कि बतलीमूस
यूनानका बादशाह था उसने चाहा था कि बसीभई धरतीके समाचा
जानें इस हेतु से लोगों को उस ओर भेजा उन्होंने जाकर वहां
विद्वानों से शास्त्रार्थ किया कि इस बिषय में तिस उपरान्त वहां
समाचार जान प्रथम लोगों ने आकर यह समाचार दिये कि वह
बिलकुल खराब है और कुछ आबादी नहीं है इसी कारण उसचतु
र्थांशको खराब कहते हैं और उस चतुर्थांशको डूबाहुआभी कहते हैं

व्याख्यान अक़ालीम अर्थात् खण्डों के विषय में ॥

बिदितहो कि बसे हुये पृथ्वी के चारों टुकरोंके सात भाग किये
हैं और प्रत्येक भागको एक अक़लीम अर्थात् खण्डको देश बनाया
है मानों पूरबसे पश्चिम को एक लम्बा फ़रश बिछाया है और
उसकी चौड़ाई दक्षिणसे उत्तर तकहै और लम्बाई और चौड़ाई में
भिन्न २ स्थित हैं और सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर १७५

सबसे बड़ी यक़लीम अर्थात् खण्ड प्रथम है इसकी लम्बाई रबसे पश्चिम तक तीनहज़ार फ़र्सख़ है (एकफ़र्सख़ तीनमील का ताहै) और चौड़ाई दक्षिण से उत्तर तक डेढ़सौ फ़र्सख़ है और ातवांखण्ड सबसे छोटाहै क्योंकि इसकी लम्बाई पूरबसे पश्चिम ो डेढ़हज़ार फ़र्सख़ है और चौड़ाई इसकी दक्षिण से उत्तर तक त्तर हज़ार फ़र्सख़है और शेष यक़लीम अर्थात् खण्ड जो प्रथम ौर सप्तमके बीचमेंहैं वे लम्बाई और चौड़ाईमें एक दूसरेसे भिन्न ं और ये विभागमान भये नहीं हैं बरन ये थोड़ीसी रेखा सिद्धकी ईहैं जिनको महाप्रतापी बादशाहों ने नियत कियाहै और आदि मयमें पृथ्वी की लम्बाई चौड़ाई जानने के हेतु पृथ्वीका पर्यटन कियाहै और वे बादशाह ये हैं फरेदूं१, बन्ती२, सिकन्दररूमी३, और उर्दशेर बाबक फ़ारसी४ परन्तु शेष पृथ्वीकावृत्तान्त इन्होंनेभी नहीं जाना और उनके पृथ्वी पर्यटन के अवरोधक बड़े २ पर्व्वत कठिनराह और भयानकनदी समुद्र उनकी लहरें और सरदी गर्मी और अतिअँधियारा थे और उत्तरकी तरफ़ बनातुल नाश अर्थात् सप्तऋषियोंकेनीचे अत्यन्तशीतरहा करताहै क्योंकि वहां छःमहीने तक लगातार सूर्य्य दृष्टि नहींआता इसकारण वहां अन्धकाररहा करता है बायु अधिक और शीत अतिकराल होनेके कारण पानी जमारहताहै और शीत और अँधियारके मारे जीव और बनस्पतिका नाशहोजाताहै और इसठौरके बिपरीति दक्षिणमें सुहेलके नीचे छः महीनेतक गरमी की ऋतु रहतीहै वहां अति ऊष्माके कारण बायु अग्निसमान चलतीहै जो जीव और बनस्पति को भस्मकर देती है और छः महीना तक लगातार दिनही बना रहता है बीच में कोई रात्री नहीं होती इस दशा में वहां मनुष्य पशू और बनस्पति का रहना असम्भावि है परन्तु पश्चिम में तो महासागर मनुष्यों की राह में बाधक होता है क्योंकि उसमें लहरें अति कराल उठती हैं अति अँधियारा होता है और पूरब की ओर जाने में बड़े २

कठिन उल्लंघनीयहैं जिस कारण लोग उस ओरको नहीं जासके इससमाचारानुसार जो विचारकरदेखो तो भलीभाँति प्रकटहै कि सम्पूर्ण सृष्टि चारों ओर से सातों अकालीम अर्थात् खण्डों में बन्द हैं और इनलोगोंको शेष पृथ्वी का कुछ भी हाल नहीं मालूम है॥

व्याख्यान भूचाल के विषयमें॥

विद्वानों का निश्चय है कि जब भाफ पृथ्वीके नीचे इकट्ठे हो हैं और उनमें सरदी किसीप्रकार नहीं पहुंच सक्ती जिसमें वे भा सरदी से पानी के समान होजायँ निदान जब वे भाफ बहुत इकट्ठे हुये यहां तक कि उनका मिटना अति कठिन होता है औ पृथ्वीकी कठिनताके कारण राह नहीं पाते जिसमेंवह भाफ धीर जसे निकल जाय इसकारण जब भाफ ऊपर निकलनेका अनुमा करती और राह नहीं पाती तो उसीमें बन्द रहती है तब उस भाप की अधिकत्व के कारण पृथ्वी कांपने लगती है और वह भाफ भी अधिक होने के कारण घबड़ाती है जैसे जूड़ी और तप वाले को अतिही कपकपी आती है तो हरारत ग़रीज़ी अर्थात् वह उस ऊष्मता के कारण जो जीव धारियों के शरीर को गर्म्म रखती है और सड़ने नहीं देती उस सड़े पानी के कणों में ज्वालासा भड़क उठताहै और उनभाफोंकेकणोंको जलाकेगलाताहै और उनकोभाफ और धुआं बनाताहै तब वह भाफ और धुआं धरतीकेबाहर निकलते हैं और जब तकवे बाहर नहीं निकलते तबतक पृथ्वी वैसीही कांपा करती है और उनके निकलजाने के उपरान्त धरतीका थरथराना बन्द होजाताहै और कभी २ ऐसा होताहै कि इस भाफ और धुआं के बलसे पृथ्वी फट जाती है और उसी फांकमें होके वह भाफ निकलती है और कभी ऐसाहोता है कि जब वह भाफ निकलती है तब वह पृथ्वी नीचेको धस जाती है परन्तु यह दशा उस समय होती है कि जब वहां पृथ्वी नीचे पोली होतीहै और जब वहधरती धसी तो जोकुछ वहां शहर अथवा गांवहो तो वहभी नीचे को धस जाताहै आगे सत्य जाननेवाला ईश्वर है॥

व्याख्यान बहिया के विषयमें ॥

विद्वान्लोग कहते हैं कि जब पानी और माटी एकमें मिलते हैं तो एकप्रकार का चिपकने वाला पिंड बन जाताहै तिस उपरान्त बहुत दिन तक उस चिपकने वाले पदार्थ पै सूर्य्यकी किरणें पहुंचा करतीहैं इसकारण वहमाटी पत्थर होजातीहै जैसे देखने में आता है कि जब आग माटी पै बराबर रहती है तो वह माटी पत्थर के सदृश होजाती है जैसे ईंट आगका अधिक ताव लगने से पत्थर के समान कड़ी होजाती है और जितनी अधिक आंच लगजायगी उतनीही माटी अधिक कड़ी और ठोस होती जाती है और फांक होजानेके समय धस भी सक्ती है इसलिये जो धरती ऊपर को निकल आती है वह पत्थर होजाती है और यहबात बायुके कारण दृष्टि आती है कि बायु माटीके ढेर को एक ठौर से दूसरी ठौर उठाके फेंक देती है और उस माटी से ढेर और टीले दृष्टि आते हैं और फिर वह टीले और माटी के ढेर पत्थर होजाते हैं ॥ महाशय महवती का निश्चय है कि छब्बीसहज़ार वर्ष उपरान्त तारों की उंचाई और ग्रहों के स्थान बदलते हैं जब तारों की उंचाई अथवा ठौर उत्तर से दक्षिणको बदलते हैं तब उससमय रातदिन गरमी सरदी बदलजाती है और पृथ्वीके जो चारभागहैं सो भी बदल जातेहैं और बसगितउजाड़होतीहै और उजाड़ बसतीहै और सूखे मेंसमुद्र और समुद्रमेंसूखाहोताहै और पहाड़मेंबहिया औरबहिया में पहाड़ होजाताहै और पहाड़ोंकी दशा यह होती है कि वे नरम होजातेहैं और सूखापन अधिकहोताहै और बिजलीगिरनेसेपहाड़ टूटजाते हैंजब उनके बड़े२पत्थर होजाते हैं तब उनको पानीउठाके जंगलमें पहुंचाताहै और जब कभी पानीका अधिकवेग होताहै तब उनकोढरकाके समुद्र में डाल देताहै सोई पत्थर इकट्ठे होके कुछ काल में समुद्र के बीच पहाड़ होजाते हैं जैसे कि बायु के वेग से सूखे में बालू के पहाड़बन जातेहैं और यही कारण है कि पत्थरोंके भीतर बालू मिलती है और यही कारण है कि पत्थरों के भ

सीपी और हड्डी मिलतीहैं और पत्थरोंमेंपरतहोतेहैं सो सब कारण बहिया का है किस हेतु से कि बहिया एक ठौर से दूसरी ठौर को जाती है तो अपने साथ पहिली ठौर की माटी लेजाती है और उसे समुद्र में गिराती है तो उसका प्रत्येक परत थोड़े दिन बीतने के उपरान्त पत्थर होता है और सत्य ईश्वर जानता है॥ कभी समुद्र सूख जाता है और सूखा ठौर समुद्रहोजाता है इसका यह कारण है कि जब समुद्र के घटावबढ़ाव से पानी वेग से गिरता है और समुद्र के फूलने से पानी बाहर निकल कर किनारों के पास की धरती को छिपा देताहै सदैव थोड़े २ दिन उपरान्त ऐसाही हुआ करताहै और उस बाढ़के पानीके साथ में पहाड़ पत्थर बालू खींचता है निदान वह बहियाका पानी उसको उठाके समुद्र भीतर छोड़ता है और वह माटी पत्थर समुद्रके गहराव को पाटते हैं और सदैव उस पै इसीप्रकार अधिकही होता जाताहै अंतको वह पृथ्वी की बराबर होकर टापूके सदृश प्रकट होताहै तिस उपरान्त उस धरतीपर हरेरी दृष्टि आती है जब वहां जंगली जीव और पक्षी अपना २ बासा बनाते हैं तब मनुष्य भी अहेरादि के मिसि उस ओर को जा निकलते हैं इसीप्रकार धीरे २ क्रम २ बस्ती होजाती और खेती होजातीहै॥ जो ईश्वर सदा एकरस अजर अमरहै वह पवित्र है और सिवाय उसके सम्पूर्ण सृष्टि बदला करती है और वही ईश्वर मनुष्य को सत् राह पै लगाता है॥

व्याख्यान पहाड़ों की लाभके विषयमें॥

पहाड़ों से बड़े २ लाभहैं और आप ईश्वर श्रीमुख कहताहै कि जो पहाड़ न होते तो पृथ्वी हिलाकरती॥ किसी२ ने लिखा है जो पहाड़ न होते तो पृथ्वी बराबरहोनेके कारण उसपै पानी आजाता और समुद्र सम्पूर्ण पृथ्वी को ढक लेता तो उस दशा में ईश्वर की बुद्धिमानी जीव बनस्पति और धातुआदि की रचना विषय मिथ्या होजाती इसलिये ईश्वरने इस दूषण के मिटानेके लिये पहाड़ों की रचना करी कोई कहते हैं कि पहाड़ोंकी रचनासे नहरें आदिक बहती

और उन्हींसे जीव और बनस्पति सजीव रहतेहैं इसकाकारण यह
कि इन नदियोंके द्वारा समुद्र पहाड़ों से और पूर्व,पश्चिम,उत्तर
र दक्षिण सेसम्बन्ध करताहै और पहाड़ बायुको रोकतेहैं जिसमें
दियां औरओरको न बहैं बरन पहाड़ोहीके बीचरहैं और वहां नदि-
के रहनेसे जाड़ाहो जिससे मेघ और बर्फ उत्पन्नहो और जो पृथ्वीपै
हाड़ न खड़ेहोते और उन पहाड़ों में पोल न होती तो पानी काहे में
कट्ठाहोता और गर्म्मियों में कहांसे मिलता हां यह होता कि पानी
थ्वी पै बहजाता धरतीपै सूखाहोता जिससे गर्म्मियोंमें जीव और
नस्पति मिटिजाते इसलिये ईश्वरने बुझीहुई भाफके रोकनेकेलिये
हाड़ोंको बनाया और उसपानीसे पृथ्वीपै बहियाभी न आवे और
ायुको रोके रहैं जिसमें इस भाफको फैलाने न पावे निदान जाड़े
ी सरदी आनेतक वह पानी पहाड़ोंकीरक्षामें रहताहै और जब जाड़ा
ाताहै उस भाफको जमाताहै और फिर निचोर के पानी बनाता है
ौर पहाड़ोंमें हवा और गढ़े और गुफा अधिकहैं इसलिये जो बरफ़
ौर मेघ पहाड़ोंकी चोटीपरबर्षताहै वह उन्हीं गढ़ों और कन्दरों में
रताहै तब पहाड़ों के झरनोंसे पानी झरताहै फिर वेही सोता हो-
ातेहैं और इन्हीं सोतों से पृथ्वी पै पानी पहुंचता है जिससे जीव
ीतेहैं और जो कुछ सृष्टिके खर्चसेबचताहै वह बहकरसमुद्रमेंजाता
ै और ये सोते सूख जाते हैं तब फिर जाड़े आजाते हैं तब फिर
ोते बहने लगतेहैं निदान जबतक सृष्टिहै और रहैगी उसवक़्तक
हीदशा रहैगी अब हम पहड़ोंके अद्भुत पदार्थका बर्णनकरते हैं॥

(पहाड़ऊलस्तान) यह पहाड़ रोमके देशमें स्थितहैइस पहाड़में
एक राहहै उसमेंहोकेजो मनुष्य अखरोट और रोटी और पनीरखाता
हुआ एकसिरेसे दूसरेसिरेतक निकलजाय तो उसकोकुत्तेके काटने
काविषनहीं ब्यापैगा और जो कोईमनुष्य वहां गयाहोउसकेपैरोंके
बीचमें होकर वहमनुष्य जिसको कुत्तेने काटाहो निकलजायतोतत्-
कालअच्छा होजाय और यहबात रोमनिवासियों में बहुतप्रसिद्धहै॥

(पहाड़आबीकबीस) यह पहाड़का बाशरीफ़(काबा मुसलमानों

का धर्म्मस्थान) केनिकटहै जो कोई मनुष्य इस पहाड़की चोटी प
चढ़के कल्लाभूनकेखाय तो उसे यावत् जीवत शीशकीपीड़ा न होगी
बहुतसेलोग इसबातपरआरूढ़हैं परन्तु प्रकटऐसामालूमहोताहै
इसबातको मक्काकेकल्लाबेचनेवालों ने अपनी ओरसे प्रसिद्धकियाहै॥
(अजावसलमी) ये दोनों पहाड़ बनीतय नामक ठौरपै हैं कहतेहैं
कि यहां पूर्वोक्त जातके लोग ठहरते हैं क्योंकि यहां मीठे पानी के
सोतेहैं और अंगूरोंकेवृक्ष बहुतहैं और यहठौर अतिरमणीकहै इसी
कारण उन लोगोंने इस ठौरको बासाबनायाहै॥
(पहाड़अरवन्द) यह हरापहाड़ हमारानमें है बहुधा हमदानीने
वर्णनकियाहै और एक यहकहावतहै कि कुछलोग हज़रत इमाम
आलम महम्मद जाफ़रसादिक़ अलेहुस्सलामके पासगये उन्होंने
पूछा कि कहांसे आतेहो तो उत्तर दिया कि कोहिस्तान से फिर
उन्होंने पूछा कि कौन शहरसे तब बताया कि हमदांसे तब हज़रत
ने फिर पूछा किउस पहाड़को पहिँचानतेहो जिसको अरवन्द कहते
हैं उन्होंने उत्तरदिया कि हां जानतेहैं तबफिर हज़रतनेपूछाकि इस
पहाड़की चोटीपर बिहश्ती सोताहै हमदानी उस सोता को देखते
हैं जो पहाड़की चोटीपर बर्षमें एक बार निकलताहै और यहपानी
सङ्ग खारासे निकलता है अतिही मीठा और ठण्ढा है और हलका
ऐसाहै कि जो मनुष्य रातदिन में एक सेर जल भी पीजावे तो भी
कुछ भारी न लगे और बहुधा उसके आसपासके रोगीलोग स्नान
करनेसे अच्छे होतेहैं और जितने रोगी आतेहैं उतनाही इससोता
से पानी भी निकलता है॥
(पहाड़असोरा) यह पहाड़ मादराय अलनहरदेशमें शामके
निकटहै इस्तख़री कहता है कि इस पहाड़में नुफ़्त फ़ीरोज़ा, लोहा
जस्ता, शीशा और सोनादिक की खानें हैं इस पहाड़ पै ऐसे काले
पत्थरहैं जो कोयलाके समान जलभयेहैं और कोई२ जलकर राख
होजातेहैं उनकी राख कपड़ों के साफ़करने में अच्छी होतीहै और
वे इसका ब्योपार करतेहैं॥

(पहाड़अलतर) यह पहाड़ क़जपीन से तीन फरसख परहै (फरसख तीनमील का होताहै) अति ऊंचाहै इसकी बरफ कभी कमनहीं होती न जाड़ेमें और न गर्मीमें और इसके ऊपर एक मसजिद है जहां आज तक लोग बहुधा ईश्वर आराधन के लिये जाते हैं इस पहाड़की बर्फ़से एक कपड़ा सफ़ेद रंगका बनताहै जो उसके अंगमें एक छोटीसी कीलभी छुआदें तो उतना पानी निकलताहै जो भला मालूम होताहै जो एक बड़े चौपाये के पीनेके लिये होसक्ताहै और कोई२ कहते हैं कि यह जीव नहीं है॥

(पहाड़इन्दलस) तोहहफ़तुलग़रायब का ग्रन्थ कर्त्ता लिखता है कि इसपहाड़ में दो सोते हैं उन दो में से एकसे तो गर्म औरदूसरे से सरदपानी निकलताहै और दोनों सोतोंसे एक बीताका अन्तरहै सो गर्म सोता में जो ऐसा गर्म पानीहै कि उसमें बिना अग्नि मांस पकजाताहै और दूसरेसोतामें इतना शीतपानीहै कि उसके पीतेही मनुष्य बीमार होजाता है॥

(पहाड़बखबा) इसकी चोटी पै एकमूर्त्ति खरगाव संगी अर्थात् गोरखरपत्थर की है उसके बीच एकपानी का सोता है और मूर्त्ति के होठपै एक छेद है उसमेंसे उबल के पानी पहाड़ पै आता है और वहांसे पृथ्वीपै आता है॥

(पहाड़ बरानिस) यह पहाड़ इन्दलस की धरती पैहै और इस पहाड़में लाल और पीलेगंधककी और पाराकी खान है और यहीं से सम्पूर्ण देशमें जाताहै और यहां ज़ंजफरकीभी खानहै और इस पहाड़के सिवाय दुनिया भरमें खान नहीं हैं॥

(पहाड़ तहमोद) महाशय तोहफ़तुलग़रायब का ग्रन्थ कर्त्ता लिखताहै कि इसपहाड़पै जानेकी राह अतिही तंगहै और वहांएक पानी का सोता है और बायु ऐसे वेग से चलती है कि वहां मनुष्य का ठहरना कठिन है॥

(पहाड़ वेसतून) यह पहाड़ हलवान और हमदा के बीच में है और अतिही ऊंचाहै और ऊपरसे नीचे तक एकसाहै इसका पत्थर

बहुत कड़ा है और इसकी चौड़ाईमें तीन दिनकी राह है और समाचार अजमके इतिहासोंमें ऐसे लिखे हैं कि यह कसरा अपरबीज़के समयमें शीरींकेवास्ते महलबनाया गयाथा सो अभीतक वर्तमान है इसका वृत्तांत योंहै कि शीरींके लिये दूधका भोजनथा बकरियोंका रेवर दूररहा करताथा इसलिये कभी२ दूध नहीं पहुंचताथा तब यहमति निश्चयहुई कि चरागाह से यहांतक एक नहर बनाई जावे उसीके द्वारा दूध पहुंचाकरै तब इस काम के महंदश चाबुकदस्तको बुलाया उससे शीरींने कहा कि इस काम करना चाहिये और कहा कि इस राह के बनाने पै तुझको दान दियाजायगा और उस संगतरास का नाम फ़रहादथा इसमनुष्य ने शीरींको देख जानशीरींसे हाथ उठाया अर्थात् इस प्यारीको देख प्यारी जान से हाथ उठाया और बिरहाग्निके जोरमेंपहाड़ को खोदके दूधकी नहर बहाई जब इस कामको करचुका तो शीरींने बादशाहोंके समान बहुतसे रत्नादिदानदिये फ़रहादने वह सम्पूर्ण लेकर शीरीं पै निछावर कर दिया और आप जंगलों में फिरता अंतको इसकी प्रीति का चवाउ सम्पूर्ण देशमें फैला और धीरे२ यह समाचार बादशाहके कान तक पहुंचा जिसका नाम कसरा अपरबीज़ हुर्मुज़ का बेटा नौशेरवां का पोता था बादशाह यह समाचार सुनतेही शोच बश हो बुद्धिमान् मंत्रियों से इस चवाउ के मिटानेके लिये यत्नपूछा और कहा कि इसके बधकरनेमें तो महापाप है और जो इससे कुछ न बोलैं तो लोकमें अपमानहोताहै इसपै एक बुद्धिमान् मंत्रीने प्रार्थनाकरी कि इसको कोहबेस्तूनके खोदने में लगाय दीजिये तो इसी कामके करनेमें इसकी उमर व्यतीत होजायगीजो कदाचित् न मरा तो वृद्धापनमें यह जवानीकी बिरहाग्नि ठण्ढी होजायगी यह जो बिरहाग्नि अब प्रज्ज्वलितहै सो न रहैगी यहमति बादशाह ने मानी और उसको सन्मुख लाने की आज्ञा दी लोग उसको बादशाहकी आज्ञानुसार लैआये तब प्रथम तो बादशाह ने उसका बड़ा आदर भाव किया फिर उसको बहुतसा धन देनेलगा

परन्तु वह सम्पूर्ण सम्पदा उसकी दृष्टिमें तुच्छही आई तबबादशाह ने कहा कि हमारी राह में एक पहाड़ बेस्तून नामक है सो हमारी राह रोके है जो तुम इस पहाड़ में से हमारे निकलने के योग्य राह बनादो तो हम तुम्हारा बड़ा गुण मानेंगे और यह हमको प्रतीतहै कि यह राह तुम्हारे सिवाय दूसरे से नहीं बन सकती इसको सुन फ़रहादने कहा कि अच्छा परन्तु एक बातहै कि आप बचनबन्द हैं कि इस कामके पलटे हम तुझको शीरींको दैडालेंगे यह सुनतेहीं बादशाह अतिही क्रोधितहुआऔर चाहाकिइसके बधकरनेकी आज्ञा दें परन्तु बुद्धिने समझाया कि जो इसकी बराबर माटीभी होती तो भी नहीं दूर होसक्ती और यह इतना बड़ा पहाड़ इसके जीतेजी तो किसीभांति न कटसकेगा यह शोचके कहा कि अच्छा यहबात मैंने मानी अर्थात् तुझे अपनी बेटी शीरीं नामक देदूंगा तब फ़रहाद ने पहाड़ खोदने का आरम्भ किया और एक राह ऐसी चौड़ी बनाई जिसमें होके बीस सवार बराबर चैन से निकल जायँ और इतना ऊंचा किया कि बादशाही महलोंसे भी ऊंचा करदिया उसका यही काम था कि दिनको तो पहाड़ काटता और रात को उन टुकड़ों को उठाके दूरडालता और उन पत्थरोंके टुकड़ोंकी अति भली मनबहलाऊ मूर्तें बनाता था और यह उसकी रीति थी जो मनुष्य उन मूर्तोंको लेना चाहते थे उनसे यही कहता था कि जो पत्थरों के टुकड़े राहमें पड़े हैं उनको उठाके रास्तासे दूर करदो तब उस मूर्त्ति से हाथ लगाओ निदान बहुत से मनुष्य दिन प्रति आते थे और उसके कहने अनुसार कामकर मूर्त्ति लेजाते थे बहुधा पत्थर के मीनार और ऊंटोंकी अमारी फ़रहादकी बनाई हुई ग्रंथ कर्त्ताने देखी भी हैं निदान इसीप्रकार काम होता रहा जब वह समय निकट आया कि फ़रहाद अपने कामको पूराकरै तब लोगोंने यह समाचार अपरवीज़ बादशाह से कहा यह समाचार सुनके बादशाह अति दुःखीहुआ और अपने सभासदों से सम्मति पूछी तब पूर्वोक्त लोगों नेकहा कि कोई ऐसी यत्नशोचिये जिससे बादशाहके मनका खेदमिटे

निदान यह मति ठहरी कि कोई मनुष्य फ़रहादके पास बेस्तून प-
हाड़पैजाके अतिमनमलीन खेदयुत बाणीसे फ़रहादको शीरींकेम-
केसमाचारदेय अन्तको ऐसाही हुआ कि इस झूठी खबर को सुनते
फ़रहाद ने अपने शीश पै कुल्हाड़ा मारलिया और शोक का पत्थ
अपनी छाती पै धर बैकुंठ को पधारा इस मनुष्य ने बेस्तून नाम
पहाड़में एकमहलबनाया और बीचमें शीरीं और उसकी दासिय
को मूर्ति बनाई थी और एक ओर को बादशाह अपरबीज़की मू
बनाई थी कि वह घोड़े पै सवार है और शीरींकी मूर्ति बनानेमें
इतनी बात नईथी कि महलके चारोंओर दीवारोंपै शीरींकी मू
बनाईथीं और ऐसा मालूम होता है कि यह मूर्ति चलनेचाहती है
और मुखसे बोलनेही चाहतीहै ॥

तसवीर नम्बर १०६

कोई बादशाह इस महलमें आये हैं जिन्हों ने शीरीं और बाद-
शाह अपरबीज़की सूरतको केसरसे रँगा है ॥

(कोहमना) यह पहाड़ मनाके निकटहै इसको लोग इसकारण
शुभ समझते हैं कि इस पै ईश्वरने हज़रत इसमाईल के लिये एक
दुम्बा भेजाथा सो लोगोंने उसके सींगोंको प्रसादमान कावाकेद्वार
पै लटकाया था ॥

(पहाड़सूरअतहल) यह पहाड़ मक्काके निकट है इस पहाड़में
एक गुफा है जब हज़रत महम्मद मक्कासे चले तो अबूबकर सद्दीक़
सहित ईश्वरकी आज्ञासे उसमें छिपेथे और बहुधा लोग इस गुफा
के दर्शनोंको जाते हैं ॥

(पहाड़जशनअरम) यह पहाड़ अजासीज़ के निकट है इसमें
चरागाह हरेहैं और पहाड़की चोटीपै आदनामक जातकेनकान बने
भये हैं और यहां बहुधा पत्थरकी मूर्तिबनी भई हैं परन्तु बहुतदिन
बीतनेके कारण इनका कुछ हाल मालूम नहीं है ॥

(पहाड़जूदी) यह पहाड़ बहुत ऊंचा है और इब्न उमर के
टापू में पूर्व पश्चिम स्थित है यहां हज़रतनूह की नौका लंगरहुई

र्थात् ठहरी थी जैसा कि लिखा है कि वस्तुत अलाउलजूदी
ब हज़रतनूह नौकासे बाहर आये तो यहां एक मसजिद बनवाई
ो अब तक वर्तमान है और मसजिद पर बनीअब्बास के समय
क नाव के तख़्ता वर्त्तमान थे ॥

(पहाड़जोशन) यहपहाड़ हलब मेंहै औरइसमें रांगाकी खान
है इस पहाड़ से बड़ालाभ होताथा परन्तु हज़रत इमामहुसेन की
शहादत अर्थात् मरने के उपरान्त उनकी स्त्रियां इस ओर को
आईं और उनकी स्त्री गर्भिणीथी उन्होंने इसपहाड़ के रहनेवालों
से पानी मांगा उन्होंने पानी के पलटे गालीदी तब उसने शाप
दिया उसके प्रभाव से वह खान लोप होगई और अब तक वहां
कोई यह बात कियाचाहे तो ठीक नहीं ॥

(पहाड़हिरस वहवीरस) ये दो पहाड़आरमीनिया में हैं मनुष्य
की सामर्थ्यनहीं जो इन पै चढ़सकै क्योंकि ये ऊंचेबहुतहैं लिखाहै
कि आरमीनियाकेबादशाहोंकाश्मशान इसीठौरहै और उनकाकोश
भी इसीठौरहै औरबुलनियासने यहां गंजपरेसानामक एक माया
गृहरचाहै उसकोकोई नहींजानसकता॥ कहावतहै कि आरमीनिया
मेंरदबासनाम नदीकेकिनारेपर हज़ारशहरआबादहैं ईश्वरनेहज़-
रतमूसाको जन्मदेके यहांभेजा परन्तु यहांकेनिवासी उनकीशिक्षा-
नुगामी न हुये तब ईश्वर ने इन्हीं दोनों पहाड़ों को उखाड़ कर
आरमीनिया में देमारा तिसके नीचे सम्पूर्ण बासीदब मरे ॥

(पहाड़हर्रा) यह पहाड़ टकरसे तीनमीलपै है और इसमें एक
गुफाहै जिसमें हज़रतमहम्मदसल्लिल्लाअलेहोसल्लम धर्माध्यक्षहोने
केलिये प्रथम जायाकरतेथे और यहभी कहावतहै कि जब असहाव
कबारकेसाथ इसपहाड़परचढ़े तभी पहाड़ हिला उससमय हज़रत
ने पहाड़को आज्ञादी कि हेपहाड़ ठहरजा तेरेऊपर पैग़म्बर और
शहीदकेसिवाय और तीसरा कोई नहींहै तबपहाड़ थँभगया ॥

(पहाड़ हयात) यह पहाड़ तुर्किस्तानमें है और राजशान जाव
के आधीन है कहते हैं कि इस पहाड़ पर सर्प बहुत हैं ॥

(पहाड़दामग़ान) यहां एक सोताहै उसमें जब कोई मैली बस्तु गिरपरती है तो ऐसे वेग से बायु चलती है कि मनुष्यों को डर मालूम होता है

(पहाड़दमवन्द) यह पहाड़ शहररीके निकट ऐसाऊंचाहै कि मानो आसमानको छूलेगा महलल के बेटे मशारने कहाहै कि इस पहाड़ पर बारहोंमहींना बर्फ रहतीहै और वह कहताहै कि मैं इस पहाड़ पर गयाहूं बड़ा श्रम करनापड़ा और चित्तमें किसीभांति नहींभाय कि यहां किसी दूसरे मनुष्यका भी आना हुआहोगा वहांपर एक सोता गंधक का पत्थरके टुकड़ाके समानहै और सूर्य्य उदयहोता है तो पत्थरके टुकड़ों से आग निकलतीहै और इतनी फैलतीहै कि जो कुछ पहाड़के नीचे होताहै वह जलजाताहै और बहुधा भांति की आंधी चलती है और उस आंधीमें अनेक प्रकारके शब्द सुनाई देतेहैं कभी घोड़ा और कभी गदहा और कभी मनुष्योंकी बोली के शब्द उस आंधी से प्रकट होते हैं परन्तु वे शब्द समझ में नहीं आतेहैं और गन्धके सोतासे ऐसा धुआं उठताहै कि सम्पूर्ण पहाड़ बन्द होजाताहै और अपूर्ब बातोंमें से एक यहभी है कि इसपहाड़ के रहने वाले जब चींटियों को खाने पीने का सामान इकट्ठा करते हुये देखतेहैं तो उसको दुर्भिक्ष काचिह्न जानतेहैं और जब मेघबर्षने से येलोग बहुत नाकै आतेहैं तो अग्निमें बकरियों का दूधजलातेहैं इस टोटकासे मेघ बर्षना बन्दहोजाता है तोहफ़तुलग़रायब का ग्रन्थ कर्त्ता कहता है कि इस शकुन को बहुधा सत्य पाया और यह भी कहताहै कि जिस साल इसकी चोटी बर्फसे खुल जातीहै तो उससे जानतेहैं कि इसबर्षमें इस देशमें बड़े झगड़े और रक्तारोहिन होगी इस पहाड़ के निकट सुर्मा की खान और जस्ता और फिटकरी की भी खानेंहैं इब्राहीमग़राब का बेटा लिखता है कि जब मेरे पिताने सुना कि इस पहाड़ पर एक छेद में लाल गूगुर की खान है तो लोहे का खोंचा बनाके उस छेदमें डाला परन्तु वह खोंचा गूगुर के पास तक पहुंचा भी नहीं था कि उस गूगुर ने उस खोंचाको गला

दिया दमाबन्द पहाड़के निवासी कहतेहैं कि एक मनुष्य ख़ुरासानी यहांआया उसने मन्त्र पढ़के खोंचा को उस सूराख़ में डाल लाल ख़ुर निकाला था और उस मन्त्र के प्रभाव से वह लोहा बचरहा अलाइब्नजरीं ने लिखाहै कि मुझे तबरस्तानियोंने ख़बरदी कियह पहाड़ अतिही ऊंचाहै इसकी चोटी १०० सौ फ़र्सख़ अर्थात् तीन सौ मीलसे दृष्टिआतीहै और उसपर मेघके समान एकऐसीचीज़है जो गर्मी और जाड़ों में कभी दूर नहींहोतीं और पहाड़को छिपाये रहतीहै और इसकीचोटी से एकसोता बहताहै जिसकापानी गंधक के समान पीलाहै कोई २ पृथ्वी पर्यटन करनेवाले जो इसपर गये हैं वे कहतेहैं कि पांचदिन रात्री में इसकी चोटीपर पहुँचते हैं और जो इसकी चोटीको मापा तो १०० सौजरीबथी यद्यपि दूरसे गाव दुम दृष्टिआती है और एकप्रकार की बालू इसपहाड़ पर होती है उसमें चलनेवालों के पावँ धस जाते हैं और इस पहाड़ के ऊपर किसी पशूआदि के पैरों के चिह्न नहींपाये गये और सम्पूर्ण पक्षी उसपहाड़ की चोटीतक नहीं पहुंचसक्ते और शीतकाल इस पहाड़ पर अतिकराल होताहै और बहुधा वायु बड़ेबेग से चलाकरती है और इसपहाड़ पर सत्तर ताक़चा अर्थात् बाड़हेहैं जिनमेंसे गंधक का धुआँ निकलताहै और प्रत्येक गड़हाके पास पीलागंधक पत्थर के समान जमादृष्टि आताहै और सूर्यकासा प्रकाश होताहै बहुधा लोग उनटुकड़ों को उठा भी लातेहैं और कहते हैं कि इसके आस पासके पहाड़ इसके सामने टुकड़ा से दृष्टिआतेहैंउस पहाड़परसे बरज़ नामक बड़ी नदीहै सो नहरके समान दृष्टिआती इसपहाड़ और उस नदीके बीचमें बीस फ़र्सख़ अर्थात् साठमीलकीदूरीहै ॥

(पहाड़अरबूह) यह पहाड़ दमिश्क़ अर्थात् शामसे एक कोस की दूरीपरहै कोईर कहताहै कि ईश्वरने जो आदुनिया अलारबूत तात—नियत किया वह यही पहाड़है निदान यह पहाड़ ऊंचा है और इसपै एक बहुत अच्छी मसजिदहै और उसके चारोंओर बाग़ है जिसके चारों ओर हरेरी खिलीहै और आवशार पर वहारजारी

हैं और उस मसज़िदमें अच्छे२ झरोखे बनेहैं जिनसे उसकीसैरभल
भांतिसे होसक्तीहै इसी पहाड़के नीचे एक नदी बहतीहै बिद्वानूलो
उस नदीसे एक नहर पहाड़के ऊपर लेगये हैं और वह नहर उ
पहाड़ पर चारोंओर बहतीहै नहीं मालूम कौन माया रचीहै कि नी
सेपानी ऊपरको लेगयेहैं औरउसी मसज़िद में एक छोटासा पत्थ
का मकानहै तिस्में एक पत्थर संदूक़की बराबर रक्खाहै उसपत्थ
में बर्णा२के रंगहैं और एक गज़के अनुमान बीचमें वहपत्थर फटा
परन्तु दो टूक नहींहै ऐसा मालूम होताहै कि जैसे कोई अनार क
तोड़े परन्तु अलग नकरे दमिशक़निवासी इसपहाड़केबिषयमें बहु
कुछ कहतेहैं परन्तु सत्य तो ईश्वरही जानता है॥

(पहाड़रज़वी) ग़राम अलस्सवाने लिखा है कि यह पहाड़
दीनासे सात मंज़िलपर है इस पहाड़से सुगंध आती है और बहु
सोता और हरेरी है और जंगलभी बहुत है दूरसे हरे रंग का दी
आता है इस पहाड़ पै वृक्षोंकी पंक्ति और पानी की नहरें बहुत
कैसानियोंकी वाक्य है कि इस पहाड़पर हनफ़ियाके बेटा महम्म
रहते हैं और अभी जीते हैं और बाघ और चीते उनकी रखवा
करते हैं और उनके पास दो सोते हैं उनमें से एकतो पानीका अ
दूसरा शहदका और वह ईश्वरकी ओरसे इस अपराधके पलटे
दहैं कि वे मरवांके बेटा अबदुलमलक और माविया के बेटा येज़ी
के पास गये थे और जब हज़रत इमाम मेहदी उत्पन्न होके संस
को नीति और न्यायसे संतुष्ट करेंगे तब वह भी इस बन्द से छूट
और सयद जमीरी का भी यहमत है और इसी पहाड़से पत्थरक
टके शहरोंको लेजाते हैं॥

(पहाड़ रक़ीम) क़ुरानमें लिखा है कि अमहसवत इनअसहा
वुल कहफ़वलरक़ीम अर्थात् कोई २ कहते हैं कि रक़ीम उस
गाऊँ का नाम है जिस्में असहावकहफ़ रहते थे और कहते हैं कि
यह पहाड़ रूमदेशमें उमूदिया और तनकिया के बीच में स्थित
सामत के बेटा अबाद की कहावत कहते हैं कि उसने कहा था कि

अबूबकर सहीद ने प्रसन्न हो ईश्वर उसपै मुझे रूम के बादशाह के पास इस प्रयोजनसे भेजा था किमैं उसको महम्मदी धर्मकी ओर लाऊं और नहीं तो उससे जिहाद करूं अर्थात् लडूं (जिहाद उसे कहते हैं कि जो महम्मदी धर्मको न मानताहो उसको बधकरनेके हेतु लड़ना उसमें चाहे वह माराजाय चाहे आपही मररहै) अन्तको जब रूमकेदेशमें पहुंचा तो येलाल पहाड़प्रकटहुआ जिसको लोग कोह असहावकहफ़ और रक़ीम का पहाड़ बताते थे निदान थोड़ी देरमें हमपहुंचे और वहांजाय लोगोंसे असहावकहफ़का हालपूछा और उनसे कहा किहम उनको देखना चाहतेहैं और उनको बहुत सा दानदेके उनके साथ गुफा में होकर एकमकान में गये तो वहां तेरह मनुष्यों को सोता हुआ इसप्रकार पाया कि सबके सब मूड़से पांवतक ऊंचीचादर ओढ़हुये लेटे थे परन्तु यह न मालूमहुआ कि वेचादरैं ऊनकी थीं कि सोफकी हां इतनाही जाना कि दीवाज़ नाम कपड़ासे मोटीचादरैं थीं और वे लोग बहुधा आधी टांग तक मोजा और तिसपर जूता पहरे हुयेथे जिनका अबरा अति नरम और रेशमसा मालूम होताथा मैंने सबके मुखसे चादर हटाकेदेखा तो ऐसे मालूमहुये जैसे स्वरूपवान् जीवोंके मुखहोते हैं कोई २ तो बूढ़े श्वेत बालोंके थे और कोई युवाकाले बालों के और उनका पहराव मुसलमानों के ढंगपैथा जब मैंने सबसे पीछेवाले का मुख खोलके देखा तब उसकेमुखपै तलवारका घावदृष्टिआया वह घाव ऐसामालूमहुआ कि मानों अभी किसीने इसको घायल कियाहै जब मैंने उनके समाचार पूछे तब उन्होंने कहा कि एक ईदका दिन होताहै तो लोग आसपास के इकट्ठेहोके इनलोथोंको उठाके उनके हाथमुंह धुआतेहैं और नख और शीशके बाल काटतेहैं और फिर नवीनवस्त्र पहराके यथापूर्वकलेटायदेतेहैं हमारेधर्म्मकी पुस्तकोंमें यों लिखाहै कि हज़रत ईसामरियम के बेटाके ४०० चारसौ वर्ष पहिले येसब एकही समयमें पैगम्बर हुयेथे बस इसकेसिवाय और कुछ नहीं मालूमहै॥ इब्न अब्बासने ईश्वर उसपर प्रसन्नहो कहाहै

कि असहाब कहफ़सात मनुष्यहैं॥ प्रथम मकसलीना १, यमलीखा मरतूंस ३, तबूनूस ४, ह्रान्वांस ५, कफ़शतैतूनस ६ और उनके कुत्ते नाम क़तमीर और उनकेसमयके बादशाहकानाम वक़ीयानूसथा
(पहाड़ज़ानक) तोहफतुलगरायब का ग्रन्थकार लिखता है कि यह पहाड़ तुर्किस्तानमेंहै और वहां एक संख्या अज़ानकजाति की रहतीहै और न तो इनलोगों के पास दूधका पशू है और न वे लोगखेती करतेहैं॥ इस पहाड़में चांदी और सोनेका ढेरहै॥ बहुधा कभी २ बकरियोंके कल्ले के समान कोई बस्तु प्रकट होतीहै उसमें से कोई बड़ी और कोई छोटी॥ जो कोई छोटा कल्ला उठायलावे तो वह तो कुशलक्षेमरहताहै और जो कोई बड़ाकल्लाउठावे तो जबतक उसको उसीठौर न धरआवे तबतक उसके घरके एकहीएकमरते जातेहैं परन्तु पथिकचाहै जैसा उठालावे उसकीकुछहानिनहींहोती॥
(पहाड़ज़ावां) यह पहाड़ शहर फूसके पास पछांह की धरती मेंहै यह पहाड़ इतना ऊंचा है कि तीन दिनकी राह से दिखाई देताहै॥ आफ़्रीका के निवासी कठोरचित्त मनुष्य की उपमा दिया करतेहैं कि अमुक पुरुष ज़ावां पहाड़के समान कठोरचित्तहै॥ इस पहाड़पै बड़ी बसगितहै और बर्षा बहुत होतीहै और मेवा का अधिकत्वहै बहुधा ऐसाहोताहै कि पहाड़के नीचे तो बर्षाहोतीहै और पहाड़ के ऊपर बूंद नहीं पड़ती॥ निदान नीचेवाले तो बर्षा के मारे नाक आजातहैं और ऊपर वाले पानी को झींकतेहैं॥
(पहाड़सावा) इस पहाड़ को ग्रन्थकर्त्ता ने देखा है अत्यन्त ऊंचाहै और महलकी सी इसपै चित्रकारी हैं और इस महल की छतपर पत्थर स्त्रीके कुचोंके सदृश धरेहैं सो इन तीनमेंसे तो पानी टपकता है और चौथा सूखाहै उसे कहतेहैं कि इसको किसीनास्तिक ने चूस लिया है इसीकारण यहसूख गया है और इनचारों पत्थरों के नीचे एक हौज़है जहां वह टपका पानी इकट्ठा होताहै॥
(पहाड़सीलां) यह आजुरबाय जानमेंहै जो मदीना आर के पासहै इसको सम्पूर्ण पृथ्वी के पहाड़ों से ऊंचा बताते हैं

हज़रतरसूलअल्लाह ने कहाहै कि जो मनुष्य कहैगा—उसके कर्म्म खाते में सीलांपहाड़की बर्फ़ और पत्तियों की संख्या नुसार भलाई लिखीजांयगी इसपर लोगोंने पूर्वोक्त हज़रतसेपूछा कि सीलांपहाड़ के समाचार क्याहैं तब उन्होंने उत्तर दिया कि इस पहाड़पर बिह शतका सोता है और किसी पैगम्बर की क़बुर भी है अबूहामिद इन्दलसी कहताहै कि इस पहाड़ पर एक सोता है जिसका पानी सरदीके मारे जमाहै और इसी पहाड़के बीचमें एक सोता गरम है जिसमें स्नान करनेसे बहुधा रोगी अच्छे होतेहैं इस पहाड़के नीचे एक वृक्ष अति घना और हराहै परन्तु किसी जीवकी सामर्थ्य नहीं है जो उसको खाय जो कोई उसवृक्षकी हरेरीको खाय वह तत्काल मरजाय और यहभी कहताहै कि अपनी आंखोंसे देखाहै कि घोड़ा और बड़कन्ना और बकरी आदिक उस वृक्षके पास जातेही पुकार मचातेहैं यहां तक कुंजश्च कभी इसवृक्षसे दूर रहतेहैं इस पहाड़ के निकट एक गांवहै यहांके काज़ी अर्थात् न्यायकरता अबी अलफ़रह अबदुलरहीम न उल आरद वेलीनामक थे उनसे मैंने प्रश्न किया कि इस वृक्षसे पशुओं के डरनेका क्या कारणहै तब उसने उत्तर दिया कि इसके तिरस्कार करने का कारण नहीं बरन चीनियों ने इसपहाड़से दूसरे पहाड़तक एक पुल चीनसे तिब्बततक ऐसाबांधा है कि जो कोई उसपर उतरे उसका बोल ठस होकर वहमरजाताहै और तिब्बतवालों ने इस पहाड़का नाम बिष कापर्व्वत रक्खाहै॥

कोह यब अर्थात् फिटकरी का पहाड़॥

यहपहाड़ यमनदेशमें है इसपहाड़की चोटीसे एकप्रकारके रंगका पानी बहताहै जो चारो तरफ से बहके पृथ्वीमें पहुंचकर जमजाता है और शब ये मानी अर्थात् यमन की फिटकरी उसका नाम है॥

(पहाड़शाम) अहमद हमदानीका बेटा इसहाक़ कहताहै कि यह बड़ा पर्वत सनाके निकट एक दिनकी राह परहै इस पहाड़ पर चलना अति कठिनहै और एक राहके सिवाय दूसरी राहनहीं है और इस पहाड़के ऊपर बडे बड़े मैदान हैं जिसमें गांव बसे हैं

और खेती होतीहै और अंगूर और छोहारादिका जंगलहै वहां का रास्ता केवल राजद्वारही पर होकरहै और उसकी ताली बादशाह के पास रहती है जिस किसी को उतरना हो अथवा जाना हो वह बादशाहकी आज्ञा आधीन रहताहै और इसपहाड़पै पानीबहताहै जहांसे सफ़ादादि दूसरे देशों में पानीजाताहै ॥

(पहाड़शर्फ़ुलवग़ल) यह पहाड़ शामके रास्तामेंहै इस पहाड़में दो बड़े२ मकानहैं जहां बड़े२ मूर्त्ति स्थान हैं जिनमें अद्भुत चित्र विचित्र मूर्त्तिहैं जो उसके देखनेको जाताहै वहांसे आनेको उसका मन नहीं चाहताहै ॥

(पहाड़शकां) शकां एक गांवका नामहै खुरासानियों से सुनाहै कि इस पहाड़ में एक ऐसा कन्दरा है जिसमें सब प्रकार का रोगी अच्छा होताहै और यहभी कहते हैं कि उसी ठौर एक और पहाड़ है जो कोई वहां जाय उसका बोल और चाल बन्द होजाय और दो गजकी दूरी रहजातीहै तो बायुका ऐसा झकोरा आताहै कि मनुष्य गिर जाताहै ॥

(पहाड़शकरां) तोहफतुलग़रायबका ग्रन्थकार कहताहै कि यह पहाड़ शकरांकी धरती परहै परन्तु यहनहीं मालूम कि यह शकरां की धरतीहै कि इन्दलसकी यह पहाड़ अत्यन्त ऊँचाहै और उसपै चिराग़दानके सदृश एक मकान बनायाहै जहां प्रति सम्बत् तीन रात्री प्रकाशहोताहै परन्तु मनुष्यकीसामर्थ्यनहीं जो वहांचढ़जाय क्योंकि बायुकेझकोरेसेचढ़नेहारा नीचेगिरपरताहै और वहचिराग दिनको नहीं दृष्टिआता परन्तु मोरकेसदृश उस दीपककीठौर दृष्टि आतीहै परन्तु यथार्त्थ किसीकी समझ में नहीं आताहै ॥

(पहाड़शैलीर) यह पहाड़ इन्दलसकी धरतीपरहै इस पहाड़पै जाड़े और गर्मी दोनों ऋतुओं में कभी बरफ़ कम नहीं होती यह पहाड़ बहुधा इन्दलसके शहरों से दृष्टि आताहै और इस पै शीत काल अति कराल होता है और बहुधा यहां सेव अंगूर अखरोट और पिस्तादि मेवा होतेहैं ॥

(पहाड़शूर) तोहफतुल गरायब के ग्रन्थ कारका लेखहै कि यह पहाड़ कर्मा के देशमें है इसपहाड़के पत्थर को जो उठाकर तोड़ो तो उसके भीतर मनुष्य का स्वरूप बैठा सोता अथवा खड़ा दृष्टि आताहै और जो उस पत्थर को पीसके पानी में छोड़ो और जब वह बुरादा पानीकी पैंदी में जागले तो भी आदिमी का स्वरूप दृष्टि आताहै ॥

(पहाड़सफ़ादमरवा) यह पहाड़ मक्का मुअज़्ज़िमा की धरती में स्थितहै कहतेहैं कि सफ़ा और मरवा एक स्त्री और पुरुषका नामहै जिन्होंने काबा में बिभचार किया था ईश्वर ने उसके पलटे उसे पाखाण करडाला और संसारमें उनकानाम इस लियेहै कि दूसरों को आंखेंहों और हदीस (शास्त्र) में लिखा है सफासे वहदाब्बतुल अर्जबाहिर निकलैगा जो प्रलयकाचिह्नहै इब्नअब्बास ईश्वर उन पै प्रसन्नहो अपने आसा अर्थात् दण्डकोसफा पहाड़परमारकेकहते थे कि हेदाब्बतुल अर्ज़ तू मेरेमारके शब्दको भली भांति सुनताहै॥

(पहाड़सलकीया) यह पहाड़उन पहाड़ोंमेंसे है जिनका वृत्तान्त अबूअला अलहसनने कसलीयाके इति हासमें लिखाहै यह पहाड़ समुद्रकी ओरहै और इसपहाड़की परिक्रमा तीनदिनमें होसक्ती है इस पहाड़पै अनेक प्रकारके मेवाके वृक्षहैं इस पहाड़ की चोटी पर गूगुरकी खानहै जिस्में से बहुधा अग्निका धुआं उठाकरता है जिस से कभी२ किसी ओर आगलग जाती है और उसका जला हुआ लोहेके मैलके सदृश होजाताहै फिर उस धरती पै नतो कोई वस्तु ऊगतीहै और न कोई पशु उसपै जाते हैं और यह ठौर अभी तक प्रकटहै कि जिसको लोग अजनास के नामसे प्रसिद्ध करते हैं इस पहाड़पर मेघ और बरफ़ सदैव बर्षा गिरा करती हैं किसी ऋतु में बन्द नहीं होताहै बहुधा प्राचीन कालके विद्वान् इसपहाड़पर वहां के अद्भुत पदार्थ अग्निका दावा देखनेको सलकियाके टापूसे आया कियेहैं इसपहाड़पै सोनेकी भी खानहै रोमनिवासी इस पहाड़को सोनेका पहाड़ बताते हैं ॥

(पहाड़ज़ुलऐन) यहपहाड़ मक्काकी राहमें है इसके दो भाग हैं उनमेंसे एकको तो बनी मालिक कहतेहैं और यह वेलोगहैं जिनके बन्शमें मुसलमानहैं और दूसरे भागका नाम बनीशैसानहै और इसके रहनेवाले फ़रजिन्नीहैं बनी मालिककी धरतीपर बहुधा लोग उतरते हैं और अपने पशुओंको उसपै चरनेको छोड़ते हैं और उसके विपरीति बनशैसां की धरतीपै न तो कोई उतरता है और न कोई अपने पशू उस पै चरने को छोड़ता है और जो कोई भूलसे ऐसा करता है तो उसकी जान और माल पै आफ़त आतीहै और वहां के लोगोंमें इन दो भागोंका हाल बहुत प्रसिद्धि है॥

(पहाड़ ताक) यह पहाड़ तबरिस्तानमें है अबूउलरेहां ख़्वारज़िमीने आसारुलवाक़िया नाम किताबमें लिखा है कि यह पहाड़ गर्म है और वहां एक खोहा है सो हज़रत सुलेमान की है जोकोई उसमें कोई भ्रष्ट बस्तुडालदेय तो पानी बहुत वर्षताहै और जबतक वह भ्रष्टतावहांसे मिटाई नजाय तबतक मेघबर्षना बन्द नहींहोता॥

(पहाड़ ताहिरा) तोहफ़तुलग़रायब के ग्रंथकार का लेख है कि यह पहाड़ मिश्र की धरती में है उस पर एक कैनेसा है उसमें एक हौज़ है जब पहाड़से मीठा पानी बहता है तो इस हौज़ में गिरता है इस पानी का नाम ताहिरा अर्थात् पवित्र है और जब हौज़ भर जाता है तो चारों ओरको बह निकलता है जो कोई इस हौज़ में रजस्वला अथवा प्रसूतास्नान करै तो जब तक उस हौज़के पानीको न निकाल डालै तब तक पानी का आना बन्द होजाता है॥

(पहाड़ तबरस्तान) तोहफ़तुलग़रायबके ग्रंथकारने अपनी किताबमें लिखाहै कि इस पहाड़पै एक प्रकारकी घास होतीहै जिसको जौज़मायल कहते हैं इसमें यह गुणहै कि जो कोई उसको हसतेहुये खाय तो हसी बहुत आवैगी और जो कोई रोतेहुये खाय तो रोना अधिक होगा इसी प्रकार उसका खाने वाला जिस दशा में होगा उसकी वह दशा प्रबलही होती जायगी॥

(पहाड़तूरज़ीना) यह पहाड़ बैतुलमक़दसकी धरती पर है यह

पहाड़ अभिमत फलदातार अर्थात् संसारकी अभिलाष पूरी करने वालाहै मनुष्य इसके दर्शन करतेहैं और कहते हैं इस पहाड़पै एक कन्दरा है जिसमें सत्तर पैगम्बर भूख के मारे बैकुण्ठ बासी हुये हैं इस पहाड़के निकट एक मसजिद है जहांसे ईसामसी आसमानको गये थे और इस पहाड़ और मसजिद के बीच में बादी जिहनम है और उसमसजिदमें उमर बिन अलखताके नमाज पढ़नेकी ठौरहै ॥

(पहाड़तूरसैना) यह पहाड़शाम और दादीक़रीके बीचमेंहै और कोई २ कहता है कि इलाके निकट है हज़रत मूसा जब इस पहाड़ पर आये थे तो पहाड़पै मेघ आता था उसमेघ के भीतर जाके हज़रत ईश्वरसे बार्त्ता करतेथे और यह वही पहाड़है जिसके विषयमें ईश्वर सच्चिदानन्दने कहा है और यह पहाड़ सलहा के रहने की ठौर है और जो पहाड़ कि मदीनके निकट है उसका पत्थर जब कोई तोड़ताहै तो उसके भीतरसे अलयक़केवृक्षकी सूरत प्रकट होतीहै (अलयक़ एकप्रकारकी घास होतीहै जो वृक्षोंपै बेलकी तरह फैलती है)

(पहाड़ तूरहारूंन) यह पहाड़ बैतुल मुक़दस में है और इसका नाम जिवलतूरहारूंन इसकारणहै कि जबहज़रत मूसाने गोसाला स्तूनको बध किया तब हज़रत मूसाने चाहा कि ईश्वर की स्तुति कीजाय उस समय हज़रत हारूंन ने कहा कि मुझे भी अपने साथ लीजिये क्योंकि मुझे यहडर है कि कदाचित् आपके जानेके उपरांत कोई कष्ट मनुष्यों को आयनपड़ै और उस समय आप मेरे ऊपर क्रोधकरैं तब हज़रतमूसा ने उनकोसाथ लैलिया॥ अभी राहमें थे कि दो मनुष्य क़बुर खोदनेवाले मिले उनसे हज़रत मूसा ने पूछा कि यह क़बर किसकी खोदते हो तब उन्होंने उत्तर दिया कि उस पुरुषके लिये जो तद्रूप इसपुरुष के स्वरूप समान संसार में हो और यह सैनहारूंनकी ओर करी तिस उपरांत उन्हीं दोनों ने हज़रतहारूंनसे कहाकि आप इसक़बरके भीतरआयके नापलो देखो कमती बढ़ती तो नहीं है तब हज़रत हारूंन अपने कपड़े हज़रत मूसाको देके क़बर में उतरे बस वहीं उनके प्राणांत हुये और क़बर

बन्दहोगई तब हज़रत मूसा विलाप करनेलगे और अति शो
बनी इसराईल अर्थात् मनुष्योंकी ओर फिरे यहां मनुष्योंने हज़
मूसा से हारूंनके खूनका दावाकिया जब हज़रत मूसा ने ईश्वर
प्रार्थनाकी कि हे ईश्वर मेरे बचावके लिये कोई यत्नकर तब ई
एक ताबूत (ताबूतएकसन्दूक है जिसमें अंगरेज़ यहूदी और
बदीशीय मृतकोधर पृथ्वी में गाड़तेहैं) अति उज्ज्वल इस
पै मनुष्योंको दिखाके दृष्टों से अलक्ष करदिया यही कारण है
पहाड़ का नाम तूरहारूंन अर्थात् हारूंन का पर्वत पड़ा॥

(पहाड़ तैर) यह पहाड़ मिश्रदेश में रोदनीलनामक नदी
तटपर है और इसका कारण यह है कि इस पहाड़ पै प्रति
एक पक्षी आया करता है और इसपै मुअतकफ होता है और
पहाड़ में एक खिरकी है उसीके द्वारा प्रत्येक पक्षी नीलनाम न
में पैरके अपनीराह लेताहै॥ अन्तको एकपक्षी उसखिड़कीमें
फराके मरजाताहै और वहांसे सम्पूर्ण पक्षी उड़ जातेहैं॥
मूसली की कहावतहै कि मुझसे वहांके प्रधानोंने कहाहै कि
साल दुर्भिक्ष पड़ने को होता है तो सम्पूर्ण पक्षी उसी खिरकी
फँसके मरजातेहैं और जो वहसाल मध्यमहोताहै तो केवल एक
पक्षी फँसके मरजाता है और जिससालमें अच्छा सम्बत होता
तो सम्पूर्ण पक्षी आनन्द से निकल जाते हैं॥

(पहाड़ अरज़) यह पहाड़ सम्पूर्ण संसारमें अद्भुतहै और इस
नाम देशविभागकरके भिन्न२ हैं मक्का और मदीनामें इसको
कहतेहैं और शामदेश में फ़लस्तीन और इसके पीछे हुक्म
पहाड़ है और दमिश्क़ में इसकेपीछे शबलनीर नाम पर्वत है
हलब, हमज़ और हमामें इसकेपीछे लबना नाम पहाड़है॥
जाकिया और मसीसामें इसको लगामकहतेहैं॥ यहपहाड़
तिया और फालीकला में होके दरिया जरज़तक पहुँचा है
इसकानाम क़ितक़ है॥ इब्नुलफ़सा की बाक्यहै कि इस
सत्तरप्रकार की भाषा बोली जाती हैं जो प्रत्येक की भाषा

भाषा बोलनेहारे की समझ में बिना उल्था कियेहुये नहींआती॥

(पहाड़ अरवान्) यह पहाड़ तायफ़ में है इस पै क़वायलहज़ल रहतेहैं और इसपहाड़ के सिवाय हज्जाज की धरतीभर में पानी कहीं नहीं मिलता और वायु भी इसी पहाड़ के कारण जायफ में अच्छी होती है॥

(पहाड़अमायतुलबहरीन) यहपहाड़ प्रसिद्ध है इबनज़िआदुल-कलानी का लेख है कि इसके इसनाम का कारण यह है कि इस पहाड़पर कोई नहींजाता और जो जाताहै तो अन्धाहोजाताहै इस पहाड़ में बहुधा खोह कन्दरादि हैं इसपहाड़पर मान्साहारीजीव और बान के वृक्ष बहुत हैं सकरी कहता है कि क़ज़ालकलाबी ने एकमनुष्य को मारडाला उसके पलटे मारेजानेके डरसे इसपहाड़ पर दशबर्षतक छिपारहा वहां इससे एकबाघ से यहांतक मेलहो-गया कि वह बाघ जो अहेरकरता उसमें से इसे भी देताथा अन्त को बादशाह ने उसका अपराध क्षमा किया तो उस समय उसने चाहा कि अपने लड़के बालों के पास जायँ परन्तु बाघ नहींआने देता था अन्तको कत्ताल ने मारेडर के बाघको मारडाला॥

(पहाड़ अवीर व कसीर) ये दोनों बड़े २ पहाड़ बसरा और अमाके बीचमें हैं जब यहां जहाज़ आताहै तो उससे टकराने का बड़ा डर होता है॥

(पहाड़ फरगानह) तोहफ़तुलगरायब के ग्रन्थकार का वाक्य है कि फ़रगनहदेश जहां एक प्रकार की घास स्त्री पुरुष की सूरत की उगती है उसमें एक ओर तो पुरुष का स्वरूप दृष्टि आता है और दूसरी ओर स्त्री का स्वरूप॥ वैद्यों के निकट इस घासका खाना वीर्य वर्धकहै यहांतक खातेही कामका ऐसा उद्वेग होता-है कि मनुष्य उसके वेग को रोक नहीं सकता और इस वनस्पति का नाम वेरोज भी है जो बहुधा खुरासानदेश में उत्पन्न होती है॥

(पहाड़ फ़ीलवान) अबूउलरैहांख्वारज़िमी का वाक्य है कि महरजान के निकट ये पहाड़ है जिसको फ़ीलवान कहते हैं और

उसमें एक गड़हाहै कि पानी पहाड़की चोटीसे आकर उसमें इकट्ठा होता है और जब ठण्ढी बायु चलतीहै तो वह पानी जमके पत्थर के समान होजाता है॥

(पहाड़कारूपन) यह पहाड़ दमिश्कदेश में है और इस पहाड़ पर एक खोहा है जो मग़ारय हाबील नाम प्रसिद्ध है और बहुतसे कन्दरों के सिवाय एक पत्थर वह है जिसपै क़ाबील ने हाबील को पटकके माराथा और इसीपहाड़पै एककन्दरा ऊजनामकहै विद्वान् कहते हैं कि इस पहाड़ पै एक कन्दरा है कि जहां मारे भूखके चालीस पैग़म्बर मर गये॥

(काफ़नामपहाड़) यह पहाड़ सम्पूर्ण दुनियां को घेरे है और मफ़सरीन का यह भी निश्चय है कि यह पहाड़ हरे ज़मुर्रदका है जिसकी छाहींपड़ने से आसमान हरा दृष्टि आताहै और इसपहाड़ की दूसरी ओर बहुधा मनुष्य बसतेहैं परन्तु उनका कोईहाल नहीं जानता है॥ कोई२ मुफ़स्सरीन यह भी कहता है कि कोई पहाड़ नहीं है परन्तु इनसब पहाड़ोंकी एक२रग कोहक़ाफ़ में मिली भई है जब ईश्वर किसी पै क्रोध करता है तो उसपहाड़ के मौकिल को आज्ञा देता है और वह मौकिल इस पहाड़को फिराता है जिसकी चोटसे वहांकी धरती फटजातीहै तो वह जातिउसमें समाजातीहै॥

(कोहक़ीक़) यह पहाड़ मलांदेश में है और एक श्रेणी इसकी रीम तक गईहै॥ इस पवाड़में एक राहहै जिसके द्वारा शकुर नाम ज़ात खिरज़ईरांमें पहुंचतीथी और वहां पहुंचके बायज़ानसे मूसल औरहमदानी तक लूटतीथी जब नौशेरवां बादशाह खिरज़देशका मालिकहुआ तब उसने ख़िरज़ की बेटीसे बिवाह करके बड़ेयत्न से उसराहको बन्दकिया और ऐसापुष्ट बन्दकिया कि अब कोईउपाय उनलुटेरों की नहींचलती और सात फरसख़तक यह दीवार बनीहै और उसमें ऐसे२ चौकोन पत्थर भारीलगे हैं कि उनको पचास आदिमीभी नहीं उठासकते और इससात फरसखकी दूरीपर सात शहर बसाये और सात दरवाजे लोहेके उसदीवार में लगाये और

प्रत्येक द्वारपर एक२ सौ आदमियों का पहरा नियत किया तिस उपरान्त नौशेरवां ने अपने तख़्तपर बैठ ईश्वर का धन्यवाद किया किस हेतु से कि ऐसी दीवार उसके हाथ से बनी और तुर्कों का अन्याअजमी मिटा॥

(पहाड़क़दक़द) यह पहाड़ मक्काकी धरतीमें है और यह पहाड़ उन्हीं पहाड़ोंमें से है जिनकी चोटीपर कोई नहीं पहुंचसकता और इस पहाड़में बहुधा फ़िलज़्ज़तकी खान है॥

(पहाड़क़सरां) क़सरां एक शहर है सन्ददेश में इस पहाड़पै शहद ओसकीभांति गिरता है परन्तु जो प्रकटरहा वह तो मनुष्य इकट्ठा करते हैं और जो दृष्टिमें न आया वह शहदकी मक्खी इकट्ठा करती हैं॥ और जो जाड़ेके वास्ते रखती हैं॥

(पहाड़बुहदा)यह पहाड़ बड़ाऊंचा है और यहां के रहनेवाले बनीमरा हैं और कहते हैं कि जब नसतनाम शायर (कवि)यहां आया तो उसने एक द्वारपर खड़ेहोकर पानीमांगा तब एकस्त्री ने निकल के दूध अथवा पानी पिआया और कहा कि मेरी प्रशंसा नज़्म अर्थात् पद्य करदे इसपै उस कवि ने उसकानाम पूछा तो उसनेकहा कि मेरानाम बन्द है तब उस शायर(कवि) ने कुछबातें (चौपाई) अरबीभाषा में बना के सुनाईं और वे प्रसिद्धहुईं तिस उपरान्त इस शायरने अपना बिवाह उसके साथकिया॥

(पहाड़काफ़ूर) यह पहाड़ हिन्दुस्तान की धरतीमें है समुद्रके किनारे यहां बहुधा शहर आबाद हैं उन शहरों में से एक शहर क़ामरू है जहां काऊद क़ामरूनी प्रसिद्ध है और शहर क़ुमारी है जहां काऊद क़ुमारी प्रसिद्ध है और इसी पहाड़ के नीचे काफ़ूरके वृक्ष ऊगते हैं यत्न यह है कि इस वृक्षको कुछ ठौरोंपर तरासदेवें तो अर्ककी तरहपर काफ़ूर बहैगा उसको लैलेवे परन्तु इसके उपरान्त वह वृक्ष सूखजायगा॥

(पहाड़कहल) यह पहाड़ शहर वस्तके पास इन्दलस की धरती पर है इस पहाड़से एक प्रकार का सुर्मा प्रथम तारीख़ में निकलने

लगता है सो वह आधे महीने तक तो प्रति दिन अधिकही होता जाताहै और आधे महीनासे महीनाके अन्ततक कमहोताजाताहै॥

(पहाड़करगस) यहपहाड़ री और क़सम और क़ाशानकी धरती पर है इस पहाड़के चारोंओर जंगल है और इस पहाड़पै गिद्धरहते हैं इसीसे इसका नाम कोहकरगस अर्थात् गिद्धोंका पहाड़ कहते हैं और इसकी राह बहुत कठिन है और बहुधा जहां तहां पानी ऐसा पड़ताहै कि जिसमें डर है इस पहाड़पर कोई बस्तीनहीं है क्योंकि बस्तीसे दूर परता है॥

(पहाड़ करमा) करमाकेविया बानमें और भी बहुतसे पहाड़हैं और सम्पूर्ण पत्थरोंमें यह गुण है कि लकड़ी के समान जलाये जाते हैं मानो वहांकी लकड़ियां येही पत्थर हैं॥

(पहाड़गुलिस्तान) यह पहाड़ तूसके निकट खुरासानकी धरती पर है गुलिस्तान नाम तूसका एकगांवहै कोई २ खुरासानी फ़क़ीर कहते हैं कि इस पहाड़पर एक इमारत महलके सदृश है जब कोई वहां जाता है और दहलीज के आगे बढ़ता है तो एक प्रकाश ऐसा दृष्टि आता और वहां एक सोता है जिससे पानी निकल के पत्थर समान जमा जाता है और इसमहलमें एकऐसा सूराख है जिसमें से ऐसे वेग से बायु निकलती है कि जिसके थपेड़ा से उसके भीतर जाना कठिन है॥

(पहाड़ कोकवान) यह पहाड़ सफ़ाके निकटहै और इसकेनाम का यह कारण है कि इसपहाड़पै दोमहल हैं और दोनोकीनीव चमकदार जवाहिरोंकी है और रातको उनका प्रकाश दोतारों केसमान होता है कहते हैं कि इसकी नीव किसी जिनने दी थी परन्तु वहांकोई पहुंच नहीं सक्ता है॥

(पहाड़ अरख़ांन) यह पहाड़ तबरिस्तानमें है इसकी एक ओर से पानी बहता है उसकी प्रत्येक बूंद समन अथवा मसदस की भांति का पत्थर होजाता लोग उनको उठालाते हैं और उनकी गोटें बनाते हैं॥

(पहाड़लवना) यहपहाड़ शामदेशमें है इसपहाड़पै सबप्रकार के मेवा और खेतियां होतीहैं और यहां अबदालरलोग ओबी खोदखोद के रहते हैं इसकारणसे कि इसपहाड़पर क़ुत्र्वतहलाल हासिलहोती है और इसपहाड़के नीचे एकअद्भुत सेवहै जो उड़नेके समय सुगन्ध नहींदेता परन्तु जो बरफ़के दरियामें डुबाओ तोउसमें गन्धिहोतीहै॥

(पहाड़ मदबह्वारा) यह पहाड़ सफाके निकटहै॥ इस्तखरीकी बाक्य है कि इसपहाड़की उँचाई बीस फ़र्सखकी है और यहां बहुधा क़बुर और आवादी और सोते बहतेहैं और इसपहाड़ पै जानेकी केवल एक राहहै॥

कोहमेक़्नातीस अर्थात् चुम्बक पत्थरका पहाड़॥

महलबी कहताहै कि यह पहाड़ दरिया कुलज़ुम के पहाड़ों से मिलताहै॥ इसपहाड़पै चुम्बक मिलताहै अब यहां पानी आगया है सो मारेडरके नावमें लोहेकी कीलनहीं लगाते॥

(पहाड़ मक़तमर) यह पहाड़ मिस्रकी धरतीमेंहै और फैलता हुआ हब्श देशमेंहोके दरिया नीलतक पहुंचासो यहां इसकानाम औरहै॥ इसपहाड़ पर बहुधा मसजिद और गुफाबनी भईहैं॥इस पहाड़ पर किसी प्रकारकी खेतीनहीं होती॥ क्योंकि इस पहाड़ पर एक छोटे सोताके सिवाय और कहींपानी नहीं है जो अबतक ईसाइयोंकी पूजनकी ठौरके पासहै और वहांके पण्डाका नाम पीर सय्यदहै॥ मक़ूअमरुलनाससे प्रश्नकिया कि जो इसपहाड़को बेचो तो मैं सत्तरहज़ार अशरफीकोदेताहूं अमरुल नासने आश्चर्यकरके यह समाचार अमरुल खताब के पासलिखा इसके प्रति उत्तर में हज़रत ने लिखा कि उससे पूछो कि वह किस लिये इतने हज़ार अशरफी देताहै उसपै खेती भी तो नहींहोती और न पानीकाकोई सोताहै जब उमरने उससे पूछा तब उत्तर दिया कि इसकारण इतनी अशरफी देताहूं कि मैंने किताबोंमें देखाहै कि यहपहाड़ बिहश्त (बैकुण्ठहै) जब उस उत्तरको उमरुल नासने हज़रतके पास फिर लिखभेजा तब हज़रतने उसका उत्तर लिखा कि हां सत्य है

यह पहाड़ मोमिनों (सधर्म्मों) के लिये विहश्तहै और जो लोग वहां पहिले गड़ेहैं वे मोमिन(सधर्म) थे किसी२ वैद्य और विद्वानों की एक मतिहै कि यह पहाड़ ग़ुरंदकाहै और मकूसका मोललेना केवल इसलियेथा कि वहअपनी इसपै मक़बराअर्थात् क़बरबनावे॥

(पहाड़मोरखान) यह पहाड़ फारसमें है और यहां एक गुफा है जिसकी छतसे पानी टपकताहै और यह भी कहतेहैं कि इस पहाड़ पर एक तिलिस्म अर्थात् मायाहै कि जो मनुष्य एकसे हज़ारतक उस ओर जावे उनके पीनेको पूराहो॥

कोहनार अर्थात् अग्निका पहाड़॥

इस प्रकारके पहाड़ बहुत हैं परन्तु उनमें से एक पहाड़ तुर्किस्तानमें है जिस्में एक गुफाहै जो मकानके समान बनीहै जो कोई जीव उसमें जाय तो तत्काल मरजाता है और उनमेंसे एकपहाड़ गुलिस्तान नामहै जिसमें एक ठौर ऐसीहै कि जो कोई पक्षी उसके सन्मुख उड़ेतो गिरके ततकाल मरजाय यही कारणहै कि इसपहाड़ के चारोंओर पक्षी मरेभये दृष्टि आतेहैं दमावन्द के निकट एकपहाड़ है जहां रातदिन अग्निका ज्वाला प्रज्वलित रहताहै और शेषबर्णन इसका पहिले होचुकाहै॥

(पहाड़नहावन्द) इषुलफ़क़िहा कहताहै कि इस पहाड़ पै दो स्वरूप मायासे रचेहैं उनमेंसे एकका स्वरूप तो मछलीका है और दूसरेका बैलका और ये दोनों सूर्त्तें बरफ की बनी भईहैं जो जाड़ गर्मी किसी ऋतुमें नहीं लगतीहैं लोग कहतेहैं कि ये दोनों स्वरूप मायावी इसलिये बनायेहैं जिस्में सोतेका पानी कमन हो और इस सोतेकापानी दोतरफ़को जाताहै अर्थात् निहावन्द और दीनूरमें॥

(पहाड़ हुमुंज़) तोहफतुल ग़रायबका ग्रन्थकार लिखता है कि जो पहाड़ तबरिस्तानमें है उसका नाम हुमुंज़हैं इस पहाड़से पानी गिरताहै और अद्भुत बात यहहै कि जब कोई मनुष्य फरियाद करे पानीका गिरना बन्द होजाताहै और जब फिरवही मनुष्य दूसरी बार पुकारे तो पानी गिरने लगता है॥

(पहाड़हिन्दका) पूर्बोक्त ग्रन्थकार कहता है कि हिन्दुस्तान के देशमें एक पहाड़है जिसपै दो सूरतें बाघकी बनी भईहैं उनके मुख से पानी बहता है उन दोनों के मुखपर दो गांव बसे थे जो दोनों एक दूसरेके बिपरीत थे और आपसकी लड़ाईमें एक बाघके मुखमें चोट लगगई थी सो टूटगया तिस उपरान्त बहुतेरा पत्थरका जोड़ लगातेरहे परन्तु जोड़ नलगा इसकारण उसके मुखसे पानीगिरना बन्द होगया जिसके कारण एक ओरकी बस्ती उजड़ गई और बहुतसे लोग कहते हैं कि लड़ाई के कारण उसका मुख नहीं टूटा बरन उसका मुख इस कारण टेढ़ाथा कि जिसमें पानी बहुतसा गिरै परन्तु उसके बिपरीति होगया कि जितना था उतना भी न रहा॥

(पहाड़वासित) यह पहाड़ मदीनाके पास इन्दलसकी धरतीपर है इसकी गुफामें एक फांकहै और एक तीर लोहे का गड़ा हुआ है लोग उसपै आंखें मलतेहैं परन्तु उसको उखाड़ नहीं सक्ते और जब कोई उसको उखाड़ना चाहताहै तो वह उसी फांक में छिपजाता है और फिर यथापूर्बक हो जाता है बहुधा लोगोंने बड़े २ यत्न किये कि तीरको निकालैं परन्तु कुछ बस न चला॥

(पहाड़बदकान) यह पहाड़बड़ाहै और इसपै बहुधा मीठेपानीके सोताहैं और यहां पर हरमके वृक्षहैं जो कहीं नहीं होते यह केवल ईश्वरकी माया जहांचाहे वहां हो इस वृक्षके पत्ते चादरके सदृश होते हैं और इसकी खजूर के वृक्षकीजड़के सदृश होतीहै और इसपहाड़ पै आवादीभी है और यहांके निवासी बनीऊस कहातेहैं॥

(पहाड़वशल)थामाकी धरतीमें यह बड़ा पहाड़है सम्पूर्ण पृथ्वी के पहाड़ोंमेंसे इस पहाड़के वायु जल अच्छेहैं॥

(पहाड़घसूम)यहपहाड़ मक्काके निकट बलाद हदीलमेंहै इसपैकोई मनुष्यनहींजासक्ता इसपै बन्दरबहुतहैं सरातकेपहाड़ोंपर जो लोग ईखकी खेतीकरते हैं उसकोभी ये बन्दरआकर उजाड़करते हैं दीन किसानोंका कुछ बसनहींचलता वेलोग इनको मिटानानहींजानते क्योंकि इनका निवास बहुतदूरहै और वहां कोई जानहींसक्ता॥

(पहाड़मलपश्म) यह पहाड़ क़ज़बीन शहरके निकट है इसकी आबादीमें से एक गांव दसल नामहै अजायबुल मख़लूक़ातका ग्रन्थकार लिखताहै कि एकमनुष्य ने जो इस पहाड़पर गया था मुझसे कहा कि इसपहाड़ पे आदमियोंकी मूर्तें पत्थरकी बहुतसीहैं जिनको ईश्वर ने अपने क्रोध से पत्थर करडालाहै उनमूर्तोंमें से एकचरवाहे कीमूर्त्ति है जो अपनी लकड़ी टेकेहुये बकरियों को चरारहा है और एकचरवाहा अपनी गौकादूध दुहताहै॥

व्याख्यान नहरोंके उत्पन्न होनेके विषय में॥

जब मेघ और बर्फ़ पहाड़ों पर गिरताहै और वह उसकीउंचाई से नीचेकी तरफ़ बहता है तब प्रत्येक कन्दरा से निकल के जंगल में कोसों फैलजाता है और बहुधा गड़होंमें पानीभरा रहता है जिसको अरबीमें उशाल कहते हैं और जब इनपहाड़ोंमें पानी निकलने की राह तंग हुई तो वहां फैला करके नदीकी सूरत होजाती है और वहपानी जहां तहां इन्हीं गड़होंमें ठहर जाताहै और वे सद... के नीचेकी ओर बहाकरते हैं कभी बन्दनहीं होते क्योंकि बर्फ़ और मेघ से सदैव इनको सहायता मिलती है परन्तु हां जब दुर्भिक्ष में इनको वह सहायता नहींमिलती तो वह पानीका बहनाभीबन्दहोजाता है हकीम बतलीमूसने जिसने किताब बस्समाउलआलमनाम भूगोलदर्पण लिखाहै लिखताहै कि इसपृथ्वीके टुकड़ेमें दोसौचालीस नहरें लम्बीचौड़ीहैं इनमेंसे कोईनहरें तो ऐसीहैं जिनकीलंबाई पचास फ़रसख़से लेकर हज़ार फ़रसख़ तक और कोईनदी ऐसी है जो पूरब से पश्चिम बहती हैं और कोई २ दक्षिण से उत्तर और उत्तर से दक्षिणको बहती हैं ये सब नदियां पहाड़ों से निकल अंतको समुद्र में जामिलती हैं अथवा किसी रेतली धरती व पहाड़ के नीचेही बन्द होजाती हैं और इनके किनारोंपर बड़े २ शहर और गांवबसे हैं और इननदियों का पानी संसारी लोग अपने खेत और बागोंके सींचनेमें ख़र्च करते हैं और शेष जल खारी समुद्र में जागिरता है वहां वह पानी नन्हे २ कणहो वायुमें मिलजाता है और उसकी भाफ़वायु में

जमके मेघ बनजातेहैं और फिर बर्षतेहैं और वही पहाड़ पर मेह और बर्फ़होते हैं निदान यही दशा सदासे चलीआतीहै ॥ अब तो प्रथम थोड़ासा हाल किसी २ नदी और उसके गुण और उसके अद्भुत जीवोंका बर्णन करताहूं ॥

(आसलनामनदी) यह बड़ी नदी खिरज़ के देशमें दजलाके पासहै और रूस और बलगेरियामें होके खिरज़ के समुद्रमें जा मिलीहै ॥ कहतेहैं कि इस नदीके कुछ ऊपर सत्तर शाखाहैं परंतु अपनी स्वाभाविक गहराईमें रहकर सब इसी नदीमें मिलजातीहैं इसमें अद्भुत बात यहहै कि इसका पानी यद्यपि समुद्रमें मिलजाताहै तदपि दो दिनकी राहतक अपना रंग अलगही रखताहै और जाड़े की ऋतुमें इसका पानी अपने मिठास और अच्छाईके कारण जमजाता है ॥ इसनदीमें इतने अद्भुत जीवहैं जिनका बर्णन नहीं होसक्ता अहमबिनफुज़लांक जिसको ईश्वरने बलगेरिया के बादशाह के पास रसूलकी रीति से भेजाथा उसका बर्णनहै कि मैंने पहिले सुनाथा कि बलगेरिया के बादशाहके पास अतिदीर्घ बलवान् मनुष्यहै मैंने उसके देखनेकेलियेकहा तब पूर्वोक्त बादशाहने कहा कि वह हमारे देशका नहींहै परन्तु उसका यह हालहै कि एक दिन आसलनाम नदी बढ़ी तो लोगोंने आयके कहा कि नदी के किनारे एक मनुष्य अतिदीर्घ तनु और बलवान् दृष्टि आता है यह ख़बरसुन हम भी उसके देखनेको सवारहुये वहां एकायकएक ऐसा लम्बा मनुष्य दृष्टिआया जो बारहगज़ लम्बाथा और शीश उसका एक बड़ी देगकी बराबर और नाक उसकी एक बीताकी आंखें बड़ी २ और प्रत्येक अंगुली एकएकबीताकी थी ॥ हम उसके आगेखड़े होके बातें करनेलगे परन्तु वह हमारी कुछ न सुनताथा तब मैं उसको अपने साथ लाया और हमारे उसकेदेशके बीच तीन महीनेकी राहकी दूरीथी ॥ मैंने लोगोंसे पूछा तो उन्होंने कहा कि यह याजूज माजूजके साथियोंमेंसेहै और इसजातिके लोग हमसे तीन महीनेकी राहपरहैं ॥ बीचमें एक दरिया रोकहै और इसजाति

के लोगनंगे रहतेहैं और मछली खातेहैं ईश्वर की माया कि नित दरियासे मछलियां निकलती हैं ये लोग उनको अपने और अपने लड़के बालों के भोजन योग्य लेजाते हैं और जो अधिक लालच करैं तो उससे खानेवाले के पेट में पीड़ा होती है निदान बलगेरिया के बादशाह ने कहा कि वह मनुष्य हमारे कुछ दिनरहा अन्तको उस के कण्ठ में ऐसा रोगहुआ कि वह मरगया और उसकी हड्डियां अत्यन्त भयानक होगई ॥

(आजुरवेहाननामनदी) अबूउलक़ासिम ने लिखाहै कि यहवह नदी है जिसका पानी बहकर पत्थर होजाता है और तोहफ़तुल गरायब के ग्रन्थकार ने लिखाहै कि आजुरबेहान एकनदीहै जिस का पानी कड़ेपत्थर की तरह टुकड़े२ होजाताहै ॥

(आसरानदी) अजरी कहताहै कि यहनदी आसरा ऐसेदेश में हैं कि जिसकानाम कुवत ऐसरबही है और दरियाशाम से निकल के तरतूस के आसपास गिरती है ॥ इसकी लम्बाई दोसौदशमील लिखीहै और इसनदी में अपूर्व बिनकांटा की मछली होतीहै जिस का नाम वरखनाहै वह सिवाय इसनदीके और कहींनहींपैदाहोती॥

(ईलानदी) यहनदी बसरा में है इसकी चौड़ाई चारकोस कीहै इसके किनारों पर बहुधा बड़े२ मकान और वृक्ष और फुलवाईहैं निजकर नींबूआदि मेवा अधिक है ॥ कहतेहैं कि बिहश्त की नदी दुनिया में चार हैं एक तो बसरा की ईला नदी दूसरी नदी शाब जो फ़ारस में है तीसरीनदी गोता जो दमिश्क़में है और चौथीनदी सईद जो समरक़न्द देश में बहती है इनचारों में एक से एक को बढ़कर कहना चाहिये प्रत्येक अपनी २ भलाईमें अद्वैत है ॥

(असफ़ारनदी) तोहफ़तुलगरायब का ग्रन्थकार कहता है कि असफ़ारदेश में एक ऐसीनदी है कि जो एकवर्ष बहकर आठवर्षतक बन्दहोजातीहै और नवींवर्ष फिर बहतीहै ॥

(आनानदी) यह इन्दलसदेश में है यह फ़तह नाम ठौर से निकली है तिस उपरान्त पृथ्वी में ऐसी छिपती है कि इसका पता

नहींलगता फिर रिआहनाम क़िलाके निकट जिसको आनाकहते हैं प्रगट होतीहै ॥ और इसीप्रकार फिर लोप होजाती है निदान इसीप्रकार प्रगटत हुरत तीलसतक इसकापता लगताहै और फिर महासागर में जाके गिरती है और यहनदी सौमील की लम्बीहै ॥

(जैहूंननदी) इस्तख़री कहता है कि इसनदी की गहराई उसके बहाव से मालूमहोजाती है यहनदी बदुख़शांकी सीमा से निकली है बहुधा हश पहाड़ के निकट और भी नदी मिलजातीहैं तब यही महानद होजाताहै और वहां से सनाया की नदियोंमें मिलतीभई बदुख़शां में मिलती है जो तुर्किस्तान से निकली है और पहाड़ोंमें होके ख्वारज़िम में गिरती है और कहीं के बासियों को इसनदीसे लाभनहीं होता परन्तु ख़्वारज़िम के निवासियों को क्योंकि यहां इसका पानी ठहरता है और ख़्वारज़िम की सीमा में छहदिन की राहतक इसकापानी फैलताहै और जाड़ों में जैहूंन का पानी बन्द होजाताहै और जो जाड़े अधिकहुये तो इसकापानी पत्थरहोजाता है और ऐसा कड़ाहोजाताहै कि गाड़ी और छकड़ा इसके ऊपरसे निकलजाते हैं ॥ परन्तु जमेहुयेपानीकीमुटाई पांचबीताकी होतीहै और उसकेनीचे फिर पानीभरारहताहै ख़्वारज़िमकेनिवासीबहुधा उसमें गढ़ासा खोदके पानी निकालते हैं और गदहोंपर लादकर शहरोंमें लेजातेहैं जब यहनदी जमजाती है तो यह तनकभी फरक में नहींआता कि यहनदीहै कि ख़ुश्क उसपै रेतभी उड़ाकरताहै यह दशा दो महीनेतक रहतीहै जब सर्दी कम होनेलगती है तो बरफ़ गलनेलगती है बहुधालोग इसपै चलने में धोखाखाते हैं क्योंकि वह बरफ़ टूटजाती है और वेदोन अपनीसवारीसहित बूड़जाते हैं इसी कारण इसनदी का नाम वहां क़त्ताल अर्थात् घातिनी प्रसिद्ध है ॥

(हसनमहदीनदी) तोहफतुलग़रायब का ग्रन्थकर्त्ता लिखता है कि यहनदी बसरा और अहवाज़ के बीचमें है किसी २ समय यह नदी मीनार के समान ऊंची होती है उससमय इसमें ढोल और तासोंकी सी आवाज आती है ॥

(ख़रीजनदी) यहनदी तुर्किस्तान में है और यहां सांप बहुतहोते हैं उन दुष्टों का कुछ ऐसा प्रभाव है कि जो कोई देखै वह अचेत हो जाता है ॥

(दजलानदी) यहनदी बुग़दादमेंहै जो पहाड़हसननाम प्रसिद्ध है उसके निकटहै इराहसनका नाम हसनज़्वाळक़र्नीन है इसनदी का पानी और पहाड़ोंकी नदियोंसे मिलकर बहताहै और वहांसे यहनदी बुक़रबियापहाड़ के पास होके मौसाफ़ारकीन में निकल हस्सारकनफ़ा में पहुँचतीहै वहांसे इब्नउमरके टापूमें होके मूसल नाम नदीमें मिलतीहै और वहांसे तकरीब मिलकर बुग़दादमें जा गिरतीहै फिर वहांसे बासित और बसरा और आबादहोकर फ़ारस के समुद्रमें गिरतीहै और जब बासितसे अलगहोतीहै तो सातनदी होजाती हैं उनके नाम ये हैं ॥ सासीनदी१ अराक़नदी२ वकला नदी३ हरक़बीनदी४ हमामियांनदी५ जाफ़रनदी६ और ७नदीमैसा॥ तिस उपरान्त ये सातोंनदियां फ़रातनाम नदी में मिलती हैं और मतारागांवकेपास इसकाफाट बड़ालम्बाचौड़ा होजाताहै यहगांव बसरा और दजलाके बीचमें एकदिनकी राहपरहै॥ दजलाकापानी मीठा स्वादिष्ट और हलकाहै गर्मीकी ऋतु में इसका पानी बासित और बसरामें ख़र्च कियाजाताहै हज़रतअब्बास की कहावत है कि ईश्वर स्वप्रकाशी ने हज़रतदानयालको यह आकाशवाणीदीथी कि अपने बन्दोंकेलिये दो नदियां बहाताहूं और इनदोनोंको नदियोंसे अलगकरताहूं जब ईश्वरने पृथ्वीको आज्ञादी कि हज़रतदानियाल की आज्ञाकारी हो तब हज़रतदानयाल ने लकड़ी लेकर पृथ्वीपर रेखाखींची रेखाखींचतेही पानीनिकलनेलगा और जहांकहीं धरती रांड़स्त्री अथवा यतीम अर्थात् अनाथलड़केकी होतीथी वहां पानी अधिक निकलताथा जिसमें उनको भाल अधिकहो ॥ क़ाज़ीअली बिनऐसूखीने लिखाहै कि फ़रातसे दजलाकीनहर दूनीहै और इस के पश्चिम में रबियाफ़रात बहती है इसनदीकी धरती पानीमें से दृष्टि आती है ॥

(ज़हबनदी) यहनदी शाम देश में है ॥ हलब देश के निवासी कहतेहैं कि यहनदी दादीवतनामें है लिखाहै कि इसनदीका पानी तनक भी वृथानहीं जाता क्योंकि प्रथम तो इतना प्यारा है कि तोलके बिकताहै और जब कम होजाताहै तब नाप के बिकता है और औव्वल दरजे तो कपास के वास्ते उपयोगी है और दोयम दरजा वृक्षोंकेलिये इसनदी का पानी दोफ़रसख तक एकरेतले में आकर लौनहोजाताहै सोई बहुधा शामके आसपास ख़रचहोताहै॥

(ज़रीक़नदी) यहनदी सदैव बहा करतीहै और बहुधा बागादि को भरदेती है जब मुसलमानों और फ़ारसियों में युद्धहुआ और ये ज़िदजुर्द मारागया उस समय इस नदी ने मुसलमानी सेना की बड़ी सहायताकरी अर्थात् जब फारसियों की सेना भागी तो यह नदी रोकथी बहुधा लोग उनकीसेना के इसनदी में डूबकेमरगये और कुछेक मुसलमानों की बन्द में आगये ॥

(रासनदी) आज़रबायजान में इसनदी का बड़ाफाट है इसके दोनों किनारों पै कंकरीली और पथरीली धरती है नदीकीपेंदी में पत्थरों की खान है उस ओर को नाव नहींजासक्ती बहुधा पत्थर यहां ऐसेहैं कि जो टूटनहींसक्के जो मनुष्य इसनदी में होकर नंगे पावँ निकलजायँ तो उसके पावों में यह गुणहोजाताहै कि जोस्त्री प्रसूतकी पीड़ामेंहो और बालक न निकलताहो और वह मनुष्य उस स्त्री की पीठपर अपने तलवे रखदे तत्काल बालक होजाय कहतेहैं कि यद्यपि यहनदी पथरीलीहै तद्यपि किसीको नहींडुबाती बहुधा जीव इसमें डूबके निकलजातेहैं ॥ एक अद्भुततर यह है कि देसमबिन इब्राहीम आज़ुरबायजानका हाकिम कहता है कि एक बार मैं अपनी सेनासहित इसकेपुल पै पहुंचा उससमय मैंने देखा कि एक स्त्री अपने कन्धे के ऊपर लड़काडालेहुये जाती है दैवयोग हमारी बारबरदारी के ऊंटका धक्का उस स्त्री को लगा सो वह तो उसपुलपर गिरपड़ी और उसका लड़का नदी के भीतर गिरपड़ा और डूबकले के उभरआया और उसनदी के झकोरों और पत्थरों

से कुछ उसलड़के चोट नहीं लगी और यह एक अद्भुत बात देखी कि नदी की लहरों ने उस लड़के को सूखे में डालदिया ॥ जब वह बच्चा किनारे लगा तो वहां एक उक़ाब पक्षी रहताथा उसने झपटके उस बालक अजानको उठाय जंगलकी राहली उस समय मैंने आपने साथियोंसहित उस उक़ाबके पीछे घोड़े दौड़ाये इतनेमें उस उक़ाबने बायुसेउतरके उसलड़केको धरतीपै धरके उसकेकपड़े फाड़नेका अनुमानकिया इतने में हमारे सिपाहियोंने हल्लाकिया तो उक़ाब बच्चाकोछोड़के उड़गया उससमय मैंने उसकीक्षेमपर ईश्वर का धन्यबादकिया और वहबालक उसकी माताको सौंपदिया॥

(ज़ाबनदी) यह नदी प्रसिद्ध है, यह विदित हो कि बड़ी नदी अर्थात् नदको तो दुरयानह कहतेहैं और छोटी नदीको जो सदैव बहा करै अरबीभाषामें जू कहतेहैं ॥ निदान यह दुरयानह अर्थात् नद आरदील और मूसलके बीचमें है ॥ यह नदी आज़ुरबायजान से निकल अराक़के पास दजलामें गिरतीहै अरबदेशीय इसनदीका नाम आबम जनूनबताते हैं और कारण यहहै कि इसका पानीबड़े बेगसे जाताहै ॥ ग्रन्थ कर्त्ताका लेखहै कि गर्मियोंमें मैंने इसकापानी कईबार पानकिया अति सरद और मीठाहै इसके उद्गमस्थान के निकट पछांह में बहुधा बस्तीहै और वहां के निवासी इसके पानी की भलाईके कारण एक फसलके बीचमें दो काटते हैं ॥

(ज़िन्दारोद नदी) यह नदी अस्फ़हानमेंहै और मिठासमें बहुत प्रसिद्ध है इसका उद्गमस्थान का शान नामठौरहै ॥ और सम्पूर्ण अस्फ़हानमें इसका पानी जाता है वहां से निकलके रेतले में दृष्टि नहीं आती फिर करामामें प्रकट होताहै और वहां से नीचे उतरके हिन्दके सागर में गिरती है ॥

(ज़कबीरनदी) यह नदी मरीदके निकट आज़ुरबायजान की धरतीमेंहै जब तक इसकी गहराई न मालूम होजाय तब तक कोई मनुष्य इसके भीतर पैर नहीं रखसक्ता मरीदके पास पहुंच कर इस नदीका चिह्न भी नहीं रहता वहां से चार फ़रसख़ तो छिपी

और फिर प्रकट बहती है और इसकी ख़बर शरीफ़ महम्मबिन-ज़ुलफ़िक़ारउलवी ने दीहै ॥

(सबतनदी) तोहफ़तुलगरायब का ग्रन्थकार कहताहै कियह नदी इन्दलसकी धरतीमें बहती है॥ इसनदी में कोई सवार बिना नावनहीं उतरसक्ता परन्तु हां शनिश्चर के दिन इसका बढ़नाबन्द होजाताहै और सूर्यास्त होतेही यथापूर्वक बेगहोजाता है॥ इस नदीके किनारेपर एकसोनेकी मूर्त्तिहै उसकी छातीपै यह लिखा है कि इसनदीकेपारमतजा नहींतो फिर इसपारलौटनाकठिनहोगा॥

(सरोरोदनदी) यह नदी अज़ुरबायजानमें है अजायबुलमख़लू-क़ातके ग्रन्थकर्त्ता ने लिखाहै कि मुझसे किसी रफ़क़ीहा अर्थात् ज्ञानादिके जानने वालेने कहा कि इस नदी में एकपत्थर पच्चीस गज़लम्बा आधगज़ चौड़ा और दोगज़ का मोटाहै॥ इस पत्थर के भीतर चींटी बहुतहैं जब नदीबढ़तीहै तो इसपत्थर के सम्पूर्ण छेद बराबर होजाते हैं परन्तु मुंह उसका पानी के ऊपरही रहता है इसीकारण उनचींटियोंको कुछकष्ट नहींहोताहै जब यहसमय आता है तो लोग इसपत्थरके तमाशा देखने को आते हैं और आश्चर्य करते हैं और बहुधा लोग उनचींटियोंके खानेकोभी लाते हैं॥

(संजानदी) अदवीका लेखहै कि यह नदी बहुतबड़ी है और इसारमंतूर और कैसूनसे बहतीहै जो मिस्रदेशमें है इसनदीमेंहोके कोई नहींनिकलसक्ता क्योंकि धरती उसकी रेतलीहै इसनदीपैएक अद्भुत ताक़के बनावका पुलहै और उसीके नीचेसे नदी बहती है॥ इस ताक़ के बनानेमें ऐसे पत्थर लगायेगये हैं जिन प्रत्येककी दश गज़की लम्बाई लिखीहै और पांचगज़की ऊंचाईहै इसपुलके समाचार यों लिखे हैं कि वहांके लोगोंकेपास एक तखतीहै उसमें कुछ ऐसी माया कीहै जब कभी वहपुल कहींसेटूटजाताहै तो उसतखती को पानीमें डालदेते हैं तो वहांसे पानीहटजाताहै जब वेलोग उस को बनालेते हैं तो उसतखतीको उठालेते हैं वहां यथापूर्व्वक पानी फिर होजाता है॥

(सैहूननदी) यह नदी मावरायउन्नहर के नामसे प्रसिद्धहै और ख़जंदीरकी धरतीमें जो समरकन्दसे पच्छी तरफ़है बहती है इसका पानी जमके पत्थरकेसदृश कड़ाहोजाताहै यहांतक कि क़ाफ़िलेके क़ाफ़िले अर्थात् यूथकेयूथ इसपैसे उतरजाते हैं॥

(शाहरोद और स्फंदरोद नदी) यह नदियां आज़ुरबायजान के पहाड़ोंसे निकली हैं जिनमेंसे शाहरोदनदी तो बड़े वेगसे जाती है इसके बहनेमें बड़ाशब्दाघात होता है और इसकी आपेक्षा इस्फ़न्दरोदनदीके बहनेमें शब्द नहींहोता नरमधरतीमें साधारणरीति से बहतीहै बहुतसे कहते हैंकि यद्यपि शाहरोदमेंवेग और बहनेमें शब्दहोताहै तद्यपि उसमें किसीप्रकारकी भयनहीं और स्फन्दरोद यद्यपि साधारणचलतीहै तद्यपि भयदायक अर्थात् प्राणघातिनीहै निदान येदोनोंनदियां यहांसेनिकलके गीलानमेंगिरजातीहैं इसका पानीगीलानीलोगपीते हैं और खेतसींचते हैं यहनदी वहांसेनिकलके खिरज़ के समुद्र में गिरती है॥

(शलफ़नदी) यहनदी आफ़्रिक़ामेंहै॥ फ़क़ीहासुलेमानमुलतानी ने अजायबुलमख़लूक़ात के ग्रन्थकारसे वर्णनकी कि बसन्त ऋतुमें इस नदी में एक मछली शबूक़नाम प्रकट होती है इस मछली की लम्बाई एकगज़ और मांसस्वादिष्टहोताहै परन्तु कांटे बहुतहोतेहैं इस मछलीका अहेर केवल दो महीना होताहै॥

(सरात नदी) यह नदी बगदादमें बहतीहै इसको सासान के बादशाहोंने खुदवायाहै इससे बहुधा गावोंके बाग और खेत सींचे जातेहैं बहुधा इसके किनारोंके गांवोंमें खेतीहोतीहै और इसीनदी के पानीसे वे खेत सींचेजातेहैं॥

(सक़लाव नदी) तोहफ़तुरायब में लिखाहै कि यह नदी सक़लावकी धरतीमें बहतीहै यह प्रत्येक अठवारेमें एकबार बहतीहै॥

(तबरिया नदी) तोहफतुलगरायब में लिखा है कि यह नदी तबरियाकी धरतीमें बहतीहै इसका आधा पानी गरम औरआधा ठण्ढाहै जब तक नदीमें है तब तक तो दोनों एक में नहीं मिलते

ौर जहां किसी बरतनमें धरो तहां दोनों प्रकारका पानी ठण्ढा
ाजाताहै॥

(आसी नदी) यह नदी शामदेशमें हमस और हमाद के नि-
टहै और बहीराक़ुदुस इस नदीका उद्गमस्थान है जब यह नदी
ढ़तीहै तो इसका पानी बहरुऊताकियामें गिरताहै॥ इसनदीको
ासी अर्थात् दोषी कहनेका यह कारणहै कि और तो सम्पूर्ण
ादियां उत्तरसे दक्षिणको बहतीहैं और यह उनके विप्रीति दक्षिण
ा उत्तरको बहतीहै इस नदीमें एक प्रकारकी मछली मिलतीहैजो
ोड़ीसे कुछेकही बड़ीहोतीहै॥

(ईसा नदी) यह नदी फ़रातसे निकल बगदाद और मदीना
ं बहतीहै॥ इसमें मधु मक्खियों के बहुत छत्तेहैं॥ इसके किनारे
ार बहुधा गांवहैं जिनके खेत इसीके पानीसे सींचेजातेहैं॥ अगले
दिनोंमें तो इसमें जहां तहां पुलबनेथे परन्तु अब तो एकके सिवाय
ओर किसी का चिन्हभी प्रकट नहीं॥ इसके दोनों किनारोंपै बहुधा
बागहरे खड़ेहैं इसके आसपासके वायुजल ऐसे अच्छेहैं कि मानों
वैकुण्ठकी बानगीहै॥

(क़ूरह नदी) यह नदी फ़ातूल और बुगदादके बीचमें है जब
यह नदी बढ़ती है तो बगदाद में पानी आजाता है सो शहरको
खराब करता है॥ इस नहर के खुदवाने का यह समाचार है कि
जबनौशेरवां बादशाह ने फ़ातूलकी नहर खुदाई और उसमें पानी
बहातोनीचे में रहने वालोंकी बड़ी हानिहुई और उन्होंने यह भी
कहा कि पानी नहीं मिलता निदान उन दुखियों ने नौशेरवां से
सवारीके समय मिलके अपनेदुःख के समाचार कहे कि हम बाद-
शाह के अन्याय से दुःखी हैं॥ यहसुन नौशेरवां घोड़ासे उतर पृथ्वी
पर बैठगया लोगों ने फ़रशबिछादिया कि इसपर बिराजिये परन्तु
उसने निरादरकिया औरकहा कि बड़ेखेदकी बातहै कि दुःखी आगे
खड़ा हो और हम फ़रशपै बैठेंगे बहुधा इसनीति रत बादशाह की
यहरीति थी कि न्यायकरने के समय पृथ्वी पै बिना बिछाये बैठता

था निदान ब्योरेवार समाचार पूंछे तब उनदोनों ने प्रार्थनाकी कि आपने फ़ातूननाम नहरखुदवाई उससे हमलोग खराबहुये हमारा अन्न औरजल दोनों बन्दहुये यहसुन नौशेरवां ने कहा कि अच्छा हम इसनहरको बन्दकरादेंगे जिसमें आपलोगोंका नुक़सान न हो इसपैप्रजाने उत्तरदिया कि हमइतनाकष्ट आपकोनहींदेसक्ते किन्तु यह प्रार्थनाहै कि इसकीठौर दूसरीनहर खुदवाईजाय तब नौशेरवां ने उनकी प्रार्थनानुसार कूरहनाम नहर खुदवाई और इसनहरसे उनको बहुत लाभ हुआ परन्तु वर्त्तमानकाल में बड़ीहानि होतीहै क्योंकि जब पानी बढ़ताहै तो शहर में पहुंचकर बहुधा बस्तीको खराबकिया करताहै ॥

(फ़रातनदी) यह नदी आरमिनियां और क़ालीक़ासे निकलती है और यहनदी पहाड़ों में होके रूमदेश में आई है वहां से मलातिया, समात, क़िलयनजमर और दूसरी ठौर होतीहुई आनह में पहुंची है ॥ यहां पहुंच के उसकी शाखें नदीसमान होजातीहैं इस दरियासे बहुधा खेत और बाग सींचेजातेहैं अन्तको यहनदीदजला में जामिली है कोई२ शाखा तो बासित में मिली हैं और कोई२ शाखा उसके ऊपरही मिलगई हैं और कोई २ शाखा बसरा में आयमिलीहै उसठौर फ़रात और दजला एक एकसे मिल महानद होकर बहीहैं और फारस के समुद्र में गिरतीहैं इसनदीकी बड़ाई में बहुधा कहावत है कि वैकुण्ठ से ये चार नदी निकली हैं नील, फ़रात, सैहून, और जैहून ॥ जनाब अमीरुलमोमिनीन हज़रत मुशकिलकुशा अलहुस्सलाम ने इस फ़रातनदी के विषय में कोफ़ा के निवासियोंसे कहाहै कि हे कोफ़ानिवासियो यह जो फ़रातनदी तुमलोगों में बहती है इसमें दोनालियां वैकुंठसे मिलीहैं सो इस में वहांका पानी आताहै और अब्दुलमलिक बिनउमरकी कहावत है कि फ़रातनदी वैकुंठमेंसे बहीहै नहीं अवश्य इसका पानी खराब और हानिकर्त्ता होता और अबहै कि जो रोगी इसका पानी पीता है सो आरोग्य होताहै ईश्वर ने इसनदी पै फरिश्ते नियत कियेहैं

जो इस नदीमें बुराईकी वस्तुहैं उनको वे लोग दूरकिया करते हैं इमाम जाफ़रसादिक़ ने बर्णन कियाहै कि जो फ़रातका पानीपीके ईश्वरकी प्रशंसा करै तो अवश्य आरोग्यता होगी और इमामजाफ़रअलेहुस्सलाम ने भी कहाहै कि फ़रात के पानी का बड़ाप्रताप है जो लोग इसके गुणको जानते तो कभी इसके किनारेसे दूर न होते और इसमें स्नान करके शरीर निरोग्यकरते॥ सदयरहमतुलअलेह ने लिखाहै कि हज़रत मुशकिलकुशाके ख़िलाफ़त के समय में फ़रात नदी कुछ चढ़ीथी उसमेंसे एक बड़ा अनार निकला सो हज़रतको मिला जब उसको तोड़ा तो उसके दाने बहुत बड़े २ और बहुत थे यहां तक कि मुसल्मानों में बांटेगये॥ बहुधा बिद्वानों के निकट यह बात बहुत पुष्टहै कि वह अनार बैकुण्ठका था॥

(करनदी) यहनदी आरमिनियां और अरानके बीचमें है और एजाजके देशसे निकल मदीना तफ़लीस, हुबरा और शमकूर होके बरवातक पहुंचती है और फिर रसनाम नदीमें जो उससे छोटी है मिलतीहै और वहां से दरिया ख़िरजसे मिल सोरमा नामगांवको जो वरवासे तीन फ़रसख़ परहै जातीहै॥ इसपै बहुतसे एक मतिहैं कि यहनदी क्षेमकीभरीहै जो कोई पशु अथवा मनुष्य इसमें गिरता है वह कुशलपूर्व्वक निकल आता है॥ किसी २ फ़क़ीहा अर्थात् क़ुरानादि ग्रन्थ जाननेहारे ने अजायबुलमख़लूक़ातके ग्रन्थकार से वर्णन क्रिया कि हमने करनाम नदीसे डूबतेहुये मनुष्यको बाहिर निकाला तो उसमें कुछेकप्राण बाक़ीथे जब उसने सूखेकीवायुखाई तो आंखखोलके पूछने लगा कि यह कौन ठौरहै हमने उत्तरदिया कि वक़हवां॥ उसने कहा कि मैं कज़ाफ़ीमें डूबाथा जो यहांसेपांच दिन राहकी दूरपर है अन्तको उसने भूखकेकारण भोजन मांगे तो लोग उसके वास्ते भोजन लाये इतने में एक संजिस दीवारकेनीचे वह बैठाथा वह गिरपरी जिसके नीचे वह दीन दब मरा॥

(गंगानदी) यह नदी हिन्दुस्तान में अति बड़ीहै हिन्दके निवासियोंके निकट यह नदी अति पवित्र है जब हिन्दुओं के बड़े और

था निदान ब्योरेवार समाचार पूंछे तब उनदोनों ने प्रार्थनाकी कि आपने फ़ातूननाम नहरखुदवाई उससे हमलोग खराबहुये हमारा अन्न औरजल दोनों बन्दहुये यहसुन नौशेरवां ने कहा कि अच्छा हम इसनहरको बन्दकरादेंगे जिसमें आपलोगोंका नुक़सान न हो इसपैप्रजाने उत्तरदिया कि हमइतनाकष्ट आपकोनहींदेसक्ते किन्तु यह प्रार्थनाहै कि इसकोठौर दूसरीनहर खुदवाईजाय तब नौशेरवां ने उनकी प्रार्थनानुसार कूरहनाम नहर खुदवाई और इसनहरसे उनको बहुत लाभ हुआ परन्तु वर्त्तमानकाल में बड़ीहानि होतीहै क्योंकि जब पानी बढ़ताहै तो शहर में पहुंचकर बहुधा बस्तीको खराबकिया करताहै ॥

(फ़रातनदी) यह नदी आरमिनियां और कालीक़ासे निकलती है और यहनदी पहाड़ों में होके रूमदेश में आई है वहां से मलातिया, समात, क़िलयनजमर और दूसरी ठौर होतीहुई आनह में पहुंची है ॥ यहां पहुंच के उसकी शाखें नदीसमान होजातीहैं इस दरियासे बहुधा खेत और बाग सींचेजातेहैं अन्तको यहनदीदजला में जामिली है कोई२ शाखा तो बासित में मिली हैं और कोई२ शाखा उसके ऊपरही मिलगई हैं और कोई २ शाखा बसरा में आयमिलीहै उसठौर फरात और दजला एक एकसे मिल महानद होकर बहीहैं और फारस के समुद्र में गिरतीहैं इसनदीकी बड़ाई में बहुधा कहावत है कि वैकुण्ठ से ये चार नदी निकली हैं नील, फरात, सैहून, और जैहून ॥ जनाब अमीरुलमोमिनीन हज़रत मुशकिलकुशाअलैहुस्सलाम ने इस फ़रातनदी के विषय में कोफ़ा के निवासियोंसे कहाहै कि हे कोफ़ानिवासियो यह जो फ़रातनदी तुमलोगों में बहती है इसमें दोनालियां वैकुंठसे मिलीहैं सो इस में वहांका पानी आताहै और अब्दुलमलिक बिनउमरकी कहावत है कि फ़रातनदी वैकुंठमेंसे बहीहै नहीं अवश्य इसका पानी खराब और हानिकर्त्ता होता और अबहै कि जो रोगी इसका पानी पीता है सो आरोग्य होताहै ईश्वर ने इसनदी पै फरिश्ते नियत किये हैं

जो इस नदीमें बुराईकी वस्तुहैं उनको वे लोग दूरकिया करते हैं इमाम जाफ़रसादिक़ ने वर्णन कियाहै कि जो फ़रातका पानीपीके ईश्वरकी प्रशंसा करै तो अवश्य आरोग्यता होगी और इमामजाफ़रअलेहुस्सलाम ने भी कहाहै कि फ़रात के पानी का बड़ाप्रताप है जो लोग इसके गुणको जानते तो कभी इसके किनारेसे दूर न होते और इसमें स्नान करके शरीर निरोग्यकरते॥ सदयरहमतुलअलेह ने लिखाहै कि हज़रत मुशकिलकुशाके ख़िलाफ़त के समय में फ़रात नदी कुछ चढ़ीथी उसमेंसे एक बड़ा अनार निकला सो हज़रतको मिला जब उसको तोड़ा तो उसके दाने बहुत बड़े २ और बहुत थे यहां तक कि मुसल्मानों में बांटेगये॥ बहुधा विद्वानों के निकट यह बात बहुत पुष्टहै कि वह अनार बैकुण्ठका था॥

(करनदी) यहनदी आरमिनियां और अरानके बीचमें है और रजाजके देशसे निकल मदीना तफ़लीस, हुबरा और शमकूर होके बरवातक पहुंचती है और फिर रसनाम नदीमें जो उससे छोटी है मिलतीहै और वहां से दरिया ख़िरजसे मिल सोरमा नामगांवको जो बरवासे तीन फ़रसख़ परहै जातीहै॥ इसपै बहुतसे एक मतिहैं कि यहनदी क्षेमकीभरीहै जो कोई पशू अथवा मनुष्य इसमें गिरता है वह कुशलपूर्व्वक निकल आता है ॥ किसी २ फ़क़ीहा अर्थात् क़ुरानादि ग्रन्थ जाननेहारे ने अजायबुलमख़लूक़ातके ग्रन्थकार से वर्णन किया कि हमने करनाम नदीसे डूबतेहुये मनुष्यको बाहिर निकाला तो उसमें कुछेकप्राण बाक़ीथे जब उसने सूखेकीबायुखाई तो आंखखोलके पूछने लगा कि यह कौन ठौरहै हमने उत्तरदिया कि वक़हवां॥ उसने कहा कि मैं कज़ाफ़ीमें डूबाथा जो यहांसेपांच दिन राहकी दूरपर है अन्तको उसने भूखकेकारण भोजन मांगे तो लोग उसके वास्ते भोजन लाये इतने में एक संजिस दीवारकेनीचे वह बैठाथा वह गिरपरी जिसके नीचे वह दीन दब मरा॥

(गंगानदी) यह नदी हिन्दुस्तान में अति बड़ीहै हिन्दके निवासियोंके निकट यह नदी अति पवित्र है जब हिन्दुओं के बड़े और

घरके मरतेहैं तब उनकी हड्डियां इसमें डालतेहैं उनका यह निश्चय है कि यह कर्म्म करनेसे मृतक बैकुण्ठको जाताहै इस नदीसे और सोमनाथसे दो फ़रसख़ अर्थात् ६ मीलकी दूरीहै और इस नदीके पानी अर्थात् गंगाजल से अपने देवालयको धोतेहैं॥

(मलक नदी) यह नदी बुग़दादमें बहुत पुरानी है प्रथम नदीको दाऊदके बेटा सुलेमानने खुदवायाथा और कोई २ कहते हैं कि सिकन्दरने खुदवायाथा॥ कहते हैं कि यह नदी बर्षके दिनों की संख्यानुसार ३६० तीनसौ साठ गांवों पर है और इसीलिये ऐसी नदी बनवाई कि जो कदाचित् दुर्भिक्ष हो तो एक गांव की आमदनी एक दिनको होजाय और ऐसा ही प्रबन्ध हज़रतयूसुफ़ सद्दीक़ ने मिश्र में किया था॥

(महरान नदी) यह नदी सनदमेंहै इसकी चौड़ाई दजला की बराबर है पूर्बसे दक्षिणका कोण लेतीहुई आती है और पछांह की ओर बहकर फ़ारसके समुद्रमें गिरतीहै इस्तखरीने लिखाहै कियह नदी उस पहाड़से निकली है जहांसे कोई २ शाखाजैहून नदी की निकलीहैं यह नदी मुलतानकी सीमापर प्रकट हुईहै और मंसूरा पहुंच कर दरिया मदीनतुलदबील में गिरती है मदीनतुलदबील नदी अति रमणीक और उसका पानी दजला से उतरके मीठा। कहते हैं कि इस नदी में घड़ियाल बहुतहैं और लम्बाई चौड़ाई दरिया नीलके नाकसे कुछेक कमहोते हैं जब यह नदी बढ़ती है तो इसका पानी चारोंओर फैलजाता है और उसपानी के सूखनेके उपरान्त वहां लोग खेती करते हैं॥

(कमरां नदी) तोहफतुलगरायब के ग्रन्थकर्त्ता ने लिखा है कि कमरांकी धरतीमें एक बहुत बड़ी नदीहै जिसपै पत्थरका पुलबना है और यह पुल पत्थर का एकही टुकड़ा काटाहुआ है एक अद्भुतबात यहहै कि एकसे हज़ारतक जितने आदमी इसपर से उतरनेलगते हैं उन सबको बान्ति होनेलगती है जब तक उतर न जायँ तबतक बान्ति बन्द नहीं होती है॥

(नील नदी) कहते हैं कि इस नदीसे बढ़कर दुनियां में कोई नदी नहीं है यह नदी एक महीना की राह तक तो मुसलमानों के देशमें बहती है और दो महीनाकी राहतक तो वह देशमें बहती है और चार महीनाकी राहतक जंगल में बहती है और वहांसे बला-दकिस्म खारिजखतउस्तवा से प्रकट होती है इसके सिवाय और कोई नदी ऐसी नहींहै जो दक्षिणसे उत्तर तक आतीहो और इसी प्रकार यह भी जानना चाहिये कि कोई नदी और ऐसी भी नहीं जो ठीक गर्म्मियोंमें बढ़े॥ क़ज़वीनीने कहाहै कि इसके अद्भुत पदार्थों मेंसे एक यह है कि इसके किनारे वालों को बर्षाकी कभी ज़रूरत नहींहोती अबर्षणके दिनोंमें भी इस नदीके चारोंओर जल रहता है और गर्मियों में इसके बढ़नेका यह कारण है कि उस ऋतु में ईश्वरकी आज्ञासे उत्तरकी वायु चलाकरती है उसके कारण समुद्र इसकी ओर को अपनी लहरें फेंकता है तिससे यह नदी बढ़ती है और वह खारी पानी इसमें आके मीठा होजाता है जब नील नदी अपने दो किनारों को खेती करनेके समय पानीसे भरचुकती है तो ईश्वर की आज्ञा से दक्षिण की वायु चलती है तो फिर वह वायु इस नदीके पानीको समुद्र में करदेती हैं॥ वहांके निवासियोंने एक यंत्र बनायाहै जिसके द्वारा नीलनदीके पानीकी बाढ़का माप करलेते हैं उसीके अनुसार खेती करतेहैं यह यंत्र एक लम्ब है जो नील के किनारे एकहौजमें पड़ारहताहै और उसमें एक पोला नल लगाहै जिसमेंसे नदीकापानी उसहौजमें आया करताहै और उस यंत्र में अधिक न्यून जाननेके हेतु रेखा बनी हैं जिस रेखातक पानीपहुंचा उसीके हिसाबसे नदीका घटाव बढ़ाव जानलेतेहैं जो चौदहज़िरा तक पानी पहुंचा तो जानलेतेहैं कि अबकीसालपानी मध्यमहै सो खेती भी मध्यमही होगी और जो सोलह ज़िरातक पानी पहुंचा तो खेतीकी अधिकता मानते हैं और जो अट्ठारह ज़िरापर पानी पहुंचा तो मालूम हुआ कि बहुतही अच्छा सम्बत होगा बिदित हो कि ज़िरा एक प्रकारकी माप २४ अंगुलकी होतीहै॥ क़ज़वीनी

कहता है कि प्रथम इस यंत्रको हज़रत यूसुफ़ने बनवायाथा अब-दुलरहमन अबदुल्ला के बेटा अबदुलहुकम के पोताने लिखा है कि जब मुसलमानों ने मिश्रको जीता तब मिश्रदेश निवासी अमरबिन-उलनासके सन्मुख जाय प्रार्थना करने लगे कि हमारे देश में यह रीतिहै कि जब क़वती के महीनोंमें से नावहका महीना आताहै तब उसकी बारहवीं रात्रीको किसी की कुमारी कन्याको उसके रक्षक से मांगलेते हैं और उसको बस्त्राभूषण से नखशिख अलंकृत कर नीलनदीमें बोरदेतेहैं तो उससमय नीलनदी लहरें लेतीहै और जो यह रीति न कीजाय तो नीलनदी बहती नहीं इसपै आसके बेटा उमरने उत्तर दिया कि मुसलमानोंकी अमलदारीमें यह बातनहीं होसक्ती बरन मुसलमानोंका यह धर्म्म है कि पुरानी चालोंकोमिटा दें यह आज्ञासुन मिश्र निवासी चुपके होरहे यहांतक कि उसके उपरान्त माहनोवह और माहअबीब और मनेरीतीनमहीनाबी... ... और नीलनदीमें बाढ़ न आई अन्तको प्रजाने देशछोड़नेका अनुमान किया यहबातउमरने सुनी तब उमरने उमरबिनुलख़ताब के ना" एक बिनयपत्र लिखा वहां से उत्तर आया कि जो तुमने लिखा कि मुसलमानोंको पुरानीचालोंसे कुछ प्रयोजननहीं सो यहीठीकहै अब हम एकरुक़्क़ानीलनदीकेनाम लिखतेहैं सो तुम नीलनदीमें डा... दो ईश्वरनेचाहा तो नीलनदीबढ़ैगी ॥ उसमें यह लिखाथा कि ईश्वरके धन्यबादउपरान्त नीलनदीको बिदितहो कि जो तू अपनी इच्छासे बहतीहै तो अबतू कभी न बहना और जो तू ईश्वरकी ... बहती है तो ईश्वर से प्रार्थना कर जिसमें तुझे बहावें निदान उमरबिनुलनास ने पहुंचतेही उस पत्रीको नीलनदी में छोड़दिया और वही दिन मिश्र निवासियों ने अपने चलने का दिन कियाथा फिर उसीदिन ईश्वरकी आज्ञासे नीलनदीको बढ़ते देखा और १६ सोलह ज़िरातक बाढ़ पहुंची इस नदीमें सात खाड़ीहैं खाड़ीसकन्दरिया १ खाड़ीदिमियात २ खाड़ीमनफ़ ३ खाड़ीमिही ४ खाड़ी अलफ़यून ५ खाड़ी शरीदूस ६ ये खाड़ी सदैव बहा करती

हैं इन्हीं खाड़ियोंसे सम्पूर्ण मिश्रदेश जलसे सम्पन्न रहताहै जब नीलनदी की बाढ़ पूर्वोक्त यंत्रतक पहुंचती है तो इन खाड़ियों को तोड़देतीहै और पानी बहनेलगताहै यहां तक कि सम्पूर्ण देशमें जलही जल होजाताहै जब वह पानी घटने लगताहै तो बीजबोने का आरम्भ होताहै और बर्ष २ के पशुओं के द्वारा खेत जोतने लगतेहैं ठीक निकलनेकी ठौर नीलकी ज़ंजमेंहै वहांसे निकलहबशा और नोवह होतीहुई दो पहाड़ोंके बीचमें से निकली है इन पहाड़ों के बीचमें बहुधा गांवबसेहैं और गर्मियोंकी ऋतु मेंइस नदीके बढ़ने का यह हेतु लिखाहै कि इसी ऋतु में ज़ंगवार देशमें बर्षा अधिक होतीहै और बहुधा वहांके शहरोंमें बहियाका जोर होताहै निदान अनेक राहोंसे जब वह पानी नीलनदीमें गिरताहै जो उस समय की बाढ़ सोलह ज़िरातक पहुंचै तो उस समय लोग सब नहरों के द्वार खोलदेतेहैं तो उनमें पानी बहने लगताहै और जब पानी देश में यथोचित पहुंच जाताहै तो फिर वह पानी सिमिट के नीलनदी में चलाजाताहै उस समय मिश्रकी धरती पानीसे अत्यन्त सम्पन्न दृष्टि आतीहै॥ इस नदीकी अद्भुत सृष्टिमें से रादानाम एक प्रकार की मछली होतीहै जिसका बर्णन हम ऊपर करआयेहैं जिसकेछूनेसे मनुष्यके अंगमें कँपकँपी आतीहै सो इसदेशमें एक प्रकार का साग होताहै जो उसकोहाथसे मलकर रादाकोछुये तो फिर कँपकँपी न आवे और नीलके अद्भुत सृष्टिमे एकजीव नहनंग अर्थात् नाक है जब कोई मनुष्य हाथमुहँधोनेकेलिये नीलकेकिनारेजाताहै तो यहचांडालजीव पानीके नीचे२ निकटआजाताहै वहां उसदीनको लीलजाताहै॥ इस नदीको तिरस्कार करनेके विषय में एककविने लिखाहै कि नाक के डरके मारे नीलनदीके पानीको कभी आंखसे न देखै इसका प्रयोजन यहहै कि उसके किनारेपै जाके न देखै किन्तु घरमें जो बर्तनों में है उसे देखै॥ इस नदी में एक ठौर है जहां मछलियां आपही आप इकट्ठी होती हैं उसदिन जो वहांजाय जितनीजी चाहै अपने हाथसे पकड़लावे परन्तु यहदशा वर्षभर में एक नियत दिनको होती है

(हीरमन्दनदी) यहनदी सजस्तानदेशमें है कहते हैं कि यहएक बड़ा आश्चर्य्य है कि इसनदीमें एकहज़ारनदी और मिली हैं और एकहज़ार नहरें इसमें से काटीगई हैं परन्तु न तो उन नदियों के मिलनेसे कुछबढ़ीही और न उन नहरोंके बाहर निकलजानेसे कमतीही हुई दोनों दशामें एकरस रहतीहै॥

व्याख्यान कूआं और सोतों के विषयमें॥

विद्वानों के निकट पृथ्वीमें नन्हे२ छेद बहुत हैं उनमें केवल वायु और जल होते हैं जब वायुमें ठण्ढअधिकहुई तो वह पानीहोजाती है और बहुधा ऐसा होता है कि जो किसी दूसरीओरसे प्रथम के इकट्ठेहुये पानीमें अधिकताहुई और इसतरफ़से उसे सहायता मिली और अगलेछेदोंमें समा न सकी उसदशा में जो पृथ्वी नर्म्महुई तब तो पृथ्वीआपहीआप फटजातीहै और पानी बाहिरकीओर निकल परताहै और जो वहां पृथ्वी कड़ीभई तो वहां कूआंकेसमानखोदने की आवश्यकता होतीहै॥ अबूउलरेहांख्वारज़िमीने अपनीकिताब आसारबाक़ियामें लिखाहै कि यमनमें ऐसीठौरहै जहां लोग कूआं खोदतेहैं बीचमें एक ऐसापत्थर अवरोधक पातेहैं कि उसके नीचेसे पानीनिकलसक्ताहै तो वे लोग उसपत्थरमें लोहेकेयंत्रोंसे छेद करते हैं और लोहेकी चोटके शब्दसे पहचानते हैं कि इस पत्थरके नीचे पानीहै या नहीं तब पहिले तो उसमें परीक्षा लेनेकेलिये छोटासा छेदकरतेहैं जो वह परीक्षाठीकहुई तबतो खोदके बनालिया और जो देखाकि इसमें पानीनहीं केवल पोलाहीहै तो चूनाकी गचसे बंदकर दिया क्योंकि ऐसेठौरोंपर बहुधा सोताहोकर बड़ी बहियाहोजाती है और जो उसमें बहने की शक्ति नहीं है तो उसकी यत्न करते हैं अर्थात् उसकोखोद के ठीककरलेते हैं पृथ्वी के नीचेके सोता और पहाड़ीगड़होंमें जिनमें लौन फिटकरी गूगुर अथवा बारूत होतीहै उनमें यहभेद है कि जाड़े के दिनों में पृथ्वी के नीचे पानी गरम होजाता है और गर्मी में शरद सो उसका कारण यह है कि गर्मी और शरदी दोनों एक दूसरे के बिपरीति हैं एकही समय में एक

ठौर इकट्ठी नहींहोती इसलिये जाड़ों में जो पृथ्वीके ऊपर शरदी होती है तो गर्मी पृथ्वीके नीचे जारहतीहै तो जहांकहीं गन्धक की खानहोतीहै उसकी गर्मीसे पृथ्वीकी तरी सूखजाती है और पानी भी उसीसे गर्महुआ करताहै जो कदाचित् ऐसानहीं है और पानी को शरद वायुलगी तो अधिक शरदी के कारण पानी गाढ़ाहोजाता है तो वही पारा अथवा क़ैर अथवा नुफ्त होजाताहै और ये उसके बिभाग वायु और माटीके गुण विभाग के कारण होजाते हैं इसलिये अबकुछ अद्भुत कुआं और सोतोंकावर्णन वर्णमाला के अक्षरों के क्रमानुसार कियाजाता है ॥

(सोताआज़ुरवायजान) तोहफ़तुलगरायबमें लिखाहै कि आज़ुरवायजानमें एकऐसासोताहै जिसकापानी निकलकर पत्थरसमान कड़ाहोजाताहै लोग मिट्टीकेसमान उसकेबर्त्तन बनाकेपानीभरते हैं तो इस रीति से पत्थर के बर्त्तन बहुत जल्द तैयारहोजाते हैं ॥

(सोताउर्दीबिहशत) उर्दीबिहशत नाम एक गावँ क़जवीन से तीनफ़रसख़ की दूरीपरहै वहां एकसोताहै जिसकापानी जो कोई पीवे तो बड़ा कराल जुलाबहोजाय बसन्तऋतु में बहुधा क़जवीन आदि शहरों के लोग जुलाब लेने के हेतु यहां इकट्ठे होते हैं और एकगिलास पानीपीके पेटका मल साफ़करते हैं उसमें एक अपूर्व बात यहहै कि जो इसपानी को क़जवीनादि शहरों में लेजायँ तो उसमें वह गुण नहींरहताहै ॥ अजायबुलमख़लूक़ात का ग्रन्थकार लिखताहै कि मैंने बहुधा क़जवीन के निवासियों से सुना है कि क़जवीन और इस सोता के बीच में एक नदी है जब आदमी उस सोता के पानी को लेकर उस नदी के पुलपर से जाते हैं तभी उसकागुण जातारहताहै ॥

(सोतारावन्द) यहसोता सैस्तानकी धरतीमेंहै इसमें अपूर्व बात यहहै कि इसमें नरकुल पैदाहोता है सो जितना नरकुल पानी के भीतर रहता है उतना तो पत्थर का होताहै और जितना पानी के बाहिर रहताहै वह नरकुल रहताहै ॥

(सोतारुकन्दरिया) यह सोता प्रसिद्धहै इसमें एकप्रकारकीसीप होतीहै जिसका मांस पकाके खातेहैं और उससीपका सोरवा पीने से कुष्ठ अच्छा होजाताहै ॥

(सोताईलावस्तां) तोहफ़तुलगरायबकाग्रन्थकार लिखता है कि इस्फरआईन और जरजानकेबीचमें एकगावँ ईलावस्तां है वहां एक खोहहै वहींसे यहसोता निकला है और इतना बड़ा सोता है कि इसमें पनचक्की चलतीहै परन्तु ऐसाहोताहै कि दूसरे तीसरे चौथे अथवा पांचवेंमहीने इसका बहना बन्दहोजाता है उससमय वहां के लोग गाते बजाते वहां जातेहैं और उस सोता के आगे बहुतसा नाचरंग करतेहैं तो नये सिरे से वह फिर बहता है ॥

(सोतावादखानी) तोलफ़तुलगरायब का ग्रंथकार लिखता है कि यहसोता दामग़ान की सीमापर है और वहां कहन नाम एक गावँहै वहां एकसोताहै उसका नाम वादखानी है सो जब वहां के लोग चाहतेहैं कि वायु बेगसे चले तब दश कपड़ा रजस्क के बूड़े भये उसमें छोड़देतेहैं तो वायुबेगसे चलने लगती है और जो उस पानीको पीवें तो पेट में दर्दहोने लगता है और एकगुण और है कि जो सोते से बाहिर पानी लेजाना चाहैं तो थोड़ीदूर चलकर पानी पत्थर समान जमजाता है ॥

(सोतावामयान) तोहफ़तुलगरायब के ग्रंथकार का लेख है कि वामयानदेश में एकसोता है उसकेमुहँ से पानी बहुत निकलता है उससे गन्धक की बासआतीहै और उसके मुहँ के पास बादल की सी गरजन सुनाई देतीहै इसके पानी में स्नानकरना देहीकी चरक को दूरकरताहै और जो इसकापानी किसीबर्त्तन में भर मुहँबांधके धररक्खें तो एकरात्रि दिनमें खट्टा और करुआ मदिरा के समान होजाता है और उससमय जो आग उसको दिखावें तो तत्काल मदिरा के सदृश भकसे उड़जाता है ॥

(सोतावक़र) यह सोता अका के पासहै मुसल्मान यहूदी और ईसाईलोग इसके दर्शनकरतेहैं और कहतेहैं कि हज़रतआदने जिस

बैलसे खेती कीथी वह बैल इसी सोता से निकला था और इस सोतापर एक मुशहिद है जिसका सम्बन्ध हज़रतअमीरुलमौमिनीन से करते हैं॥

(सोवातिराक़) तोहफ़तुलग़रायब के ग्रन्थकार ने लिखा है कि यहसोता मासयान में है जब कोई जीव इसकेपानीसे अपनीप्यास बुझाना चाहताहै तब वह पानी नीचे होजाताहै जब वह जीव पानी के लिये नीचे उतरताहै तो एकसंग भरआता है थोड़ीदेर उपरान्त उसजीव की हड्डियां पानी के ऊपर तैरतीहुई दृष्टि आती हैं मांस का कहीं चिह्न नहीं रहजाताहै॥

(सोताजाजरम) यह सोता जाजिरम और इसफ़रास के बीचमें है बहुतसे खुरासानी कुरानादि जाननेवालों के निकट इसमें खाज वालों को स्नानकरना उपयोगी है॥

(सोताजाज) तोहफ़तुलगरायब का ग्रन्थकर्त्ता कहताहै कि जब आसमान में मेघ नहो तो उस समय उस सोता में भी पानी की एकबूंद नहींहोती और आसमान पै बादल होता है तो सोता भी पानीसे बराबर भराहोताहै बहुधा लोगोंने इस परीक्षा को अपनी आंखों से देखा है॥

(सोताजबलुह्नीलम) तोहफ़तुलगरायब के ग्रन्थकार का लेख है कि शीराजदेश में किसी पहाड़ के पास यह सोता है इसका पानी गर्मी की ऋतुमें बरफ़ के समान ठण्डा रहताहै और जाड़े में इसका पानी खौलतेहुये पानी के समान गरम रहता है॥

(सोताजबलसमरक़न्द) तोहफ़तुलगरायबका ग्रन्थकारलिखता है कि समरक़न्द की धरतीमें एक पहाड़ है और उसमें एककन्दरा है जिसमें सदैव पानी भरारहताहै वह पानी गर्मीमें तो ऐसाशरद होताहै जैसे बरफ़ और जाड़ों में ऐसागर्म कि जो कोई उसमेंहाथ डालदेय तो जलजाय॥

(सोताजबलमुलतिया) अजायबुलमख़लूक़ात के ग्रन्थकार से बहुत से क़ालीना लोगों ने कहा कि मलतिया के निकट एकपहाड़

(सोतास्कन्दरिया) यह सोता प्रसिद्ध है इसमें एकप्रकारकीसीप होतीहै जिसका मांस पकाके खातेहैं और उससीपका सोरवा पीने से कुष्ठ अच्छा होजाताहै ॥

(सोताईलावस्तां) तोहफ़तुलगरायबकाग्रन्थकार लिखता है कि इस्फरआईन और जरजानकेबीचमें एकगावँ ईलावस्तां है वहांएक खोहहै वहींसे यहसोता निकला है और इतना बड़ा सोता है कि इसमें पनचक्की चलतीहै परन्तु ऐसाहोताहै कि दूसरे तीसरे चौथे अथवा पांचवेंमहीने इसका बहना बन्दहोजाता है उससमय वहां के लोग गाते बजाते वहां जातेहैं और उस सोता के आगे बहुतसा नाचरंग करतेहैं तो नये सिरे से वह फिर बहता है ॥

(सोतावादखानी) तोहफ़तुलगरायब का ग्रंथकार लिखता है कि यहसोता दामग़ान की सीमापर है और वहां कहन नाम एक गावँहै वहां एकसोताहै उसका नाम वादखानी है सो जब वहां के लोग चाहतेहैं कि वायु बेगसे चले तब दश कपड़ा रजस्क के बूड़े भये उसमें छोड़देतेहैं तो वायुबेगसे चलने लगती है और जो उस पानीको पीवें तो पेट में दर्दहोने लगता है और एकगुण और है कि जो सोते से बाहिर पानी लेजाना चाहैं तो थोड़ीदूर चलकर पानी पत्थर समान जमजाता है ॥

(सोतावामयान) तोहफ़तुलगरायब के ग्रंथकार का लेख है कि वामयानदेश में एकसोता है उसकेमुहँ से पानी बहुत निकलता है उससे गन्धक की बासआतीहै और उसके मुहँ के पास बादल की सी गरजन सुनाई देतीहै इसके पानी में स्नानकरना देहीकी चरक को दूरकरताहै और जो इसकापानी किसीबर्त्तन में भर मुहँबांधके धररक्खैं तो एकरात्रि दिनमें खट्टा और करुआ मदिरा के समान होजाता है और उससमय जो आग उसको दिखावें तो तत्काल मदिरा के सदृश भकसे उड़जाता है ॥

(सोतावक़र) यह सोता अक्का के पासहै मुसल्मान यहूदी और ईसाईलोग इसके दर्शनकरतेहैं और कहतेहैं कि हज़रत आदने जिस

बैलसे खेती कीथी वह बैल इसी सोता से निकला था और इस सोतापर एक मुशहिद है जिसका सम्बन्ध हज़रतअमीरुलमोमि-मीन से करते हैं ॥

(सोतातिराक़) तोहफ़तुलगरायब के ग्रन्थकार ने लिखा है कि यहसोता मालथान में है जब कोई जीव इसकेपानीसे अपनीप्यास बुझाना चाहताहै तब वह पानी नीचे होजाताहै जब वह जीव पानी के लिये नीचे उतरताहै तो एकसंग भरआता है थोड़ीदेर उपरान्त उसजीव की हड्डियां पानी के ऊपर तैरतीहुई दृष्टि आती हैं मांस का कहीं चिह्न नहीं रहजाताहै ॥

(सोताजाजरम) यह सोता ज़ाज़िरम और इसफ़रास के बीचमें है बहुतसे खुरासानी कुरानादि जाननेवालों के निकट इसमें खाज वालों को स्नानकरना उपयोगी है ॥

(सोताजाज) तोहफ़तुलगरायब का ग्रन्थकर्त्ता कहताहै कि जब आसमान में मेघ नहो तो उस समय उस सोता में भी पानी की एकबूंद नहींहोती और आसमान पै बादल होता है तो सोता भी पानीसे बराबर भराहोताहै बहुधा लोगोंने इस परीक्षा को अपनी आंखों से देखा है ॥

(सोताजबलुहीलम) तोहफ़तुलगरायब के ग्रन्थकार का लेख है कि शीराजदेश में किसी पहाड़ के पास यह सोता है इसका पानी गर्मी की ऋतुमें बरफ़ के समान ठण्डा रहताहै और जाड़े में इसका पानी खौलतेहुये पानी के समान गरम रहता है ॥

(सोताजबलसमरक़न्द) तोहफ़तुलगरायबका ग्रन्थकारलिखता है कि समरक़न्द की धरतीमें एक पहाड़ है और उसमें एककन्दरा है जिसमें सदैव पानी भरारहताहै वह पानी गर्मीमें तो ऐसाशरद होताहै जैसे बरफ़ और जाड़ों में ऐसागर्म कि जो कोई उसमेंहाथ डालदेय तो जलजाय ॥

(सोताजबलमुलतिया) अजायबुलमख़्लूक़ात के ग्रन्थकार से बहुत से क़ालीना लोगों ने कहा कि मलतिया के निकट एकपहाड़

है जहांसे सोता निकला है उसका पानी अतिही मीठा और स्वादिष्ट है और उसका रंग श्वेत है पीनेवाले को कुछ हानि नहीं करता है परन्तु जो उसको और ठौर लेजाओ तो जमके पत्थर होजाताहै ॥

(सोतादादाव) इससोता में एकघास ऐसीहोती है कि जो कोई वहां पानीपीने को जाय उससे लिपट जाती है और उसको लौटने नहींदेती और जितनाहीं अधिक छुड़ानाचाहै उतनाहीं अधिक और लिपटती जाती है परन्तु हां जो वह विकल न होय थोड़ीदेर चुप साधे तो आपही आप छूटजाती है ॥

(दाराक़नामसोते) अजायबुलमख़्लूक़ात के ग्रन्थकार से शेख़- उमरइसलमी ने वर्णनकिया कि ये कई एक सोते एकही पहाड़ से निकले हैं कभी २ ऐसाहोताहै कि उसपहाड़ में अग्नि प्रज्वलित होतीहै और लूकों के रंग लाल पीले हरे और सफ़ेदहोते हैं और वह पानी दोहौजों में इकट्ठाहोता है उनमें से एक में तो पुरुषों के वास्ते और दूसरे में स्त्रियों के लिये इनसोतों में कफ़वाला मनुष्य जो स्नानकरै तो अच्छा है परन्तु जो कोई क्रम २ से धसे तब तो उसको अच्छाहोताहै और जो एकसंगकूदपड़े तो वह जलजाताहै॥

(सोतारासुलनाऊर) इसके निकट एकगावँ ज़रा नाम मूसल के पूरबओर है वहीं एकसोता फुहारे के सदृश है उसका पानी अत्यु- त्तम उसमें कोकाबेली फूलती है इसगावँ के अन्नादि बहुधा उत्तर की ओर बिकने को आते हैं ॥

(सोताज़राबन्द) यह सोता आरमिनियांमें वहीराके निकट है यह सोता अति लाभदायकहै जो पशु अथवा घायल मनुष्यइसमेंहोके निकले तो तत्काल अच्छा होजाताहै किसीप्रकारके घाव का दुःख नहींरहता बहुधालोगइसप्रतीतिकिये इस सोतामें दूरदूरसे आतेहैं॥

(सोताज़ार) यह सोता वहरमिनियां के निकट है वहरमिनियां और वैतलमुक़द्दस के बीच में तीन दिन की राह की दूरी है ज़ार हज़रतलूत की बेटी का नाम था उसकी मृत्यु यहांहींहुई इसलिये उसीके नामसे यहसोता प्रसिद्धहुआ ॥

(सोतासलवां) यहसोता बैतुलमुक़द्दस में है बहुधा लोग इसके किनारे उतरते हैं इब्नुलवशार ने लिखा है कि सलवां नाम एक मुहल्ला बैतुलमुक़द्दस में है यहां बाग़ बहुत हैं जो हज़रत उसमानने ईश्वर उसपे प्रसन्न हो कृष्णार्पण किये थे जो इस सोता का पानी किसी दुःखी अथवा शोचवश को पियावें तो तत्काल आनन्द और प्रसन्नचित्त होजाय ॥

(सोतासमीरम) शीराज़ और अस्फहान के बीचमें एक बड़ागावँ है जहां सोतोंका अधिकत्व प्रसिद्ध है इसमें अपूर्व बात यह है कि जहां खेतों में टीड़ी गिरती है वहां इस सोता का पानी इस रीति से लाते हैं कि वर्त्तन को न तो पृथ्वीपर रक्खें और न पीठिफेर के देखें और उस वर्त्तनको टीड़ियोंके पास ऊंचेपर टांगदें तो तत्काल एक प्रकार के जीव सौदाई नाम हज़ारों आय के सब टीड़ियों को खाजाते हैं और यहबात कुछ झूंठनहींहै बरन अजायबुलमख़लूक़ात का ग्रन्थकार कहताहै कि मैंने अपने हाथसे पानी लेकर क़ज़वीन देशमें टीड़ियोंको दूरकिया है ॥

(सोतास्याहसंग) तोहफ़तुलगरायब का लेखहै कि जरजान में एक संगस्याह नामक एक गावँ है और वहां एक टीला के ऊपर सोताहै जिसका पानी मनुष्यों के ख़र्च में आता है और जिस राह से उससोता को जातेहैं उसराह में कीड़े बहुतहैं सो जो कदाचित् किसीकीड़ापर पावँपरगया तो उस सोताका पानी कड़ुआहोजाता है एक अद्भुत बात वहांकी यहसुननेमें आईहै कि उसके आसपास की स्त्रियां जब उस सोताकापानी लाना चाहतीहैं तो तीस अथवा चालीस स्त्री इकट्ठीहोके एक मनुष्य को आगे भेजतीहैं जिसमें वह मनुष्य झाड़ूसे बहार के कीड़ा राहके साफ़करदे और वे स्त्री पंक्ति बांधके आगेपीछे चलतीहैं और पानीभरके फिर उसीरीतिसे लौटतीहैं और जो धोखेसे भी पावँ किसी स्त्री का किसी कीड़ापर पर जाय तो सम्पूर्ण स्त्रियों का पानी कड़ुआ होजाय फिर वह पानी फेंक के दोबारा लाना पड़ताहै ॥

(सोताशीरगीरां) शीरगीरां नाम एकगावँका है दो राहे के पास मरागां के आगे दो सोते हैं जिनमें से पानी निकल के उबलता है और इनदोनों सोतों के बीचमें एकगजका बीचहै॥ इनदोनों सोतों में से एकका पानी तो अतिशरद और दूसरे का गर्म्म है और यह समाचार हुस्नमरागी के मुखसे सुना॥

(सोतासक़लवा) सक़लवा नाम पश्चिम के समुद्र में अतिबड़ा एकटापू है यहां गन्धकी सोते बहुत हैं जिनसे अग्नि भड़काकरती है और रातको और भी अधिक होती है यहांतक कि दूरदूर तक उसके उजाले राहचलेजातेहैं जो कोई उस आग को वहांसेलेजाय तो तत्काल बुझिजाय॥

(सोतासबारज) यह सोता हज्जाज़ और यमन के बीच एक बिकट जंगल में है जहां किसीको पानीकी इच्छा नहींहै इब्राहीम बिनइसहाक़की कहावतहै कि एकबार यमनदेशीय हज़रतरसाल तमाव के दर्शनों को चले तो दैवयोग से राह भूलगये और तीन दिनतक बिना अन्नजल फिराकिये अन्तको मारेप्यास के प्राणोंकी आशाटूटी तो साथियों में से एकको दोबैतें (चौपाई) उमरायअल-क़तीस की बनाईभई सबारज सोता के छिपेरहने के विषयमें याद थीं सो पढ़नेलगा इतने में अकस्मात एक शत्रु सवार दृष्टि आया उसने इनलोगों से पूछा कि ये शेरें किसकी बनाईभई हैं उन्होंने उत्तर दिया कि उमरायअलक़तीस की उसने यह सुन के साक्षी दी और सोताका पताबताया निदान उसपते से एक सोता रमणीक पाया वहां सबोंने जलपानकिया और बहुतसा अपनेसाथ लैलिया वहांसे हज़रत के पास पहुंच सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णनकर कहने लगे कि उमराय अलक़तीसकी दोशैरोंने हमसबों के प्राणबचाये इस पै हज़रतने कहा कि उमरायअलक़तीस संसारमें तो बहुतप्रसिद्धहुआ तो क्या मरने पै उसका नामहीं मिटिजायगा अन्तसमय जब वह ईश्वर के सन्मुख आवेगा तो अग्निसे जलताहुआ एकतख़्ता शैरों का उसके साथहोगा और उनशैरों का अर्थयहहै कि यद्यपि पानी

इस सोता में अतिस्वच्छ और स्वादिष्ट है परन्तु राह उसपै जाने की ऐसी भ्रमित और कराटक है कि वहां पहुंचना अति कठिन है॥

(सोतातवरिया) तवरिया की धरती में एकगावँ है वहां सात सोते लगातार हैं ये सोते सातवर्ष तक तो बहते हैं और सातवर्ष तक सूखेरहते हैं सदा यहीरीति रहती है॥

(सोताअब्दुल्लाबाद) हमदां और कजवीन के बीच एकअब्दुल्लाबाद गावँ है वहां एकगड़हा है वहींसोताहै जिसकेपानी निकलने में बड़ी गर्म्मीहोतीहै एक मरद के क़दकी बराबर ऊंचा उठताहै जो पानी के ऊपर मुर्गा का अण्डारखदेयँ तो वहअण्डा भी न टूटे और पानी की गर्म्मीसे पकजाता है और उस सोता के पास एक हौज़ है उसमें उसकापानी आके इकट्ठा होता है वहां सकल पंथ के मनुष्य जातेहैं और उससोता में स्नानकरके आरोग्य होते हैं॥

(सोताउकाव) यह पहाड़ हिन्दुस्तान में है तोहफ़तुलगरायब का ग्रन्थकार लिखता है कि जब उकाव वृद्धहोजाता है तब उसके बच्चे उसको उठाकर उस सोतापर बैठारदेते हैं और उसको स्नान कराके धूपमें बैठारदेतेहैं इसकर्म्मसे उस वृद्ध उकाव के पुराने पंख गिरजातेहैं और नयेसिरे से पंख निकलते हैं और नयेसिरे से युवा अवस्था होतीहै पर और बाल नये निकलते हैं॥

(सोताग़रनातिया) ग़रनातिया एक शहर है इन्दलस देशमेंहै अबूहामिद इन्दलसी ने लिखाहै कि ग़रनातिया में एक कनेसा है जहां जैतून के वृक्षलगे हैं सो इसके दर्शनोंको इन्दलसके निवासी आया करते हैं और वर्षमें जो दिन इसके दर्शनोंके लिये नियत हैं उसदिन उससोतामें पानी बहुत होजाताहै और जैतून में फूलफल प्रकट होते हैं और उसीदिन जैतून बढ़कर काला होजाताहै उस दिन जो कोई इस सोता से पानी अथवा जैतून लेजाय तो सब प्रकार के रोगसे आरोग्य होजाय ग्रन्थकार से फ़क़ीहा अब्दुलसईद बिन अब्दुल रहमन इन्दलसीने वर्णन किया कि वह सोता शकूरा मेंहै और अहमद बिनउमरूल अज़रीने कहा कि यह सोता लोर-

कामेंहै और अबूहामिद कहता है कि यह सोताग़रनावामें है परन्तु यह सम्पूर्ण ठौर इन्दलुसहीमें है ॥

(सोताग़रना) ग़रनाके पास एक ऐसा सोताहै कि जो उसमें कोई उच्छिष्टवस्तु छोड़ैं तो तत्काल और का औरही रंगदृष्टि आने लगै मेघ बरफ़ पत्थर और बायुके झकोरा आनेलगैं और जबतक वह उच्छिष्ट उसमें से दूर न कीजावे तबतक यथापूर्वक न होगा इसी बातमें बातहै कि बादशाह सुबुक्तगीं ने ग़रनाको जीतने का अनुमान किया तो जब यह बादशाहग़रनाको चलनेलगता तो तभी यहां वालेलोग उस सोतामें कोई भ्रष्ट बस्तु छोड़देयँ जिसके कारण बायु मेघ गर्जन, बिजली आदि उत्पात होने लगैं और बादशाही सेना इसभयको सन्मुख न होनेके कारण फिर लौटजाता अन्तको बादशाह पै इसका कारण बिदित होगया तो बादशाह ने ऊपरही ऊपर कुछ सेना के आदमी भेजि उस सोता की रक्षाकरी तिस उपरांत आप दलसाज ग़रना पै चढ़ा इस रीतिसे उसने इसदेशको आधीन किया ॥

(सोताग़राव) यह सोता रूमदेशमेंहै बहुतेरे कहते हैं कि इस सोता में एक बार स्नान करनेसे बर्ष पर्य्यन्त शरीर में रोग नहीं होता सम्पूर्ण बर्ष आनन्द पूर्बक बीतता है ॥

(सोताफ़रावर) खुरासानमें एक गांव फ़रावर नामहै बहुतों का बाक्य है कि इस सोतामें स्नान करने से सब प्रकार के रोग जाते रहते हैं ॥

(सोताक़ोतूर) यह क़िला आज़ुरबायजान में है शरीफ़महम्मद बिनज़ुलफ़िक़ारउलवीने अजायबुलमख़लूक़ातके ग्रन्थकर्त्ता से वर्णन किया कि इसक़िलेके निकट कुछ सोते हैं जिनका पानी अतिहीगर्म है जो लोग किसी असाध्यरोग में फसेहों उनको इनसोतोंमें स्नान कराना उपयोगी है ॥

(सोताकंका) यह सोता आज़ुरबायजान में है महम्मदबिनज़ुलफ़िक़ार ने अजायबुलमख़लूक़ात के ग्रन्थकार से कहा कि इस बड़े

सोतामें नानाप्रकारके गुणहैं अर्थात् गर्मीमें तो सरद और सरदी में गर्मपानी रहता है॥

(सोतामुशक्क़) मुशक्क़ नाम हिज्जाज़ में एक जंगलहै इब्न इसहाक़ की वाक्यहै कि मुशक्क़ और हिज्जाज़में एक छोटासोता है जिससे इतनापानी निकलताहै कि जिसमें एक अथवा दो बड़ी हद्द तीन सवार पानी पीसक्ते हैं हज़रतमहम्मदमुस्तफ़ासल्लल्लिह अलैहोसल्लम ने तबूककी लड़ाई में कहा कि जबतक हम सबलोग न पहुंचैं तबतक कोई इस सोता का पानी न पीवे परन्तु कुछ दुष्ट लोगोंने आज्ञाको भंगकर वहांजाय सबपानीपीलिया जब हज़रत रसूलअल्लाह वहां पहुंचे तो पानी न पाया तब हज़रतने कहा कि देखो हमने पानी पीने को नहीं कहाथा न तिस उपरान्त प्रबोध किया और अपना पवित्र हाथ उस सोता के पानी पर रखकर ईश्वर से प्रार्त्थना की तो पृथ्वी फटगई और एकशब्द बादल की गर्जन के सदृश उसकुआंमेंहुआ और पानी बहनेलगा तब सम्पूर्ण सेना ने पशुओं सहित आनन्द से जल पानकिया तिस उपरान्त हज़रत ने कहा कि जो तुम जीवो अथवा तुममें से कोई जीवे तो इसजंगलकाहाल सुनेगा और हज़रतकी सिद्धाई का यह हालथा कि आंखों के आगे और फिर पीठ का सब हाल बराबरथा फिर जैसा हज़रत ने भाषा वैसाहीहुआ॥

(सोतामनकूर) अबूउलरेहांख़्वारज़िमी ने अपनीकृत किताब आसारबाक़ियामें लिखाहै कि कैमालदेशमें एकपहाड़ मनकूरनाम है उसपहाड़पै एक सोताहै जिसमें एकबीतापानीहै जो उसमेंएक सेना पानीपीवे तौभी एकअंगुलभर पानी कमतीहोना संदिग्ध है और उससोताके पास एक पत्थरहै तिसपै किसीमनुष्यका स्वरूप अंकृत है॥ और हाथोंकी हथेली और दोनों संघाके चिह्न तो ऐसे प्रकटहैं कि मानो कोईमनुष्य दण्डवत् कररहाहै और एक गदहा के सुमोंके भी चिह्न बने हैं जब अरबकेलोग यहां आते हैं तो इन चिह्नों को दण्डवत् करते हैं॥

(सोतामीनाहुशाम) मीनाहुशाम नाम तवरिया में एक गांव है सालबी ने एक वार्त्ता वर्णन की है कि इसगांव में एक सोताहै जो सातबर्ष तक बहै फिर सातवर्ष तक बन्दहोजाता है ॥

(सोतानार) अक़हर और अनताकियाके बीच में एक सोताहै एक देखन हारेने अजायबुलमख़्लूक़ात के ग्रन्थकार से बर्णन किया कि जो कोई इस सोतामें नरकुल को डाले तो तत्काल पानी सूख जाताहै अलाउद्दीन बादशाह जब इस सोता पर आया तो लोगों से यहांका वृत्तान्त पूछा तब उसने आश्चर्य करके जो इसकी परीक्षा करी तो ठीकपाया ॥

(सोतानातूल) नातूल नाम मिश्र देशमें एक गांवहै और वहां एक गड़हाहै वहांसे पानी निकलता है और जो पानीकी छींटेंगड़े के चारोंओर परती हैं उससे चूहे उत्पन्न होते हैं बहुत से इसबात को अपनी आंखोंकी देखी बर्णन करतेहैं कि यहां माटीमें अद्भुतगुण है कि उस सोतासे जो एक ओरको जो छींटैं परतीहैं वह तो तत्काल चूहे बनजातेहैं और दूसरी ओर माटीकीमाटी रहती है ॥

(सोतानिहावन्द) तोहफ़तुलगरायब के ग्रन्थकार ने लिखाहै कि दमावन्दके निकट पहाड़ों में पहाड़ी नदीसे एक सोता निकला है जिस किसीको पानी सींचनेकी आवश्यकता होतीहै तो वह वहां जाके कहताहै कि मुझे पानीकी आवश्यकताहै तिस उपरांत अपनी खेतीकी ओर को जाता है और पानी उसके पीछे २ दौड़ताहै जब उसका खेत सींचजाताहै तब पुकारके कहता है कि बस २ अबमेरी अभिलाष पूरीहुई उस समय वह पानी आपही आप बन्दहोजाताहै अजायबुलमख़्लूक़ातके ग्रन्थकार ने लिखा है कि मुझसे हमदा के वृद्ध पुरुषने जो सचाईमें एक उपमाथा कहा कि भूतकाल में बादशाह सैफ़ुद्दीन अलतमशबलाद और जवालका हाकिमथा और यह प्रदेश भी उसीके आधीनरहा करताथा सो एक बार अपनी सेना सहित इस ओरको निकला उसीके साथमें बर्णन करने वाला भी था उस समय इस पहाड़ के पास आ पहुंचे इतनेमें एक दिहाती

मिला उसने पुकारके कहा कि यहां सम्पूर्ण सृष्टिमें अनोखीअपूर्व वस्तुहैं यहां आके तमाशा देखो यह सुनके बादशाहने उसके पीछे घोड़ा किया ॥

और हमलोगभी साथमेंथे चलतेर उसघोखनिवासीने पहाड़ी नदीपर पहुंचकर फ़ारसीभाषामें पुकारा कि हमारे जौ और गेहूंके लिये पानीकी आवश्यकताहै इस शब्दके सुनतेही बड़े बेगसे पानी बहा और जब खेत सींचचुका तब फिर पुकारके कहा कि बस बस अबमेरी अभिलाष पूरीहुई बस तत्काल पानी लौटपरा यह देख बादशाहको बड़ा आश्चर्य हुआ तब बादशाहने समझा कि किसी मनुष्यकी जबान में यह प्रभावहै कि और भी लोगोंकी परन्तुनहीं जो देखा तो वहांके सम्पूर्ण निवासियोंका काम इसी प्रकार निकलता है जब हमने यह हाल सुना तो हमको निश्चय नहीं हुआ तब उसने सौगन्द खाई कि नहीं मैंने यह सब अपनी निज आंखों से देखा है ॥

(सोताहरमास) यह सोता नसीबैन से एक दिनकी राहकी दूरीपरहै इस सोताका मुंह पत्थर और रांगसे बन्दहै जिसमें इसके पानीके बेगसे शहर न बहजाय एक बार मुतवकिलअली अल्लाहने अपनी बादशाहत के समयमें इसका मुंह खुलवायाथा परन्तुउसका बेगदेख घबराके फिर बन्द करादिया क्योंकि इसके बेगसे बड़ाआनें कावड़ाडरथा इसीसोतासेहर्मा और नसीबैनकी नदियां निकली हैं और इसी सोताके पानीसे खेतसींचे जातेहैं जो पानी इससे बचताहै वह जाबूरमें गिरकर दजलामें जा गिरताहै ॥

(सोताहम) तोहफ़तुलगरायब के ग्रन्थकारने लिखाहै कि जब जबना होकर जरजानकी ओर चलो तो एक पहाड़ दिखाई देताहै और उसमें एक सोताहै जिसका पानी एक तालमें इकट्ठा होता है और उस ताल में एक बिना डालियोंका वृक्ष है वह रातके समय ऐसा मालूम होताहै कि मानों वह वृक्ष तालमें डूबताहै और कभी चार२ महीनातक अदृष्ट होजाताहै किसी मनुष्य को उसका हाल

नहीं मालूम कि कहां से वह वृक्ष प्रकट होताहै और कहां छिपजाता है बहुधा जब वर्षा अधिक होती है तब यह वृक्ष बहुतजल्द प्रकट होताहै बहुधा लोगोंने इस वृक्षकाहाल जाननेके लिये इसवृक्ष को रस्सोंसे पुष्टकरके पहाड़ोंमें बांधा परन्तु तिसपरभी जब इसकेछिपने का समय आया तो प्रातःकाल को जो देखा तो रस्से तो टूटपरे हैं और वृक्ष नहीं है अन्तको इस आश्चर्यित बात के समाचार राफ़ा बिन हज़ीना के कानतक पहुंचे जो उस समय जरजान और खुरासानका हाकिमथा उसने कुछलोग उस वृक्ष के छिपने और प्रकट होनेके समाचार जाननेके हेतु नियत किये और इस रक्षाकेलिये चार मनुष्य नियत किये कि निशिबासर इसको देखा करें परन्तु हरीच्छासे जब उसके छिपनेका समय निकट आया तो पहरुओंको कहीं जानेकी आवश्यकता आयलगी निदान उस ओर उनकाजाना था कि इस ओर वृक्ष अलक्ष होगया जब यह समाचार बादशाह को पहुंचा तब उसकीसेनामें एक डूबाकोफ़ाकारहने वाला था उसको बादशाहने आज्ञादी कि वहां जाके बूड़कमार अभिलाष के मोतीको निकाले अर्थात् उस वृक्षका पतालगावे कि यह वृक्ष कहां गया उस गोताख़ोरने बहुतेरी बुद्धीलगाई पेंदीकी माटी ला दिखाई परन्तु उस वृक्षकी थाह न पाई इस सोताका नाम चश्मा हम भी कहतेहैं और यह सोता नहरकी ओरहै और इन दोनों नदियोंके बीचमें एक दिनकी राहकी दूरीहै॥

(सोतादशलिया) दशलिया नाम एक गांव मदीनाके आधीन आज़ुरवायजानके निकट है यहां एक सोताहै उसका पानी जोपीवे तत्काल उसको जुलाब होजाय और ऐसा कराल जुलाब हो कि जो वह किसी चीज़के दानेखाके पानी पीवे तो वे भी उसके पेटसे तत्काल गिरेंगे॥

(सोतायासीजमन) अरज़नरूम और अखलातके बीचमें एक गांव यासीजमन नामहै वहां एक सोताहै जहां से बड़ेबेग से पानी बहताहै और उसपानीकाबेग ऐसाहै कि दूरसे उसकेपानीकाशब्द

सुनाई देताहै और जो कोईजीव उसके निकटजाय तो तत्कालगिर जाय इसी कारण पशू और जीवोंकी हड्डियां इसके चारोंओर दृष्टि आती हैं और इसीकारण पहरुआ नियतहैं जो लोगोंको उस ओर जानेसे रोकते हैं ॥

(सोताईल) क़जबीन के गांवोंमें से एक गांवका नाम ईल है यहां एक पहाड़है उसके दर्रासे एक सोता निकलाहै जिसका पानी अति गरम निकल उसीके निकट एक हौजमें इकट्ठा होताहै इसके पानी में यह गुणहै कि इसमें कुष्ठी लँगड़े लखजून और नक़रस रोगवालों और खाजवालों को इसके पानीमें स्नान कराते हैं और पान कराते हैं तो वे आरोग्य होतेहैं इसका नाम चंचमाईलकम्र्मा है ईश्वरकी दयासे सोतोंका वृत्तान्त तो समासहुआ अब कुओं का हाल भी वर्णमालाके अक्षरानुक्रमणि अनुसार ईश्वरही के भरोसे वर्णन करताहूं ॥

कुओंका व्याख्यान ॥

(कुआं अनवद) इस कुआं के विषय में कालीना लोगों ने लिखाहै कि जो कोई इस कुआंका पानी पिये वह अहमक़ अर्थात् दुर्बुद्धि होजाय जो कोई मनुष्य उसदेश में कुछ वर्जित अथवा अति अनुचित कामकरे तो वहां के निवासी उसको इस उपमासे धिक्कार-तेहैं कि हम भैयातेरी बराबरी नहीं करते क्योंकि तैंने अनवदनाम कुआंका पानी पियाहै ॥

(कुआंअरीस) यह कुआं मदीनामेंहै एक वार इसकुआंमें हज़-रत उसमान तृतीय खलीफ़ाके हाथसे हज़रत रिसालतमाब अर्थात् हज़रत महम्मदकी दीभई अंगुठी गिरपरी तो उसको बहुतेरा ढूंढ़ा परन्तु अंगुठी न मिली तब लोगोंने कहा कि इनके हाथ से इस कुआंमें अंगुठी गिरगई सो न मिलनेका यह कारणहै कि जोशैखों का उचित धर्म्महै उसके विपरीत अपनी जीविका करते थे ॥

(कुआंबाबुल) आमयने लिखाहै कि मजाहिद नाम एकमनुष्य था उसको यह प्रकृति पड़गई थी कि जिस अद्भुत वस्तुका नाम

सुनता तो जब तक उसको देख न लेय तब तक उसको चैन नहीं परता था निदान इसी प्रकृति अनुसार मजाहिद बाबुल को गया वहां हज्जाजसे मिला उसने इसका मनोरथ पूछा इसने अपनी अभिलाष प्रकट करी कि मुझे हारूत और मारूतके देखनेकी लालसा है तब हज्जाजने पिसर जालूतसे कहा उसने किसी यहूदीको आज्ञा दी कि इस पुरुषको हारूत और मारूतके पासलेजा अन्तको उसने मजाहिदको लेके कुआंके किनारे जाय खड़ाकिया और कुआंकेमुंह से पत्थरकी शिला टारके कहा कि अब कुआंकेभीतर जाके उनको देख आवो परन्तु इस बीचमें ईश्वरका नाम मुखसे न कहना निदान यहूदी और मजाहिद दोनों कुआं में उतरे और जाते जाते हारूत और मारूत दोनों दृष्टिपरे तो क्या देखतेहैं कि मानों दो पहाड़ मनुष्याकृत लटके हैं और येड़ीसे जांघोंतक लोहेकी ज़ंजीरों में जकड़े हुये हैं मजाहिदने यह तमाशा देख ईश्वर स्वप्रकाशीका स्मरण किया कि बस नाम सुनतेही हारूत और मारूतने चाहा कि बलकरके ज़ंजीरों को तोड़डालैं यह दशा देख यहूदी और मजाहिद दोनोंभागे जब उनकी घबड़ाहट मिटी तो यहूदीने मजाहिदसेकहा कि क्योंतुम हमारी शिक्षाको भूलगये देखा कि इसनामके लेतेही उनको कितनी घबड़ाहट हुई और हमारे और तुम्हारे प्राणजाने में कुछ सन्देहथा अन्तको दोनों आदमी वहांसे बाहिर निकले तसवीर यह है॥

तसवीर नम्बर १०७

(कुआंबदर) यह कुआं मकर और मदीनाके बीचमें उसठौर है जहां हज़रत महम्मदने क़ुरेशके काफ़िरोंसे लड़ाईकीथी औरमशरकोंको मार उस कुआं में गिरादियाथा तब हज़रत ने उसकुआंकी जगत पर आयके कहा कि हे मशरको तुमको अब निश्चय उस बस्तुका जिसके बिषयमें तुम्हारे ईश्वरने तुमसे वादा तब सहाबाने पूछा कि हे हज़रत क्या ये लोग हमारी बातसुनते होंगे इसका हज़रतने उत्तर दिया कि उनमें तुमसे अधिक सुननेकी

अकिहै एकबार्ता यहभी है लिखीहै कि सहावा में से कोई महाशय उसओर को गया तो देखा कि एकसंग उसकुआं से निकलके एक मनुष्य भागा तो एकमनुष्य कोड़ालियेहुये उसकुआंसेनिकला और प्रथमपुरुषको मारताहुआ फिर कुआंमें लेगया॥

(कुआंवरहूत) यहकुआं हज़रमूतकेपासहै यह वहकुआंहै जिसके विषयमें हज़रतमहम्मदमुस्तफा ने कहाहै कि इसकुआं में शत्रु और काफ़िरोंके प्राण भरे हैं और यहकुआं एक जंगलमें है हज़रतअमी-रुल्मौमिनीन की कहावतहै कि महाशत्रुओंकाजंगल ईश्वरकेनिकट वरहूत नाम कुआं है और इसजंगलमें एककुआं कालेपानीकाहै उस में अतिदुर्गंध है इसमें काफ़िरों (नास्तीकों) के निवास की ठौरहै असमाई कहताहै कि मुझसे हज़रमोती नाम एक मनुष्यनेकहा कि जबइसकुआंमेंसे अतिदुर्गंधआतीहै तो पहिचानहै कि कोईकाफ़िरों का सरदार मरनेवाला है यहभी कहावतहै कि कोईमनुष्य रातको इस जंगल में आया उसने रातभर (पादोमा) शब्दकहते हुये सुना और वहशब्द इसकुआं में से निकलताथा उसने यहबात किसीवि-द्वान् से कही उस विद्वान् ने उत्तरदिया कि हां सत्य है उसमें जो काफ़िरों के प्राणवायु रहते हैं उनपर जो गण नियत है उसकानाम दोमाहै एक और मनुष्यकीकहावतहै कि मैं एकदिनवरहूतकेजंगल में जानिकला तो उस समय उसके साथ एक गर्भिणी स्त्री भी थी वहां भानूदय के समय अकस्मात् एक ऐसा कठिन भयानक शब्द उसीजंगलमेंउत्पन्नहुआ कि जिसशब्दके दलकासे उसस्त्रीकागर्भ पतन होगया॥

(कुआंवजाता) यह कुआं मदीनामें है हदीसने लिखाहै एकवार हज़रतरसूलअल्लाह इसकुआंपर आये डोलसे पानी निकालके वज़ू अर्थात् हाथमुंह धोये और जो शेषजलवचा वह उसीकुआं में गिरा दिया और जो मुख से लार टपकी सोभी उसीकुआं में छोड़ा तिस उपरान्त उसका पानी पिया इसकुआं के प्रभावके विषयमें लिखा है कि जो कोई बीमारहोता तो हज़रत उसको उस कुआं के जलमें

स्नानकरने की आज्ञादेते थे और उनके आशीर्वादसे उसको आरो ग्यता होती थी और इसविषय में हज़रत अबूबकरसद्दीक़ ने कहा है कि हम बीमारोंको तीनदिनबज़ात कुआंकेपानी में स्नान कराते हैं वह आरोग्य होजाते हैं॥

(कुआंबूक़ैर) अजायबुलमख़लूक़ात के ग्रन्थकार ने लिखा है कि मुझसे इन्दलस के कुछ फ़क़ीहोंने अर्थात् कुरानादि ग्रन्थ ... हारों ने कहा कि इसकुआं में से ऐसेवेग से बायु निकलती है कि जो बस्त्रादि बस्तु इसमें छोड़ो तो बाहर निकलआती है भीतर नहीं रहती है॥

(कुआंबेज़न) यहकुआं दरबन्दके निकटहै यह वहीकुआं है जिस में अफ़रासिआव ने वेज़नबिन गोदरज़ को क़ैदकियाथा और उस के मुखपर बड़ाभारी पत्थर रखदियाथा अन्तको रात्रीसमय रुस्तम वहांके पहरुओंको मारके वेज़नको बन्दिसेछुड़ाके ईरान को लेगया था यह इतिहास बहुत प्रसिद्ध है॥

(कुआंक़ैसूर) यहकुआं हिन्दुस्तान के एकटापू में है जहां कपूर होताहै और वहांका कैसूरी कपूर प्रसिद्ध है इसकुआं में एकप्रकार की मछलीहै जब उसको बाहरनिकालो तो संगखारा होजातीहै॥

(कुआंखन्दक़) मराग़ानाम देश में एक खन्दक़नाम गावँ है इस कुआंसे कबूतर बहुत निकला करतेहैं इसकारण लोग इसकुआं के मुख पै जालफैला के कबूतरों को पकरा करते हैं इसकुयें की गह- राई की थाह आजतक किसीको नहींमिली मराग़ा के कुछ सुजन के द्वारा अजायबुलमख़लूक़ात के ग्रन्थकारको मालूमहुआ कि उ- लोगोंने उसकुआंकी थाहलेने को किसी२मनुष्यको नीचेउताराथ वहां गोताखोर पांचसौगज़तक नीचेचलेगये वहांसे लौटके उन्हों कहा कि वहां कोई कबूतर नहींहै हां बीचमें बायु बड़ेबेगसे चलत है और तिस उपरान्त कुछ प्रकाश सा दृष्टिआता है जहां बहुध पशू मुरदा दृष्टिआते हैं॥

(कुआंदमाबन्द) दमाबन्दके पहाड़ों में यहकुआंअतिही गहराहै

दिनके समयमें यहांसे धुआं निकला करताहै और रात को आग प्रज्वलित रहती है इस कुआं का यह प्रभाव है कि जो वस्तु इस कुआंमें छोड़ीजाय वह घरीभर तो भीतररहती है और फिर बाहर निकल आती है ॥

(कुआंदरवां) इसका नाम चाहकमली भीहै इब्नअब्बास प्रसन्न हो ईश्वर उसपर कहताहै कि एक बार हज़रत रिसाल तमाव पर जादू कियागया और आप कठिन बीमारपरे उसीबीमारीने हज़रत को कुछ नींदसी आई तो क्या देखता कि एकफरिस्ता तो शिरहाने खड़ाहै और दूसरा पांयतकी ओर खड़ाहै तब पांयतवालेने पूछा कि अब कौनसी दशाहुई तब उसने उत्तरदिया कि अब जादू भरपूर है तब फिर उसने पूंछा कि किसने जादूकिया तो उसनेकहा कि लबी दबिन आसिम यहूदी ने यह काम कियाहै तब उसने पूंछा कि कहां यह काम कियागया है तब उसने फिर उत्तरदिया कि चाहकमली में पत्थरके नीचे निदान जब हज़रतजागे तो यह सब वार्त्ता याद रही तब हज़रत अमीरुल मौमिनीन औरसहाबानुस कुआंपर आये तो सब पानी उसका निकाल डाला तो एक पत्थर दृष्टिआया जब उसे उठाया तो एकबाल उसके नीचे था जिसमें ग्यारहगिरहैं लगी थीं तो इनलोगोंने उसको जलादिया तो तत्कालहज़रत आरोग्य होगये तब ईश्वर ने उसके विषय में ग्यारह आयतें कुरानमें भेजीं ॥

(कुआंज़मज़म) यह कुआं शुभ प्रसिद्धहै इस कुआंकी गहराई ऊपरसे पेंदीतक चालीस गज़है और इसकुआंसे सरकोह तक जहां कि यह कुआं खोदा गयाहै ग्यारहगज़है ज़मज़मपर एक कुबाहरम के बीच में बावतवाफके पास काबाके दरवाजे के बराबर है हदीस (शास्त्र) में लिखाहै कि जबयह हज़रत इब्राहीम खलीलुल्लाहज़रत इस्माईल और उसकी माता हाज़िरा को काबामें अनाथ छोड़के चलने लगे तब हाज़िराने कहा कि यहांमुझे और मेरे बेटेको किस के भरोसे पे छोड़जातेहो इसपै हज़रत इब्राहीमने उत्तर दिया कि

ईश्वरके तब हाज़िरानेहरीच्छाकहकर इस्माईलको अपनेपासबैठाल
लिया और जितनापानीपासथा जबतकरहा तबतकहज़रतइस्माईल
को प्याया और जब पानी न रहा और हज़रत इस्माईल अधिक
तृषितहुये तो माताकी दया न रहागया अन्तको हज़रतइस्माईल
को एकठौर आड़मेंबैठालके आप पानीकीटोहमें सफ़ाकीओरचली॥
और वहां जाकर बहुतकुछ ढूंढ़ा पर पानी न पाया और न कोई म-
नुष्य दिखाईदिया फिर वहवहांसे मरवेकीओर आई वहांभी पानी
ही ढूंढ़रही थीं कि अकस्मात् किसी दुःखदायी पशुका शब्दसुनाई
दिया उससमय बच्चेकी प्रीति से उसआवाज़ से डरकर तुरन्त ही
हज़रत इस्माईल की ओरआईं यहां आकर क्या देखतीहैं कि उनके
निकट जलकासोता चलताहै तो झटपट हाजिरा ने थोड़ीसी मिट्टी
लेकरपानी के गिर्द मुयडेरबांधदी कि इधर उधरवह न जाय कहतेहैं
कि यह चश्मा हज़रत इस्माईलकी गर्दनके नीचेसे जारीहुआ यदि
हाजिरा मिट्टीसे चारोंओरकी राह बन्द नकरतीं तो यहकुआं ज़म-
ज़मनामी सोते की तरहपर बह निकलता—हज़रत पैग़म्बर साहब
का वचनहै कि अब्दुलमुत्तलिब किसीमकान में सोते थे अकस्मात्
उन्हेंस्वप्नमें आज्ञाहुईकि कुआं ज़मज़म खोदो उन्होंनेकहा कि ज़मज़म
क्या वस्तुहै उत्तर मिला कि तुम ऐसे कामको मत बिगाड़ो क्योंकि
उसकुवेंसे हज्जाजके काफ़ले तृप्तहोंगे और वहकुआं विष्टा और लहू
आदिसेपटापड़ा हुआहै जहांपरकव्वा अपनीचोंचसे खोदरहाहै तो
अब्दुल मुत्तलिब जागकर अपने हरव नामी पुत्र सहित चले क्या
देखते हैं कि एक कव्वा अपनी चोंच से पृथ्वी खोदरहा है अब्दुल
मुत्तलिब ने उसीस्थान पर खोदना शुरूकिया तो कुआं प्रकटहुआ
और पानी दिखाईदिया सो क़रीश ने उनसेदावा किया और अब्दुल
मुत्तलिब से कहा कि यहकुआं हमारे पिता इस्माईल और हमारी
माता हाजिराका है और हमारा हक़ इसपर अच्छीतरह से सूचित
है सो इसबिवाद के निर्णयके लिये एकप्रश्न कहनेवाले से आज्ञाकी
और उसकीओरचले राहमें जो पानी साथथा वह खर्च होगया और

प्यास ने ज़ोरकिया यहांतक कि सबकी ज़बान न निकलपड़ी उस समय अब्दुलमुत्तलिब के घोड़े के नीचे से सोता प्रकट हुआ और उसने उनलोगोंकी प्यासबुझाई तो लोगोंने मानलिया कि वास्तव में ईश्वर ने उस कुयें को आप के हिस्से के लिये पैदा किया है हम लोगोंका कुछ हक़नहीं पहुंचता और वास्तव में तुझे जिसकी ओर से इसजङ्गल में पानीमिला उसीने कुआं ज़मज़म भी तेरेही हिस्से में प्रकट कियाहै और वहलोग हारमानकर चलेगये और अब्दुल मुत्तलिब ने कुआं ज़मज़म खोदना शुरूकिया और उसकुयें में से सोने की ढालें और कलईकी तलवारें जो उनके दादा ने गाड़ी थीं उनको मिलीं और यहशस्त्र उससमय गाड़ेगये थे जब आप मक्के से चलेथे सो उन्होंने इनवस्तुओं से अब्दुलमुत्तलिब ने दरवाज़ा काबे का और हज्ज का जलस्थान बनाया इसका पानी तृषित और क्षुधित को तृप्त करताहै॥

(कुआं साबक़) यह कोरै आरजां में है यहां के बासी कहाकरते हैं कि इस कुयें की गहराई की परीक्षा लीगई है पर उसकी पेंदी तक न पहुंचसके और क़सबे के रहनेवालों के प्रयोजन के अनुसार पानीजारी रहता है॥

(कुआंअरवा) यहअक़ीकमदीनियांमें है और ज़बीरकेपुत्र अरवा से सम्बन्ध रखता है इब्न इलज़बीर ने कहाहै कि जोकोईमदीना आदिसे निकलकरअक़ीक़ज़वादे की ओर जाता है अरवा के पानी को साथ लाताहै बहुत मनुष्य इसके जलको पवित्र समझकर लेजायाकरतेहैं किसीयात्रीने कहा कि हमने एकमनुष्यकोदेखा कि उसने यहांसे शीशेमें जल भरलिया और हारूंरशीदकी सेवामें सौग़ातकी रीतिपरलेगया इसकुवेंके जलमें यह गुणहै कि गर्मीमें ठंढा और सर्दीमें गरम और अंधेरी रातमें चिराग़की सूरतहोजाताहै कुआं फरस यह पवित्रकुआं मदीनेमेंहै हज़रतपैग़म्बरसाहब इसकुयेंकी बहुतप्रशंसा किया करते थे और इस कुयेंको उत्तम जानते थे इसमें हज़रत ने अपने मुंहकी लार डालीथी कहतेहैं कि हज़रत ने इस कुयेंके लिये

कहा है कि यह कुआं स्वर्ग के सोतोंमेंसे है और इब्नअमरने हज़रत से एक कथा वर्णनकी है कि एक बर वे इस कुयें की जगतपर बैठे थे कहा कि मैंने एक रात्रिको स्वप्नमें देखाथा कि मैं एक सोतेपर जो स्वर्गके सोतोंमेंसे है बैठाहूं वहसोता यहीकुआंहै—कुआंफ़िरया अब्दुलरहमान—यह फ़ारसमेंहै इसकी चौड़ान मनुष्य के डील के बराबर है और लम्बाई बरसभर की राह और बिल्कुल सूखा है वर्षभरमें एक ऐसा समय आताहै कि इस सोतेसे पानी उबलताहै और इस अधिकतासे निकलताहै कि उस समय लोग इस कुयेंसे खेती आदिकोसींचते हैं—कुआं कलबहलबके देशोंमें से एक मौज़े परहै जिस किसीको बावले कुत्तेने काटाहो जो वह इस कुयेंका पानी पिये तो अच्छा होजावे और हलबके कई रहनेवालोंने कहा है जो चालीस दिन बीतने के पीछे पियेगा कभी आरोग्य न होगा लोग वर्णन करतेहैं कि तीन मनुष्यों को बौरहे कुत्तेने काटाथा दो मनुष्य तो चालीस दिन बीतने के पहले इस कुयेंके जलसे आराम पागये और तीसरा मनुष्य जिसको चालीस दिन व्यतीत होगये थेमरगया—कुआं मतरिया—मतरिया एक मौज़ा मिसर देशमें है और उस गांवमें एक स्थानहै जहांबलसांकावृक्षहै इस कुयेंसे पानी पीतेहैं कहतेहैं कि मरियमके पुत्र मसीहने इस कुयेंमें स्नान किया है और जिस देशमें बलसां का वृक्ष उगताहै उसके चारों ओर चार दीवारी बनाई गईहैं इस कुयेंका जल अति मिष्टहै और कुछ उसमें चिकनापन भी है एकबेर काबुलके बादशाहने अपने पितामुमलिक आदिलसेआज्ञामांगी कि बलसांकेवृक्षको और ज़मीनमेंबोयेंउसने आज्ञा देदी और रुपया बहुत ख़र्च किया पर कुछ लाभ न हुआ फिर आज्ञा मांगी कि कुयें मतरियेसे जल लाकर उस वृक्षकोसींचें जब उसनेआज्ञादी और उसकेजलसेसींचा तो बलसांकावृक्षउत्पन्न हुआ और प्रकटहोकि मिसर देशकेसिवा और कहीं बलसांका वृक्ष नहींहै परन्तु जब इस पानीसे सींचे तो और जगहभीपैदाहो कुयें नेशापुरके—इन कुओंमें फ़ीरोज़ेकीखानेंबहुतहैं परन्तुअबउनमेंबिच्छु

ओं कीअधिकता बहुतहोगईहै इसडरसे किसीकी हिम्मत नहींपड़ती कि कोई उधर मुख करे (कुआंहिन्दवान) हिन्दवान एक मौज़ा है फ़ारस देश में दो पहाड़ों के मध्य जहां से धुआं निकलता है और पानी उसका इतना उबलता है कि किसी को उस तक पहुंचने की मजाल नहीं है जो पंछीभी उसपरसे उड़े तो तुरन्तही जल कर गिर पड़े (कुआं यूसफ़सदीक़) यह वह कुआं है जहां हज़रतयूसुफ़ को उनके भाइयोंने गिराया था कहते हैं कि यह कुआं अखनताबलस और तुरियासे चार कोसकी दूरीपर दमिश्कके एक बड़े पत्थरपर है- कइयोंके विचारमें हज़रत याक़ूब का मकानताबलसथा जो फलतैन की धरती पर है और जिसकुयें में कि हज़रत यूसुफ़ गिराये गयेथे वह फलसतीन और ताबलस के बीच में है और उसस्थान का नाम संजल है और यह कुआं आम राह पर है ईश्वर की कृपा से पहाड़ों नहरों सोतों और कुओं का वर्णन पूरा हुआ॥

वर्तमान सम्पूर्ण सृष्टि का वर्णन॥

इसके कई प्रकार हैं जो माता पिता से उत्पन्न होते हैं सो हम कहते हैं कि सम्पूर्ण उत्पन्न हुये शरीर बढ़ने वाले होते हैं और जो बढ़नेवाले प्रकार नहीं हैं वह खानेकी चीज़ें हैं और जो बढ़नेवालेहैं उनके दो प्रकार हैं एक तो चलने फिरने की शक्ति रखतेहैं वह जीव- धारी हैं और जो नहीं वह स्थावर वृक्षादि हैं और न बढ़नेवालोंकी ओर बुद्धिमानों का विचार उनकी उत्पत्ति भाफ़ और गर्दसे है और भाफ़ वह वस्तु है जो दरिया कुवों और नदियोंकी सफ़ाईसे उठ कर ऊपर को चढ़ती है कि जब सूर्य्य की गरमी उनमें अपना प्रभाव करती है और वह पानी और गर्द धरतीमें दूसरा रूप धारण करता है और वही इकट्ठा होकर मट्टीके भागों में मिल कर गाढ़ा होजाता है और जो गर्मी पृथ्वीकी गहराई में प्राप्त हुई है उसे पकाता है सो वही मूल वस्तु खान स्थावर और जीवधारियों के लिये होता है जिसको अब ईश्वर चाहै तो निकटही वर्णन करता हूं और यह खानें स्थावर और जीवधारियों से कइयों के साथ मिली हुई हैं

पहले यह सृष्टि मिट्टी थी फिर इसको जीव का संयोग हुआ॥

पहले खानोंकी वस्तुओं का वर्णन॥

वह जस (गच) है जो मट्टी के अनुमान है वा मलह (नमक) है जो जलके अनुमान है जस एकप्रकारकी रेत है जो बर्षासे भीगकर बँध जाती है और मलह एक प्रकारका जल है जो खारी भागोंसे मिलकर मट्टीके भागोंमें मिलजाता है और नमककी तरह पर बंध जाता है और खान का अंत जो स्थावर के निकट है उसको (कमात कुंभी एकजड़है कि पृथ्वीकी दुर्गंधसे रबीके वक्त रेतवाली जमीनों और पहाड़ोंकी गुफाओं में बहुत जमती है गोल और लाल और पेड़ और पत्तों बिना उसका कच्चा पक्का दोनों खाते हैं परन्तु उसमें विशेष करके कोई स्वाद और गंधनहीं) कहते हैं और वास्तवमें यह प्रकार सृष्टि से वर्त्तमान होता है कि मिट्टी में खानकी तरह और गीली जगह पर रबीमें और यह बिजली के शब्द और वर्षा से बढ़तीहै जिस तरह वृक्ष इत्यादि हरे भरे होते हैं जोकि इसमें पत्ते और फल नहीं और मट्टी से उत्पन्न होता है जिस तरह कि सब खान की चीज़ें इस लिये वह कमात खान की चीजों के सदृश हुआ परन्तु धरतीपर उगता है इसलिये उसका प्रारम्भ खानोंसे है और अन्त जीवधारियों इसलिये कि प्रारम्भ और अंत वृक्षादि वोंका कि मिट्टीके निकट है उसको ख़िज़रायउद्दमन और उत्तमोत्तम वृक्ष रजो जीव धारियों के निकट है छुहारे का दरख़्त है और ख़िज़राय उद्दमन वह एक भाफ़ है जो पृथ्वीसे निकलती है और बर्षासे हरी होकर घास की तरह लहलहाती है तो जब उसे सूर्य्य की गर्म्मी पहुंचे सूखजाती है और फिर ओस और प्रभात की पवन से हरी होती है और कमात और ख़िज़रायउद्दमन नहीं उगता है परन्तु रबी की ऋतु में होता है और एक इनमें से खान का स्थावर है और दूसरी स्थावर की खानहै और जो जीवधारियों के सदृश है वह छुहारे का वृक्ष है क्योंकि छुहारे के वृक्ष का स्वभाव कुछ स्थावरसे सम्बन्ध नहींरखता चाहे वह स्थावरहै क्योंकि उनवृक्षों

में नर व मादा हैं और जो छुहारेके दरख़्त का शिर काटडालें तो सूखजावे और फिर न बढ़े जिसतरह पशुकी गर्दन मारनेसे उसका नाश होजाताहै इसीनिश्चयसे छुहारेका वृक्ष स्थावरजीवधारीहै—रहपशुआरम्भ उसका स्थावर के सदृशहोताहै क्योंकि तुच्छसेतुच्छ वहपशुहै जिसकी केवल एकइन्द्री हो और जिस जीवधारीका नाम हलज़ूनहै वह एक कीड़ाहै जो पत्थरके खोल में दरियाकिनारे होता है और वहकीड़ा उसमेंसे अपनाआधाअंग निकालताहै और दहने बायें लम्बा चौड़ा होताहै और अपना भोजन ढूंढ़ताहै तो जबहवा की तरी या नरमीपाताहै तो अपनेको और फैलाताहै और जो कठोर पृथ्वी पाताहै तो अपने को उसीमें छिपालेताहै कि ऐसा न हो कि कोई दुःखपहुंचे और इसजीवमें सुनने देखने चखने और सूंघनेकी इन्द्री नहीं परन्तु स्पर्शन इन्द्री रखताहै और इसीप्रकार बहुतकीड़े होते हैं जो मट्टी से पैदा होते हैं सो इनप्रकारों के जीवधारियों को स्थावरजीवधारी कहते हैं कि वृक्षादिकोंकेसदृश उगाकरते हैं और जिस पशु का पद मनुष्य के निकट है उनमें से घोड़ा है क्योंकि घोड़ेमें समझकी तेज़ी और अदब अर्थात् बड़ेका लिहाज़ और उत्तमोत्तम शील होती है बहुधा ऐसा होताहै कि बादशाह के सामने या जबतक बादशाह सवार न होले लीद नहीं करता है लड़ाई में मनुष्यकासाथ देताहै घावखानेसे मुंहनहींमोड़ताहै जो उसकानाम रक्खो समझजाताहै और आज्ञामानताहै रोकनेसे रुकजाताहै और पशुओंके बराबर वह मनुष्यहैं जो नाना प्रकारके संसार के भोजन के सिवाय और कुछ इच्छा नहीं रखते और कुत्ते और मेंढ़क की तरह मैथुन करते और अपनी आवश्यकतासे अधिक चींटोंकीतरह संग्रह करते और संसार की सूखी रोटीपर इस तरह गिरते जैसे कुत्ते मुर्दारचीज़पर गिरतेहैं तो ऐसेमनुष्य चाहे मनुष्य रूप रखते हैं परन्तु उनके कर्म्म पशुओंके हैं और जिन मनुष्योंका पद्वी फरिश्तोंकीसी लिखी है वह उन मनुष्योंकी पद्वी है जो भूलकी नींद से जगे और उनकेमनके नेत्रखुलेहैं कि प्रकट प्रकाशके सिवाय मनका

उजियालाभी देखें और उस विश्वम्भर परमेश्वरके दियेहुये पदा
से अपने मनको प्रसन्न करें और अपने मनको स्वच्छतासे प्राण
समूहको देखें और इस असार संसार के पदार्थों की इच्छा छो
सो यह लोग फरिश्तों के प्रकारों से हैं ॥

॥पहलीनज़र खानकी वस्तुओं का वर्णन ॥

यहधातें पृथ्वीकीभाफ़ और गर्दसे पैदाहोतीहैंजो ज़मीनमें ब
हैं कि जब हरएक नानाप्रकार की भाफ़के दोषों की सदृश मिले
इनके स्वभाव और पृथक्२ हैं तो यहधातें यातो सख्त हैं या नर
और जो सख्त हैं वह हथौड़ेसे निहाईपर कूटी और बढ़ाई जाती
वहसातहैं १ सोन २ चांदी ३ तांबा ४ सीसा ५ लोहा ६ कलई
हारसेनी (यहधातुचीनकीहैं) यह पारे और गन्धकसे पैदाहोती ह
और जो नरमहैं जैसे पारा और सख्त और कई तरधातु नमकदार
हैं जैसे फिटकरी और नौसादर और इसके बिरुद्ध चिकनी हैं जैसे
हरताल और गन्धक और ऊपर लिखेहुये सातों प्रकार भी पारे
और गन्धक के मिलनेसे उत्पन्नहोतेहैं परन्तु स्वभाव और तोलमें
बिरुद्धहै पारा वायु मट्टी और जलके भागोंसे उत्पन्न होता है जब
इनतीनों को बलवान् उष्णता पकाती है उस समय तेल के सदृश
होजातेहैं और कठोर और साफधातें उसजलसे उत्पन्नहोतीहैं और
सख्तपत्थरों के बीचमें होतीहैं और मुद्दत में गाढ़ी और साफहोती
और गरमी से पकतीहैं और मैलीधातें पानी और मिट्टीके मिलने
से पैदाहोती हैं जब कि उनमें मुद्दतोंतक धूपका प्रभाव पहुंचता रहे
जो धातें तरीकीतरफ़ झुकीहोतीहैं वहपानीसे पैदाहोतीहैं जब पानी
मट्टीके भागोंसे मिलकर सूखजाता है और चिकनी धाततरी से प्रकट
होतीहैं जो धरतीके अन्दर छिपीरहतीहैं जब उनको गरमी पहुंचती
है उससमय गलती और पतली होजातीहैं और उसीमट्टी में मिल
जातेहैं और खानोंकीगरमी हमेशा उनकोपकाती और गाढ़ाकरतीहै
ईश्वर चाहैतो इनकावर्णन निकटही बिस्तारपूर्वक कियाजावेगाकहते
हैंकि सोना रेतीलेपहाड़ों और नरम पत्थरों के सिवाय दूसरी जगह

ानहींहोता और तांबा लोहाआदि तर या गीलीज़मीन के विशेष
र किसीस्थान में प्रकट नहींहोता और खारी धरती में होता है
र फिटकरी ऐसी ज़मीनमें होती है जिसकी मट्टीका स्वाद वक-
हो और सपेदा वहां पैदाहोता है ज़हां की मट्टीमें गच मिलीहो
सी प्रकार हर एक जवाहिर एक २ धरतीमें मुख्य है जो जहांसे
ाहो उसको उसी ज़मीनका स्वभाव समझना चाहिये और इन
वके तीन प्रकारहैं फलज़ात अर्थात् गलनेवाली धातें १ अहजार
र्थात् पत्थर आदि जो पिघल न सकें २ अजसामुदोहनियां
र्थात् चिकनी चीज़ें ईश्वर चाहे तो हर एकका विस्तार निकटही
र्णन किया जावेगा ॥

पहला प्रकार पिघलने वाली खानकी चीज़ोंकावर्णन ॥

यह सातहोतीहैं कहतेहैं कि इनकी उत्पत्ति पारे और गंधक के
िलनेसे होती है पृथ्वीपर जो पारा और गन्धक दोनों साफ़ और
ख्त और आपुसमेंमिलेहों और गन्धक तरीकोपीजाय और ज़मीन
ानी की तरीको और गन्धक में रँगनेवाली शक्ति हो और दोनों
नुमानसेहों और खानकी गर्मी दोनोंको बराबर पकाले और उस
ानको सर्दी या गर्मीका कोई रोग न हो जबतक कि दोनोंको पका
ले तो उससमय यह गन्धक और पारा बँधकर सोना होजाता है
रन्तु बहुतसमय में और जो गन्धक और पारा दोनोंसाफ़हों और
च्छीतरह से पकजावें और गन्धक सफ़ेदहो तो वह चांदी होजावे
और जो इसकेपकनेके पहले सर्दी केकारण वह चीज़ेंमिलगईं तो वह
ारसेनी है और जो पारा साफ़हो और गन्धक साफ़ न हो और
जलने की ताक़त ज़ियादहह हुई और दोप भी पूर्ण हुआ तो उससे
ांबा पैदाहोता है और जो गन्धक पारे से मिलजावे और दोप भी
ा न हो तो क़लईपैदाहो और जो गन्धक और पारा दोनोंबुरेहों
और पारेमेंमिट्टीमिलीहो और जलनेकीशक्ति अधिकहुईहो तो लोहा
उत्पन्नहोगा और जो दोनों बुरे और सख्त नहों तो जस्तापैदाहोगा
निदान यह खान के जवाहिर वस्तुओं के विपरीत मिलने से भी

विपरीतहोतेहैं परन्तु इनसबकामूल पारे और गन्धकके हैं कि पारे और गन्धकके अन्योन्य स्वभावसे रूपान्तर होजाताहै और यहबातें कारीगरोंको अभ्याससे मालूमहुईहैं अब यहांकुछ वर्णन उन धातों का लिखाजाताहै—सोना यह गर्म और नर्महै जो कि इसके पानी के खण्ड मट्टीके खण्डों से वहुत मिले रहते हैं आग से नहीं जलता क्योंकि अग्नि उसके खण्डोंको अलगनहींकरसक्ती और मट्टीमेंनहीं गलता और समय के बीतनेपर भी उसपर जंग नहीं लगता और बहुत नर्म पीला और बुर्राक़ मीठा सुगन्धित संगीन और प्रकाश युत होताहै और उसमें पीलाई अग्निके खण्डोंकी है और नर्मी चिकनाई के खण्डोंसे और बुर्राक़ पानी की सफ़ाई के खण्डों से और संगीनी मट्टीके खण्डोंके कारणसे हैं और ईश्वरके दियेहुये बड़े पदार्थोंमें से है क्योंकि इसीके कारण संसारी कार्यांका प्रबंधदिया गयाहै और सम्पूर्ण सृष्टि इसी की आवश्यकता रखती है प्रकट है कि हर मनुष्य खाने पहनने और मकान वग़ैरह की आवश्यकता रखताहै और कभी ऐसा होताहै कि मनुष्यकेपास कोईवस्तु होती है और वह मनुष्य दूसरी वस्तु की इच्छा रखताहै जैसे किसी के पास कपड़ाहै औरवह गेहूंकी आवश्यकता रखता है और गेहूं वाला अपनी बेपरवाई से कपड़ेसे बदला नहीं करता तो इस दशामें अवश्य हुआ कि कोई ऐसी चीज़ पैदा कीजावे कि जिसको दोनोंकी इच्छा हो सो ईश्वरने अशर्फ़ी आदि उत्पन्न कीं जो हर एकके लिये बरा‑ बरहैं और सब लोग उससे बदलाकरतेहैं इसीलिये इसको ईश्वरने गाड़ने और ख़ज़ाना करने से निषेध किया है जैसे लिखा है कि जो लोग चांदी और सोनेको संग्रह करते हैं और उसको ईश्वर निमित व्ययनहीं करते तो ऐहमारे रसूल उनलोगोंको आज्ञादो कि तुम्हारे लिये परलोकमें बड़ा दुःख तय्यारहै और ईश्वरने इस बचनसे कोप के संग्रह करने वालों को भयदिया है क्योंकि सोने और चांदी के उत्पन्न करनेसे तो प्रयोजन यह था कि लोगोंकी आवश्यकता दूर हो तो जोमनुष्य गाड़ताहै मानो वह ईश्वर की आज्ञाको झूठाकरता

है और जानना चाहिये कि सोने की प्रतिष्ठा कुछ उसकी कमी के सववसे नहीं है क्योंकि सोना सदा जिन खानोंसे निकालाजाता है वहां किसी प्रकार की हानि नहींहोती जितना चाहे निकाले बराबर निकलता रहेगा सिवाय तांबे और लोहे के कि यह दोनों नष्ट हो-जाते हैं और सोनेसे कमनिकलते हैं परन्तु सुवर्णकी प्रतिष्ठा उसके गौरवसे है कि यह संसारी कार्यों के प्रबन्ध के लिये नियत है अर-स्तातालीसने सुवर्ण के स्वभाव में लिखा है कि मन का बल कारक और मिर्गी को दूर करने वालाहै यदि इसका गंडा बनादें फफोले कोगुणकरे यदि इसकी सलाई बनाकर सुर्मालगावें आखोंमें ज्योति अधिक होतीहै और ज्योति का बलकारकहै जो कोई कानकी लोल को सोनेकी सूईसे छेदकरे तो वह छेद बन्द न होगा जिसमनुष्यको सोना गर्म करके दागदें बहुत जल्द अच्छा होजायेगा और कोई घाव की दशा उत्पन्न नकरेगा शेख रईस ने लिखा है कि सोने को मुंहमें रखना मुखकी दुर्गंधिको दूर करताहै और मानसी पीड़ाऔर उन्माद रोगको गुणकारी है(चांदी) यहभी सोनेके निकट है यदिइ-सको पकने के पहले शर्दी पहुंचे तो निश्चय है कि सोना बनजाय चांदी आगमें जलकर भस्महोजातीहै और मट्टीसे सड़जाती है परंतु बहुत समयमें अरस्तूने लिखा है कि चांदीमें मैलहोता है और सोने में नहीं होता यदिचांदीको पारे या रांगेकी गन्ध पहुंचे तो टूटजाती है और गन्धक की गन्ध से काली पड़ जाती है इसके स्वभाव में लिखा है कि इसके खाने से चिपकने वाली तरी दूर होती है और मुखकी दुर्गंधि नाशहोती है और खुजली मूत्रके कठिनतासे उतरने और उन्माद रोगोंको गुणदायक है यदि पारेके साथ मिलाके मलें तो बवासीर को दूर करे (तांबा) यह चांदी के निकट है सिवाय सुर्खी और खुश्की के और अन्तर नहीं इसकी सुर्खी गन्धककी गर्मी के कारण है और खुश्की मैल की अधिकता और मोटापन मादे से है तो जो कोई इसको नर्म और सपेद करना चाहे तो उसकी इच्छा पूर्ण होगी अर्थात् चांदी होजाता है अरस्तू के विचार में सुर्ख रंग

का तांबा उत्तम होता है और जो स्याही लिये है वह बुरा है यदि इसको खटाई में छोड़दें तो जंगार बन जाता है जो कोई तांबे के बरतन में खाया पियाकरे उसके नानाप्रकार के रोगहोंगे जिनकी औषधि न होसके जैसे पीलपांव और वह बुरा फोड़ा जो पीठ में नेवलेकी तरह पर होताहै और हृदय की पीड़ा और तिल्ली और प्राकृतिक उपद्रव यदि उसके बर्त्तनमें खटाई या शराब या मिठाई रखकर खायें और एकरात दिन उसकेबर्तनमें किसीप्रकार भोजन रखकर खावें तो वह मनुष्य मरजावेगा (लोहा) यह भी ऊपर लिखीहुई धातोंकी तरहपर पैदाहोतीहै परन्तु इसमें समता नहीं है क्योंकि इसका माद्दा अर्थात् मूल गंधक और पारेका मैलहै इसका रङ्ग गन्धक की गर्मी से काला होता है परन्तु इसके गुण बहुत हैं यद्यपि यह सबधातोंसे मोलमें कमहै पर ईश्वरका वचनहै कि इस कीसख़्ती गांसीमें है और उसके लाभ सब हथियारोंमें हैं कहते हैं कि कोई ऐसी कारीगरी नहीं है कि जिसमें किसी प्रकार से यह लोहानहो लोहा तीन प्रकारका है साबूरकां १ अनीस २ ज़कर३ अरस्तू ने इसका स्वभाव इसरीति से लिखा है कि इसके बुरादे का गण्डा बनाना जो मनुष्य कि स्वप्न में बरोता हो उसके लिये गुणकरे अरस्तू के सिवा और मनुष्यों ने कहाहै जो मनुष्य थोड़ा लोहा अपनेपास रक्खेगा उसका मन दृढ़ और निर्भय रहेगा उस कादुःस्वप्न देखना दूरहो लोगों के मनों में उसका भय हो इसके सुरमें से आंखों का मैल दूर होजाता है पलक के गिरने को गुण दायक है और नेत्रोंकी पीड़ाकोलाभदे रतौंधी और शिरकीबीमा- री भी दूरहोती है इसकारङ्ग बवासीर को गुणदायकहै और इस का बुझायाहुआ पानी तिल्ली और मन्दाग्निको लाभकरे यदिलोहे कीमेख गर्मकरके तलवारको सैकलकरें तो उसमें कभीजङ्ग न लगे गा (क़लई) अरस्तूने लिखाहै कि यहचांदीका बदलाहै परन्तुइसके मूलमें तीन ख़राबियां हैं दुर्गन्धि १ नर्मी २ मैल ३सो तीन ख़रा- बियोंमें धरती के भीतर रहताहै जैसा कि किसीलड़के को मांके पेट

में कोई ख़राबी पड़जातीहै तो उसलड़के में उपद्रव और जोड़ों की क्षीणता आदि होजाती है कहतेहैं जो मनुष्य उसकी हसलीबनाकर दरख़्त की जड़ में पहनादेवे तो उसवृक्ष के फूल और फल न झड़ेंगे और जो उसकी तख़्ती बनाकर छाती पर रक्खे तो स्वप्न प्रमेहरोग (अर्थात् जिसको स्वप्नमें बीर्य निकले) दूर होजायेगा यदि क़लईका टुकड़ा डेगचीमें छोड़देवें तो भोजन कच्चा रहेगा यह धातु सूर्यकी गर्मीसे भी गलती है परन्तु केवल अग्नि की गर्मी से जलतीहै यदि उसको नमक और तेलमिलाकररगड़ें और जोस्याही उससे निकलै तलवार आदि जिसप्रकार के लोहेमें लगावें ज़ंग न लगेगा (शीशा) यहरांगेसे बुराहोता है कारणयहहै कि इसमें मैल अधिक होताहै इसमें यहगुण है कि सोनेको गलाता है और हीरे को तोड़ता है यूंतो हीरे को निहाई हथौड़े से भी लाख यत्न करे न टूटे गा वरन हथौड़े या निहाई में घुसजावेगा और जो शीशे पर रखकर थोड़ीसी चोटदें तुरन्त दोटूक होजाय शेख़रईस लिखता है कि इसकी तख़्तीबनाकर बांधना कंठमाला औरगदूद और जोड़ोंके घाव को गुणकरें और कामदेव की अधिकताके ठहरानेवाला और स्वप्न प्रमेहको दूरकरताहै (अलहारसेनी) यहभी उन्हीधातुओंकी सदृश पैदा होता है उसकी खान चीनमें है रंगउसका स्याही और सुर्खीलियेहै बहुधा इसकीगांसबनाते हैं वह बहुतदुःखःदायीहोतीहै इसके कांटेसे बड़ी २ मछलियां शिकार होसक्ती हैं क्योंकि इसके कांटे में यह प्रभाव है कि जिसवस्तुमें अटकावें फिर बड़ीकठिनता से अलगहोताहै उसकाशीशा बनाकर और क़लईकरके अंधियारे घरमेंरखकर उसपर दृष्टिकरना अर्द्धाङ्गरोगको अति गुण दायक है इसके मोचने तीनबेर जहां के बाल उखाड़ें और वहांपर तेलमलदें फिर कभी बाल न निकलेंगे॥

दूसरा प्रकार पत्थरोंका वर्णन॥

यह पत्थर वर्षा और पृथ्वीके तरीके प्रभाव से उत्पन्न होते हैं सूर्यकी गर्मी ऐसे पत्थरों में अधिकतर प्रभाव रखती है इसके दो

प्रकारहैं (प्रथम)यहकि जिस समय वर्षा का जल या तरीकानों या गढ़ोंमें इकट्ठा हो जातीहै और उनमें कोईखण्ड मिट्टी का मिलजाता है तो जब कानकी गर्मी उसमें पहुंचतीहै और वह जल बहुतसमय तक उस स्थानपर ठहरता है तो वह जल पत्थर की तरह बहुत सफाईसंगीनी और मोटाईकीतरफ़ झुकजाताहै और उससेकठोर२ ऐसे पत्थर बनजातेहैं जिनमें आग और पानी अपना प्रभाव नहीं कर सक्ता जैसे याकूत आदि और उनके रंगोंका फ़र्क़ खानकीगर्मी के सबबसे होताहै और थोड़ीसी गर्मी और सर्दी में फ़र्क़ होजाताहै कई मनुष्योंका बचनहै कि रंगके अन्तरका कारण यह है कि ग्रहों के अनुसार रंग होजाताहै जैसे कि काला रंग शनिश्चर के प्रभाव से और हरा बृहस्पति और लाल मंगलसे और पीला सूर्यसे और नीला शुक्रसे और जंगाली बुधसे और सपेद चन्द्रमासे (दूसरा प्रकार) यूं है कि पृथ्वी और जलके मिलनेसे पैदाहों और जो कि धरतीमें एकप्रकारकी लसहोतीहै और सूर्यकी गरमीने उसमें एक समयतक प्रभावपहुंचाया जैसा कि आग कच्चीईंटमें प्रभावकरजाती है अर्थात् उसको पक्कादेतीहै इसीप्रकार यह पत्थर अन्य२ प्रकार के होतेहैं और अन्य२ होनेकाभी दृष्टान्त ईंटसे देना पूराहोगा जैसे सेवरी—पक्की—ठर्रा होतीहै क्योंकि उसका होना आंच पहुंचने पर है इसी तरह पर इन पत्थरों का आपस में विरुद्ध होना स्थान के स्वभावपर समझागयाहै जैसे खारीपृथ्वीसे नमक और गेरू और फिटकरी उत्पन्न होते हैं यदि पृथ्वीमीठे स्वादकीहो वहांपरकेवल फिटकरी हर प्रकार की लाल पीली और सपेद पैदा होतीहै यदि कंकरीली या पथरीलीधरतीहै तो वहां केवलपत्थर पैदाहोगा कई स्थान ऐसेदेखेगयेहैं जहां केवल उस स्थानके गुण से पानी पत्थर होजाताहै कईस्थानऐसेहैं कि उनके उचानसे पानीकीबूंदोंकीफुहार हुआ करतीहै यदि उन बूंदोंको इससे पहले कि धरतीपर न पहुंचे हाथमें लेलेवें तो पानीका पानी बनारहेगा यदिवह धरतीपर गिरा तो पत्थर होजाताहै (कहानी) लिखतेहैं कि बाज़े जगहमें ईश्वर

ने पशु और स्थावरको पत्थर बना दियाहै तो सम्भव है कि ऐसा हो और उसकावर्णन इसतरहपर है कि ईश्वरने उस धरतियोंमें ऐसीही शक्ति रक्खीहै तो जबवहांके मनुष्योंपर क्रोधी हुआ तो वहां की धरती से कुछ इस प्रकारकी बाफें उठीं जिनके प्रभावसे वहांके जीवधारी पत्थर होगये शेखुलरईसने लिखाहैकि मैं जाजूममें था एक गोल पत्थर दिखाई दिया जिसके किनारे साबित थे और बीच उसका कुछ गहरा जैसा कि रोटीका गिर्दा होता है और उसकी पीठपर रेखाओं के चिह्न प्रकट थे जैसा तन्नूरी रोटियों पर होती हैं सो इन चिह्नों के द्वारा यह दृढ़ विचार हुआ कि यह निस्संदेह गिर्दा रोटीका होगा जो यहांके प्रभाव से पत्थर होगया—प्रगट है कि कानोंके जौहर असंख्य हैं उनमें से कुछको मनुष्य पहचानते हैं तो कई प्रकारों का वर्णन इस पुस्तकमें किया जाता है—बाज़े जवाहर ऐसे हैं जिनका प्रभाव बहुत अद्भुत है कई ऐसे कठोरहोते हैं कि न आगसे जलें न उनको लोहेसे कुछ हानिहो जैसे याक़ूत के प्रकार और कई ऐसे नरम हैं कि पानीसे घुलजाते हैं जैसे नमक और फिटकरी आदि बाज़े वृक्षके सदृश होते हैं जैसे मूंगा कई पशुओं से प्राप्त होते हैं जैसे मोती बाज़े वायु से उत्पन्न होते हैं अर्थात् ओले जो बादल और बिजली के साथ प्रकट होते हैं बाज़े पानी या मिट्टी से बढ़ते हैं कई मनुष्योंकी कारीगरीसे होते हैं जैसे सोने चांदीका मैल और ज़ंगार—बाज़े ऐसे दोपत्थर होते हैं कि परस्पर प्रीति रखते हैं जैसे सोना और हीरा हीरे का यह प्रभाव है जो सोने के पास लेजावें तो तुरन्त एक दूसरसे चिपकजावें यहभी कहते हैं कि हीरा सोनेकी खानके सिवा और स्थानपर नहीं पायाजाता कई ऐसे होते हैं जिनमें अधिकतर आकर्षण शक्तिहोती है जैसे लोहा चुम्बक पत्थर और यह दोनों आपसमें बहुत चिमटते हैं यहां तक कि जब लोहेको चुम्बक पत्थरकी गन्धमिली तुरन्तही उसको खींचता है जिसतरह से कि प्रीतम अपने प्यारेको गोदमें खींचताहै बाज़े ऐसे दोपत्थर होते हैं जिनकी परस्पर शत्रुताहै जैसे कुरंड कि वहसब पत्थरोंको काटता

है और सुधारता है जैसा कि हीरा जो सम्पूर्ण प्रकारके पत्थरोंको छेदता है परन्तु शीशेसे आप टुकड़े होताहै बाज़े ऐसेहैं जिनको साफ़ करनेकी शक्ति है जैसे नौसादर जो सम्पूर्ण प्रकारके पत्थरों को मैल आदिसे शुद्धकरताहै संक्षेप यहहै कि अब इस स्थानपर थोड़ा थोड़ा सा हाल हरएक प्रकार के पत्थरों का लिखा जाता है(असमद) सुरमे का पत्थर है अरस्तूने लिखा है कि यह प्रसिद्ध पत्थर है इसकी बहुत खानेंहैं इसके उत्तम प्रकारोंमें अस्फ़हानी हैं और इस पत्थरमें रांगे का भी संयोग होता है इसके सुरमें का यह स्वभाव है कि नेत्र को हरप्रकार का गुण होजाताहै और ढरकेको गुणदायक और पलकों को और नेत्रकी पीड़ाको नष्ट करता मुख्य करके बुड्ढोंकी आंखको बहुत गुण कारी है अब्दुल्ला के पुत्र जाबिर ने लिखा है कि पैगम्बर साहब का बचन है कि असमदको सदा काममें लाओ कि असमद के सुरमा लगाने से पलकें बहुत उगती हैं और मज़बूत होती हैं और ज्योति अधिक होती है यदि कुछ कस्तूरी भी उसके साथ अधिक करलेवें तो बहुतही लाभदेगा यदि असमदको चरबी के साथ मिला कर जलीहुई जगह पर लगावें तो बहुतही गुण देता है (अरमियों) यह पत्थर रूममें पैदाहोताहै इसके पांचकोने होतेहैं यदि इसके हज़ार टुकड़े करें तौभी हरएक टुकड़ा पांच कोने काहोगा जो मनुष्य इसका सुरमा लगावे उसकी आंख हर उपद्रवसे रक्षित रहेगी जो कोई इस पत्थर को अपने पास रक्खें तो अधिष्ठाताओं की दृष्टिमें प्रिय होगा इसकी पहचान यहहै कि इसमें सपेदरंग नीलाई लीहुई रेखा होती हैं॥

(अस्फ़ेदाज़) यह क़लई की राख है और इसी को सफ़ेदा का) शग़री भी कहते हैं यदि इसको औषधि में मिलाकर लगावें आंखों की पीड़ाको गुणकरे यदि इसको अच्छी तरह पर जलावें तो जस्त होजाता है इसको सांपके काटेहुये पर लगाना बहुत गुण करे ज- लानेके समय इसकी गन्धसे हटना चाहिये कि बहुत दुःखदायी है लीनाशने खवासकी किताब अर्थात् स्वभावकी पुस्तकमें लिखाहै

यदि इस्फ़ैदाजको चचेंड़ेके जलमें जो ककड़ी के प्रकार से होता है घोलें और मकान में छिड़कें उस मकान से मच्छड़ दूर होजावेंगे अरस्तूने लिखा है इस्फ़ैदाज़ शीशे को सिरके में मिलाकर आंख में आंजना आंखोंकी सफ़ेदीको गुणदायकहै सड़ेहुयेमांसको दूरकरता और नवीन मांस निकालता है और उसके मरहममेंयहभी गुणहै कि दाहको लाभदे और अच्छेहुये घावके दाग़को अपने मूलरूपमें लाता है (आफ़रबख़्श) अरस्तूके विचारमें यह पत्थर हरतालकी खानोंमेंमिलता है उसका गुणहै कि जो उसकी भस्म एकमिस्काल अर्थात् साढ़े चार मासे भरके बराबर लेकर पचास मिस्काल सुर्ख़ तांबे में छोड़दें तुरन्त सपेद करदेगा यदि इसको चूनेमें मिला कर लगावें बालोंको गिरादेगा यह पत्थर हरतालसे अधिकतर तेज़ है इसको घिसकर सूजनमें लगाना गुणकारी है ॥

(अक़्लैमियायज़र)अरस्तूने लिखा है जो सोनेका बुरादा किसी पत्थरके बुरादेमें मिलजाय तो औषधियोंकी शक्तिसे उसको अग्नि पर रखकर सोना अलग करते हैं उस समय सोना नीचे बैठजाता है और वह बुरादा पत्थर का ऊपर आजाता है परन्तु कालेरंगका और शीशेके सदृश चमकता हुआ उसको अक़्लीमियायज़र कहते हैं आंखोंकी पीड़ा और उसकी सफ़ेदीको दूरकरताहै और आंखकी तरीको भी गुणकारक है और लोगोंके विचारमें मोतियाबिंद प्रारम्भको भी गुणदायक है और आंख के नासूरको भी लाभदे और मैल साफ़ करता और बदगोश्तको दूरकरता और दाह बिना घाव को सुखाताहै (अक़्लीमियाय नुक़रा) अरस्तू ने लिखाहै कि जब अक़्लीमियायज़र की रीतिपर इसकोभी अग्निपर रक्खें उसीतरह से उसका स्वरूप निकलता है जिसको अक़्लीमियायनुक़रा कहते हैं कि इसको तेलों में मिलाकर घाव वग़ैरह पर लगाना गुणदायक है अरस्तूके सिवा और हकीमों के बिचारमें नेत्र पीड़ा को गुण करे और इसका मरहम घावके भरनेमें जल्दी गुण करता है (बाहत) यह सपेद पत्थर बहुत ख़ूबीसे चमकता है जब मनुष्यकी दृष्टि इस

पर पड़े अपने आप हँसीआतीहै यहां तक हँसताहै कि जान निकल जातीहै कहते हैं कि इस पत्थरमें चुम्बक पत्थरका सा प्रभाव मनुष्य के लियेहै एक कहानी है किसी हब्शके शहरोंमें इसकी एकदीवार है जो मनुष्य उधरजाताहै और उसकोदेखताहै वह हँसते२ उसीमें जामिलताहै यहभीकहतेहैं कि उसीशहरमें इसीपत्थरकाएकखम्भा है वहभी अपने साम्हनेवालेको खींचलेताहै और जिसकी दृष्टि उस पर जापड़े हँसी प्रबलहोजातीहै कहतेहैं कि एकपक्षी फरफीर नामी गौरय्यासेकुछ छोटा कालेरंगका लालआँखें और लालहंसली और लालपांव कियेहोताहै जब वहपक्षी उसखम्भेपर आबैठताहै तबवह पत्थर झूठा पड़ जाताहै (बसद) अर्थात् मंगेकीजड़ इस पत्थर का वृक्षदरियामें उगताहै जिस तरह कि पृथ्वीपर दरख़्त उगाकरते हैं इनका रंग सपेद सुर्ख़ पीला और काला होता है लहू टपकने को गुण करे और इसका सुरमा नेत्रको बलदे और आंखके पानी बहनेको दूर करता है और मनका बल कारकहै और मूत्र के बन्द होजाने में गुणकरे मिर्गी वालेको लाभदे उचितहै कि मिर्गीवालेके गलेमें यन्त्र बनाकर डालें (बिल्लूर) अरस्तूने इसको शीशेके प्रकार में लिखाहै परन्तु यह शीशे से बहुत सख़्त होताहै और इसकी उत्पत्ति खानसे होतीहै बिल्लूर एक उत्तम प्रकार का शीशाहै बहुत साफ़ और सख़्त और याक़ूत के रंगकासा है बादशाहों के पास उसके बरतन होतेहैं क्योंकि उनमें बहुत गुण होते हैं यदि बिल्लूर को सूर्य्यके सामनेकरें और काला कपड़ा या रुई उसके पीछे लगावें तुरन्त आग निकल आवेगी तो जो चीज़ चाहो उससे जलालो बिल्लूरके छः प्रकारहैं एक ऐसा प्रकारहै जिसकी सफ़ाई कुछकम होतीहै और देखने में नमककी तरह पर मालूम होताहै जब इस पत्थर को बुझाये हुये लोहेमें रगड़ें तुरन्त आग निकलेगी बहुधा बादशाही गुलाम इसको आग निकालनेके वास्ते अपनेपास रखते हैं अरस्तूके सिवाय और बुद्धिमानों ने लिखाहै कि काले रंग का बिल्लूर दांतोंकी पीड़ा वालेके पास रहना बहुत गुणदे (बोरक)

(अर्थात् कचलोन) यह धरतीके भागों का खारीपन है और नमक की तरहपर निकला करताहै परन्तु नमकसे अधिक प्रबलहै और उसकेप्रकार बहुत होतेहैं जैसे तनरून और उसको कारीगरीकरके चूनेकीतरहपर बनातेहैं जिसको तिन्कार कहतेहैं इसेहिन्दुस्तानसे लातेहैं और यह मुख्यकर उसीस्थानमें होताहै जहां मुर्दोंको जलाते हैं और यहप्रकार बहुत प्रिय होता है इसे बौरक़ जराबिन्दी सुर्खी मायल बौरक़ खुबाज़ैन बौरक़ किरमानी और बौरक़ मगरबी कहते हैं कि यह प्रकार पश्चिम के वृक्ष से प्राप्त होताहै इसका गुण यह लिखाहैकि जो हम्मामनें थोड़ीदेर बैठकर झाईंपर इसको लगावें तो तुरन्तही उक्तदाग़ दूरहोजायेंगे यदि किसीकेकण्ठमें जोंकलटक गईहोतो बौरक़को सिरकेमें मिलाकरकुल्लीकरें तुरन्त जोंक निकल जायेगी यदि बौरक़को सिरकेमेंघोलकर उसकेअन्दर मुर्ग़ का अण्डा रक्खेंतो उसकी छालदूरहोगी अरस्तूके विचारमें बौरक़बहुतप्रकार का होताहै जिनमें कई बहती नदीमें पैदाहोतेहैं और बाज़े पत्थरों की खानमें होतेहैं बाज़े उनमें से सपेद सुर्ख और ख़ाकी रंग होते हैं सिवाय इनके और बहुतसे रंगका होताहै सो जब उसको किसी बरतनमें रखकर उसपर सिर्का छोड़ें तो बिना आगके उबाल खाता है और बौरक़ सब खानकी चीजों को नर्म करदेताहै और गलाता है अरस्तूके सिवाय और लोगों का विचारहै कि बौरक़ से खुजली कोढ़ और वह रोग जिसमें सपेद और काले दाग़ शरीर में प्रकट होते हैं गुण पहुंचाता है और फोड़ों को पकादेता है और कान के भारीपन को लाभदे और जलंधर वालेको अंजीरके साथ खाना बहुतही उचित है और आंखकी पुरानी सपेदी को दूर करसक्ता है और नेत्रपीड़ा को गुणकरे यदि मरहम बनाकर लगावें घावों को भरताहै (बेहादक़) अरस्तू ने लिखा है कि उसका रंग सुर्ख होता है और पूर्वके शहरों में उसकी खानहै जब इसको खानसे बाहर निकालतेहैं काले रंगका होजाताहै और जब इसे कारीगर लोग साफ़ करतेहैं तो इसका रूप दूना होजाताहै जो मनुष्य इसपत्थर

की बीस जौ भरकी अँगूठी बनाकर अपने पासरक्खे वह भय देने वाले स्वप्नों से बचा रहेगा जो कोई बेहादक़ को सूर्य्य के सामने रखके दृष्टिलड़ावे तो नेत्रके ज्योतिकीवृद्धिहो और यहपत्थर घास फूसको कुहरबा की तरह अपनी ओर खींचता है यहां तक कि जो कोई मनुष्य अपने बालों में लगाकर सोरहै तो जितनी घासफूस उसके शिर के पास होगी वहसब उसके बालों में लिपट जायेगी (तदीर) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर पश्चिम में नदीके किनारे पैदा होताहै और सपेद रंगका होताहै और सिवाय यहां के और जगह नहीं मिलता इसका गुण यहहै कि जो मनुष्य इसको सूंघे तुरन्त ही उसका लहू सूखकर मरजाय-- (तन्कार) अरस्तूने लिखा है कि यह पत्थर नमकके प्रकारसे होताहै और उसमें कचलोनका स्वाद मिलताहै नदी किनारे खानोंमें पाया जाताहै सोनेके गलाने और नर्म करने में सहायक है और कीड़े खाये हुये दांतों को लाभ करै कीड़ोंको मारकरदांतोंकी पीड़ाशान्तकरताहै औरदांतों को बहुत साफ़ रखताहै दांतों के हरप्रकारकी पीड़ाकोगुण करताहै (तूतिया) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थरहै इसकारंग सपेदपीला और सब्ज होताहै और कुछ सुर्खी लिये होता है इसकी खानें सिन्ध और हिन्दकी नदियों में होतीहैं इसकी हरप्रकार आंखोंकी तरीको गुण दायक है बगलकी बदबू को नाश करती है अरस्तू के सिवाय और लोगोंने लिखाहै कि तूतिया एक प्रकार का तेलहै कि तांबा साफ़ करनेके समय पत्थर और रेतके द्वारा निकलता है जो कि उस सोने में मिली होती है आंखों की पीड़ाको भी नष्ट करता है (जालिबुन्नूम) अरस्तूने लिखाहै कि यहपत्थर बहुतसुर्ख और रंग का साफ होताहै जो इसको दिनमें देखे तो ऐसा मालूम होताहै कि धुवांऐसा निकलरहाहै और रातको ऐसा प्रकाश होता कि उसके और पासकी चीज़ें दिखाई देतीहैं और यदिइस पत्थर को सात माशे भी जिस मनुष्यके शरीरमें पहना दें वहतुरन्तही सोजावेगा यदि सोतेहुये मनुष्यके शिरहाने रखदें जबतक उसे अलग न करें

कभी न जगेगा यदि चकत्तोंपर मर्दनकरे गुणकरे (जज़ा) यह कई प्रकारका होताहै इसको यमन या चीनके शहरसे लातेहैं यमनका पत्थर बहुत उत्तम होताहै और इसका रंग बहुतकाला और सपेद होताहै चीनके रहनेवाले उससे ग्लानि रखतेहैं उनमेंसे एक जाति मुख्य करके ऐसीहै जो इसको खानोंसे निकाल कर चीन शहर के सिवाय और शहरों में लेजाकर बेचते हैं और जीविका प्राप्तकरते हैं और यमन के बादशाह इसकोन तो अपने ख़ज़ाने में रखते न गर्दनमें लटकाते हैं यदि भूलकर भी कोई मनुष्य इस पत्थर को उठाकर अपने पास रक्खे तो बहुत दुःखी हो और भय देने वाले स्वप्न देखे उसकी इच्छा सिद्ध न हो जो लड़कोंको पहनादें तो उस कीराल बहुतबढ़े और वह बहुत रोवेगा और भयमानहोगा यदि उसको घिसकर पिये तो नींद उड़ जायेगी और भयमान दुश्शील और कठोर होगा याक़ूतको इसीसे साफ़ करतेहैं तो उस में बड़ी बर्राक़ी और प्रकाश आजाताहै अरस्तू के विचार में इस पत्थरको प्रतिसमय दृष्टिके सामने रखना बहुत शोकवान् और दुःखी करता है यदि इसको किसी अज्ञान जाति के बीचमें रखदें तो अवश्य करके उनमें वैरहोगा और जब तक यह लड़ाई उठाने वाला पत्थर बीच में रहेगा शत्रुता बनी रहेगी यदि गर्भवती स्त्री इसका यन्त्र बनावे प्रसूतिकी पीड़ासे आरामपावे और पासरखने से भी शीघ्र प्रसूत होताहै (हामी) यहपत्थर बहुत सुर्ख़ काले नुक़ते रखताहै इसको हिन्दके शहरोंसे लातेहैं जो मनुष्य इसको पावे और उसके काले बिन्दुओं की सफ़ाई करडाले तो वह लाल होजावेगा जो उस समय गलेहुये तांबेपर छोड़ें वहभी सुर्ख़रंग स्वर्णवत् होगा यदि इसको नाकमें टपकावें अर्द्धाङ्ग रोगको गुण करे--हज़रत बलेनास ने अपने गुणों की पुस्तक में लिखाहै कि जब ऊंट बहुत चिल्लावे उसके गले में इसको बांध दे वह तुरन्तही चुप होजावेगा और साहब फ़लाहानेलिखाहै कि जिसपत्थरमें स्वाभाविक छिद्रहो दुरुस्त करे जो इसको किसी दख्तमें लटकादें तो उसमें फल बहुत

होगा और कोई खराबी उस फलपर न आवेगी (बैज़ पत्थर) अर-स्तूने लिखाहै कि जो मनुष्य इसपत्थरको छीले जो छीलन उसकी पीली निकले तो उसका अद्भुत प्रभावहै कि जिसमनुष्यके पासहो चाहे वह सच कहे या झूठ सब लोग अंगीकार करेंगे यदि छीलन लालहो तो उसके रखने वाला जो क्रिया करे सिद्धहो यदि छीलन नीले रंगकीहै तो जिस बातके लिये वह किसीके लिये पापकी क्षमा ईश्वरसे चाहे अंगीकारहो, यदि छीलन आसमानी रंगहै तो उसके पास रखने से वह मनुष्य सर्वदा प्रसन्न रहेगा यदि छीलन का रंग सब्ज़है तो उसको बागमें लटकाना बहुत गुणकारीहै कि तुरन्त बोयेहुये बीजको हरा करता है यदि कोई मनुष्य हलाहल बिष पान करगयाहो वा सांप बिच्छूने काटाहो तो उसे उचितहै कि इस पत्थरका यन्त्र बनावे या उसको धोकर पीजावे तुरन्तही बिष उतर जावेगा (अहमर पत्थर) अरस्तूने लिखाहै कि यहपत्थर सुर्खहै इसको भी छीलतेहैं यदि छीलन उसकी सफ़ेद रंगकीहोतो जो मनुष्य उसको अपने पासरक्खे जो कार्यकरै सिद्धहो और उसका रंग कालाहै तो उसके रखनेवालेका जिस बस्तुको मन चाहेगा तुरन्त प्राप्तहोगी पीले रंगका डंडपर बांधना सृष्टिकी दृष्टिमेंप्रिय करताहै यदि मट्टीकी रंगतका हो तो उसका स्वभाव यहहै कि हर एक कार्य सफलहो यदि सब्ज़रंगहो तो जिसके पासहो उस पर हथियार काम न करेगा (ख़िज़्र पत्थर) अरस्तूने लिखाहै कि पत्थर सब्जहोता चाहिये कि उसको भी छीलें यदि उसकी छीलन सफ़ेद निकले अपने पासरक्खे और जो वृक्षबोदे अथवाखेतीका कामकरे उसकी ज़ड़में इस पत्थरको घाससे ढांकदे इस क्रिया से वह उत्तम प्रकार हराभरा होताहै यदि काली रंगतकी हो तो हरओरसे उसके लिये भलाइयों का समूह तय्यारहोगा और पीले रंगमें यह गुणहै कि जो मनुष्य उसको अपने पास रक्खे उसको जो औषधिदीजायेगी गुणकरेगी यदि सुर्खरंग है तो बहुतसे पारितोषिक धनवानोंसे उसे मिलेंगे और लोगों में प्रिय होगा तो कोई ऐसा रोग न होगा जो

सको औषधिसे आराम न पावे (अरमनीपत्थर) इसपत्थरमें कुछ
लाजवर्दपन होताहै बहुधा ऐसाहोता कि मुतअव्विरलोग लाजवर्दके
बदले इसको काममेंलाते हैं इसकेगुणोंमें लिखाहै कि सौदा अर्थात्
जलेहुये दोषको निकालदेताहै और इसका नक्शधोनेसे नाश नहीं
होता (आसमांजूनी पत्थर) अरस्तूने कहा है कि जब इस पत्थरको
छीलें जो उसकी छीलन सपेद रंग निकले तो जो कोई उसकोपास
रक्खे वहकभी दुर्बुद्धिनहोगा नउसके पास शोक और दुःख आवेगा
यदि उसकाकालारंग प्रकटहो तो जोकोईउसको अपनेसाथरक्खेगा
उसका काम जारी न होगा यदि पीलेरंगका हो तो हरएक कामको
सुधारनेवाला होगा यदि उसको किसी नदी या कुयेंमें छोड़ें तो उ-
सका जल कम होजायेगा किन्तु पानी निकलना बन्द होगा यदि
छीलनकी रंगत सुर्ख हो तो उसका रखनेवाला हर एकसे भलाई
पावेगा यदि सब्ज़ रंगहो तो उसका रखने वाला जहां कुछ बोदे
वहांके वृक्ष आदि उत्तमतासे प्रकटहों यदि पीलेरंग का है तो उसका
काम सदा जारी रहेगा (असफंनजपत्थर) शेखरईसने कहा कि यह
पत्थर खोखला है नमदे की तरह पर कहते हैं कि एक जीवधारी
पानी में रहता है और जिस चीज़को पाताहै लिपट जाताहै इसके
पेटमें एक पत्थर होताहै कि वह अति प्रियहै उसका गुण यह है कि
पथरी को टुकड़े २ करताहै (असवदपत्थर) अरस्तू लिखता है कि
यह काला पत्थर है जब इसको छीलें तो जो उसकी छीलन सफ़ेद
हो तो सांप और बिच्छूको बहुत गुण करे और जिसकेपास पीलेरंग
काहो तो वह दीन नहीं होताहै या जिसमकान में हो वहां के स्त्री
पुरुषरोगोंसे शान्तिपाते हैं और कभी बीमार नहींहोते हैं कालेरङ्ग
का गुणयहहै कि जिसके पासहो उसके सम्पूर्ण कार्यसिद्धहों और
बुद्धि में वृद्धि प्रकटहो यदि सब्जरंग है तो उसको डंकमारने वाले
जानवर कभीदुःख न पहुंचावेंगे (असफरपत्थर) अरस्तू ने लिखाहै
कि जो पत्थर पीलाहै और उसको छीलें यदि उसकी छीलन सफ़ेद
हो तो उसका पास रखनेवाला जो कुछ जिससे मांगे वह हासिल

हो यदि सब्ज़रंग निकले तो जिसकार्य के वास्ते वह यत्न करेगा वह शीघ्रही सिद्धहोगा यदि सुर्खहो तो उसका भी यहीस्वभाव है यदि कालेरंग का हो तो प्यारा उसका उसके आधीन होजावेगा और जबतक वह पत्थर साथ रहेगा उसका प्याराकभी उससे अलग न होगा (अगवर पत्थर) अरस्तू ने कहाहै कि जो पत्थर खाकी रंग हो और उसकी छीलन सफ़ेदहो तो जिसमनुष्य के नामसे उसको आगेकर अपनी आंखों में सुरमा लगावे वह मनुष्य उस पर कृपा करेगा यदि छीलन काली निकले तो जो मनुष्य उसको नेत्रों में लगावे उसका लोग मान करेंगे यदि स्त्रियां उसको सुरमा बनाकर लगावें तो अपने पतियों की दृष्टिमें प्रिय होंगी और पीला रंग हो तो जिसके पास होगा वह शाबाशी पावेगा यदि सुर्ख रंगहै तो जिसके पास हो उसकी जीविका उत्तम होजावे यदि सब्ज रंग हो तो जिसके पास हो तो वह जिस जातिमें उठे बैठेगा बड़ा रहेगा और उसको मनुष्य बुद्धिमान् समझेंगे चाहे वह बुद्धिमान् न हो (अलब्राहपत्थर) अरस्तूने लिखाहै कि अस्कंदर रूमी ने अफ़रीका खंडकी खानमें इस पत्थर को पाया इसके गुणमें लिखा है कि यदि इसको लेकर किसीमनुष्य और पशुके बांधदें तो तुरन्त ही उसको कामदेव की अधिकता होगी तो सिकन्दरने आज्ञादीकि इस पत्थर को हमारी सेनामें न ले जावें कि स्त्रियां दुःख से बचें और बाज़े इस प्रकारके बड़े पत्थर को जो तोड़ा तो उसके अन्दर से एक हौज़कासा रूप दिखाई दिया कि जहां ऊंट खड़ा होकर पानी पीसके निदान जो मनुष्य इसपत्थरके कणको अपनी जिह्वा के नीचे रक्खे उसकी प्यास बुझजाय मिसर की धरती पर एक पत्थर होताहै जो पुरुष उसको अपनी कमरमें रक्खे भोगकीशक्ति अधिक हो और जबतक वह पास रहे कभी वह शक्ति कम न हो (बहर पत्थर) अरस्तूने लिखाहै कि यह उत्तम पत्थर नदी किनारे होताहै और पृथ्वीके उत्तम भाग और उसकी बाफ़से उत्पन्न होता है रंग उसका काला और चक्कीकी तरह सख़्तहोताहै परन्तु इतना

हलका होताहै कि डूबता नहीं उसका गुण इस तरह लिखाहै कि जो मनुष्य इस पत्थर को अपने पास रक्खे नदीमें डूबने से निर्भय रहै यदि इस पत्थर को शिकारी जानवरों के स्थानमें रखदें फिर वहांसेउठाकर *हुबारीपक्षियोंके स्थानमेंरखदें फिर वहां से उठाकर मनुष्य की कमरपर बांधें तो स्वप्नमें प्रमेह दूरहोजावेगा और अ- वासार को भी गुणकरे (हबशपत्थर) यह पत्थर हब्श के शहरोंमें पाया जाता है उसका स्वभाव यह है कि रतौंधी और आंखों की सूजन और नेत्रपीड़ा को गुणकरे और घावके चिह्नको दूर करके शरीरके वर्णके अनुसार कर देताहै (हसातपत्थर) अरस्तूने लिखाहै कि इसपत्थरमें नरमी बहुतहोतीहै और पश्चिमकी नदीसे निकलता है उसका स्वरूप चर्खेके नकलकेसदृश होताहै जोमनुष्य इसपत्थर को दशजौकेबराबर खावे तुरन्तही उसकीपथरीटूटजावे (हीतापत्थर) इसको फारसी भाषामें मारमोहरा कहतेहैं इसकीसूरत रीठेकीतरह पर होतीहै और बहुधासर्पोंके शिरपर प्रकट होताहै इसके गुण इस तरहपर लिखेहैं कि जिसे सांपने काटाहो वह मनुष्य इस पत्थरको पानी या दूधमें घिसकरघावपररक्खे तुरन्तही चिपकजावेगा और सारे ज़हर को चूस जायेगा शेखरईस ने लिखा है कि यह पत्थर सर्पके विष को दूर करता है जालीनूस ने कहाहै कि मैंने इसका यह गुण सच्चे आदमीसे सुनाहै इसकेसिवा और लोग वर्णनकरते हैं कि इसपत्थरही में विषहोता और यह कोई कालेरंग का और कोई खाकी रंग का है जिस पत्थर में रेखा होती हैं वह भूल की औषधि है बाक़ी सब प्रकार इसके पथरी के लिये गुणदायक हैं॥

(खिताब पत्थर) अर्थात् अताबीलु का पत्थर यह जो पत्थर हैं जोउसकेवोसलमें पायेजाते हैं सुर्ख और सफ़ेद तो जो मनुष्य स्वप्न मेंभयमानहो उसको लालपत्थर का पास रखना अति गुणदायक होगा और मिर्गीवालेको सफ़ेदरंगकालाभदे और कमलबायुको भी लाभ दे (दुजाज पत्थर) इसपत्थर को पालूमुर्ग के पोटेमें पातेहैं जो

* हुबारी यह पक्षी है कि मुर्गाबीकेबराबर होताहै [illegible] और [illegible]

उसको मिर्गीवाले के बांधे तो तुरन्तही आरोग्य हो और बीर्य की वृद्धिकेलिये अद्वितीय है दुर्दृष्टि के लिये तुरन्तही गुणदे जो लड़के स्वप्नमें डरतेहों जो उनके शिरहानेपर उसकोरक्खे भय जातारहेगा (रहीपत्थर) इसको फ़ारसीमें संगआसिया कहते हैं जो इसका नीचे का टुकड़ा गर्भवतीस्त्रीके बांधे कभी गर्भपात न हो और जो प्रसूति की पीड़ाके समय बांधे तो प्रसव में सुगमता हो जो उसको गरम करके सिरका छिड़कें और फिर जिसमनुष्य के लहू जारी हो वह उसपर बैठजाय तुरन्त लहू बन्दहोजावे और गर्मीकेशोथको गलाने वालाभी है (सामूर पत्थर) यह उस प्रकार का पत्थरहै जो हरएक पत्थरको छीलताहै लिखाहै कि जब दाऊदकेपुत्र सुलेमानने मक्केकी नेव डालनीचाही शैतानको पत्थर के काटनेका हुकमदिया लोगोंने उससमय पत्थरोंके कटनेका शब्दसुना और उसके शब्दसे घबरा-कर चिल्लाये सो सुलेमान ने उलमायनबीइसराईल को जिन्नोंसमेत जमाकिया और कहा कि तुममें से किसीको ऐसा उपाय स्मरणहै कि शब्दहोने के बिना पत्थर चीराजावे उन्होंने कहा कि हमनहीं जानते और यह भी कहा कि हां येजिनहैं जिसका सहरनामहै और वह आपके सामने विद्यमान नहीं है वह निस्सन्देह ऐसी विद्या जानताहै यह सुनकर सुलेमान ने उसके हाज़िर होनेकी आज्ञादी और उसने आकर विनयकी कि ऐसे पत्थर के काटने के वास्तेएक प्रकारका पत्थर है जिसको मैं जानता हूं परन्तु जहां वह होताहै वह नहींजानता हां एकउपाय मुझे यादहै तो कहा कि एकउक़ाब पक्षी का घोंसला और उसका अण्डा ढूंढ़कर लाओ तो जिनों ने तुरन्त सब संग्रह करदिया और एकप्याला सख़्त शीशे का बहुत साफ़ मँगवाकर उक़ाब का घोंसला उसमें रख दिया और आप अलग होरहा तो जब उक़ाब अपने घोंसलके पासआया और घों-सलेको शीशेके प्यालेमेंदेखा तो उसमें चुंगलमारा पर कुछ असर न हुआ उससमय वह किसी ओर गया दूसरे दिन आया उसकी चोंचमें एकपत्थर था सो उसने उसपत्थरको शीशेपर रक्खा जिस

के रखतेही वहशीशा टोटूक होगया और किसीप्रकार का शब्द न हुआ सो हज़रत सुलेमानने उक़ाबपक्षीसे पूछा कि यहपत्थरकहांसे लाया उसनेविनयकी कि इसको पश्चिमके पर्वतसे लायाहूं जिसका नाम सामोरीहै तो हज़रत सुलेमान ने जिन्नोंकीसेना उधर भेजकर आवश्यकता के अनुसार पत्थर उठवा मँगवाये और पत्थर का कटना विनाशब्दके शुरूहोगया(समपत्थर) यहपत्थर जज़े (अर्थात् सुलेमानी मोहर जो सफ़ेद और कालीहोतीहै) उसके सदृश होताहै और बादशाही कोषों के सिवाय और जगह नहीं मिलता इसका गुण यहहै कि किसी मनुष्य के पास विषहो और वह मनुष्य उस पत्थर के निकट हो तो वह पत्थर हिलता है अलीकेपुत्र वज़ीरनिज़ामुलमुल्कने सैर मलूकनामी पुस्तकमें लिखाहै कि अब्दुलमुल्कके पुत्र सुलेमानने एक दिन कहा कि मेराराज्य दाऊदके पुत्र सुलेमां के राज्यसे कम नहीं परन्तु यही न कि सुलेमां को ईश्वरने जिन्न मनुष्य वायु और पक्षियोंका भी राजा बनाया था परन्तु मेरे पास जितने माल और हथियार हैं किसी बादशाह की भाग्य में नहीं उस समय सभा के विद्यमान लोगों में से एक मनुष्य ने विनय की कि एक ऐसी वस्तुहै जिसकी आवश्यकता सब बादशाहरखते हैं और वह चीज़ हज़रतके पास नहीं है तो अब्दुलमलिक के पुत्र सुलेमांने उस चीज़को पूछा उसने विनयकी कि वज़ीर बेटावज़ीर का जैसा कि तू ख़लीफ़ा बेटा ख़लीफ़ा काहै तो सुलेमांने कहा कि तू ऐसे वज़ीर को जानताहै उसने कहा हां बरमकके पुत्र जाफ़रने वज़ारत की पदवी को कुलकी पातीसे पाया और अर्दशेर के समय से उसके घराने में वह पदवी चली आतीहै बहुतसी उसके बड़ों की बनाईहुई वज़ारत की किताबें उसकेपासहैं सिवाय उसके और कोई तेरा मंत्री होनेके योग्य नहीं है सो सुलेमां ने बल्ख़के अधिपतिके नाम आज्ञा लिखी कि जाफ़र को दमिश्क़को और प्रतिष्ठापूर्वक भेजो चाहे लाख अशर्फ़ी भी राह ख़र्च पड़ें तो जिस समय जाफ़र दमिश्क़में आया और सुलेमांके सामने पहुंचकर उसने पत्थ

चूमे तो सुलेमांने उसके स्वरूप को बहुत अच्छा पाया और अति आदर से अपने पास बैठनेकी आज्ञादी परन्तु थोड़ी देरमें सुलेमां ने मुंह खट्टा करके आज्ञादी कि मेरेपास से दूरहो और द्वारपालों ने ज़ाफ़र को आज्ञानुसार वहां से बाहर निकाल दिया लोगों को आश्चर्य हुआ कि इसका कारण विदित न हुआ निदान बादशाह ने एकान्तमें सभा होनेकी आज्ञादी उस समय एक मन्त्रीने विनय की कि हे महाराज ज़ाफ़र को खुरासां से बुलवाना और इतनी प्रतिष्ठाके साथ सभासद बनाना और घड़ी भरमें आंखों से दूर करना इसका क्या कारणहै सुलेमांने कहा यदि वह दूरसेआया न होता तो परमेश्वरकी सौगन्दहै कि उसको मारडालता क्योंकिजब वह मेरे साम्हने आया तो हलाहल विष अपने साथ रखताथा तो क्या अच्छी बात कि पहिले भेंट मेरे वास्ते वह हलाहल विष थी सो उस मंत्री ने कहा यदि आज्ञा दीजिये तो ज़ाफ़र को भी यह हाल बताऊं आज्ञा हुई कि बहुत अच्छा सो वह मनुष्य ज़ाफ़र के पास आया और वह सारा वृत्तान्त मुखपर लाया ज़ाफ़र ने कहा वास्तव में मेरेपास विषथा और इस अंगूठीके नगीनेके नीचे अभी मौजूद है इसकाकारण यहहै कि हमारे बाप दादोंपर बहुधा बादशाहोंने कोप किया और बहुतसे दुख कष्ट प्राणों पर उठाये तो मुझे यह भय रहा करता है कि ऐसा न हो कि जो हमारे बड़ों के साथ बर्ताव हुआहै वही हमारे साथभी हो इसलिये हरसमय यह विष विद्यमान रहता है कि जब ईश्वर न करे ऐसे दुःख में फसूं तो तुरन्त इस अंगूठीको चूसकर संसार छोड़दूं इस वृत्तांत को सुनकर वह मंत्री तुरन्त लौटा और सम्पूर्ण वृत्तान्त सुलेमांको सुनाया सुलेमां इस अग्रशोची का हाल सुनकर अति प्रसन्न हुये और फिर उसके हाज़िर होनेकी आज्ञादी और आदरपूर्वक अपने निकट स्थान दिया और आज्ञादी कि थोड़े तौक़ीयात लिखिये (तौक़ी उस बादशाही पत्रको कहते हैं कि कोपकी अवस्थामें लिखेजावें) तो जबएक समय बीता और ज़ाफ़र खुलाहोगया तो उसने बादशाह से विनय

को कि आपको किस तरह से मालूम हुआ कि मेरे पास विषहै सु-
लेमां ने कहा कि मेरे पास दो मोहरे यमन के मोहरे के सदृश हैं
उनका गुण है कि अगर कोई विष लेकर किसी तरह पर सामने
आवे तो वह मोहरे हिलेंगे तो जब तुम दरबारमें आये वह मोहरेहि-
ले इस चिह्नसे हमने तुमको विषलियेहुये समझा और जबतेरे उठ
जानेसे मोहरे शांतहुये तो मुझेअधिक निश्चय होगया कि निस्संदेह
तेरे पास ज़हर था और सुलेमां ने दोनो मोहरे जाफ़र को दिखाये
(शपातीं पत्थर) अरस्तू ने कहा कि यह पत्थर सदा सुर्ख़ है इसका
रंग याक़ूत के सदृश होता है और जब इसको तोड़ें तो भीतर से भी
याक़ूतके रंगका होता है परन्तु यह बहुत साफ़ नहींहोता जब पानी
में छोड़ें हरताल की तरह पीला होजाता है यदि इसको तीनबेर
गलावें तो शिंगरफ की तरह लाल होजावे यदि एक भाग इसका
चारभाग चांदी में छोड़ें तो सुर्ख़ सोना तय्यार हो (सफ़पत्थर)
यह लाल रंग का पत्थर कुछ स्याही लिये होता है और किरमां
की धरती में पाया जाताहै इसको हजरुलहमार भी कहते हैं जिसे
शराबका नशा ज़ियादह हो या शिरपीड़ाहो कजलीकरके इसको
पिये तुरन्तही आरोग्य होजावेगा बहुत इसको पीसकर शिंगरफ
के साथ लिखते हैं लाल रोशनाई तय्यार होजाती है पर कुछ
स्याही लिये (सनोवर पत्थर) अरस्तूने इस पत्थर को कमल वायु
के लिये बहुत उत्तम लिखा है और इस पत्थरको अबाबीलके घोंसले
में पाते हैं अरस्तूके सिवाय और मनुष्योंने लिखा है कि इस पत्थर
के पानेके वास्ते यह उपायहै कि अबाबीलके बच्चोंको पकड़लें और
उनके शरीरको केसरसे रंगदें और उनके घोंसलों में छोड़दें तो वह
मालूम करती है कि मेरे बच्चों को कामला होगया तो वह अपने बच्चों
के इलाज के वास्ते यह पत्थर लाकर अपने घोंसलेमें रखतीहै—आगे
ईश्वर जाने (चाक़ी पत्थर) शेख़ रईसके विचारमें यह पत्थर हाथी
दांतके सदृश होता है जिस जगहसे लहू बहताहो तो इसको घिस
कर उस जगह पर इसका लेप करें तो तुरन्त बन्द होजावेगा इसे

पारसी भाषा में शकर संग कहते हैं और शीराज़ी भाषा में संग ज़रूमबोलते हैं (असली पत्थर) शेखरईस का लेख है कि यह पत्थर हकाक के प्रकार से है अर्थात् जिस पर मोहर खोदी जातीहै जब इसकोघिसें तो इसकी तरी बहुत मीठी होती है जब इसको किसी बहुतमोटे आदमीके शरीर पर रक्खें पतला होजावेगा और नेत्रके घाव को गुण करे मुख्य करके मुर्ग़ के अंडे की सपेदी के साथ और नेत्रकी आरोग्यता के लिये लाभ दे (उक़ाबपत्थर) यहपत्थर छुहारे की गुठली के सदृश होताहै जब इसको हिलावें तो अन्दर से आवाज़ खटखटाहट की पाईजाती है यदि उसको तोड़ डालेंतो उसके अन्दरसे कुछ भी नहीं निकलता बहुधा उक़ाब पक्षीके घोंसले में मिलताहै और वह हिन्दुस्तान की धरतीमें होता है जब कोई उक़ाबके घोंसले को ओर मुख करताहै तो उक़ाब उन्हीं प्रकारके टुकरों को लोगोंकी ओर फेंकना आरम्भ करताहै कि लोग उसको लेकर अपनारस्तापकड़ें मानों उक़ाबको इसबातकानिश्चय होगयाहै कि जोलोग उसकेघोंसले कीओर ध्यानकरतेहैं वहकेवल उन्हीं पत्थरोंको ढूंढ़ने आतेहैं इस पत्थरकेगुणमेंलिखाहै कि गर्भवती स्त्रियों के बांधना प्रसूति की पीड़ा में गुणकरे जोकोई मनुष्य इस पत्थरके टुकड़ेको जिह्वाके नीचे रक्खे शत्रुपर प्रबल होगा और जिस मनुष्यसे जो मांगे वह देगाऔर बहुधा इस पत्थरके टुकड़ेको करगस के घोंसलेमेंभी पातेहैं (क़मरपत्थर) इसको बज़ाकुलक़मर और ज़न्दुलवहरभी कहते हैं शेख़ रईसने लिखा है कि यह पत्थर पश्चिमकी धरतीपर महीने के आरम्भ में पाया जाताहै यह पत्थर बहुत हल्का होताहै इसकागुण यहहै कि इसको पासरखने से मिर्गी नाशहोतीहै जो वृक्षपर लटकावै बहुत फलेगा शेखके सिवाय और लोगोंनेकहाहै कि यहपत्थर सफ़ेदरंगका बहुत साफ़होताहै और उसके अन्दरभी सफ़ेदी पाईजातीहै और वह सफ़ेदी महीनेकेबढ़ने पर बढ़तीहै और घटने पर घटती जातीहै हिन्दुस्तान के चारोंओर एकप्रकार का ऐसापत्थरहोताहै कि चंद्रग्रहणकेसमय उससे पानी

टपकताहै उसकोभी हजरुलक़मर कहते हैं (फ़ारपत्थर) पश्चिम की धरती में चूहे के सदृश एक पत्थर होता है बहुधा लोग उसको अपने मकान में रखते हैं तो तुरन्त सब चूहे उस घरके उसकेपास इकट्ठे होते हैं और मनुष्य के पास आने से भी भागते नहीं उसी समय मनुष्योंके हाथसे मारेजातेहैं निदान उसधरतीमें यहपत्थर का टुकड़ा बहुत काम आता है क्योंकि वहां बिल्लियां नहीं हैं (क़ीर पत्थर) अरस्तु के विचार में इस पत्थर को पश्चिमीय धरती पर पातेहैं उस स्थान के निकट जिसको सिकन्दर ने बनाया था इस पत्थर का काला रंग होता है और बहुत सख़्त जो इस पत्थर के टुकड़ेका एक खंड जो एक हज़ार खंड की (अर्थात् वह तेल जो दरज़ोंके बन्द होने के लिये जहाज़में लगाते हैं बाज़ोंने उसे राल लिखाहै) पर डालें तो तुरन्तही उबाल खायेगा जिस तरह कोई चीज़ आगपर पके यदि ऐसी नदीके किनारे जो बहुत सख़्त और तेज बहतीहो डालदें तो वह नदीवहांसे हटकर दूसरीओर जावेगी (असलीपत्थर) यह पत्थर मिसर की धरतीपर पाये जाते हैं जब मनुष्य अपने हाथमें लेताहै उसे मूर्च्छा आजातीहै और जो वस्तु उसकेमेदे (अर्थात् पक्वाशयमें होतीहै क़ै होजातीहै यदि इसपत्थर को अपने पाससे अलग न करदेवे तो मृत्यु का भयहै अलकलब जो पत्थर कुत्ते को मारें और कुत्ता उस पत्थर के टुकड़े को दांतों से उठा ले उसी को कलब पत्थर कहते हैं यदि उस पत्थर को मद्यमें घिस कर किसी को पिलावें वह मनुष्य लड़ाई पर तय्यार होजावे या अगर एक समूह उस मद्य को पीलें तो उन सब में परस्पर युद्ध और बैर होजावे (लबनीपत्थर) जिस समय इस पत्थर को जल में छोड़ें तो वह पानी दूध होजाता है परन्तु उसका रंग नदिवाला और मीठे स्वाद का होता है सूजन को गुणकारक है और सुरमा इसका आंख से कीचड़ निकलेको दूर करनेवाला और रोकनेवाला है और आंख के घाव को गुणदायक है (मतर पत्थर) इस पत्थर को तुर्क लाते हैं यह कई तरह का होताहै और इसके कई रंग होते

पारसी भाषा में शकर संग कहते हैं और शीराजी भाषा में संग ज़रुमबोलते हैं(असली पत्थर) शेख़रईस का लेख है कि यह पत्थर हकाक के प्रकार से है अर्थात् जिस पर मोहर खोदी जातीहै जब इसको घिसें तो इसकी तरी बहुत मीठी होती है जब इसको किसी बहुतमोटे आदमीके शरीर पर रक्खें पतला होजावेगा और नेत्रके घाव को गुण करे मुख्य करके मुरग़ के अंडे की सपेदी के साथ और नेत्रकी आरोग्यता के लिये लाभ दे (उक़ाबपत्थर) यहपत्थर छुहारे की गुठली के सदृश होताहै जब इसको हिलावें तो अन्दर से आवाज़ खटखटाहट की पाईजाती है यदि उसको तोड़ डालेंतो उसके अन्दरसे कुछ भी नहीं निकलता बहुधा उक़ाब पक्षीके घोंसले में मिलताहै और वह हिन्दुस्तान की धरतीमें होता है जब कोई उक़ाबके घोंसले की ओर मुख करताहै तो उक़ाब उन्हीं प्रकारके टुकरों को लोगोंकी ओर फेंकना आरम्भ करताहै कि लोग उसको लेकर अपनारस्तापकड़ें मानों उक़ाबको इसबातकानिश्चय होगयाहै कि जोलोग उसकेघोंसले कीओर ध्यानकरतेहैं वहकेवल उन्हीं पत्थरोंको ढूंढ़ने आतेहैं इस पत्थरकेगुणमेंलिखाहै कि गर्भवती स्त्रियों के बांधना प्रसूति की पीड़ा में गुणकरे जोकोई मनुष्य इस पत्थरके टुकड़ेको जिह्वाके नीचे रक्खे शत्रुपर प्रबल होगा और जिस मनुष्यसे जो मांगे वह देगाऔर बहुधा इस पत्थरके टुकड़ेको करगस के घोंसलेमेंभी पातेहैं (क़मरपत्थर) इसको बज़ाकुलक़मर और ज़ब्दुलबहरभी कहते हैं शेख़ रईसने लिखा है कि यह पत्थर पश्चिमकी धरतीपर महीने के आरम्भ में पाया जाताहै यह पत्थर बहुत हलका होताहै इसकागुण यहहै कि इसको पासरखने से मिर्गी नाशहोतीहै जो वृक्षपर लटकावै बहुत फलेगा शेख़के सिवाय और लोगोंनेकहाहै कि यहपत्थर सफ़ेदरंगका बहुत साफ़होताहै और उसके अन्दरभी सफ़ेदी पाईजातीहै और वह सफ़ेदी महीनेकेबढ़ने ‍ढ़तीहै और घटने पर घटती जातीहै हिन्दुस्तान के चारोंओर ‍कार का ऐसापत्थरहोताहै कि चंद्रग्रहणकेसमय उससे पानी

टपकताहै उसकोभी हजरुलक़मर कहते हैं (फ़ारपत्थर) पश्चिम की धरती में चूहे के सदृश एक पत्थर होता है बहुधा लोग उसको अपने मकान में रखते हैं तो तुरन्त सब चूहे उस घरके उसकेपास इकट्ठे होते हैं और मनुष्य के पास आने से भी भागते नहीं उसी समय मनुष्योंके हाथसे मारेजातेहैं निदान उसधरतीमें यहपत्थर का टुकड़ा बहुत काम आता है क्योंकि वहां बिल्लियां नहीं हैं (क़ैर पत्थर) अरस्तू के बिचार में इस पत्थर को पश्चिमीय धरती पर पातेहैं उस स्थान के निकट जिसको सिकन्दर ने बनाया था इस पत्थर का काला रंग होता है और बहुत सख़्त जो इस पत्थर के टुकड़ेका एक खंड जो एक हज़ार खंड की (अर्थात् वह तेल जो दरज़ोंके बन्द होने के लिये जहाज़में लगाते हैं बाज़ोंने उसे राल लिखाहै) पर डालें तो तुरन्तही उबाल खायेगा जिस तरह कोई चीज़ आगपर पके यदि ऐसी नदीके किनारे जो बहुत सख़्त और तेज बहतीहो डालदें तो वह नदीवहांसे हटकर दूसरीओर जावेगी (असलीपत्थर) यह पत्थर मिसर की धरतीपर पाये जाते हैं जब मनुष्य अपने हाथमें लेताहै उसे मूर्च्छा आजातीहै और जो वस्तु उसकेमेदे (अर्थात् पक्वाशयमें होतीहै क़ै होजातीहै यदि इसपत्थर को अपने पाससे अलग न करदेवे तो मृत्यु का भयहै अलकलब जो पत्थर कुत्ते को मारें और कुत्ता उस पत्थर के टुकड़े को दांतों से उठा ले उसी को कलब पत्थर कहते हैं यदि उस पत्थर को मद्यमें घिस कर किसी को पिलावें वह मनुष्य लड़ाई पर तय्यार होजावे या अगर एक समूह उस मद्य को पीलें तो उन सब में परस्पर युद्ध और बैर होजावे (लबनीपत्थर) जिस समय इस पत्थर को जल में छोड़ें तो वह पानी दूध होजाता है परन्तु उसका रंग मटियाला और मीठे स्वाद का होता है सूजन को गुणकारक है और सुरमा इसका आंख से कीचड़ निकलेको दूर करनेवाला और रोकनेवाला है और आंख के घाव को गुणदायक है (मतर पत्थर) इस पत्थर को तुर्कसे लाते हैं यह कई तरह का होताहै और इसके कईरंगहोते

हैं यदि पानी बरसानेवाले कुछ देर इस पत्थर को जल में रखदें तुरन्त बादल आजावे और फुहार बरसनेलगे बहुधा ऐसा होता है कि पानी ज़ोरसे बरसताहै और ओलेभी पड़ते हैं एकमनुष्य वर्णन करता है कि एक वज़ीर ने इस पत्थरके टुकड़े का गुण देखनाचाहा तो एक तुर्कके रहनेवाले मनुष्यको आज्ञादी कि हमारेसाम्हने इस पत्थर का गुणदिखा तो उस मनुष्यने एक तसले में पानी भराकर उस प्रकारका पत्थर का टुकड़ा उसमें डाल दिया थोड़ीभी देर न हुईथी कि बादल आया और जल बर्षने लगा (नाक़ा पत्थर) यह पत्थर उस स्थानपर मिलता है जहां ऊंट चरा करता है यदि इस पत्थरको किसी पशुपर बांधें तो जो चीज़ उस पशुपर सवारहोकर कोई पिये उसका स्वाद मालूम न होगा यदि इस पत्थर को किसी दीवाने आशिक़ अर्थात् प्यारकरनेवाले के दण्ड पर बांधदें तो तुरन्त उसकीप्रीति दूरहोगी और अपने होशमें आजावेगा (हिन्दीपत्थर) अरस्तू के विचार में यह पत्थर सूराखदार होता है और सूराख़ इसके पीले और सपेद होते हैं जलन्धर रोगी के उदरपर रखने से उसके पेट का पीला पानी बिल्कुल चूसलेता है और तमाशा यह कि जो उस पत्थर को तोलाजावे तो जितना पीला पानी रोगी के उदर से चूसलिया है उसका भार इस पत्थर में अधिक होजाता है जहां बाल न निकलें इसको काम में लावें तुरन्त प्रकट होजावेंगे (त्योलदफ़िलइन्सां) यह पत्थर मनुष्य के उदरमेंसे उत्पन्न होता है अरस्तूने लिखा है कि यदि इसका सुरमा बनाकर लगावें आंख की सपेदी नाशहो (त्योलदफ़िलमाइल्राकद) अर्थात् यह पत्थर जो बँधेहुये पानी जैसे कि तालाब आदि में पैदा होता है अरस्तू के विचार में इस पत्थर को घिस कर नाक में टपकाना मिर्गी वाले और दीवाने को गुणकारी है (यहूदीपत्थर) शेख़ रईस ने लिखा है कि इसपत्थरको संगयहूद कहते हैं अखरोट से कुछ बड़ा होता है और उसपर बहुत रेखा होती हैं बहुधा यह पत्थर गोल और चौड़ा ज़ैतूनी शकल का होता है गुरदे की सख़्ती और पथरी को गुण

करे और मूत्ररोध और मन्दाग्नि को अति लाभदायक है इस शर्त पर कि आधामिस्काल अर्थात् पौने दो माशे गर्म पानीके साथ पियें परन्तु बोधेको काटताहै शेखके सिवाय और लोगोंने कहा है इस पत्थर को मरबांत नदी के किनारे पाते हैं और यह पत्थर हरदिन अपनी खानिमें हिलता रहताहै परन्तु शनिश्चरको स्थिर रहता है इसीलिये इसका नाम संग यहूदी है इसका गुण यह है यदि इसको जलमें पीसकर पियें पथरी तुरन्त टुकड़े २ होजावेगी यदि इस पत्थरके कई टुकड़े किसी जगह पर थोड़े दिनों के वास्ते रखदें तो चालीस दिनके पीछे संख्या में अधिक होजावेंगे (यकूम अललसापत्थर) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर ऐसा हलका होता है कि पानीपर तैरा करताहै और रातको बिल्कुल पानी से ऊपर निकलताहै और नामको थोड़ा सा जलमें रहताहै और जब सूर्य्य निकलताहै तो सबपानीमें होजाताहै थोड़ासा बाहर निकलारहता है और इस पत्थर में यह गुणहै कि जो मनुष्य अपने साथ रक्खे उसके सवारीका घोड़ा कभी आवाज़ न देगा जब कभी सिकन्दर रूमी रातके धावेकी इच्छा करता था इस पत्थर को सब साथियों के पास बंधवा देता था (ज़िहुलसाबिक़) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर और उक्त पत्थर दोनों एकही जगह पर हुआ करतेहैं परन्तु यह उसके विपरीतहै ज्यों२ सूर्य निकलताहै त्यों२ यह पत्थर भी निकलना शुरूहोता है और जब आकाश बादल से घिराहो उस दिन यह पत्थरबिल्कुल जलके अन्दर छिप जाता है और इसका गुण यहहै कि जिस घोड़े आदि के बांधें वह सारादिन और रात चला करेगा (सरलिमूंपत्थर) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर सोने और चांदीकी खानोंमें होताहै रंग उसका कभी पीला कभी लाल कभी सब्ज़ कभी काला होताहै और जिसमें चारोंरंग होंगे वहसब से उत्तम होगा पीले रंगका तो सोने चांदीमें मिलताहै और काला चांदीमें इन प्रकारोंमें एक उत्तम पत्थर होता है जिसमें चांदी और सोना और तांबा मिलाहो और यह पत्थर इन्हीं धातुओं की भाफ़

से उत्पन्न होता है यदि इस पत्थर को सात जौ के बराबर घिस कर दो रंगे सुर्ख़ के पित्ते के पानी में घोलकर पियें और टेढ़ी हुई हड्डियों की जगह पर उसका मर्दन करें हड्डी अपनी जगह पहुंच कर सीधी होजावेगी यदि इस पत्थर को सात जौ के अनुमान लेकर पीसें और पारेकी भस्म में मिलाकर तांबे पर डालें तो वह तांबा चांदी होजावेगा (हिरस) अरस्तू ने इस पत्थर को पीला रंगका सपेदी और सब्ज़ी मिलाहुआ हलका और नरम लिखा है बहुधा यह पत्थर पश्चिम की धरती में होता है इस के गुण में लिखा है कि सब डंक मारने वाले जानवरों के विष को दूरकरता है (हूसाय) यह लोहे के मैलसे है अरस्तू ने लिखा है कि गर्म करने और कूटने के समय लोहे से यह पत्थर सा अलग होता है इसको खुब्सुलहदीद कहते हैं इस के अद्भुत गुण हैं कि बवासीर और नानाप्रकार के घावों के अच्छा करने में आज़माया हुआ है और मन्दाग्नि और विलम्ब में भोजन के पचने को गुणकरै और पक्काशय को बलदेता है और बवासीर को बहुत गुणकारक है (खुब्सुलतैन) अर्थात् गुल की मैल अरस्तू ने लिखा है कि जब कोई बरतन बनाकर आग पर रखते हैं तो हर बरतन से तरी शहदकी तरह पर टपकती है और वही पत्थर सी होजाती है गुण उसका यहहै कि रंगरेज़ लोग उसको सिरकेमें पीसकर कपड़ों को काला रंगते हैं और यह पत्थर चारपायों के घावों के वास्ते चाहे वह कहीं घावहो बहुत गुणदायक है (खुसियैइबलीस) यह पत्थर मिसर की धरती में मिलता है जिस मनुष्यके पास हो उसके गिर्द कभी चोर न आवेंगे और उसकी प्रतिष्ठा हर एककी दृष्टि में होगी (दुरदरयायजोशन्दा) अरस्तू ने लिखा है कि उक़यानूस दरिया जो कि संसार को घेरहै और उस दरिया को मसलूक दरिया घेरे है और मसलूक उस दरिया को कहतहैं जहां ग़ोतेख़ोर मोती निकालने के लिये ग़ोता लगाते हैं और यह दरिया बसन्त ऋतु में जोश मारता है और इस में तीक्ष्णपवन के झोकों से बहुत उपद्रव

होताहै सो इसवायु के उठतेही मसलूक दरियाकी सीपें दरिया से ऊपर आजातीहैं और हवा के झोकोंसे इस दरियाके पानीकी छींटें मसलूक दरियामें गिरतीहैं जिसको सीप मनुष्य के बीज के सदृश अपने उदर में धारण करती है और दरिया में जाड़ रहती है और वह वीर्य्य मांस और जल से मिलकर बड़ा होता है जितनी बड़ी बूंद सीप के मुंहमें जातीहै उतनाही बड़ा मोती बँधता है जब कि सीपके मुंहमें बूंद गिरती है सीप दरियाकी गहराई से निकल कर पानीपर आजातीहै परन्तु सूर्यके उदय और अस्तहोने और दक्षिणीय पवन के चलने के समय परन्तु जब दोपहर हो तो जल के अन्दर चली जातीहै क्योंकि जब सूर्य्यकी गर्मी अधिक होतीहै तो मोती ख़राब होजाताहै तो जब सुबहको सीप निकली है तो अपने मुखको दक्षिण की हवाके सामने खुला करतीहै कि उस वायु से उसका मोती साफ़ और सुथराहो इसलिये दक्षिण की पवन और सूर्य्यकी गर्मीसे जमताहै जिस तरह स्त्री के उदर में बच्चा बढ़ता है और जो उस सीप के पेटमें पहिलेका खारी पानी बाक़ी होताहै तो मोती पीली रंगतका या ऐसा कालाहोताहै जिसको अलग नहींकर सके और जो नहीं होताहै तो मोती बहुत साफ़ होताहै और इसी तौर पर जो दोनों उक्त समयों के विरुद्ध अर्थात् प्रभात और संध्याके सीप दरियाकी गहराई से बाहरको निकले तौभी उसका मोती बदरंग होजाताहै और जो बहुधा मोतियों में कीड़े या मोती बीचसेखोखले दिखाईदेतेहैं इसकाकारण यहहै कि जबबहुधा सीप दरिया की गहराई में जाती है तो उसकी पेंदी में मज़बूत बैठती है और फिर वहांसे उभरती नहींहै यहांतक कि उसमेंसे घासकी तरह जड़ें निकलीहैं और सीपका जीव जाता रहता है यदि ग़ोतेख़ोर उस दशामें बहुत समयके पीछे उसको बाहरलावें तो ज़रूर उसका मोती ख़राब और ऐबदार होताहै जैसा कि मेवाका हालहै कि जो पकनेके पीछे वृक्षसे तोड़ा न जाय तो कुछ दिनोंकेपीछे वहउसी वृक्ष में सड़ जाता है अरस्तू के सिवाय और बुद्धिमानों का वचनहै कि

उक़्यानूस दरियामें एकजगह पारे की तरहपर पानीहै और जिस बूंदसे कि मोतीपैदाहोताहै वह उसीपानीकीबूंदें हैं जो हवाकेझोंकों से सीपके पेटमें जातेहैं और मोतीबन जातेहैं तो जब मोती सीपके पेटमें पूर्ण होजाताहै दूसरीजगह सीप जातीहै और वहां पहुंचकर थोड़ेदिन रहतीहै फिर वहांसे बहरैन (वह नद रूमऔर शाममेंहै) की तरफ़ झुकती है और उसके बहरैनमें आनेका मुख्य समय होता है कि लोग मालूम करलेतेहैं कि अब सीपों का समूह आपहुंचा सो उस समय ग़ोतेख़ोर गोता लगाते हैं और सीप को निकालते हैं तो जो लोग नियमित समयपर ग़ोता लगाते हैं वह मोती बहुत साफ़ और सुंदर पाते हैं और जो कम या ज़ियादह वक़्में ग़ोता लगाते हैं तो मोती ख़राब होजाता है अरस्तूने मोतीके स्वभावमें लिखा है कि खफ़क़ान अर्थात् उन्माद रोग को बहुतही जल्दी गुण करता है और हृदयके रुधिरको साफ़करता है और इस सबबसे बहुधा हकीम मोती को सुरमे की औषधियों में मिलाते हैं कि आंखों के पट्ठके बल पहुंचे यदि बरसके रोगीको मोतीके पानीसेमलें जो ईश्वर चाहे आ-राम होजायेगा (धनज) पारसीमें इसको दहाना कहते हैं अरस्तू ने लिखा है कि यह पत्थर सब्ज़ है हुरमुसने लिखा है कि यहपत्थर तांबेकी खानि में पाया जाता है और इसका वर्णन इस तरह है कि जबहवाकी गर्मी और ज़मीनकी भाफ़ तांबेको उसकी कानमें पकाते हैं तो उससे भाफ़ निकला करती है और इस भाफ़ का निकलना उस गन्धक के गुणसे है जो कि पृथ्वी में होती है सो वह भाफ़ ऊंचे होकर एक दूसरे पर जमा होजाती है और जब वायुका स्वभाव ब-दल जाता है तो वह भाफ़ जमाहोकर धनज बनजाता है यह पत्थर कई प्रकार का होता है बाज़ा बहुत सब्ज़ होता है और कोई मोर-पंखके सदृश और बहुधा सबरंग एकही धनजमें प्रकट होते हैं जिस तरह कि ज़बरजद जो एकप्रकार का पत्थर सब्ज़रंग ज़र्दी लिये है और उसका सुवर्ण से सम्बन्ध है उसीतरह पर धनज का सम्बन्ध तांबेसे है और यह कानकी भाफ़से अपने आप पैदा होता है और

यह पत्थर हवाकी सफ़ाईसे साफ़ होता है और हवाके मैले होनेसे मैला होताहै इसके स्वभावमें लिखाहै यदि बिच्छू के डंकके घाव पर मलें तो गुणदायक होगा यदिकोई यह पत्थर घिसाहुआ पिये तो फिर कोई विष अपना अवगुण न करेगा यदि सिरके में घिस कर दादपर लगावें तो गुणकरे और सब घावोंको उपयोगी है यह आंखकी औषधियोंमें भी काम आताहै आंखकी सपेदीको दूरकर-ताहै और यन्त्र बनाने से बीर्य्य अधिक होताहै (दीमाती) अरस्तूने लिखाहै कि यहपत्थर बहुत कालेरंगका होताहै बहुधा नदीमें पाया जाताहै इसे जलाकर पारेके साथ खरल करें तो पाराबँधजाता है यदि इसको अबरक पर लगाकर आग दिखलावें तो अबरकपानी की तरहपर होजातीहै(रुख़ाम) यह मशहूर पत्थरहै अरस्तूने लिखा है कि जो यह मनचाहे कि स्त्री गर्भवती न होतो इस पत्थरको घिस कर एक टंक उसको पिलावें कभी गर्भ धारण न करेगी बलीनासने अपने स्वभावकी पुस्तकमें लिखाहै कि रुख़ामके अन्दर कीड़ेहोते हैं जो उनकीड़ोंमेंसे दो तीन लेकर किसीकपड़ेमें लपेटकर स्त्रीकीभुजा पर बांधदेवें तो कभी गर्भधारण न करेगी (ज़फ़ती) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर ज़फ़त (अर्थात् वह काली गोंद जो चीड़केवृक्षसे मिल-तीहै)केसदृश कालाहोताहै और तोड़नेपर शीशेकीतरहपर टूटजाताहै बहुधा पश्चिम की धरतीमें से निकलता है इसका स्वभाव लिखा हैकि जो पीसकर तेलके साथ नाकमें टपकावें कोढ़ और पीले पानी का निकलना बन्द करताहै और ज़ख़्मों को साफ़ करताहै (रेवस) अरस्तू ने कहा है कि इस पत्थर को अख़ज़र नद के निकट पाते हैं इसका गुण अद्भुत है कि यदि मनुष्य इसको अपनी उंगुली में पहने तो शोक और दुःख उसका नाश होजाय (ज़ाजात) अर्थात् फिटकरी इसके सम्पूर्णप्रकारों की उत्पत्ति मट्टी और पानीके भागों से होतीहै जब मट्टी के भाग पानीसे मिलते हैं तो चिकनाई पैदा होती है सो गलने के लायक़ होजाती है और इसी कारण नमक गन्धक और पत्थर के कण उसमें पाये जाते हैं तो जो कि उसमें

मट्टी और पानी के भाग रजले हुयेहैं इसीलिये उसमें नमकपाया जाता है और जोकि गर्मी से पककर चिकनाई को प्रकट करती है गन्धक भी है और जोकि सूर्यकी गर्मीसे पानी और मट्टी आपसमें मिलगये इस सबबसे पत्थरसी है रहा रंगका लाना प्रकार का होना तो यह खानिके स्वभावके अनुसारहै कई लोगों के विचार से इसके सर्व्व प्रकारों की उत्पत्ति मरेहुये पारे और सब्ज़ रंग की गन्धकसे है और फिटकरीका रंग सुर्ख़,सब्ज़,पीला, सब्ज़पीलाऔर सफ़ेद होताहै सुर्खको सूरी कहतेहैं और यह सर्व प्रकारों में उत्तम होतीहै और कैरसकी ओरसे लातेहैं सब्ज़को कलक़तार कहते हैं इसका स्वाद मीठाहै और पीली एक प्रकार की रोशनाई है जब इसको तोड़िये उसके अन्दरसे गोंद ऐसा निकलताहै और यह भी बहुतअच्छीहोतीहै और रँगरेज़ों और जूताबनानेवालोंकी फिटकरी वहहै जिसमें तोड़ने से आंखें ऐसीदिखाई देतीहैं और सबसे उत्तम सफ़ेद फिटकरी होतीहै जिसे जरजान और तबरिस्तान से लातेहैं इसकागुण यों लिखाहै कि शिरके घाव और खुजली और नासूर और नकसीर को गुणकारक है और जो मुंह दांत और नाक में अकलेकी बीमारी होतीहै उसको भी गुणकरे जब फिटकरीको धूनी देवें उसकीगन्ध से चूहे और मक्खियां भागतीहैं अब उसके हर-एक रंग और प्रकारों के गुण लिखे जाते हैं (ज़ब्दुलबहर) शेख़-रईस ने लिखाहै कि ज़ब्दुलबहर कईप्रकार का होताहै फ़ारसी में इसको कफदरिया(समुन्दरफेन)कहतेहैं बाज़ उनमेंसे फ़ितरकीतरह पर होताहै जो बालों के गिरजाने में नूरेका गुण रखताहै झांईं को भी उपयोगी है और बाज़ी अस्फंज के सूरतकी मोटीहोती है और उसकी गन्ध मछलीकी गन्धसी आतीहै यहदरिया के किनारे ब-हुतमिलती है और दांतोंको ख़ूबसाफ़ करती है और एकप्रकार का नाम हुर्दीहै कि पांवकी रगकीपोड़ा और तिल्ली और जलन्धर की ... है शेख़ के सिवाय और मनुष्योंने कहाहै कि सिरकेमें मि-... बालख़ोरेपर लगाना बहुतहीलाभदहै इसमें अद्भुत गुणयहहैं

कि बाल निकालतीहै और गिराती भी है और त्वचा के रोग जैसे झांई छीप आदि सबको गुणकरे परन्तु ऐसे स्थान पर नाम और रौग़नन अर्थात् गुलाबतेलसे काममें लानी चाहिये और जलन्धर मूत्ररोधको लाभकरे बाज़ोंकेविचारमें इसका स्त्रीकीरानमें लटकाना प्रसूतिकीपीड़ा में सुगमता करताहै यदि साढ़ेतीनमाशे के अनुमान दस रतिल अर्थात् पांचमन खारीपानीमें छोड़ें और उबालें तोवह पानी तुरन्तही मीठा होजायेगा (ज़िजांज) अर्थात् कांच अरस्तूने लिखाहै कि यह कईप्रकारकाहोताहै बाज़ इनमेंसे रेतहोते हैं कि जिनके नीचे आगजलाकर उसमें मुग़नीसिया पत्थर डालतेहैं और उसको इकट्ठा करके एक टुकड़ा बनातेहैं और एक प्रकार यहहैकि संगरेज़ा और संग क़लीको आटाकरके और उसको गलाकर ऐसे सांचेमें छोड़ते हैं जो कि आग पर खूब गरम होरहाहो फिर आग पर से उतार कर हवामें रखतेहैं और धुयेंसे बचातेहैं क्योंकि उसको उस समय धुवांलगजाय तो तुरन्त टूटजावे और कोई उससे अर्थ सिद्ध न हो और जो रंग कांचमें छोड़ें पकड़ लेताहै क्योंकि उसमें नरमी बहुत होतीहै कहते हैं कि यह पत्थर कुल पत्थरोंमें अहमक़ होताहै जिस तरहसे बाज़ मनुष्य अहमक़ होतेहैं क्योंकि हरमनुष्य का रंग पकड़ लेताहै शेख़रईसने लिखाहै कि यदि कांचको पारेके साथमलें तो दांतों में चमक लाताहै और बालोंको उगाता है आंख में लगानेसे आंखकी ज्योतिकी वृद्धिहोतीहै और सफ़ेदी उसकीदूर होतीहै बलीनासने अपने स्वभावके पुस्तकोंमें लिखाहै यदि कांचको घिसकर ऐसे बरतन में छोड़ें जिसके अंदर कुछ शराब और पानी मिलाहुआहो तो पानी शराबसे अलगहोजाताहै और इसकी परीक्षा बहुत सुगमहै (ज़रवेख) अर्थात् हरताल अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर प्रसिद्धहै इसके रंगके बहुत प्रकारहैं लाल पीला और ख़ाकी प्रसिद्ध हैं सुर्ख़ और पीलारंग देखनेमें सोना मालूम होताहै यदि चूनेके साथ काममेंलावें बालोंके दूरकरने में बहुत तेज़है और लाहलह विषहै जो मनुष्य हरतालको आगपर रखकर सफ़ेद करे

और तांबेके पत्तरमले तांबा सफ़ेद होजाताहै और तांबेकी गन्धभी जाती रहतीहै जो हरतालको आगमें जलावें और दांतोंमें मलें तो गुणकरे और दांतोंके सम्पूर्ण रोग दूर होजाते हैं अरस्तूके सिवाय और लोगोंने लिखाहै कि सब प्रकार के घावोंको अच्छा करती है और जो थोड़े ज़ैतके तेलमें मिलाकर शिरमें डालें तो सब शिर के जुयें मरजाते हैं और गुलाव तेलके साथ बवासीर को बहुत लाभ करे यदि मनुष्य अपने शरीर पर मर्दन करे कि बाल दूरहों तोयह डर है कि झांईके दाग दिखाई न दें तो चाहिये कि इस औषध के सेवन के उपरांत चावल और गोखरू पीसकर सम्पूर्ण शरीर में उबटनकरे कि उसकी तेज़ी दूरहोजावे पीले हरतालकी गन्ध से मक्खियोंकी मौतहै और जो इसको किसी प्रकारके रसमें छोड़कर मक्खियों के साम्हने रखदें तो भी मक्खियों के वास्ते हलाहल है (ज़मुर्रद) इसे जबरजदभी कहतेहैं अरस्तू लिखताहै कि ज़मुर्रदएक प्रकारकापत्थरहै जो सोनेकी खानिमें पैदाहोताहै इसकारंगसब्ज़ा और साफ़होताहै और जो ज़मुर्रद कि बहुतसब्ज़होताहै और जिस का ज़ौहर बहुत साफ़होताहै वह ज़मुर्रद काले रंगसे बहुत उत्तम होताहै इसकेस्वभावमें लिखाहै कि जो इसकोपानीमेंघिसकरपियें तो बिषैके कीड़ोंके विषसे छुट्टीपावें और जबकि विषने अपनाप्रभाव न कियाहो और मांस इधर उधर गिरा न हो तो तीनजौ के अनुमान घिसकर पीना गुणकारी होगा ज़मुर्रदकी ओर दृष्टि दौड़ाना नेत्रकी ज्योति को अधिक करताहै जो मनुष्य ज़मुर्रद को हाथ या गर्दनमें रक्खे मिर्गीकी बीमारी से छुट्टीपायेगा किन्तु जो इसरोगके उत्पन्न होनेके पहिले यह क्रियाकरें तो बहुत उत्तमहै और इसकेपास रखने से भूतप्रेत भागते हैं इसी दृष्टिसे बादशाहों ने अपने हाथमें इसका रखना गुणकारी समझा है इब्नमासूया ने लिखाहै कि लहू निकलने और अतीसारकेवास्ते लाभकारकहै यदि सर्पकी दृष्टि ज़मुर्रदपर पड़ जाय तो उसकोतुरन्त ढलकेकी बीमारीहो और अंधाहोजाय (ज़ंज़ार इसे फ़ारसी मेंज़ंगार कहतेहैं अरस्तूके विचारसे इस पत्थरको तांबे

और पीतलकी खानिसे निकालतेहैं यहपत्थर बहुधा सिरकेके साथ नेत्र रोगमें सेवन किया जाताहै नाखूना (अर्थात् वह सपेदी लिये मांस नाखून के सदृशहै। और नेत्र को अन्धाकरे) और सफ़ेदी और खारिश और ढलका और कमज़ोरी और नेत्र के रोगों को गुण करे और घाव के बदगोश्तको नाशकरे अरस्तूके सिवाय और लोग कह-तेहैं कि ज़ंग दो प्रकारका एक खानिका दूसरा बनाया हुआहोताहै परन्तु खानि का बहुत उत्तम होताहै और खानिवाले को तांबे की खानिसे निकालता है और मोम रोगनके साथ ख़ारिश कोढ़ और झाईंकेवास्ते लाभकरे यदि उसकाअरक़ नाकमें बनाकरटपकावें तो वदबूदूरकरदे यहउचितहै कि पहिलेसे मुंहमें पानीभरलें कि उसके गर्द न पहुंचे और २ औषधियों के साथ आंखकी सफ़ेदी दूर करने में शीघ्रही गुणकरे और बवासीर की बीमारी को भी गुणदायक है (ज़ंजफर) इसे फ़ारसी में शिंगरफ़ कहते हैं अरस्तू ने लिखा है यदि पारेको शीशेमें रखकर जोश दें और देग का मुंह बहुत मज़बूत और कपरमिट्टी करदें तो उसीसे शिंगरफ़ पैदाहोता है और उसकी सफ़ेदी ज़र्दीसे बदल जातीहै यहांतक कि सुर्ख़ होजाताहै जो ईश्वर चाहे कहीं जोशदेने के समय देगका मुखटूटजावे और उसका धुआं मनुष्य के शरीरमें लगजाय तो ऐसाकठिन रोगहोगा कि वह उससे मरजाय अरस्तू के सिवाय और लोगों ने लिखाहै कि शिंगरफ़ दो प्रकारका एक खानी और दूसरा बनायाहुआ होताहै सो खानिका तो गन्धक गिरने से पारे की खानिमें पैदा होताहै और बना हुआ वहीहै जो अरस्तू ने अपने ऊपर लिखीहुई क्रिया में लिखाहै उसका गुण यों है कि बुरेमांस और जलेहुयेजोड़ और कीड़े खायेहुये दांतों और २ विषों के लिये बहुत गुणदायक है (सैज) अरस्तूने लिखा है कि पत्थर हिन्दुस्तान से आता है बहुत कालेरंग का और बुर्राक़ अर्थात् चमकदार होता है और नरमी इतनी होतीहै कि और पत्थरों से जल्दीटूटजाताहै जब मनुष्यके नेत्रकीज्योति कमहोजावे तो इसप-त्थरकी ओरदृष्टि करना बहुत गुणकारीहै और इसीप्रकार ढलकावाले

को भी गुणदायक है आंखोंसे पानी उतरने का पूर्वरूप यह है कि मनुष्यको अपने आप अपनी दृष्टि के साम्हने मक्खियां या कीड़े उड़ते हुये मालूमहों तो जब यह तमाशा दिखाई देनेलगे तो अवश्यहै कि मनुष्य हमेशा सैजको आंखोंके साम्हने न रक्खे जो ईश्वर चाहे तो यह रोग दूरहोजायेगा यदि सैजका यन्त्र बनावे तोउसको दृष्टि कभी प्रभाव न करेगी और उसको घिसकर आंखों में सुरमा लगाना भी लाभदायक है यदि शिर में यन्त्र बनाकर लटकावे तो शिर पीड़ा दूरहोगी (सिलशीश) अरस्तूने कहाहै कि यह पत्थर हलका और ख़ालीहोताहै जब उसमें हाथ लगावे तो ऐसा मालूम होताहै कि मानों इससे बायु निकलतीहै और जब पवन अति प्रचण्डता पूर्वक नदी की लहरों पर जाती है तो यह पत्थर उस हवा और पानीके कफ़से पैदाहोता जो मनुष्य इस पत्थरको तीनरत्तीके भी बराबर अपने साथ रक्खे तो शत्रुसे बचारहेगा (संबादज) अर्थात् कुरण्ड अरस्तूके निश्चय में इसकी उत्पत्ति दीपान्तरोंमें है और यह पत्थर सख़्त रेतकी तरह पर होताहै और उनमें छोटेबड़े भी होतेहैं लिखाहै कि जो सम्बादज को जलाकर सुरमा बनाकर लगायें तो पुराने घाव भरआवें और उसका मंजन दांतों को साफ़ करता है (सताज़ंज) इसे हजरुद्दम और दरख़्तमिसमैल भी कहते हैं यह भी दो प्रकार का खानी और बना हुआ होता है जब मिक़नातीस पत्थर को जलाते हैं तो वह बनाहुआ होजाता है परन्तु लोहा खींचनेकी ताक़त नाश नहीं होती हां एकबात होतीहै कि बाज़े नर होते हैं और बाज़े मादा जो नेत्रके लिये बहुत गुणकारीहै किन्तु नेत्रकी हरएक बीमारी को गुणकरे मुख्यकरके आंख की स्फ़ेदी और पलकों की सख़्ती और मांस की अधिकता को जो शराब में मिलाकर सेवन करें तो अधिक मूत्र के आने और स्त्री के ऋतु के रुधिर के बहुत जाने को तत्काल गुण दायक है (शब) अर्थात् फिटकरी बहुत प्रकार की होती है इसको ज़ाजबिल्लौर भी कहतेहैं देसीकोरेदस कहता है कि सब प्रकारों में उत्तमय मानी है

जो सफ़ेदरंगकी पीलाई लिये और खट्टीहोतीहै कहतेहैं कि शबय-
मानी पहाड़से टपकतीहै और वह पहाड़ यमनमेंहै और वह पसीने
की तरह टपकती है जब जारी होकर पृथ्वी पर गिरतीहै फिटकरी
होजाती है लहू चलने को बन्द करतीहै यदि सिरकेकी तल छटके
साथ उसको पिये तो कठिन२ घावोंको भरे यदि सिरके और शहद
में मिलाकर कुल्ली करे तो हिलते हुये दांतों को दृढ़ करतीहै और
प्रचण्ड ज्वरोंको नाश करतीहै मुख्य करके लड़कों के वास्ते बहुत
उत्तमहै अरस्तूके विचारमें यह पत्थर सपेदरंग सुर्खी लियेहै कहते
हैं कि रंगरेज़ लोग पहिले कपड़े को इसके रसमें भिगोते हैं और
कारण इसका यहहै कि इस क्रियाके उपरान्त जिस रंगपर कपड़े
तय्यार करें उसकारंग मज़बूत और पक्का होजाता है शेख़रईस का
विचारहै कि फिटकरीज़फ़्त (अर्थात् वह कालीगोंद बहुतचिपकाने
वाली जो सनोवरकेवृक्षसे पाईजातीहै)के साथ जहांकहींरक्खें वहां
की मक्खी और मच्छड़ दूर होजायेंगे और जूं भी मारडालती है
और मुख और बगलकी गन्धको भी दूर करतीहै और इसकापानी
नमक के साथ आगसे जलेहुये को लाभकरे इसके जोशांदे अर्थात्
काढ़े का रस दांतोंकी पीड़ाको ठहराता है और यदि रांगे के खोल
में फिटकरी को रखके नाभि पर बांधे तो कुलंज अर्थात् पहलू की
पीड़ा कभी न होगी (सदफ़) अर्थात् सीप प्रसिद्धहै कि कई इनमें
मीठे समुद्र में होती हैं और बाज़ी खारी समुद्र में पहली दूसरी से
उत्तमहोतीहै उसका गुणयहहै कि कांटेआदिको जोड़मेंसे निकालती
है यदि इसकोपीसकर लेपकरें तो पांवके रगकीपीड़ादूरहो और जो
सिरके में पीसकर नाक में टपकावें तो नकसीर का लहू बन्द हो
और पीनेसे मेदे अर्थात् कोष्ठकी बीमारियां दूरहों इसका रुधिकर
दीवाने कुत्तेके घावपर गुणदायक है और जलीहुई सीप का मञ्जन
दांतों को साफ़करे यदि आंखों में बाल बहुत उगें तो उनको उखाड़
कर इसका सेवनकरें वहां बाल न उगेंगे आग से जलेहुये के लिये
लाभदायकहै घावको सुखाती है जो सीपके टुकड़ेको साफ़ कपड़े में

रखकर लड़के के गले में लटकावें तो वह लड़का दांत निकलने के समय दुःख न पावे (तारहुलनोम) अरस्तू के निश्चयमें यहपत्थर सफ़ेद रंग स्याही लिये होताहै और क़लई के बराबर उसका भार होताहै बहुधा इसकारंग तिल्ली के सदृश होताहै कहतेहैं कि जो इस पत्थर के दशदाने या कुछकम लेकर किसी मनुष्य के गर्दन में यंत्र की रीतिपर बांधें तो दिनरात आंखोंमें नींद न आवे और कुछ इस जागने से दुःख न हो जैसा कि एक दिन के जागने से मनुष्य को दुःख हुआ करतेहैं और जब इस पत्थर के यंत्रको अलगकरें तो भी कई दिन उसका इतना प्रभाव रहेगा कि कुछ दिनों तक थोड़ी २ नींद आवेगी कोढ़ीकी नाकमें इसकी आठजौ के बराबर बूंदेंटपकाना रोग नष्ट करताहै (तालीक़ून) यहतांबेका प्रकारहै कि औषधियों से इसको बनातेहैं इसका फ़ारसीभाषा में हफ़्तजोश नामहै कहतेहैं जो तालीक़ून से तीर की गांसी बनावें और जिस पशु को उससे घायलकरें तो तुरन्त मरजायेगा अरस्तू के विचार में यह हफ़्तजोश बिल्कुल तांबेका प्रकार है और औषधियां इसमें इसवास्ते मिलाते हैं कि उसमें विषकीशक्ति अधिक होजावे यदि इसके कांटे बनाकर नदी में छोड़ें तो सम्भव नहीं कि कोई मछली उससे छूट जावे हां कांटा मुंहमें पहुंचना चाहिये फ़िर छूटना कठिनहै चाहे मछलीकैसी ही बड़ीहो क्योंकि कांटा मांसमें जाके फिर निकलता नहीं है और जिसमनुष्य को लक़वेकी बीमारी हो उसे उचितहै कि एक मकान में जावे जहां नाम को भी प्रकाश न हो और तालीक़ून का शीशा अपने सामने रक्खे इसउपाय से यहरोग शान्तहोगा यदि तालीक़ूनको आगमें ताव देकर जिस दरिया के किनारे पानी में बुझादें उसघाटपर कोई पशु पानीके वास्ते दृष्टि न करेगा यदि तालीक़ून को शहदमें मिलाकर धूपमेंरखदें मक्खी तक उसकेगिर्द न जायेगी जोमनुष्य तालीक़ूनका मोचना बनाकर उसके द्वारा बालोंको चुने कभीवहां फिर बाल न निकलेंगे (तलक़) अर्थात् अबरक़ अरस्तू के विचार में लाल और सफ़ेद दो प्रकारकी होतीहै सफ़ेद मोटी और

साफ़ होती है और सुर्ख़ हलकी होती है इस पत्थर को उत्तमोत्तम लिखाहै कहतेहैं कि जो उसको तांबे और क़लई और लोहे परछोड़ें जो ईश्वर चाहै तो चांदी बनजावेगी सिकन्दर ने लिखाहै कि जब मुझे यह मालूमहुआ कि सोनाबुर्राक़ रंग चाहताहै तो हमने सोने को अबरक़ से रंगा और वह बहुत उत्तमहोगया यह अबरक़ बहुधा जादू आदिमें काम आती है अरस्तूके सिवाय और लोगोंने लिखा है कि इसकानाम कौक़बुलअरज़ है अबरक़ का उत्तम प्रकार यह है कि बहुत पतली उत्तमहो और आग से न जले और साफ़ करने में भी उत्तमहो लहूको रोके जिस मनुष्य को अबरक़ का कजली करना अंगीकारहो उचितहै कि किसीकपड़े में बांधे और उसमें थोड़ेपत्थर के टुकड़े भी छोड़देवे और पानीमें रखदे कि कल्क होकर वहबारीक़ होजावे उस समय गोंद के रस में उसका सेवन करे (तूसूतोस) अरस्तूने लिखाहै कि यहपत्थर चांदी और तांबेकी खानमेंपैदाहोताहै इसका रंगसब्ज होताहै इसकी प्रकृति धनज और तूतिया के सदृश होतीहै क्योंकि तूतिया चांदीकी खान और धनज तांबेकी खान के सिवाय और जगह नहींहोता है इसका गुण यह है कि जो इसका पानी आंख में छोड़ें तो पुरानी सफ़ेदीको दूरकरे जो आंख में सफ़ेदी न होगी तो हानिहोगी (अक़ीक़) अरस्तू के विचारसे इसके बहुत प्रकारहैं उत्तम वहीहै जो यमन से आताहै कमीर रूसकी नदी के किनारे पर भी हाथआताहै अक़ीक़ लाल साफ़ और अच्छा होताहै जो इसकी अँगूठी पहिनकर क्रोधी शत्रु के सामने जावे तुरन्त उस पर प्रबल होगा लहू के बहने को बहुत गुण दायक है मुख्य स्त्रियों के लिये जिनका लहू हमेशा जारी रहता है जो इसका मञ्जन बनावें तो दांतों के रंग को दूरकरता है और मुख की दुर्गन्धि भी दूर होती है और दांतों की जड़ों के लहू बहने को दूर करता है हज़रत पैग़म्बर साहब ने कहाहै कि जो मनुष्य अक़ीक़ की अँगूठी अपने हाथमें रक्खेगा वह सर्वदाप्रसन्न रहेगा और मालिक के पुत्र उत्सने एकबचन लिखाहै कि पैग़म्बर ने कहा कि अक़ीक़की अँग

पहनो क्योंकि उसका गुणयहहै कि चिन्ता दूर करताहै कहतेहैं कि अक़ीक़ की भस्म आंख और मनको बलकारक और उन्माद रोगके दूर करने वालीहै (अम्बरी) अरस्तू ने कहाहै कि यह पत्थरख़ाकी रंग सब्ज़ीलिये होताहै परन्तु सब्ज़ी प्रकट नहींहोती और उसमें काले पीले और सफ़ेद नुक़ते होतेहैं इसमें अम्बरकीसी सुगन्ध पाई जाती है इसकी बादशाहों की दृष्टि में बड़ी प्रतिष्ठा है बहुधा इसके प्यालेआदि बनाकर रखते हैं तो पहिले पहिल जिसने इसपत्थर को केवल सूंघने के वास्ते निकाला वह शैतानथा इस दृष्टि से जो मनुष्य इसके बर्त्तन में खानेपीने का सेवनकरे उस मनुष्यको सौदा अर्थात् जलेहुये दोषोंकेरोगउत्पन्न होंगे और फिर कठिन चिकित्साओं केलिये दीनहोजावेगा यहबात बहुधा बादशाहोंपर होचुकी है इस-लिये इसके प्यालोंके सेवनकी मनाहीहै (अतास) अरस्तू ने इसकी प्रशंसा में लिखा है कि जो इसको आग में डालदें तो आग ठण्डी होजावेगी और जो इसको जिह्वाके नीचेरखकर मद्यपानका प्रारंभ करें कभी नशा न आवेगा और मूर्च्छा भी न आवेगी क्योंकि गर्मी भाफ़की ब्रह्माण्ड तक न पहुंचेगी (फ़ाद ज़हर) अर्थात् संगजहर यहनाम हर पत्थरका होसक्ताहै परन्तु जो वह पत्थर ऐसा हो कि प्राणों के बलको रक्षाकरे और विषकी हानिको दूरकरे कहतेहैं कि विष दो प्रकारका होताहै गर्म और सर्द गर्मविष रुधिरको जलादेता है और जीवकी तरीका नाश करनेवालाहै जो जीवन की कारण है और शरीरमें फैल जाताहै जैसा कि नलमें केसरका रंग फैलता है और शीतल विष वहहै कि जो उत्तम तरी और लहू को बांधे जैसा कि पनीर कि जोमाया दूधमें छोड़ें तो दूध तुरन्त बंधजाताहै और फ़ादज़हर का प्रभाव खटाई के सदृशहै जैसा कि केसर के रंग को खटाई काटदेतीहै उसी तरह यह विष के प्रभाव को नष्ट करता है अरस्तू के विचार में फ़ादज़हर कई प्रकार का है बाज़ा पीला और कोई ख़ाकीरंग और इसकी खान चीन हिन्दुस्तान और ख़ुरासान में होतीहै जो तीन रत्ती के अनुमान घिसकर पिये तुरन्त विष से

कुट्टीपावे बिच्छू या दूसरे विषैले जानवरों के घावपर इसका सेवन करें लाभहोगा यदि काटने के साथही इसका लेपलगावें तो बहुत जल्दी आराम होगा (फरसलूम) अरस्तू ने लिखाहै कि इसपत्थर को ज़ुलमात में सिकन्दर ने पाया था और उसके कोष में वर्त्तमान था रंग इसका काला और यह भारी होताहै आगमें गिरनेसे शुद्ध होजाता है जो इसको पारे में डालकर आगपर रक्खें तो पारे को बांधदेताहै और दोनों एक होजाते हैं और नरम चांदी होजाती है यदि मनुष्य इसका यंत्र बनावे तो उसको बड़ा स्मरण होगा और ईश्वरकी स्मृति कभी न भूलेगी जो भोगकरे तो शुभपुत्र उत्पन्नहो और दृष्टिके लिये तो मानो ढालहै यदि इसको गायके दूधमें घिस कर बरस (अर्थात् जिसरोग में त्वचापर सफ़ेद और काली चित्तियां पड़जाती हैं) के दाग़पर लगावें आराम होगा ईश्वरकी आज्ञा से (फरसिया) अरस्तूने लिखाहै कि इस पत्थरको बड़े २ पहाड़ों के नीचे पातेहैं यह पत्थर रात्रिकेसमय जलीहुई ज्योतिके सदृश चमकताहुआ दिखाई देताहै जो इसको अजमोद के पानीसे धोवें तो सम्पूर्ण पशुओंके लिये हलाहल बिष होजावेगा (फरफूस)अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर अग्निकीभांति होताहै इसके प्रभावमेंलिखा कि जो इसको घिसकर किसी घाव पर रक्खे तुरन्त भर जावेगा (फीरोज़ज) अरस्तूका लेख है कि यह पत्थर सब्ज़ रंग नीलाई लियेहै देखने में बड़े बहारका है इसकी खान खुरासान में होतीहै बायुकी सफाई से इसका रंग पीला होताहै जो इसको सुरमे में मिलाकर सेवन करें गुणदायक है बहुधा बादशाह इसकी अँगूठी नहीं पहनते हैं कि इसके पहनने से भय कम होजाता है मुहम्मद सादिक़के पुत्र इमाम ज़ाफरका बचन है कि इसकी अँगूठी जिसके हाथमें हो वह कभी फ़क़ीर और दरिद्री न होगा(फैलकूस)अरस्तू ने कहाहै कि यह कई रंगका होताहै इसमें एक दिनमें कई रंग प्रकट होतेहैं कभी सुर्ख़ कभी पीला कभी सब्ज़ निदान हर समय एक नया रंग लाताहै रातको शीशेकी तरह चमकता है जब सिक-

न्दर रूमीने इस पत्थरकी खान पाई तो अपने सम्बन्धियोंकोआज्ञा दी कि इसको बहुत उठालेवें लोगों ने आज्ञाका पालन किया रात्रि को हर मनुष्यपर चारों ओरसे पत्थर पड़नेलगे और कोई मनुष्य मालूम न होताथा तो उस समय यह प्रकट हुआ कि यह पत्थर जिन्न मारतेहैं और वह नहीं चाहते हैं कि इस पत्थरको कोई यहां से लेजाय सो सिकन्दर वहांसे बहुत जल्दीसे चलाआया और इस पत्थर के रक्षा करनेकी आज्ञादी उस समय से यह पत्थर सिकंदर के कोष में रहताथा और सिकन्दर सफ़र में अपने पास रखताथा इसका यहप्रभावथा कि जहां सिकन्दरपहुंचताथा वहांसे जिन्न और देव भागते थे और इसी तरह से चीरने फाड़ने वाले जानवर भी दूर होतेथे (कैहार) अरस्तूका बचन है कि इस पत्थर को पूर्वकी धरती पर पाते हैं और सोनेकी खान में होताहै इसका रंग याक़ूत सुर्ख़के सदृश है इसके प्रभाव यह हैं कि जादूको दूर करता है जो इसको दोजौके बराबर घिसकरपियें तो दिवानापन बिस्मरणादिके रोग दूरहों (क़रबातीसून) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर हिन्द की धरती में हाथ आता है यह लहू को बन्द करता है जो इसको मुखमें रखकर फस्द खुलवायें तो कभी लहू न निकलेगा (क़रूम) अरस्तूने लिखाहै कि इस पत्थरको नदीसे निकालते हैं सफ़ेदलाल पीला और सब्ज़ होताहै इसका प्रभाव है कि जिसके पासहो वह मनुष्य सत्यबक्ता होगा और उसके पाससे भूतप्रेत और जिन्नभाग जावेंगे जो एक जौ के अनुमान घिसकर थोड़े ऊद अर्थात् अगर लकड़ीके साथ पियें तो बहुत प्रकारकी पीड़ाको जैसे जोड़ोंकी पीड़ा आदिको लाभकरे (क़लक़दीस) यह एक प्रकार की फिटकरी है इसमें अत्यन्त गर्मीहै और क़लक़तार और क़लक़न्द जो आगेवर्णन किये गये हैं इन दोनों से इसका गुण हर बिषय में अधिकतर है (क़लक़तार) यह भी एक प्रकारकी फिटकरीहै जालीनूसने लिखा है कि यह भी क़लक़दीसहै परन्तु उससे गर्मी कम है इसका स्वभावहै कि सूजनको दूर करतीहै और अधिकमांस को नष्टकरती है

और नाकके लहू और दांतोंकी जड़ोंकी सूजनके लिये लाभ दायक है और आंखोंके साफ करनेमें बहुत गुण करती है (क़रुकन्द) यह भी जलीहुई फिटकरीके प्रकारों मेंसेहै यह बहुतही मांसको सुखातीहै और नाकके नासूर और नकसीर को गुण करतीहै और कान और पेटके कीड़ोंके लिये मानों हलाहल बिषहै यदि इसको जलमें छोड़दें और मकान में छिड़काव करें तो उसकी गन्ध से खटमल मच्छड़दूरहोजायेंगे यदि इसमें कुछ गन्धक और कालादानाभी मिलावें तो यह और प्रबल होगी चूहे भी इसकी गन्धसे दुःखीहोते और मरजाते हैं यदि नाई लोग अपने उस्तुरे को इस पत्थर पर तेज़करें तो बालोंकी सफाईमें बहुतही तेज़ी दिखाताहै यदि मनुष्य के नथुनों में यह पत्थर मलें जबतक जैतूनका तेल न लगावें नींद न आवेगी (कली) यह वह पत्थरहै जिससे शनान हाथ आता है इसकी भस्म सफाई करने वालीहै और नमकसे अधिक बलकारक है झाईं और खाज और निकम्मेमांसको लाभकरे तो लहसुन और नमकमें मिलाकर बिच्छूके डंकपर लगावें पीड़ा ठहर जावेगी (क़ैसूर) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर हलका और खोखलाहोताहै यहां तक कि पानी पर तैरा करताहै इसकीखानें बहुधा सकलबा और आरमीना में हैं इसको हजरुलदफातिर भी कहते हैं क्योंकि यह पत्थर यह स्वभाव रखताहै कि लिखेको मिटादेताहै और गुण उसका यहहै कि दांतोंको साफ करता है और इसका और औषधियोंके साथ सुरमा लगाना नेत्रकेलिये गुणदायकहै और मासरहूया कहता है कि चांदी को भस्म भी करताहै और शरीरके रोमों की सफाई भी करता है और घावको बहुत जल्दी भरताहै (क़ैरातीर) अरस्तूने कहाहै कि यह गोल होताहै और पत्थरके टुकड़ेकी तरह दरियासे निकलताहै और बन्दूककी गोलीकी तरह होता है इसका गुण यहहै कि इसका पीना पथरीको टुकड़े २ करके बाहर निकाल देता है (कसदामी) अरस्तू का वचन है कि यह पत्थर दरिया किनारे पाया जाताहै और सब्ज़रंग स्याहीलियेहै और बहुत

कठोर और हलका होताहै इसको सोहनसे खण्ड २ करते हैं जो इसको पीसकर कलई परडालें और अग्निमें रक्खें तो नरमी और उसकी दुर्गन्धि जाती रहती है और अग्नि पर स्थिर होजाती है जैसे चांदी (करसिया) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर हिन्दुस्तान की धरती में पाया जाताहै काले रंगका होता है बहुधा मछलियां इस पर इकट्ठी होती हैं और बहुत हल्का और सख़्त होताहै और दवातकी स्याही की तरह काला होताहै इसमें सोहन भी नहींचल सक्ता पर सातबेरकी आंच देनेसे गलजाताहै उस समय सफ़ेदरंग प्रकट करताहै यदि गलेहुये में थोड़ा सा नौसादर मिलादें तो एक खण्ड उसका सातखण्ड पारेको पत्थर की तरह बांधदेगा (कुर-सियान) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर हिन्दुस्तानकी धरती में पाया जाताहै और सब्ज़रंग चमकता हुआ साफ और संगीनक़लई की भांति होताहै जब इस पत्थर को आंच देतेहैं सफ़ेद होजाता है फिर लाल शिंगरफ़कीभांति बनजाताहै सो जब उसकोकजलीकरके उसी अनुमान से मुग़नीसिया उसमें मिलावें और बिल्लूर को भी आगपर गर्मीदेके इसबनीहुई कुरसिया मेंसे दश जौ बराबर लेकर पौने चारतोले बिल्लूर परडालें तो तुरन्त वहबिल्लूर याक़ूतहोजावेगा जो इसपत्थरको तीनरत्ती भी मनुष्यकेगलेमें लटकावें ज्वरकीगर्म्मी से बचारहेगा (करक) अरस्तूने लिखाहै कि सफ़ेदरंगका होता है और इसकी छीलन हाथीके दांतोंके सदृशहै सिन्धनदी के किनारे पर मिला करता है इसका सुरमा आंख की खाज को गुणदायक है हिन्दुस्तान के निवासी उसकी अँगूठी बनाते हैं और दृष्टि और जादू और भूतप्रेत के आवेशके दूरकरने के लिये बहुत आज़-मायाहुआ है पिछले बुद्धिमानलोग इसपत्थर को अपनेपास रक्खा करतेथे कि भूतप्रेत उनके पास न आवें (किरमानी) अरस्तूने लिखा है कि यह पत्थर कालेरंग का और कईप्रकार के रंगकाहै शेरों के जंगल में होताहै बहुधा इसकारंग तिल्ली के सदृश होता है जो इस को फिटकरी और दूधमें पीसकर कोढ़वाले की नाक में टपकावें

गुणकरेगा (कुहरबा) पीली सपेदी लिये है और बहुधा लाल भी होताहै इसकास्वभावयहहै कि तिनको और सूखीलकड़ीको अपनी ओर खींचताहै और यह पत्थर रूमके अखरोटके वृक्ष का गोंद है जो कोई इसका यन्त्र बनावे सूजन और उन्माद रोग को गुणकरै और वमन के रोगको भी गुणदायकहै और लहूके बहने गर्भपात की रक्षा के लिये और कमलवायु को गुणकरै कुहरबासन्दरूस अर्थात् चन्दरस के स्वरूप से बहुत मिलताहै पर इतना अन्तर है कि सन्दरूस सपेदी लिये होताहै (लाजवर्द) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर बहुत प्रसिद्धहै इसकी अंगूठी जिसकेपासहो वह ईश्वर की सृष्टि की दृष्टिमें निश्चय योग्यहोगा जो इसका सुरमा नेत्रों में लगावैं लाभकरे शेख़रईस ने लिखाहै कि लाजवर्द मस्सों को दूर करताहै औरों का वचनहै कि निद्रानाशरोग को दूरकरता है और उन्मादरोग के लिये तत्काल गुणकरे (लाक़ितुलजहब) अर्थात् यह पत्थर सोनेको अपनीओर खींचताहै अरस्तूनेलिखाहै कि पश्चिमी धरती के बाज़े पहाड़ोंमें होताहै और इसपत्थरमें सोना मिलाहुआ होताहै और इतना सोनेसे उसका स्वरूप मिलताहै कि देखने में सुवर्ण मालूम होता है इसका गुण यह है कि जो सोनेका बुरादा मिट्टी में मिलगयाहो तो इसपत्थर को उसमिट्टीपरमलैं तो जितना सोनाहोगा वह इसपत्थर में लिपट जायेगा और ख़ालीमिट्टी रह जायेगी (लाक़ितुलरसास) अरस्तूने लिखाहै कि यहपत्थर बदरंग और दुर्गन्धियुक्त होताहै और कुछ सपेदी सी मिलीहुई होती है और जोकि क़लई संगीन है तौभी उसको अपनी ओर खींचलाता है जो उसको अग्नि में जलाकर कोयले की भांतिकरलें और फिर पारे में डालकर अग्निपर रक्खें तो पारा बँधजाता है जैसे चांदी (लाक़ितुश्शोरा) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर बालको खींचता है और कुछ अन्दरसे पोलाहोताहै और पत्थरसे भारमें कमहोता है मनुष्य के शरीर में लगानेसे नूरेकीतरह बाल उड़जाते हैं यदि बाल पृथ्वीपर बिखरेहों तो इसपत्थरकेद्वारा एक२करकेउनको चुन

सक्ते हैं जो बालोंको उड़ाकर उस जगह इस पत्थरको मलदें फिर कभी बाल न निकलेंगे जो उसकी सुगंध गलेहुये सोने में पहुंचे तो सब सोना ख़राब होजायगा और शीशेके सदृश वह सोना टूटजाया करेगा और फिर किसी उपाय से वह सोना अपने मुख्य दशापर न आयेगा (लाक़ितुस्सूफ) अरस्तूने लिखाहै कि इसकारंगसब्ज़ है और इसमें बहुधा सब्ज़ और पीलेरंगकी रेखाहोती हैं और बहुतहलकाहै और कुछसपेदी लिये है और गोल और छोटा बड़ा होता है जिस समय पशम उसके बराबरकरें तुरन्त लिपट जाती है इसका सुरमा पुरानी आंखकी सपेदी को दूर करता है जो इसको गलाकर इसमें ज़ब्द-तुलबहर मिलावें तो पारेको दृढ़ बांधता है (लाक़ितुज़्ज़फर) अरस्तू ने लिखा है कि यह पत्थर सपेद ख़ाकी रंग बराबर नरम बिंदुओं बिना होता है और यह पत्थर नाख़ुनको अपनी ओर खींचता है जो नाख़ुन पृथ्वी पर गिरे हों उनको चुनकर उठा लेता है जो हीरे पर रक्खें तो हीरा टुकड़े २ होजावेगा यदि इस पत्थर पर स्त्री के ऋतु का रुधिर डालें तो पत्थर रेत की तरह होजावेगा जो इसको पानी में छोड़कर पियें तो पीने वाले का मांस और हड्डियां अलग होजावें और मूत्राशय और कलेजा टुकड़े २ होजाय (लाक़ितुलअज़्म) अ-रस्तू का लेख है कि यह पत्थर पीला और कठोर बलख़के देशों से आता है और हड्डियों का खींचने वाला है (लाक़ितुलफ़ज़्ज़ा) अरस्तू ने कहा है कि यह पत्थर सपेद रंग का होता है यदि इसको चांदी से पांच गज़के दूरी पर रक्खें तो भी चांदी को अपनी ओर खींच लेगा यदि चांदीकी मेख़ किसी चीज़में जड़ी होगी उखड़कर इसके पास आजावेगी (लाक़ितुलक़तन) अरस्तूका बचन है कि यह पत्थर नदीके किनारे होता है सपेद रंगका और रूईको खींचताहै इसका गुण यह है कि जो इसको रेतमें कजली करके तांबेपर छोड़ें तांबे को चांदी बनावेगा जो किसी मनुष्यके निकट हो तो आंख का ढलका बन्द करदेगा (लाक़ितुलमिस) अरस्तू का वचन है कि यह पत्थर तांबेको खींचता है और पीतलको भी खींचता है इसके रंग में कुछ

गर्द मिली हुई होती है जो छः रत्ती के अनुमान उसको लेकर दश दिरम* चांदी कजली करके गलावे और इससे पहले कि वह गल कर बँधजावे उसको डालदे तो वह चांदी पीली सोने की तरह हो जावेगी और दूसरी बार भी यही क्रिया करे तो बहुत समय तक उसकी ज़रदी दूर न होगी जो इस पत्थरको एक जौके बराबर मीठे पानीमें घिसें और मिरगी वालेकी नाकमें टपकावें तो तुरन्त रोग जातारहेगा (लजाऐतूस) यह पत्थर काली रंगतका है इसमें खीरे की गंधआती है बहुत खुश्क होता है और गहरे घावोंको भरताह और मिरगीवालेको गुणदायकहै और दुःखदाई छोटे२ जानवरोंको भगाताहै (लवनकरदीस) शेखरईस लिखताहै कि यह पत्थर मिसर का है धोबीलोग इसके द्वारा कपड़े साफ़ करते हैं और यह पत्थर बहुत साफ़ और पानी में छोड़नेसे जल्दी पिसजाताहै रुधिरके बहने को गुणकरता है (अल्मासहीरा) अरस्तू का लेख है कि इसकारंग नौसादरके सदृश होता है और सब पत्थरोंको टुकड़े २ करता है और जो इसको हज़ार टुकड़े करें तो हर टुकड़ा इसका तिकोना टूटेगा जितना टुकड़ा इसका बड़ा होगा उतनीही इसमें स्वभाव शक्ति अधिक होगी कारीगर लोग इसकी नोकका बरमाबनाकर कठोर२ पत्थरोंको उसके द्वारा छिद्र करते हैं अरस्तूने लिखाहै कि सिकंदर इस पत्थर के स्वभाव में बड़ा आश्चर्य करता था और इस आश्चर्य का यह कारण था कि एक ऐसा मनुष्य सिकन्दर के सामने आया जिसको पथरी का रोग था और इसी कारण उसका मूत्र बन्द था सिकन्दर ने तुरन्त हीरालेकर थोड़ी मस्तगी उसके शिरमें लगाकर उसके लिंग के छिद्र में प्रवेश किया तो तुरन्त हीरेने पथरी को टुकड़े २ करदिया अरस्तूने लिखाहै कि जहां हीराहोताहै कोई मनुष्य वहां नहींजासक्ता और उसकी खान हिन्दुस्तान के एक जंगलमेंहै और वह इतनीगहरीहै कि नेत्रकीगति वहांतक नहीं और उसमें अज़दहे बहुत हैं जब सिकन्दर उस जंगल में पहुंचा और चाहा कि हीराले

---

*दिरम साढ़ेतीन माशे का होता है—

कोई मनुष्य वहां जानेको राज़ी न हुआ तब सिकन्दरने बुद्धिमानों से सम्मति की तब उन्होंने सिकन्दर से कहा कि इसगार में मांस के लोथड़ेडाले जायँ और पक्षी इसमें छोड़े जावें कि हीरे उन मांस के टुकड़ों में लिपट जावें और वह पक्षी वहां जाकर उन मांस खण्डोंको बाहर निकालें सो सिकन्दरने ऐसाही किया और लोगों को आज्ञादी कि जो मांस पक्षियों के पंजों और चोंचसे इधर उधर गिरे उसको चुनकर लावें और हीरेमें अद्भुत स्वभाव यह है कि जो हथौड़े से निहाई पर रखकर तोड़ें कभी न टूटेगा किन्तु उसका खण्ड हथौड़े या निहाई में घुस जावेगा और जब सीसे से तोड़ें तुरन्त टूट जावेगा यदि हीरेको नरबकरेके रुधिर में डालकर आग दिखलावें पिघल जायेगा और वह पेचिश और पक्वाशयके उपद्रव को गुणकारी होगा बहुधा उसकी खानें सरन्द्वीप के पहाड़ में हैं और वह जंगल बहुत गहरा और काले नागों से भराहै और जो हीरा वहांपर हाथ आताहै वह मसूर या चनेकी बराबर होताहै या आधे बाक़ला के बराबर होताहै यद्यपि इससे बड़े हीरे वहां होतेहैं परन्तु पक्षियों के द्वारा बड़े वज़न का हीरा वहां मिल नहीं सक्ता लोग मांसके लोथड़े फेंककर वह पक्षी जो मरेहुये पशु खातेहैं उन के द्वाराउठआतेहैं और उसेवह टुकड़ा २ चुनलिया करतेहैं निदान इसमें कुछ विरुद्ध नहींहै कि हीरा दांतों का तोड़ देताहै यदि उस को मुखमें रक्खें हलाहल विषका प्रभाव दिखलावेगा (मानतस) अरस्तू ने लिखाहै कि हिन्दुस्तानी पत्थरहै उस पर लोहेकी चोट कुछ असर नहीं करती जिस मकानमें हो वहां जादू जिन्न और प्रेत का प्रवेश न होगा जो मनुष्य यंत्र बनाकर रक्खे जिन्नोंके उत्पात से बचा रहेगा जब सिकन्दर शाहको इस पत्थर का गुण मालूम हुआ तो उसने अपनी सम्पूर्ण सेनाको आज्ञादी कि इसको अपने साथ रक्खें सो इस आज्ञाके पालनसे बहुत स्थान पर जादू और जिन्नों के भयसे रक्षा रही (मारवन) अरस्तूका वचनहै, जो सुरमे के पत्थरको भूनकर इस पत्थरकेसाथ पीसें और वह सुरमा आंखों

में लगावें तो नेत्रोंकी पीड़ा और उसकी सफ़ेदी को लाभदायक है (महानी) अरस्तूनेकहाहै कि इसकारंग सफ़ेद और पीलाहोताहै और खुरासानकी धरतीमें पायाजाताहै सकता अर्थात् वह रोग कि जिसमें मनुष्य हिलजुल नहींसक्ता गुण करे और इसकीभस्म बवासीरको दूरकरतीहै जिसकेपास इसकी अंगूठीहो वह हरभय से निर्भय रहेगा (मराद) यह अद्भुत प्रकारका पत्थरहै और दक्षिण के शहरोंमेंपायाजाताहै यदि खानिसे निकालनेकेसमय सूर्य्यउत्तरकी ओरहोतो उसकास्वभाव गरम और खुश्कहोताहै और इसका सुर्ख रंग होताहै और जो सूर्य्य दक्षिण में होतो उसका गुण ठंढा और तरहोताहै और रंगसब्ज़होताहै इसको यूनानी भाषामें सर्वतालीस कहतेहैं अर्थात् उड़नेवालापत्थर॥ कारणयहहै कि यहपत्थर वायुमें उत्पन्न होताहै जब उत्तम भाफ़ पृथ्वीसे उठतीहैं और वहभाफ़ें वायु में घूमतीहैं तो यह पत्थर पैदाहोताहै और जब सूर्य्य उदयहोताहै तो यह पत्थर हवामें फिरा करताहै उससमय इसकारंग सब्ज़ और काला होताहै जैसा कि नीलका रंग और सूर्य्य के अस्त होने पर ठहर जाताहै सो उस समय इस पत्थरके टुकड़े पृथ्वी पर गिरतेहैं और लोग उसको पाते हैं दिनको यह पत्थर इसी तरह वायु पर जाताहै और रात्रिको पृथ्वी पर गिरता है कहतेहैं कि यह पत्थर जिसके पासहो सम्पूर्ण प्रकार के भूत प्रेत उसके आधीन हों और जो चाहै उनसे सीखले (मरजां) अर्थात् मूंगा अरस्तूका लेखहै कि इसका रंग लाल होताहै और नदीमें घासकी तरह उगताहै बहुधा इसकी भस्म उत्तम होती है जो इसको कजली करके सेवन करें पारेको बांधदे और रंग इसका सोने की तरह करदे यह आंखकी औषध है अरस्तूके सिवाय और लोगोंका बचनहै कि मूंगा मरशीना में एकस्थानसे उत्पन्नहोताहै और यहस्थान अफरीकाकेओर पासहै व्योपारी इकट्ठे होकर वहांके निवासियोंको मज़दूरीमें नौकर रखते हैं और उन्हींसे निकलवाते हैं वहांका बादशाह उन व्योपारियों से महसूल नहीं लेताहै तो जो लोग मूंगेके निकालने में प्रवृत्त होतेहैं

वह एक सख्त लकड़ी एकगज़की लम्बी लेकर उसको सूली की तरह पर बनातेहैं और उसमें भारी पत्थर बांधतेहैं और किश्तीमें बैठकर नदीमें जाते हैं कहतेहैं कि दरियाके किनारेसे डेढ़ मीलपर मूंगे की उत्पत्तिका स्थानहै वहां जाकर उस लकड़ी को जलमें छोड़तेहैं कि वह पेंदीतक पहुंच जावै उस समय किश्तीको दायेंबायें फेरते हैं कि उस लकड़ी में मूंगेकी डालें अटकजायँ फिर जोरसे उस लकड़ीको अपनी ओर खींचतेहैं तो उसमें मूंगा भी उलझकर निकल आता है परन्तु उस समय उस मूंगेकारंग कालाहोताहै जब उसको छीलतेहैं तो उसके अन्दरसे लालरंगका मूंगा निकलताहै बाज़ेलोग कहते हैं कि यहपत्थर अंदलसनद की गहराई में मिलताहै ग़ोतेख़ोर उधर को जातेहैं और उसको निकालतेहैं इसकेगुण बुसदपत्थरके बर्णन में लिख चुके अब कुछ बर्णन की आवश्यकता नहींहै क्योंकि बुसद मूंगे को कहते हैं (मुरदारसंज) इसको फ़ारसीमें मुरदारसंग कहतेहैं अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर क़लईकी मिट्टीहै इसकामरहमतर घावोंकोसुखाताहै और पुरानेज़ख्मोंको अच्छाकरताहै और बगल गन्धको दूरकरने वालाहै शेखरईस लिखताहै कि मुरदारसंग बगल और शरीरकी दुर्गन्धिको दूर करताहै और झाईके काले चिह्नोंको फफोले के चिन्होंसमेत नाश करताहै मूत्रको बन्द करताहै नेत्रों में प्रकाश करताहै और दूसरा गुण उसका यह है कि जो सिरके में छोड़ें सिरका मीठाहोगा जो आरोग्य शरीरमें मर्दनकरें शरीरकाला होजावे बगल में लगाने से दुर्गन्धि दूर होतीहै परन्तु इसमें हानि यहहै कि बगलके बिकारको मनकी ओर प्रेरणा करताहै तो उसके लिये यहउपायहै कि पहिले उसको गुलाब तेलमें मिलाले (मरक़शीशा) (सोनामाखी) अरस्तू ने इसको कईप्रकार का लिखा है बाज़ीजहबा सुर्खरंगकी और बाज़ी फजिया सपेद और बाज़ी नजासिया काली होतीहै और सबप्रकारों में गन्धकमिली होतीहै जब जलावें आटे की तरह होजाती है और गन्धक दूर होती है बहुधा कीमिया के बनाने में काम आतीहै जो इसको गलेहुये खोटे सोनेमें

छोड़ें तो तुरन्त शुद्धसुबर्णबनावेगो और जो उसकोगलाकर तांबे या शीशेपरछोड़ें सपेद और खुश्ककरदेगी और उत्तमचांदीके सदृशकर देगी और इनके प्रकार यहहैं—सुनहरी, रुपहरी, पीतल के रंगकी तांबेके रंगकी, इसका हरप्रकार उसीधातु के सदृश होताहै जिससे पैदा होतीहै फ़ारसी में इसको संगरोशनाई कहतेहैं और नेत्रों की ज्योतिके बढ़ानेमें सेवन की जातीहै और कुष्ठ और सपेदकाले दागों के रोग और निमिश (त्वचाकारोग कुष्ठ आदि) के लिये बहुतगुण करे इसके मर्दनसे बाल दूरहोतेहैं और घुंघरवाले होजाते हैं जिस लड़केके गलेमें लटकावें वह बड़प्पन पायेगा (मिसन) एकप्रकार का पत्थर है जिस पर छुरी तलवार आदि तेज़ करते हैं अरस्तू ने लिखाहै कि मिसन सब्ज़ रंगका होताहै और उसपर तेललगाकर औज़ार तेज़करतेहैं मुख्यकरके आंखकी सपेदीको गुणदायकहै और उसके सदृश एकपत्थर सुम्बादजहोताहै जिसे हिन्दुस्तानमें दरिया के किनारे पातेहैं और यह दांतों के लिये भी गुण दायक है शेख- रईस ने लिखाहै कि मिसनके बुरादेको कन्याके कुचोंमें लगाना वा लड़कोंके अंडकोशमें लेपकरना बहुत गुणदायकहै इसमें बड़ेहोनेका भय जातारहताहै (मुसहिलुल हिदायत) अरस्तूके विचार से यह पत्थर भी सिन्धमें होताहै जो इसकोहिलावें तो ऐसा मालूम होता है कि शायद इसके अन्दर और भी पत्थरका टुकड़ाहै इसकीखानि हिन्दुस्तान में उसपहाड़ में है जो बहरैन के अन्तर्गत मदीना कुनार है एक अद्भुत गुण यह है कि जो करगस (एक प्रकारका पक्षी जो मुरदारचीज़ें खातीहै) की प्रसूतिसे प्रकटहुईहै कहतेहैं कि करगस की मादा प्रसूति के समय मरने के निकट पहुंचतीहै तो उस समय वहबिचारा पक्षी पहाड़कीराहलेताहै और वहांसेइसपत्थरको लेकर अपनी मादाके नीचे रखताहै तुरन्तही बच्चा होताहै हिन्दुस्तान के निवासियोंने इसका गुण करगस से पाया है प्रसूति की पीड़ा के समय जो यह पत्थर हो तो जननेका दुःख न होगा (मिक़्नातीस) फ़ारसीमें इसे संगआहनरुबा कहते हैं यह पत्थर लोहेको अपनी

और खींचता है इसमें उत्तम प्रकार काले रंगका सुरखीलिये होता है इसकी खान हिन्दके समुद्रके किनारे परहै बहुधा किश्तियां जो उधर जातीहैं उस मिक़नातीस के बराबर तो किश्तियों की कीलें आदि जो लोहेकी चीज़ें होतीहैं निकलकर पहाड़से चिपक जाती हैं और तख़्ते तबाह होजाते हैं सो इसी भय से उन किश्तियों में लोहेकी कीलों का लगाना निषेध है और यहनवीन अद्भुत बात है कि जो मिक़नातीस को लहसुन या प्याजकी गन्धदें तो उसकायह सारा गुण जाता रहता है और फिर जब सिरके या बकरे के ताज़े लहू में रक्खें उस समय उसका फिर वही स्वभाव होजाता है यदि कोई लोहे का खण्ड जलकेसाथ पी गयाहो और वह मिक़नातीस को दूधमें घिसकर पिये तो तुरन्त वह टुकड़ा कै में निकलेगा यदि कोईमनुष्य विषसे बुझेहुये हथियारका घावखाये और वह मिक़ना-तीसको दूधमें घिसकरपिये तो तुरन्त बिषका अवगुणजातारहेगा ईश्वर ने इस पत्थर को ऐसा बल दिया है कि इसमें और लोहे में प्रिया प्रीतमसी प्रीति मालूमहोती है अरस्तूके सिवाय और लोगों ने लिखाहै कि इसका पास रखना जोड़ों की पीड़ा के लिये गुण-कारकहै और प्रसूति में भी अति सुगमताकरे यदि इसपर ज़ैतून का तेलमलें तो फिर लोहा इससेभागेगा और जब नर बकरेके ताज़े लहूमेंगोतादें अपने मुख्यदशाकास्वभाव दिखलायेगा यदि किसीके पैरमें पांवकी नसकी पीड़ाहो तो हाथमें रखना गुणकारी है और गठियाकी बीमारीभी दूरहोतीहै (मलह) अर्थात् नमक यह उसजल से पैदा होताहै जो मट्टी के जले हुये भागों से मिला हो परन्तु न कठोर क्योंकि जो कठोरता से मिलाहोताहै तोकडुवा होताहै और यही कारणहै कि बाज़े नमक कडुवे होतेहैं लिखाहै कि नमकवर्षा के उपरान्त ख़रीफ़की फसलमें पैदाहोताहै क्योंकि महीन और अच्छा मूल गर्मीकी ऋतुमें गल जाता है और कठोर मूल रहजाताहै उस समय सूर्य्यके स्वभाव से नमक बँधा करताहै नमक दो प्रकारका होताहै पानीका और पहाड़ का नमकका गुण यहहै कि सब सड़ी

हुई चीज़ोंके दूरकरताहै और उसको जलाकर मंजन बनानादांतों को साफ़ करताहै पैग़म्बर साहब ने कहा कि ऐ अली प्रारम्भखाने का नमक परकरो और उसीपर अन्त करो क्योंकि इसके सेवन में सत्तर रोगों से आरोग्यता होता है नमक का सेवन समरीतिपर अच्छाहोता है अधिक मांस को दूर करता है और दाद खाज को दूर करे और अलसी के साथ मरहम बनाना और बिच्छू के घाव-पर लगाना गुणदायक है जो सिरके और शहदमें मिलाकरलगावें तो खनखजूरे और भिड़के घाव को लाभ करे और कफ़की खाज और पांवके नसकी पीड़ाको भी लाभकरे जोनमक कि सपेद और महीन होता है उसको हिन्दी में इन्दरानी कहते हैं रंगमें बिल्लूर की तौरपर होता है उसको खाना समझ को तेज़ और दांतों की जड़ोंको मज़बूत करता है अरस्तू के विचार में नमक कई तरह का होता है बाज़ा तो पत्थर के सदृश और कोई नमक की तरह कोई खारी और यह नमक खारी समुन्दरफ़ेन के प्रकार में से है और दरिया के किनारेकेस्थलों में पैदा होकर मिलता है ईश्वर ने कोई वस्तु बुद्धिमानी के सिवाय पैदा नहीं की इसप्रकार को बहुधा वृक्ष और नाली और पत्थरोंमेंसे पातेहैं और जिस वस्तुमें मिलावें उसको दुरुस्त करताहै यहांतक कि सोनेका रंग साफ़ करताहै और उसकी ज़र्दीको अधिक करता है बहुधा पत्थरों का मैलसाफ़ करता है (नत-रून) अरस्तूने लिखा है कि यद्यपि यह पत्थर कचलोन के प्रकारों से है परंतु उसका स्वभाव उससे विरुद्ध है वस्तुओं को साफ़ और टेढ़ेको सीधा करताहै और रंग रूपको साफ करता है इसको स्त्रियों की योनिमें पहुंचाना बहुत गुणकारी है कि मिथा को कारीगरी में इसके गुण बहुत हैं अरस्तू के सिवाय औरोंका बचन है कि नतरून अरमनी का नमक है बहुत कठिन क़ूलंज की बीमारी को गुण करे और आंखकी सपेदीको नष्ट करता है जो इसको ख़मीर में मिलावें रोटीको ख़ुशरंग करता है जो देगमें छोड़दें मांस बहुत जल्दी गल जाता है (नोली) अरस्तूने लिखा है कि इसनाम के अर्थ विषके दूर

करनेवाला है और सम्पूर्ण विषों के वास्ते गुण कारक है परन्तु क-
लेजे और मनको हानि कारक है और रगोंके अंदर रुधिर को उपद्रव
कारक करता है आवश्यकता पर विषके दूर करने के लिये इसको
सेवन करते हैं कभी ऐसा होता है कि प्राणोंके मार्गोंको रोकता है
इसकारण मनुष्य मूर्च्छागत होता है सो चाहिये कि इसका सेवन
विषके अवगुण करने के पहले करे तो उसका प्रभाव विषही परहो
और जो पीछे सेवन किया तो यही मनुष्यके मारने वाला है (नूरा)
यह जलेहुये पत्थरके प्रकारों से है लहूके चलने को बन्द करता है
और आगसे जलेहुये पर तुरन्त गुण करता है और हम्माममें बालों
के दूर करनेके लिये इसका सेवन बहुत उत्तम है परन्तु सेवनके उ-
परांत बिनफ़शे और गुलाब का सेवन भी उत्तम है यह बात जिन्नों
से मालूम हुई है क्योंकि जब दाऊदके पुत्र सुलेमानने बिलक़ीस से
बिवाह किया तो इनके रूपमें कोई अवगुण न था परन्तु पिंडलीमें
दाढ़ीके बालोंकी तरह अधिकता थी तो सुलेमांने जिन्नोंसे पूछा कि
बालोंके दूरकरने में कोई उपाय मालूम है तो जिन्नोंने नूरा तय्यार
किया यहभी लिखा है कि नूरेको जहां छिड़क दें मक्खियोंकी अ-
धिकता न होगी (नौसादर) इसका उत्पन्नहोना नमककी तरह
लिखा है परन्तु इतना अन्तर है कि इसमें मट्टीके भाग कम हैं और
अग्निके भाग अधिक होते हैं इसी कारण जबइसे आगपर रखते हैं
तो यह बिल्कुल उड़जाता है किसी ने लिखा है कि पानी और धुयें
के भागोंसे बहुत क्षीणतासे पैदा होता है बहुधा ऐसा होता है कि
उसको हम्मामके धुयेंसे पाते हैं अरस्तूने लिखा है कि इसकी खानें
बहुत होती हैं और इसके नाना प्रकार के रंग हैं बाज़ा नौसादर
खाकीरंग कोई बिल्लूरके सदृश सपेद होताहै आंखकी सपेदीकेलिये
अति गुणकारी है जो उसको दूसरी औषधियों के साथ पका कर
सेवनकरें तो कफ़की पीनसको गुणदायक है शेख़ रईस लिखता है
कि जो नौसादर को जलमें कजली करके छिड़कें कीड़े मकोड़े दूर
होजाते हैं (हादी) अरस्तू लिखता है कि यह पत्थर उत्तर और

दक्षिण की सीमाओं में होता है और इसका रंग तिल्ली के सदृश है जो मनुष्य अपने पास रक्खे कुत्ते उसपर नभोंकेंगे जो उसको गला कर उसमें गन्धक मिलावें तो पारेको बांधसक्ता है और फिर पारे में यह शक्ति न होगी कि आगपर उड़ जाय (याक़ूत) याक़ूत अति कठोर खुश्क और साफ़ चमकता हुआ नाना प्रकारके रंग अर्थात् सुर्ख पीला सब्ज़ नीलेरंग का होता है इसकी उत्पत्ति मीठेपानीसे होती है जो कि खानके बीच पत्थरोंमें समयतक रहताहै तो गाढ़ा होकर साफ और संगीन होजाताहै और खानकी गरमी इससमय में पकाकर सख्त पत्थर बनाती हैं आगसे नहीं गलता और कुछ चिकनापनभी रखता है और उसकी तरी हरसमय बढ़ा करती है और उसमें सोहन भी असर नहीं करता परन्तु उसमें हीरा और सम्बादज (कुरंड)असर करता है इसकी खान उत्तरके देशोंमें विष-वत्रेखा के निकट बताते हैं और छोटा होनेसे बहुत प्रिय होता है अरस्तूने लिखा है कि मुख्य करके याक़ूत चार प्रकार का होताहै लाल,पीला,और सब्ज़ सुर्ख हरएक प्रकारमें अति उत्तम और शुद्ध है और जब आंच दिखलावें बहुत सुर्ख और उत्तम होता है और जो उसमें कठोर २ बिन्दु होते हैं तो अग्नि में रखने से वह बिन्दु बिल्कुल पत्थर में फैलजाते हैं और जो काले बिन्दु होतेहैं तो आंच पातेही उनका रंग और भी चमक दमक लाता है (पीलायाक़ूत) लालसे आग पर अधिक ठहर सक्ता है और सब्ज़ याक़ूत अग्नि पर नहीं ठहर सक्ता सिवाय इनके और प्रकारके रंगभी हैं परन्तु वहऐसे उत्तमनहीं सो जो मनुष्य ऊपर वर्णन कीहुई इन तीनों प्र-कारोंमें अपने पास रक्खे संसारमें प्रतिष्ठित और आदरीक होगा और उसपर जीविका के कार्य सुगम होंगे अरस्तू के सिवाय औरों ने लिखा है कि याक़ूत पानीके बंधजानेसे रोकताहै (यशब अर्थात् यशम) यह सपेद रंगका पत्थर प्रसिद्ध है पकाशयके रोगोंको दूर करता है जो मनुष्य अपने निकट रक्खे उसपर कोई प्रबल नहोगा न युद्धमें न वाद विवाद में और इसीदृष्टि से बादशाह लोग इस

पत्थरको अपनें कमरबन्दमें रक्खाकरतेहैं और एकस्वभाव इसका यहभी है कि मुहँमेंरखना प्यासको दूरकरताहै (यक़तान) अरस्तू ने लिखाहै कि यह पत्थर सदैव हिलता रहताहै और ठहरतानहीं जबतक कि मनुष्य उसपर हाथ न लगावे उन्मादरोग और कांपनी और जोड़ों की सुस्ती के लिये लाभदायक है यदि इसका यन्त्र बनावें तो समझ तेज़होगी स्मरण बढ़जावे बड़े २ बुद्धिमानों ने इस पत्थर के गुण सबलोगों से छिपारक्खे हैं ॥

अपनी बुद्धिसे प्रकटकीहुई वस्तुओं का वर्णन ॥

कहते हैं कि जो तरीपृथ्वी के नीचे छिपी है सर्दी में गरम होती है और गरमी में ठण्डी इस कारण कि गरमी और सरदी परस्पर के बिरोध के कारण एक जगह नहीं ठहरसक्ती तो जब शीतऋतुआई और ठण्ढीहवाहुई गर्म्मी मिटजाती है और गुफाओं और पहाड़ों में स्थित होती है तो उनस्थानों में जो चीजें चिकनी होती हैं जब वहां सरदी और हवा पहुंचती है वह चिकनाई फैलती और फैलकर सख़्त होजाती है तो जब उस पर समय बीतता है तो वहतरी और चिकनाई सरदीके सबब बँधकर गंधक या पारे या गोंद या नमक के सदृश होजाती है और यह नानाप्रकार के परस्पर बिरुद्ध पदार्थ वायु और पृथ्वी के बिपरीतहोने से होते हैं कि पहले पहिल यहशक्तियां अर्थात् गरमी सरदी तरी और खुश्की यह सबमिलके पारे के रूप होतीहैं इसतरह पर कि जो तरी मट्टी के भागो में छिपी होती है और जो भाफें वहगुप्त हैं जब उसमें खान और गरमी की गरमी पहुंची तो वह क्षीणऔर हलकीहोकर ऊपरको झुकतीहैं तो दरारों और छिद्रों और गुफाओं में स्थितहोती हैं और उनकीभाफें कुछ समय पर्य्यन्त ठहरी रहती हैं जब शीत की सरदी का वेगहुआ तो कठोर और बँधजाती हैं और उनही ग़ारों और गढ़ों में पृथ्वीसे मिली रहती हैं और एक समयतक वहांपर रहतीहैं और इससमयमें खानकीगरमी उनको पकाया करतीहै और शुद्धकरतीहै तो वह तरी पानी की या मिट्टी

की जो उससे मिलीहुई है और उस संगीनी और मुटाई समेत जो पाईगई है उसकोगरमीकी दृढ़ता पारासंगीन बनाती है और मट्टी के भाग जो नीचेकी ओर रहजाते हैं वह जलीहुई गन्धक होजाती है सो जब पारा और गन्धक आपस में मिले तो खानों के नाना-प्रकार के रंग बरंगे जवाँहर मिलते हैं जिनका वर्णन होचुका है (ज़ीबक़) इसे फ़ारसी में सीमाब कहते हैं और हिन्दी में पारा यह जलके भागोंसे उत्पन्न होता है कि जो गन्धकदार मट्टी के उत्तम भागोंसे मिलकर कठोर होजातेहैं इसतरह से कि मट्टी और पानी में अन्तर नहींमालूम होता न उसका अलग करना सम्भवित है उसपर केवल एक मट्टीकापरदा ढंकारहताहै तो जब दोनों परस्पर एकहुये और परदा उसपर ढँकगया तो बहुधा ऐसा होता है कि उसबूंद के पास और बूंद जमतीहैं और उसढकने को तोड़डालती है और यह बून्द भी उसमें मिलजाती है उस समय फिर मट्टी के ढकनेसे ढकजाती है पारे की सफाई पानी की सफाई से होती है और गंधकदार मट्टी के होने के कारण अरस्तू कहता है कि पारा चांदी के प्रकारसे है परन्तु इसपर खान के अन्दर आफतेंआतीहैं और आफतें वहीहैं जो रांगेके वर्णनमें लिखीगईं जो मनुष्य मारे हुये पारे को अपने शरीर में लगावे जूं मारडालेगा जो उसकी भस्मको आंटे में मिलाकर दें चूहे मरजायेंगे इसीतरह जो पारेकी भस्म आगपर छोड़ें तो जो उसके निकटहोगा उसे नानाप्रकारके रोग जैसे मुखगन्ध, अर्द्धांग, नेत्रकीज्योतिकी क्षीणता, रतौंधी, और पीलारंग, कांपनी और ब्रह्माण्ड की खुश्कीआदि होंगे पारेकेधुवें से सांप बिच्छूआदि भागते हैं या मरजाते हैं शेखरईस ने लिखा है कि पारे की खानसे बहुधा सोना और चांदी निकालते हैं पारे का कुश्ता भी जूं दूरकरता है और खाज और बुरेघावोंको गुणकारीहै और इसकाधुवां ज्वर अर्द्धांग और कांपनी पैदाकरताहै और आंखों को अन्धा करताहै और यहीकारण है कि कीमियागर लोगों की आंखोंसे ढलका जारी रहताहै और बहरेभी होजातेहैं और उनके

मुखसे दुर्गन्ध आतीहै और पारा उड़नेवाला होता है और इसके धुवेंसे दुखदेनेवाले जीव भागते हैं शेख़ के सिवाय और लोगों का बचन है कि पारे का कान में टपकाना बुद्धि के निर्ब्बल होने का कारण है और क्या आश्चर्य कि सकता (यह वह रोग है जिसमें मनुष्य हिलजुलनहींसक्ता और मुर्दासा मालूमहोताहै) और मिर्गी का रोग होजाय जो अकस्मात् किसी के कान में पारा गिरपड़े तो उसके बाहर निकालने की क्रिया इसरीति पर है कि एकपावँ से खड़ाहोकर कूदे और अपने शिरको उस कान की ओर झुकावे जिधर पारा गिरा हो और अख़्तिताराात बदीही के निर्म्मापक ने लिखाहै कि पारे के निकालने की यहरीति है कि रांगे की सलाई उसकान में डाले पारा उसमें चिपक कर निकलआवेगा जो कोई कच्चापारा खाजावे तो तुरन्त रांगा घिसकरपीजाय पारे का दुख न होगा कै, या दस्त के साथ निकल जायेगा (गन्धक) यह पानी हवा और मट्टी के भागों से उत्पन्न होती है जब वह तीनों अपने स्वभावानुकूल कठोरता से परस्पर मिलते हैं तो तेल की तरह पर होजातेहैं और फिर सरदी के सबब जमजाते हैं अरस्तू ने लिखा है कि गंधकके रंग बहुत प्रकार के हैं कोई सुर्ख़ कोई सपेद कोई ज़र्द लाल गन्धक की खान सूर्य्यास्त के स्थान पर है वहां पर मनुष्य का चिन्हभी नहीं है उक़यानूस समुद्र के किनारेसे कई फ़र-सख़ (तीनमील) पर उसकी खानहै और लाल गंधक अपनी खान में रात्रि के समय अग्नि के सदृश प्रकाशमान रहती है और जब खानसे बाहर निकालें यह स्वभाव उसका जाता रहता है इसका धुवाँ सकते मिरगी और आधाशीशी रोगोंको गुणकरै और कीमिया में सोना बनानेके लिये काम आताहै और सपेद गंधक सपेदवस्तुओंको काला करती है कभी गंधककी खान बहते पानीकी नदियों में छिपी होतीहै इसकारण उन नदियों का जल दुर्गंधि युक्त होता है तोजोमनुष्य वायुके समान रहनेकी ऋतुमें ऐसे सोते पर नहाये तो हरघाव सूजन और खाज आदि को जो सौदा और दग्ध दोष

की प्रवलतासे हो आराम होजाता है और उदरकी पवन के लिये भी लाभकरे शेख़रईस लिखता है कि गंधक बरसरोगकी औषधियों में से है परन्तु जब तक आंच न खाईहो जो गंधकको बुनके गोंदमें मिलाकर बदरंग नाख़ूनपर लगायें तो उन चिन्हों को नाश करता है सिरकेमें मिलाकर झाईं पर मर्दन करना गुण दायक है बिच्छू के विषको भी दूरकरतीहै और खाने और लगाने से सम्पूर्ण प्रकार के घाव खाज और दाद गुण करे और ततरून के साथ पांव की रगकीपीड़ाकेलिये और इसकाअरक़ ऋतुके रुधिरको जारीकरताहै और इसकी धूनी ज़ुकाम नज़लेको गुण कारकहै जो इसका बुरादा शरीर पर मलें पसीने का निकलना वंद करेगी यदि गर्भवती स्त्री की योनिमें धुआंकरें तुरन्त गर्भपात होगा अरस्तू के सिवाय और साहिबोंका लेख है कि पीली गंधकको डंकमारनेवाले जानवरों के घावपर लगाना लाभ करे इसका धुआं बालों को सपेद करता है और इसकी गंधसे सांप बिच्छू भागते हैं मुख्यकर चरबीके तेल के साथ और जो तुरंज अर्थात् जम्भीरी नींबूके वृक्षके नीचेधुआंदें तो सब नीबू गिर पड़ेंगे (क़ीरया) बाज़े पहाड़ोंमें जोशखाता है और कई दरियाओंमें परन्तु उस चश्मे का पानी गरम २ जोशखाता है तो जब पानीका उतार हुआ तोनरम होताहै और जब गरम पानी से अलग हुआ ठंढा होकर सूख जाता है उस समय उसको लेकर पृथ्वीपररखतेहैं और फिरदेगमें छोड़तेहैं और कुछ रेतभी मिलाकर छोड़ते हैं और चुमटेसे हिलाते जाते हैं तो जब उसका उचित रूप दिखाई दिया तो उसके टुकड़े अलग २ पृथ्वी पर डालते हैं उस समय वह सख़्ती पकड़ते हैं शेख़रईसने लिखा है कि जो क़ीर को पियें तो जो लोहू पेटके अंदर सूख गया हो उसको पिघलाता है नाख़ून की सपेदी के लिये गुणकारक है कंठमाला पर लगाना बहुत लाभकरे और दाद को दूरकरे और जोड़ों की पीड़ापर लेप करना गुणदायक है और रांघन और खांसी और ख़ुनाक़ अर्थात् पीनसकी बीमारियों में इसका शरबतपीना गुणकरे (नफ़्त) पानी

के ऊपर आताहै दोप्रकारका होताहै सपेद और काला कभी ऐसाभी होजाता है कि कालेनफ़्त को कद्दू के रसमें डालकर पकाते हैं तो सपेद होजाता जो उसको लक़वा फ़ालिज (अर्द्धांग) और जोड़ों की पीड़ापरलगावें तो गुणदायक होगा और आंखकीसपेदी और नज़लेके पानीकोभी गुणदायकहै जो गरमपानीमें आधामिस्क़ाल पिये तो पेचिश दूरहोगी और मरेहुये बच्चेतक उदर से निकालता है और जो बच्चे की झिल्ली गर्भाशय में रहगई हो तो उसको भी बाहर निकाल देता है और कीड़ों और फ़फ़ोले के दानों के लिये उपयोगी है और डंक के घावोंको भी लाभदेके बहुधा थोड़ेघिसने से बग़ैर आग के भी जल उठताहै साहब अख़तियारात ने लिखाहै कि सुद्दको खोलता है और दोनों चूतड़ों की पीड़ा के लिये लाभ करे पुरानीखांसी को दूरकरता है और कालेरंग का नफ़्त पीड़ाके दूरकरने और मूत्राशय की सरदीकेलिये गुणकारी है और इसका बदला क़तरान है (मोमियाई) यह भी काली गोंद याक़ीर की तरह है परन्तु यह अतिप्रिय है इसकीखानें फ़ारसकी धरती और मवस्सल में पाई जाती हैं टूटीहुई हड्डियों को पूरा गुण करती है और फ़ालिज़ और लकवे को गुणकारी है और आधाशीशी और शिरपीड़ा और मिरगी के लिये भी अति उत्तमहै—यदि मरज़ंजोश अर्थात् दूने के अरक़ के साथ नाक में टपकावें या तीन रत्ती के अनुमान पियें जिह्वा का भारीपन और खुनाक और उन्माद को गुणदायकहै तेलकेसाथ डंककेघावपर लगाना गुणदायकहै साहब अख़्तियारातबदीही का निश्चय है कि बैसूक़ोरे दोस ने कहाहै कि मोमियाई अतिगुणदायक वस्तु है इसका स्वभाव तीसरे दरजे में गर्म्महै और बहुत उत्तम और गलानेवाली है शेख़रईस के विचार में दूसरेदरजे के अन्त में गर्म्म और पहलेमें खुश्क और प्राणों के बलदेनेवाली है कफ़केशोथों को गुणदायक और बिगड़े रुधिर को लाभदे एकक़ैरात अर्थात् चारजौकेबराबर सिकंजबीनकेसाथ पीना कंठकीपीड़ा और हौलदिलको लाभदायकहै और आठजौकेअनुमान

बिच्छूके घावके वास्ते फायदा करे इसका पीना टूटेहुये जोड़ोंकेवास्ते बहुत गुणदायकहै जो चाररत्तीके बराबर जोशदेकर जलंधर रोगी के उदरपर मर्दन करें गुणकरेगी और मूत्ररोध के वास्ते हरदिन किरफस अर्थात् बिलायती अजमोद के पानी में पीना गुणदायक है कोढ़ और सपेद कालेदाग जो शरीर पर प्रगट हों पीलपांव इनरोगोंके प्रारम्भ में सातदिन तक अफतीमूं* के साथ पकाकर चारजौके बराबर पीना गुणदायक है शीत कोपकाशय की पीड़ा और मंदाग्निकेलियेभी हरदिनमद्यमेंपीना गुणदायकहै औरबिच्छू और सर्पके विषऔर बिषखायेहुये को लाभकरता है परन्तु पहाड़ी पोदीना और अनीसून (रंदनी) के जोशदिये हुये पानी में मिलाकर यह गुण होगा यदि जोड़ोंमें कांपनी हो तो हरदिन सातर फारसी में इसका जोशांदा पीना गुण करे और गर्भाशय के बंदहोने और संपूर्ण स्त्रियोंकेरोगोंको जो शरदीसेहों तेजपातके पानीकेसाथपीना गुण दायक है और चौथिया तप की बीमारी में हरदिन पहले बीस दिरम बाद आवर्दको जोशदें फिर उसीके जोशांदे में मोमियाई को पियें गुणकरेगी इसके इतने गुण संक्षेपमें कहे गये और मोमियाई के बहुत प्रकार और भी हैं कि पहाड़ों और दरियाओंसे मिलती हैं और उसको फक़रूल यहूद कहते हैं और मनुष्य की भी बनी हुई मोमियाई होती है इसके गुणभी इस मोमियाई के निकट है अब यहां पर साहब अखतियारात बदीहीका वचन पूर्ण हुआ (अम्बर) इसकी खानमें अन्तर है बाजोंके विचारसे यह नरम मेंह है जो कई स्थानोंके पत्थरों पर दरियाके अंदर जमता है जैसा कि तुरंजबीन भी नरममेंह और उसीके सदृश है जो मुख्य करके खुरासानके कांटेदार वृक्षों पर जमती है कोई कहते हैं कि यह दरियाई गाय को विष्ठा है और यहभी कहते हैं कि जो चीजें दरिया में उगती हैं और जल जंतुओं के खानेसे आती हैं यहीहै और कइयों का वाक्य है कि मछली के उदरसे पाया जाता है कि वह इसको खाकर मर

* इसको हिन्दीमें अमरबेल या आकाशबेल कहते हैं।

जाती है बोखरईस कहता है कि अंबर चश्मे से मिलता है निदान बहुतोंके वचन इस विषयमें लिखे हैं अखवियारात नदीही का निश्चेपक लिखता है कि निश्चय करनेसे यह बात सिद्धहुई है कियह एक प्रकार का मोम है और इस प्रकार में उत्तम अशहब होता है जिसको रुपन्द कहते हैं दूसरा नीलेरंग का जिसको फितक़ी और तीसरे पीले रंगका जिसको खश खाशी कहतेहैं और उसके दरिया में पैदा होनेमें कुछ विरुद्धता नहीं है निदान यह दरिया में उत्पन्न होता है और दरिया इसको किनारे पर पहुंचाता है कहते हैं कि जंग दरिया किसी ऋतु में इस अंबर को इतना अपने किनारे पर फेंकता है कि एक टीलासा मालूम होता है बहुधा जो देखागयातो हरटुकड़ा अंबरका शिरकी खोपड़ीके सदृश होता है जिसका वज़न हज़ार मिसकालके अनुमान होता है और बहुधा मछली के पेट से भी निकालते हैं कहते हैं कि जब मछली इसको खाती है तुरन्त मरजाती है और पानी पर उभर आती है उस समय लोग उसका पेटफाड़ कर निकालते हैं ब्योपारी उसको खूब पहचानते हैं अंबर जितना सपेद और हलकाहो उत्तम होगा उसका स्वभाव दूसरे दर्जेमें गरम और पहले दरजेमें खुश्क है बुड्ढोंके लिये अति गुणकारी है ब्रह्माण्ड औरइन्द्रियों को लाभ देता है और मनका बल कारक और प्राणों को बलदेता है और आज़ायरईसा अर्थात् कलेजा, मन, और भेजे और शिरपीड़ा और पक्काशय को गुणदायक है और जो बिकार कि आंतों आदि में होते हैं उनका दूर करनेवाला है कदाचित् ठंढेदोषों से आधाशीशी और शिर पीड़ाहो तो धुवाँदेना गुणकारी होगा और जो तरी और उपद्रव कारक बिकारोंसे जोड़ोंकी पीड़ाहो उसपर इसका लेपकरना गुण दायक होगा जो गरम तेल जैसे कि दूना या बाबूना के तेल में कजली करके नाक में टपकावे जो बुड्ढों को कफ के मोटेहोने के सबब ब्रह्माण्ड में रोगहो उसको गलाताहै यदि उसका लखलखा (कईसुगन्धदार चीज़ेंमिलाकर सूंघीजाती हैं) बनावें तो फ़ालिज़

और लक़वेको गुणदायक है और तैल में कजलीकरके मर्दनकरना फीहाकीपीड़ाके वास्ते गुणकारी है कहतेहैं जो थोड़ा शराबमें पियें तुरन्त वीर्य्यपात होगा और एकदांग अर्थात् छः रत्ती के अनुमान से अधिकतर पीना हानिकारक है और इसकेविकारका शोधन-करनेवाला कपूरका सूंघना है इससफे और पिछलेसफेमें थोड़ीबातें मुख्यपुस्तकमें न थीं उल्थकने अपने निश्चयकरने और अभ्याससे अधिककी हैं अब स्थावर और जंगम का वर्णन किया जाता है॥

(नज़र दूसरी स्थावर पदार्थों के वर्णन में)

स्थावर पशु और खानोंमें मध्य पदवी पर हैं इसका वर्णन इस रीति पर है कि स्थावर जंगमसे बड़ा है क्योंकि स्थावरपदार्थ बढ़तेहैं और जंगम नहीं स्थावरोंका जीवधारियोंसे साझाहै परंतु थोड़ेकामों में और ईश्वरने हर एक वस्तुको आवश्यकताके अनुकूल उत्पन्नकिया है और जब वह वस्तु आवश्यकतासे अधिक होती है तो वही अधिकता उसपर भार होती है निदान जंगम पदार्थों को हिलने जुलने की कुछ आवश्यकता नहीं परंतु उससे विपरीत जीवधारी हिलने जु-लनेकी आवश्यकता रखताहै ईश्वरकी अद्भुत मायाहै कि जो दाना किसी चीज़का तरज़मीनसे मिलताहै सूर्यकी गर्मीसे दोटूक होजाता है और यही उसी शक्तिकी क्रिया है जो ईश्वरने उसमें उत्पन्नकी है मट्टीके भाग मट्टीसे और पानी के पानी से स्थित होते हैं सो वही भाग बाज़े २ के ऊपर इकट्ठे होते हैं और वह दाना स्थावर का बीज होकर फल फूलसे भरपूर होता है प्रकटहो कि स्थावर दोप्रकार केहैं एक वृक्ष दूसराबेल वृक्ष वह स्थावर है जिसकी साक़ अर्थात् पेड़हो और बेल वह है जिसके पेड़ न हो सो वृक्ष बड़े जीवधारियों के सदृश हैं और बेल छोटे जीवधारियों के सदृश और जो ईश्वरने इन स्थावरोंको शक्तिदी है वह दोप्रकार कीहै एक खादिमा दूसरी मख़दूमा खादिमाके चारप्रकार हैं(प्रथम)जाज़बा अर्थात् वहशक्ति है जो पानीको वृक्षके मूल में खींचती है और वहांसे वृक्ष के ऊपर पहुंचाती है (द्वितीय) मास्का अर्थात् रक्षा करने की शक्ति

जो जलकी तरीकी रक्षा रखती है कि उस वृक्ष में गुण करे यह चाहे जीवधारियों में बहुत प्रकटहै जैसे जब मनुष्य जल पीताहै शक्ति वह शिर अपना नीचे को झुकाले परन्तु वह जल बाहर न निकलेगा क्यों कि वह रक्षा करने वाली शक्ति उसको रोके हुयेहै और इसके बिपरीत कि जिस घड़ेमें जल भरकर औंधा कीजिये जोकि उसमें रक्षा करनेका बल नहींहै तुरन्त गिरजावेगा (तृतीय) पचनेकी शक्ति और यह तरीको शोधन करतीहै कि वहतरी वृक्षका भाग होजाय (चतुर्थ) दूर करनेकी शक्ति जो तरीको दूर करती है अर्थात् जो तरीशुद्ध नहीं है वा वृक्षके भाग होनेके योग्य नहीं है उसको दूरकरतीहै और यहशक्ति सबजीव धारियोंमें भी प्रकटहै कि मलमूत्र हुआ करताहै और मखदूमा शक्ति भी चार प्रकारकी है (प्रथम) ग़ाज़िया यह वह शक्तिहै जो गलेहुयेके स्थाना पन्नहोतीहै (द्वितीय) बढ़ानेकी शक्ति जो मुख्य शरीरमें वृद्धि लातीहै भोजनके पहुंचानेसे जैसा कि जीवधारियोंमें अधिक प्रकटहै कि बढ़ानेवाली शक्ति भोजन से दहने तरफ़ पहुंचाती है फिर बाईं ओर को अच्छी तरह बढ़े (तृतीय) मोल्दह अर्थात् शुद्ध मूलके पैदा करने वाली शक्तिऔर उससे फलके लानेकी शक्तिस्थावरोंको प्राप्त है और यह शक्ति तरीकीहै जिस प्रकार से पशुओं में मूल बीर्य्य है (चतुर्थ) मसव्विरह है यह वह शक्ति है जिसके द्वारा रूप व रङ्ग तय्यार होताहै और यह अद्भुत शक्तिहै जैसे कि वहपत्ते फूल बूट कलियां और रंगा रंगके फलहैं और भोजनकी शक्तिके भी अद्भुत गुणहैं कि बहुधा ऐसा होताहै कि सम्पूर्ण भोजनको गिरी में ख़र्च करतीहै और शरीर के लिये कुछ नहीं छोड़ती जिस तरहसे अख़रोट बादाम फन्दक (विलायतीप्रसिद्धफलबेरके बराबरहै) और पिस्ते में और उसफलके वास्ते मानो पुख़्ता सन्दूक़देतीहै कि उसगिरीको एक समयतक रक्षितरखसके और इसमें कोईख़राबी न आसके सो वह उसगिरीके जमाकरनेमें लगीरहतीहै और गिरीकोनहींछोड़ती हां कुछ बीज के मिलने को छोड़ती है जैसा कि सेव अमरूद और

विद्दीमें देखा जाताहै कि खानेवाला छुरीसे सपेदी निकाल कर खा सक्ताहै तो यह सबबल जो ईश्वरने उत्पन्नकिये जिसतरह से ईश्वर की आज्ञाहै जिसके अर्थ नीचेलिखे हैं कि ईश्वर निकालने वालाहै दाने और गुठलीका पैदाकरनेवालाहै जीतेकोमुरदेसे और मुरदेको जीतेसे इसस्थान मुरदेके अर्थ अण्डा और जीतेसे मुर्ग़ प्रयोजन है कि एक दूसरे से निकलते हैं निदानस्थावर दो प्रकार के हैं एक वृक्ष दूसरेबेल ईश्वर चाहे वो दोनोंप्रकारोंका वर्णन निकटही किया जाताहै ॥

(पहलाप्रका वृक्षोंकावर्णन)

शजर उस वृक्षको कहतेहैं जोखड़ारहे और यह बड़े वृक्षमानों बड़े जीवधारी हैं और जो पृथ्वी पर फैलीहुई होतीहैं वह बेलें हैं और यह छोटे २ जीवधारियों की तरह परहैं और बड़े २ वृक्षजैसे साल,चिनार,(विलायती वृक्ष) सरू आदिमें फल नहीं होता इस का कारण यहीहै कि उनका मूल केवल दरख़्तों में खर्च होता है और फलदार दरख़्त इनसे छोटे होतेहैं और इनका मूल केवल वृक्षमेंही नहीं किन्तु उनके फूलने फलनेमें भी खर्चहोताहै स्थावरों में भी जीवधारियों के सदृश नरमादा का हाल पाया जाता है कि जो वृक्षोंमें नरहैं उनका थाला मादासे बड़ा होताहै और इस बात का प्रमाण कि हमने वृक्षों और जीवधारियों एकसा बताया है भोजन के कारण सेहै जिस तरह कि जीवधारियों के शरीर में घुसनेवाली होतीहै और उनको बल पराक्रम और सन्तानके होने की शक्ति पहुंचातीहै इसी तरह वृक्षोंको पानीका पहुंचानाहै अर्थात् जब वृक्षोंकी जड़में पानी छोड़तेहैं उसका सारांश हरएक रग और रेशे और अन्दरके स्थानोंपर पहुंचताहै और हर पत्ते और फलमें अपने बढ़ने का प्रभाव दिखलाताहै ईश्वर की माया देखिये जिस तरह से जीवधारियों को बाज़ू और पर और चमड़ा आदि कृपा किया वृक्षोंको हरे २ पत्तोंके पहिनाव कृपा किये और जिस तरह पर जीवधारी अपने सींग और हाथ पैरोंसे अपना बचाव करते हैं

वृक्षभी पत्तोंके इकट्ठे होने के कारण गरमी सरदी से बचे रहते हैं और बुराई भलाई इन्हीं पत्तोंके होनेपररक्खीहै जो अधिक होजायँ तो फलकी छाल कठोर और उसकी गिरी हलकी हो जो फलों के ऊपर उनकी छाया दूरहो तो सूर्यकी गरमीसे झुलसजायँ जैसाकि बहुधा अनारो में देखा जाताहै कि उनका एक किनारा कभी २ काला दिखाई देताहै और जब फलका समय आताहै तो पतझाड़ होतीहै क्योंकि उस समयजल शक्ति वृक्ष में प्रभाव नहीं करती है और इन वृक्षोंसे ईश्वर की दीहुई शक्तियहहै जिसका वर्णन ईश्वर नेही अपने मुखसे कियाहै कि हम कैसे कारीगरहैं कि एकही जल से सब वृक्षों का पालन होताहै और फिर स्वाद में अन्तर है यह बुद्धिमानों के बिचारमें बड़ी कारीगरी की बातहै निदानइस स्थान पर आवश्यक वृत्तान्त वर्णन करते हैं और वृक्षोंका वर्णन लिखतेहैं (आस) इसको फ़ारसीमें मूरद कहतेहैं साहब इन्फ़लाहा लिखताहै कि जब इस वृक्षको लगाना चाहें तो पहले उसके थालेमें जौबोदें कि इससे वृक्ष दृढ़ होताहै शेखरईश के बिचारमें इसके पत्ते को तूतियाके साथ झाईंपर मलना गुण करे और रतौला के घावपर मलना लाभदे (रतौला एक प्रकार की विषैली मकड़ी होतीहै) और इसका फल पीसकर पीना बिच्छूके विषकोदूर करताहै इसके पत्तोंको पीसकर बालों में लगाना बलकरे इसकेफलको उबालकर कुल्लीकरना दांतकेकीड़ोंकानाशकरताहै ॥

तसबीरनम्बर १०८

(आबनूस) यहवृक्ष एकपहाड़के टुकड़ेकी तरह काला और बड़ा होताहै औरइसकीचोटीपरसब्जपत्तेहोते हैं इसकीलकड़ीबहुतकठोर किन्तुपत्थरके बराबरहोतीहै शेखरईशका वचनहै कि इसके जलाने मेसुगन्ध पैदा होती है जो इसको पानीमें घिसकर आंखमें लगावे सपेदी दूरहो और धुंधभी नष्टहो और इसका महीन आग से जले हुये और उदरके अफरापर गुण दायक है स्वरूप यहहै ॥

तसवीर नम्बर १७६

(अतरज) अर्थात् तुरंजका वृक्ष (जम्मीरीनींबू) गरमधरती पर उगताहै साहब अन्फलाहा के विचारमें जो कद्दूके वृक्षकी मट्टी इसकी जड़ में डालें तो इसमें बहुत फलहोगा और फल बहुत दृढ़ होताहै जो इसके पौधेको कद्दूके पत्तों से छिपादेवें तो मज़बूत हों और पालेसे भी बचा रहे साहब फलाहा लिखताहै कि जो मनुष्य यहचाहे कि अतरज का वृक्ष मज़बूत ताक़तदार और पायदार रहे तो कद्दूके वृक्षके नीचेकी मिट्टी लहूमें भिगोकर उसकी जड़मेंछोड़ देंजो यह चाहे कि इसका फल समयतक स्थिररहै तो उसपर चूना लगावे यदि तुरंजका लाल रंग करना चाहे तो उसके वृक्षकोशहतूत या अनार के दरख़्तको पैवन्द देवें जो तुरंजको जौमें गाड़कर रक्खें तो मुद्दत तक हराभरा रहै इसके पत्तोंको चबाना मुखमें सुगन्ध पैदा करताहै और लहसुन प्याज़ की दुर्गन्ध का दूर करने वालाहै वलैनासने इसके गुणमें लिखाहै कि इसके पत्तोंको बादाम के तेलमें जोश देकर जिसको खिलावें वह प्यारकरनेलगे इब्नुल्फ़िक़ियाने लिखाहैकि फारसके देशोंके बुद्धिमानोंने इसका सूंघना गुणकारी समझा है इसकी सपेदी और खटाई भोजनकी चीज़ों में खर्च होतीहै और दानेसे तेलनिकलताहै इसकीछाल मुखकीदुर्गन्धि को गुण करतीहै और अर्द्धाङ्गको भी गुणकरै इसकी छालको पीस कर पीनासर्पके विषकोउपयोगी औरइसकीराखका मरहमबनाकर लगाना झाईं और दादको गुणदायकहै शेखरईश ने लिखा है कि इसकी छाल जिन कपड़ोंकी तहमें रक्खें उसमें कीड़ा न लगेगा और इसके छालकी गन्ध उपद्रवकारक वायु और महामारी के हैजे और स्त्रियोंकी मलीनता को दूर करतीहै कहते हैं कि जो खट्टे तुरंज का रस रोशनाई में मिलावें तो उस का लिखा हुआ खत बहुत जल्दी उड़जाता है इस का बीज घिसकर बिच्छू के विषपर लगाना गुणकारी लिखाहै जो कपड़ेकी पोटलीमें रखकरजिस स्त्री

की बाईं भुजा पर बांधे वह कभी गर्भवती न होगी जबतक वहयंत्र बँधारहे स्वरूप यहहै ॥

तसबीर नम्बर १८०

(अजास) अर्थात् आलूबुखारा साहबुलफलाहाका वचनहै कि जो आलूके वृक्षको आलूके पानीसेसींचे तो उसकाफल अति स्वादिष्ट होताहै जो इसके वृक्षमें गायकापित्ता छोड़ें तो उसके फलोंमें कीड़े न होंगे इसका फल प्यास और पित्त की गरमी को गुण करे जो यह चाहे कि आलू को मुद्दत तक रक्खें तो चाहिये कि किसी बरतनमें रखकर ऊपरसे इसीका पानीभर दें और फिर कपरमिट्टी करदें आलू ताज़ेरहैंगे इसकेपत्तोंको शराबमें उबालकर कुल्लीकरना दांतोंके जड़ोंकी पीड़ा दूरकरता है सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर १८१

(आज़ाद दरख़्त) तबरिस्तान में होता है जिसको ताहक भी कहते हैं उसका मेवा बेर के सदृश होता है कहते हैं कि विषैला है इसके पत्ते खाना पशुओं के लिये मारडालने वाला बिषहै इसका रस बालों में मलना बालोंको लम्बा करता है और जूं मरजाती हैं शहद में मिलाकर पीना बिषको गुणकारी और पहलू की पीड़ाका नाश करनेवाला है शेखरईस ने लिखाहै कि जो इसका फलखाय उसको दुःख और शोक बहुत हो क्या आश्चर्य्य कि वह मनुष्य मरजाय सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर १८२

(अमग़ोला) कांटादार जंगली दरख़्तहै इसको दरख़्त सम्नग भी कहते हैं शेखरईस के विचार में इस जड़ से टकोर करना या धनीलेना शरीरको सुगन्धित करताहै और नूरेकी गन्धको दूरकरताहै सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर १८३

(बान) प्रसिद्धहै इसके फलका दाना चने से बड़ा सपेदीलिये होता है इसकी गिरी को जरब कहते हैं शेखरईस ने लिखाहै कि इसकी गिरी झाईं आदि चिन्हों को दूर करती है और उबाल कर

कुल्ली करना दांतों के जड़की पीड़ा को दूर करताहै बहुधा मनुष्यों का वचनहै कि बहरापन भी दूर होताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर १८४

(बतम) अर्थात् बुन इस प्रसिद्ध पहाड़ी वृक्ष का फल और बीज बहरेपन और दादु को गुणकरे कइयों के विचार में कामदेव अधिक कर्त्ता भी है शेख़रईस का वचनहै कि इसका लेप फालिज और लक़वेको गुण कारक और भूखको कम करता है इसका गोंद और फल शराबमें मिलाकर रतीलाके घावको गुणकारीहै (रतीला एकविषैली मकड़ी होतीहै) वृक्ष का स्वरूप यहहै ॥

तसवीर नम्बर १८५

(बलसां) मिसर के एकमुख्य मौजेऐनुश्शम्स में पाया जाता है इसकी गन्ध और पत्ते तितलीकी तरह होतेहैं परन्तु कुछ सपेदी लिये शेख़रईस के विचार में इसका दाना और लकड़ी शिर और फेफड़ेकी पीड़ा और रांधन और मिरगी के लिये गुणदायकहै और बहुधा कहतेहैं कि इसकी धूनी बांझ स्त्री को लाभकरे और बिषैले जानवर मुख्यकरके सांपकेघावको गुणकरे जब शोरी सितारा जो कन्या राशि के पीछे की ओर उदय होताहै और उसको उबूर भी कहतेहैं उसके जगह लोहे से गोदकर उसका रस रुईके पहलों में रखतेहैं हरवर्ष कईरतिल (आधसेर) प्राप्तहोसक्ताहै परन्तु इसका पकाना और तेलबनाना एकअंगरेज़का कामहै सिवाय उसके और कोईनहीं जानताहै और हज़ारोंवर्षसे सैकड़ोंवर्षों से यहकाम चला आताहै बीजोंसे अधिकतेल और लकड़ीसे दाना अधिकबलवान्है इसकातेल संसारभरके तेलोंसे उत्तमहै और इसकीलकड़ियोंमें वह लकड़ी उत्तमहै जो गेहुंआरंग और बराबरहो शेख़रईसका निश्चय है कि यह तेल आंख के परदेको प्रकाशवान् करताहै और बच्चेको पेटसे निकालता और झिल्ली जो पेटमें बच्चेपर लिपटीहोतीहै उसको भी निकालता मूत्रको जारी करता और टूटीहड्डी को दुरुस्त कर देताहै इसका मर्दन लँगड़ों को आरोग्य करता और उपद्रव करने

बालेघाव और अदाङ्को गुणदायक है और जब इसतेलको पकाते हैं तो मोम रोगन की तरह गाढ़ा होजाता है उस बलसां नामी वृक्षकी सूरत यहहै ॥ तसवीर नम्बर १९६

(बलूत) कहतेहैं कि इस पहाड़ी वृक्ष का फल एक बर्ष बलूत और दूसरे बर्ष माजू हुआ करताहै जो यहसचहै तो वहीबात हुई कि जैसे चारपायों में खरगोश और उड़नेवालों में कफ़्तार अर्थात् हुण्डार और ज़ग़न अर्थात् चील जो एकबर्षनर और दूसरेबर्ष मादा रहतेहैं लिखाहै कि इसके पत्तोंको सांप पर निचोड़ें तो सांप हिल न सके शेखरईसके बिचारमें इसके पत्तोंको पीसकर घावमें लगाना भरताहै इसकाफल कीड़े मकोड़ोंकेविष और लहूकेनिकलनेको बन्द करताहै बहुधालोगकहतेहैं कि जो इसकीराख जंगलीचूहोंके समूह में डालदें तो वह आपसमें युद्ध करने लगेंगे सूरत उसकीयहहै ॥

तसवीर नम्बर १९७

(तफाह) अर्थात् सेवसाहबुलफ़ल्लाहा लिखताहै कि इस वृक्ष के पहलू में जंगली प्याज का बोना गुणकरे फिर कीड़े इसके फल और दरख़्तको न पहुंचेंगे जो इसके थाल्हों में मनुष्य या सुअर की बिष्टाछोड़ें तो फल अति दृढ़ और सुर्ख़ रंगका होगा और सुर्ख़ रंग करने के वास्ते इसके गिर्दागिर्द लालफूलों का लगाना भी अच्छा है और जो शराबकी तलछट और बकरीकी मेंगनियां इसकी जड़ में भरदें तो उसका फल कभी न गिरेगा शेखरईस का वचनहै कि इसका रसपीना पट्ठोंकीपीड़ाको गुणकरे और पांवकी रगकीपीड़ा वाले के पांव पर मलना और सम्पूर्ण प्रकार के बिषों को लाभ दे मुख्य इसके कच्चों फलों का रस बिषको बहुतही गुणकरे यदि सेव को मुद्दततक अंजीरके पत्तोंमें रखछोड़ें न सड़ेगा इसकी सुगन्धका सूंघना ब्रह्मांड को बल दे और आंखों में तरावट देनेवाला और मुंह मीठा करता है ॥

तसवीर नम्बर १९८

(तनूब) यहबड़ा वृक्ष रूमके पहाड़ोंकी जड़ोंमें होताहै इसीसे

क़तरान (एकप्रकार का तेल) मिलताहै शेखरईस लिखता है कि इसको ताज़ा २ घाव पर लगाना उत्तम है घावको बिगड़ने नहीं देता इसकी लकड़ी सिरके में घिसकर दांतोंकी पीड़ाको गुण करे इसकाबीज छातीके नफ़सको गुण करताहै नफ़स कफ की तरहपर एक वस्तु है जो हृदयमें जमा होती है इसका गोंद खांसी गुण करे इसी वृक्ष से गोंद निकलताहै जो नाखूनकी सपेदीके गुणकरने का प्रभाव रखताहै और पैरों की बिवांई पर इसका मलना गुण करे और बालखोरे पर मरहम बनाकर लगाने से बाल निकलते हैं और इसका धुआं पलकों को मज़बूत और नेत्र की ज्योति को बलवान् करताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर १८६

(तूत) इसे खरतूत भी कहतेहैं और इसे लोग प्यारा रखतेहैं कि रेशम के कीड़े इसी में पलतेहैं मीठे तूतको अरबवाले फरसाद कहतेहैं और खट्टेको नवाती साहबुलफलाहा का बचनहै कि इसके पहलूमें जंगली प्याजबोना तूतके वृक्षको बलकरे और फल में रस बहुत होताहै खट्टेतूतका पत्ता बिवाँई और गलेकीपीड़ा और पीनस का गुणकरे और इसका रस रतौंधा के दुखको गुणकरे शेखरईस कहतेहैं कि खट्टेतूतकीकुल्लीकरना दांतोंकीपीड़ाको दूरकरताहै और कालातूत बिच्छूके घावपर रखना पीड़ा ठहराता है इसकी छाल शहदमें मिलाकर उबटनाकरना मैल साफ करताहै और फफोलों को दूर करता है जो काले तूतसे हाथ काले होजायँ तो सपेद तूत के मलकर धोनेसे मुख्य रूप आजावेगा सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर १६०

(तेन) अर्थात् अंजीर साहबुलफलाहा लिखता हैकि इसके वृक्ष लगाने के पहले उचित है कि पहले इसके पौधे को नमक में रक्खें और फिर गोबर थालहे में डालकर दरख़्त जमादें तो इसका फल बहुत स्वादिष्ट होगा इसके दरख़्त के नीचे अंडेको गाड़ देना उत्तमहै फल बहुत होते हैं जो इसकी जड़ में केकड़ेको नीचे नमक

के साथ गाड़ें तो इसका फल कभी न गिरेगा और मीठाहोगाइसकी लकड़ी का रतीला नामी मकड़ी के काटेहुये पर लेपकरना गुणकरे और अंड वृद्धि के रोगमें धूनीलेना बहुत उत्तम है इसके कोंपलकी धूनी सम्पूर्णप्रकारके कीड़ों मकोड़ोंके विषमें लाभकरे और दांतोंकी पीड़ापर लेपउत्तम है और ताज़ेपत्ते कच्चो अंजीर मिलाकर दीवाने कुत्ते के घावपर लगाना गुणकरे जो रुई में रखकर नेवले के काटे हुये घावपर रक्खे गुणकरेगा इसकी छालका रस शरीरको दुर्गंधि दूरकरता है और दसम (कई जातिकी स्त्रियां अपने हाथों आदिपर नीला गोदना गुदाती हैं) कि नवीन चिह्नोंको दूरकरताहै हरेपत्ते अंजीरके दूधमें निचोड़नेसे दूध जम जाता है इब्न अब्बास ने कहा कि यह वह मेवा है कि जिसके लिये ईश्वरने क़ुरानमें सौगन्ध याद कीहै इन शब्दोंसे कि यह मेवा स्वर्गके फलोंके सदृश है एकसमय कोई मनुष्य हज़रत मुहम्मद साहबके साम्हने अंजीरलाया आपने कहा कि जो इसका अंजीर के बदले स्वर्गी फल रक्खा जाता तो वहुवही उचितथा बवासीर और नकरस (वहरोग जो पावँको उंगलियों में होता है) के वास्ते गुण करे शेख़ ने लिखा है कि कच्ची अंजीर का लेप मस्सों और झाईं आदि पर लगाना गुणकरे और हररोज़ अभ्यास करके अंजीर खाना बदनके रंगको वदरंग करता है और ऐसी स्थिर मोटाई लाता है जो जल्दी दूर होजावे और जूयेंभी पैदा होते हैं सूखी या तर जैसी अंजीर खाये मिर्गी दूर होजाय इसका दूधलगाना फोड़ेको पकादेताहै और उपद्रव कारक मांसको दूर करता है जो इसका दूध गायके दूधमें मिलावें तो वह सब दहीकी तरह जमजाता है जो इसका दूध शहद में मिलाकर आंखमें लगावें तो आंखको अँधेरीकोगुणकरे और इसका रसपीना भूख दूरकरता है और मूत्ररोध का रोग पैदा करता है और बिच्छू के डंक को भी लाभकरे ज़करिया के पुत्र मुहम्मद का बचन है कि अंज़ीरके धुयेंसे मच्छड़ भागते हैं चित्र इसका यह है॥

तसवीर नम्बर १६१

(जमनेर) यह भी अंजीर के सदृश होता है और पत्ता तूत के सदृश वर्षमें तीन वेर फलता है इसका फल और फलदार दरख़्तों की तरह डालियोंपर नहीं होता किन्तु जड़ में फलता है जो इसका रस लेकर कईबार दसम और कंठमाला पर लगावें गुण करे और पीनाभी डंक मारनेवाले जानवरोंके लिये गुणदायकहै सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर १६२

(ज़ौज़) अर्थात् अखरोट यह वृक्ष ठंढे देशोंमें होताहै साहबुल-फ़लाहाने लिखा है कि जो यह चाहे कि इसके फल की छाल हाथ से बेपरिश्रम दूरहोजाय तो पहले अखरोटको पांचदिनतक लड़के के मूत्रमें भिगोकर फिर बो दे और उसपर राख छिड़कदे जब उस बीजसे वृक्ष उगेगा और अखरोट लगेगा छिलका हाथसे जल्दी अलग होजाया करेगा और जो अखरोट का छिलका दूर करके उसकी गिरीको बो दे तो उसके वृक्षके फलकीछाल काग़ज़की तरह पर महीन होगी जो बोनेके समय थोड़ा सा गुलाब उसकी जड़ में छोड़दें तो बहुत फल लावेगा इसका पैवंद किसी वृक्ष से नहींहोता परन्तु पिस्ते के वृक्ष से देते हैं और उस पैवंद से अद्भुत स्वभाव का फल निकलता है कि जो उसका छिलका दूरकरके ऐसी देग में जोश दें जिसमें ज़ंग लगाहो तुरन्त साफ होजावे जो अखरोटको वर्षभर तक रक्खें तो न सड़ेगा और जिसको बावले कुत्तेने काटाहो उसको खिलाना गुणदायक है मार पीट की चोट में हरे अखरोट का लेप पीड़ाको थमाता है इसकी जड़के सेवनसे शिर पीड़ा पैदा होती है जो मनुष्य इसको सदा खाता है उसको दस्त कीड़ोंके साथ आतेहैं और उसको जलाकर ख़िज़ाब करना सपेद बालोंको काला करदेता है और जो उसकी राख घावपर छिड़कें सूखजावे और तत्कालके फफोलेको भी गुणकरे सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर १६३

(ख़ुसरोदार) शेख़रईस के विचार में वीर्यके अधिक करनेवाला

और फालिज (अर्द्धांग) को गुण करे और मुखकी दुर्गंधि को दूर करता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १६४

(खरदा) अर्थात् बेद अंजीर इसका दाना सूखकर कलीमें ही चिटक जाता है इसका दाना फालिज और पहलूकी पीड़ा को गुण करे और इसके तेलमें मुर्ग़की गर्दन डुबोना मुर्ग़को चुप करदेता है और फिर कभीवह बांग नहीं देता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १६५

(ख़िलाफ) इसको फ़ारसीमें बेद कहतेहैं इसकी लकड़ी बहुत हलकी और इसके पत्ते जीम (फ़ारसी हरफ़ जो गोल होताहै) के सदृश होते हैं सेवन करनेपर मनका बलकारकहै और जिसमनुष्य को लू लगी हो उसके बिछौनेपर इसके पत्ते बिछाके उसमनुष्यको लिटावें आराम होजावेगा इसकेपत्तेमें यहगुणहै कि लहूकाबहना बन्दकरताहै कली इसकी सुगन्धित और ब्रह्मागडको बलकरती है और इसका अरक़ शिर पीड़ा में गुण दायकहै और अंजीरकी राख सिरके में मिलाकर फोड़े फुंसीपर लगाना लाभकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर १६६

(खोख) फ़ारसी में इसको शफ़तालू कहते हैं कहते हैं कि जो चाहैं कि इसका रंग बहुतसुर्खहो तो यह तदबीरकरें कि जो शफ़तालू वृक्षमें अपनेआप फटगयाहो उसको लेकर शिंगरफ में लपेटैं और थोड़ी चरबी उसपर लगाकर बो दें तो उसका फल बहुतसुर्खहोगा जो उसकी गुठली पर कोई चीज़ खींच दें या कोई इबारत लिखदें और उसको बोदें तो उसके सब फलों में वह इबारत लिखी होगी जो उसके पौधेको उखाड़कर उसकी जड़ें बहुत काटडालें और फिर बोदें तो उसके फलों में गुठली न होगी इसके पत्तोंका लेप नरेकी दुर्गन्धि को दूर करताहै और नाभि पर लेप करने से पेट के कीड़े मरजाते हैं उसका फल बीर्य अधिक करता है जिस कपड़े में जुयें बहुतहों उसकोइसके रसमें डुबोदें सबजुयें मरजायेंगे सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर १६७

(दारशीशाश्रां) यह कांटेदार दरख़्तहै जिस दरिया में घड़ियाल बहुतहों जो वहां इसवृक्षकी लकड़ी को छोड़दें तो घड़ियाल आदि उसके इर्द गिर्द इकट्ठे हों शेख़रईस ने लिखा है कि इसकी बत्ती नाकके अन्दर करना दुर्गन्धि दूरकरताहै इसकी कुल्लीकरना दांतों की पीड़ा को गुणदायक है और मूत्ररोध को उपयोगी जो इसकी धूनी स्त्रीको देवें तो बच्चेको बाहर निकाले सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर १६८

(दूरदार) अरब इसको शजरतुल अलबक़ अर्थात् मच्छड़ों का वृक्ष और हिन्दीमें गूलर कहतेहैं यह बड़ा वृक्षहै इसका मेवा अनार की तरह होताहै जिसमें एक ऐसे प्रकार की तरी बँधीहुई है कि जब उसको तोड़ते हैं तो उसमें मच्छड़ और भुनगा उड़ते हुये दिखाई देते हैं अजायबुलमख़्लूक़ात के निर्मापक ने लिखा है कि मैंने ख़ुद इस वृक्षका फल अपने हाथ से तोड़ा उसके अन्दर दाने रैहांकी तरह सपेद से थे और यह सपेदी वही कीड़े थे जिनकी गिनती न होसकी कई उन में से जीते हिलते और कई ऐसे थे कि अभी उनके पर न जमे थे इसकी कोंपल बहुधा सागकी तरह पर पकाते हैं और इस पत्तेको सिरके में मिलाकर बरस (कोढ़) पर लगाना गुणकारी है और उपद्रव कारक घाव और टूटी हड्डीपर लगाना बहुत लाभदे सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर१६६

(दलब) अर्थात् चिनार यह वृक्ष हर एक स्थावरसे लंबा और बड़ा होता है और पुराना होकर बीच से खाली होजाता है इसके पत्तोंकी शकल मनुष्यके पंजेकी सी होती है शेख़रईस लिखताहै कि इसके पत्तोंको उबालकर मरहम की तरह आंख में लगाना नज़ले को गुणकरे और सिरकेमें कुल्लीकरना दांतोंकी पीड़ा को गुणकारी और जलेहुये जोड़पर भी लगाना लाभकरे इसके फलको जोज़ुलसर्द कहते हैं जो इसको चरबीमें मिलाकर मरहम बनायें और

कीड़े मकोड़ों के डंकपर लगावें तो बहुत गुण करे सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २००

(दहमस्त) यह बहुत बड़ा वृक्ष है इसका मेवा सुर्ख़रंग और पत्ता आसवृक्षके सदृश होता है यह वृक्ष पहाड़ों में पाया जाता है इसका बीज बंदकसा होता और उसपर काली छाल होती है साहिबुलफ़लाहा का वचन है कि जो इस वृक्षकी किसी शाखा किसी धरती पर गिरावें वहां का राजा किसी न किसी दुःख में ज़रूर फँसेगा और वहांकी प्रजामें कोई दोष न आवे इसका पत्ता फालिज लक़वे और क़ूलंजको गुणकारी है जो इसके पत्तेको जौमें कुछ दिनों रक्खें तो फिर उस जौ को पीसकर झाईंपर लगावें तो गुणदायक होगा उसकेबीजोंका उबटनालगाना मक्खियोंसे बचाताहै इसको शराबमें पीना बिच्छू के डंकको दूरकरता है इसके हरे दानों का मरहम विषैले जानवरोंके घावके दूरकरने में उत्तम है और इसका तेल भी शिर पीड़ा और कान की सनसनाहट में प्रभाव रखता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २०१

(रुमां) अर्थात् अनार गरम धरतीके सिवाय और जगह नहीं होता साहिबुलफ़लाहा लिखता है कि इस वृक्षके पास बोनेके समय आसका दरख़्त ज़रूर चाहिये इसके सबब से अनार उत्तम होता है जो दरख़्तके लगाने के समय थोड़ा सा शहद भी थालहेमें छोड़ें तो फल बहुत मीठा हो और सिरका छोड़ने से खट्टा जो यह चाहे कि बिना इच्छा इसका फल डालसे अलग न हो तो अनारकी डालपर (मुतरक़्क़शासहरी) नामी पत्थर लटकाना चाहिये या कि शीशेकी कील उसकी जड़में ठोंकदें जोयह चाहें कि इसकेदानेमें गुठली न हो तो उसकीछोटीर डालियोंकोछीलकर उसका गूदा साफ़करदें और फिर उनशाखाओंको आपसमेंमिलाके घाससेबांधदें और फिर बोदें तो उसके अनारमें गुठली न होगी जो यह चाहें कि सुर्ख़अनार हो तो हम्मामकी राख पानी में घोलकर जड़में छोड़ना चाहिये खट्टे

अनारको मीठा करना इसउपाय से सम्भवित है कि उसके जड़की इधर उधरकी मट्टी अलग करके सुअरके नाखून और मनुष्यके मूत्र से भरदें फिर मिट्टी बराबर करदें ईश्वर चाहें तो खटाई दूर होगी और अनारकी फुनगियों की संख्यामें यह अद्भुत बातहै जो उसकी फुनगियां ताक़ अर्थात् बिषमहों तो अनारके दाने भी बिषम होंगे और जुफ्त अर्थात् समहोने पर सम शेखरईसने लिखाहै कि इसके फल और डालियां दुःखदाई जानवरों के भगाने में तुरन्त प्रभाव दिखावें अनार के फूल सुर्ख या सपेद जो हों दांतों के हिलने को मज़बूत करते हैं और रुधिर के निकलने को बन्द इब्नअब्बास ने अपने मुखसे कहाहै कि अनार बहिश्त के पानीके बूंदोंसे पैदाहुआ है और हज़रत इब्नअब्बास ने कहा कि अनार का हरएक दाना मन को प्रकाशवान् करता है और शैतान के दुर्विचारों से निर्भय करताहै जिसदिन खाये उसदिन से चालीस दिन तक यह प्रभाव स्थिर रहता है साहबुलफ़लाहा अनार के हरा रखने के उपाय में लिखतेहैं कि अनारको हाथ से तोड़कर दोनों किनारों को गरम २ काली गोंद में डुबोदें फिर ठण्ढे मकान में लटकादें ईश्वर चाहे तो मुद्दततक अच्छा बनारहेगा और जो वृक्षपर लगा रहना चाहे तो घाससे मज़बूत बांधकर उसके ऊपर चूना लगावें उसकी छालको अन्नकेढेरमें रखना कीड़ोंसे बचाताहै उसकी सूरत नीचेहै॥

तसवीर नम्बर २०२

(ज़ैतून) ज़ैतून इस गुणकारी वृक्ष के लिये इब्नअब्बास का वचनहै कि इस वृक्षका प्रकार उसके फल समेत ईश्वर ने कुरानमें यादकियाहै कि वलाभ दायकहै और यमांकेपुत्र हज़ीफ़ेने पैग़म्बर साहब से कहावत कहीहै कि हज़रत कहतेथे कि जब आदम बीमार हुये और ईश्वर से शिकायत की तब जबरईल उसी वृक्ष को लेकर उतरे और हज़रत आदम से कहा कि इसको लगाइये और इसका मेवाहो उसको धोकर उसका अरक़ पीजिये यह रोगनाशक बारि है और हर रोगकी औषधि है परन्तु मौतसे लाचारीहै इसके अद्भुत

गुण यहहैं कि मुद्दततक पानीकी आवश्यकता न रहे इसकीलकड़ी में धुआं बिल्कुल नहींहोता इसकातेल भी अति गुणकारीहै यहवृक्ष अपनी गुठलीसे नहीं उगताहै और जो उगताहै तो गुण नहींकरता साहबुलफ़लाहा का लेखहै कि इसवृक्ष के नीचे बहुधा कंकड़ पत्थर इकट्ठे होते हैं और जब गर्द इनपर पहुंचती है तो इसका फल और ज़ियादह अच्छा होताहै और फल भी स्वादिष्ट होताहै जो यहचाहे कि इसका फल हवा से न गिरे तो बाकले को इसकी जड़ में बोदें बलैनास ने लिखाहै कि जिसको बिच्छूकाटे इसकी जड़ों का गण्डा बनावे पीड़ादूरहो शेख़ इसकीपत्ती के स्वभावमें लिखताहै कि इसके हरे पत्तोंको पानीमें उबालकर घरमें छिड़कदें तो मक्खियां उसघर से भागजायँगी और इसका मलना बदनकी खुश्कीको दूरकरताहै और इसके पत्तेका गुण तूतिया की भांतिहै और सिरके में पकाकर कुल्ली करना दांतोंकी पीड़ा को गुणदायकहै जो शहद में पकाकर लगावें तो कीड़ेखाये दांतों को लाभकरे और इसका गोंद बवासीर और हरघावको भी गुणदायक है इसके रसमें रोटी पकाकर चूहों को देना संखिये का स्वभाव रखता है शेख़रईस का वचन है कि इसकागोंद रतौंधी और आंखकी सपेदी दाद खाज और कीड़ेखाये दांतोंको गुणदायक है और जो कोई उसकोपीले तो विषको खींचले ज़ैतूनका मेवा उत्तम होताहै हज़रत पैग़म्बर साहबका बचनहै कि उत्तमोत्तम खानेकी रोटी सिरका और ज़ैतहै इसकेतेलमें रोटीखाना अच्छाहै पित्तको साफ़ करताहै और कफको दूरकरताहै और रगों का बल दायक और सुस्तीको दूरकरने वालाहै और बदन के पट्ठों को मज़बूत करता है इसका खानेवाला शीलवान् शुद्ध रूप और चिन्ता रहित रहताहै शेख़रईस के विचारमें जंगली ज़ैतून से कुल्ली करना शिर और दांतोंकी पीड़ा और लहू टपकने को गुणदायकहै इसको पीसकर सुरमा लगाना आंख की अन्धेरी को दूर करताहै और २ लोगोंका वचनहै कि इसकालेप पांवकी उंगलियोंकी पीड़ा कोगुणकरे और आंखोंमें लगानेसे प्रकाश होताहै और यहजंगली

ज़ैतून खाज दाद और शिरकीपीड़ा और दांतोंकीपीड़ा और फेफड़े केरोगको जो ईश्वर चाहेतो गुणकरे सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर २०३

(सरू) यह तुलाहुआ एकसा वृक्षहै जिसकी सिधाईसे प्यारों के डौलका दृष्टान्त देतेहैं गरमी और सरदी में हरा होताहै इसमें चमत्कार सरदीसे होताहै इसकी धूनीसे मच्छड़भागतेहैं जो इसके वुरादे को मैदे में छोड़ देवें तो समय तक मैदा ख़राब न होगा जो इसकी पत्तीको शरावमेंछोड़ें तो जिसका मूत्रबन्द होगयाहो उसके वास्ते लाभकरे और इसके पत्तोंको गुलाबकी डालीके साथ सिरके में उबालकर कुल्ली करना मुंहसाफ करताहै इसके हरे पत्तेको कूट कर घावपर लगाना गुणदायक है इसकी राख जलेहुये जोड़ पर छिड़कना लाभ करे शेख़रईस का वचन है कि इसकी कुल्ली करना दांतोंकी पीड़ाको गुण दायकहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २०४

(सफरजल) बिहीका दरख़्त प्रसिद्धहै आबीके पुत्र यहय्याका वचनहै कि उसके पिता ने हज़रत पैग़म्बर साहब के हाथ में बिही देखी और उसकी ओर हज़रत ने बिहीको दिखाकर कहा कि लो इसको यहमनको शुद्ध करतीहै और यह भी कहावतहै कि हज़रत ने बिहीतोड़कर अबीतालिब के पुत्र जाफ़रकोदेकर कहा कि इसके खाने से आदमीका रंगसाफ और सन्तान वाला होताहै शेख़रईस ने लिखाहै कि प्यास का दूर करने वाला और पक्काशय का बल कारकहै जो शरावके साथ गज़ककरें ख़ुमार नहो और दूसरेलोगों का वचनहै यदि स्त्री बिही और अनार सर्वदाखावे उसकी सन्तान समझदार साहसी नेकहो और यह भी सदा के सेवन में स्वभावहै कि दूधछातीमें बँधजाताहै जहां अंगूरहां जो वहां उसको रक्खें तो ख़राब होजावे साहबुलफलाहा उसके मुद्दत तक दुरुस्त रहने का उपाय यों लिखतेहैं कि इसको ऐसे घर में रक्खें कि जहां सिवाय इसके दूसरे प्रकारका मेवा न हो सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर२०५

(सुमाक़) यह पहाड़ी दरख़्त फैलाहुआ होताहै शेख़रईस का वचनहै कि इसका मेवा पक्काशय का बलदायक और पित्त के नाश करने वालाहै और घाव और सूजनको दूर करताहै जो इसके मेवे का हुकना करें तो बवासीर के वास्ते गुणकरे और गोंद दांतों की पीड़ाको नष्टकरे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०६

(समरा) यह जंगली दरख़्तहै जिसका वर्णन बहुधा अरबकी काव्य में पायाजाता है इसके वृक्षसे लहू टपकताहै लोग कहतेहैं कि इसवृक्ष के फलको मासिक धर्म हुआहै बाक़ी कोईगुण मालूम नहीं है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०७

(सन्दरूस) यहप्रसिद्ध वृक्ष रूममेंहै इसका गोंद कुहरबाकी तरह पर होता है घास भी खींचता है परन्तु वैसी शकल नहीं है उसकी लकड़ीमें तेल होताहै उसका गुणयहहै कि लहूको बन्दकरे कुश्ती करनेवाले लोग बहुधा इसके तेलका सेवनकरतेहैं कि शरीर हलकाहो शेख़रईस का वचनहै कि बवासीरको सुखाताहै कि जब उसकी धूनी लेवें और दांतों की पीड़ा और उन्माद रोगको अच्छा करताहै और बीर्य बढ़ाने वाला भी है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०८

(शबाब) इस दरख़्तका पत्ता छोटी२ मछलियोंकीतरह उंगली के बराबर होता है और फल बन्दक़ की भांति काले रंग का और उसमें तीन२ दाने होतेहैं उसको माहूदाना और हब्बुलसलातीन अर्थात् जमालगोटा कहतेहैं शेख़रईस का वचनहै कि पांवकेउंग-लियोंकी पीड़ा और जोड़ोंकी पीड़ा रांघन और जलन्धरमें इसका मुसिल (विरेचन) देना गुणकारीहै इसके पत्तोंको मुर्ग़ के मांस में पकाकर खाना कूलंजको गुणदायकहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०९

(शाहबलूत) यह वृक्ष शाम की धरतीमें है इसका मेवा मीठा

सूरत में आधे जौ के बराबर होता है और स्वाद में फन्दक़ की तरह होता है शेख़ रईस के विचार में इसका फल बिष दूरकरने वालाहै और जिसकेशरीरसे लहूजारीहो उसेगुणकरे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २१०

(संदल) यह प्रसिद्ध वृक्ष हिन्दुस्तान में सपेद और सुर्ख़दोरंग काहोताहै सपेद चंदन का बहुत कुछ गुणहै मुख्य करके गुलाब में पीसकर शिरकी पीड़ामें लगाना और उन्माद रोगको जो ज्वरसे हो जो सुर्ख़को भी शिरपीड़ामें लगावें लाभकरे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २११

(सनोबर) यह वृक्ष पहले पहल रूम की धरती पर था इसकी लकड़ी से तेल निकलता है और चिराग़ की तरह पर जलती है और इसी से क़तरान (वह तेल बदबूदार जो गधों की खाजपर मलते हैं परन्तु कोई चीड़का तेलभी कहते हैं) मिलता है इसतरह से कि इसका छिलका आगपर रक्खें उससे रस निकलेगा वही क़तरान है शेख़ रईस ने लिखा है कि इसकी लकड़ी की धूनी देना या उसकी राखछिड़कना डंक मारनेवाले जानवरों को दूर करता है मुख्य करके शराब के साथ और उसका यहभी बचन है यदि किसीसभाके आसपास इसकी राखछिड़कदें वहां डंक मारने वाले जानवर न पहुंचेंगे यदि क़लक़ीद और क़लक़दीस (गन्धकके प्रकारमें वर्णनहै) को उसमेंबढ़ावें उत्तमतरहोगा इसकीछाल गरम पानीसे जलेहुये पर गुण दायकहै शेख़रईस लिखताहै कि इसकी छालको सिरकेमें उबालकर कुल्लीकरना दांतोंकी पीड़ाकोदूरकरता है और उसकेपत्ते घावको भरतेहैं जो नाभिके नीचे या अंडकोष्ठमें पीड़ाहोतो उसकी कलियोंका मलहम बनाकर लगाना लाभदाय- कहै इसका मीठादाना पट्ठोंको उपयोगी है और बिच्छूके विषकेदूर करने को उत्तमहै जो अंजीर या अखरोटके साथखावेंतो वीर्य अधिक करे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २१२

(हरू) यह फलदार वृक्ष बलूतकी सदृश बड़ा हिन्दके पहाड़ोंमें बढ़ताहै इसके पत्ते सुर्खी लिये हैं जो उसको पकावें और साफ करके पियें तो खांसी दूरहोजायेगी और मुखकी पीड़ाकोभी लाभ दायक है इसका गोंदमक्केको लेजाते हैं यह लादन (सुगन्धदार ओषधि) के अनुसार होताहै बहुधा स्त्रियां इसकी सुगन्धको पसन्दकरतीहैं॥

तसवीर नम्बर २१३

(तरफा) अर्थात् गज़का दरख़्त शेख़रईस का बचन है कि इसकी डाली सिरके में पीसकर लगाना तिल्लीकी पीड़ा को गुणकरे इसके पत्तों का काढ़ा दांतों की पीड़ामें कुल्ली करना बहुत लाभ करे जो शिरके बालोंमें मलें जूं दूरहोजायँ बाजे आज़माने वालोंका बचनहै कि इसकी धूनी लेनेसे नयेघाव सूखजातेहैं इसका मेवानेत्रकेरोगों में गुणदायक है और रतीला के घावपर गुणकरता है शेख़रईस के बिचारमें जो इसके फलको जलाकरउसकी राखकोघावपर लगावें घाव तुरन्त सूखजावे सूरत यह है—

तसबीर नम्बर २१४

(अरअर) यह भी सरूके सदृश होता है इसको पहाड़ी सरू कहतेहैं इसकी धूनीसे बिषैले जानवर भागतेहैं इसका मेवा राऊर की तरहपर होताहै इसकी लकड़ीको अबहल कहतेहैं शेख़ रईसका लेखहै कि इसकी लकड़ीको तेल और सिरके में उबाल कर बहिरे आदमीके कानमें छोड़ना कानका भारीपन दूरकरदे यदिस्त्री इसको योनि में रक्खे तो तुरन्त उसका गर्भ गिरपड़े और इसका शाफा और धूनी भी गर्भपात को आज़माई हुई है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २१५

(अशर) यहवृक्ष यमनमें होताहै फ़ारसीमें इसको कशीर कहते हैं बहुधा मूर्खता के कारण अरब के लोग इसका शकुन इस तरह पर लिया करते हैं कि जब उनको सफरका इरादा होताहै और किसी मित्रसे चोरीका सन्देह होताहै तो इस वृक्षकी एकडाली को

दूसरी डालीसे लपेटकर चले जातेहैं और लौटकर उस लिपटीहुई डालीको जो उस सूरतसे डालीदर डाली पाया तो समझे कि मित्र ने हमारे धनमें चोरी नहीं की नहीं तो बिपरीत होने पर दृढ़ शङ्का करलेतेहैं कि अवश्य मालमें चोरी हुईहै कहतेहैं कि यह वृक्ष बिषैला होताहै कई इसके प्रकार ऐसे भी होतेहैं कि जो कोई उसकी छाया में जा बैठे तो मृत्यु आजावे इसकी मरहम दाद और शिर गंज पर मलना गुण दायकहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २१३

(अफस) फ़ारसीमें इसको माज़ू कहतेहैं पहाड़पर होताहै कहते हैं कि इस वृक्षमें एकबर्ष माज़ू फलताहै और एकबर्ष बलूत जाख़ज़ का लेखहै कि मैंने माज़ू और बलूत को एक ही शाखा में लटका पाया सो जो यह बात ठीकहै तो इस वृक्षके लिये हमयह कहसक्ते हैं कि जिसतरह पशुओं में खरगोश होताहै कि यहभीएकबर्ष नर होताहै और एकबर्ष मादा इसी तरह उसका भी हालहै और जिस दरख़्तमें माज़ू और बलूत दोनों इकट्ठेहों तो उसका दृष्टान्त खो से अर्थात् वृहन्नल की तरह परहै शेख़ रईस के विचार में खाज और अधिक मांसको दूर करताहै इसका ख़िज़ाब भी लगाते हैं जो इस का गूदा सिरके में पीसकर लगावें लहू का बहना बन्द करता है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २१७

(उन्नाब) यह प्रसिद्धवृक्षहै जरजांकीधरती परहोताहै इसकेपत्तों का मरहम लगाना नेत्र पीड़ा को गुण करे कहतेहैं कि यह वृक्ष लहू चूसता है यहांतक कि जो कोई हाथ इसके दरख़्तपर रखदे तो कुछ देरमें उस हाथका लहू कुछ चूस लेता है इसका मेवा लहूका बहना बन्द करताहै जो यहचाहे कि दरख़्तको इसजगहसे उखाड़ कर दूसरे शहरमें ले जायँ तो हररोज़ वह पशु जिस पर लादके लेजायँ बदला करें क्योंकि जो एक ही चौपाया रहेगा तो उसकी तरी सूख जावेगी और वह मरजायेगा जालीनूसका लेखहै इसका

स्वभाव रुधिर को चूसना नहीं है किन्तु यह रुधिर को गाढ़ा कर देताहै जो उसकी लकड़ीसे मलैं तो रंगकी सफ़ाई होतीहै इसका उबटन लगाना रंग ज़ियादह करताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २१८

(ऊद) यह हिन्द के दरियाओं में प्रकट होताहै इसकी जड़ को उखाड़कर पृथ्वीकेनीचे गाड़तेहैं जबवह सड़जातीहै तो उसकीछाल उतरके ऊद साफ निकल आताहै शेख़रईसका परीक्षाकी हुईहै कि इसको दांतोंसे कुचलना और चबाना दुर्गन्धिको दूर करताहै और मुख सुगन्धित करताहै ब्रह्माण्ड को गुण कारक और इन्द्रियों का बल कारक और मनके प्रसन्न करने वालाहै इसको शक्कर मिलाकर आगपर छोड़नेमे सुगन्धित धुआं उठताहै इसका मद्यमें यहस्वभाव है कि रीहके दर्दको गुण करे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २१९

(ग़बीरा) प्रसिद्ध वृक्षहै जो इसकी लकड़ी को समयतक जलमें छोड़देवें तौभी न सड़ेगी बहुधा हम्माम के दरवाज़ों पर इसकी लकड़ी गाड़ते हैं इसकी शाखा जहां पर रखदें मक्खियोंका समूह होजाताहै इसकी सुगन्धि से स्त्रियों को बहुतकाम उपजता है और इतनी अधीर होजातीहैं कि सन्तोष नहीं होता लज्जा जातीरहती है शेख़रईस का बचनहै जो शराब पीने में इसकी गज़क खावें तो शराबका नशा जल्दी न चढ़ेगा और मूत्रकी अधिकता और अती-सारको भी गुण दायकहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २२०

(गरब)इसको फ़ारसीमें सपेदार कहतेहैं शेख़रईस का निश्चय है कि इसकी लकड़ी जलाकर सिरके में मिलाकर उबटना लगाना फुन्सियों में गुणकरे इसकी छाल ख़िज़ाबमें एक उत्तमखण्डहै इस-की हरीरपत्तियां पीसकर घावपर लगाना अच्छाहै इसके सिवाय और शख़्स भी लिखतेहैं जो किसीके कण्ठमें जोंक चिमट गई हो तो उसको चाहिये कि इसकापत्ता कुचल कर रसनिकाले और पिये तो तुरन्तजोंकअलगहोगी इसकाफूल धुंधके रोगको गुणकारक है॥

इसकीगोंदसे कचलोनबनताहै और आंखोंके धुंधकोगुणकारक है॥

तसवीर नम्बर २२१

(फ़ादानिया) अर्थात् ऊद सलीबका वृक्ष यहदरख्त रूमऔर हिन्दमें होताहै शेखरईसने लिखाहै कि जो इसकी लकड़ीकोबदन के काले दागोंपर लेपकरें तो अवश्य गुण करेगाइसको यन्त्रबना कर गले में लटकावें तो पांवकोरग और मिरगीकी बीमारियोंको गुणकरे जो इसका मेवा पन्द्रह दाने शराबकेसाथ गज़ककरे तो दीवाना पन और मिरगी को गुण करताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २२२

(फ़िस्तक) अर्थात् पिस्ता इसका वृक्ष बादाम औरअंगूर की मिट्टी से पैदा होताहै इसकी लकड़ी में चिकनाईभी होतीहै शेख़-रईसका लेखहै कि इसका डंक मारनेवाले जानवरों के विष पर लेपकरना गुणदायक है और इनके सिवायऔर आज़मानेवालों ने लिखाहै कि बलकारक और२ कामदेवके अधिक करनेवालाहै और पित्तकी खांसी को भी लाभकरे इसके तेल के सेवन से आंख की ज़र्दी दूर होजातीहै और इसकी धूनीसे कपड़े की जूंयेंमरजाती हैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २२३

(फ़िलफ़िल) अर्थात् कालीमिरचयह वृक्ष मलेबार की धरती पर होताहै बड़ा भारी हैइसके थालेके गिर्द गिर्द पानी भरा रह-ताहै जब हवा चलती हैउसके वेगसे मिरचें झड़ती हैं और पानी पर तैरती फिरती हैंइसीसे मिरचका छिलका उखड़ा और चिटका हुआ होता है यह वृक्षकिसीकी थातीमें नहींहै अपने आप गरमी सरदी में फलदार फला रहताहै मिरचें बाली की तरह गुच्छे२ होते हैंजब सूर्यकी तेजीकावक़्त आताहै पत्तियां चारोंतरफसे गुच्छों पर छाया करतीहैं और कुछ इसरीति से झुकीहुई होतीहैं कि सूर्य की गरमी उनपर असर नहींकरती और जबसूर्यकीगरमी कम हो-जातीहै तो पत्तियां उन गुच्छों से हटजातीहैं कि उनकी हवालगे

स्वभाव रुधिर को चूसना नहीं है किन्तु यह रुधिर को गाढ़ा कर देताहै जो उसकी लकड़ीसे मलें तो रंगकी सफ़ाई होतीहै इसका उबटन लगाना रंग ज़ियादह करताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २१८

(ऊद) यह हिन्द के दरियाओं में प्रकट होताहै इसकी जड़ को उखाड़कर पृथ्वीकेनीचे गाड़तेहैं जबवह सड़जातीहै तो उसकीछाल उतरके ऊद साफ निकल आताहै शेख़रईसका परीक्षाकी हुईहै कि इसको दांतोंसे कुचलना और चबाना दुर्गन्धिको दूर करताहै और मुख सुगन्धित करताहै ब्रह्माण्ड को गुण कारक और इन्द्रियों का बल कारक और मनके प्रसन्न करने वालाहै इसको शक्कर मिलाकर आगपर छोड़नेसे सुगन्धित धुआं उठताहै इसका मद्यमें यहस्वभाव है कि रीहके दर्दको गुण करे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २१९

(ग़बीरा) प्रसिद्ध वृक्षहै जो इसकी लकड़ी को समयतक जलमें छोड़देवें तौभी न सड़ेगी बहुधा हम्माम के दरवाज़ों पर इसकी लकड़ी गाड़ते हैं इसकी शाखा जहां पर रक्खें मक्खियोंका समूह होजाताहै इसकी सुगन्धि से स्त्रियों को बहुतकाम उपजता है और इतनी अधीर होजातीहैं कि सन्तोष नहीं होता लज्जा जातीरहती है शेख़रईस का बचनहै जो शराब पीने में इसकी गज़क खावें तो शराबका नशा जल्दी न चढ़ेगा और मूत्रकी अधिकता और अती-सारको भी गुण दायकहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २२०

(गरब)इसको फ़ारसीमें सपेदार कहतेहैं शेख़रईस का निश्चय है कि इसकी लकड़ी जलाकर सिरके में मिलाकर उबटना लगाना फुन्सियों में गुणकरे इसकी छाल ख़िज़ाबमें एक उत्तमखण्डहै इस-की हरीश्पत्तियां पीसकर घावपर लगाना अच्छाहै इसके सिवाय और शख़्स भी लिखतेहैं जो किसीके कण्ठमें जोंक चिमट गई हो तो उसको चाहिये कि इसकापत्ता कुचल कर रसनिकाले और पिये तो तुरन्तजोंकअलगहोगी इसकाफूल धुंधके रोगको गुणकारक है॥

इसकीगोंदसे कचलोनबनताहै और आंखोंके धुंधकोगुणकारक है

तसवीर नम्बर २२१

(फादानिया) अर्थात् ऊद सलीबका वृक्ष यहदरख्त रूमऔर हिन्दमें होताहै शेखरईसने लिखाहै कि जो इसकी लकड़ीकोबदन के काले दागोंपर लेपकरें तो अवश्य गुण करेगाइसको यन्त्रबना कर गले में लटकावें तो पांवकोरग और मिरगीकी बीमारियोंको गुणकरे जो इसका मेवा पन्द्रह दाने शराबकेसाथ गज़ककरें तो दीवाना पन और मिरगी को गुण करताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २२२

(फिस्तक) अर्थात् पिस्ता इसका वृक्ष बादाम औरअंगूर की मिट्टी से पैदा होताहै इसकी लकड़ी में चिकनाईभी होतीहै शेख-रईसका लेखहै कि इसका डंक मारनेवाले जानवरों के विष पर लेपकरना गुणदायक है और इनके सिवायऔर आज़मानेवालों ने लिखाहै कि बलकारक और२ कामदेवके अधिक करनेवालाहै और पित्तकी खांसी को भी लाभकरे इसके तेल के सेवन से आंख की ज़र्दी दूर होजातीहै और इसकी धूनीसे कपड़े की जूंयेंमरजाती हैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २२३

(फिलफिल)अर्थात् कालीमिरचयह वृक्ष मलेबाद की धरती पर होताहै बड़ा भारी हैइसके थालेके गिर्दा गिर्द पानी भरा रह-ताहै जब हवा चलती हैउसके वेगसे मिरचें झड़ती हैं और पानी पर तैरती फिरती हैंइसीसे मिरचका छिलका उखड़ा और चिटका हुआ होता है यह वृक्षकिसीकी थातीमें नहींहै अपने आप गरमी सरदी में फलदार फला रहताहै मिरचें बाली की तरह गुच्छे२ होते हैंजब सूर्यकी तेजीकावक्त आताहै पत्तियां चारोंतरफसे गुच्छों पर छाया करतीहैं और कुछ इसरीति से झुकीहुई होतीहैं कि सूर्य की गरमी उनपर असर नहींकरती और जबसूर्यकीगरमी कम हो-जातीहै तो पत्तियां उन गुच्छों से हटजातीहैं कि उनकी हवालगे

इसका वृक्ष अनारकी तरहपर होताहै इसके पत्तोंके बीच हुशाख़ होताहै जिसकी हरएकडाली उंगलियों के बराबर होतीहै उसपर मिरचका गुच्छा होताहै जाली नूसने लिखाहै कि जो पहले पहल दरख्त से फल निकलता है वह मिरच है फिर उसका दाना एक होताहै जिसकानाम दारफिलफिल अर्थात् पीपल कहते हैं और यहदाना डंकमारनेवाले जानवरों के बिषकेलिये बहुत गुणकारीहै और वीर्यके अधिक करनेवाला भीहै शेखरईस लिखताहै जो कच-लोनके साथ मिरच का लेपकरें तो झांईकादाग़ दूरहोजावेगा और काली गोंदमें मिलाकर लगानाकंठमालाको गुणकरेबहुधायह भी कहतेहैं कि मूत्ररोध और आंखकी धुन्धके दूरकरनेवाला है जो स्त्री भोगके उपरान्त मिरचके चूर्णको महीन कपड़े में पोटली बांधकर भगमें रक्खे तो फिर गर्भ न रहेगा सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २२४.

(फन्दक़) जो इस प्रसिद्ध लकड़ी से बिच्छूके चारोंतरफ़ एक घेराखींचदे तो बिच्छू उस घेरेसे बाहर न जासकेगा बुक़रा तह-क़ीमका लेखहै कि यह मेवा ब्रह्माण्डका बलकर्त्ताहै और शेखरईस के निकट जो इसकातेल सलाईमें लेकर आंखमें लगायें तो आंखकी सब्ज़ी दूरहोगी और इसको तितलीको पत्ती और अंजीरकी लकड़ी के साथ पीसकर लगायें तो डंकमारनेवाले जानवरोंके लिये अति गुणकारकहै जो कोई इसकी लकड़ी को पासरक्खे वह बिच्छू के दुःखसे बचारहेगा इसके रसको बालखोरे पर लगाना गुणका-रकहै बालनिकल आते हैं जो कूटछानकर शहद के साथ पिये तो खांसीको नाशकरे इसकी गज़क करने से मस्ती जाती रहतीहै और समझ और बुद्धिबढ़तीहै जो इसको जलाकर राखबनावें और तेल में मिलाकर करंजी आंखवाले लड़कों के सुरमेकी तरहपर लगावें तो तुरंत लाभहो सूरतयह है ॥

तसवीर नम्बर २२५

(फ़ीलज़हर्ज) इस वृक्षके कोई मेवेसे रसौत बनातेहैं यहदरख़्त

बिल्कुल मिरचके वृक्षके सदृश होताहै शेखरईश का बचन है कि इसकी लकड़ीका खिज़ाब बनाना और बालमें सेवन करना बालों को मज़बूत करताहै जो इसकी जड़ सिरकेमें उबालकर पियें तिल्ली की पीड़ाको दूरकरतीहै इसके जिस फलसे रसौत बनाते हैं जो उसको पीसकर झाईंपर उबटनाकरें अत्यन्त गुणकारीहै और बालोंको सुर्ख रंगाकरताहै जिसके दांतोंकी जड़ों से लहू निकलता हो जो इसका सेवनकरे तुरन्त बन्द होजावे और आंखोंकी पीड़ा और सपेदीको दूरकरदेताहै और आंखकी खाज और बवासीर केलिये गुणदायकहै जिसको बावला कुत्ताकाटे जो इसका लेपकरे तोलाभ करे सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २२८

(करनफल लौंग) यह दरख्त हिन्दुस्तान के कईद्वीपोंमें होता है इसका फल चमेली के रंगका होताहै हां इतनाअंतर होताहै कि इसका स्वादतेज़ होताहै यहांके जज़ीरे वाले लौंगको यूं नहींतोड़ तेहैं परजब पकजावे और यह बात इसदृष्टिसे करतेहैं कि उसदीप के सिवाय दूसरीजगहवाले उसको बोनसकें और यह दरख्तजम नसके शेखरईस का निश्चयहै कि इसका सेवन मुखको सुगंधित करता और नेत्रों की ज्योति बढ़ाताहै और बहुतों ने लिखा है कि मूर्च्छाको दूरकरताहै और मनका बल कारक है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २२९

(क़सब) अर्थात् नरकुल इस प्रसिद्ध वृक्ष के कई प्रकार होते हैं बाज़ा नरकुल शकरी होता है परजो मिसर की धरतीमें उत्पन्न होता है वह सब से उत्तम है खांसी और हृदय पीड़ा को गुणकरे शेखरईस कहता है कि इसका गोंद नेत्र की ज्योति को अधिक कर्ताहै और इसकी छाल और जड़का लगाना बालखोरेकीबीमारीमें गुणदायक है जो इसकाफूल कानमें पड़जाय तो मनुष्य बहरा होजावे और फिरवह कानसे बाहर नहीं निकलसक्ताहै और नरकुलका लेपबिच्छूके घावपर गुणकारीहै इसका कोई प्रकार चिरा-

ते हैं यह निहरबिंद के देशमें होता है और जो नरकुल निहरबंदना-सी पहाड़के पीछे नहीं होता उसमें चिरायते की तरह गुण नहीं होताहै वरन सब नरकुलकी तरह है शेखरईस का वचन है कि वृथा रुधिरको नष्टकर्त्ता और खांसीको गुणदायक है जो इसका धुआं कंठमें पहुंचावें खांसी को गुणकरे और किरक्सके बीज अर्थात् बिलायती अजमोद और शहदके साथ जलंधर को गुणदायक है कोई नरकुल नेजा हिन्दुस्तानमें होताहै इसीका नेजा बनाते हैं कहते हैं वह अपने आप जल उठता है अर्थात् जब पवन प्रचंड हुई और एक दूसरेसे भिड़गये तो तुरन्त आग लगउठती है उसकी राखसे तब शीर हाथ आता है यह बंशलोचन उन्माद आंखकी सूजन को गुण दायक और मनका बलकारक और ज्वर को लाभदायक है कोई इनमेंसे प्रसिद्ध नरकुल है जिससे एकबेर सांपको मारें तो फिर वह नहीं हिलसक्ता और जो दुबारा मारें तो फिर सांप अच्छा होजावे जो इसके जड़ और पत्ते जहां कांटा गड़कर रहगया हो वहां पर लगावें तो वह कांटा तुरन्त निकल आवै और ऋतुके रुधिर औ मूत्रको जारीकरता है जो भोजनमें नमक जियादह होगया हो तो नरकुल को पीसकर देग में डालदें नमक उसका कम होजायेगा इसकी जड़में खींचनेकी शक्ति है जो इसको कूटैं और जिस जोड़ में लोहा घुसगया हो वहां पर लगावें निकल आवेगा सूरत यह है

तसवीर नम्बर ३३८

(काफ़ूर) यह बड़ा वृक्ष है एक बड़े समूहको इसकी छायामें आराम मिलता है शेरबबर इसवृक्ष से प्रीति रखता है इसलिये मनुष वहां पहुंच नहीं सक्ता इसकी लकड़ी सपेद हलकी और नरम होती है उसके अंदर कपूर जमा होता है और इसका गोंद भी कपूर होता है और वृक्षकी जड़से निकलता है मुहम्मद ज़करियाने लिखा है कि कपूर इसवृक्षका गूदा होता है तो उस वृक्षमें छिद्रकरके कपूर निकालते हैं शेखरईस कहता है कि कपूर का सर्वदा सेवन वालों को बहुत जल्दी सपेद कर्त्ता है और गर्मीकी शिरपीड़ाको गुणदायक है

इसका खाना ब्रह्मचर्यका बलकारक और वीर्यके नष्टकरनेवालाहै॥

तसवीर नम्बर २२६

(करम) अर्थात् अंगूर इसको फ़ारसी भाषा में रज़कहते हैं साहबुलफ़लाहा कहताहै कि जब इसके वृक्षको लगावें पहले वर्ष बहुत गुच्छे निकलेंगे जो यहचाहे कि यह दरख़्त बहुत गुणदायक और उसकी जड़ मज़बूत और जल्दी बड़ी होजावे तो उसकेदरख़्त को ख़ना न लेनाचाहिये और दे (अर्थात् जो माघके निकट है) कि पहली तारीखमें जमाना चाहिये और उसके थालेमें गोबरडालना चाहिये और बलूत और अरगवां भीछोड़देवें और कुछ बाकलाभी जोयहसबशर्तेंकीजावेंतोमनकी कामना पूर्णहोजोउसकेपौधेको वीच मेंचीरें और उसमेंसक्मूनियाएकघासकादूधयूनानी प्रसिद्धऔषधि रखदें तो उसकाफल मुसिलहोगा अर्थात् जो उसका फलखावेगा उसको दृढ़ अतीसार होगा यह भी लिखाहै कि सपेद सुर्ख़ काले अंगूर के पौधोंकोचीरकर एकदूसरेमें चिपकाकर लगावें तो तीनों पौधे एकदरख़्त होजावेंगे और मेवा उनका सुर्ख़ सपेद कालातीन रंग का प्रकट होगा जो सपेद अंगूर के नीचे की धरती खोदकर उसमें नमकछोड़ें तो उस अंगूर का रंग कालाहोगा जो यह चाहें कि अंगूर के दरख़्त में कीड़े न लगें तो एकलोहे के हथियार से जिसमें मुर्ग़ या पालू मुर्ग़ का लहूलगाहो उसमें चीरकर गोबरकी धूनी उसवृक्ष को दें सरदी से रक्षित रहेगा जो पानी कि अंगूरके वृक्षसे टपकता है उसको दम्मुलअकरम कहते हैं अर्थात्अंगूर के आंसू जो उसको इकट्ठा करके मद्यपीनेवाले को पिलावें तो उसकी आदत नशा पीने की छूटजायेगी शेख़रईस ने लिखा है कि इसके सेवन से खाज और दाद दूरहोती है और जिसमनुष्य को गरमी से शिरपीड़ाहो इसकेपत्ते को पीसकर लेपकरे तुरन्त दूरहोजावेगा और उसकेपत्ते चबाने से गलीहुई दांतों की जड़ें अच्छी होजाती हैं इसकाफल कईप्रकार का होताहै सब से उत्तम बैलकी आंखसा है जिसकादाना अखरोटकी तरह काला और बड़ा होताहै और एक

प्रकार कुवारीलड़की के मेंहदी लगीहुई उंगलियों की तरह बहुत लाल और लम्बेदाना का अंगूरहोता है बहुधा उसके गुच्छे एक२ गज़तक के होतेहैं और एकप्रकार डुबाली अर्थात् चरखीके सदृश होताहै कालेरंग का इसके गुच्छे मनुष्य के शिर की तरह गोल२ लटके होते हैं शेखरईस लिखताहै कि जो उसकोपानीके धोनेबिना तुरन्त तोड़कर खाये तो उदर में गुड़गुड़ाहट और अफरा होता है और शेख़ के सिवाय और लोगों ने लिखा है कि यह वीर्य अधिक करताहै और इसका सेवन शरीर को पुष्ट करताहै अंगूर को जला कर राख उसकी सर्पके विषमें गुणदायीहै और इसकीराख सिर के में बवासीर पर लगाना उत्तम औषधि है इसकी मद्य की उत्पत्ति जमशेद बादशाह के समय में बताते हैं वर्णन है कि वह बादशाह शिकार खेलताहुआ किसी पर्वत के नीचे पहुंचा वहां अंगूरकेवृक्ष में गुच्छेलटके हुये पाये आश्चर्य पूर्वक कहा कि हमने इसपर्वतमें बिषका वृक्षसुनाथा प्रायः वही वृक्षहै सो उनगुच्छोंको रक्षापूर्वक रखना चाहिये और किसी मारडालने के योग्य मनुष्य को खिला कर इसकी परीक्षा लेनी चाहिये सो उनकी आज्ञानुकूल लोगों ने अंगूर के गुच्छों को धोकर उसका रस बर्त्तन में इकट्ठा करलिया यहांतक कि अपने देशमें पहुंचा और वहां पहुंचकर एक अपराधी को वह रस पिलाया अपराधी कि उसमें विष के गुण का हाल सुनचुका था देख कर अति शोकवान् हुआ और बड़ी कठोरता से निराश होकर उसे पिया सब ने निश्चय किया कि यह विषही है थोड़ीदेर के पीछेनशे में गरमी की मूर्च्छा आगई प्रसन्नता जो हुई तो नाचनेलगा लोगों ने समझा कि यहमौत का सामा- न है थोड़ासा और रसपिया दिया बहुतपीने से उसबेचारे को नींद आगई उसे सोता देखकर लोगोंने विचारकिया किन्तु निश्चय हो- गया कि विषने असर किया और यह मरगया जब वह जागा तो उसने और भी मांगकर पिया और जो प्रसन्नता उसे प्राप्त हुई थी तह लोगों से वर्णन की जब यह वृत्तान्त बादशाह ने सुना और

उसका खेलकूद भी देखा तो आप भी थोड़ासा रसपिया और उस के स्वादसे आनन्दवान हुआ निदान आज्ञा दी कि बादशाही बाग़ में इसके दरख़्त लगाये जावें कई बुद्धिमानों ने कहाहै कि मद्य का पीना औषधिकी रीतिपर उचितहै सो इसी आज्ञापर कहते हैं कि मद्य कामदेवके जगानेवाली और रतौंधी और नानाप्रकारके विषों के दूर करने वाली बल कारक और वीर्य्यके बढ़ाने वालीहै और इसका पीना मनको उपद्रव कारक दोषों से साफ करता है मुख्य करके जोड़ोंकी पीड़ाको अतिगुण दायकहै परन्तु औषधिकी रीति पर सेवनकी जावे नहीं तो अधिकता में बहुत हानिहै भूलकांपनी और बुद्धिकी न्यूनता होतीहै मुहगंदा होजाताहै कामदेव का बेग कम होजाताहै आंखों से ज्योति जाती रहतीहै बहुधा सक्ता और मिर्गी और फ़ालिज़ में पड़कर मर जाता है इसका सिरका हदीस अर्थात् पैग़म्बर साहबके बचनानुकूल उत्तमोत्तम वस्तुहै जिसजोड़ से लहू बहै उसपर इसके सिरके का लगाना लहू बन्द करता है और दाद खाज और आगसे जले हुयेको भी गुण दायकहै इसकी कुल्ली करना दांतोंके हिलनेको मज़बूत करताहै जो किसीके कण्ठमें जोंक रहगई हो सिरका पीनेसे तुरन्त अलग होजायेगी और बल करनेवाला और कामदेव के बढ़ाने वाला भी है जलन्धर को नष्ट करताहै और कटेहुये जोड़को लाभ करे और सूखे अंगूरों के लिये उब्बीके पुत्र हज़रत मुहम्मद मुस्तफाने कहावत कहीहै कि सिरका सब प्रकारके खानेसे उत्तमहै कि पट्ठोंको दृढ़करने वाला और क्रोध को दूर करने वालाहै और ईश्वर को प्रसन्न करताहै और मुखकी दुर्गन्धिको दूरकरताहै कफका नाशकरे रंगरूप साफहो बुद्धिमानों का वचनहै कि अंगूर पक्काशयका बलकारक है बीजों समेत दस्तों को रोकता और बिना बीजोंके दस्त लाताहै ॥

तसवीर नम्बर २८०

(कमसरी) अर्थात् अमरूद साहबुल फलाहा कहताहै कि जो इसकेमेवेको चाहें कि दरख़्तसे पृथ्वी पर न गिरे तो नमककी थैली

में छोड़कर अमरूदों पर बांधे जबतक वह थैली बँधीरहेगी वह फल न गिरेगा इसका फल ब्रह्मागड का बल करताहै और पक्का शय के बल करने में अति गुण रखता है शेखरईस का वचन है कि प्यास बुझाता है और पित्त दूर करता है परन्तु कूलंज (पहलू- कीपीड़ा) पैदा करता है साहबुलफलाहा कहता है कि अमरूद की ज़फ्त (सनोबरकीकालीगोंद) में भिगोकर रखना मुद्दतों तक उत्तम रखताहै परन्तु अमरूद के मुख पर गोंद लगाकर मट्टीके बर्त्तन में रक्खें और उस बर्त्तन के मुखपर भी गोंद लगादें तो मुद्दतों तक अमरूद न बिगड़ेगा सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २२१

(लाइया) यहदरख्त ज़हरदार समझा जाताहै पहाड़ों के किनारे में होताहै इसके पत्तों को कूट छानकर पीना अतीसार को करता है इसकी कली में बड़ी सुगन्ध होतीहै शहद की मक्खी इसको बड़ी रुचि से खाती हैं परन्तु इसका शहद हानि कर होताहै जो उसकी लकड़ी किसी हौज़ या तालाब आदि में छोड़दें तो उस तालाबकी सारी मछलियां मुरदे की तरह पर पानीमें तैरनेलगेंगी उससमय सुगमता पूर्वक शिकार होसक्ती हैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २२२

(लुबान) यह दरख़्त कांटेदार होता है दोगज़ के सिवाय ऊँचा नहीं होताहै बहुधा पहाड़ों में उगता है और उमा के दरख़्त की तरह होताहै इसका पत्ता आसके पत्तेकी तरह होता है इसकीगोंद को कुन्दर कहते हैं इसके लेने की यहरीति है कि इसके नीचे कई गढ़े शराब के बर्त्तन की तरह खोदते हैं उसी में यह बहकर कुन्दर इकट्ठा होजाता है जो मनुष्य इसको सर्बदा दांतोंसे कुचलकर चूसा करे समझ बढ़ती है स्मरण अधिक होता है भूलीहुईबात यादआ- जाती है इसके सिवाय घावके भरने को गुणदायक है यदि किसी को दाद की बीमारी हो तो कुन्दर को बत्तखकी चरबीमें मिलाकर

लेपकरे अवश्य नाशहोगी और नकसीर के लहूके बहनेको बन्दकरदेती है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २३३

(लौज़) यह वृक्ष प्रसिद्ध है बादाम को कहते हैं इसके बोने की रीति साहबुलफ़लाहा क्या उत्तम लिखता है कि पहले बादाम को शहद में भिगोना चाहिये कि उसकाफलमीठा हो जो यह चाहे कि बादाम का छिलका ऐसा मुलायम रहे कि हाथ से बे परिश्रम दूर होजावे तो वही उपाय जो अख़रोटके वास्ते बतादियागयाहै करना चाहिये इसके सिवाय यह भी एक उपाय है कि बादाम को लड़के या कुवांरी लड़की के मूत्र में बराबर पांचदिन तक भिगोकर बो दे इसका भी स्वभाव वही है अर्थात् बादाम को कागज़ी छिलकेका बनादेता है मीठा बादाम खांसी को गुण करे और इसका खाना पुष्टता भी लाताहै परन्तु मुख्य अंजीर के साथ हमेशा खायाजावे और बावले कुते के ज़हर को भी लाभ करे शेखरईश के विचार में भी मीठा बादाम पुष्टता लाता है और आंखों को बलदायक और कूलंज को नाश करता है और कड़ुये बादामकी जड़ पकाकर दाद और कूलंज़ पर मलना गुणदायक है जो शहद में मिलाकर उबटना करें तो छोटी २ फुन्सियां जो बहुधा शरीर में प्रकट होती हैं दूर होजायें गी जो मनुष्य निहार मुंह बादाम के सातदाने खायाकरे और शराब पीनेके पहले भी पांचदाने खालिया करे तो बहुत बेहोशीन होगी और खाजको लाभ दायक है आगे ईश्वर जाने स्वरूप यह है॥

तसवीर नम्बर२३४

(लीमूं) (नींबू) यह वृक्ष गर्म देशोंमें पैदाहोताहै इसका गुण और खटाई तुरंज की तरह पर होती है सांपके दूर करने में अति उत्तम है अब्दुल्ला के पुत्र अबूज़फ़र को कहावतहै कि वह जहांरहते थे उसी मकान की दीवार के नीचे एक बाग भी हराभरा तय्यार था संयोग से उसबाग में एक अज़दहा कालीमुश्क के सदृश लंबा

पैदा प्रकट हुआ यद्यपि उसके दूरकरने में बहुत से उपाय किये और बहुत सेइस फ़न के जानने वालेचतुर और मंत्र जानने वाले बुलवाये परन्तु कोई उस अज़दहे पर प्रबल न हुआ एकदिन एक हथचालाक मंत्रजानने वाला आया उससे विनय की और सर्प्प दिखाया देखतेही उसके वह मनुष्य कांपउठा अज़दहेने लपककर उसको मारडाला जो यह ख़बर मशहूर हुई तो सबने हिम्मतहारी जब कोई उपाय दिखाई न दिया तो अबूज़ाफ़र ने बाग़ का रहना छोड़दिया एकदिन एक मनुष्य उनके पासआया और अज़दहे की रहने की जगह पूछी उन्होंने सब पिछला हाल कहसुनाया योगी ने कहा कि वह तो हमारा भाई था हम उसीका बदला लेने को आये हैं कुछ श्रमकरके बतादीजिये फिर हम समझ लेंगे निदान उसके कहने के अनुसार अबूज़ाफ़र उसके साथ होलिया बाग़ में लेजाकर दिखलाया और आप छतपरजाबैठा उस जादूगरने कोई तेल निकालकर पहले अपने शरीरमें लगाया फिर अज़दहेकीओर झपटा और दूसरे प्रकारका तेल निकालकर धुवांकरनाशुरूकिया सो वह बिषैला सांप प्रकटहुआ और इस मनुष्यको देखकरभागा इसने बढ़कर पकड़ही लिया तो उस सर्प्पने उलटकर उसके हाथ पर फन मारा और उस बेचारे को मारडाला यह हाल देख कर अबूज़ाफ़र की आशा और भी टूटगई और हरओरसे निराश होकर घरबैठा एकदिन दूसरा मनुष्य आया और जिसतरह पहलेमनुष्य ने आकर पूछाथा उसने भी वही वचनकहे अबूज़ाफ़रने उत्तरदिया कि अब मेरा यहसाहस नहीं कि तेरे भी लहू का दाग़ दामन पर लगाऊं उसने उत्तरदिया कि वह दोनों बेचारे मेरेभाई थे भाइयों की प्रीतिसे लाचारहूं जब उसने बहुत हुज्जतकी तो अबूज़ाफ़र ने उसको भी बाग़में पहुंचादिया इसनेभी वहां पहुंच कर उसी पूर्व्व रीतिसे तेल लगाकर धुवांकरना शुरूकिया और उधरसे सर्प्पप्र-कटहुआ और साथही पिछले पांव भागनेलगा जादूगरने दौड़कर उसका शिर पकड़लिया और तुरन्त अपने पिटारे में रखलिया

परन्तु उस पकड़ धकड़ में सांपने भी उसकी उँगली में दांत मारा उसने तुरन्त उँगलीको काटडाला और कोईतेल निकालकर आग पर गरमकिया और घावपर लगादिया अबूज़ाफ़र उसको अपने साथले अपने घर को चला मार्ग में कोई मनुष्य नींबू लिये हुये चलाआता था जादूगरने नींबू देखकर उनसे पूछा कि यह फल क्या तुम्हारे शहर में मिलसक्ता है जो मिलसके तो मँगवादो उन्होंने नींबू मँगवादिये उसने कुछ तो टुकड़े करके योहींखाये कुछ निचोड़कर उनका रसपिया और कहा कि ईश्वरने मुझको नींबुओं के कारण आरोग्य करदिया जो हमारे भाई भी इसमेवेको पाते तो कभी जानसे न जाते यह नींबू हमारे अमांदेश में उत्तम ज़हरमोहरा है फिर अज़दहे का शिर और दुम काटी और उबालकर उस का तेल निकाला और साथलेकर अपनी राह चलागया उसवृक्ष की सूरत यहहै ॥

तसवीरनम्बर २६५

(मुशम्मिश) अर्थात् ज़रद आलू (खुबानी) यह एक वृक्षहै कि इसका मेवा और मेवों के विपरीत छाल और गूदे समेत खाते हैं हज़रत मुरतज़ा के मुख से यह कहावत सुनीगई है कि हज़रतपैगम्बर साहब ने वर्णनकिया कि जब ईश्वरने एकपैगम्बरको उतारा उसकी जाति उनके नवीन होनेका निश्चय न करनेलगी और न कोई चेला हुआ निदान वर्षभर के उपरान्त उसजाति के बड़े ईदका दिनआया वहलोग पीले कपड़े पहन २ के वहां इकट्ठे हुये और उन पैगम्बर ने भी सिरेसे उपदेश करना आरम्भ किया उस समय उन्होंने उत्तर दिया कि जो तुम वास्तव में ईश्वरके भेजेहुये हो तो हमारे कपड़ों के सदृश कोई फल इसी समय इस सूखी लकड़ी में उत्पन्न करो निदान पैगम्बर ने ईश्वरसे विनयकी और उसीसमय उस सूखीलकड़ी में हरेपत्ते प्रकट हुये और उसमें ज़र्द आलूका फललगा सो जिस मनुष्यने उसफल को सच्चेमनसेखाया उस फलका बीजतक मीठा निकला और जिसने मनमें बुरीइच्छा

रक्खी उसके फलका स्वाद कडुवा निकला उसकागुण बुद्धिमानों के विचारमें कि पत्ता उसका दांतों की पीड़ा को नष्टकरताहै और जिसके दांत खट्टे होगये हों इसके सेवन से तेज़होसक्ते हैं शेखुलरईसका वचनहै किसूखी खुबानीसे ज्वर दूर होताहै औरहरेकेखाने से ज्वर उत्पन्न होताहै क्योंकि उसमें दुर्गन्ध होतीहै एक दिन एक बुद्धिमानकाश्तकार की ओर गया कि वह खुबानीका वृक्षबोताथा हकीमने उससे कहा कि क्या करताहै उसनेकहा कि मैं वह काम करताहूंकि जिससे हम और तुम दोनों लाभ उठावें अर्थात् हम इसकामेवा खायेंगे और स्वाद उठायेंगे और जब इसको खाकेमांदेपड़ेंगे तो तुम हमारी चिकित्सा से लाभ उठाओगे इसके बीजों का तेलबवासीर को बहुत गुणकरे और इसका कडुआबीज बातके दूरकरनेमेंबहुत गुण रखताहै सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर २३९

(मौज़) अर्थात् केल यहवृक्ष गरम ज़मीन पर बहुतसे द्वीपों में हुआ करताहै इसके पत्ते चौखुंटे खजूर के पत्तों के सदृश होते हैं इस वृक्षकी लम्बाई मनुष्यके डौल के बराबर होतीहै इसकी जड़ों से फूटकर और भी नन्ही २ शाखा सदा निकलतीहैं यहवृक्ष एक बेर फलताहै और फिर जड़वाली छोटी २ शाखाओं को पालते हैं और वह भी एकबेर फललाया करतीहैं इसके मेवेका स्वाद अंगूर की तरह होताहै शेखरईस के विचारमें इसके सेवनसे मूत्ररोधदूर होजाताहै औरवीर्यका बलकारकभी है परन्तुजोअधिकता से सेवन कियाजावे तो सुद्दे पड़जातेहैं इसके सिवाय और लोगोंका लेखहै कि इसका फल नरमी लाताहै और कंठ और हृदयकी दाहको दूर करताहै सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर २३१

(नारंज) साहबुलफलाहा इसवृक्ष के लिये यों लिखताहै कि जो इस दरख़्त के पास नरगिस के दरख़्त लगायेजांय तो उसके फलों का स्वाद बहुत मीठा होगा इसके चूसने से मुख सुगन्धित

ताहै और मनका बलकारकहै इसका और तुरंजका गुण एकसा
जो इसके बीजको सूखने पर जलादेवें तो उसके धुयेंसे चीटियां
गजातीहैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २३८

(नारजील नारियल) हज्जाज के रहनेवालों का वचनहै कि
हवृक्ष छुहारे के वृक्ष के सदृश होताहै हां फल इसका नारियल
ोताहै इसके फलपर जटायें होतीहैं जिसकी रस्सियां बनाई जा-
ीहैं उससे जहाज़ोंको लंगर करतेहैं उसरस्सीमें यहगुण देखा कि
ुद्दतोंतक पानीमें पड़ारहेपर सड़ता नहींहै इसकी गिरी बहुत मीठी
ोतीहै इसके सेवन से बीर्य अधिक होताहै बलीनास का निश्चय
है कि जो इसकी जटाको बत्तीकी जगह चिराग़में जलावें और उस
चिराग़ को लोगों में रक्खें उन लोगों को जल्दी नींद आजाये गी
शेख़रईस का लेखहै कि नारियलकी गिरी बीर्य अधिक करनेवाली
है और विशेष करके इसका तेल पुराने बवासीर के रोग में अति
लाभ दायकहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २३९

(बनक़) इसको फ़ारसी में कुनार और हिन्दी में बेर कहतेहैं
साहबुलफलाहा के विचार में इसका बीज गुलाब में भिगोकर
बोना बहुतउत्तमहै क्योंकि इसकेफल और पत्तोंसे गुलाबकी सुगंध
उत्पन्न होआतीहै जो इसका मेवा शहद और दूधमें भिगोवें और
फिरसुखाकर बोवें तो इसका फल अति स्वादिष्ट और मीठाहोगा
जो इसके पत्तोंको पीसकर बालोंमें लगावें तो बाल बहुत मज़बूत
होजावेंगे और इसमें बालोंका बढ़ाना भी गुणहै जो इसके गोंद से
बालोंको धोवें तो लालहो जावेंगे इसके फलका स्वाद खट मीठा
होता है इसका सूखा फल रुधिर के बहने और जो मन्दाग्नि के
कारण अतीसार हो उसको बन्द करताहै परन्तु ऐसी दशामें फल
में गुठली कूटकर खाय ॥

तसवीर नम्बर २४०

(नख़ल) अर्थात् छुहारेका दरख़्त इस वृक्षको शुभ लिखाहै और यह भी लेखहै कि मुसल मानोंके शहरोंके सिवाय और जगह नहीं होता यद्यपि हिन्दुस्तान रुक्ष और गरम शहरहै परन्तु यहां नहीं होता है हज़रत पैगम्बर साहब कीआज्ञाहै कि बड़ा समझो अपने चाचाको जो छोहाराहै निदान हज़रतने इस वृक्ष को चाचा कहाहै इसका कारण कि ईश्वरने इस शुभ वृक्षको हज़रत आदम की बचीहुई मिट्टी से पैदा कियाहै और कई कारणों से यह वृक्ष मनुष्यकी सूरतका होताहै पहिले यह कि कहीं सेटेढा और गांठ-दार नहींहै दूसरे यह कि यह नर मादा भीहै तीसरे यह कि जो इसके शिरको काटडालें तो सूखजावे और यह वृक्ष और दरख़्तोंके बिपरीत गर्भ धारण करता है कि इसके पहिलेफल में मनुष्य के बीर्य्य कीसी गंध पैदा होतीहै और छाल बीर्य्य रूप होती है इसके सिरपर फुनगी होती हैजोवह किसी उपद्रव से नष्ट होजाय तो वह वृक्ष सूख जावेगा यहभी वही सूरतहै जैसेमनुष्यका शिर और यह भी है किजो कोई उसको काटे तो फिर मनुष्य के जोड़केशहश फिर दूसरी बार वह डाली न होगी और जिस तरह मनुष्य के बाल होतेहैं उस दरख़्तमें भीरोंगटेहैं साहबुल फलाहा का बचन है कि जो छुहारे का दरख़्त न फलताहो तो उचित है कि यह टोटका किया जाय कि एक मनुष्य बसूला लेकर और एक और दूसरे मनुष्यको साथ लेकर उस वृक्षके पास जावे और उसके नीचे खड़े होकर कहे कि जो कि यह वृक्ष फलता नहीं है इसके काटना चाहताहूं यह सुनकर दूसरा मनुष्य उत्तरदे कि अभी ऐसे काम न करो यह दरख़्त बहुत अच्छाहै इस वर्ष अवश्य फलेगा उस समय वह मनुष्य उत्तरदे कि यह वृक्ष अब कभी न फलेगा और यह कहकर दो तीन बसूले लगावे तब दूसरा हाथ पकड़ के कहे कि अब जाने दीजिये इस समय क्षमा कीजिये जो आगे न फले तो फिरमुख़्तारहो जो ईश्वर चाहे इस उपायसे तो वह वृक्ष

अवश्य फुले फलेगा और इसी ढबसे और भी दरख़्तों पर यह टोटका किया जावे तो क्या आश्चर्य कि धमकी से फलने लगें साहबुलफलाहा का लेखहै कि जो इस दरख़्तके नर व मादाको परस्पर पाससे जमावें तो वह बहुतही फलतेहैं और यह बात उनकी परस्पर प्रीतिको सिद्ध करतीहै बहुधा जो नर व मादा को अलग करके लगायाहै तो वह फिर फल नहीं लाये हां जब तक आपसमें नहीं मिले इसमईने कई यमान्नें के रहनेवालोंसे कहावत सुनीहै कि उन लोगोंने वर्णन किया कि हमारे बासके स्थान के निकट एक छुहारे का बागथा और वह अच्छी तरहसे फलाकरता था अकस्मात् एक वर्षमें बिल्कुल न फला बागके मालिकोंने इस पेशेके जाननेवालोंको बुलाकर बाग़ दिखाया उनमेंसेएक उस्ताद ने इस वृक्षपर चढ़कर इधर उधर दृष्टि की परन्तु कोई कारण न पाया घबराया कि फिर क्या कारणहै परन्तु फिर जो ध्यानकरके देखा तो एक नर दरख़्तको देखा कि वहइससे बहुत दूरथा उसने पुकारकर कहा कि यह दरख़्त जो मादाहै उसनर दरख़्तसे प्रीति रखताहै जो यह दोनों आपस में इकट्ठे होजांय तो अवश्य फल लायेनिदानकहने सुनने से जो कुछध्यान आया तो दोनोंको आपुस में मिला दिया और उस बुद्धिमान का कहना सच पाया फलने रंग दिखाया कहतेहैं कि इस वृक्षसे और सरू से वैर है यहां तक कि जो कोई मनुष्य सरू के बागों से सैर करके छुहारे के बागकी ओर जाताहै और कोई सरू दरख़्तकी लकड़ीआदि हाथ में लेकर वहां जानेकी इच्छा करताहै तो छुहारे के बागवान कभी उसको जाने नहीं देते इस वृक्ष के अद्भुत वृत्तान्तों से यह भी एक वर्णनहै कि जो इस दरख़्त के बराबर दीवार बनायें तो उस का रुख़ दीवारही की तरफ रहेगा कहतेहैं कि जिस वृक्षपर केकड़ा लटकावें मेवा बहुत फूले फलेगा अथवा सीसे वा बलूतके वृक्ष की कील बनाकर भी जड़में गाड़ें तो उसकाफलकभी न गिरेगा और वृक्षपर स्थिर रहेगा इसकी लकड़ी को लाखों मन जलावें

परन्तु जैसे मनुष्यकी हड्डियोंका कोयला नहीं होता उसका भी कोयला नहीं होसक्ता जो इसकोशाखा कोकड़ीकीतौरपरमकान में लगावें तो वह शाखा टुकड़े २ होजावेगी कदाचित् शाखाकी बीच मेंसे चीरके उलटा मिलाके अर्थात् एक शिगाफ की पीठको दूसरे शिगाफकी पीठ मिलाके छत आदिमें डालें तो फिर बहुत मज़बूत रहेगी और कभी न टूटेगी जो इसके पत्तोंको लहसुनखानेके पीछे चबालेवे तो मुखकी दुर्गन्ध दूर होजावेगी इसका मेवा बहुत मीठा और स्वादिष्ट होताहै अबूहरीरे का बचनहै कि हज़रत पैग़म्बर साहबने कहा कि अज वह स्वर्ग से उतरा है यह हर बिषकी औषधिहै अजवह एक छुहारेका प्रकार है जो सदा नहीं फलता परंतु चालीस वर्षके उपरान्त फलताहै और यही कारणहै कि शहर के रहने वालोंने इसका बागोंमें बोना बन्द कर दियाहै शेखरईश का निश्चयहै कि कच्चे छुहारे का अधिक सेबन करना जूड़ी बुखार और शिर पीड़ा उत्पन्न करताहै परन्तु कच्चा छुहारा जला हुआ नमक से मिलाके मज्जन करना दांतोंकी जड़ोंका दृढ़करताहै और पक्के छुहारे के लिये खसीमके पुत्र रबीका बचनहै कि जिस स्त्रीके प्रसूतिका रुधिर बहुत आता हो तो इसके खाने से तुरन्त बन्दहो जावेगा और मरदों को खानेसे बीर्य अधिक होताहै और प्रकृति को नरम करताहै सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर २४१

(वरद) अर्थात् गुलाब यह प्रसिद्ध वृक्षहै साहबुल फलाहा का बचनहै कि जो यह चाहे कि इसका फल जल्दी छिलकेसे निकले तो गरम पानीसे सींचना चाहिये जो यह चाहे कि गुलाबकी सुगन्ध अधिक हो तो वृक्षके लगाने के समय इसकी डालियों के बीच में लहसुन रखदे इसकी लकड़ीसेसर्प भागतेहैं जोसर्प किसी को काटे और वह इस दरख़्त के पास जाय तो गुण करे इसका फूल सारे फूलोंमें ख़ुश रंग और ख़ुशबूदार होताहै इसका ज़ीरा सोनेकी तरह होताहै इसकी ओसको आंखमेंलगाना नेत्र पीड़ाको

दूर करता और ज्योति बढ़ाता है शेखरईश का बचन है कि जिस मनुष्यके पसीने में बास आतीहो जो वह इसको हम्माममें लगावे तो खुशबूदार हो बहुधा स्त्रियां इसका सेवन करतीहैं एक समूहका निश्चय है कि गुलाबके फूलकेलगानेसे मस्से दूरहोतेहैं यदि किसी जोड़में कांटा गड़गया हो इसका लेपकरें कांटा बाहर निकलआवेगा जाल नामी एक जानवर बिष्टा में उत्पन्न होता है वह इसकी सुगन्धसे मर जाताहै इसी तरह जो जीव दुर्गन्ध से उत्पन्नहोता है इसकी सुगन्धसे मर जाताहै तर फूल शिर पीड़ाको गुणकरै परंतु जुकाममें हानि कारक है जो इसके फूलोंपर शयन करें तो वीर्य नाश करे इसका अरक़ नेत्रोंकी पीड़ाको गुणकारीहै और मोतिया बिन्दको भी और जो मूच्छित मनुष्य के मुख पर इसका आसव (अरक़) छोड़ें या पिलादें तो जागउठेइसकीकलियां लहूके चलनेकोगुणकरें जो बिल्लीकी नाकमेंमलें तो वह बीमारहो और क्या आश्चर्य है कि मरजाय सूरत यह है॥

तसबीर नम्बर २४२

(यासमी) अर्थात् चमेली प्रसिद्ध है इसका फूल सफ़ेद ज़र्द और सुर्ख होताहै इसकी सुगन्धसे शिर पीड़ा उत्पन्न होतीहै परन्तु कफकी शिर पीड़ाको नाश करताहै इसके लेपसे छीप दूर होती है शेखके सिवाय और लोगोंका निश्चयहै कि इसके बहुत सूंघने से कमल वायु उत्पन्न होतीहै पर लक़वा और फ़ालिज़ और रांघनको गुणदायकहै यदि इसकातेल पित्तकी प्रकृतिवाले सूंघें तो नकसीर पैदाहो इसका मर्दन लिंगपर करना सूत्र जारीकरताहै सूरतयहहै॥

तसबीर नम्बर २४३

दूसराप्रकार बेलोंके वर्णनमें

बेल उसेकहतेहैं जो लंबादरख्तनहो और साग और घासकीतरह हो यह ईश्वरकी मायाहै कि हरवर्षमुरदेको जीता करताहै और वह उसपर पानी बरसाताहै और गलेहुये स्थावर सिरसे हरेभरेहोते हैं और उसमेंलालपीलेआदि नानाप्रकारके फूललगतेहैंकिहरबुद्धिमान

ज्ञानवान समझेकि इसी तरहईश्वर मुरदों कोभी जिलायेगा और उनकी गलीहुई हड्डियोंको सिरेसे जीवरूपीवस्त्रपहनायेगा इसीकी ओर कुरानमें सैनहैइस आयत से कि तुमईश्वर की कृपा के चिन्ह कि जिसतरह ईश्वर मुरदी ज़मीनको जिलाताहै उसी तरह मुरदों को भी जीता करेगा क्योंकि वह हरवस्तु पर अधिकारीहै और एक ईश्वरकी यहमायाहै कि उसने हरदानेमें एकशक्तिदीहै कि जबवह दाना पृथ्वी में बोयाजाता है तो अपने बलसे पृथ्वीकी शुद्धतरीको अपनीओर खींचताहै और उसीसे बढ़ताहै जैसेकि अग्निकीज्योति की बत्ती के वास्ते चिराग़में तेलको अपनी ओर खींचतीहै सो वह ईश्वरकी आज्ञानुसार इसीतरह पलकर फलदार होताहै और यह छोटेवृक्ष इसतरह परहैं जैसे कीड़े मकोड़े बड़े जीवधारियोंमें होतेहैं तो जिस तरह से सरदी की अधिकता में कीड़े मकोड़े मरजाते हैं उसीतरह सरदीमें यह भी नाश होजातेहैं इन वृक्षोंके इतनेप्रकार हैं कि मनुष्यकी बुद्धि दीनहै और क्योंकर कुण्ठित नहो कि ईश्वर ने इनको नाना प्रकार के रंग कृपा कियेहैं किसी का रंग लाल है जैसे सौसन का फूल और कोई शक़ाय कुलनैमां (एकप्रकारलाल फूलकी जो बहुत सुर्ख़ होतीहै)के सदृश और उसकापेट उसके दाने सेभराहै और किसीकारंग अग्निबर्णहै जैसेझाज़रयोनपहाड़ी और इसको फ़ारसीमें खुज़स्ता कहतेहैं और यह गुलाबसे बहुतहलका होताहै कहतेहैं कि कच्छू और नेवले आदिको जब सांप या अज़-दहा काटता है तो जंगली सातरखाना उनका इलाज है और जो इसको पकाकर खायें तो अतीसार होजाय जो शहद में मिलाकर चाटें तो सूजन को गुण दायकहै जो इसको पकाकर इसका गरम पानी पियें कीड़ेपेटके मरजायेंगे और बड़ाभूखलानेवालाभीहै और बातघ्न है और आंखोंकी अन्धेरी और रतौंधी जो तरीसे उत्पन्न हो उसकोनष्टकरे सो अब जो इनबेलोंसे प्रसिद्धहैं वह लिखीजातीहैं॥

(तरख़ून) इसको शीराज़ी भाषा में तरख़ूनी कहतेहैं जो इस कोचबालें तो जिह्वा का स्वाद जाता रहताहै इसी लिये बहुत से

लोग इसे पहिले चबाके कडुई और बेस्वाद औषधियां पीतेहैं और उसकी करुवाहट नहीं मालूमहोती शेख़रईसका वचनहै कि इसके खानेसे कण्ठकी पीड़ा उत्पन्नहो वीर्यघटजाय प्यासपैदाहो इसकी जड़को आकर करहा कहतेहैं जो इसकोसिरकेमें पकाकर कुल्ली करें तो दांतोंके हिलनेको गुणकरे जो जूड़ीबुख़ारके आनेके पहिलेइसको शरीरपर मलें ईश्वरचाहे तो गुणकरे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २४४

(अबरान) इसको फ़ारसीमें काफ़ूर शबरम कहतेहैं शेख़रईस का निश्चय है कि जोजुक़ाम सरदी सेहुआ हो उसको गुण करे इसका रस नेत्रकी ज्योतिको तेज़ करताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २४५

(अदस मसूर) इसको यूनानी भाषामें माक़ूस कहतेहैं साहबुलफ़लाहा कहताहै कि जो मसूरको जल्दी उगानाचाहैं तो गोबर मिलाकर बोवें शेख़रईसका वचनहै कि इसको जौ के आटेकेसाथ पीसकर पांवकीनसकी पीड़ापर लगाना गुणकरे इसके बहुतखाने से कोढ़ और आंखमें अन्धेरी पैदा होतीहै इसकेसिवाय और लोग कहतेहैं कि सिरकेमें पकाकर पावँकी बिवाई पर लगाना गुणकारकहै इसकी कुल्ली करना ख़ुनाक़ अर्थात् पीनसको गुणदायकहै परन्तु इसकेखानेवाला रात्रिकोभयानक स्वप्नदेखताहै सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर २४६

(उज़लम) यह एक प्रकारकी घासहै जिसके निचोड़े हुये रस का तेल बनातेहैं जो झाईं और छीप को दूर करताहै और इसकी घांस बालखोरे और सड़ेहुये घावको गुणदायकहै और कांटाबाहर निकालतीहै शक्कर के साथ लड़कोंकी खांसी दूरकरतीहै और इसी तरह इसका रस भी लाभ दायकहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २४७

(उनबुस्सालिब) अर्थात् मकोय यह कई प्रकार की होती है फ़ारसी में इसको रोबाहतरदक और सग अंगूर कहते हैं का-

महाविषहै कोई मलहममें काम आतीहै और बाज़ी नींदलानेवाली अफ़ीमकी तरह होतीहै इसका पत्ता सब्ज़ और मेवा पीलाहोताहै जो नींद वाले प्रकार में से बारह दानेखाये उन्माद और हिचकी कारोगहो और शरीरका रंग बदरंग होजाय और कशिन्दाको भी चारदिरम अर्थात् एक तोलादो मासे खाना दीवाना करतीहै जो इसकी जड़की छालको साढ़ेचारमासे शराबमेंपियें बहुत नींदआवे और उसके हर प्रकारका रस नेत्र पीड़ा में लगाना गुण दायकहै सूरत यहहै॥ तसवीर नम्बर २४८

(फ़ज्ल) इसको फ़ारसी में तुरब्र और हिन्दीमें मूली कहतेहैं साहबुलफ़लाहा का वचनहै जितनी मूली लम्बी और भारी चाहे उसीके मुवाफ़िक़ एक लकड़ी पृथ्वी में बिल्कुल गाड़ के निकालले मानो वहवाली ज़मीन सांचे की तरह होगई सोउसगढ़े में मूलीके बीज को सूखी घास समेत डालदे और उसके नीचे कुछ गोबर भी डालना चाहिये तो उसी लकड़ी के बराबर मूलीहोगी और यहभी कहाहै कि जो मूलीके बीजको शहदमें मिलाकर बोवें तो मीठी हो। इसके खानेसे बुरी डकार आतीहै इसका यहकारणहै कि जब मूली मेदेमें गई मेदे के फोगको खींचकर उभारतीहै यह दुर्गंध उनफोगों की होतीहै न कि मूलीकी परन्तु यह वचन इब्नुलफ़रह का है जो लहसुन के खाने के पीछे इसको खावें तो दुर्गन्धि दूर होजावे जिन स्त्रियोंके बच्चेहुयेहों जो वह मूलीका सेबनकरें दूध बहुत पैदा होगा जो मर्द इसकोखाये तो बीर्यमें बल अधिकहो परन्तु आवाज़ बैठ जातीहै और इसके सदा खानेसे मेदा बहुत साफ़ रहताहै जो मूलीको पीसकर बिच्छूपर रखदें तुरन्तमरजाय जिसने मूलीखाईहो और उसको बिच्छू काटे तो विष अपना स्वभाव न करेगा और जो इसको शेलम अर्थात् मनमने के साथ पीसकर बालखोरे पर लेपकरें बाल जमआवें परन्तु जुयें शिर में पड़जायेंगे और बदन में सुस्ती पैदा होगी और शिर और आंख और दांत को अवगुण करे शहदमें पीसकर मर्दनकरना छीके निशान दूरकरतीहै जो इसका

रस शराबमेंडालें खराब होजाय और बिच्छूके बिषको गुणदायक है जो गरमीसे शिरपीड़ाहो तो इसके पानीसे शिरधोये तुरन्त दूर हो और बालखोरे पर मलना अति गुणदायकहै जो सांपवालों के पिटारे में मूली और नौसादर मल दें उसके सारे सांप मर जावें इसका रस कामला में पांचदिन पीना ज़र्दी खो देताहै इसकारस मलना गिरेहुये बालोंको जमाता है और आंख में लगाना ज्योति अधिककरता है और मूलीको सुखाकर भी आंखमेंलगाना निगाह तेज़ करताहै जिस घर में इसका राख छोड़ देवें बिच्छू न आवेंगे इसको सूखा पीसकर छीप पर लगाना उसको दूरकरे इसकेबीज खाने से बीर्य अधिकहो और ऐंठनको गुण दायकहै इब्न मासूया का वचनहै कि मलीके पत्ते नेत्रकी ज्योति अधिक करतेहैं और यह सर्पके बिषको लाभदायक और इससेदूधबहुतहोताहैसूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर २४६

(फ़रफ़ख़) इसको बक़लतुलहुमका अर्थात् खुलफा और लुनिया इसकारण कहतेहैं कि जहां कहीं तरीहोतीहै वहां यहउगता है जो इसके पत्तों को बिछाकर उसपर सोवें स्वप्नमें वीर्यपात न होगा और शरीर के घावपर लगाना गुणदायकहै और वीर्य को अधिक भी करता है जो इसको शहद और कचलोन में पीसकर नाभिके गिर्द और लिंगकेछिद्र और पेड़ूपरमलें लिंग तेज़हो शेखरईसका वचनहै कि जो इससे मस्सोंको काटें तो फिर पैदा न हों और नेत्रपीड़ा और दांतोंकी पीड़ाको भीगुणदायकहै जो छुहारे के दरख़्तोंपर कोई आफ़तपहुंचे इसकेपत्तोंका रससमेत उसपरमलना उस आफ़त को दूर करता है जो मनुष्य इसके बीज को सिरके में कूट पीसकरपिये देरतक प्यास न लगे बहुधा विदेशी इसकासेवन पानी न मिलने के समय करतेहैं और गरम तप को भी लाभ करे परन्तु इसका बहुत खाना वीर्यको नष्टकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २५०

(फ़ज़ंकरत) यह ऐसीबड़ीघासहै कि दरख़्तकेबराबर है तराइयों

में उगतीहै इसकापत्ता जैतूनकीतरहहोता है और इसमें फूल और मेवा होताहै परन्तु मेवेका सेवन नहीं करते हैं शेख़रईस का वचन है कि यहघास शरीरका रंग अच्छाकरतीहै इसका मरहम सुस्ती और शिरपीड़ाको लाभकरे और सुखनींद लाताहै और दूध बहुत पैदा करताहै परन्तु वीर्य कमहोजाताहै जो इसको बिछाकरसोयें स्वप्नमें वीर्यपात न हो और लिंग खड़ा न हो इसके धुयें से स्त्रीको काम अधिकहोताहै इसका पत्ता सर्पको दूरकरताहै मरहम बावले कुत्ते के घाव को गुणदायक है इसके पत्तोंका धुवां मच्छड़ आदि इसी प्रकार के डंक मारनेवाले कीड़ोंको दूरकरताहै सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २५१

(फोतनज पोदीना) इस सुगन्धित घासका पत्ता छोटाहोता है और यह दोप्रकार की होतीहै नहरी और पहाड़ी नहरी वहहै जो दरिया किनारे जमै इसकी गंधसे मूर्च्छा दूरहोतीहै रात्रि को स्वप्नमें वीर्यपात को दूरकरे इसका मरहम दुखदाई कीड़े मकोड़ों को गुणकारक है और इसके पत्तोंका धुवांभी लाभकरे इसके पत्तों के दांतोंसे चबाना शराबकी बूको दूरकरताहै और वीर्य्य का नष्ट करनेवाला है क्योंकि गुरदेको अवगुणकारक है और पहाड़ी वह जो पहाड़ोंपर उगे उसका उबटन करना शरीरका रंग सुर्ख़ और सपेद करताहै मुख्य करके जो शराबमें पकाकर हम्माममें मलें खाजकोगुणकरे और कोढ़ हिचकी बदनके फटने और जलंधरवाले और कमलवायुरोग वाले को लाभकरे और बिच्छूकेबिषकीउत्तम ओषधि है ॥

तसवीर नम्बर २५२

(क़ातिलुलज़ैब) जो इसको कूटकर कच्चे मांस पर छिड़ककर भेड़ियेको खिलावें तो वह तुरन्त मरजाय सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २५३

(क़ातिलुल्काब) इसके खानेसे कुत्ता तुरन्त मरजाय कहते हैं कियहघास हिन्दुस्तानमेंहोतीहै जिसकोकुचलाकहतेहैंसूरतयहहै ॥

तसवीरनम्बर २५४

(क़ताद) यहएक प्रकारका कांटेदार दरख़्तहै जिसमें गोंदबहुत होताहै इसको शीराज़के निवासी एरकम कहतेहैं इसके कांटों को जलाकर इसकी लकड़ी गाव सुतरको खिलातेहैं इसके कांटे सख़्त और लंबेहोतेहैं यहांतक कि अरबके रहनेवाले कठोर कार्यों पर दृष्टांत देतेहैं कि उस कामसे कामक़ताद नामी दरख़्तका कांटा है इसका गोंद खांसी और फेफड़ेके घावको गुणदायक है सूरत को साफ़ करताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २५५

(क़सा) फारसी में इसको ख़यारज़ह और ख़यारज़ार कहते हैं सकाहबुल फ़लाहा का वचन है कि जो यह चाहे कि इसका फल मनुष्य वा पशु वा मुर्ग की तरह का हो तो जिस रूप का चाहे उसका सांचा तय्यार करके उसमें कसाको डालदें और उसका मोहरा बंद करदें परन्तु दृढ़ताके साथ कि उसमें गर्दहवा या भाफ़ न जावे और यह भी बिचार रहे कि क़सा अपने उगने की जगहसे अलग न होने पाये तो जब वह बढ़ेगा उसी सांचेके रूपका होजायेगा और यह भी लिखाहै कि जोस्त्री ऋतुवतीहो और इसकी बेलोंमें जावे तो उनके पत्ते सूख जावेंगे और दरख़्त बेजान होजावेंगे और उनका मेवा कडुवा होजावेगा इसीतरह जो उसके बीजको तेलकी गंध पहुंचे यहांतक कि जिसबरतन में तेल हो या कपड़ेमें लगाहो और उसपर उसके बीजपड़जावें तो फलों का स्वाद कडुवा होजायेगा यदि ख़यारज़ह को लंबा करना चाहे तो एक बरतनमें पानीभरकर खुलाहुआ चारअंगुलके अन्तरसे उसकेपासरखदें जब ख़यारज़ह उसकेपास पहुंचे थोड़ाहटावे इसी तरह वह बहुत लंबीहोजावेगीजो इसके दानेको उलटा बोयें पत्ता और मेवा बहुतहो जो इसके बीज को शहद और दूधमें भिगोकर बोदें फलमीठा होगा शेख़रईस का बचनहै कि इसका मेवा खाना बावले कुत्ते के लिये गुणदायक है और प्यास दूर करताहै और

इसका सूंघना गरमीकीअधिकताको दूर करताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २५६

(कुरतुम) अर्थात् कड़ इसका फूल कुसुमहै शेखरईसका बचन है कि इसका बीजहृदय और शरीरके रंगका शुद्ध करने वाला और कुलंजका गुणदायक है जो अंजीर या सिरके में सेवन करें कामदेवको अधिक करे और झाईं और दादको नष्ट करताहै और इब्न मासूयासे साहब अतियारात ने कहावत लिखीहै कि उनके बिचारमें कड़कोगिरी दस्तलातीहै इस तरह पर कि इसका बीज पानी में उबालकर और ज़ैत में मिलाकर साफकरके दसदिरम (दिरम साढ़ेतीन माशेकाहोताहै) लाल शक्करअधिककरें और दस दिरमसे बीसदिरमतक पियें सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २५७

(क़तन) अर्थात् रूईयह प्रसिद्धहै इसके पत्तोंका रसलड़कों को अतीसारमें पिलातेहैं इसकी राख दांतकी जड़ों और इसके गलने को गुणकारकहै और आजमाई हुईहै जो इसका फलसख्तहोताहै तो उसका बनाहुआ कपड़ा बदनको सख्त करताहै और जो नरम होताहै तो उसकी पोशाक बदन को नरम करती है रूईदारकपड़े बूढ़ों और ठंढी प्रकृतिवालों को गुणकारकहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २५८

(क़नाबरी) इसको फारसीमें बरगत और शीराजीमें शोराकहतेहैं इसकालेप झाईंको नष्टकरताहै और मस्तीको अतिगुणकरेजो छातियोंके घावपर इसके पत्तोंका लेपकरें तो गुणदायक है और हृदय और वहस्थान जहां पेटमें दूसरी बेरभोजन पके इनके बँध जानेकोखोले बवासीरपर लगाना अतिगुणदायकहै राज़ीके बिचार में मदे और कलेजेको गुणकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २५६

(कनब) (भंग) यह वृक्ष कोई जंगली और कोई बागका होताहै हुसेन का वचन है कि जंगली एक गज़के बराबर जंगलमें

होताहै इसका पत्ता सपेदी लिये और फलमिरचकी तरहपर होताहै जिसका तेलनिकालतेहैं जो गरम सूजन को गुणकरे इसकी जड़का रस कानकी पीड़ाको गुणकरे और बागके भंग बीजकोशह-दांज कहतेहैं और इसके पत्ते को भंग जो उपद्रवकारक आलस्य करनेवाली होतीहै इसको थोड़ासा पीना निर्बुद्धि और बिचार को भ्रष्ट करताहै इसकी गरमी बड़ीहै बहुधा पीनस और दीवानापन पैदा करतीहै और चोटकी पीड़ाको गुणदायकहै और लहूको बंद करतीहै और पांवके अंगुलियों की पीड़ाको लाभकरे शेख़रईस के बिचारमें इसका रस नेत्रपीड़ाको गुणकरे परन्तु शिरपीड़ा और आंखोंकी अंधेरी उत्पन्न करताहै और इसका सेवनबीर्यको सुखाता है इनके सिवा औरोंका बचनहै कि इसकारस बात को गुणदायक और इसका तेल आंखोंकी पीड़ाको जो सरदीसे हो दूर करता है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २६०

(कबनैत) इसको फारसीमें करंबरूमी कहतेहैं साहबुलफलाहा का बचनहै कि जो इसको खारी ज़मीनपर लगावें बड़ाहो और इसका अच्छा स्वाद और कीड़े न लगें इसको बीचमें लगाने से अंगूरके दरख़्तका बल कम होजाताहै और फिर उसअंगूरकी शराब में नशानहीं रहता है इसके पत्तोंको शाखा समेत पीसकर दुःखी लोगोंके मस्तकपर लगाना चिन्तादूर करताहै इसकाफल खाना या इसका बिस्तर बनाकर उसपर सोना बुरे और भयानक स्वप्न दिखलाताहै इसी कारण जिसने इसका फल खायाहो उसके स्वप्न का फल नहीं कहते जो इसको अफादिसा (अर्थात् कई कई खुश-बूदार औषधियोंकी मिलीहुई दवा साथ ऐसी स्त्रीपिये कि जिसका ऋतुका रुधिरबंदहोगयाहो तो रुधिर उसका जारी होजाय और पुरानी खांसी को गुणकरे जो लड़के इसके खाने की आदत करें जल्दीवड़ेहों औरबुरी आवाज़ अच्छी आवाज़ होजाय और कुरूप से सुन्दर रूपहो शेख़रईसकाबचनहै कि यह बहुधा पीड़ाको लाभ

करे और गरमीऔर कांपनी को गुणकरे और निद्रालातीहै परन्तु आंखोंको अंधाकरतीहै इसके बीजकी धूनीसेबागकेकीड़े मरजातेहैं जो स्त्री भोग के उपरान्त इसका शाफ़ा भग में रक्खे तो गर्भरह-जाय इसके बीजको पत्तों समेत सिरकेमें पीसकर बावलेकुत्तेके घाव पर लगाना गुणकरे इसका बीज प्यासकोगुणदायक और बीर्यको बढ़ाता है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २६१

(क़ैसूम) इसकी सुगंध बहुत उत्तम होतीहै फ़ारसीमें इसकोबोय मारा कहतेहैं क्योंकि इसकी गंधसे सांप भागते हैं इसके बीजको जिस गांवके गिर्द बोदें वहां सांप नहोंगे और जो हों वह मरजायँ शेख़रईस का बचन है कि बाल निकलने के लिये गुणदायक है जो इसको किसी तेलमें पकाकर जिसकी दाढ़ी पर बाल न जमते हों लगावें तुरन्त बाल निकलआवें और मासिक रुधिर जारी करताहै और मुरदे बच्चे को पेटसे बाहर निकालता है और मूत्रको खोलताहै इसका तेल मलना जूड़ी बुख़ारमें गुणकरे जो शराबमें मिलाकरपियें विष दूर करे सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २६२

(गावज़बां) अरबी में लसानुस्सौर कहते हैं कफ और घावको गुणकरे शेख़रईस का निश्चय है कि चिन्ता दूर करता है और मन का बलकारक है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २६३

(कतां) अर्थात् अलसी इसके कपड़े बनातेहैं कहते हैं कि इसके कपड़ेसे बदन नरम रहता है मुख्यकरके गरमी में गरम प्रकृतिको इसका धुआं जुकाम को लाभ करे इसका बीज बहुत प्रकार की पीड़ाओं को गुण करे कचलोन और अंजीर के साथ कुत्ते के विष को फ़ायदा करे और मोम के साथ नाख़ून के रोग में अच्छा है और शहद औरकाली मिरचमें मिलाकर खाना बीर्यका बलदायक है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २६४

(करास) अर्थात् गन्दना जंगली और बोया हुआ होता है साहबुलफलाहा कहताहै कि इसका बीज बोकर तीन दिनके पीछे पानी देते हैं और इसकी जड़ मज़बूत होने के वास्ते बकरियोंकी मेंगनियां डालते हैं जो गन्दनाको पीस कर बिच्छूके घाव पर लगावें तुरन्त पीड़ा दूरहो और भिड़के विष को भी गुण करे उसका सदा सेवन आंखकी अंधेरी पैदा करताहै शेख़रईस का वचनहै कि शामीगंदना लगाना मस्सोंको दूर करता है और नकसीरके रुधिर को दूर करे परन्तु इसका खाना शिर पीड़ा पैदा करता है और दुस्स्वप्न दिखलाता है और दांतोंमें पीड़ा पैदा करता है और नेत्रको हानि कारक है और बन्तीगन्दना बवासीर को गुण करे पर जो इसके छालकी धूनी लेवें और पियें और यह कामदेव का बढ़ाने वालाभी है और मनुष्यों का बचन है कि गन्दनाको चबाकर जहां घावसे लहू जारी हो लगाना फ़ायदाकरे जिस स्त्री के ऋतु का रुधिर बन्द होगया हो जो वह इसका दस दिरम रस बीस दिरम शहद के साथ पिये मासिक रुधिर जारीहो कहते हैं कि आवाज़पड़ने को लाभ करताहै और इसीकारण गवइये लोग इसका सेवन कियाकरतेहैं क्योंकि आवाज़ का पड़ना ब्रह्माण्ड की तरी से होता है और यह तरी को सुखाता है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २६५

(करसना) अर्थात् मटर दैसकोरेदस का वचन है कि यहघास महीन २ पत्ते होते हैं और इसका बीज छिलके में होता है और इसका दाना मसूर के सदृश परन्तु यह चौड़ा नहीं होता बरन पहलूदार और स्याहीलिये हो छीलनेपर मसूर की तरह होता है यहदाना बैलों के मोटा करने में अद्वितीय है इसका स्वाद उड़द और मसूर के बीच में होता है रामजर्द और काशग़र की विलायत में भी बहुत बोयाजाता है शेख़रईसका वचनहै कि झांई और छीप पर लगाना गुणकरे रंग रोशन करता है और दुबलापना दूर

करता है जो शराब में पीसकर सांप या व्रत रखनेवाले मनुष्य या कुत्तेके घावपर लगावें गुणदे॥

तसवीर नम्बर २६६

(किरप्सअजमोद) यहघासप्रसिद्धहै जंगली और बागकीहोती है इसकीगंध मुखकोसुगन्धितकरतीहै इसीलिये जोमनुष्य अमीरों और बादशाहों की आधीनताकरता है वह इसका सेवन करता है स्त्रीपुरुषके कामदेवको उभारतीहै और इसका कांपनेवाले जोड़पर लगाना फ़ायदा रखताहै शेख़रईस के विचार में जंगली अजमोद बालखोरे और मस्सोंको गुणकरे और बागकी मुखकी दुर्गंध और दाद खाज को लाभकरे जो अजमोद खायेहुये मनुष्यको बिच्छू काटखाय निश्चयहै कि वह मनुष्य मरजाय सो जहां कहीं बिच्छू बहुतहों उसको न खानाचाहिये इसकारस आंखमें लगाना अँधेरी को दूरकरताहै इसकीजड़ आंखमेंलगाना दांतोंकीपीड़ा दूरकरता है इसका बीजजलंधर और बंद मूत्रको गुणकरे और बच्चेकी झिल्ली को पेटसेबाहर निकालताहै जिनमनुष्योंके समूहमें इसकाधुआंकरें वहनिद्रा में मग्न होजावें मन्दाग्निकी हिचकी को लाभकरे सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर२६७

(करदिया) शेख़रईस का वचन है कि यह घास उन्माद और बात को गुणदायक कीड़ों के खींचनेवाली और मूत्ररोध और पेचिश को गुणकारक है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २६८

(करबजा) अर्थात् धनियां बलीनासका वचन है कि जोइसको जड़ समेत पृथ्वी से उखाड़कर प्रसूति की पीड़ा के समय स्त्री की रान में लटकावे तुरन्त बच्चा पैदाहोय शेख़रईस का वचन है कि हरे धनिये का खाना नींद बहुतलाता है और आंख में अँधेरीपैदा करता है इसका रस दूध में पीसकर लगाना कठोर पीड़ाओं को गुणकरे इसका बहुत खाना समझ और स्मरणको खराबकरताहै इसका बीज भिड़ केडंकपर लगाना गुणदायकहै और ती नहथेली

भर इसकाचर्ण खाना भी लाभकरे बलीनासका वचन है कि इसके दानेके धुयेंसे बिच्छू और सर्प भागतेहैं इसका खाना लहसुन और प्याज की दुर्गंध को नष्ट करता है सूरत यहहै॥

तसवीरनम्बर २६६

(कलबासा) यह प्रसिद्ध घास है जो इसको बिछौने पर रखदें तो खटमल हिलनहीं सक्ते और कुछ देनेका बल उनमें नहीं रहता सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २७०

(कम्न) इसको फ़ारसी में ज़ीरा कहते हैं कबूतर इसकी इच्छा करताहैं जहां छिटकादें कबूतर जमाहोंगे और जिसख़ानेमें डालदें कबूतर उसको न छोड़ेंगे इसकी सुगन्ध से चींटियां भागती हैं शेख़रईस का वचनहै कि इसके अरक से मुहँधोनासफाई लाता है इसका बहुत खाना मुखका रंग पीला करताहै और ज़ीरेकोसिरके में पीसकर सूंघना नकसीर दूर करता है और जो बत्ती बनाकर नाक में रक्खें तौभी नकसीर को गुण करे इसका रस आंख की ज्योति बढ़ाताहै जो ज़ीरा और नमक बराबरलेकर पानीमेंपीसकर टिकिया की तरहपर बनाकर सुखाकर मैदे के ढेरमें रखदें तो वह मैदा मुद्दत तक ख़राब न होगा सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर२७१

(कौज़गंदुम) इसको फ़ारसी में ज़ौज गन्दुम कहते हैं इसका गुण यह है कि जो इसका एक दाना लेकर दसरतिल शहद और तीसरतिल पानी में मिलाकर पकावें और देगका मुंह कपरमिट्टी करदें उत्तमोत्तम मद्य एक घड़ी में तय्यार होजावे और वीर्य के बढ़नेके वास्ते गुण करे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २७२

(कुमात) यह वह घासहै जो ज़मीन के नीचे चांदके प्रभाव से पैदा होतीहै यह बीजसे नहीं जमती और न इसकी जड़ होती है किन्तु रत्नोंके सदृश शक्तियों के समूह से उत्पन्न होती है कि जिस

तरह कि रत्न पृथ्वी से उत्पन्न होते हैं नबीकी हदीसमें लिखाहै कि कुमात तुरंजबीन गोंद के सदृश है इसलिये कि पृथ्वी इसको बे परिश्रम उगाती अरब कहतेहैं कि जो ज़मीन के नीचे कुमात का जीरा हो और गरमीकी बर्षाका जल उसको पहुंचे वह सबजी सांप होजातेहैं इसका एक प्रकार ज़ैतूनकी छायामें होताहै जिसको कुत-रक कहतेहैं वह महा बिषहै इसी तरह जो कुमात दरख़्तकी छाया में जमे वह भी बिषहै शेख़रईसने कहाहै कि इसकेखानेसे फालिज और लक़वा पैदा होताहै और कुमात आंखों को प्रकाशवान् करता है जैसा कि हज़रत मुहम्मद साहब की कहावत है कि बुद्धिमान हकीम इसके गुणको खूब जानताहै और शेख़के सिवाय औरों का यह निश्चयहै कि इसका सेवन मूत्ररोध और फालिज पैदा करता है बाज़े कुमात ऐसेहैं कि जिनके खातेही मनुष्य तुरन्त मरजाता है और यह बिषैले जीवधारियोंके निकट पैदाहोताहै सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर २७३

(लबलाब) इसको जबलुल मसाकीं और इश्क़ा और तमूसभी कहते हैं और शीराज़ी भाषा में हरशा और हिन्दी में चांदरपल बोलते हैं इसका वृत्तांत यहहै कि जो वृक्ष इसके पास होता है उस पर यह लिपट जातीहै और महीन सूतकी तरह लम्बी होती जाती इसकी पत्ती लम्बी होतीहै पुरानी शिर पीड़ाको गुणदायक है और सिरके में पीस कर इसका लेप सिपर्ज़की पीड़ा (सिपर्ज़ उदर में एक जोड़ होता है)परकरना गुणकरे इसका अरक़ पित्तका निका-लने वाला है शेख़रईस के बिचारमें इसका रस बालोंको नूरेकी तरह पर गिरा देता है और जूं के दूरकरने में अति गुणदायक है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २७४

(लसानुलहमल) यह घास बकरीकी ज़बानकी भांति होती है शीराज़ी में इसको बारतंग कहते हैं और यह दोप्रकारकी होतीहै बड़ी और छोटी शेख़रईसने कहा है कि कंठमालावालेकी गरदन

में लटकाना गुणकरे जो इसको जड़को उबालकर कुल्ली करें दांतों की पीड़ा को गुणकरे जो इसको मसूर की तरह पर पकाकर खावें मिरगीको गुणकरे और चौथियाके तपभी दूरहों सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २७५

(लसानुलअसाफ़ीर) यह उस वृक्षका फल है जिसको फ़ारसी में सरू कहते हैं और शीराज़ी भाषा में इसका नाम तुख़्मगवाहर है और फ़ारसी भाषामें कुंजश्क इसके पत्तेघाव को भरते हैं शेख़र-ईस के विचारमें उन्माद रोगको लाभदायक और वीर्य का पौष्टिक और लिंगका बलदाता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २७६

(लसफ) इसे फ़ारसी में कबर कहते हैं यह ख़राब ज़मीन पर उगती है साहबुलफलाहा का बचन है कि जब किसान इसकी ज़मीनको दुरुस्त करताहै तो यह घास नाश होजाती हैइसके मेवे को नमकसे पालते हैं तो ख़ूब पक्का होता है इसकी जड़में खीरेकी तरह दूसरा मेवा होता है और वह बहुत तेज़ होता है इसकोशोरे के क़वाबमें डालते हैं कि उसमें उबाल न आवे इसके जड़की छाल रांधनफालिजऔर फफोलेको गुण कारक है कभी ऐसाभी होता है कि इसकी जड़का हरा छिलका दांतोंकी पीड़ामें गुणकारक होता है इसके पत्ते बवासीरको लाभदायक हैं और वीर्य के पौष्टिक भी हैं और यह एक प्रकार का ज़हरमोहरा है मुख्यकर जिसके कान में कोई दुखदाई जीव घुसगया हो जो उस समय इसका रसकान में टपकावें वह जानवर मरजायेगा और झाईं परभीलगाना लाभ-दायक है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २७७

(लफाख़) फ़ारसीमें शाह तरज कहतेहैं इसकी एकप्रकार सपेद पत्तीकी होती है कहते हैं कि वह नरहै इसका बहुत सूंघना सकते की बीमारी पैदा करता है जो एक सप्ताह पर्यंत इसका मर्दन उस कुष्टपर कि सपेद काले दाग शरीर पर पैदा होते हैं करें गुण करे

इसका सूंघना शिर पीड़ा पैदा करता है और नींद लाता है परन्तु इंद्रियां मट्टी होजाती हैं और जो इसका बीज करम्बके साथ मिला कर आग में रक्खें न जलेगा जो स्त्री इसका बत्ती बनाकर शहद में मिलाकर योनिमें रक्खे लहूका बहना बन्दहोगा और पीड़ा कोभी उपयोगी है जंगली लफाख़ जिसको यबरूज कहते हैं और उसकी मनुष्यकी सूरत होती है और उसका नर वृक्ष मनुष्यके सदृश होता है और मादा की सूरत स्त्री सी होती है जो उसकी जड़ मनुष्य की कठोर सूजनपर लगावें गुणकरे और कंठमालाके रोगऔर रतीला और जोड़ों की पीड़ापर इसका मरहम लगाना बहुत गुणकरे इसकी जड़शराबमें पीना मूर्च्छा करता है इसके खानेसे नींद बहुत आती है शेख़रईस का बचन है कि जो इसको शराब में पीस कर तीन गिलास पियें ऐसी मूर्च्छा आवे कि चाहे जिस जोड़ को काटें उसको ख़बर न होगी और जो छः घड़ी तक हाथीदांत को उसके साथ पकावें नरम होजाता है ऐसा कि जो चीज़चाहें हाथसे बनालें सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २७८

(लोबिया) शेख़रईस का बचन है कि इसका खाने वाला बुरे स्वप्न देखता है औरों का वाक्य है कि बदन का रंग पैदा करता है और मुरदे बच्चे को उसकी आंवल समेत बाहर निकालता है और ऋतु और जच्चाके लहूको जारी करता है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २७९

(लौक़) फ़ारसी में इसको फीलगोश कहते हैं इसका पत्ता बुरे घावको गुणकारकहै और पुराने स्वरभंगको लाभदायक है इसकी जड़ शहदमें पीस कर झाईं छीप और निमिश (वह रोग है जिस से शरीरकी खालपर छीप और नुक़ते पड़जाते हैं) को नाशकरता है और शराब में पीस कर फटे बदन पर लगाना कि सरदी में हो- जाताहै गुणदायक है और कामदेवका अधिककर्त्ताभी है जोइसकी जड़ पीसकर बदनपरमलें तो सांप उसमनुष्यसेभागेंगे सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर २८०

(नीलोफ़र) यह बहुधा जंगलोंके तालाबों में उगता है इसकी कलियां जल पर प्रकट रहती हैं और रात्रि को गुप्त और दिन को प्रतीत रहती हैं बलैनास का बचन है कि जो इसको छायामें सुखा कर आगपर डालें न जलेगा शेख़रईसका बचन है कि नीलोफ़रके सेवन से नींद बहुत आती है और गरमी की शिर पीड़ाको फ़ायदा करे वीर्य कमकरे और वीर्यको गाढ़ा करता है स्वप्नमें वीर्यपात को बंद करदेता है इसका बीज पानीमें पीस कर लगाना छीपको नष्ट करता है और गोंदके साथ बालखोरे पर लगाना बाल निकालता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २८१

(माश) (उड़द) शीराज़ी में इसको सुमास कहते हैं शेख़रईस के निश्चयमें इसका खाना वीर्यका हानि कारकहै और लोगोंने लिखा है कि जोड़ोंके दर्द में इसका लेप करना फ़ायदा करे परन्तु इसका सेवन दांतों पर करना दांतोंको निर्बल करता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २८२

(माज़रयून) यह घास प्रसिद्ध है बाज़ी बड़ी और बाज़ी छोटी होती है बड़ीके पत्ते ज़ैतूनके सदृश होतेहैं और बाज़ी जो कालीरंगत की है वह हलाहल विष है परन्तु झाईं छीप और निमिशके वास्ते हरएकप्रकारका माज़रयून गुणदायक है जो करम्ब को मिलाकर सेवन करें बहुतही गुणकरे शराब के साथ पीना दुखदाई जीवों के दुःखसे निर्भय करता है जो आटेमें पकाकर कुत्ते या मेढ़क को खिलावें तुरंत मरजाय मुख्य करके मनुष्यको तो दो दिरम मारडालने वाला विष है शेख़रईस का वचन है कि पानी में मछली को मार डालता है और उसका लेप बदन के दानों को गुण दायक है और घावके कीड़ों को बाहर निकालता है और इसको दो दिरम पीना जलंधरको गुण करे क्योंकि खानेके साथही दस्त आते हैं और इसी से रोग दूर होता है परंतु इससे इलाज करना भयमान होता है

क़ाज़ी अबूअली अलसपोखी ने कहा है कि एक मनुष्य जलंधर की बीमारमें पड़ा सम्पूर्ण हकीम उसके इलाजसे दीनहुये तो जबरोगी ने जीने से हाथ धोये तो बेपरवाई करने लगा और जो उसके मन में आता वह खाता और जो बस्तु उत्तम देखता उसको मोल लेकए खालेता एक दिन उसने भूनीहुई टिड्डियां लेकर खाईं जिसके खातेही थोड़ी देरके पीछे दस्त आनेलगे यहां तक कि तीन दिन के अंदर तीन सौ से अधिक दस्त आये अन्त को आराम होगया उस समय कई हकीमों ने इस हालको मालूम करके उस टिड्डियों वाले को ढूंढ़ा और उसके साथ उसके स्थान को गये और उस मौज़े के चारोंतरफ़ माज़रयून दिखाईदी सो हकीमसमझगये तो जबटिड्डियों ने माज़रयून खाया तो माज़रयून का मुख्यबल और वह गरमी उसकी पेटमें निर्बल होगई और समभाव पर आकर रोगी को आरोग्य किया ईश्वर का धन्यबाद है कि जब हकीम दीनहुये तो ईश्वर ने उस रोगीको चिकित्सा ऐसी टिड्डीसे पैदा करदी सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २८३

(माहूदाना) इसे हबुलमलूक भी कहतेहैं इसका पत्ता छोटी एक अंगुलीके बराबर छोटी मछलीके सदृश होताहै इसका फल तीन २ दानेकी बाली होतीहै और हरफलमें तीनदाने काले होतेहैं जलंधर गठिया और रांघन और कूलंज और नकरसको गुण करे जो इस के पत्तोंको मुरग़के मांसकेसाथ छःसात दानों समेत शोरवा पकावें कफ़ निकालेगा परन्तु उस पर ठंढा पानी पीना ज़रूर चाहिये सूरत यहहै—

तसवीर नम्बर २८४

(माहीज़ज) इसका अर्थ मछलीका बिषहै एकप्रकार की घास होती है जिसके पत्ते तरखून के सदृश होतेहैं और इसकादरख़्त शब-रमके वृक्षकी भांति होताहै और उसकी शाखा पतली और सीधी होतीहै और रंग ज़र्दी लिये होताहै जो इसको मछलियों के तालाब में छोड़दें तो उसकी मछलियां मस्त होकर ऊपर निकलआवें और

जोड़ों की पीड़ा रांघन और पीठ की और नक़रस (अर्थात् पांवके अँगुलियोंकी पीड़ा को फ़ायदा करे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८५

(मरज़ंजोश) एक सुगंधित घास होतीहै शेख़ रईसका बचनहै कि शिरपीड़ा को गुण करे जो इसको पकाकर रस पियें जलंधर दूरहो और बन्द पेशाब को जारी करताहै और सिरकेमें पीसकर बिच्छूके विषको गुण करे इसका बीज एक दिरम पानीमें पीस कर पीना भिड़की पीड़ा को ठहराता है इसका तेल फालिज के लिये उत्तम है सूखा मरज़ जो शहदमें मिलाकर चोटकी निलाहट पर लगाना गुण करे मुख्य करके कि आंख के नीचेहो सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर २८६

(नारदैन) रूमी सुम्बुल (बालछड़) है इसके पत्ते कुसुमके पत्तोंके सदृश होतेहैं और डाल बराबर और पीली होतीहै इसमें फूल और मेवा नहीं होता आंखों की पलकें उगाताहै इसका पीना मूत्र और मासिक रुधिर को जारी करताहै और असहक़ के वास्ते फेफड़ेको हानि करताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८७

(नानख़्वाह) अर्थात् अजवायन इसको शीराज़ी भाषामें ज़ैतान कहते हैं साहबुलफलाहा कहताहै कि आठ महीने हरी और चार महीने सूखी रहती है जो इसको सदा सेवन करे लहू बहुत पैदा हो जो जाड़के मौसममें नर बकरे इसको खावे वीर्य अधिक हो और बकरियां बहुत बच्चे गाभिनहों और दूध और पशम बहुत हो और जो अजवायन को छुहारे के वृक्षके नीचे बोवें तो छुहारेके दरख़्त को फलदार करे और हर दुखदाई जीवोंके घावको गुण दायकहै बलीनासकाबचनहै कि जोकोईसदा अजवायन देखाकरे उसकेमुख कारंग पीलाहो बहुधाक्षीप और सपेदकाले दागोंकी औषधियोंमें डाली जातीहै जहांसे लहूटपकताहो शहदमिलाकरलगावै बन्दहोजावै जो

इसको उबालकर इसकारस बिच्छूकेघावपरलगावे पीड़ा दूरहोजावे सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २८८

(नरजिस) अर्थात् नरगिस हज़रत मुहम्मद साहबने कहा कि हर मनुष्यके मनमें बरस या कोढ़ या उन्मादकी एक शाखा होतीहै सो उस शाखाको सिवाय सूंघने नरगिसके और कोई चीज़ दूरनहीं करती चाहे वह बर्ष भरमें एक बेर भी नरगिस सूंघे जालीनूस का बचनहै कि जिसके पास केवल दोरोटियांहों उसको चाहिये कि एक खाय और एकके बदले नरगिसमोललें क्योंकि रोटीकेवलशरीरकाभोजनहै और नरगिसप्राणका भोजनहै साहबुलफलाहाका बचनहै कि जो इसके कच्चे फलको तोड़ें और दोकांटे उसमें चुभो दें और फिर उसको सुखा कर बोदें तो उससे दुगने नरगिस होंगे कहतेहैं कि भोगके समय जिसकी दृष्टि नरगिसपर पड़जाय बीर्य्य बंध जाय जो फिर न खुले जो प्याज़ी नरगिस के दो टुकड़े में किसी कपड़े में मेंढ़ककी आंख समेतबांधकर किसी सोतीहुई स्त्रीकी छातीपर रखदें तो वह स्त्री अपने मनकाभेद कहदेगी और इसका घावपर लगाना घावको भरता है जो शिरमें मलें गंजका रोग अच्छाहोजाय शेख़रईस का बचनहै कि जो कांटा किसी किसी चीज़का जोड़में गड़जाय प्याज़ी नरगिसके लेपकरनेसे कांटा बाहर निकालदेतीहै और शहद और भी जल्दी गुणदायकहै इसका फूल शिर पीड़ा और छींप और झाईंको गुणकारक है जो चार दिरम शहदमें मिलाकर पियें मुरदे बच्चेको पेटसे बाहर निकालता है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २८३

(नसरी) फ़ारसीमें इसको नस्तरन और हिन्दीमें सेवती बोलतेहैं यह दो प्रकार एक जंगली और दूसरी बाग़की होतीहै शेखरईसने लिखाहै कि बाग़की सेवती कीड़ों को मारती है और कानकी झंझनाहट को दूर करतीहै और जंगली सेवती का लेप माथेपर करना शिरकी पीड़ाको दूर करताहै और पीनेसे हिचकी और क़ै दूरहोती है साहब अख़तियारात का बचनहै कि जो झाईंपर लेप करें लाभ

करे इसको सुखाकर आधा मिस्काल रोज़ खाना युवावस्था को बाक़ी रखताहै और बुढ़ापा नहीं आनेपाता॥

तसवीर नम्बर २३०

(नाअ़नाअ़) अर्थात् पोदीना शेख़रईस कहतेहैं कि मेदेका बल कारक और हिचकी ठहराने वाला और वीर्य्यका बलकारकहै और पेटकेकीड़े मारताहै जो भोगके पहिले स्त्री इसको खाले तो गर्भवती नहो माथेपर लगाना शिरपीड़ा दूर करताहै इसका रस सिरके के साथ लहू के चलने को बन्द करताहै और कामदेवको प्रेरणा करता मतलीको लाभ दायकहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २३१

(हलियून) इस घासमें बीज और गिलाफ नहींहोता और कई प्रकारकी होतीहै बाज़ी जंगली पहाड़ोंपर कई नरम धरतीपर पैदा होतीहै शेख़रईसका वचनहै कि इसके पत्तोंको उबालकर पीनाकमर की पीड़ा रांघन और कूलंजरीहीको गुणकरे इसकी जड़पकाकर खाना पेशावको जारी और प्रसूत करताहै और वीर्य्य के बढ़ाने में अति प्रभाव रखताहै कुत्तोंके लिये हलाहल बिषहै इसकीजड़ मद्य में पकाकर रतीला के घावपर लगाना लाभ करे और इसकाबीज दांतोंको पीड़ाके वास्ते गुण कारकहै जो स्त्री इसको शाफ़ा बनाकर भगमेंरक्खे ऋतुकारुधिर जारीहो परन्तु मेदेकेलिये हानिकारकहै अजायबुलमखलूक़ातके निर्मापकने लिखाहै कि मेरे एकमित्र ने मुझ से यहहाल कहा कि कई अरबलके पहाड़ोंमें हलियून बहुत होताहै वहांका आमिल हर वर्ष उसकी शराब बनाकर अरबल के शाहको सौगात भेजाकरता था एकबेर लोग इस शराब को लिये जाते थे अकस्मात् लूटहुई और बदमाशोंने वहसब बरतन अपने अधिकार में किये जबउनकामुहँ खोला शहद समझकर बहुत पीगये तुरन्त दस्त जारीहुये यहांतक कि निर्बल होकर उसीजगह गिरपड़े मुसाफ़िरों ने यहहाल देखकर शहर अरबलमें खबरकी तो वहां से बादशाह मुजफ्फरुद्दीन ने कई लोगों को भेजा उन्होंने चारपाइयोंपर

लादकर उनको राज्य सभामें विद्यमान किया मार्ग में लोग इन चोरोंपर हँसतेथे कि हलियूनकेबेहोश जातेहैं निदान चिकित्सालय भेजेगये कईलोग आरोग्य हुये बाक़ी मरगये बादशाह ने उनशेषों को छोड़दिया कि इतना दुःखउनको बहुत हुआ ॥

तसवीर नम्बर २६२

(हिन्दबाफ़ारसी) इसको क़ासनी कहतेहैं कोई जंगली और कोई बाग़ की होती है बाग़ की बहुत महीन और पत्ता चौड़ा औरकरुवा होताहै मुहम्मद साहबने श्रीमुखसे कहा कि इसके हरएक पत्ते में स्वर्ग के पानी की एक२बूंदहै शेखरईस का बचनहैकि इसकामरहम नक़रस को गुणकरे इसकी पत्ती और जड़का मरहम सांप बिच्छू भिड़ बिल्ली और कुत्ते के काटेहुये घावको गुण कारक है और चौथिया के ज्वरको भी लाभकरी कहतेहैं कि जिसके दांतपीड़ा करतेहों वह मनुष्य उस महीनेमें जिसकी पहिलीरात्रि इतवारकी हो और उसी रात्रिको चन्द्रदर्शनहो तो एकपत्ता उसका लेकर वह मनुष्यचन्द्रमा के सामने खड़ेहोकरशपथकरे कि इसमहीने में कभी घोड़े का मांस हिन्दबाद के सामने न खाऊंगा सोदांतों की पीड़ा नष्टहोगी और इसटोटके के कारण फिरपीड़ा न होगीसूरतयह है ॥

तसवीरनम्बर२६३

(दरस) इसका बीज तिलकी सदृश होताहै और बोयाजाताहै जब इसकी बाली सूखकर फटती है दरस बाहर निकलआता है कहतेहैं कि एक बर्षका बोयाहुआ दसबर्ष तक फलताहै जो इसको मलें झाईं और निमिस (वहरोग जिससे बदनपर छोप और बिन्दु पड़जातेहैं) को गुणकरे इसका एक दिरमपीना पथरी और हृदय पीड़ा और पथरीकी पीड़ाको जो सरदीसे हो दूरकरताहै इसहाक़ के बिचार में फेफड़े के लिये हानिकारकहै और इसका दुरुस्तकरने वाला शहदहै जालीनूस ने लिखाहै कि बावले कुत्तेके घावको गुण करे सूरत यहहै ।

तसवीर नम्बर २६४

(यक़तैन) अर्थात् कद्दू साहबुलफ़लाहा कहताहै कि जो इस को बड़ा करनाचाहे तो इसके बीजको पृथ्वीमें उलटाबोना चाहिये जो इसको शहद और दूधमें भिगोकर बोवें इसकाफल मीठा होगा हज़रत पैग़म्बर साहबका वचनहै कि जिस वस्तुको पकाओ उसमें कद्दूबहुतछोड़ो क्योंकि मनकीचिन्ता और शोककोदूरकरताहै इसका गुण यहहै कि इसके दरख़्त पर मक्खी नहीं बैठती इस कारण कि जब ईश्वरने हज़रत यूनस को मछलीके पेटसे निकाला कद्दू के वृक्षको उनपर छायाकी कि हज़रत यूनसके शरीरपरमक्खी न बैठे और उनके शरीरकी खाल जल्दी मज़बूतहो सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २६५

(ईश्वर की कृपा से स्थावर अर्थात् वृक्ष और बेलों का वर्णन पूर्ण हुआ)॥

तीसरीनज़र जीवधारियोंके वर्णनमें और वह कईप्रकारपरहै॥

प्रथम प्रकार मनुष्यके वर्णनमें॥

यह सम्पूर्ण सृष्टि तीनप्रकारकी है परन्तु चौपाये तीसरेप्रकार परहैं पहला दरजा कानका है दूसरा दरजा स्थावरका है क्योंकि वृक्ष कानें और चारपायों के दरजेमें समहै इनमें हिलने झुलनेका बल नहींहै परन्तु बढ़ना जीवधारियों की भांति परहै तीसरे दरजे पर पशुहैं जिनमें बढ़ने और चलने फिरनेका बल कृपाकियागयाहै और इस शक्तिको ईश्वर ने हरएक में इकट्ठा कियाहै यहां तक कि मक्खी औ मच्छड़ में भी है परन्तु ईश्वर की आज्ञानुकूल वह सर्व प्रकार के हिलनेकी शक्ति मरने के समय झूठी पड़जातीहै जो कि जीवोंके लिये ऐसे उपद्रवहैं कि वह उनसे मरजावें इसलिये उनको एक ऐसा बल दियाहै कि जिसके ज़ोर से अपने दुःखदायी शत्रु को पहिचान सके हैं और अपने शरीर को बचाते हैं यदि यह मालूम करनेका बल न होता और मनुष्य भूखको मालूम न करसका तो भूखसे मरजाता या जब सोता अपनेचक्षुको आगकेजलनेसे मालूम

न करता तो भी नष्टहोजाता सो इसी आवश्यकता पर यह शक्ति कृपा कीगईहै— रही हिलनेकी शक्ति तो जब मनुष्य को भोजन की आवश्यकता होती और उसको चलनेका बल स्थावरों के सदृश न होता तो भोजनकी ओर न पहुंचसक्ता इसलिये ईश्वर ने चलने की शक्तिदी कि जिधर चाहे चलाजावे जो यहशक्ति न हो तो खाने पीने से निकम्मा होकर उसवृक्ष के सदृश जो पानी न पाकर कुम्हिला जाताहै यह भी मरजाता जब पशु एक दूसरेके शत्रुहुये तो उनको हथियार दिये गये कइयों को सींग और दांत कृपा हुये कि अपने शत्रुको दूरकरसकें जैसे कि हाथी शेर गाय आदि और कई ऐसेहैं कि भागकर अपना जीव बचासकें उनको भागनेकी शक्ति दी गई जैसे हिरन ख़रगोश और पक्षी आदिक और कई ऐसे हैं जो अपने हथियार से अपने शरीरको बचासकें जैसे सेई और कछुआ आदि और कईऐसेहैं जो अपनेको अच्छीतरहसे दृढ़ता पूर्वक क़िलेमेंरखते हैं जैसे चूहा और सर्प इत्यादि ईश्वर ने हर जीवधारी को उसकी आवश्यकता के अनकूल अलग २ जोड़ोंसे प्रकटकिया इसीकारण हरएक अपनेरङ्ग और रूपसे प्रकाशमान हुआ ख़िताब के पुत्र हज़रत उमर मुहम्मद साहब से कहावत कहतेहैं कि ईश्वर ने पृथ्वीमें एकहज़ार जाति उत्पन्नकी जिसमें छःसौ दरियामें चारसौ पृथ्वीमें हैं और कई बुद्धिमानों का वचनहै कि मनुष्य तमाशा देखना चाहे तो उसे उचितहै कि रात्रिको किसी जङ्गलमें रोशनी करे और उस ओर दृष्टिकरे जिधर आगजले उधर देखे कितनी तरह के स्वरूप दिखाई देतेहैं जो कभी किसी के विचारमें न हों अबकुछ इसजगह पर कई जीवधारियों का उनके अद्भुत वृत्तान्त और स्वभाव समेत वर्णन करतेहैं॥

प्रथम प्रकार मनुष्य के वर्णन में॥

इससमूहको ओर कई भांतिसे दृष्टि करनीचाहिये पहिले बड़ाई है प्रकटहो कि मनुष्य सम्पूर्ण जीवधारियोंमें श्रेष्ठहै ईश्वरने इसको नानाभांति के स्वभाव और स्वरूप से उत्पन्नकिया और इसके

जौहर को जीव और शरीर से बांटा और इसकोगुप्त और प्रकटकी बुद्धि और समझ कृपाकी और बोलनेकी शक्ति भेजे में दी और विचार औरवर्णन स्मरण आदि दिये और उस पर बुद्धिको नियत कियासोबोलने की शक्ति तो राजा बुद्धिमंत्री और उसकेसाथीसेना और इन्द्रियां इन सबको प्रकट करनेवाली शरीर राजधानी और जोड़ नौकर चाकर और प्राण मुसाफिर हैं यह मुसाफिर अपने सफ़रमें हरबातको मालूम करके उसकाहाल मालूमकरनेवाली शक्ति से कहताहै और मालूमकरनेकी शक्ति इन्द्रिय और प्राणोंके बीचमें है और वही सब ख़बरें बोलनेवाली शक्ति के सामने कहता है उस समय बुद्धि उचितबातको विचारतीहै इसीकारण मनुष्यको विचार-वान् कहतेहैं और जो कि भोजन के कारण बड़ा होताहै वनस्पति है और हिलनेजुलनेके कारण पशु और सबकामूल मालूम करनेसे देवताहै सो मनुष्य इनतीनों बातोंका समूहहै यदि मनुष्य पशुओं के काम करनेलगा तो वह पशुहै यदि मैथुनपर उतारूहुआ बकरा है यदि भोजन की अधिक चाहना करने लगा बैलहै जो लोभी है कुत्ता है जो मन में कपट रखता है ऊंट है जो अहंकारी हुआ तो चीता कहेंगे जो मक्कारहै लोमड़ी के सदृश है जो इनसब अवगुणों से भरपूर है शैतान का चेला कहाजावेगा तो जो मनुष्य अपनी हिम्मत देवगुणों के प्राप्तकरने में ख़र्चकरे तो बहुत अच्छी बात है फिर उसका मन नीचे की तरफ़ न झुकेगा और इसीतरह ईश्वर ने क़ुरान में सैनकी है कि जिस मनुष्य का मन चाहे अपने चित्त की शुद्धता से बड़ा होजावे ॥

मनुष्य के मूल का वर्णन ॥

जब मनुष्यको कोई बड़ा काम होताहै कहताहै कि मैंने किया या मैंने कहा इसदशा में वह मनुष्य अपने शरीर को तो जानताहै परन्तु अपने प्रकट और गुप्त जोड़ों को भूला हुआहै और इसदशा में उसका जीव सब समझने के लायक़ चीज़ों को जानता है और हरप्रकार के कामोंको भूलाहै परन्तु प्राणोंके मूलके मालूम करनेमें

किसीमनुष्यको इच्छा न करनी चाहिये क्योंकि वहमनुष्यकी समझ सेबाहरहै और इसीवास्ते ईश्वरने कहाहै कि यहजीव अपनेगर्दनमें दुःख की रस्सी डाले हुयेहै और मरने के पीछे पुण्य और पाप की आशा रखताहै और यहभी ईश्वरका वर्णनहै कि जो मनुष्य ईश्वर की राह में मरे हैं उनको मुरदा न समझो वरन वह जीते हैं और ईश्वरसे भोजन पातेहैं और जो उनको परमेश्वर की कृपा से चीज़ें मिलीहैं उससे वह प्रसन्न हैं वा नरक और दुःखमें हैं जैसा ईश्वर ने कहाहै कि नरककी आग फरऊनकी नास्तिकजातिके सामने सुबह और शाम दिखाई जातीहै और प्रलयके दिन फरिश्तों को आज्ञा होगी उनको बड़ा दुःखदो मालूम हो कि यह जीव शरीरमें राजाके सदृश होताहै और उसकी राजधानी मनहै जोड़ नौकर बुद्धि उपदेश करनेवाली मंत्रिनी और सभ्यकी तरह परहै और भूख उसके नौकरोंके भोजनको ढूंढ़तीहै और नेत्र एक दुष्क्रिय नीच मनुष्य के सदृश हैं कि अगर कोई उसको लाख उपदेश करे परन्तु उसका उपदेश इसे मारडालने वाला बिष मालूम हो और सदा बुद्धिसे जो उपदेश करनेवाली मंत्रिनी है हर बातमें झगड़ा करतीहै और ब्रह्माण्डमें मालूम करनेकी ताक़त ख़बर पहुंचाने वालेकी तरह पर है जो हमेशा इन्द्रियों की खबर किया करती है और स्मरण की शक्ति जिसका निवासस्थान ब्रह्माण्ड के अन्त में है कोषाधिप है जिह्वा उल्यक और पांचों इन्द्रियां दूत जो हरओर नियत हैं जैसे नेत्ररूप रंगकी ओर और कान शब्दपर इसतरह हर एक अपने२ कामकाहाल विचारको सुनाता है और विचार उसको कोषाधिप के अधिकार में देताहै कि प्राण जिन ख़बरों की आवश्यकता देखे अपने देशके प्रबन्ध के लिये उसके उपायमें लगे और वह ईश्वर शुद्ध है जिसने प्रकट और गुप्तवस्तु मनुष्य को कृपा की यह जीव सदाकेलियेहै परन्तु एकदशासे दूसरीदशामेंजाताहै जैसा कि कभी बापकीपीठमें है और कभी माताके उदर में हज़रतअली ने अपनी पुस्तकमें लिखाहै कि ऐ लोगो ईश्वरने तुमको सदाके वास्ते उत्पन्न

किया है अर्थात् सदा रहोगे परन्तु एक घर से दूसरे घर को बदलना अवश्यहै अर्थात् पिता की पीठ से माताके उदरमें और वहांसेसंसारमें और यहांसेअन्तरिक्षमें और अन्तरिक्षसे नरक या स्वर्गको फिर यहकहा कि पृथ्वीसे हमने तुमको उत्पन्नकिया और उसमें तुमको लेजायेंगे और उसीसे फिर तुमको निकालेंगे शेख़र-ईसने शरीर और प्राणोंके संयोग और इनकेवियोगमें अरबीभाषा में काव्यकही और वह इसजगहपर वैसेही लिखीजातीहै और जो कि उसका अक्षरार्थ वृथाहै इसकारण नहीं लिखा परन्तु उनसब कासंक्षेपयहहै कि जीव ऊँचीपदवीसे उतरकर नीचपदवीमें आया कि उसकी प्रतिष्ठा होगी यहां आकर शरीर की क़ैद में फँसा अब चाहताहै कि मैं इस स्थानको छोडूं और शरीर नहीं चाहताहै कि उससे अलग हों और जबवहजीव जानेकी इच्छा करता है तो वह प्रीतिके कारण वियोगकी पीड़ासे रोता है परन्तु जब लाचारी का समय आवेगा तो किसीकावश न चलेगा और कोईरोक न सकेगा और सब संसारी स्वादवृथा रहजायेंगे और कोई सृष्टिका आनन्द साथ न जायेगा और किसीका परिश्रम काम न आयेगा कहते हैं कि इनप्राणोंका इस शरीर और उसके सम्बन्धियों में क़ैद होना ऐसाहै जैसे कोई बुद्धिमान् किसीशहरमें किसीपुंश्चलीस्त्रीकी प्रीति में फँसा हो और वह व्यभिचारिणी बहुधा उस बिचारे बुद्धिमान् मनुष्य को खाने पीने और पहिरने के विषयमें दुःखपहुँचावे और बुद्धिमान् उसकी प्रीति के कारण उसकी सेवा का परिश्रम अपने ऊपर स्वीकार करे और अपने देशके मित्र बांधव और प्रीति को भूलजावे और उसकीप्रसन्नता के सिवाय और कोई कार्य न करे और उसकेवियोगके दुःख न सहसके वरन यहसमझे किजो इसकी सेवा न करूंगा और यह मुझसे अप्रसन्न होजावेगी तो मैं मर जाऊंगा सो इसीतरह संसारकी दशाहै कि हरमनुष्य इसकीप्रीति में फँसाहैछिपा न रहे कि प्राणजीव के जौहर हैं और कभी यह खानेपीनेपहिनने और मैथुन की इच्छानहीं रखते हैं परन्तु शरीर

सदाउसओर ध्यान रखताहै प्राणजबतक शरीरकेसाथरहताहैसदा शोकयुक्तरहताहै और इस शरीरकेशोधन में सख़्तीउठाता है और बड़े २ कठिन कामों में संसार के माल और असबाब के पाने के वास्ते यत्न करताहै और जब शरीरसे अलगहोताहै आनन्दपाता है जैसा कि हमने ऊपर वर्णन कियाहै कि एक बुद्धिमान् पुंश्चली स्त्रीकी प्रीतिमेंफँसा था अब उसको उसकी प्रीतिके छोड़नेकेबिना आनन्द नहीं मिलसक्ता ॥

मनुष्य के स्वभाव के विषय में ॥

प्राणों के लिये स्वभाव एक दृढ़रूप है जिससे सुगमता पूर्वक बिचार बिना कामहोते हैं और स्वभाव की प्रशंसा में इसलिये दृढ़ बन्धि लगाईगई कि जिसकिसी से किसीप्रकार का दातव्य किसी कारण से हुआहो तो कभी न कहेंगे कि उसकी स्वाभाविक उदारता है जबतक उसकीप्रकृति में दृढ़ता पूर्वक न हो और सुगमता पूर्वक कामों के होने का निबन्ध इस सबब से लगाया गयाहै कि जो कोई दुःख पहुंचने से द्रव्यदानकरे या क्रोध के समय किसी विचार से चुपहोरहेतो नहींकहसक्ते कि इसमेंस्वाभाविकउदारता है या प्राकृतिक शान्ति है तो जो उसका रूप ऐसाहो कि उससे श्रेष्ठकार्य धर्म्मशास्त्र वा बुद्धिके अनुसार हो उसको उत्तमस्वभाव कहेंगे हरतरहसे स्वभाव चाहे बुराहो या अच्छा कभी तो प्राकृतिक है अर्थात् जन्म का होताहै और कभी अभ्यास कियाहुआ कि वह अपने में अच्छीबातोंकी आदत डाले जो कोई अच्छे स्वभाववाले न हों तो अपनेवास्ते परिश्रमउठाकर उसकोप्राप्तकरे अच्छेस्वभाव का गुण लोक परलोक में बड़ाहै हज़रत पैग़म्बर साहबकी कहावत है कि हज़रत ने कहा कि सब वस्तुओंसे भारी जो हिसाब के जोड़ में रक्खेजायँगे उत्तम स्वभाववाले होंगे समरा के पुत्र अब्दुल्ला ने कहाहै कि एकबेर हम ख़ुदा के पैग़म्बर के पासगये हज़रत ने कहा कि मैंने कलरात्रिको यह स्वप्नदेखाहै कि एकपुरुष हमारेचेलों से अपने घुटनों के बल पड़ाहुआहै और उसके और ईश्वर के बीच

में एक परदा है सो उसके श्रेष्ठस्वभाव ने आकर ईश्वर के पास उसको पहुंचादिया इससे प्रयोजन यहहै कि जो कोई मनुष्य अपने में बहुतसे अच्छे कामों को इकट्ठाकरे वह मनुष्य इसके योग्यहै कि राजा के साम्हने प्रतिष्ठित हो और सृष्टिकेलोग उसकोमानें कदाचित् जो इसके विपरीत बुरे काम जमाकरे तो वह पतित होकर शैतानहो तो जैसा गुणवान् मनुष्य से संयोगकरना उचितहै उसी प्रकार मूर्खसे वियोगरखना उचित है सो इसीकारण मैंने स्वभाव का वर्णन किया कि हरमनुष्य इसका लाभ उठावें ॥

मनुष्य के वीर्यसे उत्पन्न होने का वर्णन ॥

सबसे उत्तमवस्तु मनुष्यमें पापोंकात्यागहै अर्थात् अपनेकोस्मृति शास्त्र के निषेध कर्मों अर्थात् आहार विहारकी विपरीतता से रक्षित रखना आचारवान् मनुष्योंके लिये क़ुरानमें दुबारा शाबाशी हुईहै उसमेंसे यह आयत प्रकाशितहै कि वहलोगस्वर्गमें जानेकेयोग्यहैं जो अपने लज्जा के स्थानों को दुष्कर्मों से बचाते हैं कहानी है कि शोरी के पुत्र मुहम्मद बहुत सुन्दर मनुष्य बजाज़ी का पेशा करते थे एकदिन किसी बादशाहज़ादी की दृष्टि जो इनपरपड़ी प्यार करनेलगी कपड़े के मोललेने के बहाने से बुलाया जब महल में पहुंचे उसने भोगकीइच्छाप्रकटकी मुहम्मदने उत्तरदिया मैं हाज़िर हूं परन्तु मुझको दिशालगीहुई है तो दिशाजाकर वहां की विष्ठा को अपने मुंह और सबशरीर में मलकर शाहज़ादी के साम्हने आये वह इनको इसदशा में देखकर हटगई और कहा कि यह मनुष्य दुर्बुद्धि है इसको मेरेमहल से निकालदो सो उन्होंने इस उपाय से छुट्टीपाई और इसके बदले ईश्वरने उनको विद्याशोचऔर स्वप्न के फलकहनेकी रीति कृपाकी और उनकी दशाहज़रत यूसुफ़ पैग़म्बर के सदृशहोगई (उत्तमस्वभावों में उदारता है) अर्थात् जो अपनेपास है उसको अपने दीनसाथियोंमें ख़र्चकरना ऐसीदातव्य मुख्य उदारता है हज़रत पैग़म्बर साहबकी कहानीहै कि हज़रत ने कई मनुष्यबनी उन्नज़ीर के क़ैदकिये थे एक मनुष्य को अलग

करके बाक़ीलोगों को गर्दनमारने की आज्ञादी उस समय हज़रत अलीने कहाकि ईश्वर एक है और अपराध एकसा तो इसमनुष्य का छूटना किसरीतिपर उचितठहरा हज़रतने कहा कि जबरईल मेरेपास ईश्वरकी आज्ञालाये कि इसमनुष्य को इसकी उदारतासे ईश्वरने क्षमा किया है और यहभी प्रसिद्ध है कि ईश्वर ने हज़रत मूसाको आज्ञाभेजी कि सामरीको न मारियो क्योंकि वह उदारहै अभी तालिब के पुत्रजाफर और उसके पुत्र अब्दुल्लाकी कहानी है कि उनको इमामहसन और इमामहुसेन ने माल के ख़र्चकरने से मनाकिया अब्दुल्ला ने उत्तरदिया कि ईश्वर ने मुझपर कृपाकी है और मैंने अपना स्वभाव उसके लोगोंपर कृपाकरने का अंगीकारकिया है तो डरता हूं कि जो अपना स्वभाव छोड़ूं कहीं ईश्वर अपना अनुग्रह मुझसे छोड़दे इनकी उदारता कीयह कहावत है कि अबीअस्मार का पुत्र अब्दुलरहमान किसीलौंड़ीसे प्रीतिरखने लगा और उसकी प्रीति प्रसिद्ध हुई यहांतक कि ताऊसमजाहद और अताने उसकेपासजाकर बुराभलाकहा परन्तु उसने यहपद्य पढ़ा और प्रीतिसे हाथ न उठाया जिसका अर्थयह है कि तुमलोग मेरी निन्दा करते हो परन्तु मुझे प्रीति के आगे इन दुर्वचनों की परवाह नहींप्रकट हो कि अब्दुलरहमान निर्द्धनता के कारण उस लौंड़ी को न पासक्ता था तो जब अब्दुल्ला हज को जानेलगे उस समय उन्होंने यह ख़बर पाई और वह उस लौंड़ी को चालीस हज़ार दिरम (कोई सिक्का है साढ़ेतीन मासे वज़नका) को मोल लेकर हजको चले गये जब वहांसे लौट आये उस लौंड़ी को भूषणों से अलंकृत किया जब अब्दुलरहमान उनकी भेंटको आये प्रीतिका समाचार पूछने के उपरांत लौंड़ी को उनके सुपुर्द किया और कहा यह तेरीहै और मैंने केवल तुम्हारे लिये इस लौंड़ी को मोल लियाहै अब यह तुमको फले और तुम इसे लेजाओ और मुझे ईश्वर की सौगन्ध है कि मैंने इससे मैथुन नहीं किया फिर एक हज़ारदिरम नक़द भी उसके मकानपर भिजवा दिये अब्दुलरह-

मान अति हर्षसे रोकर कहने लगा कि ईश्वरने आप लोगों को ऐसी बड़ाई से प्रतिष्ठित कियाहै कि कोई दूसरा मनुष्य नहीं हो सका (कहानी) इब्न दारानामें कोई मनुष्य हातिम के पुत्रकेपास जाकर कहने लगा कि मैं तेरी स्तुति करताहूं यह सुनकर अदीने कहा कि ज़रा ठहरजा हम अपना माल तुमको देंगे उस समय उसके अनुसार मेरी प्रशंसा कीजियो क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरी प्रशंसा का बदला न दिया जावे सो हज़ार बकरियां और हज़ार दिरम तीन गुलाम तीन लौंड़ियांदीं और दाराने प्रशंसामें यह पद्य पढ़ा जिसका संक्षेप यहहै कि तेरा पिता उदार था और तू उससेभीअधिकउदारहै सो तुम्हारेसदृशउदार कोईमनुष्य नहीं है यह सुनकर अदीने कहा अब अधिक क्षमाकीजिये क्योंकि मेरा माल इससे अधिक प्रशंसा के योग्य नहींहै (कहानी) हातिम एक बन्धुओं में जिसमें एक क़ैदी उसको पहिंचानता था गया उसने हातिमसे रक्षाचाही हातिमने उस समूह से विनय किया कि इस क़ैदीको क़रज़पर बेंचतेहो उन्होंने कहाकिनहीं परन्तु नक़द कीमत पर बेंचेंगे हातिम उस समय उसको छुड़ाकर उसकी जगह आप क़ैद होकर बैठा और जब अपने मकानसे रुपया मंगाकर देदिया तब अपने घर आया घरमें जो आया तो लड़कों को एक कुतिया को मारते और दुखदेते पाया उनको मना किया और कहाऐबेटो यह कुतिया ऐसा स्वभाव रखतीहै कि जिसकी हम प्रशंसा करते हैं कि अंधेरी रात में जब हमारा रखवाला सोताहोताहै अतिथि के आनेको बतातीहै (कहानी) किसी समय महल्वकापुत्र यज़ीद हजाज़के बन्दीगृहमें था हजाज़ उस क़ैदीसे रोज़ दशहज़ारदिरम जुर्माना लिया करताथा एकदिनफरज़दक़ नामीकविने उसबेचारे क़ैदीकी प्रशंसामें पद्य आकर सुनाये यज़ीदने कहा कि तुम मेरी प्रशंसा करतेहो हम इस दशा में क़ैदहैंफरज़दक़ने उत्तर दियामुझे आपके सिवाय कोई उदार दिखाई नहीं देता सो यज़ीद ने अपने गुलामसे कहा कि दशहज़ार दिरमआज इसकोदेदे आजमेंहजाज़

करके बाक़ीलोगों को गर्दनमारने की आज्ञादी उस समय हज़रत अलीने कहाकि ईश्वर एक है और अपराध एकसा तो इसमनुष्य का छूटना किसरीतिपर उचितठहरा हज़रतने कहा कि जबरईल मेरेपास ईश्वरकी आज्ञालाये कि इसमनुष्य को इसकी उदारतासे ईश्वरने क्षमा किया है और यहभी प्रसिद्ध है कि ईश्वर ने हज़रत मूसाको आज्ञाभेजी कि सामरीको न मारियो क्योंकि वह उदारहै अभी तालिब के पुत्रजाफर और उसके पुत्र अब्दुल्लाकी कहानी है कि उनको इमामहसन और इमामहुसेन ने माल के ख़र्चकरने से मनाकिया अब्दुल्ला ने उत्तरदिया कि ईश्वर ने मुझपर कृपाकी है और मैंने अपना स्वभाव उसके लोगोंपर कृपाकरने का अंगीकारकिया है तो डरता हूं कि जो अपना स्वभाव छोड़ूं कहीं ईश्वर अपना अनुग्रह मुझसे छोड़दे इनकी उदारता कीयह कहावत है कि अबीअम्मार का पुत्र अब्दुलरहमान किसीलौंड़ीसे प्रीतिरखने लगा और उसकी प्रीति प्रसिद्ध हुई यहांतक कि ताऊसमजाहद और अताने उसकेपासजाकर बुराभलाकहा परन्तु उसने यहपद्य पढ़ा और प्रीतिसे हाथ न उठाया जिसका अर्थयह है कि तुमलोग मेरी निन्दा करते हो परन्तु मुझे प्रीति के आगे इन दुर्वचनों की परवाह नहींप्रकट हो कि अब्दुलरहमान निर्धनता के कारण उस लौंड़ी को न पासक्ता था तो जब अब्दुल्ला हज को जानेलगे उस समय उन्होंने यह ख़बर पाई और वह उस लौंड़ी को चालीस हज़ार दिरम (कोई सिक्का है साढ़ेतीन मासे वज़नका) को मोल लेकर हजको चले गये जब वहांसे लौट आये उस लौंड़ी को भूषणों से अलंकृत किया जब अब्दुलरहमान उनकी भेंटको आये प्रीतिका समाचार पूछने के उपरांत लौंड़ी को उनके सुपुर्द किया और कहा यह तेरीहै और मैंने केवल तुम्हारे लिये इस लौंड़ी को मोल लियाहै अब यह तुमको फले और तुमइसे लेजाओ और मुझे ईश्वर की सौगन्ध है कि मैंने इससे मैथुन नहीं किया फिर एक हज़ारदिरम नक़द भी उसके मकानपर भिजवा दिये अब्दुलरह-

मान अति हर्षसे रोकर कहने लगा कि ईश्वरने आप लोगों को ऐसी बड़ाई से प्रतिष्ठित कियाहै कि कोई दूसरा मनुष्य नहीं हो सक्ता (कहानी) इब्न दारानामें कोई मनुष्य हातिम के पुत्रकेपास जाकर कहने लगा कि मैं तेरी स्तुति करताहूं यह सुनकर अदीने कहा कि ज़रा ठहरजा हम अपना माल तुमको देंगे उस समय उसके अनुसार मेरी प्रशंसा कीजियो क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरी प्रशंसा का बदला न दिया जावे सो हज़ार बकरियां और हज़ार दिरम तीन गुलाम तीन लौंड़ियांदीं और दाराने प्रशंसामें यह पद्य पढ़ा जिसका संक्षेप यहहै कि तेरा पिता उदार था और तू उससेभीअधिकउदारहै सो तुम्हारेसदृशउदार कोईमनुष्य नहीं है यह सुनकर अदीने कहा अब अधिक क्षमाकीजिये क्योंकि मेरा माल इससे अधिक प्रशंसा के योग्य नहींहै (कहानी) हातिम एक बन्धुओं में जिसमें एक क़ैदी उसको पहिंचानता था गया उसने हातिमसे रक्षाचाही हातिमने उस समूह से विनय किया कि इस क़ैदीको क़रज़पर बेंचतेहो उन्होंने कहाकिनहीं परन्तु नक़द क़ीमत पर बेंचेंगे हातिम उस समय उसको छुड़ाकर उसकी जगह आप क़ैद होकर बैठा और जब अपने मकानसे रुपया मंगाकर देदिया तब अपने घर आया घरमें जो आया तो लड़कों को एक कुतिया को मारते और दुखदेते पाया उनको मना किया और कहाऐबेटो यह कुतिया ऐसा स्वभाव रखतीहै कि जिसकी हम प्रशंसा करते हैं कि अँधेरी रात में जब हमारा रखवाला सोताहोताहै अतिथि के आनेको बतातीहै (कहानी) किसी समय महलबकापुत्र यज़ीद हजाज़के बन्दीग्रहमें था हजाज़ उस क़ैदीसे रोज़ दशहज़ारदिरम जुर्माना लिया करताथा एकदिनफ़रजदक़ नामीकविने उसबेचारे क़ैदीकी प्रशंसामें पद्य आकर सुनाये यज़ीदने कहा कि तुम मेरी प्रशंसा करतेहो हम इस दशा में क़ैदहैंफ़रजदक़ने उत्तर दियामुझे आपके सिवाय कोई उदार दिखाई नहीं देता सो यज़ीद ने अपने गुलामसे कहा कि दशहज़ार दिरमआज इसकोदेदे आजमैंहजाज़

की सख़्ती उठालूंगा इसीकारण हसानके पुत्र हशामका बचन था कि महल्लबके बेटे यज़ीदकी उदारताकी नाव क़ैदमेंभीजारीरहती है (कहानी) जिन दिनोंमें कि जायदैकापुत्र मुइनएराक़का अधिपति था और बसरे में रहता था एक कवि आकर चाहता था कि दरबारमेंपहुंचेंपरन्तु लाचारहुआक्योंकि मुइनबागमें दरियाकिनारे सैरकरताथा सो उसकबिने एक अरबी भाषाकापद्य उसकीप्रशंसा में लकड़ीपर लिखकर नहरमें डालदिया और वह लकड़ी बहते२ हाकिम को दिखाईदी और उसको मंगाकर देखाकि इसका रचने वाला कौनहै वह इसयोग्यहै कि उसको दशतोड़े पारितोषिकदिये जायँ और उसदिन उसतख़्तेको सिरहाने पररखकर सोगयासुबह को जागकर उसपद्यको देखा और कबिको बुलाकर एक हज़ार दिरम और दिलवाये तीसरे रोज़ फिर बुलवाया लोगोंने कहाकि वह चलागया मुइन ने कहाकिवह इसयोग्य मालूम होताहै कि अपना सब असबाब उसकोदूं और वह काव्ययहथी जिसका यह अर्थहै कि तूऐसादाताहै कि तेरेसिवायऔर कोईहमारी ख़बरलेने वाला नहींहै और न कोई हमारी इच्छा पूर्ण करनेवालाहै मुइनने वर्णन किया कि एकबेर मन्सूर बिल्लाने क्रोधितहोकर मुझे चिंतामें डाला यहांतक कि मैं लाचार होकर एक गुदड़ी पहिन के उंटपर सवार होकर जंगलको निकल भागा और रखवालोंकी दृष्टिसे छिपगया उससमय एक हब्शीने जो तलवार लियेहुयेथा मेरेऊंट के पास आकर महार पकड़ली और ऊंटको बिठाया मैंने उससे कहाकि तुझे इसझगड़ेसे क्यालाभहै उसने कहा कि तुझेमन्सूर बिल्लाने बुलायाहै मैंने उत्तरदिया कि मैं क्याहूं कि मुझे मन्सूर बिल्ला यादकरें उसने उत्तरदिया कि तू ज़ायदा का पुत्र मुइनहै मैंने कहा कि ईश्वर से डर मैं कहां और मुइन कहां किसी ईश्वरके जनपर वृथा झूठमत लगा उसने कहा यह बहाना छोड़ हम तुझे अच्छी तरहसे जानतेहैं उस समय मैंनेकहा जो बास्तवमें ऐसा है तो यह मोतीमुझसेलेजिसकामोल ख़लीफ़ाकेपारितोषिकसे जो मेरे पकड़ने

के बदले तुझेदेगा दूनाहोगा और मुझे मारडालना छोड़ उसने कहाकि मैंनेतेरी उदारता की बड़ी प्रशंसा सुनीहै सोयह बताओ कि कभी आपने अपना सारामाल किसीकोदियाहै मैंने उत्तरदिया नहीं उसने कहा आधामाल दियाहै मैंनेकहा नहीं उसने कहाकि चौथाई मालदियाहै मैंने कहा नहीं उसनेकहा पांचवां हिस्सादियाहै मैंनेकहानहीं उसने कहा दसवांभाग कभीदान किया है उस समय मैंनेकहा शायद ऐसा होगयाहोगा तब उसने कहा कि मैंने सदा ऐसा कामकियाहै और मैं वह मनुष्य हूं जिसे ईश्वर ने बीस दीनार (अर्थात् सिक्का अढ़ाईरुपयेका) रोज़ीकियेहैं और इसमोतीका मोल एक हज़ार दीनारहै इसे तुझको देताहूं कि तुझेमालूमहो कि संसारमें मुझसे अधिकदान करनेवालेहैं सो उसने वह मोती मुझे लौटाकर महारछोड़दी मैंनेकहा कि यह अपनामोती लेले क्योंकि मुझे इसकीपरवाहनहींहै उसनेकहा कि तू यहचाहताहैकि मुझे इस स्थानपर झूठ बोलनेवाला ठहरावे अब कभी इसको न लूंगा यह कहकर चलागया जब मैंने डरसेछुट्टीपाई और चैनसे आकर रहने लगा उसको लोगोंसे लोभदेकरबहुत ढुंढ़वाया परन्तु पता न लगा (उसमेंसे सन्तोषहै) अर्थात् जो कुछ मिले उसी को बहुत समझ कर अधिक लोभ न करना नबीकी हदीस में लिखाहै कि सन्तोष का कोषकभी नाश न होगा दाऊदताई की कहानीहै कि उन्होंने अपने पिताकी थाती में बीस दीनार पाये और उनको दशबरषके रोटी कपड़े में थोड़ा २ खर्चकिया (उनमें से बीरताहै) अर्थात् उचित रीति की बहादुरी जिससे छलनेवाली वासनाको दूरकरते हैं और यहवीरतानामर्दी और बेफ़ायदाजानदेनेके बीचमेंहै (कहानी) आस के पुत्र उमरूने मुवाविये से कहा कि कभी मैं तुझको वीर पाताहूं और कभी कायर सो तू वीरता और कायरताको मुझेबता उन्होंने उत्तर दिया कि समय पर वीरहूं और उसके विरुद्ध कायर और भयमानहूं (कहानी) हज़रतअली ईश्वर उनपर कृपारक्खे हरदिन सुबह निकलकर युद्धकी दोनों पंक्तियों में खड़े होकर कहते थे कि

ऐ मुआविया कबतक ईश्वरको मनुष्योंका नाहक खूनकरेगा तू आप मेरे साम्हने आकर लड़ कि जो प्रवलहो उसका अधिकार रहे परन्तु मुआविया भयके कारण साम्हने न आताथा (कहानी) दोनों पंक्तियों के युद्ध में इब्दुलअरावी वर्त्तमान था उसने कहा कि जब रबीये के पुत्र हज़रत अब्बास सबतरह से हथियार बन्द होकर तलवार हाथ में लिये मैदान में युद्ध निमित्त आये अकस्मात् शाम के रहने वालों की ओर से अदहम के पुत्र अरार ने पुकारा कि ऐ अब्बास मुझसे साम्हना कर अब्बास ने कहा कि ऐ अरार नीचे उतर मालूमहुआ कि जीनेसे निराश हुआहै सो दोनों साम्हनेहुये घोड़ेकी बागें छोड़कर खड्ग युद्ध करनेलगे परन्तु किसीका वार-काम न करताथा क्योंकि दोनों के शरीरों में ज़िरह थी यहांतक कि अब्बास ने अरार की ज़िरह में हाथ डालकर ज़िरहको फाड़डाला फिर जो तलवारमारी लगगई और पहलूसे छाती घायलहुई अरार शिर नीचाकरके गिरा लोगोंने प्रशंसा का शोर मचाया तोअब्बास उन लोगोंपर झपटे और यथाशक्ति युद्धकिया हज़रत अलीने लोगों से पूछा कि हमारी ओर से कौन हमारे शत्रुसे लड़ता है लोगों ने विनयकीकि अब्बास रबीये का पुत्र हज़रत ने अब्बास से कहा कि हमने तुम्हें नहीं मनाकिया था क्यों लड़तेहो अब्बासने उत्तर दिया कि क्योंकर होसक्ताहै कि शत्रु लड़ाई मांगे और हम जवाब न दें हज़-रतअलीने कहा कि शत्रुके जवाबदेनेसे अपने गुरूकी आज्ञामाननी उत्तम है उधर मुआविये को बड़ा रंजहुआ कि अरार सा वीर कब पैदा होसक्ता है इसलिये अब्बास के मारने वाले के वास्ते एक सौ औकिये (अरबीसिक्केकाप्रकार) सोने और चांदी के देनेकीप्रतिज्ञाकी उससमय दोमनुष्योंने मैदानमें आनकर हज़रत अब्बासकोपुकारा हज़रत ने हज़रत अलीसे वृत्तांतकहा जनाब अमीर अब्बासके घोड़े पर सवार हुये और उन्हीं के हथियार हाथमें लेकरसाम्हना किया शत्रुओंने कुछ भी न जाना और मारेगये फिर हज़रतने अब्बासको आज्ञा की कि जब कोई तुम्हें बुलावे हमको खबरकीजिये जब यह

ख़बर माविया को पहुंची बहुत दुखीहोके कहनेलगा कि ईश्वर के सान्हने लड़ाई एक बुरीचीज़है जो मनुष्य लड़नेजायेगा वह परास्त होगा (उनमें से सहन शीलहै) अर्थात् अपने हर्ष विषाद न मानना अज़्ज़बेरके पुत्र अरवा के पांव में एक रोग हुआ लोगों ने अनुमतिदी कि इस पांवको कटवाडालो नहीं तो साराशरीर सड़ जायेगा सो सथियेने आकर पांवकाटा और यह ईश्वर स्मरण में प्रवृतथे कुछ भी न बोले और उसीसमय उनका एकपुत्र कोठे पर से गिरके मरगया उन्होंने कुछ परवाह नकी लोगों ने इन दोनों दुःखोंका उनसे गिल्ला किया उन्होंने अति सहनशीलता से कहा कि ईश्वरकी आज्ञापर प्रसन्न रहना उचित है जो एक जोड़ काटागया दूसरा मौजूदहै जो एक लड़का मरगया दूसरा जीताहै(उनमेंसे धैर्य और शांतिहै) अर्थात् आवश्यकता में ज़ल्दी न करना और क्रोध दूरकरना ईश्वरका वचनहै कि वह अच्छे लोगहैं जो क्रोधको खातेहैं और लोगोंका अपराध क्षमाकरते हैं हज़रत पैग़म्बर साहबने कहाहै कि जब क़यामत (प्रलय) के दिन सम्पूर्ण सृष्टिइकट्ठी होगी ढिंढोराहोगा कि अच्छेलोग कहांहैं सो वे अलगहोकर बहिश्त (स्वर्ग) को जावेंगे उससमय फरिश्ते (देवता) उनसे पूछेंगे कि तुम लोगोंने कौनअच्छाकाम कियाहै वह उत्तरदेंगे कि हमपर जब कोई अन्यायकरता थातो हमने उसे सहलिया औजो हमसे बुराई करता था उसे हम क्षमा करते थे सो फरिश्ने उनको बहिश्त में पहुंचावेंगे (कहानी) हज़रत ईसा यहूदियोंके समूहकी ओरगये उन्होंने हज़रत को कुछ बुराकहा हज़रतने उसके बदले अच्छा बचन कहा लोगों ने आपसे पूछा कि क्योंहज़रत यहूदोंनेआपको बुराकहा और आपने भलाकहा क्या कारणहै हज़रतने कहा जिसकेपास जो पूजीहै वह उसीको ख़र्च करसक्ताहै (कहानी) किसीने इब्नअब्बास को गालीदी आपनेकहा कि यहकोई आवश्यकता रखताहोगा उसका अर्थ पूर्णकरना चाहिये यह सुनकर उसने शिर झुकालिया और लज्जित हुआ (कहानी)हज़रत इमाम ज़ैनुलआबदीनने किसी मनुष्य

को देखा जो आपको बुराई से यादकर रहाथा तो उसके गुलामों ने चाहा कि उसको दुःखदें आपने मनाकिया और आप उसकी तरफ़ ध्यानकरके कहा कि मेरीबुराइयां इससे अधिकहैं जितनी तू वर्णन करताहै जो तुझे निश्चयकरना स्वीकारहो तो वर्णनकरूं वह मनुष्य इन उत्तमबचनोंसे लज्जित होकर चुप हुआ हज़रत ने अपनी क़बा (पोशाक) उसेउढ़ाकर गुलामको आज्ञादी कि एकहज़ारदिरमइसको दे सो वह मनुष्य यह कहताहुआचला कि बेशक यहशख्स पैग़म्बर की सन्तानमें से है और यह भी लोग कहावत कहतेहैं कि किसीने हज़रत जैनुलआवदीनको बुराकहा आपनेकहा कि ऐभाई मेरी इस से ज़ियादाबुराइयां हैं सो मुझे कुछ डरनहीं प्रायः तेरे उपदेशही से उन्हेंछोड़ूं(कहानी) एकमनुष्यने शोबेको गालीदी शोबेने उत्तरदिया जैसाकि तूनेकहा जोमैं वैसा नहींहूं तो ईश्वरतुझे क्षमाकरे(कहानी) एक मनुष्य ने उक़लैदस सेकहा कि जबतक तेराशिर धड़ से अलगनहो मुझे आरामनहीं है उक़लैदस ने उत्तरदिया कि जबतकतेरा यहक्रोध तेरे मनसे बाहर न हो तबतक मुझेभी चैननहीं (कहानी) अखनफ़ने जिसकी आज्ञा को लोग मानते हैं कहा कि मैंने धीर्य को आसिमुन्नफरी सेसीखा है कि एकदिनमैंने उनको देखा किअपने घरमें तलवार लटकाये बैठाहुआ समूहमें हदीस वर्णन कररहा था अकस्मात् कुछलोग एक मनुष्य की मुश्कें बांधेहुये और एक मर्द की लाश को साम्हने लाकर बिनय करनेलगे कि यहतेरा लड़काहै जो मारागया और यह तेरा भतीजा है जो हाथजोड़े खड़ाहैसो क़ैसने अपने भतीजे की ओर देखकर कहा कि ऐबेटे तू ईश्वरका पापी हुआ यह कहकर अपने दूसरे पुत्रसे कहा कि इसके हाथ खोलदे और अपने भाई की लाशको गाड़दे और अपनी माता के पास एकसौ ऊंट पहुंचादे कि यह उसके पुत्रके मरने का बदला है (उसमेंसे उपकार है) अर्थात् उस मनुष्य के साथ भलाई करना जिसने बुराई की हो (कहानी) हज़रतअली हरसुबह को युद्धस्थल की दोनों पंक्तियों में आते और खड़े रहते और यह शब्द कहते थे

कि ऐ मुआविया ईश्वर के भक्तों को कबतक मारेगा तू आपही हमारे सामनेआ कि निर्बल और प्रबल का हाल खुलजाय और राज्य एक औरहोजाय सो आसके पुत्र उमरूने कहा कि हज़रतने न्यायकिया है इस वचन से मुआविये ने उमरू से कहा कि ईश्वर जानता है जबतक तू सामने न होगा मैं राजी न हूंगा सो दूसरे प्रभात को उमरू हज़रत के सामने आया और धावा किया हज़रत ने उसकी वार रोककर तलवार का वार करना चाहा उमरू ने भय से अपने को घोड़े से गिरादिया और नंगाहोगया हज़रत ने अपने नेत्रोंको बंदकिया और घोड़े की बागफेर के उसके पास से हट आये एकदिन मुआविया बैठा था कि अकस्मात् उमरू को देखकर हँसा उमरू ने कारण पूछा मुआविये ने कहा कि मुझे उसदिन की बातयाद आई जो तू ने युद्ध के समय हज़रत के सामने नग्न होकर अपनी जानबचाई परन्तु यहतो तूबता कि तुझको क्योंकर निश्चयहुआ कि मैं इस उपाय से बचजाऊंगा उसने सौगन्दखाके कहा कि मैं पहलेसे जानताथा किवह हज़रत बड़े दयावानलज्जावानहैं इसउपायसे ज़रूर बचजाऊंगा और अन्त कोवही हुआ (उनमेंसेक्षमाहै) किसीको वहदण्ड जिसकेवहयोग्यहो न देना हज़रत नबीने कहाहै कि किसी को अपराधकाछोड़ना बड़ापुण्य है और क्षमा करनेवाला लोक परलोक में बड़ाई पाताहै सो क्षमाउत्तम है कि ईश्वर प्यारा समझता है और पैगम्बर साहब का वाक्यहै कि जब ईश्वरके जन क़यामत के मैदान में खड़ेहोंगे ढिंढोरा पीटने वाला शोर करेगा किवह मनुष्य अलग हों जिनका बदला ईश्वर पर है कि वह बहिश्त में प्रवेश कियेजांय उस समय लोग पूछेंगे कि ऐसेलोग कौन हैं उत्तर मिलेगा कि जिन लोगोंने मनुष्यों के अपराधों को क्षमा कियाहै सो कईहज़ार मनुष्य इसी बड़ाई के कारण वेहिसाब और किताब बहिश्त में चले जावेंगे (कहानी) कहते हैं कि एक चोर यासर के पुत्र अम्मार के खीमेंमें घुसा और चोरी की लोगोंने अम्मार से कहा कि इस चोरी करने पर इसके

हाथ काटने चाहियें आपने उत्तर दिया कि हमक्षमा करतेहैं शायद ईश्वर हमको भी क्षमाकरे (और उसमें से हाथ का खुलारहना) है अर्थात् बित्त शाठ्य न करना कि जब बड़ा काम साम्हने आवे अपना साहस प्रकटकरे और घबराये नहीं किन्तु बुद्धिके अनुसार कार्य करे (कहानी) कहते हैं कि हज़रत इमामहसन मुआविये के पुत्र यज़ीद की ख़बर लेने कोगये जब उसके दरवाज़े पर पहुंचे यज़ीदने दुष्टतासे अपना साहस दिखाने को अबीज़वीब हज़ली कविकी काव्यपढ़ी जिसका यह अर्थ है कि संसारी छल के कारण जब मैं बुरे लोगों को देखताहूं तो मेरा पुरुषार्थ और साहस बढ़ जाता है हज़रत ने उसके उत्तर में उसी कबि की काव्य पढ़ी जिसका आशय यह है कि जब हम जानलेते हैं कि मृत्यु हमारी आ पहुंची उस समय हम आरोग्यता के यन्त्र खोल डालते हैं अर्थात् हम अपनी मृत्यु को अपने से अलग नहीं समझते और जब हम अपने जीवन से भर पूर हैं और शिर हथेली में है तो तेरे पुरुषार्थ और साहस का हमको कुछ डरनहीं (गंभीरता)अर्थात् उसबात को गुप्तरखना जिससे किसी को दुखपहुंचे हज़रत पैगम्बरसाहब ने कहाहै कि जो कोई अपने भाइयोंकी बुराई जानले तो उसे गुप्त रक्खे कि स्वर्गपाये (कहानी) कहतेहैं कि जब याक़ूबके मरनेके थोड़े दिनरहे अपने लड़कोंको उपदेशकिया कि लोगोंकी बुराइयां छिपा रखना और यहभी कहा कि ऐबेटो हमने जन्मभरमें जिसबस्तु में बहुतभलाई देखी उसको वर्णनकिया और जो बुरीबात देखी उस को छिपारक्खा और किसीपर क्रोधनहींकिया ईश्वरकी प्रसन्नता के लिये (कहानी) किसीबादशाहने अपने शत्रुको युद्धस्थलमें क़ैद कर पाया उसका एक दूसरा भाई था बादशाह ने चाहा कि वह भी आजावे तो उत्तम है तो उस क़ैदी को आज्ञादी कि अपनेभाई को इस विषय का पत्रलिखा कि बादशाह की सेवा में पहुंच कर मेरी बड़ीप्रतिष्ठाहुई है तुमभी चलेआओ लाचार उसबेचारे बँधुवेने इस विषयका खतलिखा परन्तु उस पत्रकेअन्तमें इन्शाअल्लाताला

अर्थात् जो ईश्वरचाहै लिखदिया और इस शब्दके (न) वर्णपरछित् का चिन्ह लगा दिया जब पत्र उसके भाई के पास पहुंचा और उसकी दृष्टि उस छित् शब्दपर पड़ी तो बहुतही आश्चर्य में हुआ कि यह कुछ भेदहै निदान समझा कि इसका अर्थ यहहैंकि वास्तव में सरदार सलाहकरतेहैं तेरेलिये कि तुझे मारडालें (उसमेंसे सचाईहै) अर्थात् मनसे जिह्वाका अनुकूल होना कहतेहैं कि अबूबकर सदीक़ने कहाहै कि हज़रत रसूलने पहलेवर्ष कहा कि सत्यता को मित्र रक्खो क्योंकि सच्चाई और भलाई दोनों स्वर्गमें जावेंगी (कहानी) कहतेहैं कि हज़रत जनीद अपने उपासनाके मन्दिर में खड़ेथे अकस्मात् एक मनुष्य भागताहुआ आया और उसने इनसे कहा कि ऐ शेख मैं तेरी और ईश्वर की रक्षामें आयाहूं तो शेखने कहा अन्दर आ वह उस उपासना मन्दिर के अन्दर जा छिपा थोड़ी देरमें एक मनुष्य नंगी तलवार लिये शेखके पास आकर उस भागेहुये मनुष्यको पूछने लगा शेखने उत्तर दिया कि उपासना मन्दिरमें हैं उसने उत्तर दिया कि तू यह चाहताहैकि मैं इसमंदिर में उसकोढूंढू और वह इतनीदेरमें दूर निकलजाय जब वह यह कहके चलागया उस समय वह बेचारा जनीदके पास आकर कहनेलगा कि अच्छा मेरा पता बतादिया था जो वह उपासना मन्दिरमें आजाता तो मुझे मार डालता जनीदने कहाकि मेरी सच्चाईसे ईश्वर प्रसन्न हुआ क्योंकर वह मनुष्य तुझको पाता किन्तु मेरी सच्चाई तेरी मुक्तिका कारण हुई (उसमेंसे प्रतिज्ञाका पालनहै) अर्थात् मुखसे कहेहुये वाक्यका पूरा करना ईश्वरका वचनहै कि प्रतिज्ञा का पालन करो क्योंकि प्रलयमें इसकी पूछहोगी और हज़रतरसूल का वचनहै कि धर्म्म लानेवाले अपने वचनपर दृढ़रहतेहैं (कहानी) कहतेहैं कि मुबारकके पुत्र अब्दुल्ला एक वर्ष हजकरतेथे और दूसरे वर्ष धर्म्म युद्धमें संयुक्त होतेथे उनका वचनहै कि एकवेर हम धर्म्म युद्धको गयेथे वहांपर एक नास्तिक ने मुझसे लड़ाई मांगीमैं उसके साम्हने आया उसके साम्हने जातेही निमाजका समय आगया

मैंने उस नास्तिकसे निमाज पढ़नेकी आज्ञा मांगी उस नास्तिक ने कहा मैंने आज्ञादी पढ़लो और वह आप जाकर दूर खड़ा हुआ तो जबमैं निमाज़ पढ़चुका नास्तिकने अपनी उपासना के वास्ते समय मांगा और मैंने भी उसे बिदा दी उस समय वह सूर्य्य को दण्डवत् करनेलगा उस समय मैंने तलवार लेकरचाहा कि उसको मार डालूं अकस्मात् किसी का शब्द सुनाई दिया कि वह कहता है कि ऐसे समय मतमारो इसके सुनतेही मैंने इरादा अपना तोड़ दिया जब वह नास्तिक अपना उपासना करचुका मुझसे पूछने लगा कि तू ने क्या इच्छा कीथी और क्यों हटरहा मैंने उत्तरदिया कि तेरे मारडालने की इच्छाथी परन्तु ईश्वरकी आज्ञासे हटा यह सुनकर उसने कहाकि उस ईश्वरने मुझे इस लाभके दीनमें आने की आज्ञादी है यह कहकर मुसलमान होगया (उसमेंसेनस्रताहै) अर्थात् किसीका दुख देकर मनका नरम होना हज़रतरसूल का बाक्यहै कि जो मनुष्य किसीपर दया न करे उसपर ईश्वरभी कृपा न करेगा हदीसमें लिखा है कि हज़रत रसूल एक ऐसे लड़के के पासगये जिसकी कमर पर पानी की भरीहुई मशक थी और वह उसके बोझसे रोताथा सो हज़रतने रोनेका कारण पूछा लड़के ने उत्तर दिया कि इस मशक का बोझ बहुतभारी है सोहज़रत ने वह मशक अपने कांधेपर लेकर उसके साथ उसके घर पहुंचादी वह जातिका यहूदीथा उसके पिताने पुत्रसे पूछा कि यहदूसरा मनुष्य दरवाज़े पर कौनहै उसने सबहाल वर्णन किया यहूदी ने बाहर निकल कर आपको देखा और पहिचाना और कहा कि यह दया और कृपा मुख्य पैग़म्बरों की है यह कहकर मुसलमान न हुआ (कहानी) अदहम के पुत्र इबराहीम ने काबे में किसी शेखके मुख सेसुनाकि बनीइसराईलमेंसे किसी मनुष्यनेअपनीमाताकीप्रतिष्ठा केलिये एक बछड़ा बलिदान किया उसका हाथसूखगया तो किसी समय उसकी दृष्टिमें एक पंछीका बच्चादिखाईपड़ाजो अपनेघोंसले घोंसलेसे गिरपड़ाथा और तड़परहाथा उसमनुष्यने उसकोउठाकर

उसके घोंसले में रखदिया इसदया के कारण ईश्वरने उसका हाथ का सिरसे मुख्य रूप करदिया—(उसमें से वाचालताहै)अर्थात् ऐसीरीतिसे वार्त्ता कीजावे जिसको लोग सुनकर प्रसन्न होजावें (कहानी) अमियाके पुत्र ज़यादने किसी मनुष्यको बुलाया और वह भागगया उससमय उसका भाई क़ैदहुआ उससेकहा कि जो अपने भाईको प्रकटकरे तो तुझेछुट्टीमिले नहींतो तेरीगरदन मारी जायेगी उसनेउसकाउत्तरदिया कि अमीरुलमोमनीनकी पुस्तक तेरे सामनेलाऊं तो छुट्टीपाऊंगा इसनेकहा हां इसनेबिनयकी कि ईश्वर की पुस्तक लाताहूं और उसपरमूसा और इबराहीमकी दो गवाही भी देताहूं कि उस पुस्तकमें ईश्वरका बचनहै अर्थात् ईश्वर कहताहै कि क्या यह आज्ञाबताई नहींगई कि जो मूसा और इबराहीम की पुस्तकोंमें है कि कोई मनुष्य बोझ उठानेवाला दूसरे का बोझ न उठायेगा कि अपराधके दण्डमें एक दूसरेका बदला नहीं पासक्ता सो इसीतरह मेरा क्या अपराधहै ज़ुयादने उसको छोड़ दिया—(कहानी) हजाजने किसीसेकहा कि तू जो कहताहै कि अलीपैग़म्बर के पुत्रहसुनैन बेटे अली के पैग़म्बर की सन्तान में से हैं तो इसका प्रमाण दे नहीं तो तेरी गर्दन मारीजायेगी उस मनुष्यने उत्तरदिया कि इसका प्रमाण कुरान से सिद्धकरूं तो छुट्टीमिलेगी उसने कहा हां उस मनुष्य ने इस आयत को पढ़ा तो ऐहजकरनेवाले जिस तरह से हज़रतईसा बिन बापके पैदा हुये और वह फिर इबराहीम की सन्तान में समझे गये इसी तरह हसनैन भी अपनी माताके कारण रसूलख़ुदा की सन्तान समझेगये और रसूलख़ुदा का वचन है कि ईश्वर बड़े कामों को मित्र रखता है और छोटे कामको मित्रनहीं रखता सो यह कौनसा कठिन प्रश्न है जो तू मुझसे पूछता है हजाजने उसको छोड़दिया (कहानी) एक दिन हमजा की बेटी अमारतमन्सूर की सभा में वर्त्तमान थी तो किसी मनुष्य ने खड़े होकर कहा कि ऐ बादशाह मैं दुखी हूं हमज़ा की पुत्री अमारत ने मेरा द्रव्य ज़ोरसे छीनलिया है मन्सूरने अमारत

से कहा कि तू अपने शत्रु के पास खड़ीहो सो अमारतने कहा कि मेरे बादशाह मैंने वहमाल उसको देदिया जो इसकाहै तो इसे फलै और जो मेराहै तो मैंने इसको दान किया मैं नहीं चाहतीहूं कि मैं अपनी पदवी को जो तेरे सामने है मालके बदले बेचडालूं और उसके सामने खड़ीहूं (उसमें से उपकार है) अर्थात् जिनलोगों को पहचाने और जो नातेदार हों उनके कामों में भलाई की दृष्टि से ध्यानदेना (कहानी) किसी समय मेंहदी बादशाहने किसीभागेहुये अपराधी को पतालगाने के लिये एक हज़ार रुपया नियत किया और वहज़ायदे के पुत्र मुइन का मित्र था तो वह अपराधी गुप्त होगया अन्त को एक बेर किसी मनुष्यने उसको देखलिया और दामन पकड़ के बादशाहके पास लेचला संयोग से एकओर ज़ायदे के पुत्र मुइन की सवारी आतीथी उस अपराधीने कहा कि ऐमुइन मैं तेरी रक्षा में आयाहूं सो मुइन ने उसके पकड़नेवालेसे कहा कि इसको छोड़दे उसने कहा कि भाई यह बादशाह का अपराधी है परन्तु मुइनने न माना उसको सवार कराकर अपने घर लेगया वह बिचारा रोतापीटता मेंहदी की डेवढ़ी पर जाकर सारा हाल कहनेलगा इससे मेंहदी अति कुपित हुआ आज्ञादी कि इसे क़ैद करो और मुइन को लाओ जब मुइन डेवढ़ी पर पहुंचा उसका सलाम न लिया और कहा कि तूने मेरीआज्ञा भंगकी यहसुनकर मुइनने विनयकी कि महाराज इस आधीनने आपकी आज्ञानुसार एकदिन पन्द्रहहज़ार वीरोंसे युद्ध किया और समयतक दुःखउठा-ता रहा आशा रखताहूं कि एक मनुष्य का अपराध मेरे कारण क्षमाकियाजावे उससमय खलीफाने शिरझुकाकर कहा कि अच्छा उसका अपराध क्षमा कियागया उससमय मुइनने खिलअतकीभी इच्छाकी और खलीफाने पांचहज़ार दिरम उस अपराधी को दिल-वाये उसने लाकर उसेदिये (उसमें से प्रतिष्ठा है) अर्थात् अपने को तुच्छ समझना और दूसरे की अपने से बड़ाई करना पैगम्बर साहबने कहाहै कि प्रतिष्ठा मनुष्य को शिर ऊंचाकरती है चाहिये

कि परस्पर प्रतिष्ठाकरो कि ईश्वर भी तुम्हारा शिर ऊंचाकरे इब्न
क़सीर जो विख्यात विद्वान् थे उनका वचन प्रतिष्ठा की बड़ाई पर
साक्षीहै कि उसने अपने बचनमें मानकरनेकी बहुतप्रशंसालिखीहै
इसीसे ईश्वरने उस विद्वान्को लोक परलोकमें बड़ाई और नामवरी
दी ईश्वरकी कृपासे उत्तम स्वभावोंका वर्णन पूराहुआ यद्यपिकृप-
णता के वर्णन की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह बुरा स्वभाव
है और बहुत लोग इसबला में पड़ेहुये हैं परन्तु इसस्थान पर कई
लोगों का वर्णन जो कृपणता में प्रसिद्धहैं कियाजाता है (कृपणता
अर्थात् कंजूसी) अर्थात् ऐसी वस्तु को इकट्ठा करना जिसकी कोई
दूसरा आवश्यकता रखता हो हज़रत पैगम्बर साहब ने कहा कि
कंजूसी एक आगका दरख़्त है जिसकी डालें संसार की ओर झुक
आईहैं तो जो मनुष्य उसकी डालों पर हाथ न बढ़ायेगा वह आग
का फल पायेगा (कहानी) कहते हैं कि पैगम्बरसाहब काबेकीपरि-
क्रमा करते थे अकस्मात् एक मनुष्य को देखा कि काबे के दरवाज़े
में लटका कहरहा था कि इसी शुद्ध मन्दिर की सौगन्द तू मेरा अ-
पराध क्षमाकरदे सो पैगम्बर साहबने कहा कि तेरा अपराध किस
प्रकार का है वर्णन कर उसने उत्तर दिया कि मैं अपना पाप वर्णन
नहीं करसक्ता हज़रतने कहा तेरा पाप बड़ाहै या पहाड़ उसनेकहा
मेरा पाप बड़ाहै फिर हज़रतने कहा समुद्र से कमहै उसने कहा नहीं
किन्तु अधिक तब हज़रतने कहा आकाशसे भी अधिक उसने कहा
हां तब हज़रतने कहा तेरा पाप बड़ाहै या ईश्वर उसनेकहा ईश्वर
बड़ा और सबसे ऊपरहै तब हज़रतने कहा अपनेपापका वर्णन कर
उसने विनय की कि हज़रत मैं धनवान् अमीर हूं परन्तु जो कोई
मुझसे कुछ मांगता है तो मुझे यह मालूम होता है कि मुझे मांगने
वाला मानो जलती हुई अग्निसे दुःख पहुंचाताहै सो हज़रतनेकहा
कि मेरेसामने से हटजा ऐसा नहो कि तेरीआग मुझतक पहुँचे मुझे
उस ईश्वरकीशपथहै कि जिसने मुझे पैगम्बरबनायाहै मैं सचकहता
हूं कि जो तू दो हज़ार वर्ष भी मुक़ाम इबराहीम और रुकनकाबे

बीचमें रोवे पीटे और निमाज़पढ़े तौभी जब तू मरेगा आगमिलेगी तू नहीं जानता है कि कृपणता नास्तिकपनहै और नास्तिक नरकगामी होगा (कहानी) एक अरबदेशका रहनेवाला इब्न अल्ज़बेर के पास आया और कहा कि मेरा ऊंट बीमार होगया है आप कोई दूसराऊंट दीजिये इब्नअल्ज़बेर ने उत्तरदिया कि तू अपने ऊंट की नालबंदी कराले और उसकी गर्दन में रस्सी डालकर प्रभात और संध्या फिराया कर यह सुनकर अराबीने कहा कि हम ऊंट लेने के वास्ते आये थे न कि उपाय पूछने इसने अपने नौकरों से कहा कि इसे मेरे दरबारसे निकालदो(कहानी) किसीगँवारने इब्नअल्ज़बेर केपास आकर कहा कि मुझे कुछदे कि मैं तुम्हारे शत्रुसेजाकर लडूं उसने उत्तर दिया कि अच्छा पहले जाकर लड़ो जो अच्छी लड़ाई लड़ोगे कोई चीज़ दूंगा अराबी ने कहा मालूम हुआ कि आप मेरे प्राणोंके बैरी हुये हैं (कहानी) अबुलअसवददूली अपने लड़कों से कहाकरता था कि कभी निर्धनों को नदो क्योंकि कभी यह लोग प्रसन्न न होंगे जबतक कि तुम भी उनके सदृश निर्धन और दीन न होजावोगे इसलिये जो माल अपने पास मौजूदहै उसके वास्ते कृपणता उत्तमहै (कहानी) एकअराबी इनहीं वर्णन कियेहुये मनुष्य के पास गया उससमय उसके पास हरेछुहारों का पात्र रक्खाहुआ था और वह खारहा था सो अराबीने कहा सलाम सो अबुलअसवदने कहा कि यहबात तो हर एक कहताहै तो अराबीने कहा हम डेरेमें आवें उन्होंने उत्तरदिया कि डेरेके बाहरकी ओर बहुत ज़मीन है अराबीने कहा धूपसे मेरेपावँजलेजाते हैं उसने कहा पानी छिड़कलो अराबीने कहा हमको भी छुहारा दीजियेगा उसने उत्तरदिया कि जो तेरी भाग्य में है उसीपर सन्तोष कर अराबीने कहा तुझ से बढ़कर कोई कंजूस देखने में नहींआया इतनेमें एक छुहारा अबुलअसवदके हाथसे छूटकर धरती पर गिरपड़ा अराबी ने उठालिया और अपनी चादरसे उसको झाड़कर साफकिया सो अबुलअसवद ने कहा कि तू बड़ामलीनहै कि तूने मेरा छुहारा उठालिया अराबी

ने कहा मुझे खेदहुआ कि तेरा छुहारा शैतानखावे क्योंकि गिरीहुई चीज़ शैतान खाता है उसने उत्तर दिया कि ईश्वरकी सौगन्द हम इसछुहारे को अपने हाथसे जबरईल और मैकाईल फरिश्तोंकोभी न देते (कहानी) क़बीलाबनीमरदां से एक शेख़ अपनीसभामें बैठाथा कि एक अराबी उसके पास आया उससमय उनके पास लोगों का जमाव था उसने कहा कि कालसे लाचार होकर तेरेपास आयाहूं नहीं तो मेरामाल और असबाब गज़नीमें है शेख़ने उत्तरदिया कि मुझे यहकाल स्वीकार है किन्तु मैं बहुत प्रसन्नहूं जो आकाश और पृथ्वी के मध्यमें एक लोहेका तख़्ता पड़जावे और एकपानीकी बूंद न बरषे और किन्तु तेरे हाथपावँ भी कटजायँ कि तू अपने पावँ से चलकर ज़मीन की घासभी न खासके सो अराबी ने शेख़की ओर क्रोधकी दृष्टिसे कहा कि और तो क्याकहूं कि तुझसे कंजूसशेख़पर ईश्वर कुपति हो—(कहानी) मवस्सल में एक अध्यापक था जो हर दिन अपने पुराने पात्र में बाज़ार से भोजन मँगवाया करताथा एकदिन गुलाम के हाथसे वहपात्र टूटगया मारेभय के वह गुलाम नयापात्र मोललेकर भोजन लाया जब अध्यापककी दृष्टिपड़ी कहा कि चाहे तूने हमारेबासन के बदले नयाबर्त्तन मोललिया परंतु वह भारा बर्त्तन पुराना और चिकना होगयाथा इस नयेबर्त्तन में हमारे खाने का घी सूख जाया करेगा इसका इतना खेदहै जिसका वर्णन नहीं करसक्ताहूं—(कहानी) किसी हंसमुखने एककृपण से कहा कि क्योंजी अपने भोजन में मुझे क्यों संयुक्त नहीं करतेहो उसने उत्तर दिया इसकारण कि तुम बहुत खातेहो यहां तक कि ग्रास के ग्रास निगलजाते हो और चबातेतक नहींहो हंसमुखने कहा कि आपमुझे भोजन में शामिल कीजिये प्रतिज्ञा करता हूं कि अब हर ग्रास के पीछे दो पद्य निमाज़ की पढ़ाकरूंगा॥

सम्पूर्ण प्रकार के प्राणों के विषय में॥

बुद्धिमानों के विचार में प्राण नानाप्रकार केहैं कई तो प्रकाश युत जिनको उन प्राणोंसे की कि शरीर प्राप्तनहीं हुआ खबरहोती

हैं और उनसे लाभउठाते हैं और कईप्राण कालहोते हैं जो शर
के आनन्द में फँसेरहते हैं इस जगहपर कई बुद्धिमानोंका वचन
कि प्राण एक ऐसीवस्तु है जिसके कई प्रकार हैं और हर प्रकार
कई और होते हैं जो एक दूसरे के बिपरीत नहींहोते परन्तु गिन
पर और इसके हरप्रकार आकाशी प्राणकेसन्तानकी जगहहोते
और तिलिस्म अर्थात् मंत्र के जाननेवाले इनप्राणोंको रवाग्नता
कहते हैं लिखाहै कि वही प्राण उसप्राणकी उत्पत्ति कारकहोती
कभी कानसे लगकर बातकरने और कभी विचार और कभी स्व
और तपस्या के परिश्रम में अब हम इसस्थानपर बहुत बड़े प्राण
को वर्णन करते हैं (कईप्राणनबियोंकेहैं) जब ईश्वरने इस उत्तमत
समूह को सृष्टि का उपदेशक बनाना चाहा उनके प्राणोंमें नाना
प्रकार के उत्तम स्वभाव इकट्ठे किये और उनसे सर्वप्रकारकी बुर
बातों को दूरकिया बहुत सी करामातें प्रकट कीं जिनको देख क
संसारी लोग उनके आधीन हुये (और कई प्राणवलियों अर्थात
ईश्वर निकटवर्त्ती लोगों के हैं) कि जब उनके प्राण नबियोंके प्राणों
के आधीन हुये इनसे बहुधा अद्भुत कार्य प्रकटहुये जिसतरहसे कि
आबिदों(पूजनकरनेवालों) और जाहिदों (ईश्वरसेप्रीतिकरनेवालों
के वर्णनमें लिखागया कि उनके आशीर्बाद से रोगोंसे आरोग्यत
और काल आदिका दूरहोना प्रकट हुआ (कईप्राणोंमें बड़ाईहै)जो
प्रकट और वृत्तान्तों को बताते हैं हज़रत पैगम्बरसाहबने कहा कि
ऐसे धर्म्मियों की बुद्धिमानी से डरो जो ईश्वर के प्रकाशमें विचार
पहुंचाताहै (कहानी) अबूसाद जर्राटनेकहा कि एकफ़क़ीरको काबेमें
देखा जो केवल एक लँगोटा बांधे था जिसको देखकर मुझे ग्लानि
हुई उस फ़क़ीर ने अपनी बुद्धिमानी से मेरी ग्लानिको मालूम कर-
लिया और कहा कि ईश्वर तुम्हारेमनके विचारोंको जानताहै सो
तुमको डरना चाहिये इस वचनसे मुझको लज्जाहुई ईश्वरसे क्षमा
मांगी इसका हाल भी उसको मालूम हुआ तो उसने कहा ईश्वर
ऐसाहै कि जो मनुष्यों के क्षमा मांगने को अंगीकार करता है और

पापों को दग्ध करताहै—(और कई प्राण शकुन देखनेवालों के हैं जिसको क़याफ़ा कहते हैं) क़याफ़ा दोप्रकारकाहै एक क़याफ़ाबशर दूसरा क़याफ़ा असर क़याफ़ा बशर उसविद्या को कहतेहैं जोमनुष्यके शरीर के जोड़ोंकी सूरतसे वृत्तांत मालूमकरलें और यहमुख्य करके अरब की जातिमेंहै जिसको नबूमदलज कहते हैं और उनके छोटे बच्चेतक का यहहाल है कि जो उसको बीस औरतों में छोड़ दें जिनमें उसकी मांहो तुरंत मालूम करले (कहानी) एक सौदागर कहता है कि मैंने अपने पिता की थाती से एक बूढ़ा हबशी पाया एकबेर सफरका संयोगहुआ मैं ऊंटपर सवार था और वह गुलाम उसकी मुहारलिये चला जाता था संयोग से एक मनुष्य नबीमदलज जाति का हमसे मिला और एकबेरदृष्टिकरके अकस्मात् कहनेलगा कि गुलाम से नौकर कितना एक रूपका है यहबात मेरेमन में जमगई जब मैं अपने घर फिरकर आया मैंने अपनी माता से वह हाल वर्णन किया उसने उत्तर दिया कि सच्चाहाल यहहै कि द्रव्य और धन के होनेपर भी तेरेपितासे सन्तान न हुई तब मैं ने इस गुलाम से सम्भोग किया और उसके गर्भ से तू उत्पन्न हुआ और जो मैं जानती कि तुझको प्रलय में भी यह हाल मालूम न होगा तो मैं कभी तुझसे वर्णन न करती (क़याफा असर) वह है जिससे मनुष्यके पांव और पशुओंके सुमों और जोड़ोंके चिह्नोंसे लोग मालूम करजावें उसके जानने वाले लोग बहुधा रेतीली ज़मीनपर होते हैं सो जब कोई इनमेंसे भागजाता है या कोईचोर इनके माल की चोरी करके चलाजाता है तो यहलोग उसकेपांवके निशानों से उसका पता लगालेते हैं और सब से बड़ा आश्चर्य यहहै कि वह लोग स्त्री पुरुष युवा बालक बूढ़े और सहवासी विदेशीके चरण चिह्नभी पहिचान लेतेहैं (बाज़ेप्राण काहनोंकेहैं) जिनके बलसे भूतोंसे भेंटकर सक्ते हैं और उन्हीं से सृष्टि का हाल मालूम करसक्ते हैं (कहानी) मुन्सरुल्हमी उलहमीरी के पुत्र रबी बादशाह ने एक भयानक स्वप्नदेखा उसका फल पूछने के वास्ते

सतीह काहिन को बुलाया और उससे कहा कि मैंने स्वप्न में ऐसा देखा कि अँधेरे से एक अँगुली प्रकट हुई और पृथ्वीपर गिरकर उस पृथ्वी के बादशाह के शिरको खागई—सतीह ने उत्तर दिया कि कोई बादशाह सेनासमेत तुम्हारी धरतीपर आयेगा औरउस धरती का जो हिरस और अमीन के मध्य में है बादशाह होगा बादशाह ने कहा कि जो सच है तो कबतक आयेगा मेरे सामने या मेरे पीछे और वह कौन है उसकी बादशाहत सदा रहेगी या जातीरहेगी और फिर कौन बादशाह होगा सतीह ने उत्तर दिया कि तेरे मरने के साठबर्ष पीछे यह बात होगी फिर उस बादशाह की सेनाभी थोड़ी मारीजावेगी और थोड़ी भागजावेगी बादशाहने कहाकि उसकी सेना को कौनमारडालेगा उसनेकहा वरनज़ीहरन अदन के देशसे आकर उन सबको मारडालेगा बादशाह ने पूछा कि उसकी बादशाही सदारहेगी या नहीं सतीह ने कहा कि एक शुद्ध पैगम्बर के हाथ से उसका राज्य नष्टहोगा बादशाहने कहा वह पैगम्बर कौनहोगा सतीह ने कहा वह पैगम्बर फ़हर के पुत्र गालिब तत्पुत्र मालिक तत्पुत्र नसर की सन्तान में होंगे औ उनका राज्य समयके अंतपर्य्यंत रहेगा बादशाहने कहा कि भल समय का अन्त भी है सतीह ने कहा हां उस दिन कि जब पहले और अंत के लोग सब इकट्ठे होंगे और भलों को भलाई औरबुरों को बुराईका बदला मिले सो जोकुछ मैंनेकहा इसमें कुछ भी अंतर न पड़ेगा (कईप्राणा अनुमानसे भविष्यकी बात बताते हैं) और वह लोग एक वृत्तांत को दूसरे वृत्तांतपर प्रमाण देते हैं किसी सम्बन्ध वा रूप के कारण जो बहुत गुप्त हो (कहानी) कहते हैं कि जब सिकन्दर रूमी किसी शहर में पहुंचा वहां के देवालय में एक स्त्री को देखा जो कपड़ा बुनरही थी उस स्त्रीने कहा कि ऐ बादशाह तुझको एक और बहुतभारी देश मिलनेवाला है इतने में उसशहर का अधिपति उस देवमन्दिर में आया उसस्त्री ने उससे कहा कि तेरा देश सिकन्दर के क़ब्ज़े में आगया हाकिम ने स्त्री से इसका

प्रमाण पूछा उसने उत्तर दिया कि जब सिकन्दर आयाथा मैं अपने कपड़ेको बहुतलम्बा चौड़ा कररही थी इसशकुनके समझने से मैंने वैसाकहा और अब आप जो आये तो उस कपड़े को मेरी टुकड़े २ करने की इच्छाथी इसलिये मालूम हुआ कि आपसे राज्य अलगहुआ चाहताहै (क़हानी) जब अबीतालिब केपुत्र अली सिंहासनपर स्थानापन्नहुये तो पहले २ जो शिष्यहुआ अब्दुल्ला का पुत्र तिलहा था जब हज़रत ने उनके हाथ को पकड़ा तिलहा की एक अँगुली को देखा कि सूखीहुई थी हज़रत ने इसशकुन से मालूम किया कि यह स्थित हमको न फलेगी अन्त को यही दशा हुई कि मरने तक हज़रत को उसकी सफाई न हुई (कहानी) एक दिन सफ़ाहख़लीफ़ा शीशा देखकर कहने लगे कि ईश्वर मैं यह नहीं कहता कि जैसा अब्दुलमुल्क के पुत्र सुलेमां ने शीशा देखकरकहा था कि मैं जवान बादशाह हूं बरन मेरी यह इच्छा है कि मेरीआयु बढ़ा कि तेरी सेवाकरूं अभी यह वचन पूरा न हुआथा कि आपने सुना कि कोई मनुष्य दूसरे से कहरहा है कि मेरे और तेरे बीच में मौत को दो महीने पांचदिन की देरी है आपने यह सुनकर ईश्वर का स्मरण करके सत्यजाना सो थोड़ेदिनतक ज्वर की बाधा उठाकर दोमहीने पांचदिन के पीछे ईश्वर के पासपहुंचा (कहानी) हुसेनका पुत्र ताहिर हामाके पुत्र ईसासे बड़ाई करने को बाहर निकला और अपनी आसतीन में थोड़े रुपये निछावर करने को रखलिये परन्तु उनको निछावर करना भूलगया जब कपड़े वदन से अलग किये वह रुपये छिटक गये तो उस समय विद्यमान लोगोंमेंसे किसी कवि ने कहा जिसका अर्थ यहहै कि तू हामांके पुत्र ईसा को परास्त करेगा सो वैसाही हुआ कि ताहिर ने ईसा को मारडाला और वहां बग़दाद में आकर अमीन कोभी मारडाला (मनुष्य के जोड़ों के विस्तार में)मनुष्य के शरीर में इतनी अद्भुत चीज़ें हैं कि जिनके मालूम करने से बुद्धि क्षीण है इसका प्रमाण ईश्वर के वर्णन से प्रकट है कि जो अपनी अद्भुत जड़ को पहिंचाने

और उसकी कारीगरी की मज़बूती और उसके थोड़े प्रमाण और परस्पर विरुद्ध वस्तुओं जैसे आग पानी और हवा मिट्टी के मिलने पर ध्यान करे तो वह मनुष्य मालूम करेगा कि इस समूह का उत्पन्न करने वाला कैसा अपूर्व बुद्धिमान् और अधिकारी है उस समय उसका धन्यबाद करना उसपर अवश्य होगा अब यहां बर्णन करना उचित है कि यह शरीर के जोड़ कई तरह के हैं जो दोषों के मिलने से पैदाहोते हैं और इनके दो प्रकार हैं एकाकी संयुक्त (पहला प्रकार हड्डियों के विषय में) यह एक कठोर शरीर है और शरीर के मन्दिर में मानों खम्भा है और इनसे कई रगें निकलती हैं जो एक जोड़ को दूसरे जोड़ से परस्पर मिलादेती हैं जब कि शरीर की दृढ़ता केवल मांस आदि नरम खंडों से न हो सकी तब ईश्वर ने यह हड्डियां उत्पन्नकीं इनमें कई हड्डियां तो शरीर की नेवके वास्ते हैं जैसे पीठकीहड्डी क्योंकि शरीरकी स्थिरता इसीकी नेवपर है जिसतरह किश्तीकी नेव एक लकड़ीपर होती है फिर और छोटी २ लकड़ियां उस लकड़ी पर पेवन्द की तरह पर लगाते हैं और कईढाल की रूपपर हैं जिसतरह खोपड़ी की हड्डी जो भेजे की रक्षा करती है कई ऐसी हड्डियां हैं जिनसे आपस में हड्डियों की दूरी मिलीरहती है बाजी हड्डियां ऐसी हैं जिनसे उसके मिलजोड़ आवश्यकता रखते हैं जैसे जिह्वा और गले का नल कई हड्डियां शरीर की रक्षाके लिये हैं वहसख़्त हैं कईहड्डियां खोखली इस कारण से हैं कि उनका भोजन उनके अन्दर रहता है अर्थात् उनका गूदा और उससे उनमें तरी रहती है और इसी कारण वह तरी अलग नहीं होजाती तो यहहड्डियां जो कइयों से जुड़ी हैं दो प्रकार पर हैं एक इत्तिसाली जिससे हिलसक्ते हैं दूसरी इन्फिसाली जिससे नहीं हिलसक्ते इनकेलहाम और मुफस्सिल दो प्रकार हैं मुफस्सिल उसको कहते हैं जिसमें प्रकटकी प्रेरणाहो जैसे हाथ पांव का हिलना और लहाम उसको कहते हैं जिसमें प्रकट की प्रेरणा न हो जैसे खोपड़ी तो जिसमें प्रकट की प्रेरणा

होती है उनके तीन प्रकार हैं (प्रथम प्रकार) वह हड्डियां हैं जिन-
में एक हड्डी के शिर में नोक होती है और दूसरे में उसके अनु-
सार गढ़ा होताहै कि वह दोनों चूलकीतरह जम बैठें और उसके
द्वारा हिल ने जुलने में सुगमताहो (दूसराप्रकार)वह दो हड्डियां हैं
जिनकी हर हड्डी के शिरपर नोक होती है और उनका मिलना
और मज़बूती पट्ठों के द्वाराहोती है (तीसराप्रकार) वह हड्डियां कि
परस्पर एक दूसरेमें थोड़ी २ प्रवेशकी हुई और चिपकी बिना चूल
केहों जैसे पीठकी हड्डी है और जो हड्डियां प्रकट में नहीं हिलतीं
उनकेभी तीनप्रकारहैं (पहलाप्रकार) कोशाना अर्थात् कंघी कहते
हैं और वह दांतों के अनुसार है और दोआरे की तरह एक दूसरे
में मिलीहैं (दूसराप्रकार) वह है जिसकी स्थिरता सीधी रेखापर
हो जैसे शिर और कानकी हड्डियां (तीसराप्रकार) वह है कि इन
दोनों हड्डियोंमें से एकदूसरे में मिलीहों जिसतरह दांतोंकी दरज़ों
की बनावटहैं और यह सबहड्डियां दोसौअड़तालीस हैं उनहड्डियों
के सिवाय जो समसानियात हैं और समसानियात उन छोटी २
हड्डियोंको कहतेहैं जो जोड़ोंकी बीचकी जगहमें भरीहोती हैं और
जो हड्डियां (ل) की रूपकी हैं वहकण्ठके नलकीहड्डीकी बनावट
में खर्चहुई हैं ईश्वर की बुद्धिने एक २ प्रकार की हड्डी अलग पैदा
कीहै कि किसी उत्पात के पहुँचने पर एक दूसरे की स्थानापन्न
होसके और जो ऐसा न होता तो आवश्यकतापर कठिनताहोती॥

दूसराप्रकार—चवनी हड्डियोंके वर्णन में॥

यह जोड़मांस और हड्डीकेबीचनरमी और सख्तीमें दरमियानी
दर्जा रखता है और हड्डियों के किनारे पर पैदा होता है जहां
कहीं मांसको नरम हड्डीकी आवश्यकता होती है वहां इसीकेसाथ
मांस की बनावट होतीहै यहनरमहड्डियां हड्डियोंमें इसलियेउत्पन्न
हुईहैं कि इसमें हिलने के कारण छिद्र न होजायँ और ऐसे जो दो
जोड़ों के बीच में चवनी हड्डी होती है जो जोड़ों के बीच में बड़े हों

क्योंकि यहखण्ड हिलनेवालेहैं और हिलने में रगड़न ज़रूर होती है तो जो वहचीज़ सूखी होती तो टूट जाती और जो तर होती तो बहजाती इसीलिये ऐसी बस्तुकी इच्छाहुई जिसमें यह दोनोंगुण हों सोऐसी चीज़ सिवाय चबनी हड्डियोंके और कोईनहींहै (तीसरा प्रकारपट्ठाहै) यहजोड़ नरम और मोटा भेजे और हराम मगज़से पैदाहोताहै इसका गुणसब जोड़ों को हिलाना और मांस को दृढ़ करना और बल देनाहै और जब ब्रह्माण्ड सबपट्ठोंको उठा न सका तो ईश्वर ने पट्ठों को ब्रह्माण्ड से हराम मगज़को ओर जारीकिया और हराम मगज़ से सम्पूर्ण शरीर पर शाखा जारी कीं कि वह सम्पूर्ण शरीर के जोड़ोंपर पहुंचे तो जो पट्ठे भेजेसे निकलतेहैं वह शिरके सब जोड़ोंको हिलातेहैं और वहांसे चलकर अन्दरके जोड़ों पर पहुंचतेहैं और सब बाक़ीजोड़ हराम मगज़के पट्ठोंसे पुष्टहोते हैं यद्यपि हराम मगज़ भी अन्दर के जोड़ों के निकटहैं परन्तु उससे नरम २ पट्ठे ऐसे उत्पन्न नहीं होते जो अन्दर के जोड़ों को हिलावें आगे ईश्वर जाने(चौथा प्रकार रुबात) यह खण्ड बिल्कुल पट्ठेके रं-गकाहै परन्तु इससे सूखा अधिकहै और कई कइयों पर पूर्ण होते और सख़्तहोता और परस्पर जोड़ोंको मिलाताहै और उससेबड़ा लाभ हिलनेमें पहुंचताहै और जबतक कि जोड़ोंका इच्छा किया हुआ हिलना पूरा नहींहोता तो पट्ठे में यह शक्ति नहीं होती कि हड्डियों से मिल जावें क्योंकि हड्डियां कठोर हैं और पट्ठे नरम सो ईश्वरने हड्डीसे एक ऐसीबस्तुउगाई जोपट्ठेके रूपसीहै परन्तु पट्ठेसे सख़्त और हड्डीसे नरमहै और वह रुबातहै और वहरुबातको पट्ठे केसाथ इकट्ठाकियाहै और एकखंडकी तरहपर दोनोंको मिलायाहै और इसीके कारण पट्ठेऔर हड्डियां परस्परइकट्ठी होतीहैं (पांचवां प्रकार मांस)यहखण्ड गरम और तरहै इसकेसम्पूर्णलाभोंमेंसे एक यहहै कि पट्ठे और कूदने और स्थिर रहनेवाली रगोंकी सहायता करताहै क्योंकि यहठण्ढी और सूखी हैं तो जो मांस की गरमी न होती तो बाहरसे हवा पहुंचकर इनको बिगाड़ देती और जो कि

कूदने और स्थिर रहनेवालीरगें पट्ठे और भोजनको सहारेहैं और अपने में भोजन के पचने की आवश्यकता रखते हैं ईश्वर ने मांस से जो इनको घेरेहै इनकी सहायता पहुंचाई कि उत्तमरीतिसेशरीर का कार्यचले दूसरा लाभयहहै कि हड्डियों को जोड़ों के रूपका बनाता है जो मांसनहोता तो खाली हड्डियां वृथा थीं सो मांस का दृष्टान्त मट्टीकासाहै कि उससे भी चित्र बनताहै (छठांप्रकार चरबी) यह खण्ड गरम श्रेष्ठ और हवाईहै इसकोमांसकेटुकड़ों और पट्ठोंके चौगिर्द पैदा कियाहै कि यहदोनों हिलने जुलने के हथियार हैं सो यह दोनों कामकाज करनेपर गरमीकी आवश्यकता रखने लगे और हालयहहै कि कामकाज पूरा नहीं होताहै परन्तु गरम और तरहैं और जो कि पट्ठे ठण्ढे और खुश्कहैं तो चरबी मिलादी किउनको गरम करकेभोजनकेपचने नरमकरने और पकानेमेंसहायताकरे और यहचरबी मांससे रगोंकी तरहपर नहींछिपी क्योंकि मांस से उस वस्तु के पचाने का प्रयोजन है जो रगों के अंदर है और चरबी से यह प्रयोजन है कि पट्ठों को केवल गरम करे और उस के अन्दर हिलने की तेजी से न जासके तो जो किसी गाढ़े खण्डसे मिलीहोती तो उसका हिलना जातारहता और जैसे कि हमने मांस और हड्डियों के दृष्टान्त में वर्णन किया है कि मांस मट्टी के सदृशहै तो इसी तरह चरबी का दृष्टान्तहै कि उस मूलकी अस्तरकारी करतीहै और सपेदकरतीहै और वहभोजन जो जोड़ों के लिये होताहै उसको जोड़ोंसे अलग करतीहै और चरबी जोड़ों की रक्षा भी करती है जिसतरह कपड़ा शरीरकी रक्षा सरदी और गरमीसे करता है॥

सातवांप्रकार—फुदकनेवाली रगोंके विषयमें॥

यह कई रगें प्राणोंकी पात्रहैं और मनसे उगी हैं और जीव से उत्पन्न हुईहैं और इसजीवका मूलश्रेष्ठ रुधिरहै जो प्राणों के भोजन से होताहै जैसा कि जैतका तेल दीपकके प्रकाशका कारण है और इनरगों के पैदाहोने से यहबुद्धि है कि इनसे प्राणोंकीरक्षा होती है

और जीव इनमें रहताहै और जब यह फुदकने वाली रगें मन से निकलतीहैं दो टुकड़े होजातीहैं एकटुकड़ा फेफड़े की ओर जाताहै और वहांपरहवाके खींचनेका कामकरताहै और यह फुदकनेवाली रगों का टुकड़ा केवल एक दरजा होताहै क्योंकि यह बहुत नरम और बहुत आधीन और बहुत ठहरनेवाला है और हवाकी खिचावट में बंधना और खुलना इसीके आधीनहै और दूसराटुकड़ा दो तरफ़ बँटताहै एकऊपरको जाताहै और वह छोटाहै क्योंकि इसके लेने वाले मनके ऊपर के जोड़हैं और वह मनके नीचे के जोड़ों से छोटे हैं और दूसरा प्रकार मनके नीचेकीओर जाताहै और इससे बहुत सी नसें चारोंओर जारी होतीहैं॥

आठवांप्रकार स्थिररगों का वर्णन॥

यहकईरेखा फुदकनेवाली रगोंकीतरहहैं कुछअन्तरनहीं सिवाय इसके कि एकसमूहहै और इनके बीचमें गाढ़ा रुधिररहताहै परन्तु फुदकनेवाली रगोंमें उत्तम रुधिररहताहै और यह रगें कलेजे की नीचेकीओरसेनिकलतीहैं इनसेलाभयहहै कि कलेजेकीओर भोजन कोखींचतीहैं और कुछरगें कलेजेकेऊपरसे निकलती हैं इनकाकाम भोजन पहुंचाना सम्पूर्णजोड़ोंकोहै इनकानामजोफ़ हैं और इनरगों का शरीर बहुत पतला फुदकनेवाली रगोंसेहै और यह इसकारण है कि नसोंमें लहू गाढ़ा है तो जो इनका चमड़ा हलका न होता तो लहू इनसे सुगमता पूर्व्वक न टपकता (नवांप्रकार सरब है) अर्थात् एक चरबी की चादर जो पक्वाशय को ढांकेहुये है अर्थात् पक्वाशयका पहिनाव है और खोखले खण्डोंके भी अर्थ हैं कि उन खोखले शरीरकेभागोंको गरमीपहुंचाये जब मेदा भोजनसे भरा हो (दशवांप्रकार गशमहै) यह एकभागहै इसकामूल झिल्ली की छाल से है जैसे कपड़ेकीबुनावट और यह उन जोड़ोंपर फैली हुईहै जो हिलते नहीं और यह इसतरह उनपर ढँकीहै जैसे छाल दरख़्तपर होतीहै और उनजोड़ोंकी उनके उपद्रव और रूपकी रक्षा करतीहै और उन जोड़ों को रोगोंसे बचातीहै (ग्यारहवां प्रकार त्वचाहै)

यह झिल्ली और रुबातसे मिलीहै और इसमें शरीर की गरमी के पचाने और निकालनेकेलिये बाल उगेहुये हैं और त्वचामें सख़्ती और नरमी दोनों मिलीहुई हैं कि अपनी हानि और लाभकी रक्षा तय्याररहै और यह अपनेलाभको खींचती और अवगुणकोभगाती और फ़ोगों को जैसे कि मैल पसीना आदि छिद्रों से दूर करती हैं (बारहवांप्रकार हड्डियोंकी मींगीहै) जो हड्डियोंके स्वभावकेअनुसार है और हड्डियोंके बीचमें पैदाकीगईहै कि हड्डियों को सहाराहो जो कि उसका भोजनलहूसे उचितथा इसलिये उसकाभोजन रुधिर से नियत हुआ परन्तु रूपान्तर होकर कि अस्थियों के योग्य उत्तम भोजन बनकर होजावे सो जब हड्डियोंकी मींगीकीतरी और लहू की गरमी मिलजातीहै तो उसमें सरदी और ख़ुश्की पैदा होजाती है उससमय यहमींगी अस्थिभोजन होजातीहै आगे ईश्वरंजाने ॥

द्वितीय प्रकार मिलेहुये जोड़ोंके विषय में ॥

इनकेदोप्रकारहैं एकअन्तरी दूसरावाह्यसो वाह्यकेबहुतसेप्रकार हैं उनमेंसे (प्रथम प्रकार) शिरहै जोकि शिरमें सुनने और देखने का प्यारहै और यह ऊंचेहोने के चाहने वालेहैं क्योंकि देखना उंचाईसे संबंध रखताहै कि दूरकी चीज़ें साफ़ दिखाई दें इसलिये ईश्वरकी मायाने इसतरह समझा कि शरीरमें सबसे ऊंचेशिरब- नायाजावे और शिरजोगोल पैदाहुआ है इसकारण से है कि गोल चीज़ बहुधा कई और घूम सक्ती है और दूसरा कारण यहहै कि गोल शकल सबरूपोंमें उत्तम होतीहै और गोलहोनेपर लंबीभी है इसकारण कि ब्रह्मांडकेपट्ठे के खड़ेहोनेकेवास्ते अलंकृतहुई है और फिर गोल और कुछलंबा पैदाकियागया और खोपड़ीके अंदरभेजेको रखदिया कि उपद्रवोंसे भेजेकीरक्षाकरे कि जैसे अंडेकीरक्षा उसका छिलकाकरताहै नहींतोजल्दी कोई उपद्रव अवगुणकरता जो थोड़ा भी चोटपहुंचती और यही भेजा सम्पूर्ण शरीरके हिलने जुलनेका प्रारम्भ स्थलहै और शिरको बहुत हड्डियोंसे मिलाहुआ बनाया है इसलिये कि जो कोई हड्डीकिसी चोट से चूरहोतो दूसरी पूरीहड्डी

उसके स्थानापन्न होसके और इसखोपड़ीमें आरेकेदांतों की तरह दन्दानेहैं कईउन दन्दानोंमेंसे कइयों में मिले हैं और बाजे माथेके पास स्थिर पायेजाते हैं और उसको अकलीली कहतेहैं इसदृष्टिसे कि वह जगह टोपीपहिननेकीहै और दूसरेतरफ़ के दन्दानोंसे पीठ कीहड्डीफंसीहुईहै और वह(७) केरूपपरहै और वहखंभाजोझिल्लीके दाहनीओरहै उसकानामयह मुस्तकीमहै सूरत उसकीयहहै—

(नेत्रकावर्णन)नेत्रऐसीवस्तुहै जिसकी आवश्यकता संसारभररखता है सोईश्वर ने बहुत सफाईबारीकी और नरमीसेनेत्रकोउत्पन्नकिया और इसकी रक्षा भी अवश्य समझो इसलिये उसकाघेरा हड्डी से बनाया कि जिसके चारोंओर सख़्त हड्डियां लगाईं और आंखको पलकों से छिपाया और उसकी ज्योति को बालों की सहायता से उपद्रवों से बचाया और दोपलकें इसवास्ते नियत कीं जो एक में कुछ उत्पातहो तो दूसरी उसकी जगह रहकर रक्षा का कामदेवे कि देखने वाला एकहीबेर अन्धा न होजावे और इसका स्थान शिरपर नियतकिया क्योंकि इसमें देखने की शक्ति है और भेजेहीं से आंखोंमें उतरतीहै और इसआंखको नरम और उत्तमपैदाकिया और बारीक इतना बनाया कि दूरकीचीज़ के देखनेमें कष्ट न पड़े और जोकि शरीर में ज्योति का स्थान दोछिद्रोंके बदले कि जिस से निशाना देखते हैं वर्त्तमान है तो जितना निशाना देखने का स्थान ऊंचा हो प्रकाश अधिक पहुंचेगा सो ईश्वर ने उसीढंग से उसको उपजाया कि सबजोड़ों को देखती रहे आंख के सातदरजे हैं और इसतरह से बने हैं कि एकखोखला पट्ठा खोपड़ी के नीचे ब्रह्मांड से उठकर आंखके घेरे में पहुंचकर पूर्णहोताहै और आंख में दो परदे हैं एकमोटा दूसरा पतला तो जिससमय वहखोखला पट्ठा आंख की हड्डीके पास पहुंचताहै उस समय झिल्ली का पट्ठा उससे अलग होजाता है और झिल्ली शरीर की हड्डियों के वास्ते फ़र्श के बदलेहै परन्तु सब आंख पर नहींहै उसको दरजा मशीमा (बच्चेदानी) का कहते हैं क्योंकि वह बहुत गर्भाशय से मिलता

है और वह खोखला पट्टा अपने रूप को प्रकट करताहै कि ग़शा हो और उन ग़शाओंकी सहायता करे और उसका नाम शबकीहै फ़िर उसके बीचमें एकखंड कांच के रंगका स्थिर होताहै जिसका नामज़ुजाजिया है और उसके अन्दर एक और खंड गोल लटका होताहै और यह अपनी सफ़ाईमें बरफ़से मिलताहै तो इसकानाम रतूबत जलीदियाहै और ज़ुजाजिया खंडजलीदियाको घेरेहोता है और आधा ऊंचे मकड़ीके जालकी तरहहै जो बहुतसाफ़ औरचमकताहुआहै उसकानाम अन्कबूतिया खंडहै और उसके ऊपर एक और खंड लचकदारहै सपेदरंगतका जिसका नाम बैज़ियाहै फ़िर उसके ऊपर एक नाना प्रकारके रंगकादरजा पुतलियोंमें होता है जो बहुत कालाहै और जलीदियाके सामने है और एक नक़्शहै और खुलामालूम होताहै और वह कभी मुख्यदशा अर्थात् अंधेरे में खुला और प्रकाशमें तंगहोताहै और बहुत अंधेरेमेंभी खुलाहोजाताहै और यह छिद्रही आंखकी स्याहीहै जिसकी झिल्लीआंखके तीसरे खंडपर होतीहै जो उसको घेरेहै–ईश्वरकी क्याबुद्धिमानीहै कि उसने ऐसे खंडोंसे नेत्र उपजाये जो अपना काम अच्छी तरह देतेहैं–(कानका वर्णन) सुननेकी शक्तिको कुछ लाभ नहीं देता परन्तु वायुके परस्पर वेगसे कि जबवह भेजेमेंपहुंचतीहै सो ईश्वर ने श्रवण स्थानको सख़्त हड्डियोंसे बनाया जो बहुत पेचदार हैं और दोपट्टोंपर पूर्णहोती हैं और वह पट्ठे भेजेसे उठतेहैं और जो यह हड्डी खुली हुई होती तो उसमें निस्संदेह वायुसे सर्दी पैठकर सुननेकी शक्तिको बाहर करदेती और थोड़ी हवाभी सर्दकर देती क्योंकि उस आश्रय का स्वभावभी शीतलहै इसी कारण सुनने की शक्ति भेजेमें गुप्तहुई और ईश्वरनेकानको खुला पैदाकिया कि उसमें हवा पहुंचकर घूमे और श्रवण शक्तिको बाहरके शब्दोंकी ख़बरदे जो कानतंगहोता तो श्रवण शक्तिको सर्दी और प्रचंडवायु बिजली और कठोर शब्द बहुत हानि पहुंचाते सो इसीलिये ईश्वर ने इसकीशकल पेचदार बनाई कि एकहीबेरहवा न पहुंचे वरन ठह-

रती हुई धीरे २ पहुंचे सोउस पवनका वेग उनपेचों में जो श्रवण शक्तिके मार्गमें हैं ठहरजाताहै जब ठहर जाता है तो उस समय श्रवण शक्ति को ख़बर होती है—(नाक का वर्णन) ईश्वरने जो इस जोड़को बनाया तो लाभ यह है कि मुख की सुन्दरता का अलंकार और सजावट इसीपरहै और इसको हवा के सुड़कने का हथियार बनाया और खींचनेके स्थानोंको खुलाबनाया कि मनुष्य को हवा खींचने की आवश्यकता हरसमय रहती है और रक्षा की दृष्टि से दो छिद्र बनाये कि जो एकमें कोई उत्पात हो तो दूसरा अपने कामपर तय्याररहे और इसको अपनी परिपूर्णबुद्धिमानी से बांसुरी की तरह बनाया कि बेगों को सहे और उसको नरम पैदा किया कि खोलने और बन्द करने में हवा ले जैसा कि लुहारों की धौंकनी में देखाजाता है सो इनछिद्रों के दो प्रकार हैं एकउनमेंसे मुंह के खुलनेकीओर पूर्णहोता है और दूसरा ऊंचाहोकर उसहड्डी कीओर जाताहै जो मुखके खुलनेपर स्पर्शस्थान है सो एकछिद्र से सूंघते हैं और दूसरेसे श्वासलेते हैं और इनछिद्रों की हड्डियां जो टेढ़ी बनाईगई हैं यह कारण है कि उनदोनों छिद्रों में हरचीज़ की गन्ध पहुंचे और यह भी गुण है कि इनकी राहसे भेजेके मलदूरहों और जो इनछिद्रों को सीधा न किया किन्तु टेढ़ा बनाया तो यह कारण है कि जो यह सीधे होते तो हवासीधी शीघ्रहीभेजेमें पहुँच जाती तो भेजेमें उपद्रव करती इसीलिये टेढ़ाबनाया कि हवा बल खाती हुई ऊपर को जावे तो इसीमें इसकीथोड़ीठंढक कमहोजाती है फिर मध्यस्वभाव में प्राप्तहोकर ब्रह्मांडमें पहुंचती है और उनके दोनोंछिद्र कंठ के अन्ततक पूरेहुये हैं इस कारण कि श्वास लेने में सुगमताहो जोऐसा न होता तो कभीघड़ीभरभीमुंहबन्द न रहसक्ता और जो श्वास लेना वहीं से अवश्यहोता तो जिह्वा भोजन को न मालूमकरती और जिह्वाहिलभी न सक्ती और भोजन न चबसक्ता न निगला जासक्ता बहुत खींचकेआया जायाकरता (ओष्ठकावर्णन) मुहँ के सामने दो ओठ पैदा किये हैं कि उनसे दांतों का मांसछिपा

रहे और खानेवाले को खाने के समय सहायता करें किन्तु ग्रास लेने और चबाने और चूसने के हथियारहों और बातकरनाऔर जो कुछ मुखमें लेजानाहो इन्हीं के द्वारा होसक्ताहै और यह दोनोंहोंठ उसमांस से उत्पन्न हैं जो त्वचाकी प्रकृति से मिला है और दोनों कपोलोंके पट्ठे ऊपरकीओर से दोनोंहोंठसेमिलेहैं और टोढ़ीकेपट्ठे नीचेकी तरफ़से मिलेहैं और जबड़ोंकेपट्ठे दोनों तरफ़ दाहने और बायेंहाथसे मिलेहैं और इसीलिये ईश्वरने दोनोंहोठों को मांससे उत्पन्नकिया कि उनकाहिलना और बन्दहोना मनुष्यको सुगमहो और इनका स्वभाव बहुतनरम और थोड़ा कठोर है इसीलिये कि जो पट्ठे इनके पास हों उनके आधीन रहें (मुख का वर्णन) मनुष्य भोजन करने की आवश्यकता रखता है इसलिये उस परमेश्वर ने भोजन के पैठने की जगहको मुखबनाया और ऐसी रीति रक्खीहै कि एकबेर खुले और एकबेर बन्दहोजाय नाक के छिद्रों के विरुद्ध कि यहदोनों खुलेपैदाकियेहैं कि हमेशा खुलेरहकर हवा खींचाकरें और परमेश्वर ने मुखको सीधाबीच से खाली फेफड़े के पट्ठे कीतरह ऐसीसूरत से उत्पन्नकिया कि बहुत सीधा न हो बरन इसरीति से रूप प्रकटकिया है कि उसको भोजन के इकट्ठा होने का घर बनाया है जो वह भोजन आटा होजाने की आवश्यकता रखताहो तो दांत उसको चबाकर आटाबनावें और दोनों ओठोंको खुलने और बँधने की शक्ति दी और इसी दृष्टि से दोनों ओठों के द्वारा मुहँके बन्दहोने की ज़रूरतहुई कि मुखकी तरी जो शब्द के कारण बाहर से मुखमें जातीहै जैसा कि सम्पूर्ण जोड़ों में क्योंकि मुहँ की तरी ग्रास के निगलने और बात करने के समय जिह्वा के हिलने में सहायतादेती है और मुखकीतरी से यह भी गुण है कि हवाको फेफड़ेके पट्ठे में पहुंचातीहै जो कि मनुष्य का जीवन श्वास पर है इसलिये ईश्वर ने दोमार्गबनाये एक नाकका छिद्र दूसरा मुखका छिद्र कि जो एकमें कोई उपद्रव होकर बन्दहोजावे दूसरा कामदे और मनुष्य का जीवन कठिन न हो और जिह्वा सुस्तऔर

नरममांस से मिलीहै और अपनीओर दोनों ऊपर नीचेके तालुओं को खींचती और इनदोनों से एकप्रकार की लार लेतीहै और उस लार को उसभोजन में जो उसे बाहर से मिलता है ख़र्च करती है कि उससे तरह २ का स्वाद जैसे खटाई मिठाई नमकीनआदिपहिचाने और इससे लाभ बातकरने के समय भी है और भोजन को मुखमें हिलाती है ईश्वर की बुद्धिने क्या अच्छीरीति रक्खी है कि जिह्वा हरओर घूमसक्ती है और इसके मूलको बड़ाबनाया कि साबितरहे और जिह्वाकी नोकको ऐसाबनाया कि वह हिलसके और हरओर जावे और मसूढ़ों से मैल आदि की सफ़ाई करे और दांत अतिउत्तम हड्डियों के सार से बनाये हैं जो सब हड्डियों के विरुद्ध हैं और उस हड्डियों के सार को इस तरह समझना चाहिये जैसा कि लोहे के प्रकारों में तेज़ाब दियाहुआ लोहा आगे के दांत चौड़े और तेज़टुकड़े करनेवाले बनाये और दांतोंकेडंकमें नोकें निकालीं कि चीज़ोंको तोड़ें और पीसनेवाले दांतों का सिरा चौड़ा बनाया और सख़्तकिया कि भोजनको पीसें जो इनकासिरा बराबर और चिकनाहोता तो खाईहुई चीज़ कभी न पिसती और जो इनकेसिरे चौड़े न होते तो मुखमें डाली चीज़ न ठहरती और ऊपर के दांत गिन्ती में बहुतबनाये नीचेवालों से क्योंकि ऊपर के दांत लटकेहैं और इससबबसे अपनी स्थिरताके लिये ऐसीवस्तुकी आवश्यकता रखतेहैं जो उनसे अधिकहो और नीचे के दांत अपने स्थानपर हैं तो इनका थोड़ासा होना बहुतहै अर्थात् गिनती में इसकारण कम हैं कि यह लटके नहीं (मसूढ़ोंकावर्णन) अर्थात् वह स्थान जिस पर दांतस्थितहैं और यहदोहैं एकऊपरदूसरानीचे जब ईश्वरनेचाहा कि मुख भोजनकरने, बातकहने, बायुकेलेनेमें हिलतारहे तो नीचले मसूढ़ोंका हिलनाभी अवश्यहुआ क्योंकि नीचेके मसूढ़ोंका हिलना ऊपरकेमसूढ़ोंसे बहुत लाभदायक और सुगम है और इस सुगमता का प्रमाण यहहै कि वहछोटेहोनेके कारण जल्दीहिलसक्ताहै और लाभदायक होने का यहप्रमाणहै कि ऊपरका मसूढ़ाशिर के पास

है और इन्द्रियोंके स्थानके पासहै तो जो ऊपरका मसूढ़ा हिलता तो ब्रह्माण्ड औरइन्द्रियांभी बराबरहिलतीं और इसकारणसे सदा कुछ न कुछउपद्रवहुआकरता जैसा कि बुद्धिमानोंके निकट प्रकटहै सोईश्वरने ऊपरकेमसूढ़ेको स्थिरपैदाकिया और नीचेवालेको हिलने वालाऔर एकहड्डी सदाकेपास पैदाकी सदा वहस्थानहै जो भौंह कान के बीचमेंहै और उसमें छिद्रबनाये और उसको नीचेके मसूढ़े के हरछिद्रसे आधीनकिया कि खोलने और मूंदनेमें सुगमताहो ॥

आठवांअध्याय—बालों का वर्णन ॥

बुद्धिमानों का बचन है कि जो फोगभोजन से बाक़ी रहजाता है जब उसमें गरमी प्रभावकरतीहै उसको टुकड़े करके त्वचासे बाहर निकालतीहै तो कुछ उसमें से पतला है थोड़ासा हिलने जुलनेमें गलजाताहै और जो गाढ़ाहै वह बालों के छिद्रों के मार्ग्गसे बाहर आताहै तो उसीसे बाल उगतेहैं सो उनमेंसे बहुधा बाल सौंदर्य अलंकार और रक्षाकेलिये पैदाहोतेहैं जैसे कि शिरकेबाल कि शिर की सरदी और गरमी के दूरहोने के वस्त्रआदि के बदले और सुंदरता और अलंकार के लिये हैं और रक्षा के लिये भौंहके बाल हैं कि आंखमें गिरनेवाली चीज़को रोककरें और आंखतक न पहुंचने दें मानों नेत्र के वास्ते एक क़िला हैं और सुन्दरता के वर्णन की कुछ आवश्यकतानहीं आपही प्रकटहै और भवोंके बाल कि आंखों को घेरेहुये हैं जालीकीतरह पर हैं कि मनुष्य गर्द और गुबार के वक़्त उनके द्वारा बराबर दृष्टि दौड़ासक्ता है और उनके द्वारा कोई हानि या दुःख आंखों को नहीं पहुंचसक्ता मानों भवें मट्टीपट्टी की राह बन्द कियेहुये हैं बाज़ेबाल ऐसे हैं कि मुखकी सुन्दरताकेलिये उत्पन्नहुयेहैं जैसे दाढ़ी और मूछ सो यह दोनों मनुष्य के सौंदर्य और रूपके कारणहैं यहांतक कि जो दाढ़ी और मूछ पैदा न होती तो पुरुष के मुखमें सुन्दरता भी न होती और बाज़े बाल ऐसे हैं जिनसे कोई सुन्दरता नहीं और गरमस्थानों में निकलते हैं जैसे बग़ल और स्त्री पुरुष का लिंगस्थल यहबाल उस घास के सदृश

हैं जो ओसपड़ेहुये स्थानोंपर उगतीहै और यहप्रकार फोगकेबदले हैं अन्य सम्पूर्ण जीवधारियों के बिरुद्ध कि उनके सम्पूर्ण शरीर के केश सुन्दरता और वस्त्रके स्थानपरहैं ॥

दूसरा प्रकार---वाचकता की उत्पत्ति का वर्णन ॥

ईश्वरकीबुद्धिने शिरको इन्द्रियोंकास्थानबनाया और जोकि कई इन्द्रियां देखने और सुनने की आवश्यकता रखती हैं कि ऊंचेस्थान परहों इसलिये शिरको सम्पूर्ण शरीर से ऊंचा बनाया और ऊंचा स्थानगरदनहै और उसको जोड़ोंकेद्वारा हिलनेफिरनेवालाबनाया कि छओं तरफ़ घूमसके और एक गोल जोड़ को भी बनाया कि सब इन्द्रियोंको लाभ पहुंचावे और एक तरफ़ रहता है परन्तु सर्व ओर मालूमहोताहै औरफ़ेफड़ेके नरखरेको उससेमिलाया और गरदन की सात हड्डियांहैं जो हड्डियां गरदनको उठाती हैं तो यह उचित हुआ कि वह छोटीहों और जो कि नीचेकी हड्डियों के निकलने की जगह हराम मगज़ है इसलिये ईश्वरने इस नीचे की हड्डीको उन ऊपरकी हड्डियोंके पीछे पैदाकिया और उसहड्डीकेनीचेसे आधेछिद्र हैं और यह छिद्र कुछ मध्यमें नहीं हैं किन्तु चारोंतरफ़ हैं इसदृष्टि से कि हराम मगज़ और झिल्ली और हड्डीकोघेरेहैं और भोजनकी इच्छारखते हैं इसलिये हरहड्डीमें एकजोड़को उसछिद्रसेप्रवेशकिया और छिद्रके उत्पत्ति का स्थान पट्ठे और फुदकने वाली और स्थिर रगेंहैं कि हरछिद्रमें प्रवेशकरजांय जोछिद्रपट्ठों और रगोंमें हैं और ईश्वर ने उन छिद्रों की संख्या उतनीही रक्खी जितनी छेदवाले हड्डियोंकी संख्या हैं कि थोड़े होनेपर वह रगें अपने काममें कोताही न करें क्योंकि उसकी कोताही विघ्नकारक होगी और अधिक भी नहों क्योंकि अधिकता व्यर्थ है और ईश्वरने अपनी पूर्ण बुद्धिमानीसे गर्दन को खाली जगह में नलको भोजन और शराब के जानेकेलिये और फेफड़े के नलको फेफड़े में वायुके प्रवेश के वास्ते और एक परदा कंठका बनाया कि वह फेफड़े को भोजन और शराबके जानेके समयछिपावे कि श्वासआने जानेके स्थान में न पड़-

जावे और फिर श्वास लेनेके समय स्थिर होजावे और उस परदे को चबनी हड्डीकी तरह पर बनाया कि अपने पर स्थिर हो और सीधी खड़ीरहै और जब भोजन नलसे उतरने लगे उससमय वह गिरपड़े और इस परदेका गुण यह है कि हवाकी सरदी को काट डाले कि जब उसतक पहुंचै और उसको गरम करे और उसपरदे को सीधा मनके लियेभी बनाया और एक गुण यहहै कि इसपरदे में एक गर्दसी रहती है जो भेजेसे नज़लेको उतरने नहीं देती और फेफड़ेपर उस नज़लेको गिरने नहीं देती नहींतो उसके उतरनेसे खांसी और सिलका रोग होजाया करता और इस परदेकी शकल नेज़े की तरह लम्बीहै औरनल जिसमें से होकर शब्द निकलता है उसमें तीन चबनी हड्डियां हैं और नाना प्रकार से हैं हर एक इन तीनों हड्डियोंमें से अपने रूप और अनुमानके अनुसार हैं॥

तीसरा प्रकार छाती है जो कि छाती मनकी रक्षा करतीहै इस लिये ईश्वरने उसको कठोर बनाया और ग्यारह हड्डियों से बनावटकी जो दन्दानेदार और परकी तरह पर हैं और उसकी पसलियां उसके पास हैं जो श्वास लेने के जोड़ों को घेरे हैं और मन मनुष्यकी परिपूर्णतासे रक्षा करनेवाला है और उसके ऊपर सात हड्डियां दन्दाने और बड़े परोंकी तरह उत्पन्न की और वह सातों चौड़ी हैं कि मनकी रक्षाकरें अर्थात् मनको घेरलें और नरम और चिकनी हैं कि जो हवा उनतक पहुंचती है श्वासके जोड़ों के खुलने और बन्द होनेमें अच्छी तरह पहुंचजाय और मुख्य सीने को इस बातकी आवश्यकताहुई कि उसका अन्दर का हिस्सा खाली नहीं और चिपटभी नजाय कि उसमें फेफड़ा और दिल स्थिर रहे और उसमें सिकुड़ना खुलना होसकें क्योंकि यह सिकुड़ना और खुलना मरने तक अलग नहीं होता और यह छोटी हड्डियां हड्डियों से उत्पन्न कीगई हैं कि दिलकी ढाल बाहरके उपद्रवों के लिये हों और वहप्राण और मुख्यउष्णताके गलनेको रोकती हैं (स्तनोंकावर्णन) स्तन बहुतसी फुदकनेवाली और स्थिर नसोंसे मिले हैं और इसमें

बहुत प्रकारकी रगें हैं जो बहुत पतली हैं और उन पर बहुत रेशे लिपटेहुये हैं और स्तनों में सपेद मांस भरा है जैसा कि गद्दूद और इस सपेद मांसका यह स्वभाव है कि स्तनोंकी रगों में लहू पहुंचकर दूध बनजाता है और ईश्वरने गर्भाशय और स्तनों के मध्य परस्पर मिलीहुई नसें पैदाकीं कि उन्हीं नसों से ऊपर को वह लहू चढ़ता है जिसको बच्चा गर्भाशय में खाता है क्योंकि बच्चे को यह शक्ति नहीं कि गाढ़ा भोजन खासके और दूध हर भोजन से पतला है और स्त्री का गर्भाशय लहूके होनेके कारण मानों एक हौज़के सदृश है सो ईश्वर की ऐसी बुद्धि हुई जब बच्चा बजाता है तो वह रुधिर ऊपरको चढ़ता है और थोड़ा २ होकर दूध का स्वभाव पाता है सो इस रीतिपर स्तनों में दूधका भोजन बच्चेके वास्ते तय्यार होरहता है जैसा कि मेहमान (अतिथि) के आने के पहले घरवाला खानेकी तय्यारी करता है सो यह वही रुधिर है जो स्त्री के ऋतुके समय बाहर निकलता था और ईश्वरकी अद्भुत बुद्धिमानी यह है कि जिसफोगको प्रकृति बाहर दूरकरती थी उसीको ईश्वर ने बच्चे का भोजन माता के उदर में ठहराया फिर उसी रुधिर को स्तनोंमें दूध बनादिया (चौथाप्रकार)हाथमें जोकि ईश्वर की बुद्धि ने चाहा कि कर्मेन्द्रियों से बाह्य वस्तु मालूमकीजावें सोकोईउनमें से उपयोगी और कोई हानि देने वाली फिर उचित हुआ कि उन कर्मेन्द्रियों में कोई ऐसा हथियार नियत किया जाय जिसके द्वारा मनुष्य लाभको ग्रहण और हानिको त्यागकरे इसलिये परमेश्वरने हाथ तीन बड़े भागोंसे उत्पन्नकिया प्रथम—बाज़ू—द्वितीय कोहनी तृतीय हथेली पहले बाज़ूको एक सख़्त हड्डी से बनाया जो कंधे के निकट है और उसका एकजोड़ है कि वह हर ओर हिल सके और वह ऐसा है कि ईश्वरने बाज़ूकी हड्डीके सिरको गोल बनाया और कंधेके सिरेपर मिलाया और यह बराबर इस कारण है कि इसका कामभी बराबर रहै फिर इसको रग और पट्ठोंसे मज़बूतकिया और एक हड्डीको दूसरी हड्डीके साथ मज़बूती से मिलाया क्योंकि हाथ

से नानाप्रकारके कार्य होते हैं और ईश्वरने दोनों कन्धोंको अलगर
बनाया इस तरह पर कि एक दूसरे से न चिपके और दोनों हाथ
दहने और बायेंकी तरफ़ खुलेहों और यहदोनों हाथ आपुसमें आगे
और पीछेसे मिलजाते हैं इसलिये सर्व ओर सुगमता पूर्वक हाथों
का पहुंचना सम्भवित है और ईश्वरने कोहनीसे नीचे कलाई तक
दो हड्डियां उपजाईं जोलम्बाईमें मिली हैं और दो हड्डियांऊपर की
तरफ़ जो अंगूठेसे मिली हैं उनका नाम ओक़ है और ज़न्दआला भी
कहते हैं और जो उंगलियां नीचेकी अनामिका से मिली हैं उ-
नको अगलज़ कहतेहैं और बद असफलभीनामहै और ज़न्दआला
का यह गुणहै कि उसके सबब से कुलबाज़ू हिलता है अर्थात् सीधा
टेढ़ाहो और ज़न्द असफलकी सहायतासे पौंचा खुलता और बन्द
होता है इनका बीच बाज़ूसे इनके काम करनेके लिये महीन है और
दोनों तरफ़ इनके मोटे बनाये क्योंकि बहुधा नसोंकी इनको आव-
श्यकता है बहुत ज़रूरत तो यह है कि जोड़ों के हिलने के बेग के
समय उन दोनोंओर को झुकते हैं ज़न्दआला पेचदार है और गुण
उसका यहहै गिरह गिरह से टेढ़ी होजावै और ज़न्दअसफल सीधा
है कि खुलने और मूंदने की बहुत दुरुस्ती रक्खे ईश्वरने हथेलीको
उन चार हड्डियोंसे बनाया जो एक दूसरी से दूर है क्योंकि उसमें
चार उंगलियां मिली हैं और उसकी हड्डियां कठोर और बहुत प्र-
कार बनाईं क्योंकि कन्धों और पट्ठोंकी बनावट इसी से है सो यह
सीधी रेखाकी रीतिपर है मानों सब हाथका काम इसी पर है और
ईश्वरने उंगलियोंको बनाया कि उंगलियां एक ओर और अंगूठा दू-
सरीओर कि परस्पर पट्ठोंकोमिलादे औरअंगूठेको प्रबल औरमोटा
बनाया और बलमें एकसा और सब उंगलियों को उनके बल और
सुन्दरताके अनुसार कोई छोटी कोई लम्बी कोई मोटी कोई पतली
कि जब मुट्ठी बांधोतो हरएक उङ्गलीका सिरा बराबर आजाय इस-
लिये कि मुट्ठी बँधसके इस दशा पर कि बीच से खाली और बाहर
से बन्द रहे इसी लिये उंगलियों की जड़ मोटीबनाई और वह मुट्ठी

सन्दूक़ की तौर पर होजाती है और अंगूठा सन्दूक़ के तालेकी तरह प्रकटरहता है ईश्वरने उंगलियोंको थोड़ीहड्डियोंसे बनाया जिनका नाम सलामियात है और यहहड्डियां अंदरसे खालीहैं और किसी प्रकारका मांस नहीं है इसलिये कि काम करने के समय आपुस में जमाहोकर एक दूसरेकी सहायकहो और उनके काम भी धीरेनहो और एक हड्डीसे भी उनको नहीं बनाया कि मुट्ठी बंदकरने के समय दुःखहो और हर उंगलीमें तीन हड्डियोंसे अधिक उत्पन्न नहींकिया क्योंकि बहुत जोड़ होते तौभी मुट्ठी न बँधसक्ती जो दो हड्डियां हर उंगलीमेंहोतीं चाहोवह बहुतदृढ़होतीं परंतुउनसेकाम अच्छे न होते और ईश्वरने हथेली को चौड़ी २ हड्डियों से उत्पन्न किया और उँगलियां महीन रक्खीं कि उठानेवाले से उठाई हुई चीज़ के साथ अच्छीरहे और इनहड्डियों को गोल इस कारण बनाया कि कोई उपद्रव इनपरनहो और खाली और सख़्तइसलियेबनाया कि काम पर मज़बूत रहें और ईश्वरने हथेलीको गहरा और उसकीपीठको चपटा बनाया कि जिसवस्तुके पकड़ने की इच्छा करे तुरन्त पकड़ सके और हथेली के अन्दर मांस उत्पन्न किया गया है कि किसी चीज़ के पकड़ने के समय खूब मिलजाय (कंधेकावर्णन) ईश्वरने इसके शिरको दो लाभों से उत्पन्न किया एक यह कि उस से बाज़ू लटकारहे जो छातीसे चिपकाहोता तो उसके चारोंओर खुलेनहोते और इस तरह से हिलझुल न सक्ते और दूसरागुण यह है किजो जोड़ छाती को घेरेहैं उनको यह घेरे और कन्धेमें भी छोटीहड्डियां हैं मानों यह बाज़ू हृदय के लिये पंखोंकी तरह पर हैं और बहुतसे लाभ इसमें हैं जैसे चोटों को दूरकरना आदि और कन्धे की हड्डी बाहर की ओर से महीन होतीहै और भीतर की ओर मोटी और कंधे का मिलाप तरक़ुवा से है तरक़ुवा एक हड्डी का नामहै और उसका गुण यह है कि बाज़ूको ऊपर नीचे की तरफ़ निकलने से रोके और उसकी पीठपर एक बढ़ीहुई हड्डी तिकोनी है और बाहर को झुकीहै और कोना उसका अन्दर की ओर झुका है और यह

कोना हड्डीका जो कन्धे में है पिंजरेकी तरह पर है और यह उस कंधेकी बढ़ीहुईहड्डीके सिवायहै और यह चौड़ीहै और इसमें चबनी हड्डियां भी चौड़ी मिलीहैं इसीकारण यह नरम भी है—(नाख़ून का वर्णन) ईश्वरने मनुष्यके नख इसतरह बनायेहैं जैसे उड़नेवाले पक्षियों के चंगुल और चौपायों के सुम होते हैं और उनसे उँगलियों की मजबूती भी है क्योंकि जो नख न होते तो किसी वस्तु के पकड़ने के समय दुःख उठातीं और छोटे २ और रेजे २ चीज़ों का उठाना भी बहुत कठिन होताहै इसलिये यह नख अपने तौर पर एक हथियार खुजाने घायल करने बाल उखेड़ने और २ ऐसे कामों के लियेहैं और ईश्वरने इन्हें सख़्त नरमी मिले हुये बनाया सख़्तीसे यहलाभ है कि कठोर उपद्रवों से बचारहे और नरमी में यहगुणहै कि टूटनजाय और जोइनको उँगलियोंकी पीठपर फैला हुआबनाया और मांसको चारोंतरफ़जगहदी तो इससेप्रयोजनयह हैकि जल्दी किसीकष्टमें न फँसे और ईश्वरने इसकोसदा उगने की शक्ति दीहै कि काम काजके मुवाफ़िक़ घिसाकरे (उदर का वर्णन) अर्थात् पेट एक झिल्लीहै गोल हृदयसे अंडकोष पर्यंत कि यहअंदर के खंडों को छिपावे मानों यह एक गढ़ाहै ईश्वरने इसको उत्पत्तिमें दोविचारकिये एक यहकिउसके साम्हने इन्द्रियां हैं सोइनकीदृष्टि और ब्रह्माण्ड के बिरुद्ध रक्षाकरता है और दूसरायह है कि जब पेटभोजन आदिसे भराहो फैलने के सबब तनजाता है और जब खालीहो मुख्यरूपपर आजाता है और यह आंतों और पकाशयकी भी रक्षाकरता है ईश्वरनेपेटकोनरमऔरनाज़ुक औरतंगपैदाकिया परन्तु तौभी उसको कुछकठोरता से बलवान् बनाया है इसीवास्ते कि खुला न हो और आंतोंकोभीनरम और तंग नहींबनाया किन्तु सुगमता से बराबरकिया है सो भोजनके पहुंचने के समय पचाने वाली शक्तिकी सहायता करता है (पीठ) ईश्वरने पीठको कई ऐसी हड्डियों से जो दन्दानेदार हैं दृढ़ बनाया कि बड़े २ खंडों की रक्षा करे और उनकी ढालरहै जैसे श्वासलेने मन और भोजन के खंड

और पीठकी हड्डियों को मज़बूत बनाया इसका दृष्टान्त इसतरह परहै कि जबकिश्ती को बनाना चाहते हैं तो पहले एकलकड़ीका तख़्ता बांधते हैं फिर छोटे२तख़्तेउसमेंजमाते हैं इसीप्रकार इस२ रीतिसेपसलियों और शिर और दोनोंहाथ और दोनोंपैर हड्डियां जमी हैं और उसी पीठिकी नीचली हड्डी से शरीर अपने खड़ेरहने और स्थिरतापर बलवान्होता है और इसमें मोहरेदार हड्डियां हैं कि अच्छीतरह सीधी और टेढ़ी होसकें कदाचित् एकहीअस्थि-खण्डहोता तो झुकना कठिनहोता जो कि पीठ मुख्यशरीर को स्थिरता के कारण है तो ईश्वरकी बुद्धि ने बिचारा कि इसकीरक्षा कीजावै इसलियेहर२हड्डीबाहर से कांटेदार और दोनों ओर पैरकी तरह दहने और बायें हाथ से कृपाकी और उनकांटों को चबनी हड्डियों के जौहर से छिपाया और इनपर रबात और पट्ठे चौड़े२ भीमढ़ेहुये हैं और इनकांटोंको सनासनभी कहते हैं क्योंकियहउन उपद्रवों की ढालहै जो बाहर से पीठकी हड्डियोंपर चोटपड़ती है और पीठउस दुःखसे छुट्टीपाती है और उनचबनी हड्डियों के छि-पाने से यहप्रयोजन है कि कइयोंको कइयों से मिलावे इसतरह परकि मानो एकटुकड़ा है और उसपर दोपरदेहोने से यहलाभ है कि नीचेकी हड्डियों को चारों ओर से दृढ़तापूर्वक जमाकिये रहे और जो पीठकी हड्डियां बहुतपैदाहुई हैं उससे यहप्रयोजन है कि जो किसी हड्डीपर कोई दुःखपहुंचे तो और हड्डियां पीठकी रक्षा करें और जोकि मनुष्य को आगेझुकने की आवश्यकता अधिक है तो इसीकारण परमेश्वर ने पट्ठों और झिल्लियों को बाहरकी ओर से मढ़ा और बगलोंकी ओर खालीरक्खा कि हिलने झुकने में सु-गमता और रक्षारहे सो पीठएकगोल खण्डहै कि वह सब दुःखों को उठावे और ऊपरवाले हड्डियों के मोहरे नीचे की ओर झुके हैं और नीचे वाले ऊपरको गयेहैं और यह सब मोहरे आशरे (दश हड्डियोंका जोड़) के बीचमें इकट्ठे हुयेहैं और वारता (पीठलंबीहड्डी) सब मोहरोंके बीचमेंहै और जोकि पीठको टेढ़ाहोनेकी आवश्यकता

है तो जिस ओर वास्त झुकताहै उसी ओर सबमोहरे झुकतेहैं जैसे कमठेके पकड़ की जगहहै और ईश्वर ने पीठकी हड्डी को ठोसन उत्पन्नकिया किन्तु उसमें दन्दानेकी हड्डियां बनाईं कि जिस तरफ़ चाहे कामकाज करनेके लिये पीठ भी झुके और किसी प्रकार की हानि किसी अंगपर न पहुंचे (पहलूकाबर्णन) यह पहलू पसलियों से मिलाहै और उन पसलियों के अंदर मांस कठोर और पतला उनकीरक्षाके लियेहै और उनकोश्वास और भोजनकेआशयोंसेघेरे है और इसीकारण एक हड्डीसे नहीं उत्पन्न किया कि संगीन नहो और इसलिये भी कि जब आशय भोजनसे भरजावें खुलें और हर एक पसलीकी हड्डी झुकी हुई कमानकी तरहपरहै और उनके पास पतली हड्डियांहैं कि टूटनेसे बचें॥

(आठवांप्रकार-पांवकाबर्णन) जोकि पांवसे चलना फिरना बैठना उठना सोना झुकना चिपकनाआदि प्रयोजन है इसलिये परमेश्वर ने चरणको इस रूपका उत्पन्न किया कि इनसबके अनुकूल होसके और पांवमें हाथोंकी तरह उंगलियां निर्माण कीं और हथेली भी कि चरणों के काम भी कुछ २ हाथों के सदृश हों और परमेश्वर ने हड्डियों को हड्डियों और रगोंपर स्थिर किया और पिण्डली की हड्डियोंकी बनावट रान परहै कि पांव मज़बूत रहे हर दशामें चाहे चले या खड़ाहो या बैठे या तकियाकरे हिले ठहरे और बहुत से गुण पांवकेहैं और पांवमें कलाई और तली पैदाकी और यह पांव इस कारण लम्बाहै कि ठहरने और मज़बूत होनेका गुण प्रकटहो कि जब ठहरे तो ठहरनेका हथियार जमारहे और ईश्वरने पांवकी उंगलियों को हाथ के विरुद्ध दूसरे रूपपर उत्पन्न किया कि सब उंगलियां एक सतर में हैं क्योंकि उन सब उंगलियों में जो नाना प्रकारके स्थानों और वस्तुओंपर पड़तीहैं जैसे कुबकी हुई जगह या टेढ़ी आदि और गहराव या पांव की तली पृथ्वी पर रखना और ऊंचे सीढ़ीपर चढ़ना और एड़ी को तिकोनी सख़्त चिपकी हुई हड्डीसे रचा तो उसकी सख़्तीइस कारणहै कि वह शरीरकोसहारेहै

परन्तु उसमें खींचने की शक्ति और उसका पांवके पीछे होना इस कारण है कि शरीर पीछे न गिर पड़े और ईश्वर ने एड़ीको बहुत कठोर चर्मसे छिपाया जो सब जगह के चमड़ोंसे सख़्त होताहै कि सख़्ती सहारले क्योंकि इसपर बड़ी रगड़रहतीहै और एड़ीकेआगे एक हड्डी किश्तीकी सूरतपर है कि पांवके कुबमें ठहराव हो और पृथ्वीसे चारों ओर मिले क्योंकि तलीका पेटा पृथ्वीसे मिला नहीं है और टखनेको पिंडली और एड़ीके मध्यमें रचा कि पांवके खुलने और बन्दरहने में सहायता दे (अन्दरकेजोड़ोंकावर्णन) ब्रह्माण्ड अर्थात् भेजा यह सख़्ती नरमी और चरबीमें मध्यहै और दोझिल्लियोंके बीचमें है और यह मानो मनुष्यके प्राणका सरोवरहै प्राण ब्रह्माण्डसे दरियाके पानीकीतरह निकलता और पट्ठोंमें जारीहोता है यहां तक कि शरीर को घेरलेता है और जो कि भेजे का जौहर बहुत नरम यहां तक कि बहनेपर झुकताहै इसलिये ईश्वरने बुद्धि की कि झिल्लीके परदेमें रहै सो इस परदेको बहुततंगीसे बनाया कि भेजा उसमेंसमाजावे और वह भेजेको बन्द करले और उसकोरक्षा क़िलेकी तरहपर करे फिर खोपड़ी और भेजेसे एक मोटी झिल्ली जो खोपड़ीसे मिलीहुईहै रची और वह झिल्ली भेजेकेलिये अस्तर की तरहपर है कि जब ब्रह्माण्ड फैलनेकेवक्तखुले और इसखोपड़ी से भेजेका बीच जामिले उससमय झिल्लीसे चोटखाय और वहचोट खोपड़ी तक न पहुंचे इसलिये वह झिल्ली ब्रह्माण्डकी सर्व वस्तुओं की रक्षकहै और जो ब्रह्माण्डमें नरमी और चुस्तीका काम बहुतहै इसलिये परमेश्वरने ब्रह्माण्डके वास्ते हड्डियोंसेसख़्तकिला निर्माण कियाजिसकानामखोपड़ीहै और उसगढ़ीकोभेजेसेदृढ़किया कि दूर हीसे उद्नलोंको ब्रह्माण्डसे हटावे और अपनी कठोरतासे भेजेको हानि न पहुंचावे क्योंकि खोपड़ी एकसख़्तहड्डीहै और भेजाहलका है जो वह झिल्ली मोटी भेजेऔर खोपड़ीमें न होती तोदोनों मिल जाते और खोपड़ी की अवश्य भेजे को चोट पहुंचती और सदैव काल भेजेको एक न एक दुःख पहुंचा करता जो उस विश्वम्भरने

कई रुबात ऐसे प्रकट किये जो भेजेके पेटसे खोपड़ी के ऊपर तक प्रवेशित हैं कि वह उन खण्डों को उठावें जो भेजे के पेटोंकोउठाते हैं और उन खण्डों को न गिरनेदें जो नरमीके कारण उसके नीचे हैं इसलिये इस रीति से भेजा सर्व्वदा हर उपद्रव से रक्षितरहा भेजेकी लम्बाईमें तीन पेटहैं और यह तीनों अपनीरहदमें चौड़ान रखते हैं और वह भेजे के पेट का चौड़ान दो खण्ड रखता है तो इनखण्डों मेंसे पहला खण्ड दो बड़ेखण्डों से छोटाहै और यहखण्ड नाक से हवा यानी बाफके खींचने और छींकलेने में सहायता करताहै और दूसरा पेटभी बड़ाहै कि यह बड़ेजोड़ोंको खालीस्थानों को भरताहै और हरामम‌ग़ज़ की यहीं से उत्पत्ति है और इसी से प्राणउगते और स्मरण शक्तिका भी यही स्थानहै तीसरा पेट एक छिद्रकी तरहपरहै जो पहले पेटसे लगाहुआहै और लम्बाहै इससे विचारकी शक्तिको बहुत सहायता मिलतीहै (फेफड़ेका वर्णन)इसे फारसी में शश कहतेहैं यह पहलूसे हृदय पर्यन्तहै और नरमखाली मानो एक फेनसा जमगयाहै और इसकारण ईश्वर ने इस जोड़को इसगुणसे रचा कि दिलको आरामदे क्योंकि दिलको बहुत खुलने मूंदनेको आवश्यकता रहतीहै और इसको सुस्तमांस बनाया कि यह सुस्ती ऊपर लिखीहुई बातोंको सहायता देतीहै इसका यह कामहै कि जो वायु मुखमें जावे उसको खींचे और दिलतक पहुंचाये और फिर गरमहवाको दिलसे खींचकर अपनी ओर शोषे और गरमहवाको दिलसे खींचकर अपनीओर शोषे और बाहर को दूरकरे और फेफड़ा आवाज़ कभी हथियारहै और एक नल खुला जोबनी हड्डियों से बनाहै उत्पन्नहै इससे सर्वदा श्वास आते जातेहैं कि एकदशामें खुलता और दूसरी दशामें तंगहोताहै और इसके तीनकोने चबनी हड्डियों से बनाये और बाक़ी झिल्ली लगाई कि शब्द में सहायता करे और उसमें बाहर की ओर एक हड्डी है कि बाहर के उपद्रवोंको सहे (दिलकावर्णन) यह जोड़ सनोवर वृक्षकी तरह परहै जो सारपदार्थोंकी रक्षाकरताहै और इसके पेट

में लहू और जीवहै इसका मांस बलवान् है कि किसी में न मिले और दिलकेऊपर के भाग मोटेहैं क्योंकि फुदकनेवाली नाड़ियों के उत्पत्तिके स्थानहैं औरदिलकानीचेकाहिस्सागोलहैतुरंजके शिरकी तरह किवह हृदयकी अस्थियोंको अपने तरफ़ोंसे दूरकरे और उस पर एक हलकासा गिलाफ़है जो उसकी रक्षाकरताहै उसकानाम शियाफ़है और यही प्राणोंका सोताहै इसीलिये यह खण्ड शरीर के बीचमें शोभायमान हुआहै और इसकाघर गढ़ीकी तरह जो दो आशयोंके बीच कि आसपास हैं वर्त्तमानहै इसकी रक्षाका स्थान फेफड़े के ऊपरहै और वह छाती पहलू और पीठकी हड्डियों से बनाया गयाहै और उसकेबीच एक खुलीहुई जगहहै जिससे दिल फेफड़े आदिको बहुत लाभहै कि दिल और फेफड़े के खुलने मुंदने में सुगमता होतीहै और उस क़िलेसे दिल और फेफड़ेकी रक्षा भी होतीहै क्योंकि यहगढ़ी सबको गर्मी और सर्दीके उपद्रवोंसे बचा-तीहै और मुख्य उष्णता भी इसीके कारण रक्षित और बाक़ी रहती है और जोकि लहू दिलकेबल और आनन्दका कारण है इसलिये ईश्वरने उसको पतला और गरम बनाया कि मन और मुख्य उ-ष्णताको उपयोगी हो और दिलमें एक खाली जगहहै कि कलेजे से लहू आताहै और उसमें ठहरजाताहै कि वह उस रुधिरको रस बनादेऔरकलेजेके साम्हनेरहै कि उससेलहू उनरंगोंमें जो उसकी ओर मुखकियेहैं सुगमता से पहुंचे जोकि शरीर आवश्यकता रख-ताहै कि उसकेपास दिलसे जीव और मुख्यउष्णता पहुंचे इसलिये दिलमें बाईंओर एकपेट पैदाकिया कि उससे सर्वदा प्राणउठते हैं और यहपेटदाहनेसेबहुत ठंढा और बड़ाहै और इससेप्राणोंकोबहुत लाभ पहुंचताहै और दोनोंपेटकेबीचमें एकआशयहै वहां लहूदाहने से बाईं ओर जारी रहताहै और प्राण बायें से दाहने जाते हैं और फुदकनेवाली नाड़ियोंको बायेंतरफ़ पैदाकिया कि प्राण को सम्पूर्ण शरीर पर जारीकरे और हर एक मुन्फज़ (जारीरहनेकेआशय) से लाभ यहहै कि दो बातें उससे हों एक तो यहहै कि चाहे जितने

हथियार कम हों उनको सहायता करे और दूसरे यह कि प्राण और लहू इसीसे इकट्ठे हों और दोनोंके मिलाप से प्रबल हों और प्राण श्वास होजाते हैं और लहू प्राणमें बढ़जाताहै और हर एक इनमेंसे दूसरेमें इनकी गरमी और प्राण के मिलने के वास्ते बाक़ी रहताहै और जोकि दिल मालूम करनेकी इच्छा रखताहै इसलिये परमेश्वरने एक महीन टुकड़ा पैदाकिया जो दिलकी झिल्लीके पास है और यह टुकड़ा भेजेसे उगाहै और इसमें दोगुणहैं एक यह कि इन्द्रियों के कामोंको मालूम करताहै और पट्ठेको उसके तरफ़ पैदा किया कि दिलसे सबबातें प्रकटकरे सो दूर करने वालेशक्ति उसके दूरकरनेके लिये जोशमें आती है और दूसरागुणयहहै किदिलतो प्राणोंको भोजन देनेवालाहै और यहवहशक्तिहै जो श्वासके कार्य के साथ चलती है जैसे क्रोध भय प्रसन्नता आदि और यह काम शरीरके बाहरसे होतेहैं ईश्वरने जो दिलको बीचमें बाईं तरफ़झुका हुआ पैदाकिया यह कारणहै कि कलेजे का घर खुलाहो और एक तरफ़में दो गरमचीज़े जमा न हों बरन मध्य स्वभाव पर रहें और इसीवास्ते कलेजेको दाहिनीतरफ़ औरदिलबाईंतरफ़ अलंकृतकिया और यद्यपि और तिल्लीमें बहुतसी दरारें हैं परन्तु वह अपने आप गरम नहीं है (कलेजेकावर्णन) यह जोड़ दिलसे नरम जोड़ मांस से बनाहै और तरीबहुत रखताहै और प्राणोंके ठहरनेकी जगह है और भोजनदेनेवाले लहूको जो रगोंकीराह सम्पूर्ण जोड़ोंमें जारी रहताहै घेरेहैऔर यह ऊपरकी पसलियोंके दाहनी नीचेकी ओरहै और इसकारूप गहराईकीओरझुकाहै और एककोनाउसकापक्का- शयसे मिलाहै और उसपर परदाहै और वह उनरुबातोंसे घिराहै जोउसके ऊपरकीझिल्लीके पासहैं और उसकीतहसे एकचीज़उगती है जिसकी सूरत रगकी तरह परहै परन्तु वह वस्तु लहूको घेरेहुये नहींहै और कई तरह पर बटतीहै और फिर उसका हरप्रकार बट- ताहै तो उसके कईभाग पक्काशय की गहराई और कईबार अंगल की आंतों और सायम नामी आंतों और फिर सब आंतोंमें पहुंचते

हैं यहां तक कि सीधी आंतों तक पहुंचते हैं और इन शक्तियों में भोजन कलेजेमें आता इसतरह पर कि कई शक्तियां सुखातीं परंतु तंगीसे खुलेकी तरफ़ निकल जातीहैं यहां तक कि नसोंमें इकट्ठी होतीं और यह नसें कलेजे में बहुत महीन हिस्सों में बटी हैं जब भोजन उनमें पहुंच जाताहै तो उनमें रुधिर हो जाताहै सो और नसोंके द्वारा सम्पूर्ण शरीरमें फैलजाताहै और ईश्वरने कलेजे का धड़ बँधे लहूकी तरह पैदाकिया कि जब भोजन अधपका हो लहू बँध जावे (पित्तेकावर्णन) इसका आशय कलेजेकी गहराईके ऊपर की ओरहै और इसमें दोछिद्रहैं एक बड़ी आंतों और मेदके मल पास है सो पित्ताकलेजे की गहराई से पित्त को अपने छिद्र खींचता और दूसरे छिद्र से आंतोंपर गिराताहै इसकाआकर्षण बुरे दोषों से रुधिर के शुद्धकरने के लियेहै और आंतोंपरगिरान मुख्य फोगों की सफ़ाई के वास्ते है और आवश्यकता के अनुकूल रक्षा भी करता है और जोकि पक्काशय और आंतेंउस फोगसे जो उनमें बाक़ी रहजाता सफ़ाई की आवश्यकता रखतीं हैं और तंगीके सबब निकल नहींसक्ता इसलिये उसमें आवश्यकता पर पित्तगिरताहै तो उसको कफ़के दोषसे जो उसमें सदारहजाता है खालीकरता और धोताहै और जब मेदा भोजनसे खालीहोताहै और बहुत भूखहोतीहै उससमय पक्काशयमें गिरताहै और भोजन का कामदेताहै कि मेदेकीउष्णताकी अधिकहानि न होजावे और मेदेकेबहुत भरने के समय नहीं गिरता क्योंकि उससमय गिरे तो भोजन में मिलकर उसको उपद्रव कारक करदे और परमेश्वर ने उसके दूसरीओर आंतोंमें एकछिद्र पैदाकिया कि उसमेंगिरे और उसको फोगोंसे खालीकरे और उसको चिपकनेवाली चीज़ों और मैलआदिसे शुद्धकरे (तिल्ली) यह लम्बा मांस है और सौदावीलहू को उठाये है और बाईंओर है और उसपर एक झिल्ली लिपटी है और उससे दोपरदे निकले हैं एकपरदा तो कलेजे के पासहै और दूसरा मेदेकेमुखपर और यहपरदा उसके दोनोंछिद्रोंमेंसे सौदावी

दोषको कलेजे के द्वारा सुखाती है कि कलेजा कालेरक्त को न खींचे किन्तु शुद्धरुधिर खींचे जो जलेहुयेदोषोंसे साफ़हो और दूसरेछिद्र से पक्वाशय के मुखपर क्षुधाकी इच्छा के पैदाकरने के लिये आक्- र्षणको और जबतक कि भोजन न पहुंचे जलेहुये दोषको दूरकरता है और मेदे का मुहँ जलेदोष को उसकी खटाई के कारण मालूम करताहै और जोकि तिल्ली पित्तके सामने है इसलिये उसकेस्वभाव और काम भी सामने हैं और पित्ता दाहने हैं और तिल्लीबायें और पित्ते का एक छिद्र कलेजे की गहराई में ऊपर की ओर है और एकछिद्र नीचे है इसलिये कि जलाहुआ दोष पित्त और सम्पूर्ण दोषोंसे गाढ़ाहै तो वह नीचे की ओर झुकताहै और जिसतरह कि पित्त आंतोंको फोगसे साफ़करता है इसीतरह जलाहुआदोष वहां पक्वाशयपर गिरताहै और उसको भोजनकी इच्छादिलाताहै क्या ईश्वर की बुद्धिहै कि रुधिर की शुद्धिका उपाय पित्त और जलेदोष से ठहराया सो इनदोनों से दोलाभ हैं एकसे क्षुधाकीइच्छा और दूसरेसे फोगों का दूरकरना (पक्वाशयका वर्णन) यहआशय गर्दन की लम्बाई की तरह पर है और इसमें तीन दरजे हैं और इसमें महीनलेफ अर्थात् रेशे जिनकारूप पट्ठेकी तरह से है मिले हैं एक लेफ तो लम्बाहै और दूसरा चौड़ा सो लम्बेलेफसे भोजनखींचता है और चौड़े से दूरकरताहै परन्तु पहले भोजन की रक्षाकरता है कि उसमें उष्णता प्रभाव करे और पकावे और कलेजे को प्राण के आधीन बनाया कि उसपर पेट बहुत भरने से हानि न हो और उसकी शकल गोलबनाई कि उसमें भोजन बहुत समावे और उपद्रवों से दूररहे और उसकी गहराईको लम्बाई से बहुत खुला बनाया और जो कि मनुष्य का खड़ा डीलहै और जो कुछ भोजन करता है मेदेमें जाता है इसलिये परमेश्वर की बुद्धि ने चाहा कि मेदेमें गहराई बहुतहो और वहां मेदा हमेशा खुला न रहे क्योंकि उसकी सूरत लम्बी हुई इसलिये जो कुछ उसकी गहराई में है बाहर न आसकेगा और उसके छिद्रको आंतसे पैदाकिया इसका-

रख्ण कि कभी खुले और बंद होजावे क्योंकि वह नीचे है और वह भोजनकी इच्छा रखताहै सो वह चाहताहै कि भोजन इतने समय तक रहे कि पचजावे तो जो खुलाहोता तो निस्सन्देह नष्ट होजाती तो इसीवास्ते उसछिद्रको उसस्वरूपसे पैदाकिया कि जब भोजन मेदेमें पहुँचे उसको बांधे रहे कि जबतक पच न जावे और अपने कामसे मासिका (अर्थात् वह शक्ति जो भोजनको पक्काशयमें रक्षा करती है) की रक्षा करताहै और आंतों के छिद्रको खोलताहै और उसके मुखसे दूरकरनेवाली शक्ति उसके फोगको दूरकरनेकेवास्ते आंतोंमें लेतीहै और सरब (अर्थात् चरबी की चादर जो मेदे और आंतों में लिपटी है) अपने जौहर से मेदे के गरम करने के लिये है क्योंकि यह जौहर अपने आप गरम नहीं है और ईश्वर ने मेदे के मुखपर सरब को इसवास्ते अधिक किया कि विशेषकरके इसीओर शीतहै और मेदे के मुखपर पट्ठा बहुत है और मेदे की गहराई में मांस बहुतहै कि उसकी गरमीसे भोजनपकजावे (आंतोंकावर्णन) यह आंतें मेदे के जौहर से बनीहैं और अन्दर खोलमें खुलीहैं और इसके लम्बान चौड़ान में रेशेहैं और रेशोंमें भोजन पचने के उपशान्त जाता है और यह आंतें मुड़नेवाली और लिपटी हैं और असूर नामी आंतोंमें कईपेंचहैं और उसमें कलेजेसे कई नसें बहुत महीन हैं और इसकारण ईश्वर ने आंतोंको मेदेके जौहर से पैदा किया कि जो कुछ मेदेसे बाक़ीरहा हो पचजाय अर्थात् जो भोजन पक्काशय से न पचसके वह इसमें आकर पचे और इसी दृष्टि से ईश्वर ने उसके खोल को खुलानहीं किया कि जोकुछ उसमें जावे एकसमय तक जमरहे और जो रस उसमें से प्राप्तहो उसकीनसों को कुछ चूसने के लिये मिले परन्तु लम्बाई इनकी इसलिये है कि हर नसमें शुरू से आख़िर तक रस पहुंचजाय कि फोगमें कुछभी भारीपन न रहे परन्तु उसके रेशे इसलिये हैं कि रस को खींचें और चौड़े रेशे रसके दूरकरने के लिये हैं और बवारबनामी रेशे उसके बंदकरने के लियेहैं यह आंतें गिन्ती में छः हैं इनमें से तीन

आंतें बहुत महीन ऊपरकी ओरहैं और बाक़ीतीनजोमोटीहैं वहनीचेको झुकीहैं सो पहली तीन पतली आंतें पक्काशय के मुख के निकट हैं उन्हींका नाम बारहउंगुल की आंतहै क्योंकि नापनेमें बारहउंगल की हैं फिर दूसरीआंतहै जिसको सायम नामी आंत कहते अर्थात् व्रतीक्योंकि यहबहुधा खालीरहतीहै कि रत्तीसारी आंतहै जिसका नाम वक़ीक़है अर्थात् यहआंत उन दोनोंसे महीनहै और यहआंत बहुत मल खाती है और दो नीचे की आंतें रहीं उसके प्रारम्भ को आवर कहतेहैं यह सबसे अधिक खुलीहै और इसमें किसीकीजारी होनेकी जगह नहींहै किन्तुयह आपही थैलीकी तरहहै कभी अंदर और कभी बाहर हुआ करतीहै उसी जारीहोने की जगह से फिर दूसरी आंत जालून नामी है उसका प्रारम्भ दाहनी ओरसे है और यह उदरकी चौड़ाईमें कूलोंकी बाईं ओर तक पहुंचतीहै और तीसरी वह आंतहै जिसे मुस्तक़ीम आंत कहते हैं अर्थात् सीधीहै कोई पेंचनहीं और इस आंतका खोल खुला हुआहै कि मूत्राशयमें मूत्र इकट्ठा होताहै और इसके किनारे पर एक पट्ठाहै जो फोग को जबतक कि मनुष्यइच्छा न करे निकलने नहींदेता (गुरदेकावर्णन) यह खण्ड कठोर मांससे बनाहै और अपने खींचनेकी शक्तिसे रुधिर को पानी से साफ़ करता है और उसका जल इसतरह मूत्राशय में भेजता है कि वह फिर लौट नहीं सक्ता गुरदे दो हैं और दोनों पीठके मोहरेके पहलूमें कलेजे के पास दाहनी ओरहैं दाहनी तरफ़ का गुरदा कुछ ऊंचाहै और इन दोनों गुरदोंकी दो गरदनें हैं एक बड़ी रगोंके पासहै जो कलेजेसे निकलीहै और दूसरी मज़बूत तौर से मूत्राशय के निकट हुईहै और भोजन सिवाय पानी के सारके नहीं पचता और उसका रस भी सिवाय पानीके नहींजाता तो जो कुछ पानी ख़र्च होता है उससे बचकर निकल जानेकी इच्छा रख-ताहै सो इन गुरदों के द्वारा वह पानी खींचकर मूत्राशय की ओर दूर होताहै क्योंकि जब बहुत पानी होताहै तो मूत्राशयमें खिचा-बट पैदा करताहै और दूसरे बहुत मूत्र सख़्तबन्द होजाते हैं और

जो कि पानीका फोग बहुतहै इसवास्ते ईश्वरने दो गुरदों को पैदा किया क्योंकि जो एक होता अवश्यही बड़ाहोता और एकही ओर होतो पीठकी हड्डियों में कोई हानि करता सो ईश्वर की बुद्धिने अवश्य समझा कि दोबनाये जांघ और हरएक दोनों ओरको झुका रहे कि संगीनी सम भावसे रहे (मूत्राशय अर्थात् फुकनेकावर्णन) यहआशय पट्ठोंसेबनाहै इसके दो दरजे हैं जिसमें मूत्रआताहै और उसमें जमारहता है और बाहर निकलने को जबतक इच्छा न करे रोकताहैमूत्राशयपट्ठे से बनाहै किअच्छीतरहमूत्रको जबतकमालूम करसके और जबउसमें पेशाब बहुतभर जाताहै फटनेलगताहै इस के मुंहपर तीनरेशेहैं एक लम्बा कि मूत्रइकट्ठाकरे और एकही बेर उसको दूरकरे क्योंकि पानीकाफोगबहुतहै औरमूत्राशयके स्वभाव में अपनेआप निकलने की हाजत नहींहोती क्योंकि जो ऐसा होता तो अपने आप उसमें से मूत्रनिकल पड़ता बरन अपने अधिकार की शक्ति से उसके निकलने का समय नियत करदिया गया है और मूत्राशय में एकपट्ठा है जो मूत्राशय को आवश्यकताके समय खोलता और बन्दकरता है (उत्पन्नकरने के आशयोंका वर्णन)यह हथियार स्त्री पुरुषदोनों में बराबर है इसकेसिवायकि घूमनेवाली शक्तिने पुरुषों का लिंगउष्णता की अधिकता से बाहर को प्रकट करदिया और स्त्रियोंकालिंग अन्दरकी ओर उष्णता कम होने के कारण है तो जो ज़मीन के जानवरों की तरह पेट फाड़कर देखो तो मालूमहोजाय तो सूचितहोजाय कि स्त्रियोंके स्वभावनेउसअंग को अन्दरकी ओर खींचलिया है सो वह अंदर बाहर नहींनिकल सक्ता परजो उसपर छिलकाहोता है वहपुरुष के लिंगकी चोट से फटजाता है परन्तु बाहरनहीं निकलसक्ता तो जबलिंगको स्त्री की भगमें प्रवेशकरते हैं तो वह सफननामी स्थान में जाता है और यह एकप्रकारकी थैलीहै जिसमें गर्भाशय के पास दोनों अंडकोष होतेहैं और गर्भाशय की गर्दन लिंगकीतरहपरहै जिसतरह से कि मरदोंके अंडकोष बाहर हैं इसके विरुद्धस्त्रियोंकेअन्दर हैं औरइसी

कारण स्त्री के अंडकोष अन्दर गर्भाशय के पहलूमें हैं कि अन्दरका मुंहखुलाहो निदान पैदाहोने के हथियार बहुत हैं उनमें से रगें हैं जिनपर मांसगदूद के प्रकारसेमिला है जिसकी ओर पीठकेरसके फोगगिरते हैं सो उनफोगों को खाताहै कि वहवीर्य होजावें इसी वास्तेइसका वीर्य आशयनाम रखते हैं और इनमेंसे एकऐसीशक्ति है जो इसकामदेव के इकट्ठाहोनेकी शक्तिदेती है और इनकीउत्पत्ति भीगदूदी मांससे है मरदों के अंडकोषसफ़ाक़ीनमेंबनाये हैं जिनकी सूरतभी थैलीकी तरहपर है और उसकोसफ़नकहते हैं और स्त्रियों के गर्भाशयकेपहलूमेंहैं और स्त्रियोंकेअंडकोष पुरुषोंसेछोटे हैं परन्तु पुरुषोंके अंडकोषोंसेचौड़ेअधिकहैंऔर इन्हींदोनोंअंडकोषोंसे वीर्य्य निकलताहै स्त्रियोंका वीर्य्य इनसे निकल कर गर्भाशयके खोल में गिरताहै और पुरुषोंका काम इन्हीं अंडकोषोंसे निकलकर लिंगके छिद्रसे होकर गिरताहै इनमें से एकहथियार पैदाकरनेका लिंगहै यह पट्ठेका अंग और अन्दर से खालीहै और इसमें फुदकने वाली नसें बहुतहैं और बहुतरगेंहैंऔर इसमें अंडकोषकी ओर दो छिद्रहैं जिनसे वीर्य्य लिंगेन्द्री के मुखमें आताहै और वह लिंग का मुख पुरुषोंके लिये स्त्रीके गर्भाशयके बदलेहै और जब ईश्वरने चाहा कि लिंगमें किसी समय खड़ाहोना और तन्नाहो और कभी वह सुस्त होकर सो जायाकरे और उसका खड़ाहोना और तन्ना उत्पत्ति के समय में हुआ करे कि गर्भाशय के मुख तक पहुंच कर वीर्य्य को गिराया करे और दूसरे समयमें सोजावे तो इसी वास्ते परमेश्वर ने कठोर मांस से बनाया जिसका अन्दर खाली है कि जब वायु उसके अन्दर भरी हो तो उसके पट्ठे सख़्त और मज़बूत हों और जब वायु से खाली होजांय तो सुस्त होजावें और ईश्वर ने लिंगको हड्डीसे नहीं उत्पन्नकिया नहीं तो सर्वदाकाल खड़ारहता और सुस्ती न आती किन्तु समभाव पर उसकी उत्पत्तिहुई पट्ठे तो इसलियेहैं कि खिचावट करें और रुबात इसवास्ते हैं कि भोग के समय लम्बा होजाय और इसीवास्ते दोनों स्त्री पुरुषोंके लिंगों पर

हड्डीहै और बहुत कठोरहै कि अपने कामको अच्छीतरहकरे और जब लिंग खड़ाहो तो लिंग को उसके हद से आगे न जानेदे और सिवाय सीधेहोने के और किसीओर न झुकनेदे और ईश्वरनेउसको गुदासे ऊंचेबनाया कि उससे दूररहे और लिथड़ न जावे और न नाभिसेऊपर बनाया क्योंकि उस स्थानसे ऊपर हड्डी नहींहै और हड्डीउसकी सख़्तीकेवास्ते अवश्यथी और लिंगको शरीर के दूसरे स्थनोंपर न बनाया क्योंकि जोड़ जिसजोड़की आवश्यकतारखता है वहउसीके साम्हने अच्छाहोताहै अर्थात् स्त्रीकी योनिकेसाम्हने यह भी हुआ और विषम जोड़ोंको ईश्वरने बीचमें पैदाकिया जैसा कि नाक और मुंह और दिल और मेदा वग़ैरह उत्पत्ति करनेवाले जोड़ोंमेंसे गर्भाशय भीहै और यहपट्ठोंके जौहरसेबनाहै कि आनंद देने के योग्यहो और वहखिँच और खुलसके और जब पेटसेबच्चा बाहर निकले तंगहोकर बँधजावे और मूत्राशय और सीधी आंतों के साम्हने गर्भाशय बनाया गयाहै क्योंकि यहस्थान नरम जोड़ों मेंहै कि इससे बच्चा मिले औरबढ़े पैदाहो और बच्चे शरीरके वास्ते अवश्यहैं कि इसके रहनेकी जगह बहुतनरमहो और उसमेंगरमी भी हो और अन्दर और बाहर के जोड़ोंमें सदातरीरहे और ईश्वर ने गर्भाशयके वास्ते दाहने बांये दोपेट पैदा किये तो दाहने पेटमें गरमी और तरीकोअधिककिया और उसकेबलको अधिकबलवान बनाया और यहशक्ति रुधिर और प्राणके कारणहै जो दोनों दिल से उसमें जातेहैं सो इस पेटकी ताकतसे लड़का पैदा होता है और दूसरे पेटसे लड़की उत्पन्न होतीहै और गर्भाशय में दो जो ज़ायदे (बढ़ाहुआमांस) निकलेहैं और उनगर्भाशय के अंडकोषकेपास हैं और दोनोंके नामकरनरहमहैं अर्थात् यहदोनों मानो गर्भाशयकी शाखाहैं कि गर्भाशय उसशाखाओंसे बीर्यकोखींचे जो स्त्रियोंकेअन्दर के अण्डकोषसे निकलतीहैं गर्भाशयकी एकगर्दनहै जो योनिकेबाहर तकलंबीहै और वहपुरुषोंके लिंगकेछिद्रके बदलेहै औरकुंवारीलड़के बच्चे दानीका मुहँ सिमटा रहताहै फिर बीर्यकेलेनेको खुलजाता है

और बहुतसे इसमें पट्ठे और बहुतचरबीहै और मानोमहीन रगोंसे उन पट्ठोंके बीच बुना गयाहै जो नौ संगम के समय टुकड़े होते हैं और स्त्री के गर्भ धारण के समय गर्भाशय का मुख सूज जाता है और जब प्रसूत के दिन आते हैं या पेटमें बच्चेपर कोई दुःख पहुंचता है तो वहां गर्भाशय इतना चौड़ा होजाता है कि बच्चा निकल जावे और गर्भाशय अपनी ओर को पुरुष का वीर्य अपनी गर्दन द्वारा खींचता है और अपने वीर्य्य को उन्हीं दो शाखाओं से अपनी ओर खींचता है ईश्वर ने गर्भाशय में रुबात एकसां बनाये हैं जो पीठकी हड्डियोंसे घिरेहुये जोड़ोंसे पैवन्द दिये हैं इनका बांधना इस लाभ से है कि गर्भाशय अपने स्थानपर स्थिर रहे और उसका मूत्र और तरफसे जारी किया कि गर्भाशय का खिंचना संभावित हो जब तक कि बच्चा पेटके अन्दररहे और जो इसी मार्गसे मूत्र आता तो बच्चे का ठहरना कठिन होजाता और गर्भाशय उस समय मिलता है कि जब बच्चा पेटसे खाली होताहै इतना जानने वाले लोगोंने विस्तार किया है आगे ईश्वर जाने ॥

कुवा मैन अर्थात् सम्पूर्ण प्रकार की शक्तियों का वर्णन ॥

कुवा एक फरिश्ते का प्रकार है ईश्वर ने इन फरिश्तों को शरीर के बनावट और जोड़ों की शक्तियों की स्थिरता और २ लाभों के लिये उत्पन्न कियाहै इसका दृष्टान्त इस तरह परहै कि मानो एक शहर बसाहुआहै और उसमेंलोग रहते हैं और उसके बाज़ार खुलेहैं और लोग इधर उधर आते जातेहैं और हर पेशेवाले अपने काममें लगेहुये पाये जातेहैं शरीर का हाल सोने या बेहिलने के समय मालूम होताहै जैसा कि रात्रिके समय शहरकी दूकानेंबंद होजाती हैं पेशेवाले सोजातेहैं कहतेहैंकि बदन नक्शःदार मकानात की तरहपर है सो शक्तियां शरीरमें चित्रकारी की तरहपरहैं और जीव दीपककी तरह जो घरके हरकोनेमें उसकाप्रकाश फैलारहता है और उसके प्रकाश से सब घरकी चीज़ें दिखलाई देती हैं और

अन्दर और बाहरकी शक्तियां और सुन्दरता और अलंकार आदि तो जब प्राण अलगहुये यह सबबातें झूठी पड़जाती हैं मानोदिया ठंढा होगया और मकान में अंधेरा होगया सो कुछ दिखाई नहीं देता और यह शक्तियां चारहैं पहली शक्तियां प्रकट हैं और उसका नाम इन्द्रियांहैं और यह पांचहैं पहली स्पर्शइन्द्री यह शक्ति मनुष्य और पशुमेंहै कि किसी दुःखदाई वस्तुकेछूनेसे भागताहै ऐसा नहीं कि कोई ऐसा जीवधारी हो जिसमें स्पर्श इन्द्री न हो तो जो एक सूई शरीरमें चुभ जातीहै तो तुरन्त मालूम होजाता है परन्तुइसके विरुद्ध बनस्पतिहैं कि चाहो जितने टुकड़े २ करो बेखबर हैं सो जो जीवधारी में यह शक्ति न होती तो अपने दुःख सेनबच सक्ता फिर वह आवश्यकता रखता कि जब भोजनदूरहो क्योंकर मालूम करे सो ईश्वर ने दूसरीघ्राण शक्ति उत्पन्न की जिसके द्वारा गन्धपाई जाती है परन्तु फिर नहीं जानता कि किधरसे गन्ध आती है तो उसको भोजन की प्राप्तिमें कोई लाभ नहींदेती इसलिये ईश्वर ने अवलोकन शक्ति उत्पन्नकी कि यहदूर और पासकी चीज़ोंको देखे और उसकी तरकों को मालूमकरे परन्तु फिरभी कुछ कसर रही क्योंकि नेत्रसे मालूम नहीं होताहैकि जो कुछ परदेमें है इसलिये ईश्वरने श्रवण शक्ति कृपाकी और जब तक कि स्वाद की इन्द्रीन होती तो यह लाभदायक न होते क्योंकि जब जीवधारीको भोजन मिलता तो वह स्वाद न होनेसे न पहिचान सक्ता कि मेरे अनुकूलहै या प्रतिकूल (इन सबका विस्तार प्रथम स्पर्श) यहशक्ति सम्पूर्ण देहमेंहै तो जोवस्तु शरीरमें मिले उसको तुरन्त मालूम कर जातीहै जैसे उष्ण शीतल शुष्क कठोर हलकी संगीन आदि वस्तु द्वितीय घ्राणेन्द्रियकीशक्ति इसशक्तिकास्थान ब्रह्माण्डमेंहै और यह शक्ति सुगन्धको जो हवासे ऊपर पहुंचतीहै मालूम करतेहैं तृतीय देखनेकी शक्ति यह शक्ति आंखके पट्ठे के खोलमें बनीहै और यह वस्तुओंका रूप सूर्यकेप्रकाश और रंगोंसे मालूम करतीहै कि जब सूर्य का प्रकाश शुद्ध अंगोंमें पैठता और रंग पैदा करताहै सो वह

सूर्यकाप्रकाश जीवधारी नेत्रकी के पास होताहै और उसमें पैठता है चतुर्थ श्रवण शक्ति यह शक्ति कानमें है और यह शक्ति जो पवन का शब्द हो उसको मालूम करतीहै और उस वायुका हाल ऐसा है जैसा कि पानीमें लहर होतीहै वास्तवमें वायु पानीसे सख़्त है और हलकी और जल्दी पैठतीहै तो जिस समय कोईचीज़ किसी पर गिरी तो उससे वायुदूरकरने और लहर मारनेको उत्पन्नहोती है जैसे कोई चीज़ पानीमें गिरती है तो उसमें ज़ोर होताहै और वहदूरतक पहुंचतीहै जितनी जगह पातीहै और उससेलहर कम पड़जातीहै यहांतक कि जाती रहतीहै निदान जो कुछ मनुष्य को बात करने से अर्थहो उसका मालूम करना सुनने के आधीन है (स्वादकीशक्ति) यह शक्ति जिह्वा के चर्म में है सो यह उस मीठी तरी के द्वारा जो जिह्वा के नीचे है स्वाद आदि का हाल मालूम करतीहै यहतरी उस अंगसे मिली होतीहै जिसमें स्वादकी शक्तिहै और उसके हाल को मालूम करतीहै जो उस अंगके खण्डोंसे मिले होतेहैं और स्वादकी शक्तिको उत्पन्न करती है कि जिससे स्वाद का मालूमकरना बिदित होताहै ॥

अन्दर के कुवा का वर्णन ॥

इनके कईप्रकारहैं आकर्षण शक्ति इसके चारप्रकारहैं खींचनेकी शक्ति १ मासका अर्थात् वह शक्ति जो पक्काशयमें पहुंचेहुये भोजन को रक्षाकरतीहै २ पचने शक्ति ३ दूरकरनेकी शक्ति खींचनेकी वह शक्तिहै कि उपयोगी भोजनको खींचतीहै और वह सम्पूर्ण शरीरमें वर्त्तमानहै परन्तु जो आकर्षण शक्ति मेदेमें है वह बहुत बलवान् है यहांतक कि जो मनुष्यउलटाहो कि उसकाशिर पृथ्वीपरपहुंचे और दोनोंपांव हवापर लटकेहों उससमयभी होसक्ताहै कि भोजन पक्काशयमेंपचे और बाहर न गिरे और हरजोड़को अपनी२ आवश्यकता के अनुकूल आकर्षणशक्तिहै क्योंकि बहुधा एकजोड़का भोजनदूसरे के विपरीत है (दूसरीनामका) यह वह शक्ति है जो आकर्षित बस्तु की रक्षा करती है कि उसमें पचने की शक्ति अपना अधिकार

करे (तीसरी पचने की शक्ति) और यह इस तरहपर है कि भोजन पर जोड़को लिपटाती है कि भोजन हरओर फिरे और उसमें रस नहीं छोड़ती और स्वभाव की रक्षा करती है और फिर वहभोजन शरीरके खण्डका अंश होजातीहै और फिर फोगबनजाताहै (चौथी दूरकरने की शक्ति) यह शक्ति भोजन के फोग को जो पचचुकता है दूर करती है (गाज़िया) इसके चारप्रकारहैं गाज़िया १ नामिया २ मूलिदा ३ मुसविरह ४ (गाज़िया) यह वह शक्ति है कि भोजन को खाने वालेकी सूरत बनातीहै कि जो कुछ पचगया हो उसका बदला मौजूदहो (क़ुव्वतनामिया) वहहै कि शरीर के अंगों को हर जोड़पर आवश्यकताके अनुकूल बराबर बांटती है और इस में और गाज़िया शक्तिमें केवल इतना अंतर है कि क़ुव्वत गाज़िया भोजन को हर जोड़पर बिना विचार और अवकाश के उतारती है नामिया नहींउतारती परन्तु जहांपचनेके कारण आवश्यकता होती है आवश्यकताके अनुकूल पहुंचतीहै (क़ुव्वतमूलिदा) वह है जिससे पैदाकरनेकीवस्तु उत्पन्नहोतीहै जैसे जीवधारियोंमेंवीर्य औरअनाज में दाना और छुहारेमें गुठली (क़ुव्वतमुसव्विरा) वहहै कि जिससे सख़्ती नरमी रंगरूप सूरत सकल हरचीज़ की दुरुस्त होजातीहै॥

कई अद्भुत शक्तियों का वर्णन ॥

यहबल भोजनकेसमय भोजनको अद्भुतरंगसेप्रकटकरतीहैं जैसे पक्काशयमें आशजौकी तरहभोजन होजाताहै फिर उसको वहशक्ति उसको कलेजेमेंखींचती है फिर वह रुधिर होती और फिर कलेजा उसको शरीरभरपर आंतोंसे बांटताहै उस समय हर जोड़में उसका भाग पहुंचता है फिरवह लहू और मांस बहुत पकनेके पीछेहोताहै जैसेकिगेहूं आटा और कैसी२कारीगरी से रोटी पकती है इसीतरह अन्दर के कारीगरयहीबलहैं कि प्रकटके कारीगरोंकी तरह अन्दर कामकरतेहैं अबहम लिखतेहैं कि जबआकर्षणशक्ति केवलखींचतीहै तो यहअवश्यहुआ कि कोईशक्ति सिवाय इसके और भीहो कि वह भोजन कोहड्डियों और मांसमेंपकनेके वास्ते ठहराये रक्खे क्योंकि

भोजनअपनेआप इसयोग्यनहीं तो अवश्य हुआ कि क़ुव्वत यारका भीहो कि भोजनकेअनुमानकीरक्षाकरे और पचनेकी शक्तिसे यहगुण है कि भोजनसे रक्तका स्वरूप उत्पन्नकरे और दूर करने वाले बल से यह लाभ है कि जो आवश्यकता से अधिकहै उसके फोगों को निकालदे सिवायइनके और चारशक्तियां इनकेआधीनहैं एक शक्ति वह है कि भोजनके रसको हड्डियों से जो उसकेवास्ते प्राप्त किया हो चिपकातीहै दूसरा बल वहहै कि अनुमान की रक्षा करता और गोलबनाता जो कदाचित् नाकपर इतनामांस आजावे जितना कि रानपरहै तो वहअंग उसका बड़ाहोकर बुरा मालूम होजाय और मनुष्यका स्वरूप बदलजाय इसलिये उचितहुआ कि आवश्यकता के अनुकूल हरएक जोड़पर रसबटे और तीसरी शक्तिवहहैकि कुछ उत्तमभोजनहो उसको लिंगकेलिये ख़र्चकरे कि उसकावीर्य मनुष्य के उत्पन्न होनेकेलिये बने क्योंकि हरमनुष्य एकदिन ज़रूरमरेगा तो उसके बीजका रहना और तरहसे समझा नहींजाता हां संतान से होसक्ताहै चौथीरूप पैदाकरनेवाली शक्तिहै जो नानाप्रकार के स्वभाओं से उसरती है जोड़ोंकी तरह यह इस वास्ते है कि जोड़ों के नानाप्रकार के रूप अर्थात् लम्बे चौड़े गोलहों या पेटअन्दरसे खालीहो और ठोसका अन्दर ठोसहो और महीन कठोर सख़्तहो इस क़ुव्वतकाम मसव्विरह है इसदृष्टि से कि झिल्लियों के अँधेरे में नाना प्रकार के स्वरूप बनाया करती है और इन सब से अद्भुत पलकें हैं जो आंखोंके ऊपर और नीचेहैं और नेत्रकी श्यामता और माथा नाक होंठ इननक्शों से एकदूसरे के पास प्रकटहोतीहै और जो कि उनका बनानेवाला बिल्कुल उनचीज़ों में दिखाई नहींदेता न अन्दर न बाहर और न इस बनावटको माता जानती न पिता तो ईश्वर का धन्यवाद है कि उसने अपने मित्रोंकीआंखको ज्योतियुत बनायाकि उन्होंने इन वस्तुओं से उस परमात्मा को देखा और अपने शत्रुओं के मनोंको अन्धा बनाया ॥

तृतीयप्रकार ज्ञान की शक्तियों का वर्णन॥

यहशक्तियां मनुष्यके अन्तरमें उपजीहुईहैं और यहपांचहैं (प्रथम इन्द्रियों से मालूम करने की शक्ति—द्वितीयध्यान—तृतीय विचार—(चतुर्थस्मरण—पंचमचिन्तना—इन्द्रियों से मालूमकरनेकी शक्ति का स्थान भेजेमेंहै और यह शक्तिऐसीहै कि सूरतोंको देखनेपर मालूम करलेतीहै और यहशक्ति देखनेकी शक्तिकेसिवायहै क्योंकि हमवर्षा की बूंदको सीधी रेखा की तरह देखते हैं और बिन्दु जो मुख्यकर इससीधी रेखापर दायराहै परन्तु यहदेखना इसदेखनेकी शक्तिके सिवायहै इसकारण कि देखनेकी शक्ति नहींदेखती परन्तु जो उसके साम्हने हो और जो कि बिन्दु और बूंद के सिवाय दूसरा स्वरूप देखने की शक्ति में नहीं पाया जाता सो जो सीधी रेखा और घेरा दिखाई देताहै तो उसदेखनेका बल देखनेकी शक्तिके सिवायहै सो कईसूरतें कि इसशक्ति पर उतरीहैं कभी बाहरसे इन्द्रियों के द्वारा आतीहैं और कभी बाहरसे इसलिये बहुधा ऐसाहोताहै कि विचार करनेकी शक्ति घेरेके बीच बिन्दुबनातीहै (दूसरीध्यानकीशक्ति) वह मालूम करनेवालीके नीचे भेजेके पीछेहै तो जो सूरतें मालूमकरने वाली शक्तिने विदितकी हैं उसके ध्यान में यत्नकरती है (तीसरी) विचार है और यह चिन्तना शक्ति के पीछे भेजे में हैं जो मालूम करनेवाली शक्ति के विदितकी हुई वस्तुओंको मालूम करतीहै जैसे देवदत्त की मित्रता और यज्ञदत्त की शत्रुता और यह वही शक्ति है जो बकरियों में है कि सन्तान को प्रियरखतीहैं और भेड़िये से भागतीहैं (चौथेस्मरणशक्ति) यह भेजे के अन्तमें है और जो बात उसकी समझ में आवे उसकी रक्षा करती है सो विचार मानो स्मरण काकोषाधिपहै (पांचवेंचिन्तना) यहशक्ति भेजेके बीचमेंहै और यह शक्ति विद्यमान पदार्थोंके रूपमें अपनेको ख़र्च करती है और जो स्मरण रखनेवाले को बिस्तार और उपाय संयुक्त अर्थ प्राप्त हुयेहैं ध्यान रखतीहै तो जो वह बुद्धिके आधीनहै और उसका नाम चिन्तनाहै (अन्यप्रकार) इच्छा शक्तियांहैं यह वहशक्तियां

कि अपने लाभकी अभिलाषा में स्वभावको उठाती हैं उनमें से एक खानेकी इच्छाहै क्योंकि खाना सब शक्तियोंका मूलहै और खाने शक्तिसेसबको बलपहुंचताहै यदि मनुष्य में खानेकी इच्छा न होती तो सबशक्तियोंको बल न पहुंचता और जैसा कि मनुष्यमें अन्दर और बाहरकीशक्तियां प्राप्तहुई जो ऐसाहीमनुष्यकी प्रकृति में इच्छान होती तो सब व्यर्थ थीं और हर एक शक्ति कुंठित हो जाती जैसाकि बहुधा रोगियोंको देखा जाताहै कि उत्तमरससंयुक्त भोजन उनके सामनेहै परन्तु इच्छाशक्ति उनमें नहींहै इसलिये इच्छाशक्ति उनकीरुचि नहींकरती सो इसीबिचारसे उनकीशक्तियां सब कुंठित और व्यर्थ रहती हैं सो ईश्वर ने भोजन की इच्छा प्रकटकी कि सम्पूर्ण शक्तियां विद्यमानरहें उनमेंसे एककामदेवकी इच्छाहैकि मनुष्यको भोगकी प्रेरणा सन्तानके होनेके लिये करती है अन्य क्रोधकी शक्ति यह वह बलहै जो जीवधारियों को प्रबल करता जो यह न होता तो जीवधारी अपनेशत्रुओंको परास्तनकरते और सदा दीनरहते और अपनी जान और माल और भोजन को शत्रुओं से न बचासक्ते परन्तु मनुष्य को अन्य पशुओं से इसकी अधिकआवश्यकता रखताहै क्योंकि इनकेशत्रुद्रव्य जीवन अन्तःपुर आदिके लिये बहुतहै सो मनुष्यको दूर करनेकीशक्ति अवश्यहोनी चाहिये (कर्म करनेकी शक्ति) इससे जोड़कोव्यसन आधीनी की और प्रेरणा करतेहैं जैसेकोई मनुष्य तारकोबुनताहै तो उसके अनुसारअपनेजोड़को प्रेरणाकरताहै जो यहशक्ति न होती तो सम्पूर्ण शरीर मनुष्यका शलहुये हाथकीतरह व्यर्थ रहता और कुछ खोल मूंदभी न सक्ता जो पशुको मांगने और भागने का बल न होता तो व्यर्थथा न अपने प्रयोजन की वस्तुकी ओर जासक्ता और न भयके स्थानों से भागसक्ता सो इसी दृष्टि से ईश्वर ने अभिलाषा और भागना दो शक्तियां कृपाकीं ॥

बुद्धि की शक्तियों का वर्णन ॥

औरवहचारहैं उसमें (प्रथम)वहशक्तिहै कि उसीके कारण मनुष्य

पशुओंसे प्रतिष्ठितहैं और यह वहशक्तिहै जिससे मनुष्य बिद्या की प्राप्तिकरताहै इसकानाम अज़ीज़ियाहै और बुद्धिमान इसको हयूलानीकहतेहैं यहशक्तिमनुष्यकेमूलसेमिलीहैइसलिये किमुख्यमनुष्यकेशरीरमें विद्यमानहै और पशुओंमें नहीं(दूसरी)वहशक्तिहै कि विवेकवान् लड़कोंको उपजातीहै जैसा कि विवेकी लड़केकोमालूम होताहै कि दो एकसेअधिक हैं और एकआदमी दो मकान में नहीं रहसक्ता और एक बस्तु एक समय में विद्यमान और अविद्यमान नहीं होती बुद्धिमानों ने इसका नाम अक़्लिबिलमलका रक्खा है (तीसरीवहशक्तिहै) कि उससे कई अर्थ प्राप्तहोते हैं जो अभ्यास द्वारा समझमें आयेहों और इसकानाम अक़्लमुस्तफ़ाद है (चौथी) वहशक्तिहै जिसके कारण हरएक प्रभावकामूल पहिचाना जाताहै सो यह शक्ति जल्दी करनेवाली इच्छा कि जब वह अपना प्रभाव बुरीबातोंकी तरफ़ करतीहै दूरकरतीहै इसकानाम अक़्लबिलफ़ेल है तो जब मनुष्यको यहधारणा बुद्धि प्राप्त हो उसे बुद्धिमान कहते हैं क्योंकि किसीकाममें दरकदेना या उससेदूररहना समयानुसार मालूम होजायेगा और अग्रशोची से हरविषयमें आगेबढ़ेगा और बुद्धिमान दोप्रकार के होतेहैं कि एककेस्वभाव में बुद्धिहोतीहै और दूसरा सीखनेसे पाताहै हज़रतअली पैग़म्बर ने श्रीमुख से कहाहै कि हमनेबुद्धिको दोरीतिपरदेखा एकस्वाभाविक दूसरीअभ्यासिक अभ्यासिक बुद्धि कुछ लाभदायक नहींहोती और जबतक स्वाभाविक नहो जैसा कि अन्धेकेआगे प्रकाश से कुछलाभ नहीं पहुंचता तो पूर्वोक्त इमाम साहब के वचन का उलथा है और मुख्य हदीस जिसका उलथा यहहै वास्तवमें क्या अच्छादृष्टान्त उन्होंनेदिया॥

बुद्धिमान निर्बुद्धि के अन्तर का वर्णन॥

बुद्धि एक ज्योतिहै जो मनुष्य पर प्रकाशमान है इस बुद्धिरूपी ज्योतिके प्रकाशकाप्रारम्भसातवेंबर्ष फिर जितना मनुष्यबढ़ताजावे बुद्धिभी बढ़तीहै चालीसबर्षतक जोकि मनुष्य २ के बीचमें बहुतकुछ प्रकटहै तो इस विषयमें इन्कारनहींकरसक्ते परन्तु बुद्धि और समझ

में अन्तरहै कईबुद्धिमानहैं कि अपनी बुद्धि और समझके बलसे जो बात सैनसेकहीजाय तुरन्त समझजांय और बाज़ेबुद्धिहीन ऐसेहैं कि हज़ार सख़्तीसे कहाजाय नहींसमझतेहैं बाज़े बुद्धिमानधर्मिष्ठ कि जो उनकेमनमेंफुरताहै वह धर्मकीओर होताहै और बाज़ेऐसेहैं कि जो कुछभ्रष्टबुद्धि और नासमझी मन्सूबा करते हैं बहुधा अर्थ भ्रष्ट होता है यहसबबातें मनुष्य की बुद्धिसे मालूमहुई हैं हज़रत रसूल और इब्नइसलामके प्रश्नोत्तरमें जिनकावर्णन हदीसमेंबहुतविस्तार से है और इसी हदीस (अर्थात् रसूलपैग़म्बरकी रचना) के अन्तमें अरश अर्थात् आकाश के गुणों के वर्णन में यों लिखा है जिसका उल्थायहहै कि फ़रिश्तोंने ईश्वरसेकहा कि तूने कोईचीज़ अरश से बड़ीउत्पन्नकी ईश्वरनेवर्णनकिया कि हमनेअरशसेबड़ा बुद्धिको उप-जायाफ़रिश्तोंने कहा हे परमेश्वर बुद्धिकी और अधिक प्रशंसाकर किहम उसेख़ूब समझें ईश्वर ने कहा कि बुद्धिकी प्रशंसा तुममालूम नकरसकोगे कि क्या तुम रेत के किनकों की संख्या करसक्ते हो फ़रिश्तोंने विनयकी कि नहीं फिर ईश्वरने कहा कि तुम जो संसार की रेतके कणभी जानते तौ भी बुद्धिकी स्तुति अच्छीतरह तुम्हारे समझ में न आती सो मनुष्यों में से कई ऐसे हैं जिनको रेत के एककण के बराबर बुद्धि मैंने कृपाकी और किसी को दोकण और किसी को तीन कण और किसी को चार और बाज़ों को इससे अधिक कृपा की है इसके प्रमाण पर अद्भुत कहानियां लिखी हैं (कहानी) एक हकीम किसी रोगी के देखने को गया और नाड़ी और मुख देखने के उपरान्त कहा कि तूने फल खायाहोगा उसने कहा हां उस समय हकीम ने कहा कि अब न खाना पथ्य करना चाहिये दूसरेदिन जब फिर रोगी के पासगया तो नाड़ी के देखने के उपरान्त कहा कि तूने आज मुरग़ का सालन खाया है उसने मानलिया उसके खानेकी भी मनाही की लोगों को आश्चर्यहुआ और हकीम की बुद्धिमानी का निश्चयहुआ हकीमसा॰॰॰ का एक पुत्र था उसने अपनेपितासे कहा कि आपने क्योंकर यहदोनोंबातें

मालूमकीं हकीम ने कहा ऐ बेटे यहबातें कुछ तिब्बके द्वारा मालूम नहींहोतीं किन्तु बुद्धिसे प्रकट होतीहैं जब मैं पहलेदिन उसके घर पहुंचा तो बहुत मेवों के छिलके पड़ेहुये मैंने देखे तो मुझे निश्चय हुआ कि इसरोगीने भी अवश्य खायेहोंगे और उसके मुखसे निर्बलता के चिह्न प्रकट थे और उसकीनाड़ीमें तरी थी इतनीबातों के देखनेपरभी मैंनेकहा था कि शायद तुमने मेवाखायाहै और दूसरे दिन मुरग़ के पंख और पर उसके दरवाज़े पर पड़े थे और उसकी नाड़ीमें भारीपन था तो बुद्धि ने साक्षीदी कि इसने मुरग़ का मांस अवश्य खायाहोगा इसदृष्टि से मैंने उससे यही कहा ईश्वरकी कृपा से दोनों बातें रोगीसे सच्चीपाईं सो लड़केने भी यह हाल सुन कर मनमें कहा इसी रीतिसे हमभी कहाकरेंगे सो एक बीमार केदेखने को गया और उसकी नाड़ी और मुख देखकर बोला शायद तूने गधे का मांस खाया है रोगीने हंस के उत्तर दिया कि साहब कोई गधे का मांसखाता है हकीम बेवक़ूफ़ लज्जित होकर घरपर आये यह खबर उसके पिताको पहुंची उसनेभी पुत्र से कहा हे पुत्र तूने क्योंकर मालूम किया कि रोगीने गधे का मांसखाया है उसने उत्तरदिया कि उसके घरमें गधेके ऊपरकी काठी दिखाईदी मैंने जाना किगधा मारागयाहै और काठी खालीरक्खी है क्योंकि जो गधा जीता होता तो काठी उसकी पीठपर होती हकीम ने कहा कि जो तुम्हारी बुद्धिशुद्धहोती तो निस्संदेह जो कुछ तुमने कहाठीकहोता इसपर क्या उत्तम अली पैग़म्बर का बचनहै कि जब मनुष्य को स्वाभाविक बुद्धि न होतो सुनीहुई बुद्धिकुछलाभ नहींदेती (कहानी) इमामअबूहनीफा कोफी शिष्यों को अपनी सभा में पढ़ाते थे अकस्मात् दूरसे एकमनुष्य प्रकटहुआ जो बिद्वानोंकारूप बनाये और लंबीदाढ़ी कियेथा जबअबूहनीफाकी दृष्टि उसपर पड़ीलोगोंसेकहा अपनीबातचीतमें चैतन्यरहोकि ऐसा न हो कि यहमनुष्य बिद्वान् कोई भूल पकड़े सो वह मर्द आनकर बैठा उस समय अबूहनीफा निमाज़ का वर्णन करतेथे यहांतक कि उन्होंने सुबह की निमाज़

के विषयमें कहा कि इसकासमय दूसरी सुबहके आनेकेसमय आता है और सुबहकी निमाज़कासमय सूर्योदयतक रहताहै सो उसपुरुष नेकहा कि जो सूर्य सुबहके पहले उदय तो उसकेलिये क्याआज्ञाहै तो अबूहनीफा ने लोगों से कहा कि अब कुछ तुम इस मनुष्य का विचार न करो क्योंकि मेरा विचार अशुद्ध निकला (कहानी) शाम के अधिपति के पास एक बाजथा अकस्मात् वह उड़ा शामके अधिपति ने आज्ञादी कि शहरके दरवाज़े बन्दकरो कि बाहर निक॰ लने न पावे वही हाकिम एकदिन एकपनचक्कीके पाससे गया वहां परदेखा कि एक गधेको जोतेहुये घुमारहे हैं और एक घंटा उसके गलेमें लटकताहै सो शामके अधिपतिने चक्कीवालेसे कहा कि इस गधेकी गर्दन में घंटा किसलिये लटकायाहै चक्कीवाले ने उत्तर दिया कि जब मैं किसी और काम में होताहूं या मुझको ऊँघाई आजातीहै तो जबतक घंटेका शब्द आताहै मैं जानताहूं कि गधा घूमरहाहै और जब इसका शब्द नहींआताहै तो मैं मालूम करता हूं कि गधा खड़ाहोगयाहै मैं उसकेपास जाके लकड़ीसे हांक देताहूं हाकिम ने कहा कि जो यहगधा रुकरहे और अपना शिरहिलादे तो क्याकरोगे उसने उत्तरदिया कि जिसदिन मेरागधा ऐसा बुद्धि॰ मान होजायेगा उसदिन मैं आप से कोई और उपाय पूंछ लूंगा (कहानी) लिखाहै कि वज़ीर जातुस्सादातका घोड़ाएकदिन सवारी करते में बिगरा आपने आज्ञादी कि इसका जौकादाना बन्दकरदो कि यहरीति सीखे जब वह कईउपवासों के उपरांत निर्बलहोगया लोगोंने उसकी क्षमामांगी आपने उत्तरदिया कि अच्छा उसको दानादियाजाय परन्तु उसको यह विदित न होनेपावे कि हाकिम ने मेरा अपराध क्षमाकिया (कहानी) जब अबुलहज़ील की स्त्री के प्रसूतिकादिन निकट पहुंचा अबुलहज़ील किसीदाईके पास जाकर बोला कि मेरे घरचलो मेरी स्त्रीके सन्तान होनेवालीहै परन्तु जो तू लड़का जनादेगी तो तुझे एक अशरफी पारितोपिक दूंगा (कहानी) लिखा है किखलीफा मामूंके राज्यमें एकबेरबुग़दाद के दंगले में पान

बढ़आया सो मामूंने नैबाकेपुत्र मन्सूरसेकहा कि इसका उपायकरो उसनेबिनयकी कि सक्कोंको आज्ञादीजावे कि मश्कें उसमें से भर२ केज़मीनपर छिड़कें खलीफ़ा यह सुनकर हँसा (कहानी) अक्सम के पुत्र क़ाज़ी हज़रत यहय्याकेपास एकबापबेटे हाज़िरहुये बापने कहा कि अयक़ाज़ी मेरा लड़का शराब पीनेवाला है और निमाज़ नहीं पढ़ताहै और कुरानतक उसको यादनहीं इसको पत्थरोंसे मारडालो लड़केनेकहा कि मेरा बाप झूठकहता है बापने क़ाज़ीसे कहा किई-श्वर आपको जीतारक्खे कहीं होसक्ताहै कि निमाज़ बे पढ़े क़ुरानके हो क़ाज़ी ने कहा सच है सो पिताने क़ाज़ी से कहा कि लड़के से किसी जगहपरसे क़ुरान पढ़वाइये सो क़ाज़ीने आज्ञादी लड़के ने एक अशुद्ध आयत पढ़दी सो पिताने कहा यहआयत शायद इसने कलयादकीहै दूसरी आयत पढ़वाइये क़ाज़ीने उत्तरदिया कि दूर हो कि ईश्वरने तुमऐसे दोनों बाप बेटोंकेलिये पत्थरोंसे मारडालने की आज्ञादीहै क्योंकि तू आप भी क़ुरान नहीं जानताहै नहीं तो अपने पुत्रकी पढ़ीहुई आयत को क़ुरानकी आयत न मानता ॥

मनुष्य के स्वभाव का बर्णन ॥

मनुष्य के स्वभाव बहुत से हैं उनमें से नुत्क़ है जिसके द्वारा मनुष्य अपने मन की बात को जिह्वा पर लासक्ता है उसमें से हर्ष है जो हँसी दिलाता है और एक रोनेकी शक्तिहै जो शोक के समय रोना लातीहै एक शक्ति बालोंकी है सो शिर के बाल अलं-कार के कारणहैं जो शिरपर बालनहोते तो बुरीसूरत मालूमहोती और स्पर्श शक्तिका गुण व्यर्थजाता और पशुओं के बाल शरीर के वस्त्र और पहिनाव के बदले हैं और जो कि मनुष्य की पोशाक बाहरसेहै इसलिये उसके शिरपरबाल पैदाहोतेहैं कि भेजेकोरक्षा भी हो और मनुष्यकी सुन्दरता भी हो और जो बाल सपेद हो-जातेहैं यह बात सिवाय मनुष्यके और किसी जीवधारी में नहींहै और यह बात बुढ़ापे में होती है क्योंकि उस समय उष्णता कम होजातीहै और दोष शरीरमें पकजाते हैं और शरीरमें सड़ीहुईतरी

होती है और उससे एक प्रकारकी सड़ी भाफ निकलती है जिसके कारण केश श्वेतहोजाते हैं और जब मनुष्य किसी पीड़ित अंग को हथेलीसे मलताहै तो वहपीड़ा कमहोजातीहै हिकमत की किताबों में लिखाहै कि जो मनुष्य किसीके पीड़ित नेत्रको देखे उसकी आंख भी बीमार होजाती है इसीतरह जो किसी का जूठा पानी पिये उसकारोग उसपर प्रभाव करेगा जैसे कोढ़ खाज और सरसाम अर्थात् भेजेकी सरदी गरमी आदि कोढ़ी मनुष्य नंगेपांव जिधरसे निकलजावे उधर घास कभी न जमेगी न कम न बहुत और दूस जीवधारियों के विरुद्ध जो मनुष्यके अंडकोष काटडाले तो उसका शरीर क्षीणहोजाताहै और उसका पसीना दुर्गंधित होजाताहै और उसकी मति बुरी होजाती है भोजन की इच्छा अधिक रहती है हड्डियां लंबीहोजाती हैंउंगलियां टेढ़ीहोजातीहैं और मैथुनकीइच्छा प्रबल होजाती है और बहुधा स्वप्न में उसका वीर्य्यपात हुआ करताहै आयुबड़ी होतीहै और तरीकी अधिकता से बालकम हो-जातेहैं और पांवकी पिंडली बलकी कमी और बदनकी संगीनीके कारण टेढ़ी होजातीहै और तरीके बहुत होनेसे फेफड़ेका मुंह तंग होजाताहै और इसीकारण उसका शब्द महीन चीखताहुआ हो-जाताहै और जिस पशुमें दुर्गंधहो तो वह खस्सीकरनेसे सुगंधित होजाता है परन्तु जहां मनुष्य के अंडकोष काटडाले जायँ दुर्गंध अधिक होगी और अधिक आश्चर्य यहहै कि जब मनुष्य के अंड निकाल डालेजायँ तो थोड़ीसी बात में प्रसन्न और थोड़ीसी में अप्रसन्न होजाताहै और वह किसी तरहका भेद नहीं छिपासक्ता आवाज़ बदल जातीहै यहां तक कि आवाज़ करने पर पहिचान लियाजाताहै और उसको शतरंज आदि खेलकी इच्छा होजातीहै और अंधे मनुष्यको भोगकी इच्छा अधिक होतीहै जिसतरह कि खस्सी आदमी को अंडदोष संयुक्त मनुष्यसे देखनेकी शक्ति अधिक होतीहै सो इसका कारण यहहै कि जब नेत्रकी ज्योति दूरहुई तो मैथुनकी शक्ति अधिकहुई और जब अंडनिकालेगये नेत्रकी ज्योति

अधिक होतीहै क्योंकि इधरका बल उधर चलाजाताहै लिखाहै कि
क़तावहसेपूछा कि अंधोंकेलिये क्या कहते हो कि इनकी बुद्धि और
स्मरण आंखोंवालेसे अधिक होतीहै कहा किइनकी देखनेकी शक्ति
मनमें प्रकटहुई है इसीवास्ते अंधों के मनों में बहुत विचार उठा
करते हैं इसपर इब्नअब्बासका बचनहै जिसका अर्थ यहहै किजो
ईश्वर मेरी आंखोंकी ज्योति को दूरकरदेगा तोमेरे मन और बुद्धिमें
उनकी ज्योति भी आजावेगी और उसके कारण मेरी जिह्वा उपदेशमें
तलवारके बराबर होजावेगी जिस स्त्री को मासिक धर्म्म हो तो जो
वह आगे पीछेसे नंगी होकर आकाश के साम्हने खड़ीहो तो बादल
जाता रहेगा और बुद्धिमानों ने यह भी लिखा है कि जिस पृथ्वीपर
ऋतुके रुधिर के कपड़े पड़े होंगे उस पृथ्वीपर आकाश से पाला न
पड़ेगा जो ऐसी स्त्री नंगीहोकर जंगल में खड़ी होगी तो दुःखदायी
जानवर उसके गिर्द इकट्ठे न होंगे और जो ऐसी स्त्री किसी नहर में
न्हावेगी तो उसका पानी कड़ुवा होजायेगा जो साफ़ शीशेपर द
करे तो उसकी सफ़ाई कम होजावेगी जो पुरुष ऐसी स्त्री से भ
करे उसका आनन्द सुन्दरता सब कमहोजावेंगे जिसको मिरगी
ज़ोर कियाहो ऐसी स्त्री उसके शरीरपर हाथ मलदे अच्छा होज
यदि मासिक धर्म्मवाली स्त्री सर्पके शरीरपर हाथ लगावे तो व
सर्प मरजायेगा और जो ऐसी स्त्री बकरियां चराने जावे तो उस
गल्लेपर कभी भेड़िया हमला न करेगा कदाचित् भेड़िया आवे त
उसके पेटमें पीड़ा होगी यदिमासिक रुधिर के लत्तेको किश्ती प
लटकावें तो विपरीत पवनोंसे रक्षा रहेगी और जिसको चौथे दि
ज्वर आताहो वह स्त्री के प्रसूति के कपड़े पहने तुरन्त अच्छा होजा
(मनुष्य के अंगों का गुण वर्णन) बुद्धिमान् कहते हैं कि जो स्त्रीक
पूरा बाल खारी पानीमें गिरे और उस समय सूर्यग्रहणहो तोज
सूर्य्य साफ़होकर चमकेगा तो वह बाल साफ़होजायेगा यदि म
नुष्य केशोंकी धूनी लेवें तो भूल दूर होजावे यदि इसकी राख ले
पांवकी उंगलियोंकी पीड़ा पर लगावें दूरहो जो मनुष्य के कलेके

किसी धरतीमें गाड़े वहां पर कबूतर वहुत इकट्ठे होंगे जहां आदमी के कल्ले पड़ेहोंगे वहांसे चीते भाग जावेंगे जिसे सर्पने काटाहो वह मनुष्य का भेजा खावे या घाव पर रक्खे तो तुरन्त विष दूरहोगा आदमीके वह आंसू जो प्रसन्नता में निकलतेहैं कोई पिये तो उसका शोक दूरहोगा और इसीसे मिरगी भी दूरहोती है जो चिन्तित मनुष्य का आंसू पीवें वह वहुत रोवें और मनुष्यकी थूक मुख्य बिच्छू के लिये विषहैं जालीनूसने लिखाहै कि एक मनुष्य बिच्छूका मंत्र जानता था तो पहले वह मनुष्य मंत्र पढ़ता था फिर उसपर अपनी मुंहकी थूक फेंकता था और पकड़ लेता था परन्तु वह निहार मुंह बिच्छू पकड़ा करता था अन्तको जालीनूसने उस मनुष्य को बुलाकर पहले भोजन खिलाया फिर बिच्छू मंगाकर साम्हने किया उस समय उसने कितनाही मंत्र पढ़ २ कर थूक डाला परन्तु वह बिच्छू नमरा सो जालीनूस समझगया कि यह प्रभाव जादूकानहीं है किन्तु यह थूक का गुण है लिखा है कि जो मिक़नातीस अर्थात् चुंबक पत्थर पर लगावें उसका स्वभाव लोहे का खींचना जाता रहेगा जिस लड़के का दूधका दांत टूटे परन्तु उखड़कर ज़मीन पर नगिराहो और किसी स्त्री के यन्त्रकी तरह लटकावें वह सदैव काल बांझ रहेगी मुरदे आदमी के दांत दांतों की पीड़ा के समय पास रखना उपयोगी है इसीतरह मुरदेकी हड्डियां चौथिया तप वाले को गुण दायक हैं और मनुष्य की हड्डियों की राख खाना मिरगी दूर करती हैं जालीनूसने लिखा है कि एक मनुष्य मिर्गीकी चिकित्सा में बहुत प्रसिद्धथा निदान बहुत निश्चय करनेपर मालूम हुआ कि मुरदे के हड्डियों की राख खिलाता था जो मनुष्य की आंवल काटी जाती है उसका एक टुकड़ा ज़बरजद के नगीने के नीचे रखकर अंगूठीबनावें तो जो मनुष्य उसअँगूठीको पहनेगा कूलंज अर्थात् पसलीकी पीड़ा उसको नहोगी लड़केके लिंगकी सुपारी सुखाकर थोड़ी कस्तूरी मिलाकर खिलावें तो कुष्ठके प्रारम्भ में बहुत उपयोगी है कभी बीमारी नबढ़ेगी जो लड़केके लिंगको किसी लकड़ी में लटका

कर खेतमें लटकावें वहां टिड्डी नआवेंगी जो लड़केके लिंग को कुत्ते या बिल्ली खावें दीवाने होजावें जो उसको सुखा कर सुरमा लगावें आंखोंके रोग दूर हों जो मनुष्यके नख काटकर उसकी राख जिसको खिलावें वह मित्र होजावे परन्तु शर्त्त यह है कि वह मनुष्य इस टोटके को नजाने मनुष्यके रुधिरको पानीमें मिलाकर पेट की पीड़ा पर मलना पीड़ा दूरकरता है जिस मनुष्य की नासिका से रक्त निकलताहो जो उसीरुधिरसे उसमनुष्यका नाम कपड़े परलिख कर उस कपड़ेको उसके नेत्रों के साम्हने रखदें रुधिर बन्द होजावेगा दीवाने कुत्ते के घाव पर ऋतु का रुधिर लगाना उपयोगी है और छीप और कोढ़ को भी गुणदायक है और जिस आंख में पीड़ाहो तो नेत्रके गिर्द ऋतु के रुधिर का लेपकरें पीड़ा दूर होजा॰ और जो कुंवारी लड़की के ऋतुका रुधिर लगावें सपेदी आंख की नष्ट होगी यदि स्त्री अपने ऋतुका रुधिर अपनी छातियों पर मलल तो छातियां छोटी और सख्तरहेंगी जो बवासीर का रुधिर कुत्ते को पिलावें तो दीवाना होजाय और पुरुषके वीर्यको कोढ़ या छीप य दाद पर मलें दूर हो जो वीर्य को गबीराके तेलके साथ मिला कर किसी स्त्री को खिलावें तो वह प्रीति करनेलगे जो पसीना मनुष्य को हम्मामर्में निकलता है उसको लेकर फोड़े पै लगावे जल्दीपके यदि मिर्गीवाले का पसीना स्त्री अपनी छातियों पर मले दूध इकट्ठा हुआ जारी होगा जो मनुष्यके मूत्रको उबालकर पांव की उंगलियों की पीड़ापर लगावें गुणकरे असमर्थ लड़केका मूत्र तांबेके पात्र में शहद डालकर लगाना आंखकी सपेदीको उपयोगी है और कमल वायुके रोगीको पीना गुणदायक है परन्तु शर्त्त यह है कि रोगीको मालूम न हो बीस बरसकी आयुवालेका मूत्र कुष्ठीको पिलाना लाभ करे यदि ऐसे मूत्र को खाज और दाद पर लगावें गुणदायक है लिखा है कि पूर्व समयमें एक मनुष्यको तिल्लीका रोगहुआ उसने स्वप्नमें देखा कि किसी बड़े ने उपदेश किया कि अपने मूत्र के तीन चुल्लू तीन दिन तक पिये सो उसने ऐसाही किया और उसे आराम

हुआ और यह हाल सुनकर औरोंने भी परीक्षा की तो यह क्रिया सिद्ध निकली बुद्धिमानों ने लिखा है कि लड़कों की विष्ठा आंख में लगाना सपेदीको नष्टकरता है यदि सुखाकर और राख बनाकर नासूरपर लगावें तो उसका उपद्रव कारक मांस निकाल कर बराबर करदेता है जिसको रतीला नामीमकड़ी ने काटाहो उसे मनुष्य कीविष्ठा खिलावें और गरम तन्दूरमें बिठलावें कि उसके पसीना निकलेगा और आरामपायेगा जो मनुष्यकीविष्ठा और भिड़दोनों जलाकर तीन दिवस पर्यंत खाजपर मलें परन्तु हम्माम के अन्दर जो ईश्वर चाहे रोग शांत होगा जो नेत्र में लगावें आंख की लाली और खाज दूरहोगी जो कीड़े मनुष्यकी विष्ठामें से निकलते हैं जो उनको इकट्ठा करके पीसे और सलाई से आंख में देवे तो आंख की सपेदी दूरहोगी (अन्य प्रकार पालू चारपायोंका वर्णन) यह प्रकार सम्पूर्ण पशुओं में सुन्दरता और लाभमें उत्तम होती है जो कि मनुष्य क्षीण शरीर और क्षीण वर्ण और क्षीण गति है और बहुधा अपने शत्रु और अपनी जातिके विरुद्ध जीव धारियों को रखता है सो परमेश्वरने बुद्धिमानीसे पशुओंकाप्रकार मनुष्यकेलियेउपजाया कि मनुष्य उनसे अपनेमनकाकार्यले और इसप्रकारके पशु मनुष्य के लिये पंख और बाज़ुओंकी जगहपर हैं ईश्वर का वचनहै कि घोड़े खच्चर और गधेइसलिये हैं कि तुम उनपर सवार हो और तुम्हारी सुन्दरताहो जैसे घोड़ा कि उसकीबुद्धि मनुष्य से अधिकतर है और कानछोटे दुमलम्बी और समझकाशुद्धगधेसेहै और पूंछकेलम्बेहोने से कीड़ोंका दूरकरताहै जब पशुओंसे तीक्ष्णमतिकी अभिलाषहुई तो अवश्यहुआ कि उनके सुममज़बूतहों इनसे दौड़नेमें दुःखकमहो और अपने प्रबलशत्रु के दूरकरनेके लिये कठोर शस्त्रहों और यह बात ठहरीहुईहै कि जिस पशुकेसुमहों उसके सींग नहींहोते और जिसके सींग हों उसके सुम नहीं परन्तु नख होतेहैं जिनको खुर कहतेहैं और यह इसलिये होतेहैं कि वह उससे अपने शत्रुकोदूर करे क्योंकि इनदोनोंकीउत्पत्ति एकहीमूल वस्तुसे है उस ईश्वरकी

स्तुतिकरताहूं जिसने हरचीज़को वहवस्तुदी जो उसको दरकारथी अब यहांपर कई पशुओंका वर्णन होता है (फरस) अर्थात् घोड़ा यह सम्पूर्ण पशुओं से उत्तम होताहै यहांतक कि मनुष्यके रूपके पीछेयहीअच्छाहै और सम्पूर्ण पशुओंसे सख़्ती और दौड़ने और२ गुणों में उत्तम विशेष करके इसपशुमें शोभा और अंगोंका शुभ होना और रंगकीसफ़ाई और चलनेकीतेज़ी और सवारका आज्ञा पालन गुणहै इन घोड़ोंके प्रकारों में एक चौगानीहोता है जिसकी पीठपर गेंदखेलतेहैं अर्थात् उसकेसवारको इसबातकीआवश्यकता नहींहोती कि उसकी बागमुड़ावे किन्तु आपही घोड़ेकीदृष्टि गेंदकी ओररहतीहै जिधर गेंददेखताहै मुखकरताहै बाज़ाघोड़ा ऐसाहोता है कि अपने मालिकको पहिचानताहै दूसरे की मजालनहीं कि उस पर सवारहो बाज़ाघोड़ा ऐसाहोताहै कि हिरण के शिरपर पहुंचता है कि उसका सवार हिरणपर तलवार का वारकरे सायबकलबीका पुत्र मुहम्मद कहताहै कि अच्छे२ घोड़े सुलेमान को दिखाये गये यह सब हज़ार घोड़ेथे जो उनके पिताकी थातीसे मिलेथे सो जब यहघोड़े हज़रतको दिखायेगये इतनेमें आपकी निमाज़ का समय जातारहा और सूर्यअस्तहुआ उससमय हज़रतने उन सबघोड़ोंको मरवाडाला केवल थोड़ेघोड़े जो दिखानेसे रहगये थे बचरहे मुद्दत केपीछे हज़रतके ससुरोंका समूह सामने आया और विनय करने लगा कि अयहज़रत हमारा निवासस्थान बहुतदूरहै कुछ राह खर्च चाहिये कि पहुंचजावें हज़रत ने उनबचेहुये घोड़ों में से एक घोड़ा देकर कहा कि इस घोड़ेमें यह स्वभाव है कि जब तुम मंजिल पर पहुंचोगे और भोजन के पकाने का विचार करोगे तो जितनी देर में कि तुम आग सुलगाओगे उतनी देर में यह घोड़ा तुमसबों के वास्ते भोजन कहीं से लादिया करेगा सो ऐसाही हुआ उस दिन से उस घोड़े का नाम तोशासवार रक्खागया कहते हैं कि अरब के घोड़े उसीकी नसल में से हैं (घोड़ेकेजोड़ों के गुणोंका वर्णन) जो घोड़ेकेदांत किसी लड़केके बांधें उसको दांत निकलने में दुःख

न होगा और जो ऐसेमनुष्य के शिरकेनीचे रक्खें जो स्वप्नमें दांत पीसताहो तो यहआदत उसकी दूरहोजावे इसका मांस हरप्रकार की बातको दूर करताहै जो दारचीनी के साथ खायें बलकी वृद्धिहो जो पुरानेघोड़े के लिंगको नमक के साथ घिसकर गरम पानी में भिगावें और पांवकी उंगलियोंकी पीड़ापर मर्द्दनकरें गुणकरे और जो इसकी पूछका बाललेकर मकानके दरवाज़ेपर तानदें उसमकान में मच्छड़ न आवेंगे जो सुमको जलावें और उसका धुवां स्त्रीकी भगमेंदें पेटसे मुरदा बच्चा और उसका मलआदि निकल जायेगा यदिदुष्ट घोड़ेके सुमको घरमें गाड़ें चूहे उस मकान में न रहेंगे जब पक्षियों के बच्चे अण्डेसे बाहरहों जो उनको घोड़ेके सुममें पानी पिलाया जाय तो शाहीन आदि शिकारी पक्षियोंसे उनको दुःख न पहुंचेगा जो घोड़े का पसीना लड़के के बगल लिंगस्थल में मलदें बाल न निकलेंगे जो ववासीर में मलें गुणकरे इसमें गांसी भी भिगोनेसे बिषैलीहोजातीहै और उसकेघावकी चिकित्सा असंभवित है इसकी विष्ठाका धुवां भगके नीचेदेना प्रसूतिसे सुगमता करताहै घावका जारी लहू भी इसके रखने से बन्द होताहै यदि विष्टाका रस नाकमें टपकावें नकसीरको लाभदायकहै और कानमें टपकानेसे कर्ण पीड़ा जाती रहतीहै यदि घोड़ेकी लीद और मनुष्य की विष्टा एकदिरमलेकर और मद्यएक दिरम लेकर फफोलोंके कालेघावपर मरहम की तरह लगावें तुरन्त दूर होजाय जो इसमें शहद नमक और नौसादर भी बढ़ावें तो गुदने का निशान मिट जावे सूरत घोड़ेकी यहहै॥ तसबीर नम्बर २९६

(बगल) अर्थात् खच्चर यह जानवर घोड़े और गधे के मैथुन से उत्पन्न होताहै फ़ारसी में इसको अस्तर कहते हैं जो गधानर हो तो उसकी सूरत घोड़ेसे बहुत मिलतीहै जो घोड़ा मादाहो तो गधे से बहुत मिलताहै अधिक आश्चर्य यहहै कि इस जानवरका हर एक जोड़ घोड़े और गधे दोनोंसे मिलताहै इसीतरह कुच और शब्द परन्तु न तो घोड़े कासा समझदार होता है और न गधे कासा

बे समझ खच्चर की मादा की आयु बहुत बड़ी होतीहै परन्तु निस्संदेह नहीं जनती है बाजे लोग कहते हैं कि उसके पेट में बच्चा नहीं रहता है कइयों का वाक्य है कि पेट में बच्चा रहताहै परन्तु बाहर नहीं निकलता क्योंकि उसके निकलने का मार्ग तंगहोता है इसलिये अपनी माताको मारडालता है इसी कारण जो संयोगसे मादा जुफ्तीखातीहै तो तुरन्त उसको दौड़ाते हैं कि वीर्यनिकलजाय क्योंकि जो गर्भवती होगी तो जनने के समय अपने बच्चे के कारण मरजायेगी (खच्चर के अंगोंके स्वभाव का वर्णन) जो कानकी लौकामांस स्त्री खाये तो बांझहोजाय और यही गुण उसके कानके मैलकाहै जो मनुष्य इसके हड्डियोंकी मींगीखाय तो बेहोश होजाय जैसेसोगयाहै जो यही हड्डियोंकी मींगी गर्भवती स्त्रीखाय उसका बच्चा कुरूप और निर्बुद्धिहो उसके दिलका खाना भी स्त्री को बांझ करताहै और जो इसके सुमको पांचदिरम आस वृक्षकातेल मिलाकर गंजे शिरमें लगावें बाल निकल आवें और बालखोरे को भी गुणकरे जिस मकान में उसके सुम या विष्ठा या बालका धुंआकरें वहांसे चूहे भागजावें जो उसके लिंगकोसुखाकर रेशम में बांधकर चारपायोंके बांधें कभी चलनेसे न थकें जो उसका लहू स्त्री बत्ती में लगाकर भगमेंरक्खें बांझ होजायँ जो इसकामूत्र गर्भवती पिये मुरदा बच्चा गिरजाय जो स्त्री को प्रसूति की पीड़ा हो और मूत्र पिये तुरन्त बच्चा उत्पन्नहो जो इसके ज़ंबूर को जो पीछेकी ओर होताहै सुखाकर बवासीरमें धुवांदें आराम होजाय जो इसके माथेका चमड़ा किसी जगहपर जलादें वहां कोई कार्य सिद्ध न हो जो इसके चर्म में पहाड़ी पोदीना बांधकर गर्भवती की भुजामें बांधे गर्भ न गिरेगा सूरत यहहै ॥

तसवीर नंबर २५१

(हुमार) अर्थात् गधा काले जोड़ों वाला बहुत ठंढे स्वभाव का निर्बुद्धिहोताहै कहते हैं कि जो इसका शब्द सुने कुत्ते की पीठ में पीड़ा होतीहै जो कोई बिच्छू के विषसे अधीरहो चाहिये कि गधे

पर सवारहो और दुमकी ओर मुखकरे कि जब वह तेज़ दौड़े विष मनुष्य से गधेमें चढ़जाता है कहते हैं कि जो बीसमिस्काल भारी पत्थर का टुकड़ा उसकी पूंछमें लटकावें तो कभी न चिल्लावे बलैनास लिखताहै कि एक बेवकूफ़ी उसकी यहहै कि शेरको देखकर उसकी ओर दौड़ता है इसबिचार से कि उसकी तेज़ी से शिकार का इरादाउसका सुस्त होजावे जैसा कि बकरी भेड़िये के सामने जातीहै (इसके स्वभाव) जो इसकीहड्डियोंकीमींगीको ज़ैतूनके तेल मेंजोशदेकर शिरमेंमलें शिरकेबाललंबेहों जो उसकाभेजाखावें विस्मरणका वेगहो जो गर्भवतीस्त्रीखाय तो बच्चा अहमक पैदाहो जो उसकेदांत ऐसेमनुष्यके शिरहानेपर रक्खें जिसकोनींद न आतीहो तो तुरन्तसोजाय इसके कलेजे को सुखाकर और पीसकर जिसको चौथिया तपआतीहो उसकायंत्रबनावें तुरंत आराम होजावे जो इस की तिल्लीसुखाकर स्त्रीकीछातीपर मलें दुग्धकी अधिकताहो जो इस का सुमजलमें घिसकर मिरगीवालेको पिलादें उपयोगीहै जो तेल मिलाकर कंठमालापरमलें गुणकारकहै बलैनास कहताहै कि इसके सुमको घिसकर पुराने कोढ़ पर लगावें आराम होजावे जो सुमका धुवां गर्भवतीस्त्री लेवे शीघ्र बच्चा पैदाहो जो उसकोजलाकर और अखरोटके तेल में मिलाकर नासूरपर मर्दनकरें लाभकरे जो पुरुष उसके दुमके तीनबाल स्त्री से मैथुन करने के समय अपनी पिंडली में बांधे जल्दी वीर्य्य पतितहो जो इसका मांसखावे विषके उपद्रवों से बचा रहे और कोढ़वाले को उपयोगी है जो इसके मांस और चरबी को जैतून के तेल में पकाकर लगावे जोड़ों की पीड़ा को दूर करे जो इसकी चरबीको घावपर लगावे गुणकरे और उसके चिह्नों को नाशकरदे जो उसके माथे की त्वचा को जलाकर पानीमेंमिला कर किसी समूह को पिलावें तो उन में परस्पर विरुद्ध होगा और जो उसके अगले दहिने खुरकी अँगूठी बनाकर मिर्गीवाले के गले में लटकावें गुण करे इसका रुधिर बवासीर को गुणकरे इसका दूध लड़के के रोनेको उपयोगी है और इसके दूधको गरम करके

कुल्ली करें दांतों की पीड़ा दूरहो इसका पीना बिषैली चीज़ों और आंतों और पेट और फेफड़े के घाव और लड़कों की खांसी को उपयोगी है जिस मनुष्य को कोड़े से मारा हो या उसको सुस्ती ने सताया हो या बदगोश्त होगया हो या हड्डी फटगई हो जो उसको ताज़ा गधेका चमड़ा उढ़ाके सुलावें तो जागनेपर उसकी पीड़ा दूर होसक्ती है और इसके माथे का चमड़ा मिरगी वाले को गंडे की तरह पर पिन्हावें गुणकरे और जो उसके पूछ के बाल शराब में डालकर किसी को पिलावें वह लड़नेलगे जाख़िज़का निश्चय है जो गधेकी लीदका रस गरम २ पीवें पथरीकी बीमारी दूरहो और कोड़ेखाये दांतों को भी गुणकरे और नकसीर वालेकी नाक में डालना भी लाभदायक है सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर २५६

(हुमारुल बहशी) अर्थात् गोरखर (जंगली गधा) यह जानवर और चौपायों से कठोर होता है और स्वरूपमें सब एकसे होते हैं यहां तक कि पहिचाने नहींजासक्ते इस समूह की मादा बच्चादेने के समय ऐसे स्थानपर चलीजाती है जहां कोई नहीं पहुंच सक्ता और अपने बच्चे कोभी जंगलसे जबतक कि उसका सुमसख़्त न हो ले और दौड़नेकी शक्ति नहो नहींलाती है क्योंकि जो नर इनके नर बच्चे देखते हैं तो अंड निकाल डालते हैं और दूसरे इन जानवरों का यह भी स्वभाव है कि अलग २ नहींचलते चाहे हज़ारों हों मिले रहेंगे इसी दृष्टि से इनका शिकार सुगम होता है अर्थात् शिकारी ऐसी तंग जगहपर घात लगाकर बैठते हैं जहांसे यह निकलते हैं और जब वह निकलते तब शिकार करते हैं तोजो और लौट जावें तो बचेरहते हैं नहीं तो उनका स्वभाव है कि वह यही चाहते हैं कि जहां पहला गधागया है वहीं हमभी जायँ एक प्रकार उनमें से अजदरिया होते हैं अजदर नाम एकघोड़े का जो आरदशेर किसरा के पासथा अकस्मात् वह जंगली होकर जंगल कोचलागया और गोरखरों में जामिला तो जो उससेनसलबढ़ीवह

अजदरियाकहलाई यहप्रकारउत्तमहोती है (स्वभाव) जो इसकी हड्डियोंकीमांगी को पारें और तेल में घिसकर मलें गुणकरे और अधिकउसको उपयोगीहै जो बिछौनेपर मूत्रकरताहै जोइसके पित्ते को जिसको वारीसेतप आताहोअपने शरीरपरमले आरामपावेशेख रईसका निश्चयहै कि इसकामांस गुलाबतेलकेसाथमलना पांवकी उंगलियोंकी पीड़ाकोगुणकरे और उसकोचरबीछीपपरमलनालाभ करे और जो पेटकीपेचिशमें इसकालिंग चीरकर और उसमेंनमक और केसरमिलाकर खायेंगुणकरे और जोमहीनेकी पहलीतारीख़ को उसके सुमकी अँगूठी बनाकर उन्माद और मिरगीवाले रोगी के गलेमें लटकावें तो यहरोगजातेरहैं और जो सुमजलाकरसुरमा बनावें आंखकी अंधेरी और रतौंधी को उपयोगी है और इसकी लीदतन्दूर मेंडालेंतोरोटियांतन्दूरसेछुटकरआगमेंगिरपड़ेंऔर जब उसको सुखाकर अंडेकी सपेदी के साथमिलावें और नाकमेंलगावें तो लहूका निकलना वन्दहोजावे सूरत उसकीयह है॥

तसवीर नम्बर २५६

(उलनोम) नोमउन पशुओं को कहते हैं जिनको चरातेहैं और यह जानवर बहुतहैं और इनकागुणभी बड़ाहोता है और मनुष्यों के समूहसे इनकोप्रीतिहै औरइसप्रकारके जानवरों में बुरास्वभाव नहींहोता और न और जंगली जानवरों की तरह भागते हैं और उनकेदांत औरपंजे और सुमजंगलीजानवरों के हथियारोंकी तरह नहीं होते इसलिये ईश्वरने इससमूह को ऐसेगुणों के साथ उत्पन्न किया कि उनसेलाभ उठासकें सो ईश्वरनेकहा है कि नहींदेखाउन लोगों ने कि हमने उनकेवास्ते उनवस्तुओं को उत्पन्नकियाजिनको हमने अपने हाथसे पैदाकिया था चारपाये और उनजानवरों को तुम्हारेआधीनकिया कि कइयोंपरतुमसवारहोते हो और कइयोंको खातेहो और न सवारी के जानवरोंकी तरहइनके सुमहोते हैं किन्तु सुमकेबदले खुरहोते हैं और शिरपर इनकेसींगहोतेहैं कि जो काम सुमसे होसक्ता है यहअपनेसींगसेलें सोसींग और सुमएकजानवरमें

नहींहोते परन्तु गैंड़ेमें होते हैं और एकसींगशिरपरहोताहै क्योंकि और जगहहोतातोदुश्मनको दूरनकरसक्ता और बैलकोसींगदियेतो यहबात प्रकटहुई कि पशुओंको तीनप्रकार के हथियार कृपा किये सींग या सुमया दांत जबएकनष्टहोताहै तो दूसराउसकेस्थानापन्न होजाताहै और जोकि चारा इनका घास है इसलिये इनका मुख चौड़ा बनाया और दांत तेज़ और जबड़ा सख्त दिया कि जो कुछ दाना छाल बीज मुखमें आवे उसको चबावें और जो कि इनपशुओं को बलकी अधिक आवश्यकता हुई ईश्वरने इनका पेट चौड़ा बनाया कि बहुत सा भोजन समावे और एक आश्चर्य्य यह है कि जो जानवर जल्दी में बेचबाहुआ चारा खालेते हैं तो पीछे उसको पेट से फिर मुख में खींचलाते हैं और फिर खूब चबा के निगलजाते हैं कि पाचकाग्नि को उसके पकाने में कठिनता न हो इसी को जुगाली कहते हैं ऊंट के दांत में कैसाबल है कि रात दिन चलतेहैं और घिसते नहीं और अग्नि ऐसीहै कि सूखी घास को लहू और मांसबनाती है (अबल) ऊंट पशुओंमें अद्भुतथा परन्तु उसकाअद्भुतहोना मनुष्यकी दृष्टिसे गिरगया इसकाकारण यह कि यहबहुत देखनेमेंआताहै हां जिसने न देखाहो और न सुनाहोउससे कह सक्तेहैं कि ऊंट एकबड़ा जानवर और बहुतआज्ञा पालनकरनेवाला होताहै और बोझ उसपर लादतेहैं और उस बोझके लदने परभी उठता बैठताहै और जो एक चूहाभी उसकी महारखींचे तो जिधर चाहे लेजाय और ऊंटकी पीठपर घर ऐसा बनातेहैं और उसपर बहुत से लोग सवार होते और खाने पीनेकी चीजेंलादतेहैं उसको कजावा कहतेहैं उसपर सवार होकर कारीगरलोग अपनी कारीगरीका काम करतेहैं और उसमें ऐसे बैठे रहतेहैं जैसे किश्ती में तथाचआयत साक्षीहै जिसका यह अर्थहै कि वह लोग ऊंटको नहीं देखतेहैं कि उसकी उत्पत्तिकिसतरह कीगईहै जोइस जानवर को दशदिनतक पानीनमिले तो सन्तोष करसक्ताहै और तीनदिन तक बिना खानेके भी रहसक्ताहै और ईश्वरने इसकी गर्दन लंबी

क़ीहै कि हाथपैर के बराबर हो और जब खड़ेहोकर चरनेलगे तो उसको दुःख न हो और उसके होंठ बदनके खुजलाने को जहां पर वह चाहेपहुँचजायँ कहते हैं कि यहजानवरमनमें शत्रुतारखनेवाला होताहै जो शुतरबान उसको मारे तो चाहे कितना समय बीता हो वह उसका बदला लेवेगा और यह जानवर शबात के महीने (रूमीमहीना जिसको गुणकहते हैं) कामीहोकर बहुत खानेलगता है और उनदिनों इसको बहुत मारका भी विचार नहीं होता इन दिनोंमें तीनऊंटका बोझ एक ऊंट उठासक्ताहै उस समय उचित है कि पहाड़ी पोदीनेका रस उसके दोनों नथुनों में डालें कि उसकी मस्ती दूरहो और जब ऊंट जंगलमें बीमारहोताहै तो बलूतके पत्ते और फल खानेसे आराम पाताहै और जो सांपकाटताहै तो केंकड़ा खानेसे अच्छाहोजाताहै बलैनास कहताहै कि केंकड़ा सर्प के विष के दूरकरनेकेलिये बहुत उत्तमहोताहै कहतेहैं कि ऊंटके पित्ता नहीं होता और जो ऊँटके बिलबिलानेके समय गलेमें आजाता है उस को नहीं मालूम क्या कहते हैं (गुण) जो इसकी हड्डियोंकी मींगी को गंदनाके साथ गर्भवती स्त्रीके उदरपर मलें तुरन्त बच्चा पैदाहो कहतेहैं कि ऊंटके पित्तानहींहोता परन्तु उसके स्थानपर एक और चीज़ छिलके की तरह होतीहै और उसछिलकेमें लस होती है जो उसलसकोआंखोंमेंलगावें रतौंधीको गुणकरे और गलेकादर्ददूरहो जो तीन रत्ती लसको मुश्क समेत मिर्गीवाले की नाक में टपकावें बहुत गुणकरे जो कोई सदा ऊंटका कलेजाखाय आंख का ढलका बन्दहो जो तीनबेरा खाय आंख की अँधेरी दूर होजाय जहां पर इसकी चरबी रक्खें वहां सांप न रहेंगे और जो इसके कन्धे को जलाकर पानीके साथ बवासीर परमलें गुण करे और केवल धुवां भी उपयोगीहै बलैनासने लिखाहै कि ऊंटके कानमें एक किनारा पत्थरकी तरह होताहै जब उसको बाहर निकालें बिल्कुल पत्थर होजाताहै तो जबउसको सिरकेकेसाथ पीसतेहैं तो सफ़ेद होजाता है यह विषके दूर होनेके लिये गुण कारक है इसकी हड्डियों को

घिसकर मिर्गीवाले के शिरपर मलें गुणकारी होगा जो मूत्ररोग में इसके बालको बाईं रानमें लटकावें उपयोगीहै या लड़केकी बाईं रानपर जो लड़का बिछौने पर मूत्र करता हो बांधें तौभी दूर हो और जो इसके बालको धरतीमें गाड़ें और उसपर कोई लड़का मूत्र करे तो उस मट्टी को नाकमें डालें लहू का निकलना बन्द होजाय इसका दूध विषके दूर करनेमें बहुत उपयोगीहै जो किसीके दांतों में कीड़ेपर गयेहों और उन कीड़ों से उसके दांतपीड़ा करतेहैं तो इसकेदूधकीकुल्लीकरे गुणकरे जोइसकामूत्र धूपमेंरक्खें यहांतक कि सूर्य्यकी गर्मीसे वह सूखजावे और वह बँधजावे उससमय सलाई आदिके द्वारा नासूरमें भरदें तो गुणकरे जो इसके मूत्रको शिरपर मलें तो बफा को दूर करेगा और जो कोई उसका मूत्र पी ले तो कलेजेकी पीड़ा और मुखका पीलापन दूरहो और कानमें टपकाने से कानपीड़ा में लाभ होताहै शेखरईसने लिखाहै कि जिस मनुष्य को नकसीरकी बीमारीहो और उसकी नाकमेंसे बहुत रुधिरआता होतो वह ऊंटकी मेंगनी अपने शिरपर लेप की तरह पर लगावे जो ईश्वर चाहे तो रोगदूर होजायेगा और इसका लेप घाव के चिह्नको भी दूर करताहै सूरत ऊंटकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर२६०

(बक़र) अर्थात् बैल इससे बड़े २ लाभ होतेहैं और बड़ाज़ोरावर होताहै और मनुष्यका आज्ञाकारी है जो कि बैल मनुष्य की रक्षाकरने वालों में है इसलिये परमेश्वर ने उसके लिये हथियार दुखदाई जानवरों की तरह पैदा नहींकिये मनुष्य इस जानवर की बहुत आवश्यकता रखताहै तो जो इसके पास हथियार होते तो क्योंकर मनुष्यउसपरअधिकारपाता परन्तु कभीनकभी अपनेसींगों से अपना कामकर जाताहै ईश्वरने बैलके ऊपर वालेदांत नहींपैदा किये यह जानवर नीचेके दांतोंसे चारह खाताहै जो इस जानवर को खस्सी न करें तो कमलाभ देताहै इसकारण कि जल्दीबूढ़ाहोजाताहै और जबइसको कामदेवकीअधिकताहोतीहै तो तलवारकी

चोटसे भी नहीं हटता जो तेलसे इसके नाकके नथुनोंमें गरमतेल लगावें मिर्गीआनेलगे और जो उसकेशिरको गरमतेललगावें शब्द न करे जो उसकेनखपर कोईउपद्रव हो और गरमतेल लगावे तो गुणकारीहो बैल कीचाल अच्छी होतीहै जिसकी गतिसे स्त्रियोंका दृष्टान्तदेते हैं जब यह बीमारहो हाथीदांत इसके सींगपर लगावें गुणकरे (गुण) जो इसके सींगों की राख चौथिये के ज्वरवाले को खिलावें आरामहो जो कोई उसे शराबमें पिये कामदेव अधिकहो और नाक में डालने से लहू का बहना बन्दहो इसके दोनों सींगों की धूनी से टिड्डियां भागती हैं या मरजाती हैं जो दोनों सींगोंकी राख सिरके में मिलाकर कोढ़ में लगावें और धूपमेंबैठें गुणदायक है इसकी हड्डियों की मींगी को ताजे तेलमें कजली करके कान में डालना पीड़ा ठहराता है इसका पित्ता चरचटे और मूलीकेबीजमें मिलाकर पानी में उबालें और छीप पर मलें और थोड़ीदेर ठहरे रहें रोग दूरहोगा जो इसको ग़बीरा (एकबड़ावृक्ष जो उन्नाबके वृक्ष सा खिलाहुआ ठण्डेदेशों में होता है) के पत्तोंमें मिलावें और उसको स्त्री भग में बत्ती रक्खे गर्भ धारणकरे उसके पित्ते में एक पथरी मसूर के बराबर होती है जो उस दाने को शाहदाने और खुरफे के पानी में मिलाकर मिर्गीवाले की नाक में टपकावें गुण करे और जो उसके पित्तेको वृक्षमेंलगावें उसवृक्ष में कीड़े न होंगे जो काले गाय बैलकीजिह्वा सुखाकर नींबूके रसमें मिलावें और दसदिरमजिसपरछिड़कें उसकेशत्रु सदैवपरास्तरहें जो बूढ़ेकीमींगनी उसकेपित्तेसे मिलाकर कूलंज अर्थात् पहलूकी पीड़ावाला शाफ़की तरहपर सेवनकरे तो आरामपावे और जो इसकेपित्तेको सुखाकर उसीकेबराबर पीलीगन्धक और गऊकानूधलेकरधुवांदें तो जानवरा भी बच्चाहो तुरन्त प्रसूतिहो यदि सांडकेपित्तेको शहदमेंमिलाकर तालूपरमलें बंधीआवाज़को खोलदे जो कालेबैलका पित्ता आंखमें लगावें ज्योति अधिकहो जो आश्चर्य दिखानेवाला तमाशाकरना चाहे तो एक मटका गर्दनतक ज़मीनमेंगाड़े और उसकेअंदरचरबी

बैलकीमलें तो सब घरके मच्छड़ उस घड़ेमें जाकर इकट्ठे होजाएँ यदि बैलके मुरदे को कंठमालावाले की गर्दनमें लटकावें रोग दूर होगा बैलकामांस अति हानिकरहै और बुरी बीमारियां लाता है जैसे झाईं और सरतान अर्थात् पीठकाफोड़ा और खाज दाद कोढ़ और बहम और पीलपांव आदि और जो बछड़ेकालिंग घिसकरपिये तो वीर्यको बल अधिक हो कदाचित् बछड़े के लिंगको सुखाकर महीन पीसकर आधेभुने अंडेपर छिड़ककरपियें वीर्य अधिकहो जो बैलके नख जलावें और उसकी राखको दांतोंपर मलें बहुत चमक आजावे यह निश्चय बलैनासका है और जो इसके सुमको शहद सिरके और तेलमें मिलाकर मर्दनकरें तो मुखकी झाईं नष्टहो और जो उसकीराख शैतरज अर्थात् चीतकेसाथपकावें और कंठमालाके रोगपर मरहमलगावें कण्ठमाला गलजावेगी और इसकीपूंछ को जिसजगहजलावें उसजगहके रहनेवालोंमेंविरुद्ध प्रकटहोगा यदि कालीगायकादूध जौके आटेमेंमिलावें और नासूर या बवासीर पर उसका लेपकरें तो पीड़ा ठहर जावेगी पैगम्बर साहब ने कहा है कि गाय का दूध बहुधा पियाकरो यह हरवृक्ष को चरती है और इसके दूधमें इसीसबब से अधिक गुण आजाता है गोदुग्ध जरदी और बवासीर में गुणकारक है और लहू इसका सूजन के गलनेमें उपयोगी है और दुखदाई जानवर के घावपर मलना अति लाभ कारी है बलैनास कहताहै कि इसका मूत्र मनुष्य के मूत्र में मिला कर चौथिया तपवाले के चारों हाथ पावँ की उंगलियों में लगावें तुरन्त दूरहो शायद ऐसाहो कि तीनबेर यहक्रिया करनी पड़े और गायके गोबर में अंगूरी सिरकामिलावें और कठोर फफोलोंपरमलें नरमकरदें और पकावे जब मकान में गोबर और माज़ूकाधुंवाकरें तो सब दुःखदाई जानवर भागजावें गाय का गोबर और गेहूं का तेल और सिरकेको आगपर उबालें जब आधारहजाय फिर सूखा गोबर मिलावें जिस जगह घाव में गांसी रहगई हो वहां लगावें तीनदिन में लोहेको बाहर निकालेगी जो सूखेगोबर धुवां योनिमें

दें तो उसगर्भवती के तुरन्त बच्चा पैदाहोजाय जो उसके गोबर को बलूत की लकड़ी के साथ जलाकर उसकीराख को गायके लहू में मिलावें और जिसके शिरपर बाल न हों उसके शिरपर एकमहीने तक बराबर मलें बाल निकलआवेंगे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २६१

(वक़रुल्वहश) अर्थात् बारहसिंगा यहजानवर हरसाल पुराने सींगको गिराकर नये निकालता है जब पुराने सींग गिराने का समय आताहै एकान्तस्थल में जाताहै और जबतक नयेसींगनहीं निकलते छिपारहता है कि कोई उसको मुण्डा न देखे और दोवर्ष का होनेपर यह तौर शुरूहोता है इसकेसींग अन्दरसे ठोसहोतेहैं परन्तु और सम्पूर्ण पशुओं के नहीं होते यह पशु बहुधा बजाने के शब्दपर कानलगाता है और प्रसन्न होता है बीमारी में सांपों को खाकर आराम पाता है और सांप को पूछ की तरफ़ से खाता है और उसके शिरको छोड़देता है और खाने के पीछे पानी पीता है किन्तु गेंगटे को खाताहै कि विष शरीरभर में न पैठे जब सर्प उस को देखताहै अपनीबांबीमें छिपताहै तो यहजानवर बांबीके किनारे जाकरश्वासके जोरसे उसको निकालकर खाताहै कहतेहैं कि कई सवार कुत्तों समेत इसके पीछे दौड़े यह जानवर भागा अकस्मात् मार्ग में सर्पदेखा पहले उसको मार कर खाया फिर दौड़ने लगा अर्थात् सांप की खुशी में अपने प्राणोंकाभी भय न किया (गुण) इसकी हड्डियों की मींगी अर्द्धांग को गुणकरे जिसके पास इसका सींगहो उसकेपास दुःखदायी जानवर न आवें इसीतरह जिस घर में हो वहांपर दुःखदायी जानवर न जावें उसके धुयें से सर्प भाग जाते हैं और उसकी राख दांतों की पीड़ा को लाभकरे जो इसको राखको तेल में मिलाकर चारपायों के फटेहुये हाथ पावँ में लगा- वे लाभकरे जो उसके सींग को गर्भवती स्त्री के बांधे तुरन्त सुग- मता से बच्चा उपजे इसके आंसू विष के दूरहोने के लिये उपयोगी हैं इसका मांस उदर की पीड़ा को गुणकरे कहते हैं कि इसकेदिल

में एक हड्डी होती है जो इसके दिलका लहू शिर पीड़ा में लग
गुणकरे और जो इसका दिल गाय के गले में लटकावें दूध बहु
हो इसका रुधिर बिष के दूर करनेवाला और कुलंज को उपयो
है मूत्ररोध पर इसका हुकना करना गुणकरे इसके चर्म को घर
जलाना सांपों को दूर करता है जो इसके बालों को जलावें चू
भागजावें और जो इसके नख भुजापर बांधेसम्पूर्ण दुःखदाई ज
नवरों से बचें इसका सुम जलाना सांपों को दूर करता है औ
यही गुण इसकी बिष्टा के धुयें में भी है॥

तसवीर नम्बर २६२

(जामूश) इसको फारसी में गावमेश और हिन्दी में भैंसाकह
ते हैं यह बड़े शरीर का पशुहोता है यह कभी नहीं सोता किसी
समय पर आंख बन्द करलेता है कहते हैं कि उसके भेजे में ऊष्म
सदैव काल घूमती रहती है और इसी कारण नहीं सोता औरसब
दुखदाई जानवरों को अपनी तरफ से दूर करता है और नाकाजो
पानी का जानवर है उसका शत्रु है जो कि नाका इतने बड़े शरीर
का जानवरहै तो भी उसको मारता है इसीकारण इस जानवर को
मिसरके रोदनीलके किनारोंपर छोड़देतेहैं कि घड़ियालोंका शिकार
करे शेरसे नहीं डरता बरन उसके सामने जाताहै इसके सींग ब
हुत नोकदार नहींहोते बरन बैलोंकेतेज़ और नोकदार होते हैं
अद्भुत बातहै कि शेरको परास्त करताहै और जोकि शेर बड़ाई
हथियार रखताहै पराजय होजाताहै और क्या ईश्वरकी माया
कि मच्छड़से भागताहै और पानी में जाकर बचता है कहते हैं
जो इसको अंजीर के वृक्षमें बांधें बहुतदीन और निर्बलहोजावेगा
यह जानवर अपनी मातासे जुफ़्ती नहींकरता और जो इसके भे
के जीतेकीड़ोंको किसीपर लटकावें उसको नींद न आवे इसकेमां
खानेसे जूं पड़जातीहैं और जो इसकी चरबी छीप और कोढ़ औ
खाजपर मलें दूरहो सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २६३

(जराफा) अर्थात् शुतरगावपलंग इसका शिर ऊंट से मिलता है और बैलकी तरह सींग और चीतेकी सी त्वचा और बैलकी तरह सुम गरदन बहुतलम्बी होतीहै और दोनोंहाथ दोनों पैरोंसे लम्बे और दुम हिरणकी तरह होतीहै कहतेहैं कि इसकी नसल हब्शकी ऊंटनी और जंगली बैलसेहोतीहै कफ़्तार जिसको हिन्दीमें हुण्डार कहतेहैं वह ऊंटनी से जुफ़्ती करताहै तो उसका बच्चा जो ऊंट हो और जंगली गाय से जुफ़्ती खावे उससे जो बच्चा पैदा हो उसको जराफा कहतेहैं तैमासप हकीमकहताहै कि विषवत् रेखाके निकट उत्तर की ओर गरमी की मौसम में तरह २ के जानवर दरिया किनारे इकट्ठे होतेहैं कामदेव के अधिकवेगसे उनको अपनी जाति का विचार जाता रहताहै वहांपर जुफ़्तीखानेसे ज़राफा पैदाहोता है और समा और गुबारभी वहीं उपजताहै समा वहहै जो भेड़िये का बच्चा हुंडार से हो और गुबार जो हुंडार का बच्चा भेड़ियेसेहो और २ जानवरों से नानाप्रकार की नसलें प्रकटहोती हैं यमन के अधिपतिने एकबेर खलीफ़ाकीभेंटको ज़राफ़ाभेजाथा परन्तु जाड़ेमें उसकीरक्षा न हुई और वह मरगया यह जानवर अद्भुत था इसके गुण कुछमालूमनहीं इसकारण वर्णन न किये सूरत उसकीयहहै ॥

तसवीर नम्बर २६४

(ज़ान) अर्थात् भेड़ इसमें बड़ीबरकतहै कि वर्षमें एक या दोबेर बच्चाजन्ती है और सदा काटीजाती और फ़िर भी इसकी अधिकता रहतीहै परन्तु दूसरेजानवर छः२ सात २ बच्चेजन्ते हैं और उनका निशान कहीं २ एक दो दिखाई देताहै यह जानवर अद्भुत होताहै यहांतक कि मनुष्य की प्रशंसा में कहतेहैं कि अमुकमनुष्य भेड़की तरह पर है भेड़ जब हाथी ऊंट और भैंसको देखतीहै उनके शरीर के बड़ेहोनेपर भयनहींखाती परन्तु भेड़ियेको देखतेही उसके प्राण कांपतेहैं यद्यपि इसजानवर से कुछही भेड़िये के जोड़ बड़े होते हैं परन्तु यह भय उसका स्वाभाविक है जो ईश्वरकी ओरसे है सुना

है कि जब बकरियों के गल्ले को भेड़िये बुग़दादके दरियाके किनारे पर देखते हैं पानी में गोता लगाते हैं जब इनको भेड़ियों का डर दूरहोताहै तो निकलतेहैं अद्भुत यहहै कि बहुधा रात्रिको कईबकरियोंके बच्चे होतेहैं और सुबहको जब उनको उनकी माताओंसमेत चरनेकी जगहपरलेजाकर शामकोलौटालाते हैं हरएकबच्चाअपनीमाको पहिंचानलेताहै परन्तु मनुष्यमें कईमहीनेकेपीछे यहशक्तिहोतीहै हिन्दुस्तान में एक प्रकार की भेड़ी होती है जिसके छः चकतियां चरबीकी होतीहैं छातीपर एकचकती दोनों कन्धोंपर दो और दोनों रानोंपर दो और दुमपर एकचकती होतीहैं (गुण) जो इसके सींग वृक्षके नीचेरक्खें ऋतु के पहले फलदारहो और फल मीठाहो और जो इसके पत्तेको शहदमें मिलाकर आंखोंमें लगावें ढलका दूर हो और सपेदीको भी नष्टकरे बहरेके कानमें टपकाना भी लाभदायक है और इसका मांस सदाखाना फुंसी और फफोला पैदाकरनेवाला है और निद्राका भी बेगहोताहै मिर्गीवाले को बहुतही हानिकर है और जो इसकी हड्डियां गज की लकड़ी में जलाकर गुलाब तेल में मिलाकर टूटीहड्डीकेजोड़परमलें हड्डीजुड़जायगी और मांसभी भर आयेगा और जो उसकीऊनकीशख आसकेदरख़्तकेपत्तेमेंमिलाकर उपद्रव कारक घावोंपरलगावें लाभकरे बलैनासनेलिखाहै कि जो इसकीऊनकी बत्ती स्त्रीभगमेंरक्खें कभी गर्भवती न हो जो शहदके उसकीऊनसे ढाकें चींटियां न आवेंगी सूरतउसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर २६५

(मअज़) इसको फ़ारसी में बुज़ और हिन्दी में बकरी कहतेहैं यह जानवर अहमक़ होताहै अर्थात् मनुष्य के निर्बुद्धि होने पर कहते हैं कि अमुकबकरीहै यहजानवर भेड़सेदूध और मोटाई और चमड़ेकी सख़्तीमें उत्तमहै और इसके चकती नहींहोती और इसके बदले इसकेअन्दर चरबीहै ईश्वरने बुद्धिमानीदेखी कि भेड़काचमड़ा पतला उपजाया क्योंकि उसपर ऊनबहुतहै कि उसको गरमरक्खे और बकरीका चमड़ा बहुत मोटाहोताहै कहतेहैं कि जब बकरीका

बच्चा शेर के बच्चे को देखताहै थोड़ा २ उसकी ओर चलताहै और उसकी गन्धकेपातेही मूर्च्छित होकर मुरदेकी तरह होजाताहै और जब वह शेरका बच्चा वहांसे दूरहोजाता है यह होशमें आजाताहै एक प्रकारको मकड़ी जिसको रतीला कहते हैं जब मनुष्यके शरीर पर उसकी लस गिरतीहै तो बड़ी पीड़ा उत्पन्न होतीहै बहुधा लोग मरजातेहैं इस मकड़ीको बकरीका बच्चा बहुत खाता है और उसको हानिके बदले लाभ होताहै अर्थात् मोटा होताहै बलैनास कहता है कि जो सपेद बकरी के सींग को घिसकर कपड़े में लपेटकर जिसके सिरहाने पर रक्खें जबतक उसको अलग न करें वह मनुष्य न जागेगा जो इसके पित्ते को गाय के पित्ते में मिलाकर बत्ती बनाकर कान में रक्खें बहरे को लाभ करे जो पलकों के बाल जिसको प्रवाल कहते हैं उनको निकालकर नरबकरेका पित्ता उस जगह पर लगावें फिर बाल न जमेंगे इसका पित्ता कान की पीड़ा में पानी में मिलाकर टपकाना गुणकारक है और नेत्र की ज्योति की न्यूनता रतौंधीको गुणकरे नरबकरेकी दाढ़ीका बाँधना चौथिया तप वाले को गुणकारक है इसका कलेजा खाना स्त्री के कामदेवको क्षीण करताहै यहां तक कि मनुष्यकी इच्छा न रहे जो इसको तिल्लीकी बीमारीमें खावे गुणकरे जो तिल्लीका रोगी इसकी तिल्लीको अपने हाथ से अपने मकान में लटकावे तो जब वह तिल्ली सूख जावेगी इसके तिल्लीकी बीमारी जातीरहेगी यदि गज़दरख़्त की डालीमें लटकावें तो उसका प्रभाव प्रबल होगा इसका सदा मांस खाना चिन्ता और विस्मरण लाता और जला हुआ दाग बढ़ाताहै जो रूईको नरबकरे के लहूसे भिगोकर कानछेदें वहछेद बन्द न होगा जो लकड़ीकी चोट लगीहो बकरेकी ताज़ीखालवहां पर बांधदे तो पीड़ा जाती रहे इसके खुरको सिकंजबीनमें घिसकर खाना तिल्लीकोगुणदायक है और वीर्य बढ़ाताहै जोइसकानखजला कर सिरकेमें मिलाकर बालखोरेपरलगावें तरन्तबालनिकल आवें इसका दूध नजलेको गुणकरे और बालका निशान मिटाताहै और

रंग साफ करताहै और मुख्यकरके स्त्रियोंको शक्कर डालकर इसका दूध पीना लाभकरे चिंतादूर करे कामदेव बढ़ावे परन्तु आंखों में अँधेरी आतीहै और दांतोंकी भी हानि होतीहै इसकेपनीरका पानी गांसीको घावसेबाहर निकालताहै जो इसका मूत्रउबालकर बराबर शहद मिलाकर लगावें जलेहुये जोड़को लाभ करे यदि हम्माम में तीनबेर खाजमें लेपकरें उपयोगीहै जो लड़का बहुतरोताहो इसकी कई मेंगनियांलेकर उसके सिरहाने रक्खें चुप होजायेगा शेख़रईस का बचन है कि इसकी मेंगनियां कंठमाला को गुणदायक हैं जो स्त्री इसकी मेंगनियों को जलेहुये बालोंमें मिलाकर योनि में रक्खें ऋतुका रुधिरबंदहो और जलेहुयेजोड़को गुणकरताहै सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर २६६

(ज़िब्बी) अर्थात् हिरण यहजानवरबुद्धिमान् और बड़ाभागने वाला होताहै अरब वाले सुबह को इसका देखना अच्छा शकुन जानतेहैं इसकीबुद्धिका यह वर्णनहै कि जब अपने रहनेके स्थानमें आना चाहताहै तो अपनेपीछे देखताहै और हरओर दृष्टि दौड़ाता है क्योंकि अपना और अपने बच्चोंका भयखाता है तो जो यहबात जाने कि किसीने उसको देखलिया तो घरमें नहींजाता अद्भुतयह कि हराइन्दरायन का फल कि उसके पानीको अपने मुखके दोनों तरफ़ के किनारों से निकालकर खाताहै और उसके खानेसे स्वाद पाताहै इसीतरह खारी और कडुवे दरियाका पानी पीताहै उनकी कडुवाहट की परवाह नहीं करता जिन हिरणोंके मुश्क होताहै वह भी इसी तरह के होते हैं परन्तु उनके हाथी की तरह के दो दांत बालिश्त भरके बाहर निकलेहुये होतेहैं इनके चरनेकी जगह चीन तिब्बत और ज़रजीर के शहरों में होती है और वहां पर सुम्बुल अर्थात् बालछड़ और दोनों बहमन(खुशबोदारपहाड़ीघास)और २ सुगन्ध देनेवाली घासचरतेहैं उत्तममुश्क वहहै कि अपनेआप नाभि से बाहर गिरे कि जब रुधिर ऊष्मा से जोशखाकर नाभिकी ओर दूरकरे तो जब लहू नाभिमें पकताहै हिरणको बड़ी खुजली मालूम

होतीहै सो तेज़पत्थरों पर नाभिको रगड़ता है और मुश्क निकल कर पत्थरमें चिपकता है जैसे लोगोंकेघाव और फोड़ोंसे पीवजारी होतीहै लोग उनस्थानों में जातेहैं और उसरुधिरको पत्थरोंसेपाते हैं (गुण) जो उसके सींग का धूआं करें दुखदाई जानवर दूर हों जो उसकी जिह्वा सुखाकर स्त्री को खिलावें उसका बहुत बकवाद दूरहो और इसकीनाभि में रुधिर पैदाहोताहै वह कस्तूरीहै तोजो उसे शिकारकरे और लहूपका न हो वुरीकस्तूरी है जो इसका पित्ता टपकावें कर्णपीड़ा दूरहो और इसकेबाल मूत्रके कठिनतासे उतरने को गुणदायकहैं इसकाचर्म भेजेके लिये बलदायक है और उन्माद रोग का उपयोगी और बिष के लिये मानो ज़हर मोहरा है परन्तु मुखको पीला करताहै और इसका खाना ना समझीका पैदा करने वाला है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २६०

(ऐल) यह पहाड़ी बकरी है इसकी दशा बारासिंगेकी तरह होती है हरसाल सींग गिराती और जमाती और सांप खाती है और जब शिकारी पहाड़ पर इसकी ओर जाताहै और वह देखलेता है पहाड़ से नीचे कूद पड़ती है चाहे कितनाही ऊंचा हो हज़ार दो हज़ार गज़तक और सींगके बल गिरतीहै और चोटसे बचा रहता है कहते हैं कि इसके सींगोंमें दो छिद्र होते हैं जिनसे दम लेती है जो वह छिद्र बन्द होजावें श्वास रुक कर मरजाय इसके आयु के वर्ष सींग की गिरहों के अनुसार होते हैं क्योंकि एक २ गिरह हर वर्ष अधिक होती है जो सांप इसको काटै तो गंगटा खाती है और चाहे कितनीही गरमीहो पानी से बचती है ठीक गरमीके दिनों में कि जब भेड़िया तीन रात दिन तक इसके पीछे दौड़ता है तो यह अपने बच्चेको छोड़कर दरियामें चलाजाता है मछलीसे बहुतप्रीति रखताहै हर समय दरिया किनारे जातीहै और मछलीको देखती है और मछली भी उसके देखनेको पानीपर आती है शिकारीलोग इसीकारण इसकी खाल पहिनकर दरियाकिनारे जातेहैं कि मछ-

लियां निकलआवें (गुण) जो इसके सींगका बुरादा एकमिस्काल शक्कर समेत पानी में घोलकर मिर्गी वालेको पिलादें गुण करे जो घिसकर झाईं और कोढ़ पर लगावें लाभकरे जो गन्धक के साथ छिड़कें मकानसे सर्प भागजावें यदि गर्भवती स्त्रीके लटकायें सुगमतासे प्रसूतिहो शेख़रईसका वचनहै जो शहरी और पहाड़ी बकरी दोनोंके सींग जलाकर मञ्जनकी तरह मलें दांत मज़बूत हों और पीड़ा भी दूर हो पहाड़ी बकरी का पित्ता आंखों में लगावें रतौंधी दूरहो शेख़रईसका वचनहै कि सम्पूर्ण दुखदाई जानवरों के वास्ते पहाड़ी बकरीका पित्तापीना मानो ज़हरमोहरा है जो उसकाकलेज़ा भूनकर आंखमेंसुरमालगावें आंखकेपर्देको गुणकरता और अन्धेरी को उपयोगी हो इसका मांस खाना चौथिया तप पैदाकरताहै जो इसकीचरबी बिच्छू और भिड़केघावपरमलदें गुणकरे और बिच्छू इसकेपित्तेकी गन्धसे मरजाताहै जो सांपकाकाटाहुआ इसके लिङ्ग कोसुखाकरखाये लाभहो और बीर्यकोभीबढ़ाताहै और इसीकेसूखे लिंगको मूत्ररोध के वास्ते भी गुणदायक लिखाहै जो इसको पानी में धोकर पानीपीवें पहलूकी पीड़ा दूरहो और जो इसके लिंगको सुखावें और पानीमेंधोके पानीपीवें लिंगको बहुतकठोर और प्रबल करताहै और इसका चमड़ा दस्तरख़्वान अर्थात् जिस कपड़े पर मुसल्मान भोजनभरे पात्र रखकर भोजन करतेहैं उसके गिर्द मूस सांप और मच्छड़ आदि न आवेंगे इसकी पूंछ और सींग की राख तेलमिलाकर तलवेमेंमलें चलनेमें थकान नहो किन्तु अधिक प्रसन्नता हो इसके बाल ज़लाने से चूहे आदि भागते हैं इसकी पूंछका बाल हलाहल बिषहै जो कोई उसको पानीमें पिये तुरन्त मरजाय शेख़रईस कहता है कि जो पहाड़ी नर मादा बकरे की विष्ठा उस जगहपर जहांसे लहूजारीहो लगावें तुरन्तबन्दहो और जो इसकी मेंगनी पानीमेंगिरे और बकरी उसकोपीवे तो तुरन्त मरजाय परन्तु जो भेड़पीलेवे तो उसको हानि नहीं होती सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर२६८

(अलसबाअ़) अर्थात् जंगली दुःखदेनेवाले जानवरइसप्रकार का चौपाया शैतानका नमूना होताहै क्योंकि इसप्रकार के स्वभाव अहंकार क्रोध उपद्रव दिलेरी और मारनेपर साहस करतेहैं पालू चारपायों के प्रकार से इनके कर्म और शील विरुद्ध हैं मनुष्य का ध्यान इसप्रकार के पालनपर न हुआ जैसा कि और पालूजानवरों परहै इनके शरीरमें भोजनकी प्राप्तिकेलिये हथियार भी कृपाकिये जैसे दांत और चुंगल और भयानक स्वरूप और मुंहका खुलाहोना और गर्दनका मोटा होना हृदयकी चौड़ाई पतली कमर और वदन की फुरती सब इनको दियेगये जो ऐसा न होता तो अपने भोजन की प्राप्तिमें दीनहोते और यद्यपि यह समूह एक गर्भ में छः सात बच्चे देताहै और वर्ष में दो वेरतक जन्ते हैं परन्तु कमी के सिवाय के वह भी पृथ्वीके ओरोंके किनारोंमें पायेजातेहैं अधिकता नहींहै यह भी ईश्वरकी बुद्धिहै जो ऐसा न होता तो सारासंसार इनसेभर जाता और यह बड़ा उपद्रव करते जैसे आयतसे प्रकटहै जिसकेयह अर्थ हैं कि क्या ईश्वर की बुद्धि है कि उसने लाभ देनेवाली बहुत वस्तुओंको बहुत उपजाया और हानिकर वस्तुओंको कम हरतरह से वह विश्वम्भर सर्व्वोपरि है अब हम उनको लिखते हैं कि जो जंगली दुखदाई पशुहैं ॥ तसवीर नम्बर २६६

(इब्नआवे) अर्थात् सियार बड़ा उपद्रवी पीलेरंग के मेवोंका शत्रुहै कइयोंकोखाता और कइयोंको ख़राब करताहै जब पालूमुर्ग़ कीदृष्टिइसपरपड़तीहै चाहेऊंचेकोटेपरभी हो तुरंतइसकेपासआताहै और अपनेको सियारकी ख़ूराक बनाताहै जैसा कि हम ऊपरलिख आयेहैं कि गधा शेरबब्बर के पास चलाजाताहै और बड़ा आश्चर्य यहहै कि जो पालू मुर्ग़ लोमड़ी या बिल्ली या कुत्ते की गन्ध पावे अपनेको उनके सामने से अलग करताहै और चुपका खड़ा रहता है और जब सियार को देखताहै तो उसके पास चलाजाताहै यहां तक कि जो सौ मुर्ग़ भीहों वहसब उसकेपास चलेजातेहैं और एक

सियार उनको मारडालता है जब सियार चाहता है कि पानी के मुर्ग़ को शिकारकरें मुट्ठाघासका पानी में छोड़ता है जब मुर्ग़ उस पर आ बैठते हैं उससमय पीछेसे पहुंचकर उनका शिकार करताहै (गुण) उसकीजिह्वा जिस घरमेंहो परस्पर बिरुद्ध हो जो इसका पित्ता आधेदिरम गरमपानी के साथतीनदिन पियें तिल्लीकी पीड़ा दूरहो और इसका मांस एक मिस्क़ाल के अनुमान खाना उन्माद और मिरगी के प्रारम्भ को गुणकरे और इसकी हड्डियों की मींगी पापड़ियालोन के साथ मलना कोढ़को नष्टकरताहै सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २००

(इब्नअरस) अर्थात् नेवला यहजानवर लम्बा और दुबला होताहै चूहे का शत्रुहै चूहे के बिल में जाकर शिकार करताहै और भूषण और रत्नोंको बहुत प्यारकरताहै नाकेब्रकाशत्रुहै उसकापेट फाड़ डालता है कहते हैं कि नाका सदा मुंह खोले रहताहै नेवला उसके मुखके मार्गसे उदरमें जाकर उसकी अँतड़ियों को चबाकर खाताहै जब नाका मरजाताहै उसकेउदरसे बाहर निकलताहै और सर्पका भी शत्रुहै और जब सर्पसे लड़ने जाताहै तो पहले तिवली जो एक प्रकारकी घासहै खा लेताहै इसकारण सर्पका बिष उसे दुखदाई नहींहोता और जब भुजंग इसघासकी गन्धपाताहै निर्बल होजाताहै और नेवला उसपर प्रबल होताहै कहतेहैं कि एक चूहा नेवलेके सामनेसे भागा और वृक्षपर चढ़गया नेवलेने भी उसका पीछाकिया कि चूहा दरख़्तकी फुनँगपर पहुंचा और जब बेचारेको कोई जगह बचावकी न मिली एकपत्तेपर लटककर और दांतों मे दबाकर रहगया अन्तको जब नेवला उसपत्ते पर न पहुँचसका और दीन हुआ तो चिल्लाया उस समय उसका नर आ पहुंचा तब उस नेवलेने उसपत्तेको जिसपर चूहाथा काट डाला और वह चूहा पत्ते समेत गिर पड़ा सो नीचे से दूसरे नेवले ने उसका शिकार किया (गुण) इसकाभेजा आंख में लगाना अन्धेरी दूर करताहै शेख़र-ईस कहताहै कि इसका मांसबांधना जोड़ोंकी पीड़ाको उपयोगी है

और शराबके साथपीना मिर्गीके रोगोंको गुणकरे जो इसकीचरबी दांतों में मली जाय सब दांत गिरजायँ और जो किसी लकड़ी में उसकोमलें यहांतक कि वहचरबी उस लकड़ीमें चुमजाय फिरउस लकड़ी से धीरे२ दातून करे सब दांत सुगमता से गिरजायेंगे जो लड़कोंके मसूढ़ोंमें इसकी चरबीमलें तो दांत बहुतजल्दी बेपरिश्रम बराबर और खुले निकलेंगे और जो उसकी पीठकीहड्डी मैथुन के समय स्त्री अपनेपास रक्खे कभी गर्भवती न हो इसके अण्डों में भी यही गुणहै जो दोनोंचीज़ें रक्खें तो और उत्तमहै अधिकलाभ होगा इसका रुधिर कण्ठमालाको गलाने वालाहै और इसकीबिष्टा घाव के लहूके जारीहोनेको बन्दकरतीहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर२७१

(अरम्ब) अर्थात् खरगोश इसके बच्चे बहुत होतेहैं कहते हैं कि खरगोश एकवर्ष नर और एकवर्ष मादा रहताहै और इसको स्त्रियों के सदृश मासिकधर्म भी होताहै इसके दोनोंहाथ पैरसेछोटे होतेहैं और ऊपरसे नीचेआने में बड़ा दुःख पाताहै परन्तु ऊपर जाने में नहीं सोनेपर इसकेनेत्र खुलेरहते हैं जब मांदाहोताहै हरा नरकुल खाकर आराम पाताहै बुद्धिमान् यहांतकहै कि नरम ज़मीनपर भी बहुत हलका होजाता है कि पांवके चिह्न दिखाई न दें और शत्रु पीछा करनेसे बचे (गुण) इसके शिरकीहड्डी जलीहुई का मञ्जन दांतों को चमकाता है इसका भेजा खाना स्त्री को बांझ करता है कदाचित् गर्भ रहेगा तो दूसरी बेर गर्भ न रहाकरैगा जो इसका मांस बच्चोंकेमसूढ़ोंमेंलगावें बहुत सुगमतासे दांतनिकलें कहतेहैं कि जो सकेदांतपीड़ित दांतोंपरबांधे आरामहो इसयुक्ति कि जिस ओरका जौनसादांतहो उसीओरका वहीदांत [illegible] इसका पित्ता पीना निद्राका वेग लाताहै यहां तक कि [illegible] बिना नहीं जागता इसकी झिल्ली मिश्री के साथ [illegible] को [illegible] करतीहै बलैनासने लिखाहै कि इसका रुधिर [illegible] स्त्री को [illegible] करताहै और इसके मर्दनसे झाईं छीप [illegible] और इसके [illegible]

के रसमें जिस मनुष्यको हड़फूटन और पहलू की पीड़ा और नक़रस अर्थात् पांव की उगलियों की पीड़ाहो बैठे गुणदायक होगा जो इसको सिरकेके साथ पियें कुल विषोंकेलिये ज़हरमोहरा है जो इसकी हड्डियां जलाकर मोममें मिलाकर गलेहुये मांसपर लगावें घावभरे और आरामहो जो इसकापनीरमा या पानी में मिलाकर कुलंज की पीड़ावाले को गुणदायक है बलैनास की मतिहै कि हर पशुका पनीरमा या कूलंजको गुणकरे परन्तु ससे का पनीरमाया बहुत प्रबलहै इसका पांव दाहने बायेंके विवेकसे जोड़ोंकीपीड़ापर बांधना गुण दायकहै जो स्त्री इसकी योनि पकाकर खावे मैथुन करतेही गर्भ धारण करे अरबके लोगोंका वचनहै कि इसके शतालेग (अर्थात्एंडी) की हड्डीको बांधना जादूसे बचाता है इसका धुवां फेफड़ेकी पीड़ा को गुणदायक है जिस स्त्रीका मासिक रुधिर बन्द न होताहो वह कईबाल इसकी बत्ती बनाकर भग में रक्खे रुधिर तुरन्त बन्दहोजाय और इसकी विष्टा रखने से गर्भवती हो स्वरूप यहहै ॥

तसबीर नम्बर २७२

(असद) अर्थात् शेर यह सम्पूर्णजंगलीजानवरोंमें बल साहस में बड़ा और सबको भय दिलानेवाला है इसे ईश्वरने शिर और गर्दनकी बड़ाई मुंह गोल मुखके कोनोंको कोनेमें दांत और चुंगल की तेज़ी सीना चौड़ा हाथ पांव मोटे कमर पतली ऊंची आवाज़ कृपाकी कि किसीसे न डरे और कोई पशु इससे बराबरी न कर सके कहतेहैं कि दूसरेका माराहुआ शिकार नहींखाता हांअपना किया हुआ शिकार दिल और कलेज़ खानेके पीछे दूसरोंके खाने को छोड़ताहै रात्रिके समय डफके शब्दसे प्रसन्न होता है अंधेरी रातों में आगकी रोशनी जिधर देखे उस ओर जावे उससमय बहुत नम्न होनेसे उसकी तुन्दी दूर हो जाती है कहते हैं कि जो

१ वह कि किसी पशुके बच्चे को दूध पिलाकर तुरन्त मार डालतेहैं तो उसके मेदेसे जमकर निकलताहै उसका नाम पनीरमायाहै ॥

कोई उसके साथ बहुत नम्रता से साम्हने आये उसका शत्रु नहीं होता चाहे कितनाही भूखाहो और जब शिकार खाता है नमककी इच्छा करताहै और जब बीमार होताहै तो लंगूरका मांस खाकर आराम पाता है परन्तु जब उसे ज्वर आताहै तो बहुत कम आराम पाताहै और जब इसके शरीरमें तीरकी गांसी रहजाती है तो साद जो एक प्रकार की घास होतीहै उसके खाने से निकल जातीहै और यह स्वभाव केवल शेरकाहै जो कोई घाव पहुंचे मक्खियां इतनी इकट्ठी होतीहैं कि इसके मरजानेतक दूरनहींहोतीं और मोर और सपेद घरके पालू मुर्ग से भागता है और शेरके शोरसे सम्पूर्ण पशु भागते हैं परन्तु गधेको कि चलने की शक्ति नहीं रहती नहीं जाता जब यह जानवर भूखा होताहैतो चुपरहता है जबतक कि शिकार न पावे कि शब्दसे कोई पशु भाग न जावे गर्भके समय बच्चा इसका माकी पेटमें नखसे गर्भाशय को घायल करता है तो जब मादा इससे मरने के निकट पहुंचती है तो नर शेर उसके खानेके लिये सूस मार लाताहै कि मादा उसको खानेसे आराम पावे और बच्चाजनै इसकी मादा प्रसूतिके समय ज़मीन तर और खारी ढूंढ़तीहै कि चूंटीसे उसके बच्चेको दुःख न पहुंचे और जब बच्चेके पास जातीहै तो अपने पंजोंकेचिन्ह मिटाती है कि कोई उसका पता न पाये जब शेर शिकारके वास्ते निकलता है तो उसकाबच्चाभी साथदौड़ताहै और जबकोईशब्द सुनताहै तो भागताहै सो शेरउसकोअपने पेटकेनीचेकरकेउसकेकानोंमें बिजली की तरह गूंजताहै कि उसके मनसे हर एक शब्द का भय जाता रहै कहतेहैं कि पशुओंमेंशेरके बराबर और कोई मुख दुर्गंधिवाला नहीं होता इसकी आंख अंधेरेमें ज्योतिकी तरह प्रकाशमानहोती है जैसे चीते बिल्ली और सांपकी आंखें कहतेहैं कि शेर भरी हुई मशकसे भागताहै और मस्तुमती स्त्रीसेनहीं बोलता मल्लाहोंसेसुना है कि एक शेरने एक लंगर में आकर देखा कि किश्ती की रस्सी एक वृक्ष से बंधी है और वह रात्रि का समय था तो वह समझा

कि कोई न कोई मनुष्य इसरस्सीके खोलनेकेवास्ते अवश्य आवेगा सो शेर अपनी आंखें बन्दकिये चुपका उस वृक्ष के नीचे लेटरहा और आंखोंको इस लिये बन्दकिया कि रात्रिको ज्योति की तरह चमकेंगी तो लोग पहिचान जायेंगे सो वही हुआ कि जो मनुष्य उस रस्सीके खोलने के वास्ते आताथा उसको मार डालताथा सो कई मनुष्योंके मरजानेके उपरान्त मालूम हुआ (गुण) जो इसका भेजा सजैतूनके तेलमें मिलाकर कांपनेवाले या फड़कतेहुये जोड़पर मलेउपयोगीहै जो इसकेदांत लड़केकेगलेमेंलटकावें किसीदुःखऔर पीड़ा बिना दांत निकलें जो कोई इसके दांत अपने पास रक्खे दांतोंकी पीड़ासेनिर्भयहो और जो इसकापित्ता पिये साहसहो और मिर्गी और पीलपांवकी बिमारीदूरहो इसका आंखमेंलगाना लहूके बहनेको बन्द करताहै जो कंठमालापर मलें गुणकारीहै औरचरबी इसकी बवासीर गरम सूजन और झाईं और फोड़ोंको लाभदायक है जो अपने मुखपर मले निर्भय होजावँ और कोई जंगली पशु उसके पास न आवे जो उसके दोनों आंखोंकेबीचकी चरबी गुलाब तेलके साथ मुखपर मलें जो कोई उसकोदेखे भयपावे इसकामांस अर्द्धांग और झोले वालेको गुण दायकहै और इसके मर्दनसे सर-तान जो एक बीमारीहोतीहै दूरहोजातीहै जो हींगमें मिलाकरकोढ़ पर लगावें रोग नष्ट हो इसका अंडवीर्य्य कम करता है जो पुरुष उसको गुलाबमें घिसकर पिये तो उससे कोई स्त्री गर्भवती न हो इसका पंजा जिस मनुष्यके पासहो उसके पास कोईदुःखदाई पशु न आवे और इसका पंजा जिस पानीमें गिरे और उसका पानी जो चारपाया पीवे ऐसा क्षीण हो कि कभी उसमें पुष्टता न आवे इसकी खालपर बैठनेसे बवासीर वालेको गुणहै इसी तरह जो चौथिया तपवाला दिनमें दोबेर इसपर शयन करे आरामपावेऔर कूलंजको भी गुणकारीहै जो इसके चमड़े से ढोल या नक्कारा मढ़ें उसका शब्द जिस घोड़े के कानमें पहुंचे बीमारहो जो कोई इसके माथेका चमड़ा पगड़ीया टोपीके नीचे माथेकेपास छिपावे तोलोग

उससे भय पावें और बादशाहों की दृष्टिमें प्याराहो और जो इस
का चेहरा दूसरे जंगली जानवरोंकी खालमें लिपटावें उसकारोवां
आपसेआप झड़जाय और जो इसके बाल जलाकर उसकी राख
सोम रोगन में मिलाकर फफोलेपर लगावें तुरन्त अच्छा होजाय
जो इसकी विष्ठाको मद्यमें मिलाकर किसी शराबीको पिलावें फिर
उसको शराबकी इच्छा न होगी वरन मद्यका शत्रु होजावेगा ॥

तसवीर नम्बर २७३

(बबर) यह पशु शेरसेभी अधिक बलवान् होताहै शेर और
चीतेका शत्रुहै जब यहजानवरचीतेके शिकारकरनेका उद्योगकरता
है तो शेर इसको सहायता देताहै कुत्ते के मांस के खाने से इसका
रोगशान्त होताहै बुढ़ापेमें चाहे यह भूखाभी हो परन्तु भेड़िये के
विरुद्ध मनुष्य को नहीं छेड़ता इसकी मादा प्रसूति के समय में
संभालके वृक्षकेनीचे जाकर बच्चे जन्ती है और तीन दिनमें एक
बेर बच्चेको दूधपिलातीहै और सूलमारकर खाना बच्चोंको सिखाती
है (गुण) इसकी त्वचा बड़ी दलदार होतीहै जिसके फफोला हो
तो जो इसकीखालका बिछौनाबनावे गुणकारीहो जो इसकापित्त
पानीमें मिलाकर लरसामवाले रोगीके सिरमें लगावें गुणकरे और
स्त्री बत्तीबनाकर भगमेंरक्खे बांझहोजाय यहांतक कि जो गर्भ हो
गिरादे और इसकीपांवकीहड्डीको संधियापहुंचानेवालेमनुष्यकेपैरमें
बांधे तो वह लाठकोशभीचलके दुःख न पावे जो इसकीखालका थैला
औषिधी तलवारके दामनकी नीचे दिया जावे उपयोगी है और
इसके धुवेंकी गन्धसे चीटियां पैदा होतीहैं और इसकी विष्ठा के
धुवेंसे सम्पूर्ण विषैले जानवर भागजातेहैं ॥

तसवीर नम्बर २७४

(सालिम) अर्थात् लोमड़ी यद्यपि वह देखनेमें छोटीहै परन्तु
छलछिद्रमें बड़े २ जानवरोंकी बराबरी करतीहै यहजानवर अपने
घरमें बाहर निकलनेके दो छिद्र रखताहै कि जोकोई शत्रु इधरआवे
तो यह दूसरे दरवाजे से निकल कर चल्देताहै यह जहां दुःखमें

इसकेरोंगटे गिरजाते हैं इसकारण बालखोरेकी बीमारी को दाय-रुस्सालिब कहतेहैं तो जब वहमको खातीहै बालजम आते हैं इसीसे मकोय को उन्नबुस्सालिब कहते हैं य अपने मकानके पास जंलगी प्याज़डाल देतीहै और निश्चिन्तहोकरआरामकरतीहै और भेड़िये से नहींडरती क्योंकि जो भेड़िया जंगली प्याज़परपांवरखे तुरन्त मरजाय जबयह भूखीहो और इसेकुछखानेको न मिले तो जंगलमें मुरदेकीतरह पेटफुलाकर रहजातीहै कि कईदिनोंकी मरीहुई लाश समझीजातीहै यहांतक कि पक्षी उसकेशरीरपरआकरइकट्ठे होतेहैं उससमय उनकाशिकार करती है और यह जानवर शिकारी को अपनेहाथसेघायल करतीहै जो वहजानवर इससे सबलहोताहै तो उसकोदेखतेही मुरदा बनजातीहै साहीके शिकारमें बड़ी मक्कारी करतीहैअर्थात् जहां साहीने इसेदेखा तुरन्त अपने सिरको पेट में डालकरअपने कांटोंको लंबाकरतीहै उससमयलोमड़ी उसपर मूत्र करतीहै और उसके मूत्रसे उसको बहुतदुःखहोताहै लाचार अपने मुहको उठाकर मुख खोलतीहै सो तुरन्त लोमड़ी उसके पेटको पकड़ कर खाजातीहै बीमारी की दशामें जंगली प्याज़ के खानेसे आराम पातीहै जब इसके बदनमें जुयें पड़तीहैं तो एककपड़ा अपने मुखमें पकड़के पानीमें खड़ी होती है और थोड़ा २ पानीकी गह-राई की ओर जाती है और जुंये सब ओरसे उसके शिर की ओर इकट्ठी होजातीहैं फिर थोड़ा २ अपने सिरको भी पानी में डुबोती है यहांतक कि वहसब जुयें उसकपड़ेपर आजातीहैं उससमय उस कपड़ेको फेककर और गोता लगाकर निकल आतीहै और उनके दुःखसे छूटतीहै एकमनुष्य कहताथा कि मैंने मार्गमें देखा कि एक लोमड़ी दम चुराये हुये ऐसीपड़ीथी कि मैं मुरदा समझा जब कुत्ते उसकी ओर दौड़े और वह समझी कि कुत्तोंको मेरा मकर मालूम होगया तुरन्त उठकर भागी और वृक्षों में छिपगई गुण जिसबुर्ज यामकानमें कबूतर बहुत रहतेहों और उसका शिर वहां लटकावें तो सब कबूतर उड़जायँ लड़कों की पसली की पीड़ा उसके दांत

बांधनेसे दूरहोतीहै और चौंकना और सोनेमें डरना भी दूरहोताहै और किसीके दाहनी ओरके दांतमें पीड़ाहो इसका दाहना दांत बांधनेसे दूरहो जावेगा इसी प्रकार बायें से बांया दांत गुण रखता है जो इसकापित्ता सुरमे में मिलाकर लगावें ढलका वन्दहोजावेगा इसका मांस पकाकर कईदिन खाना कोढ़ और अर्द्धांग और लकवे को उपयोगीहै जो इसकी चरबी पावँकीहड्डी की पीड़ापर मलें तुरन्त पीड़ा दूर हो जो उसकी चरबी अनार की लकड़ी में लगाकर घरमें रखदें सब खटमल उसपर इकट्ठेहों और इसकागुरदा कंठमाले पर लगावें लाभकरे इसका अंड लड़कों की गर्दनपर बांधना दांतसुग-मता से निकालता है और जो इसकालिंग शिरपीड़ाकी बीमारीमें पासरक्खें गुणकारी है इसकीखाल औरों की खालसे उत्तमहोती है शेखरईस ने कहाहै कि इसकी खाल शीतकफ और पित्त के स्वभाव वालों को गुणकारी है लहू इसका लड़कों के शिरपर लगाना गंजे वालोंको गुणकारीहै बाल जमआवें जिसकेपास उसकालहू हो उस पर किसीकाछलऔर छिद्र न चलेगा सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर २०१

(हरीश) एक प्रकार का जानवर बकरी के बच्चेकी तरह पर है इसको दौड़नेकी शक्ति बहुतहोतीहै इसके शिरपर एकसींगहोताहै यह जानवर दोनोंपैर से दौड़ताहै और कोई इसकी बराबर दौड़ नहींसक्ता क्योंकि बहुतही दौड़नेवाला है लिखाहै कि यह जानवर मुल्क सजीन और बलगारमें होताहै—(गुण) जिसकागलापड़गया हो या कंठमाला का रोगहो तो उसकालहू गरमपानी में मिला-कर कुल्लीकरें तुरन्त आरामपावें इसका मांस क़ंतूरयोन (एकऔ-औषधि का नामहै) पकाकर खाना क़ुलंजको गुणदायक है इसकी चरबी इसीके पावँकी हड्डीकी राखमें मिलाकर पीड़ित नाड़ियोंपर मलना गुणकारी है ॥

तसवीर नम्बर २०२

खंजीर अर्थात् सुअर बहुत कठोर और कुरूपहोताहै हाथीकी

तरह इसके भी दो दांत होतेहैं भैंसकीतरह शिर और बैलकीतरह सुमहोते हैं कामदेव के उपजने के समय शिर नीचे करके आवाज़ बोलताहै इनकायुद्ध कि जब मादापर लड़ते हैं कठोर होताहै नर सुअर वृक्षोंपर अपने शरीरको रगड़ते हैं कि उनकी खाल कठोर होजावे और इसीकारण फिर इसपर किसी पशुकादांत असरनहीं करता और यह जानवर पृथ्वी को अपने दांत से खोदता है और बहुतही जननेवाला है एकबेर में बीसबच्चे तक होतेहैं और सर्पको नहींखाता और न सर्पका विष इसपर प्रभाव करताहै और लोमड़ी से अधिक छलीहोता है बहुधा सवारके साम्हनेसे भागताहै यहां तक कि जब सवार इनका पीछाकरते थकजाताहै उससमय सवार और उसके घोड़े को अपने दांत की चोट से मारडालता है जब कोई इसपशु को मोटाकरना चाहे तो चाहिये कि इसको तीनदिन भूखा रक्खे फिर बहुत भोजन खिलावे इस उपाय से दोदिन में मोटाहोजावेगा निसाराक्लोग रूम की धरती पर ऐसाही करते हैं जबयह रोगी होताहै केकड़ेके खानेसे आराम पाताहै इसके बहुत गुणहैं कि जो सुअरको गधेकी पीठ पर बांधें कि वह हिल न सके तो जब गधा पेशाब करे तुरन्त सुअर मरजावेगा जोकुत्तेको अपने दांतोंसे काटे तो उसके सम्पूर्ण केश गिरजायँ और जबउसकाशब्द हाथी सुनता है तुरंत मरजाता है (गुण) इसके दांत साथ रखना लोगोंकी दृष्टिमें प्रिय करताहै और कुदृष्टिका प्रभाव नहीं होताइसका पित्ता सुखाकर बवासीर पर लगाना गुण दायक है इसका मांस हर प्रकारके मांससे अशुद्धहै जो कईदिनरक्खें कीड़े पड़जावें परन्तु उनकीड़ोंका खाना जंगली जानवरों के विषको गुण कारकहै इसकी चरबी घायल जोड़ पर लगाना उपयोगी है जो इसकीविष्टा कबूतर के अंडेमें मिलाकर कंठमाला में लगावें गुणकारक है और फोड़ोंको भी पकाती है और इसकी ताजी चरबी बवासीर को गुण दायकहै जो हड्डी टूटगई होतो इसकी हड्डी उसपर बांधदें तुरंतदुरुस्त होजावे और जोड़ बहुत दृढ़ हो यह स्वभाव और पशुओंकी

हकीमें नहीं है जो उसको अलसीके कपड़े में लपेटकर चौथियातप वाले के लटकावें आराम हो जो उसको जलाकर थैली में बांधकर उस मार्गमें डालदें जहांसे पानी धानों के खेत में जाताहो तो अन्न बहुत होगा और सुव्वरसे कुछ हानि न होगी जोइसकी हड्डीजला कर नासूर पर लगावें गुण कारक है इसकी खाल जहां पर रक्खें मच्छर न होंगे इसका सुम जलाकर शक्करमें मिलाकर उबाल कर जो बिछौनेपर मूत्र करताहो पिये तो यहरोग दूरहोजावे जो इसके पांवकी पीठकी हड्डी को इतना जलावें तो सपेद होजातीहै उसकी राखको कूलंजवालेको पीना गुणदायक है शेखरईशने कहा है कि इसका कोढ़पर मलना लाभकारीहै जोइसका मूत्रअंगूरी शराब में पियें पथरी टुकड़े २ करदे इसकी बिष्ठा सेवकेवृक्षमें लगाना मेवेको सुर्खरंग करतीहै और बहुत फलदार करतीहै जोस्त्री इसके मूत्रकी बत्तीले श्वासरोगदूरहो औरबच्चेकी झिल्ली दूरहोजाय और फोड़े को पचावै सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर २२७

(दब) अर्थात् रीछ बड़े शरीर वाला मोटा और एकांतस्थल की इच्छारखनेवाला होताहै सर्दीमेंअकेला रहताहै और बहारतकबा- हर नहीं निकलता और वहां पर अपने पांव चाट २ कर भूख दूर करताहै बहारकी मौसममें बाहर निकलताहै और पुष्ट होताहै बैल काशत्रुहै जब बैल चाहताहै कि अपनेसींगसे उसको घायलकरै तो यहउसकीपीठपरआकर अपने दोनों हाथों से उसके सींगपकड़कर काटता और उसको घायलकरताहै और उसकीमादा प्रसूतिकेसमय कालापत्थरजिसपर बिजलीगिरीहोढूंढतीहै कि उसपरबैठे औरसुग- मतासेप्रसूतहो और जबऐसापत्थर नहींपातीहै तो उससेतारेकेसा- म्हने खड़ी होती है जिसका नाम बनातुल्नाश सग़ार है तब इसे सुगमता होती है और इसी कारण उस सितारेको दब्बुल् असग़ार भी कहतेहैं तहनासप हकीम का वचनहै कि इसकी मादा एकमांस कालोथड़ा जनती है जिसमें कोई रूप प्रकट नहीं होता तो यहमादा

चाट २ कर उसके जोड़ निकालती हैं और अपने बच्चोंको छोड़कर कफ्तार अर्थात् हुयडारके बच्चोंको दूध पिलातीहै इसीकारण अरब कहते हैं कि अमुक मनुष्य रीछकी मादा से भी अधिक अहमक है इसपर कोई जंगली जानवर प्रबल नहीं होता परन्तु शेर एक मनुष्य कहानी कहता था कि शेरने इसके पकड़नेका इरादा किया वहवृक्ष पर चढ़गया मुझे वृक्ष पर देखकर शेर नीचे खड़ाहोगया ऊपर एक डालपर रीछ बैठा था मैं बहुत आश्चर्य करता था कि इन दोनों बलाओंसे क्योंकर छुट्टी पाऊंगा अकस्मात् रीछने अँगुलियोंकी सैन से मना किया कि कोई बात नकरना कि शेर मुझे जाने संयोगसे मेरे पास एक छुरीथी मैंने उससे उसडालको जिसपर रीछ था धीरे २ काटना शुरूकिया और रीछ मेरी ओर देखाकिया तो रीछ डालसमेत पृथ्वीपर गिरा और शेरसे लड़ाई हुई निदान शेर प्रबल हुआ रीछ को टुकड़े २ करदिया और खा पीकर अपनी राहली और मैं आनंद पूर्वक अपनी राह आया (गुण) इसके दांत स्त्री के दूध में घिस कर लड़कोंको पिलावें उसके दांत सुगमतासे निकलेंगे जोइसकी आंख अलसीके कपड़ेमें बांधकर चौथिया तपवालेको बांधें गुणकरे इसका पित्ता काली मिरच में मिलाकर गंजपर मलना उपयोगी है यदि कुछ इसका पित्ता कीड़े खाये हुये दांतोंपर लेपकरें गुणकरे आंखमें लगाना अंधेरी दूर करताहै शेखुलरईस कहताहै कि जोकोई जोड़ मिर्गी वाला अपने पास रक्खे आराम पावे जो इसकी चरबी को काले कव्वेकी चरबीके साथ बालों में लगावें जल्दी सपेद न होंगे जो इसकी चरबी पांवकी बिवाई में भरदें आराम होजाय और कोढ़ पर मलना उपयोगी है चरायतेके साथ पीसकर जिस जोड़पर लगावें कभी बाल नजमेंगे जो आंखोंमें इसका रुधिर लगावें प्रबाल दूरहों जो इसका चमड़ा दुश्शील मनुष्यपर बांधें शीलवान होताहै सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर २०८

(दिलक) अर्थात् जंगली बिल्ली जिसका काली बिल्लीसे बहुत

रूप मिलता है और जो कि इसको मनुष्यों से प्रीति नहीं इससे पाल नहीं होसक्ती कबूतर की शत्रु है जब कबूतरों के समूह में आवे जो सौ कबूतर भी हों सबको मारडाले अज़दहे की भी शत्रु है कहते हैं कि अज़दहा इसके शब्द से मरजाता है और यहभी वाक़यहै कि मिसर में अज़दहे की अधिकता है जो वहां यह जानवर नहोता तो कोई न रह सक्ता (गुण) इसकी दाहनी आंख तप वाले पर बांधना गुणकारी है जो उसी आंख को अलसी के कपड़े में बांध के चौथिया तप वाले के बांधे उपयोगी है जो इसकी बाईं आंख बांधे फिर ज्वर न आवे इसका लहू नाककी तरफ से भेजे पर खींचना मिर्गी को लाभदायक है इसके बालों के धुंवें से कबूतर भागते हैं और सांप बिच्छू भी भागते हैं इसकी खालका बिछौना बनाना बवासीर दूर करता है इसके अंडके धुवेंसे घरके चूहे भागजावेंगे सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २०३

(ज़ैब) अर्थात् भेड़िया यह जानवर बहुत मलीन और खूनी दुश्मन और दुःखदाई और मक्कार होता है और जिस तरफ़ कूदता है बहुत कम चूकता है और यह आपुसमें विश्वास नहीं करते जब इकट्ठे होते हैं एक दूसरे से अलग नहीं होते क्योंकि यह समूह अपने आपभी निर्भय नहीं है जो किसीके घाव पहुंचे या बीमारहोजाय तो और भेड़िये उसको निर्बलसमझकर इकट्ठेहोकर खाजातेहैं जैसा एककवि ने कहाहै कि वीरपुरुषको उचितहै कि अपनेभाईकी सहायताकरे न भेड़िये के सदृश कि जैसा अपने साथी को घायल देखकर खालेताहै और उसको दुःखदेतेहैं और यहसमूह जब अपने समूह के भयसे सोताहै तो गिर्दागिर्द एकदूसरे के होकर एकआंख बन्दकरके सोताहै और दूसरीआंखसे देखाकरताहै औरहिलालीके पुत्र हमीदका वचनहै अर्थात् जो मनुष्य एक आंख बन्द और एक आंखखोलकरसोताहै तो वहमानोनिर्भय जागतारहताहै इसकीमादा नरसे बहुत उत्पात करनेवाली होतीहै क्योंकि उसको अपनेबच्चों कीचिन्ताहै जब भेड़िया दूसरे जीवधारी के सामने दीनहोजाता है

तो चिल्लाकर अपने साथियों को इकट्ठा करलेता है कि वह आकर सहायतादें जब यहजानवर बीमारहोताहै तो अपने समूहसेअलग होजाताहै इसभयसे कि जो इसकेसाथी इसकी बीमारीको मालूम करेंगे तो खालेंगे और तलवार और तीरसे भय नहीं करता परन्तु लाठी और पत्थरके सामने नहींआता और जोकोई उसपर तीर या तलवार लगाये तुरन्त उसके आगे आकर उस पर धावा करता है बीमारी में एकप्रकारकी घासखाताहै जिसको जोदा कहतेहैं और इसके खानेसे आराम पाताहै जब बकरियोंकेपास पहुंचताहै दूरसे शब्दकरताहै कि शिकारीकुत्ते उधरआवें और आपदूसरीओरसे जाता है और बकरियोंको उठालेजाताहै और बहुधा बकरी की दुम पकड़ के दुममारताहै और उसकीदुममें यहप्रभावहै कि बकरी अपनेआप इसकेसाथ चलीजातीहै और यहकाम सूर्यनिकलने के पहलेकिया करताहै क्योंकि जानताहै कि रातभर कुत्ते रखवारी किया करतेहैं और सुबहको सोजातेहैं कहतेहैं कि जो भेड़ियामनुष्य के बाईंओर सेआवे तो उसको सानह कहतेहैं मनुष्य उसपर जीतपाताहै कदाचित् दाहिनीओर से आवेउसको बारहकहतेहैं तो मनुष्य हारजाता है इसबातकी बहुधा शिकारके समय परीक्षाहोचुकीहै और सानह और बारज चिड़ियोंमें भी होताहै कहतेहैं कि भेड़ियेके पीछेघोड़ा नहींदौड़ताहै और जो भेड़िया घोड़ेकोकाटताहै तो उसको दौड़ने का बल अधिकहोताहै जो बकरीकोकाटे तो उसकामांस उत्तम होजाताहै कहतेहैं कि शेर और बबरकेबिरुद्ध जो बुढ़ापे में मनुष्य को दुःखनहींदेते भेड़िया बुढ़ापेमें भी मनुष्य पर चोटकरताहै बलैनास ने गुणोंकीपुस्तक में लिखाहै कि जब पहलेभेड़ियेकी दृष्टिमनुष्यपर पड़तीहै तो मनुष्य सुस्त और वह बलवानहोताहै यदिउसे मनुष्य पहलेदेखले तो मनुष्यप्रबल और वहनिर्बल होजाय (गुण) इसका शिर कबूतर के खाने में रक्खें बिल्लीवहां न जावेगी जो इसकाशिर बकरियोंके रहनेकेस्थान में गाड़ें सबबकरियां बीमारहोकर मरजायँ जो इसकाशिर जलाकर उसकीराख लगावें दांतोंकी पीड़ा दूरहो

इसकीदाहनीश्रांख जिसकेपासहो वहरातको न डरेगा और इसकी बाईंश्रांख नींद दूरकरतीहै इसकेदांत जिसके पासहों उसपर कोई भेड़ियाप्रवल न होगा जो घोड़ेपर लटकावें तेज़चलनेवालाहो जो इसकी राखसे दांतोंमें मञ्जन करें पीड़ा दूरहो और इसका पित्ता मक्खनकेसाथ मिर्गीवालेको पिलावें गुणकरे और स्त्री इसकी भगमें बत्ती रखनेसे गर्भवतीहोती है और आंख में लगाने से ढलकादूर होताहै इसकारुधिर अखरोटके तेलमें मिलाकर कानमेंडालना बहरे को लाभदायकहै यदि स्त्रीपिये बांझहोजाय इसका अण्डा भूनकर खाना कामदेव अधिककरताहै जोकोई उसको अपनेपासरक्खे वह बहुतसी स्त्रियोंको भोगसक्ताहै इसके पांवकीहड्डी अपने पांवमेंबांधे चलनेसे न थकेगा जो मनुष्य दाहनेपांवकी हड्डी अपनेपास रक्खे तो पुरुषोंसे वैरमें प्रबलरहेगा और बायेंपांवके पासरखनेसे स्त्रियों के वैरमें बलवान्होगा इसकेचमड़ेका बिछौना बनाना कूलंजकोदूर करताहै इसकीदुम जिसगांवमेंगाड़ें वहांमक्खियां न आवेंगी कहते हैं कि जो स्त्री भेड़ियेपर मूत्रकरे बांझहोजाय यदि कूलंजकीबीमारी वाला इसकी विष्टानिचोड़कर पिये पीड़ा शान्तहो बलैनास कहता है जो कूलंजवाले की रान में इसकी विष्टा बांधे तो भी लाभ करे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २२०

(सनाद) यहहैवानहाथीकी सूरतकाहोताहै परन्तु उससेडील डौल में छोटा और बैलसे बड़ा जब इसकी मादा जननेको होतीहै उसकाबच्चा शिर बाहर निकालकर चारा खाताहै और जहां बच्चा ज़मीन परगिरा वो तुरन्त इस भयसे भाग जाताहै कि उसकी मां उसको चाटकर मारडालेगी क्योंकि इसकी मां की जिह्वामें कांटे होतेहैं अबूरैहानख्वारज़मी का वचनहै कि हिन्दुस्तानकी धरतीपर एकपशु होताहै जो मांकी पेटसे शिर निकालकर चाराखाताहै और फिर अन्दर चलाजाताहै और जब सबलहो जाताहै तब उदरसेबाहर निकलताहै और जानकेडरसे अपनी मां से बहुत दौड़ताहै क्योंकि

तो चिल्लाकर अपने साथियों को इकट्ठा करलेता है कि वह आकर सहायतादें जब यहजानवर बीमारहोताहै तो अपने समूहसेअलग होजाताहै इसभयसे कि जो इसकेसाथी इसकी बीमारीको मालूम करेंगे तो खालेंगे और तलवार और तीरसे भय नहीं करता परन्तु लाठी और पत्थरके सामने नहींआता और जोकोई उसपर तीर या तलवार लगाये तुरन्त उसके आगे आकर उस पर धावा करता है बीमारी में एकप्रकारकी घासखाताहै जिसको जोदा कहतेहैं और इसके खानेसे आराम पाताहै जब बकरियोंकेपास पहुंचताहै दूरसे शब्दकरताहै कि शिकारीकुत्ते उधरआवें और आपदूसरीओरसे जाता है और बकरियोंको उठालेजाताहै और बहुधा बकरी की दुम पकड़ के दुममारताहै और उसकीदुममें यहप्रभावहै कि बकरी अपनेआप इसकेसाथ चलीजातीहै और यहकाम सूर्यनिकलने के पहलेकिया करताहै क्योंकि जानताहै कि रातभर कुत्ते रखवारी किया करतेहैं और सुबहको सोजातेहैं कहतेहैं कि जो भेड़ियामनुष्य के बाईओर सेआवे तो उसको सानह कहतेहैं मनुष्य उसपर जीतपाताहै कदाचित् दाहिनीओर से आवेउसको बारहकहतेहैं तो मनुष्य हारजाता है इसबातकी बहुधा शिकारके समय परीक्षाहोचुकीहै और सानह और बारज चिड़ियोंमें भी होताहै कहतेहैं कि भेड़ियेके पीछे घोड़ा नहींदौड़ताहै और जो भेड़िया घोड़ोंकोकाटताहै तो उसको दौड़ने का बल अधिकहोताहै जो बकरीकोकाटे तो उसकामांस उत्तम होजाताहै कहतेहैं कि शेर और बबरकेविरुद्ध जो बुढ़ापे में मनुष्य को दुःखनहींदेते भेड़िया बुढ़ापेमें भी मनुष्य पर चोटकरताहै बलैनास ने गुणोंकीपुस्तक में लिखाहै कि जब पहलेभेड़ियेकी दृष्टिमनुष्यपर पड़तीहै तो मनुष्य सुस्त और वह बलवानहोताहै यदिउसे मनुष्य पहलेदेखले तो मनुष्यप्रबल और वहनिर्बल होजाय (गुण) इसका शिर कबूतर के खाने में रक्खें बिल्लीवहां न जावेगी जो इसकाशिर बकरियोंके रहनेकेस्थान में गाड़ें सबबकरियां बीमारहोकर मरजायँ जो इसकाशिर जलाकर उसकीराख लगावें दांतोंकी पीड़ा दूरहो

इसकीदाहनीआंख जिसकेपासहो वहरातको न डरेगा और इसकी बाईआंख नींद दूरकरतीहै इसकेदांत जिसके पासहों उसपर कोई भेड़ियाप्रबल न होगा जो घोड़ेपर लटकावें तेज़चलनेवालाहो जो इसकी राखसे दांतोंमें मञ्जन करें पीड़ा दूरहो और इसका पित्ता मक्खनकेसाथ मिर्गीवालेको पिलावें गुणकरे और स्त्री इसकी भगमें बत्ती रखनेसे गर्भवतीहोती है और आंख में लगाने से ढलकादूर होताहै इसकारुधिर अखरोटके तेलमेंमिलाकर कानमेंडालना बहरे को लाभदायकहै यदि स्त्रीपिये बांझहोजाय इसका अण्डा भूनकर खाना कामदेव अधिककरताहै जोकोई उसको अपनेपासरक्खे वह बहुतसी स्त्रियोंको भोगसक्ताहै इसके पांवकीहड्डी अपने पांवमेंबांधे चलनेसे न थकेगा जो मनुष्य दाहनेपांवकी हड्डी अपनेपास रक्खे तो पुरुषोंसे बैरमें प्रबलरहैगा और बायेंपांवके पासरखनेसे स्त्रियों के बैरमें बलवान्होगा इसकेचमड़ेका बिछौना बनाना कूलंजकोदूर करताहै इसकीदुम जिसगांवमेंगाड़ें वहांमक्खियां न आवेंगी कहते हैं कि जो स्त्री भेड़ियेपर मूत्रकरे बांझहोजाय यदि कूलंजकीबीमारी वाला इसकी बिष्टानिचोड़कर पिये पीड़ा शान्तहो बलैनास कहता है जो कूलंजवाले की रान में इसकी विष्टा बांधे तो भी लाभ करे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८०

(सनाद) यहहैवानहाथीकी सूरतकाहोताहै परन्तु उससेडील डौल में छोटा और बैलसे बड़ा जब इसकी मादा जननेको होतीहै उसकाबच्चा शिर बाहर निकालकर चारा खाताहै और जहां बच्चा ज़मीन परगिरा तो तुरन्त इस भयसे भाग जाताहै कि उसकी मां उसको चाटर कर मारडालेगी क्योंकि इसकी मां की जिह्वामें कांटे होतेहैं अबूरैहानख़्वारज़मी का वचनहै कि हिन्दुस्तानकी धरतीपर एकपशु होताहै जो मांकी पेटसे शिर निकालकर चाराखाताहै और फिर अन्दर चलाजाताहै और जब सबलहोजाताहै तब उदरसेबाहर निकलताहै और जानकेडरसे अपनी मां से बहुत दौड़ताहै क्योंकि

मां उसको प्रीतिके कारण चाटतीहै और कांटेदार जिह्वा के कारण वह मरजातीहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २८१

(संजाब) चूहेकी सूरतपर होताहै परन्तु उससेबड़ाहै इसकेबाल बहुतनरम होते और इसकेखालकी पोस्तीं बनातेहैं जिसको अमीर लोग गरमीमें पहिनतेहैं क्योंकि बहुतठंढी होतीहै इसकामांस दीवानेको गुणदायकहै और जलेहुये दोषोंके रोगोंको भी लाभदायक है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २८२

(सनूर) अर्थात् बिल्ली यहपशु बहुतहै और मनुष्य से प्रीति रखता और बहुधा लड़ा करता ईश्वरने चूहेके दूरकरनेकेलिये इसे उत्पन्नकिया जब हज़रतनूह ने शेरकेमाथे पर अपना हाथमला तो शेरकेदोनों नाककेछिद्रों से बिल्लीका जोड़ा उत्पन्नहुआ इसीकारण बिल्लीकाशिर शेरकीतरह पर होताहै यहजानवर शुद्धरहताहै और प्रति समय बिल्ली अपने लार से अपने मुंहको साफ़ करती है और बिष्ठाकरने पर अपने को शुद्ध करती और उसको पृथ्वी में छिपादेतीहै कामके उपजनेकेसमय नरको बहुतदुःखहोताहै क्योंकि मादाउसके लिंगको दांतसेकाटतीहै परन्तु जब सरदीमें वहकामदेव से बहुत बिकल होताहै तब लाचारहोकर मादाकेवास्ते चिल्लाताहै और वह उसका शब्द सुनकर आतीहै मादाकेप्रसूत के समय भूख बहुतमालूम होतीहै जो उससमयकुछ न पावे तो अपनेबच्चोंकोखाती है और अपनीबिष्ठाको लोगोंकीदृष्टिसे छिपातीहै बाज़े कहतेहैं कि यहबात इसलियेहै कि चूहोंको उसकी गन्ध न मिले और भाग न जावें और बिष्ठाके छिपानेके उपरान्त उसेसूंघलेतीहै जब गन्धनहीं आती तब निश्चिन्तहोजातीहै और जब चूहेकोछत में देखतीहै तो अपने हाथ पैर हिलातीहै कि चूहा उसकेभयसे नीचे गिरपड़े और जब चूहेकोपकड़तीहै तो पहलेउसको थोड़ासा दबाकर छोड़देती है और जब वह चलताहै उसपर कूदकर मुंहमारतीहै तिदान बड़ीदेर

में उससे खेलखेलकर उसको मारडालतीहै और उसकेदुःखमें उसे आनन्दहोताहै ईश्वरनेहाथी के दिलमेंयहभय पैदाकियाहै कि बिल्ली से भागताहै (उसकेजोड़ोंकेगुण) जिसकेपास कालीबिल्ली के दांत हों रात्रिकोभय न पाये जो इसकापित्ता आंखमें लगाये रात्रिको भी अच्छी तरह दिनकी तरह देखे जो इसकापित्ता आधादिरम तेलमें मिलाकर लकवेवालेकी नाकमें डालें गुण दायकहै यदि गोंद और नमकमें घिसकर पुरानेघाव पर लगायें लाभकरे यदि कालीबिल्ली की तिल्ली का मासिकधर्म वाली स्त्री के लिये जिसको सदैव काला लहू जारी रहताहो यंत्रबनावें तुरन्त लहू बन्दहोजाय इसकामांस पकाकर पांवकीहड्डीकी पीड़ापरबांधना गुणदायकहै जो कालीबिल्ली का मांस खाय उसपर जादू न चले कोढ़ी को इसके लहू का पीना लाभदायक है और इसकी विष्ठा गुलाब तेल में मिलाकर लगावें ज्वर नाशहो जो इसकी विष्ठा पानी में घोलकर पांवकी हड्डियोंकी पीड़ापर मलें गुणदायक है और सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८३

(सनोबरुल अलबर) अर्थात् जंगली बिल्ली यहकुछ पालूबिल्ली से बड़ी होतीहै यह मकार अपने साथियों की रक्षामें प्रयत्न करती है यहांतक कि दिनमें एकदूसरे को बचातीहै और रात्रिको सब एक जगह रहतीहैं और सबका एक रखवाला होताहै जो वह रखवाला सोजाताहै तोसब मिलकर उसको मार डालतीहैं जो इसका भेजा जरजीर के पानीमें गरम २ पियें पार्श्वशूलको उप योगीहै और मूत्रको खोलताहै जो इसकी बिष्टाका धुआँलें वीर्य पेटसे गिरपड़े सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८४

(शेरांस) यह जानवर काबल और जाबल के जंगल में होताहै इसकी नाकमें बारह छिद्रहोते हैं इसकी श्वासमें बाँसुरीका शब्द पाया जाताहै कहतेहैं कि इसकी नाकके शब्दसे बांसुरी का बाजा निकला है इसके श्वासलेने के समय सम्पूर्ण पशु क्या पालू

वया जंगली इसका शब्द सुनकर इसके पास इकट्ठे होतेहैं और अति सुंदर स्वरसे मूर्च्छागत होजाते हैं उससमय यह जानवर अपनी इच्छाके अनुकूल शिकार करताहै जो उसको शिकार की इच्छा न हुई तो भयानक शब्द करताहै जिसके डरसे सम्पूर्णपशु भागजातेहैं सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८५

(शादावार) यहपशु रूमके शहरों की ओरमें होताहै इसके शिरपर एकसींग होताहै जिसके बयालीस दरजे होतेहैं और वह सब बीचमेंसे खाली होतेहैं जबवायु उनमें भरतीहै तो उनमेंसे सुन्दर शब्दनिकलतेहैं जिसके सुननेसे सम्पूर्ण पशु इकट्ठे होजातेहैं कहतेहैं कि इसका सींग भेंटकी तरहपर एकबादशाहके पास लोग लेगये जबवायु उसमेंभरी तो ऐसा रोचक शब्द उसमेंसे निकला कि निकटथा कि बादशाह समेत सम्पूर्णसमाज मूर्च्छितहोती और जब उससींग को उलटाकर दिया तो ऐसा बुराशब्द निकला कि निकटथा कि सबरोने लगें सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८६

(ज़बह) अर्थात् कफ़्तार जिसेहिंदी में हुंडार कहतेहैं यह जानवर कुरूप और थोड़ा होताहै अर्थात् इसकी उत्पत्ति कमहोती है कबरों को खोदकर मुरदे निकाल लेजाताहै अरब वालोंका बचनहै कि हुंडार साहसी पुरुषोंके भी मांस खानेमेंभी नहीं हटता ज़बीर के पुत्र अब्दुल्लाने काव्यकहीहैं जिसकेअर्थ यहहैं कि हुण्डार को प्रसन्नताहो कि मरने के पीछे वहमेरा मांस खायेगा क्योंकि मेराकोई सहायक नहींहै और शन्फरी की कविता के यह अर्थहैं कि सबलोग मेरी क़बरके पास आनेको बहुतबुरा समझतेहैं सो अम आमर को प्रसन्नताहो कि वह निर्भय होकर मेरा मांसखाय अम आमर एक प्रकार हुंडारकीहै कहतेहैं कि यह जानवर एकवर्षनर और एकवर्ष मादा रहताहै इसजानवर और कुत्तेसे विरोध है जो इसकी छाया कुत्तेपर पड़जाय चलनसके उससमय हुंडार उसको

मार डालताहै जब बीमार होताहै कुत्ते का मांस खाकर आराम पाताहै और भेड़िये और हुंडारमें मित्रताहै परस्पर भोग करतेहैं जबहुंडार भेड़िये की मादासे ज़ुफ्ती खाताहै तो उसकाबच्चा समा के नामसे प्रसिद्ध होताहै इसका स्वरूप माता पिताके स्वरूप के बीचमें मिलाहुआ होताहै और जब भेड़िया हुंडार की मादासे ज़ुफ्ती खाताहै तो उसके बच्चेको अय्यार कहते हैं कहतेहैं कि यह जानवर सांप की तरह अपनी मृत्यु से नहीं मरता इनकी मौत किसीकारण से होती है कहते हैं कि यह जानवर जब मर जाता है तो भेड़िया इसके बच्चोंको पालताहै अरब में एक जाति ज़बऊन नामी होती है कहते हैं कि जिस समूहमें इस जाति का एक मनुष्य होता है वह समूह हज़ार मनुष्य का हो तो हुण्डार सिवाय उस मनुष्य के किसीका उद्योग न करेगा हुंडारका शोरबा सम्पूर्ण शीतकी बीमारियों को गुण दायकहै--(गुण) इसका शिर कबूतरों की छतरीपर रक्खें वहां बहुत कबूतर इकट्ठेहोंगे इसकी जिह्वा जिसके पासहो वहबड़ा वाचाल और शत्रुपर सबलरहे और उसकी जिह्वा बातकरनेमें तड़ाक पड़ाकहो इसके दांतका पास रखना समझ बढ़ाताहै और इसका कलेजा जलाकर सुरमा बनाना रतौंधी को लाभ दायकहै इसका पित्ता ढलके को उपयोगी है बलैनासने लिखाहै कि इसका पित्ता गोरय्या चिड़ियाके लहूसे मिलाकर आंखोंपर मलना ढलका बंदकरताहै जो इसकाभेजा मनुष्य बांधे निद्राका वेगहो जो इसके दिलका लड़के के लिये यंत्र बनावें तेज़समझहो इसकी चरबी भौंहपर मलना लोगोंकी दृष्टिमें प्रिय करताहै मुख्य करके स्त्रियोंमें इसका चुंगल जिस वृक्ष पर लटकायें कोई जानवर उसदरख़्तको खराब न करेगा हुरमुसहकीम का बचनहै कि जोकोई इसका लिंग सुखाकर दोरत्ती के अनुमान खाय कामदेव की बहुतही प्रबलताहो यहांतक कि बीस स्त्रियां रमावे जो उसको किसी व्यभिचारिणी स्त्रीको उसकी खबर बिना खिलादें उसका कामदेव बिल्कुलजातारहे औरफिरपुरुपकी इच्छान

करे जो इसजनवरकी योनिको ज्वरवाले पर बाँधें दूरहोजाय बलैनास कहताहै कि इसकी भग और नाभिकी खालका बांधना भी ज्वरको उपयोगीहै और जो कोई स्त्रीदेखे उसपुरुषको मित्ररक्खे जोस्त्री बांधे पुरुष उसकी अभिलाष करे जिसपृथ्वीपर उसकी खाल डालदी जावे वहां सरदी और टिड्डोंकी आफतनहो जो इसकी खालकी चलनी बनावें और उसमें छानकर गेहूंबोयें सब आफ़तों से बचे शेखरईसका बचनहै कि जिसको कुत्तेने काटाहो वह इस जानवर की खालका प्याला बनाकर उसमें पानीपीवे तुरन्त आरामपाये इसका चमड़ा ससेकी गर्दन में बांधें कुत्ते उससे भागें जो इसकी गुदाकेबाल उखाड़कर जलाकर हिजड़ेके शरीरमें मलें उसकी आदत दूरहो इसकी विष्ठा आसके तेलमें मिलाकर शिरमें लगायें बाल निकलें सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २८७

(उनाक) सियाह गोशको कहतेहैं यह कुत्तेसे बड़ा है सुन्दर लाल ऊंटकासा रंगकान काले किये होताहै इसका शिकार चीतेके शिकार की तरह होताहै जबराह चलताहै तो अपने नख चिन्ह मिटाता है और कुलंग अर्थात् कौंचका शिकार करता है जो वह दौड़ताहै तो यह उसका पग पकड़ लेताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २८८

(अतरह) एकपशु जंगलमें होताहै इसकी नाक महीन होती है यहजानवर ऊंटके पीछेसे उसको पकड़कर मारडालताहै कहते हैं कि यह जानवर शैतान की तरह होताहै लोग उसको देखते हैं परन्तु ऊंटनहीं देखताहै इसीकारण वह इसका शिकार होजाता है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २८९

(फ़ला) शेखरईस कहताहै कि यह जानवर शोरनी से छोटा और मटियाले रंगका होताहै और उत्तम हलका मुंहखुला किये है जब किसी जानवर को देखताहै उसकी ओर दौड़ताहै यह जानवर

जब किसीको काटे बड़ीपीड़ा पैदा होतीहै जिसकी औषधि कठिन है (गुण) इसके मांसके शोरबेमें कूलंज और पांवकी उंगलियोंकी पीड़ा वालेको बैठना उपयोगीहै सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर २६०

(फ़हद) अर्थात् चीता यहबड़ा क्रोधी दौड़नेवाला और महीन कंठवाला होताहै कोई कहतेहैं कि यहपशु शेर और चीतेसे उत्पन्न होताहै जैसा कि खच्चर घोड़े और गधेसे पैदा होताहै और सब जंगली जानवर चीतेकी गंधसे प्रसन्न होते हैं यह जानवर अपने शिकार को शेरकी भेंटकरताहै जबशेरका खाकर पेटभर जाताहै तब उसका जूठाबचा आपखाताहै जाहिज़ कहताहै कि जब यह मोटाहो तो यह जानताहै कि हरएक जंगली जानवर उसके मारने की चिन्तामेंहैं सो अपने को उससमयतक छिपालेताहै कि जबतक सबचीते मोटेहों फिर अपने समूह में रहताहै और सम्पूर्ण जंगली जानवरोंसे अलग रहताहै कि वायुसे उसकीगंध जंगलीजानवरोंमें न पहुंचे बीमारीमें कुत्तेकामांसखाकर आरामपाताहै अच्छीआवाज़ को प्रिय जानताहै और कानलगाकर सुनताहै जब इसजानवरसे और रीछसे जुफ़्तीहोतीहै तो एकअद्भुत पशुउत्पन्नहोता है जिसका नाम कोसालहै (गुण) जिसघाव से लहूजारी हो इसकापित्ता शहद और नमकमें मिलाकर लगावें बन्दहोजाय इसकामांस बहुत खाना समझ तेज़ और बलवान् करता है जिसजोड़में पीड़ाहो वहां इसके लहूका लेपकरना लाभकरे जो इसका लहू पियें अहमक़ होजायँ जो इसके नख मकानमें रक्खें चूहे भागजायँ सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर २६१

(हाथी) यह सम्पूर्ण पशुओं से मस्तभारी और मोटा होता है और सूंडको धरतीपर झुकाये रहताहै बाज़े के दांत तीनसौमनके होतेहैं और हाथी इन सबबातों के होनेपर हंसोड़ और बुद्धिमान् होताहै ईश्वर की इस जानवर की उत्पत्ति में अद्भुत कारीगरी है इसकी गर्दनछोटी और सूंड़ लम्बीपैदा की जो मनुष्य के हाथों के

बदलेहै जिसकेद्वारा चारा और पानी अपनेमुखमें पहुंचाताहै और वह सारे शरीर में पहुंचसक्ती है और कान बड़े २ ढाल की तरह होते हैं जिससे मक्खी और मच्छड़ दूरकरताहै क्योंकि इसकामुंह सदा खुलारहताहै जो मक्खी या मच्छड़को उसके कान या मुख में जावे तो तुरन्त मरजाय इसीकारण सदा उसकेकान हिलाकरते हैं उसके दोबड़ेदांत होतेहैं जिसकाभार दोसौमनतक है इसकेजोड़ नहींहैं परन्तु कन्धा रान और टखना रखताहै इसजानवरमें पचास वर्षके उपरान्त कामदेव उपजताहै और सातवर्ष के उपरान्त बच्चा उत्पन्न होताहै क्योंकि इतने समय में इसकेबच्चे के सबजोड़ मज़बूत होतेहैं और यह जानवर सर्पका शत्रुहोताहै सर्प को देखतेही पैरकेनीचे कुचलताहै और सांप भी इसकेबच्चे को काटकर मारडालताहै इसकी बीमारी सांपके खानेसे दूरहोतीहै जब यह जानवर परिश्रमकरनेसे थकजावे तो इसके दोनोंकन्धे तेल और गरमपानी से मलें फिर सबल होजाय जो अपने पहलू के बल गिरे उठना कठिनहै सो और हाथी इकट्ठेहोकर सहायतादेकर उठातेहैं जबकोई वृक्ष उखाड़ना चाहताहै उसकी जड़ में सूंड़लपेटकर जड़से उखाड़ लेताहै जंगीहाथी एक चलनेवाली गढ़ीकीतरह होता है जिसपर बहुत से मनुष्य सवार होते हैं और इसको सूंड़ में एक लोहे का हथियार नोकदार पहिनाते हैं जिसको अरबवाले क़रतिल कहते हैं और उसीकी चोट से घोड़े और ऊंटको दोटूक करता है इसके गिर्द पांचसौ पैदल आदमी रक्षा को रहते हैं और उसकी पीठपर वीरलोग सवार होते हैं उससमय पांचहज़ार सवार को जीतसक्ते हैं इसकी आयु बहुधा चारसौ वर्ष तक होती है ज़नादी कहता है कि सुलतान मन्सूर के समय में एकहाथी देखनेमें आया जिसको लोग कहतेथे कि इसने बहुतसी लड़ाइयांजीतीं और हाथी अराक़ की धरती में जल्दी मरजाता है मुख्य करके नर मादासे जल्दी मरता है फ़ीलवान इसके शिरपर बैठता है और अंकुश मारता है जिसकी सैन से हरएक काम होता है और बड़ा किनारखता है

कहावत है कि किसी फीलवान ने हाथी के पैरवृक्ष में बांधे और आपदूरजाकर सोरहाफीलवान के शिरमें बालबहुत लम्बेथे हाथी ने अपने फ़ीलवान को सोयापाकर एकडालतोड़ी और उसकोसूंड़ में पकड़ कर फ़ीलवान के बालों में लपेटकर अपने साम्हने खींच लिया और पांवके नीचे दबाकर मारडाला (गुण) बलैनासनेलिखा है कि जो इसके कानका मैलपिये एकसप्ताहपर्यन्त निद्रा न आवे-गी और जोइसकापित्तातीनदिनतक कोढ़परलगावेंआरामहोजाय जो इसकीचर्बी का धुवांकिसीके शरीरपर पहुंचे कोढ़पैदा होइसकी हड्डी मिर्गीवालेकी गर्दन में बांधनागुणकारकहै जो इसके दांतका धुवांवृक्ष में पहुंचायें उसकाफल खट्टा न होगा और उसकेकीड़े दूर होजायेंगे जो इसकेदांतों का बुरादा शहद के साथझाईं पर मलें झाईं शीघ्रनाश हो जो इसके दांत दरख़्त परलटकायें उस वर्ष न फलेगा जोघरमें धूनीदेंमच्छड़ मरजायेंगे जो इसके दांतकाबुरादा उपद्रवकारक घावपरछिड़कें वहघाव अच्छाहोजाय और जलेहुये जोड़को भी गुणदायक है इसकाचमड़ा हरबुरी बीमारी में बांधना गुणदायक है कहते हैं जिसके जोड़ सूखे हों और खालमें झुर्रियां पड़गई हों उसको इसकी खालपर सोनालाभकरे इसकीखाल का धुवां बवासीरखोता है इसकामूत्र जिसघर में छिड़केंचूहे न आवेंगे इसकीविष्टा का धुवांहरतपवालेको गुणकरे जो कूलंजवाला इसकी विष्टापिये लाभकरे और फिरउसको यहदुःख न हो जो इसमें सर्प की केंचुल मिलाकर सुरमा बनावें तो प्रबाल ढलका और आंख के बदगोश्त के लिये उपयोगी है जिसकेपास इसकीविष्टा हो उसपर को बुरी नज़र न लगेगीयदिस्त्री इसकीविष्टाअपनी योनि में रक्खे गर्भवती न होगी बहुधा हिन्दुस्तान की व्यभिचारिणी स्त्रियांऐसा करती हैं कि युवावस्था को चमत्कार वर्त्तमानरहे नहीं तो कईबार के लड़काहोनेऔरदूधपिलानेसे वहसुन्दरतानहीं रहतीसूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर२६२

(क़रद) अर्थात्‌लंगूर एकबदरूपपशुहोताहै और सदाशिरनीचे

रखताहै और जल्दी समझनेवाला और महीनकारीगरियां सीखता है चौड़ेकपड़ोंको जिसके दोनोंओर जुलाहे काहाथनहींपहुंचता तो वहकपड़ा जुलाहाइसीकी सहायतासे बुनताहै मलिक नौबने दोलंगूर भेंटकी तरहपर ख़लीफ़ाके वकील को भेजे जो एक दरज़ी और दूसरा सुनारथा यमनके लोगोंने उनको यहांतक सिखाया कि जब बनियां औरकस्साब कहींजावें यहपशुदूकानकी रक्षाकरें और सौदा बेंचें मादाबारह बच्चेतक जन्तीहै और इसकोमनुष्यकी तरह अपनी मादासेबड़ी लज्जा आतीहै सफाय यमनके रहने वालोंमेंसे एकका वर्णनहै कि एकदिनमैं किसीपहाड़पर गया वहांएक लंगूरको देखा कि अपनी मादाके घुटनेपर शिररक्खे सोरहाहै संयोगसे एकदूसरा लंगूर आया उस मादाने अपने पतिका शिर हलकेसे हटाके उस लंगूरसे कोनेमें जाकर भोगकिया जब वह जगा और उसको ढूंढ़ा जब उसको पाया तो सूंघनेसे समझा और चिल्लाया उसके चीखने के साथही बहुतसे लंगूरइकट्ठे होगये और वृत्तान्तके मालूमकरने के उपरान्त उस मादाको एक गढ़ेमें बैठाकर पत्थर फेंककर मारडाला (गुण) जो इसके किसी जोड़को मनुष्य अपने पासरक्खे जो मनुष्य उसको देखे उसका मित्र होजायेगा और जो इसके दांतको घिसकर आंखमें लगाये सपेदी दूरहो इसका मांस पकाकरखाना कुष्ठको गुणदायक है यह गुण शेरसे मालूम हुआहै क्योंकि जब शेरको कुष्ट होताहै तो इसका मांस खाने से अच्छा होजाता है इसका लहू मनुष्य पीवे गूंगाहो और लोगोंकी दृष्टिमें अप्रतिष्ठापावे और जो इसकी खालकी चलनीमें कोई बीजछानकर बोये तो उसकी खेती टिड्डी आदिके उपद्रवोंसे बची रहेगी स्वरूप यहहै॥

तसबीर नम्बर २६३

(करगदन) अर्थात् गैंड़ा यह जानवर डीलडौल में हाथी की तरह पर होताहै और सूरतमें बैलसे मिलताहै परन्तु इतना अन्तर है कि बैलसे बड़ा होताहै और इसके सुम भी होते हैं और क्रोधी होताहै यह जानवर जिसपर दौड़ताहै नहींचूकता और सम्पूर्ण

पशु इससे डरतेहैं हिन्दुस्तान में होताहै इसके शिरपर एक सींग होताहै जो बहुत कठोर और मोटा और नोकउसकी बहुततेज़ और जड़ उसकी मोटी और नोकका मुंह पीठकी ओर और झुका हुआ मुखकी ओरहै आश्चर्य है कि इसके सुम और सींग दोनों हैं क्योंकि सुमवाले जानवरके सींगनहीं होता और यह जानवर कमहोता है और आयु सातसौ वर्षकीहै पचासवर्षके उपरान्त उसकाकामदेव प्रबल होता है और तीन वर्षके उपरान्त बच्चापैदा होताहै हिन्दके लोग कहतेहैं जिसधरतीपर गैंड़ाहो वहां और पशु नहींरहते जब हाथीकोदेखताहै तो उसकेपीछेसे आकर उसके पेटमें सींगमारता है और अपनेदोनों पांवपर खड़ाहोजाताहै और हाथीको उठालेताहै परन्तु जबवह चाहताहै कि हाथीको अपने सींगसे अलगकरे नहीं होसक्ता निदान दोनोंगिरके मरजातेहैं कहतेहैं कि इस जानवरपर कोई हथियार नहीं लगता और कोई पशु इसका साम्हना नहीं करसक्ता और इसको फ़ाख़तासे प्रीति है जिस वृक्षपर फ़ाख़्ता का घोंसलाहो उसके नीचे खड़ाहोकर उसकाशब्द सुनता और प्रसन्न होताहै (गुण) कहतेहैं कि किसीगैंड़े के सींगमें एक गिरह होतीहै और उस गिरह में सवार का चित्र होताहै ऐसा सींग हिन्दुस्तान के किसी राजा के पास होताहै इसकागुण यहहै कि कूलंजवाले के हाथमेंलेतेही आराम होजाताहै जो उसको घिसकर पीवें मिर्गीदूर हो जोड़ों की ऐंठन फड़कने की बीमारी जल्दी नाशहो इब्नुलख़ैर अस्तराबादी कहताहै कि एकदिन एक मनुष्यों का समूह गज़नी को जाता था उसमें इसकापिता था अकस्मात् ख़बरआई कि राह में डकैतलोग लूटमार करतेहैं यह सुनकर हरएक घबड़ाया हमारे समूह में से एक मनुष्य ने कहा कि मतडरो मैं उनको दूर करता हूं इसशर्त्तपर कि मुझे उनकेपास पहुंचादो सो एकमनुष्य ने उसको चोरोंकी जगहपर पहुंचादिया जब डकैत पहाड़की गुफ़ा से बाहर निकले उसने कोईचीज़ अपनेपाससे निकाली और पृथ्वीपर रगड़ कर वहां की मट्टी उनकीओर उड़ादी मट्टी के उड़ातेही ऐसी प्रचंड

वायुचली कि सबचोर गिर२ पड़े और किसी से खड़ा न रहागया सो सर्वसमूह वहां से निकलकर आनन्द से चलागया और किसी को उनमें दुःख न पहुंचा जबहम गज़नीपहुंचे शेखअलीइब्न सेनाके मिलने को उसमनुष्य के साथगये और बातचीत में उस उपायका वर्णनकिया शेख ने उत्तरदिया कि यह मनुष्य मेरे मित्रों में से है और इसके पास गैंड़े का सींगहै जिससे ऐसी अद्भुतबातें होती हैं इसने मुझे कई सौगातेंदी हैं उसमेंसे एकगांठ गैंड़ेके सींगकी और एकछुरी जिसकादस्ता उसी सींग का है उसका गुण यहहै कि वह छुरी जो ऐसे खाने या शराबके पासरक्खीहो जिसमें विषमिलाहो तो विषके बलको तोड़ती है जो मनुष्य इसकी दाहनी आंखका यन्त्र बनावे सर्वपीड़ाओंको दूरकरे देव परी और सर्प कोई उसकेसामने न आवे यदि बाईंआंखहो ज्वर दूरकरे जो इसकीखाल का जौशन बनावें कोई हथियार न लगे सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर २८४

(कलब) अर्थात् कुत्ता यह पशु बड़ा परिश्रमीदुःख सहनेवाला और मनुष्य का मित्र परमहितैषी होता है और सर्व्वदा भूखा और जगा हुआ रहता है और थोड़े से उपकार में बड़ी सेवा करता है और मुख्य इसी से चोरों और चौकीदारों की रक्षा है जाहिज़का बचन है कि यह ऐसा बुद्धिमान् होताहै कि जो इसको हिरणके समूहपर छोड़दें तो मादाको छोड़ कर नरको पकड़ता है क्योंकि चाहे मादासे नर अधिक दौड़ता है परन्तु यह आशरखता है कि यह भयखाकर जल्दी पेशाब करेगा उससमय उसको ठहर-नेकी आवश्यकता होगी और मैं पकड़लूंगा परन्तु मादा को कि मूत्र करने के समय ठहरनेकी कुछ आवश्यकता नहीं होती नहींप-कड़ता और अधिक आश्चर्य यहहै कि बरफके दिनों में जब पृथ्वी बरफसे छिप जातीहै तो शिकारी को बुद्धि होनेपर भी शिकार की पहिंचान नहीं रहतीहै तो यह शिकारीको शिकारकी जगह बताता है परन्तु यह बात मुख्य करके शिकारी कुत्ते में है यह जानवर

वरफ़से दुःख पाताहै और यही कारण है कि बादल को देखकर चिल्लाताहै अरबवाले दृष्टान्त कहते हैं कि कुत्तेके चिल्लाने से बादल की कोई हानि नहीं पहुँचती रात्रिको जब किसी मनुष्यको देखता है तोभौंकताहै और जब वह मनुष्य बैठ नहीं जाताहै तबतक यह भीचुप नहीं होता और जब वह बैठ जाताहै तो यह चुप होरहता है इस बिचारसे कि अब मैं इस मनुष्यपर प्रबल हुआ और उसको हरादिया इस जानवर को गर्मीके दिनोंमें उन्माद रोग होताहै इसका स्वभाव गरम और खुश्क है ज्यों २ गरमी अधिक होतीहै उसका रोग बढ़ता जाताहै इसकी लार हलाहल विषहै जिसका उपाय नहीं इसके उन्माद रोगका लक्षण यहहै कि सदा जिह्वा निकाले रहे नेत्र लालहों गर्दन टेढ़ीकिये रहे शिरको नीचे डालेरहे और पूंछको रानोंमें दबायेरहे और मस्तकी तरहहर एकपर लपके जिधर दृष्टिकरे उस ओर दौड़े चाहे वह दीवारहो या दरख़्त यहां तक कि उसके साथी इससे भागतेहैं जो किसी को काटे असाध्य हवै वहभी कुत्तेकीतरह भूकनेलगे और जबपानीमेंअपनी सूरतदेखे कुत्तेकी सूरत मालूमहो और कभी पानी न पिये यहांतककि बहुत प्याससे मरजाय बलैनास कहताहै कि एक दीवाने कुत्ते ने घोड़ेको काटा उसका सवारभी दीवाना होगया कुत्तेकी बीमारी गेहूं की बालियां खानेसे दूर होतीहै गधेकी आवाज़से इसके शिर पीड़ा उत्पन्न होतीहै जो किसीने मेहँदी लगाई हो उस समय सपेद या पीलेरंग का कुत्ताचिल्लावे कभी अच्छारंग न होगा कुत्ते की प्रकृति उष्णता और खुश्कताकेकारण चिपनेवालीहोतीहै सो उसकीखुश्की लिंगके छिद्रमें इकट्ठी होकर गांठकी तरहपर होजाती है और जो कोईपत्थर किसीकुत्तेपर मारे और कुत्ताउसको पकड़कर फेंकदे जो उसपत्थरको कोईशरावमें छोड़करपिये लड़ाईकरनेलगे जो कबूतरों की छतुरीमें रखदें सब कबूतर चलेजायँ अस्फ़हान में एकमनुष्य ने एक आदमीको मारडाला और कुयेंमें डालकर उसकामुख बन्दकर दिया उस मरेहुये मनुष्य के पास एक कुत्तारहा करता था उसने

देखलिया वह जब आता उसकुयेंकी मिट्टी उड़ाता और जबमारने वालेको देखता भौंकता लोगोंने कुयेंकामुंह खोलकर लाशनिकाली और मारने वालेको भी उसी निशानसे पकड़कर दण्डदिया अन्तको उसने अंगीकार किया और मारडाला गया कहतेहैं कि एकमनुष्य के पास कुत्ता था संयोगसे उसने चाहा कि दरियामें जायेंकुत्तेने उसका पांव पकड़ा और उसको दरियाकी ओर जानेसे मनाकिया उस पुरुषने क्रोधित होकर तलवारसे उसे मारकर दरियामें फेंक दिया एक घड़ियाल पानीके नीचे घातमें था वह कुत्तेकी लाशखींच लेगया उस समय वह मनुष्य समझा कि इसीवास्ते इसने मना- किया था और बहुत पछिताया (गुण) जिस मकान की दीवार के नीचे कालेकुत्ते की आंख गाड़ें वह मकान उजाड़ होजाय जो किसी के पासहो उसपर कुत्ते न भूंकेंगे यदि इसके दांत दुखदाई कुत्तों के बांधें कभी न काटेंगे जो लड़केके गण्डा बनावें दांत सुगमता से निकलें और कमलवायु वालेके गुणकरे और स्वप्नमें बरानेको भी उपयोगी है यदि दीवाने कुत्ते के दांत अपने पास रक्खें फिर कोई दीवाना कुत्ता उसको न काटेगा जो इसकी जिह्वा किसीके मोजेमें सियें उसपर कुत्ता न भूंकेगा बहुधा चोर यह काम करतेहैं जो इसका पित्ता सुरमेकी तरह पर लगायें आंख की अँधेरी को गुण कारकहै इसका कलेजा खाना भी गुण करताहै मुरदे कुत्ते की चरबी कण्ठ- मालाको गलातीहै विशेष करके जब दाना कण्ठ या मुखमेंहो बलै- नास कहताहै जो कुत्तेका काटा हुआ मनुष्य पानी न पीवे कुत्ते का दाहना पैर पकाकर उसको खिलावें तो वह पानी की इच्छा करे इसका लिंग सुखाकर रानपर बांधना कामदेवकी अतिशक्ति करता है काले कुत्तेके बाल मिर्गीवालेके बांधना गुणकारी है कुत्तेका मूत्र मलना मस्सों को दूर करताहै इसके चिचड़े खाना कूलंज वालेको लाभकरे जो इसके दूधको शराब या शहदके साथ खावें मुरदा बच्चा गिरायें इसकी विष्टा पीनसके रोगीको गुणदायकहै और इसकीबत्ती रखना गर्भ गिरादे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २६७

(निमर) अर्थात् तेंदुआ यह जानवर बलवान् क्रोधी बड़ागुस्से वालासुन्दर और मनुष्यका शत्रुहोताहै इसकाजंगलीपन किसीतरह पर दूरनहींहोता और यह अन्य पशुओंकाशत्रु होताहै और किसीसे नहींडरताहै यहांतक कि जो एक लश्कर इसपर धावाकरे तो भी न भागे यह जानवर (शेरकेविरुद्ध कि वहपेटभरेपरनहींबोलता) चाहे भूखाहो चाहे पेटभरा हर जीव धारीपर लपकता है इसकी पीठका मोहरा बड़ा कमज़ोर होताहै जो हल्कीसी चोट कमरपर पहुंचे टूट जावे इसके जागने पर इसके खरखरे से पशुभाग जाते हैं और जानतेहैं कि यह शिकारकी इच्छा रखताहै कहतेहैं कि इसकेमुखसे सुगन्ध होतीहै परन्तु शेरके मुखमें नहीं कहतेहैं कि जो किसी के इसका घाव होगयाहो तो उसपर चूहे मट्टी डालतेहैं कि घाव सड़ कर घायल मरजाय और इसीकारण ऐसे घायल की रक्षा अच्छी तरह पर करतेहैं और चूहों के डरसे बिल्लियां को पास रखते हैं यह जानवर बीमारी में चूहेखाकर आराम पाता है इससे और सर्पसे मित्रताहै जब यह बच्चादेताहै तो भुजंग इसके बच्चे के गिर्द कुण्डल बांधकर रखवाली करता है (गुण) कहते हैं कि इसके सम्पूर्ण अंग हलाहल विष हैं जहां इसका शिर गाड़े वहां चूहे बहुत इकट्ठे हों इसके पित्तेका सुरमा आंखोंका प्रकाश अधिक करता है जो इसका मांस पाँच दिरम बलसांके तेलके साथ खाय सर्पका विष प्रभाव नकरे इसकी चरबी लगाना पुराने घावोंको साफ़करता है इसकी हड्डी लड़कोंके लिये यंत्र बनाना खांसी दूरकरे जो बवा-सीरका रोगी इसकी खालका बिछौना बनावे गुणकारी हो इसकी खाल जिसके पासहो भयानक मालूमहो सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर २३८

(यामूर) एक जंगली जानवरहै इसके दो सींग होते हैं इसका स्वरूप बारासिंगे से मिलताहै बहुधा नदियों के किनारेपर रहताहै और झाड़ियों में घुसकर खेलकरताहै इसके सींग गज आदियें

फँसजातेहैं छूटनहींसक्केहैं तो दीनहोकर चिल्लाताहै उससमय लोग पहुँच कर पकड़ लेतेहैं (गुण) इसका मांस शराबमें पकाकर लड़कों को खिलाना समझ अच्छी करताहै इसकी खालका बिछौना बवासीरको गुणदायक है जो इसके पांवकी हड्डी पैर में बांधे चलने से न थकें सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २६७

छठाप्रकार पक्षियों का वर्णन ॥

ईश्वरने इसप्रकार को हलका और छोटेजोड़ोंका बनायाहै जब निर्बलताके कारण सामनानहीं करसक्ता तो परोंसेभागनेको शक्ति कृपाकी और यहभी समझनाचाहिये कि यह उड़जाना हलकाहोने के कारणहै नहीं तो भारीहोकर क्योंकर परमारसक्ता वरन जो वायु पर बहुतठहरतेहैं वह बहुतहीछोटेहैं ईश्वरकीअद्भुतमायाहै कि चाहै हवा पक्षियोंसे हलकीहै परन्तु पक्षी उसपर ठहरारहताहै और नीचे नहींगिरता मानो वायु उसकीकिश्तीकेबदलेहै तथाच ईश्वरकावचन है कि पक्षियोंकी ओर नहींदेखतेहो कि क्यों वह आकाश के नीचेहैं सो सिवाय परमेश्वर के उनको कौन वायु पर ठहरासक्ता है और उनमें बहुतसेजोड़ हलकेपन के सबबनहींहै जैसे कान दांत फुकना अर्थात् मूत्राशयआदि और इनकेबदले छोटेजोड़पैदाकिये जैसा कि मेदे के बदले पोटा और दांत के बदले चोंच और कान की जगह थोड़ा छिद्र और बालोंकी जगहपर और इसीतरह हर भारी जोड़ की जगह हलके पैदा किये और कई जोड़ोंको इनमें से गिराहुआ कर दिया जिसकी गर्दन लंबी होगी उसके पांवभी लंबेहोंगे जिस की गर्दन छोटीहै उसके पांवभी छोटेहैं जो इनकी पूंछ काट डालें तो उड़नेकीशक्ति कमहोजातीहै जाहिज़काबचनहै कि जोपक्षी तेज उड़नेवालाहो वह बहुत हलकाहै जैसे कबूतर और चमगादरऔर गौरय्या जो इनके पांव न हों तो उड़ न सकें जैसा कि जो मनुष्य के पांव न हों तो चल नहीं सक्ता जिस पक्षी के कान बाहर नहीं होते वह अंडदेताहै जिसकेकान बाहर होते हैं वहबच्चा देताहै और

अपनेबच्चेको दूध भी पिलाताहै कई पक्षी कई रंगके होतेहैं जैसे मोर और बाज़े बहुत उत्तमकबूतर और कई गानेवाले जैसे बुलबुलऔर फाख़्ता अब यहांपर पक्षियोंके नाम उनके गुणों समेत लिखेजातेहैं (अबूबराक़श) एक पक्षी सुन्दर खुश रंग होताहै जिसकी गर्दन लंबी और पांवभी लंबे चोंच लाल और लंबी और यह हर समय रंग बदलता है कभी लाल कभी पीला कभी सब्ज़ और कभी श्याम एक कवि कहताहै कि मैं बराक़श पक्षी के सदृशहूं कि हर समय रंग बदलता हूं इस पक्षीके रंगोंपर रूममें कपड़ा बुनते हैं जिसका नाम बोक़लमूंहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २६८

(अबूहरवन) इस पक्षीका सुन्दर स्वरहै कि इसका सामना कोई बोलनेवाला नहीं कर सक्ता रातभर सुबहतक चहकताहै और बहुतसी चिड़ियां उसका शब्द सुननेको इकट्ठी होतीहैं प्रीति करने वाले लोग अधिकतर अभिलाषा करके वहांपर ठहर जातेहैं सूरत उसकी यहहै॥ तसवीर नम्बर २६६

(अवज़) अर्थात् बतख़ यह जानवर अन्य देश गामी होताहै जब इसका बच्चा अंडेसे निकलताहै तुरन्त दरियामें चला जाताहै और दृढ़ होताहै इसका स्वभाव यहहै कि इसका नर अंडेकी रख-वाली नहीं करता और इसके अंडे नौ या ग्यारह होतेहैं जबमादा अंडोंकी रक्षा करती है तो नर खड़ाहोकर चौकीदारी करताहै और बच्चा उन्नीसवें दिन निकलताहै या एक महीनेके पीछे कहते हैं कि इनके पेटमें एक पत्थर होताहै जो उसको घिसकर गूंगेको पिलावें गुणकरे इसका भेजा सौंफके साथ काढ़ा करके ववासीरवाले और उदर पीड़ावाले को पीना गुणकारीहै इसकी जिह्वा मूत्रके बूंद २ आनेके रोगको उपयोगीहै और इसका पित्ता विनफ़्से के तेल के साथ नाकमें डालें आधासीसी को लाभकरे इसकी चरबी बिवाँई को लाभकरे शेख़रईस कहताहै कि इसका मांस खाना स्वरूपको प्रकाशमान और वीर्यको अधिक करताहै इसकी चरबी रंगरूप

उत्तम करतीहै इसका लहू नमक और खारी पानी के साथ पीना फुकनेकी पीड़ाको गुणदायकहै तो इसका बायां पंख चौथियातप-वालेकेदाहिनी ओर बांधें रोग नष्टहो इसकीहड्डी जलाकर सम्पूर्ण जोड़ोंके बीच मर्दन करना गुणकारीहै इसके अंडेका खाना काम-देव अधिक करताहै इसके अंडेकी सपेदी सुखाकर पानी के साथ पीनेसे सूखी खांसी दूर होतीहै स्वरूप यहहै॥

[तसवीर नम्बर ३००

(बाज़) यह जानवर सब पक्षियों से अहंकारी कोप युक्त तुर-क़िस्तानमें होताहै कहते हैं कि यह नर नहीं होता इसकानर चील या अन्य पक्षीहै इसीलिये इसकीशकल और सूरतमेंअन्तरहै उत्तम बाज़ वहहै कि उसमें सपेदी अधिकहो और मोटा और साहसी और अच्छे स्वभाव का हो परन्तु काले रंगका सपेदी लिये आर-मीनियां और हरज़के सिवाय दूसरी जगह नहीं होताहै हारूंर-सीदके अख़बार में लिखाहैकि एक दिन सपेद रंगके बाज़को छोड़ा वह हवापर जाकर छिपगया लोगोंको उसकी आशा जातीरहीकि अकस्मात् वह आकाश से एकमछली या सांपको लियेहुये आया और बादशाहकी आज्ञानुसार बुद्धिमानोंसे पूछागया कि यह क्या बातहै मक़ातिल नामी एक मनुष्यने उत्तर दिया कि आपके दादा अबुदीन अब्बासकी कहावतहै कि वायु एकप्रकारके जीवधारियों से बसी हुईहै और वहांपर एक जानवर सांपकीतरह परदारहोता-है उसका सपेद बाज़ शत्रुहै ख़लीफ़ाने थाल मँगवाकर उस जान-वर को बाज़से अलग किया और वैसाही पाया सो मक़ातिल को बहुतसा पारितोषिक दिया यह जानवर घोंसला अपना ऊंचे वृक्ष पर बनाताहै जिसकी डालें गुंजान होती हैं और अपने घोंसले में छत बनाताहैकि गर्द और मेहसे बचारहै बीमारीकी दशामेंगोरख्या खाकर आरामपाताहै परझाड़नेके समय चूहेको खाताहैकि जल्दी पर निकल आवें और एक घास मरारह नाम से होती है उसको अपने घोंसले में अवश्य रखताहै कि शत्रु उसके गिर्द न आवें

(गुण) इसके पित्ते का सुरमा लगाना मोतियाबिन्द के प्रारम्भ में उपयोगीहै और इसकी पहिंचान यहहै कि रोगके पूर्व्वमें दृष्टिके सामने मच्छड़ या धुवां उड़ता दिखाई देताहै जो इसीको एक बूंद भी लक़वे वाले की नाकमें टपकावें लाभकरे सपेद बाज़का पित्ता आंखोंकी सपेदी और अँधेरी और पानीके उतरनेको लाभकरे शेख़-रईसका वाक्यहै कि सम्पूर्ण पक्षियोंका पिताआंखकी अँधेरीको दूर करताहै इसका नख जिस वृक्षपर लटकावें चिड़ियोंकी हानिसे बचे इसकी हड्डियोंकी राख जलेहुये जोड़पर छिड़कना गुण दायक है सूरत यहहै ॥ तसवीर नम्बर ३०१

(बाशक़) अर्थात् बाशा यह सब शिकारी जानवरोंसे छोटा है और यह गौरय्याकाशत्रुहै और जो पक्षी कि गौरय्याके बराबरहो और फ़ाख़्ताकाभी शिकारकरताहै जो इसकाभेजा एक दिरम बाद-रंजबोयाके साथपियें उन्माद रोगको गुणकरे सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३०२

(बबग़ा) अर्थात् तोता यह बहुत सुन्दर उत्तम रंग का लाल पीला और सब्ज़ और सपेद होता है परन्तु बहुधा सब्ज़ होताहै चोंच मोटी होतीहै और जिह्वा चौड़ी जो बात सुने उसे दूसरीवेर तुरन्त ठीककहे उसके अर्थ जाने इसके सिखानेका हाल यहहै कि इसे पिंजड़ेमें शीशा रखकर उसके पीछेसे कोई बातकरे वहअपनी सूरतको कहनेवाली समझकर उसीके वचनसे उत्तर देताहै इसकी अद्भुत बातोंमेंसे यहहै कि पानी नहीं पीता किन्तु जलपानसे मर-जाताहै (गुण) इसकी जिह्वा खाना वाचाल करता है जो कोई इसका पित्ता खाय उसकी जिह्वा भारी होजायइसका लहूसुखा-कर जिन दो मनुष्योंके बीचमें छिड़कें परस्पर विरुद्धहोजाय इसकी झिल्लीका हींगके पानीमें पीसकर सुरमा लगाना ढलका और धुंध को भी लाभदायकहै सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३०३

(बुल्बुल) इसको फ़ारसीमें हज़ारदास्ता कहते हैं यह एक

छोटासा पक्षी और तेज़ उड़नेवाला और बाचाल होता है बाग़ में घोंसला बनाता है और बाहर की मोसममें प्रसन्न होता है फूलसे प्यार रखताहै जब किसीको फूल तोड़ते देखता है असंतुष्ट होकर चिल्लाताहै जो कि इसकास्वभाव गर्म्म है इसलिये पानी में बहुत नहाताहै और बहुत पिया करताहै आंधीके समय घोंसले से नहीं निकलता इसमें अद्भुत स्वभावयहहै कि घरमें या पिंजड़ेमें सिवाय वर्गजुफ़्ती नहींकरता जो इसकामांस केकड़ेकी आंखकेसाथ पहाड़ी बकरी के चमड़े में सीकर भुजापर बांधे जो जादू अपना प्रभाव न करे सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर ३० ४

(बूम)यहप्रसिद्ध जानवरहै दिनमें बाहर नहीं निकलता क्योंकि दिनको उसे दिखाई नहींदेता सदा अकेला उजाड़ों में रहता है इसको मनुष्य अशकुन जानते हैं यहांतक कि इसका दृष्टान्त देते हैं इसके शब्दसे सर्पभागते हैं इसको कौवेसे बिरोधहै रात्रिको इसके सामने कोई चिड़िया नहीं उड़सक्ती क्योंकि औरोंको रात्रि के समय दिखाईनहींदेता जैसाकि इसको दिवसमें अंधेराहै यहीकारणहै कि जब उल्लूको और सबजानवर दिनको देखलेतेहैं तो उसकेगिर्दइकट्ठे होकर उसको सतातेहैं (गुण) इसका भेजा आंखमें लगाना आंखकी अंधेरीकोगुणदायकहै जो तेलमेंमिलाकर नाकमेंटपकायें आधासीसी दूरहो कहते हैं कि यह एकआंखसे सोताहै अर्थात् इसकी एकआंख बंद और एक आंख खुली रहतीहै पहिंचान इसकी यहहै कि दोनों को पानी में डालें जो पानी में सीधी रहै वह सोती है और जो टेढ़ी होजाय वह जागती है तो जो सीधी आंख को किसी के सिरहाने रखदे तो वह न जागेगा और उलटीआंखको अंगूठीके नगीनेके नीचे जमाकर कोई पहिने तो उसको नींद न आयेगी जो इसकी आंखें कस्तूरी में मिलाकर जिस को सुंघावें वह उसका मित्र होजायगा इसका दिल भूनकरखाना लकवे और फालिज़ को गुणदायक है इसका शिर बलूतकी लकड़ीमें चिपकाकर पथरीवाले रोगी को बांधे

तो तुरन्त पथरी निकलजाय जो इसका पित्ता झाऊ की लकड़ी में लगाकर जिसका मूत्र त्रिकोनेपर निकलजाता हो बांधे गुणदायक है इसका कलेजा हलाहल विष है और कूलंज पैदा करता है जिसकी औषधि नहीं इसका मांस बमनका रोग उत्पन्नकरता है जो सुखाकर जिस समूहके भोजनमें दें उनमें परस्पर शत्रुताहो इसका ताज़ालहू लक़वे वालेके मुखपर लगाना गुणदायक है इसका मेदा सुखाकर जिसको खिलावें कूलंज अर्थात् पहलूकी पीड़ा दृढ़ उत्पन्न हो सूरत यह है ॥ तसवीर नम्बर ३०५

(तदर्ज) अर्थात् चकोर इसको फ़ारसीमें तदर्व कहतेहैं यहपक्षी रोचक शब्द बोलता और बागका मित्र है जब उत्तरीय वायु हो तो मोटा होता और दक्षिणी पवनमें क्षीण होता है अंडा देने के समय मट्टीका घेरा बनाता है उसमें अंडादेताहै कि उपद्रवोंसे बचारहे जब उसका बच्चा निकलता है उसीसमय दानाखाताहै कहतेहैं कि यह पक्षी भूकम्पहोनेसे पहलेइकट्ठे होकर चिल्लाते हैं सूरतउसकीयह है ॥

तसवीर नम्बर ३०६

(तानूत) फ़ारसीमें इसको कबतूकहते हैं यह अद्भुतपक्षी होता-है अर्थात् वृक्षों की छालके रेशों से घोंसला बनाता है और उसको वृक्षसे लटकाता है और बच्चोंको उसमें रखता है (गुण) जो उस को शीशेके टुकड़ेसे मारें और उसका रुधिर पीलेवें तो किसी चीज़ के नशे यामद में व्यर्थ लड़ाई से छुट्टी पावें इसका पित्ता शकर के साथलड़कोंको खिलाना मनुष्योंकीदृष्टिमें प्रियकरताहै महीनेकेप्रा-रम्भमें जब चन्द्रमा निकले तो इसकी हड्डी लड़के के बांधे तो चाहे कितनाही बुराहो परन्तु सृष्टिकी दृष्टिमें प्रियहो सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३०७

(ख़ासतुल अफ़ई) जिसको अभईभी कहते हैं यह पक्षी वायुके पक्षियों में से है जब यह अंडा देता है सांप आन कर खाजाता है और अपना अंडा उसके स्थानपर रखदेता है जब उक्त पक्षीआता है तो अपना अंडा समझकर उसकी रक्षा करता है और बच्चे के

छोटासा पक्षी और तेज़ उड़नेवाला और बाचाल होता है बाग़ में घोंसला बनाता है और बाहर की मौसममें प्रसन्न होता है फूलसे प्यार रखताहै जब किसीको फूल तोड़ते देखता है असंतुष्ट होकर चिल्लाताहै जो कि इसकास्वभाव गर्म्म है इसलिये पानी में बहुत नहाताहै और बहुत पिया करताहै आंधीके समय घोंसले से नहीं निकलता इसमें अद्भुत स्वभावयहहै कि घरमें या पिंजड़ेमें सिवाय वर्गजुफ़्ती नहींकरता जो इसकामांस केकड़ेकी आंखकेसाथ पहाड़ी बकरी के चमड़े में सीकर भुजापर बांधे जो जादू अपना प्रभाव न करे सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३०४

(बूम)यहप्रसिद्ध जानवरहै दिनमें बाहर नहीं निकलता क्योंकि दिनको उसे दिखाई नहींदेता सदा अकेला उजाड़ों में रहता है इसको मनुष्य अशकुन जानते हैं यहांतक कि इसका दृष्टान्त देते हैं इसके शब्दसे सर्पभागते हैं इसको कौवेसे विरोधहै रात्रिको इसके सामने कोई चिड़िया नहीं उड़सक्ती क्योंकि औरोंको रात्रि के समय दिखाईनहींदेता जैसाकि इसको दिवसमें अंधेराहै यहीकारणहै कि जब उल्लूको और सबजानवर दिनको देखलेतेहैं तो उसकेगिर्दइकट्ठे होकर उसको सतातेहैं (गुण) इसका भेजा आंखमें लगाना आंखकी अंधेरीकोगुणदायकहै जो तेलमेंमिलाकर नाकमेंटपकायें आधासीसी दूरहो कहते हैं कि यह एकआंखसे सोताहै अर्थात् इसकी एकआंख बंद और एक आंख खुली रहतीहै पहिंचान इसकी यहहै कि दोनों को पानी में डालें जो पानी में सीधी रहे वह सोती है और जो टेढ़ी होजाय वह जागती है तो जो सीधी आंख को किसी के सिरहाने रखदे तो वह न जागेगा और उलटीआंखको अंगूठीके नगीनेके नीचे जमाकर कोई पहिने तो उसको नींद न आयेगी जो इसकी आंखें कस्तूरी में मिलाकर जिस को सुंघावे वह उसका मित्र होजायगा इसका दिल भूनकरखाना लकवे और फालिज़ को गुणदायक है इसका शिर बलूतकी लकड़ीमें चिपकाकर पथरीवाले रोगी को बांधे

तो तुरन्त पथरी निकलजाय जो इसका पित्ता झाऊ की लकड़ी में लगाकर जिसका मूत्र बिछौनेपर निकलजाता हो बांधें गुणदायक है इसका कलेजा हलाहल विष है और कूलंज पैदा करता है जिसकी औषधि नहीं इसका मांस वमनका रोग उत्पन्नकरता है जो सुखाकर जिस समूहके भोजनमें दें उनमें परस्पर शत्रुताहो इसका ताज़ालहू लकवे वालेके मुखपर लगाना गुणदायक है इसका मेदा सुखाकर जिसको खिलावें कूलंज अर्थात् पहलूकी पीड़ा दृढ़ उत्पन्न हो सूरत यह है ॥ तसवीर नम्बर ३०५

(तदर्ज) अर्थात् चकोर इसको फ़ारसीमें तदर्व कहतेहैं यहपक्षी रोचक शब्द बोलता और बागका मित्र है जब उत्तरीय वायु हो तो मोटा होता और दक्षिणी पवनमें क्षीण होता है अंडा देने के समय मट्टीका घेरा बनाता है उसमें अंडादेताहै कि उपद्रवोंसे बचारहे जब उसका बच्चा निकलता है उसीसमय दानाखाताहै कहतेहैं कि यह पक्षी भूकम्पहोनेसे पहलेइकट्ठे होकर चिल्लाते हैं सूरतउसकीयह है ॥

तसवीर नम्बर ३०६

(तानूत) फ़ारसीमें इसको कवतूकहते हैं यह अद्भुतपक्षी होता-है अर्थात् वृक्षों की छालके रेशों से घोंसला बनाता है और उसको वृक्षसे लटकाता है और बच्चोंको उसमें रखता है (गुण) जो उस को शीशेके टुकड़ेसे मारें और उसका रुधिर पीलेवें तो किसी चीज़ के नशे यामद में व्यर्थ लड़ाई से छुट्टी पावें इसका पित्ता शक्कर के साथलड़कोंकाखिलाना मनुष्योंकीदृष्टिमें प्रियकरताहै महीनेकेप्रा-रम्भमें जब चन्द्रमा निकले तो इसकी हड्डी लड़के के बांधे तो चाहे कितनाही बुराहो परन्तु सृष्टिकी दृष्टिमें प्रियहो सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३०७

(ख़ासतुल अफ़ई) जिसको अभईभी कहते हैं यह पक्षी वायुके पक्षियों में से है जब यह अंडा देता है सांप आन कर खाजाता है और अपना अंडा उसके स्थानपर रखदेता है जब उक्त पक्षीआता है तो अपना अंडा समझकर उसकी रक्षा करता है और बच्चे के

निकलने के समय अपने स्वरूपके विरुद्ध देखकर उससे भागताहै सदा सांप ऐसाही इस पक्षीके साथ किया करता है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३०८

(हुबारी) इसको फ़ारसी में चिरज़ कहते हैं यह पक्षी सुन्दर है परन्तु बेवक़ूफ़ जब दूसरे पक्षी का अंडा देखता है अपने अंडे को छोड़कर उसको सेता है जो इसकी विष्ठा और पक्षियोंपरगिरे उनके पर आपस में जुड़ जाते हैं और उड़ नहीं सक्ते हैं तथा अरबवालों का बचन है कि हुबारी पक्षी का हथियार उसकी बीठ है तो जब इस पक्षी का किसी शिकारी चिड़ियासे साम्हना होता है तो यह समय पाकर अपनी विष्ठा उसके परोंपर डाल देता है तो सब पर उसके बेकाम होजातेहैं और यह भागजाताहै और अपने साथियों को इकट्ठा करके चरग़ पक्षी जो इसको शिकारकरता है उसकेपरों को नोचकर उसको मारडालता है और यही उपाय जिस पक्षीसे विरोध होता है उसके साथ करता है (गुण) जो इसके पेटको सुखा कर इन्दरानी नोन और बराबर जलीहुई रोटी के साथ आंखों में लगावें आंख की सपेदी नष्ट हो इसकी सूखी चरबी बालछड़ और किरतके साथ खाना अतीसारको गुणदायक है शेख़रईस कहता है कि हुबारी के अंडेका खिज़ाब उत्तम है और इसकी सपेद डोरे पर परीक्षा करनीचाहिये सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३०६

(हदात) अर्थात् चील बहुत निर्बल है बहुत से पक्षी इसपर प्रबल रहते हैं कहते हैं कि एकबर्ष नर और एकबर्ष मादा रहती है कव्वा इसका शत्रुहै यहांतक कि अपना अंडा इसके अंडेको खाकर उसकी जगहपर रखदेता है और चील उसको अपना अंडासमझ कर सेती है जब बच्चा निकलता है तो वह कव्वा होता है सो नर को बड़ा आश्चर्य होताहै और अपने साथियोंको इकट्ठा करके बच्चे को दिखलाता है और मादा को संदेह से इतना मारता है कि वह मरजाती है और यह जानवर बीमारीमें अपने पर खाकर आराम

पाता है जो लाल रंगकी चीज़ देखता है तो मांसके विचारसे उस पर झपट्टा मारता है साहबुलफ़ल्हा कहता है कि कभी उक़ाब चील और कभी चील उक़ाब होजाता है (गुण) जो इसका पित्ता सुखाकर सर्पके चलनेके मार्गपर डालदें जो सर्प उसपरसे जावेगा मरजायेगा जिसको बिच्छू काटे उसीओरकी आंखमें उसका पित्ता सुरमेकी तरह लगावे गुण करे इसका भेजा गंदना और शहद के साथ उबाल कर अतीसार और बवासीरमें पीना लाभ करे इसका लहू पीना हलाहल विषोंका दूर करनेवाला है इसकी हड्डी जला कर घावपर लगाना दुरुस्त करनेवाला है और इसका लेप कठोर फोड़ोंको पकादेता है सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर ३१०

(हमामा) अर्थात् कबूतर बड़ा बुद्धिमान् और दूर देशोंसे अपने पहले मकानमें आसक्ता है और अपने शहरके चिन्होंको खूब पहिचानता है जो उसको किसी दूरजगहसे छोड़ें तो वह पहिले आकाश में छिपजाता है फिर ऊंचेसे अपने मार्ग के चिन्ह याद करता जाता है यहां तक कि अपने मुख्य स्थानमें आजाताहै बहुधा इतना ऊंचा उड़ता है कि बादल उसकेनीचे होजाता है जिससे बहुत जल्दी अपने मुख्य स्थानपर आने से लाचार होजाता है या कोई उसका जोड़ शिकारी पक्षी के कारण घायल होजाय या उसको कोई पकड़कर रक्खे इनकार्य्योंसे निस्संदेह अपने मुख्य स्थानपर आनेसे लाचार होजाता है और इनमें मनुष्यों की तरह परस्पर प्रीति है जिसतरह चुम्बन मिलन आदि मुसन्ना का पुत्र ज़बीर कहता है कि यह पक्षी स्त्री पुरुषों की तरह बर्त्ताव करता है और मैंने कबूतर केनर और मादाके बीचमें देखा कि इसकी मादा दूसरे नरकी ओर ध्यान नहीं करती जिसतरह कि पतिव्रता स्त्रियां और बाज़ी मादा व्यभिचारिणी स्त्री की तरह दूसरे नरसे भी जुफ़्त खाती है और कोईमादा नरकी आधीनी नहींकरती और कितनाही नरझुकाताहै यह उसका कहना नहींमानतीहै और एक नरकी दो मादाभीहोती है और नरदो

बराबर प्रीतिकरता है इसकी मादा परस्पर मादासे जुफ़ती खाकर चार अंडे देती है परन्तु उन अंडोंसे बच्चे नहीं निकलते अद्भुत बात यहहै कि जब मादा बच्चे देनेको होती है तो नरको खबर होजातीहै और तिनके इकट्ठे करके आरामके बराबर अपने और अंडोंके घोंसले बनाताहै नर और मादा दोनोंपरस्पर अंडेकी रक्षाकरते हैं और अंडोंकेपास चाहे आगभीलगे अकेला नहीं छोड़ते और वहांपर एक नियमितसमय तक स्थितरहते हैं मादाबहुत रक्षाकरती है जब वह उठतीहै नर उसकेस्थानापन्न होताहै कि अंडेकी गर्मीदूर नहो और जब बच्चा निकलता है तो नर और मादा आपुसमेंउसको भराते हैं पहिले अपने बच्चेकेकंठमें वायु फूंकतेहैं कि भोजनकामार्ग खुलाहो फिर अपने मुखकी लार पहुंचाते हैं जब मालूम होजाता है कि भोजनका मार्ग खुलगया उस समय दीवारोंकी खारीलोनी भरातेहैं कि पोटा उसका मज़बूत हो जो कोई यहचाहै कि कबूतरका बच्चा रंगबरङ्ग पैदा हो तो चाहिये कि कपड़े का कबूतर बनाकर उसको जैसे रङ्ग चाहे रँगदे और जहांपर कबूतर पानी पीतेहों वहां रखदे कि कबूतरकीदृष्टि उस अनुकर्ण कबूतर पर पड़े तो जब बच्चे पैदाहोंगे तो वही रङ्ग उनका होगा कबूतर बीमारी के समय टिड्डी को खाकर आराम पाताहै और जंगली कबूतर बीमारीमें नरकुलकी पत्तीखाने से आरोग्य होताहै इस समूहमें अद्भुतयहहै कि इसका बच्चा जवानीके पहिले कनसर अर्थात् करगस जो मुर्दा खाने वाला जानवरहोताहै और उक़ाबको पहिचानताहै तात्पर्य यह कि नसरसे न डरे और उक़ाबसे भागजाय और शाहीन को देखना मार डालने वाला समझे जिस तरहसे कि बकरी हाथी ऊंट और भैंस से नहीं डरती और भेड़ियेसे भय पातीहै जाहज़ कहिताहै कबूतर हरएक जानवर से उत्पन्न होताहै परन्तु जब वह अपने शत्रुओंकोदेखे भयमान होताहै जैसा कि गधा शेरको देखकर चुप होताहै या बकरी भेड़िये से और चूहा बिल्लीसे डरताहै (गुण) इसका पित्ता रतौंधी और धुंधलेको उपयोगीहै और ऐंठहुये जोड़पर मलना उत्तमहोता-

है जो कबूतर का अण्डा घावपर रक्खें भरे और चोट और पुराने घावको दूरकरताहै और आंखमें लगाना रतौंधीनाश करताहै इसके मांसका सदाखाना समझ बहुत करता है इसकी हड्डी की राख उपद्रव कारक घावको दुरुस्त करै यदि स्त्री इसकी बीटकी बत्ती भगमें रक्खे प्रसूति सुगमतासे हो जो निर्जीव मांसपरछिड़कें उसके घाव दूर करदे कदाचित् गरमी अर्थात् आतशकपर मलें लाभ करे यदिलाल कबूतरकी बीटको हुक़नेमें मिलावें कूलंजको उपयोगी है और मूत्ररोध को लाभकरे जो इसके पांव अस्तरक़ (एकप्रकारकागोंदरूमीदवाहै) और हबुल नील (अर्थात् मिरचाई किनोलोफर केबीजहैं) बराबर घिसकर अखरोट के तेलमें मिला कर सपेद कालेदाग़वाले कोढ़पर मलें उसका रङ्ग दूरहोगा सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २११

(ख़ताफ़) अर्थात् अबाबील इसको फ़ारसी में बिलवाया कहते हैं इसके बहुत प्रकारहैं यहजानवर ठंढे देशोंसे गरमदेशोंमें जाता है और मुख्य करके बसन्त ऋतु को प्रिय जानताहै और बहार के प्रारम्भ में घोंसला बनाता और अण्डे देता है कि वायुगर्म होनेतक इसका बच्चा बलवान् होजाय इसके घोंसले हरदेश में होते हैं और जिसदेशके घोंसलेका उद्योग करे वहां जापहुंचे घोंसला बनाने के समय परोंको मिट्टी में मिलाकर काम में लाता है बहुधा दीवारों और छत्तों की दरारों में बनाता है और ऐसा उपाय करता है कि दोनोंओर से उसका घोंसला छत में मिला और मज़बूत हो यह विचित्रताहै कि थोड़ा सा घोंसला बनाकर छोड़ देता है कि सूख जावे और फिरवाको बनाताहै इस विचार से कि एकहीबेर बनाने से गिर न पड़े और इसके घोंसला बनाने के समय बहुत अबीलें सहायक होती हैं और जब घोंसलाबन चुकता है तो उसे बराबर करनेके वास्ते अपनी चोंचमें पानी लाकर घोंसले को चिकनाता है और घोंसलेमें मक्खी मच्छड़ और सांपके दूरहोने के लिये तितली की पत्ती रखताहै प्रसिद्धहै जो अबाबीलका घोंसला पानीमें घोल-

कर और छानकर प्रसूतिकी पीड़ाके समय स्त्रीको पिलावें बच्चा पैदा होनेके समय सुगमताहो (गुण) इसके भेजेका गूदा तेलमें मिलाकर शिरमें लगाना जूं दूरकरताहै इसकी आंख पोटलीमें बांधकर जिस के बिछौने पर रखदें उसको निद्रा न आवेगी इसका दिल सुखाकर शराबके साथ खाना वीर्य्य बढ़ाताहै इसका मांस खाना आंख को मज़बूत और तेज़करताहै यदि स्त्रीकोखिलावें उसकी भोगकीइच्छा इतनी दूरहो कि कभी पुरुषकी इच्छा न करे इसकीबीटके मरहम से फोड़ेपकजातेहैं और उनकामैलभी दूरहोजाताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३१२

(ख़फ़ाश) अर्थात् चमगादड़ यह प्रसिद्ध जानवर सूर्य्य की किरणों में अन्धा रहताहै परन्तु अँधेरे या संध्याको ज्योति युतहोताहै इसके पर नहीं होते परन्तु बाजुओंसे जो चौड़े खालकी तरह होतेहैं उड़ताहै इनकी उत्पत्ति चूहेकी तरह पर होतीहै कहतेहैं कि बनी इसराईल ने हज़रत ईसासे एक करामात चाही कि आपएक ऐसा पक्षी बनाइये जो और पक्षियों के विपरीत बाह्यकर्ण और दांत रखता हो और अपने बच्चोंको दूध पिलाये सो आपने मट्टीसे यह जानवर बनाके उसपर हवाफूंकी और ईश्वर की आज्ञा से यह जानवर प्राणयुक्त होगया और उड़ने लगा और यह सब उसमें विद्यमानहैं इसीका वर्णन ईश्वरने कियाहै कि हज़रत ईसाको हमने यह भी करामातदी कि उन्होंने एक मट्टीका जानवर बनाकर हवा फूंकी और वह मेरी आज्ञा से पक्षी होगया, निदान यह जानवर मक्खी और मच्छड़आदिका शिकार करताहै बहुधा उड़नेके समय अपने बच्चे को मुखमें रखताहै और दूध पिलाताहै अनारको खाता है और उसका छिलका खाली करके छोड़देताहै जब इसके बदले चिनारके पत्तेदेवें तो भागताहै कहतेहैं कि जो किसी गांवमें इस चिड़िया को दरख़्तपर लटकावें उस जगह टिड्डी न आयेंगी (गुण) इसका शिर कबूतरोंकी छतुरी पर रखनेसे कबूतरोंको उसछतुरीसे हुतलागू करताहै जो इसकाशिर मनुष्यके सिरहाने रक्खें उसको

नींद न आयेगी शेखरईस का विचारहै कि जो ढलके के प्रारम्भ में इसका भेजा सुरमा बनाकर लगावे गुणकरे और इसकी राख भी लाभकरे जो मनुष्ययन्त्र बनावे वीर्य्य अधिकहो इसकालहू आंखों में लगाना रतौंधी को लाभकरे जो बगलके बाल दूर करके इसका रुधिर लगावे फिर बाल न जमेंगे इसकी विष्ठाका सुरमा लगाना आंखकी सपेदीको नष्ट करताहै जो च्यूंटीके छिद्रमें रखदें च्यूंटियां भाग जायंगी जो इसकीविष्ठा चूने और हरतालमें मिलाकर लिंग-स्थल पर लगाये मुद्दततक बाल न निकलेंगे और कईवेर इस क्रिया के करनेसे कभी बाल न निकलेंगे स्वरूप यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३१३

(दुर्राज़) अर्थात् तीतर यह जानवर प्रसिद्ध शुभ है इसकी पीठ ऊंचीहोती और यह बहुत जानने वालाहै और इसके शब्द से ऐसामालूम होताहै यहांअरबीआयतहै जिसकेअर्थ यहहैं कि ईश्वर के धन्यवाद से पदार्थ सर्वदा स्थिर रहते हैं और वसन्त ऋतु के आनेकी खबर देताहै उत्तर की वायुसे प्रसन्नहोता और दक्षिण की पवनसे अप्रसन्न होताहै जाहिज़ कहता है कि यह वह जानवर है कि घरोंमें मादासे जुफ़्ती नहीं करता परन्तु बाग़में खाता है और समझदारभी होताहै अबूतालिबुलत्योहीकी कहावत है कि किसीने तीतर पर बाज़को छोड़ा सो तीतर अपने घोंसलेमें गया और अपने दोनोंपैरोंमेंदो कांटेलेकर अपनेको पीठकेबल उलटाकरदिया निदान इस उपायसे बाज़ उसका शिकार न करसका शेखरईसकहताहै कि इसका मांस भेजेका बल कारक और समझको बढ़ाताहै और वीर्य्य भी अधिक करताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३१४

(दीक) अर्थात् मुर्ग़ा यह कामदेवकी अधिकता और गर्भ में हर एक पक्षीसे अधिक है सुबह होने की खबर देनेवाला है विचित्रता यहहै कि रात की घड़ियां और समयका अनुमान जानता है जब रात्रि पन्द्रह सायत (ढाईघड़ी)की होतीहै अपनी आवाज़

पन्द्रह पर बांटताहै और जब रात नौसायत की होतीहै तो नौ पर बांटताहै पैग़म्बर साहबने कहाहै कि ईश्वर ने आकाश के नीचे ये मुर्ग़ा पैदा किया जिसके दो बाज़ूहैं जो दोनोंफैलावे पूर्वसे पश्चिम तक जापहुंचे रात्रिके अन्तसे अपनेपर खोलकर उत्तमशब्दसे नाम जपताहै और उससमय ज़मीनके मुर्ग़ेभी उसकेजपनेका उत्तरदेते हैं कहतेहैं कि बांग देनेवाला मुर्ग़ा जिसकी दाढ़ी और ताज कंगरेदार हो लज्जायुत उदारहोता और अपनीमादाकी प्रीति बहुत करताहै कहतेहैं कि जो मुर्ग़े की आवाज़ से जागे उसको नींद का भारीपन मालूमनहोगा सपेदमुर्ग़ेसे शेरभागताहै और जङ्गीमुर्ग़ाउत्तमहोताहै उसका चिह्न यह है कि उसकी चोंच सुर्ख़ और भारी गर्दन और छोटीआंखें छाती चौड़ी और तेज़ चुंगल ऊंची आवाज़ होतीहै और यहमुर्ग़ा जब घरोगू मुर्ग़ेको देखताहै तो अपनीचोंच में दाना लेकर उसके सामने डालता है कहतेहैं किवह यह बात कामकी प्रबलता और युवावस्था में करताहै बुढ़ापेमें नहीं और घरोगू मुर्ग़े को शत्रुसे बचाताहै और आपरक्षा करने वाला होताहै कहतेहैं कि नरमुर्ग़ा अपनी आयु भरमें एक अंडा देताहै जिसको बैज़तुल असद कहतेहैं और वह बहुत छोटा होताहै कहतेहैं कि जब पुरुष सपेद मुर्ग़ेको मारताहै उसके धनद्रव्यमें हानि पहुंचतीहै जिसघरमें सपेद मुर्ग़ा हो वहां शैतान नहीं आताहै (गुण) मुर्ग़ सपेद की दाढ़ी को पीस कर जिसलड़के को बिछौना पर पेशाब होताहो पिलावें गुणकरे और इसका धुआं बावलेको गुणकरे इसका पित्ता आंखमें लगाना रतौंधी और आंखकी सपेदी को उपयोगी है बलैनासका बचन है कि इसका पित्ता बहुत सुबह भोजन में मिलाकर खाना स्मरणबढ़ाताहै इसका पित्ता चांदीके बरतन में खरल करके सुरमा बनावें आंखकी सपेदी नाशहो इसका बाज़ू बांधना रोज़के तप आनेको लाभकारक है जो सवार अपनी कमर में बांधे सवारी पर चलने से न थकेगा इसका लहू लगाना आंखकी सपेदी को दूरकरता है जो इस जानवर के लड़नेके समयका बहाहुआ रुधिर किसीजाति

को भोजन में खिलावें तो उनमें परस्पर विरोध होजाय जो इसको शहदमें जोशदेकर लिंगपर मलें बलवीर्य कारक है इसका मांस सुखाकर माज़ू और समाक जिसको हिंदीमें तित्रक बातमा तीरकहतेहैं सब बराबर मिलाकर चनेके बराबर खाना अतीसार वालेको उपयोगीहै कहतेहैं कि इसके पेटमें पथरी बाज़ी गेहुआं रंग और बाज़ीबिल्लौरके तौरपर होतीहै उसका यंत्रबनाना बावले को गुणदायक है और वीर्यभी विशेष होताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३१५

(दजाज) अर्थात् मुर्ग़ी कभी किसी समय मुर्ग़ी भी बांग देतीहै और नरसे लड़ती है कभीऐसाहोताहै किनरसे जुफ़्ती खानेकेबिना मट्टीमें लोटने व दक्षिणी पवन के प्रभाव से अंडादेतीहै इस अंडेसे बच्चा नहीं निकलता है और खानेमें भी बेस्वाद होताहै और जब मादर के पेटमें इसतरह के अंडे बहुत से इकट्ठे होजायँ और अंडा देनेके पहले एकबेरभी नरसे जुफ़्तीखाले तोपेटके अंडे दुरुस्त होजातेहैं जो अंडे सेनेके समय बादल गरजा और उसने सुना तोवह सब अंडे बिगड़ जातेहैं और दक्षिणकी पवनमें भी यह प्रभाव है जो नर मुर्ग़की कम जोरीमें अंडाहो वह खाली होताहै उससे बच्चा नहीं होता क्योंकि बच्चा अंडे की सपेदी से पैदाहोताहै और जर्दी उसका भोजन होताहै और ऐसे मुर्ग़के अंडे में जर्दी नहीं होती है और जब इसकी मादा मोटी होतीहै अंडा नहीं देती जिसतरह कि बहुत मोटी स्त्रियां गर्भवती नहीं होतीं (गुण) सपेद मुर्ग़को दश प्याज़ और एक हथेली भर तिलके साथ पकाकर उसका शोरबा मांस समेत खाय वीर्य अधिक होयदि इसके और चकोर के मांस को सदाखाय बवासीर और नक़रसकी बीमारी पैदाहो और इसकी चरबी के उबटनसे मुंहकी सुर्खझाईं जाती रहती है और पैरोंकी बिवाई भी दूरहोतीहै टलके के लिये आंखमें इसका पित्ता लगाना गुणदायकहै बलैनास कहताहै कि इसकापोटा खाना बिछौने पर करने वालेको लाभकरे तीनअंडे लेकरसिरके में तीनदिन तक्कर

फिर धूपमें रखकर सुखावें फिर छीपपर लेपकरें तो लाभ दायक है इसका आधा भूना अंडा वीर्यको अधिक करताहै जो इसका अंडा जाड़ेमें घासके अंदर और गर्मीमें भूसेके अंदररक्खें देरतक खराब न हो इसके अंडेकातेल नकरसकी पीड़ापर लगाना पीड़ा दूर करताहै इसकी बीट सिरके या शराबमें पीना कूलंज दूर करती है और पथरी की बीमारी मेंभी लाभदायकहै बलैनासका बचनहै कि काले मुर्गकीबीट जिस मकानके दरवाजेपर चिपकादें वहां बिरोध उत्पन्न हो सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३१८

(रखम) अर्थात् करगास यह अपने अंडादेनेको पहाड़ों के किनारे और कंदरा ढूढ़ताहै कि कोई हानि न पहुंचे जब अंडा देनेका समय आताहै हिन्दुस्तान की धरतीमें जाकर एक पत्थर (अबुताकून) नामी लाकर उसपर बैठता है और अण्डादेता है यह एक पत्थरगोल खोखला होताहै और हिलाने में उसके पेटसे सूखे नारियलकी तरह खड़खड़ाहटका शब्द आताहै यह पक्षी सदा लश्कर के पीछेउड़ता है क्योंकि इसका भोजन मुरदार है और हाजी लोगोंके पीछेभी उड़ता चलाजाता है कि जो चार पायें उनके मरजायें तो खाले और बकरीके बच्चा देनेके समय भी बाट देखता है कि बच्चा मुरदा पैदाहो तो खालूं इसका पित्ता कानमें टपकाना बहरे को गुणदायकहै और आंखोंमें लगाना आंखकी सपेदी और पीड़ाको नष्टकरताहै यदि चौथिया तप वाले को पिलावें लाभकरे यदि पारेके तेलमें मिलाकर मुखपर उबटनकरें तो जिस अधिष्ठाता के सामने जावें प्रतिष्ठा पूर्वक आवें बलैनास लिखता है कि उसके दाहने बाजूकी लंबीहड्डी को जलाकर जिसको खिलावें वह उससे प्यारकरे और बायेंकी हड्डीशत्रुता के लिये इसीतरहपर खिलाना लाभकरे और स्त्री इसकी बीटबत्ती बनाकर भगमें रक्खें पेटगिर जाय सूरतयह है ॥

तसवीर नम्बर ३१९

(जाग्र) कव्वा यह प्रसिद्ध पक्षी कालेरंग का हजारबर्षकी आयु

का होताहै और उल्लूका शत्रु परन्तु हाराहुआ जाहिज़ कहता है कि सम्पूर्णपक्षी अपने बच्चे को उसके बड़े होनेपर नहीं पहिंचानते परन्तु कव्वा पहिंचानता है जो इसके पर जलाकर जहां चाहें लगावें बालनिकल आयेंगे यदि दो मनुष्योंकेबीचमें कव्वे और उल्लू की आंख का धुआंकरें तो दोनों में शत्रुता होजाय जो इसकादिल सुखाकर पीसकर रखछोड़ें और जब गर्मीमें सफ़र करें और पानी में घोलकर पीलें प्यास न होगी क्योंकि कव्वा गरमी में पानी नहीं पीता कई कहते हैं कि इसका दिलपास रखना प्यासबुझाता है जो इसका और मुर्ग़का पित्ता शहदमें मिलाकर आंखमें लगावें सपेदीदूरकरे और बालोंमें ख़िज़ाबकरनेसे कालाकरदे इसकामांस और पोटा सुखाकर शहदके साथ तीनदिन छीपवाले को खिलावें गुण दायकहै जिसकी आंखों के सामने मक्खी उड़तीहुई मालूमहो वह रोगभी दूरहो यह नजलेके रोगका प्रारम्भ है बलैनासकहताहै कि इसकी चरबी गुलाब तेलमें बदन पर मलकर राजा के पास जाने से कार्य की सिद्धि करता है जो इसको सुखाकर नासूर पर लगावें उत्तम होगा इसका अंडा बवासीर परमलैं लाभदायकहै जो शराबमें पीवें तो मद्यपीनेकी आदत जाती रहे इसकी बीट तिल्लोपर लगाना गुणदायकहै जो खांसीवालेके कंठमें छिड़कें खांसी जाती रहे सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर ३१८

(ज़ाग़ज़ोर) इसको फ़ारसीमें सार कहते हैं यह अच्छीहवापसंद करताहै हिन्दुस्तानसे अराक़को जाताहै बहुधा यह पक्षी दरियामें नष्टहोताहै और मरजाने के पीछे सूखकर और बहकर किनारेआता है उसको वहांके लोग लकड़ी की जगह पर जलाते हैं बुक़रात का वचनहै कि इसके बच्चों को लेकर केसर में रंगकर उनके घोंसलोंमें छोड़देते हैं जब उनकी मां उनको देखती है बीमार समझती है तो इलाजकेवास्ते एक पीला पत्थर लातीहै सो वह लोगघोंसलेसे वह पत्थर उठालातेहैं और पानीमेंघिसकर कमलबायुवालों को पिलाने

फिर धूपमें रखकर सुखावें फिर छीपपर लेपकरें तो लाभ दायक है इसका आधा भूना अंडा वीर्यको अधिक करताहै जो इसका अंडा जाड़ेमें घासके अंदर और गर्मीमें भूसेके अंदररक्खें देरतक खराब न हो इसके अंडेकातेल नकरसकी पीड़ापर लगाना पीड़ा दूर करताहै इसकी बीट सिरके या शराबमें पीना कूलंज दूर करती है और पथरी की बीमारी मेंभी लाभदायकहै बलैनासका वचनहै कि काले मुर्गकीबीट जिस मकान के दरवाजेपर चिपकादें वहां बिरोध उत्पन्न हो सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३१८

(रखम) अर्थात् करगस यह अपने अंडादेनेको पहाड़ों के किनारे और कंदरा ढूंढ़ताहै कि कोई हानि न पहुंचे जब अंडा देनेका समय आताहै हिन्दुस्तान की धरतीमें जाकर एकपत्थर (अबूताकून) नामी लाकर उसपर बैठता है और अण्डादेता है यह एक पत्थरगोल खोखला होताहै और हिलाने में उसके पेटसे सूखे नारियलकी तरह खड़खड़ाहटका शब्द आताहै यह पक्षी सदा लश्कर के पीछेउड़ता है क्योंकि इसका भोजन मुरदार है और हाजी लोगोंके पीछेभी उड़ता चलाजाता है कि जो चार पायें उनके मर जायँ तो खाले और बकरीके बच्चा देनेके समय भी बाट देखता है कि बच्चा मुरदा पैदाहो तो खालूं इसका पित्ता कानमें टपकाना बहरे को गुणदायकहै और आंखोंमें लगाना आंखकी सपेदी और पीड़ाको नष्टकरताहै यदि चौथिया ज्वर वाले को पिलावें लाभकरे यदि पारेके तेलमें मिलाकर मुखपर उबटनकरें तो जिस अधिष्ठाता के सामने जावें प्रतिष्ठा पूर्वक आवें बलैनास लिखता है कि उसके दाहने बाजकी लंबीहड्डी को जलाकर जिसको खिलावें वह उससे प्यारकरे और बायेंकी हड्डीशत्रुता के लिये इसीतरहपर खिलाता लाभकरे और स्त्री इसकी बीटबत्ती बनाकर भगमें रक्खे पेटगिर जाय सूरतयह है ॥

तसवीर नम्बर ३१९

(जाग्र) कव्वा यह प्रसिद्ध पक्षी कालेरंग का हजारवर्षकी आयु

का होताहै और उल्लूका शत्रु परन्तु हाराहुआ जाहिज़ कहता है कि सम्पूर्णपक्षी अपने बच्चे को उसके बड़े होनेपर नहीं पहिंचानते परन्तु कव्वा पहिंचानता है जो इसके पर जलाकर जहां चाहें लगावें बालनिकल आवेंगे यदि दो मनुष्योंकेबीचमें कव्वे और उल्लू की आंख का धुआंकरें तो दोनों में शत्रुता होजाय जो इसकादिल सुखाकर पीसकर रखछोड़ें और जब गर्मीमें सफ़र करें और पानी में घोलकर पीलें प्यास न होगी क्योंकि कव्वा गरमी में पानी नहीं पीता कई कहते हैं कि इसका दिलपास रखना प्यासबुझाता है जो इसका और मुर्ग़का पित्ता शहदमें मिलाकर आंखमें लगावें सपेदीदूरकरे और बालोंमें ख़िज़ाबकरनेसे कालाकरदे इसकामांस और पोटा सुखाकर शहदके साथ तीनदिन छींपवाले को खिलावें गुण दायकहै जिसकी आंखों के सामने मक्खी उड़तीहुई मालूमहो वह रोगभी दूरहो यह नजलेके रोगका प्रारम्भ है बलैनासकहताहै कि इसकी चरबी गुलाब तेलमें बदन पर मलकर राजा के पास जाने से कार्य की सिद्धि करता है जो इसको सुखाकर नासूर पर लगावें उत्तम होगा इसका अंडा बवासीर परमलें लाभदायकहै जो शराबमें पीवें तो मद्यपीनेकी आदत जाती रहे इसकी बीट तिल्लोंपर लगाना गुणदायकहै जो खांसीवालेके कंठमें छिड़कें खांसी जाती रहे सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर ३१८

(ज़रज़ोर) इसको फ़ारसीमें सार कहते हैं यह अच्छीहवा पसंद करताहै हिन्दुस्तानसे अराक़को जाताहै बहुधा यह पक्षी दरियामें नष्टहोताहै और मरजाने के पीछे सूखकर और बहकर किनारेआता है उसको वहांके लोग लकड़ी की जगह पर जलाते हैं बुक़रात का बचनहै कि इसके बच्चों को लेकर केसर में रंगकर उनके घोंसलोंमें छोड़देते हैं जब उनकी मां उनको देखती है बीमार समझती है तो इलाजकेवास्ते एक पीला पत्थर लातीहै सो वह लोगघोंसलेसे वह पत्थर उठालातेहैं और पानीमेंघिसकर कमलबायुवालों को पिलाते

हैं और आराम पाते हैं इसका मांस नेत्रकी ज्योति अधिक करताहै जो इसके मांसको सुखला कर गले के दर्दमें निहार खावें गुण करे और इसकी राख घावपर छिड़कना लाभकरे सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३१९

(जुमक़ख़) इसको फ़ारसीमें जमक कहतेहैं इसका पित्ता आंख में लगाना रतौंधी को नाश करताहै और अंधेरी के दूरकरने में आज़माया हुआहै सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३२०

(समानी) इसको फारसी में समाना कहतेहैं यह वह पक्षी है जिसको ईश्वरने बनी इसराईल के वास्ते कृपाकियाथा सलवी इसी का नामहै यहपक्षी सदाचुप रहताहै परन्तु रात २ भर बहार में चिल्लाता है और सांप को खाता है और उसका विष इसके कुछ अवगुण नहीं करता सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर ३२१

(सन्क़र) यह शिकारी मुर्ग़ा शाहीन से मिलता हुआ होता है परन्तु इसके पांवमोटे होतेहैं और पिंडली इसकी लड़कोंकी तरह पर होती है बहुधा तुरक़िस्तान के शहरों में होता है ठंढे देशों में आराम पाताहै कहतेहैं कि जब इसकोशिकारपर छोड़तेहैं तो पहिले शिकारपर जाकर दौरा करताहै और ऐसेचक्कर लगाताहै जो हज़ार पक्षीहों तो निकलने न पावें निदान वहपक्षी आसक्त होकर शिका-रियों के हाथमें आतेहैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३२२

(शाहीन) यह प्रसिद्ध पक्षी है कबूतरों का शत्रुहै जब कबूतर इसको देखता है इससे उड़ने की अधिक शक्ति रखनेपरभी क्षीण होजाताहै और परनहीं मारसक्ता जैसे गधा शेरके साम्हने भेड़िये के आगे बकरी और चूहा बिल्लीकेआगे और कछुआ इसको देखकर छिपजाता है और यह उसकी पीठपर चोंचसे चोटकरता है परन्तु कुछ असर नहींहोता फिर शाहीन उसको उठाकर हवापर लेजाता है और कठोर पत्थरपर फेंकताहै वह उसकी चोटसे मरजाताहै तो

यह खालेता है जब बीमार होताहै तो ज़रारीह जोएक प्रकार का
उड़नेवाला कीटहै उसके खानेसे आराम पाताहैसूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३२३

(शफीन) फ़ारसीमें इसको तीरक कहतेहैं यह जानवर खाकी
रंगका कबूतरके बराबर होताहै जाहिज़ कहताहै कि इसकी विचि-
त्रता यहहै कि जब इसकीमादा मरजातीहै तोदूसरी मादासेजुफ़्ती
नहींकरता और जो नर मरजाय तो मादा भी दूसरेसे भोग नकरे
इसकीचरबी कानमें डालना बहरेपनको गुणकारक है और सुरमा
लगाना रतौंधी को लाभकरे जो इसकीबीट गुलाबतेल में मिला-
कर स्त्री भगमें बत्तीलें गर्भाशयकी पीड़ा शांतहो सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३२४

(शक़राक) इसको फ़ारसी में कासकीना कहतेहैं यह सब्ज़रंग
या ज़र्द या सुर्ख़ चोंचवाला होताहै यह छुहारेकेवृक्षका शत्रुहोता-
है जब इसकापेट छुहारों के खानेसे भरजाता है तो बाक़ीफलों को
गिरादेता है सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३२५

(साफ़र) यहपक्षी कभी आराम नहींकरता रातसे सुबहतक
चिल्लायाकरता है कहते हैं कि इसको यहडर होता है कि आकाश
मेरे शिरपर न गिरपड़े सो इसी चिन्ता में सारीरात शिर झुकाये
रहताहै और जबतक सुबह हो नहींलेटती चिल्लाना नहींछोड़ता
इस साफर का स्वरूप यह है॥

तसवीर नम्बर ३२६

(सक़र) अर्थात् चर्ख़ यह शिकारी पक्षी विचित्रता से शिकार
खेलताहै जब दोचर्ख़ हिरण या जंगली गाय पर छोड़ें एक उसके
शिरपर आताहै और उसकीआंखों को अन्धाकरदेता है उस समय
वह शिकार खड़ा होजाता है और दूसरा भी पहुंचकर उसकी
आंखोंपर चोंचें मारता है उस समय आखेटक पहुंचकर शिकार
करताहै यद्यपि यहपक्षी भेड़ियेसे छोटाहै परन्तु उसकाभी शिकार
करताहै उसमें यह साहस ईश्वर की ओरसेहै॥

तसवीर नम्बर ३२७

(तायरुल्लबहर) यह दरियाईपक्षी सदा दरियामें उड़ताहै दरिया वाले कहतेहैं कि यह कभी घोंसला नहींबनाता परन्तु जब अण्डा देताहै तब बनाताहै और घोंसला समुद्रफेन का बनाता है इसके सिवाय सदा उड़ाकरता है और वायु पर जुफ़्ती भी खाता है यह अपने अंडोंको सेतानहीं है किन्तु उसमें अपने आप बच्चा पड़ताहै और जब बच्चा ताक़तदार होताहै उससमय अंडे को तोड़के वहभी अपनेमाता पिता के सदृश उड़ने लगता सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ३२८

(ताऊस) अर्थात् मोर यहपक्षी स्वरूप और सुन्दरतामेंसम्पूर्ण पक्षियोंसे उत्तम होताहै और अति विचित्ररंगों से रंजित बनाया गयाहै इसके परोंपर आश्चर्य आताहै कि हरपर में सुनहरी घेरा बनाहोताहै जो नीला सब्ज़ीलियेहै क्योंकि जो सोनेको सुर्खीजर्दी या सपेदी पर रक्खें इतना सुंदर न होगा जैसा कि नीलेरंग और सब्जीपर अच्छा मालूमहोताहै मोरकी आयु पच्चीसवर्ष की होती है और इसीसमयमें सबरंग उसमें उत्पन्नहोतेहैं इसकेपर पतझाड़ में झड़तेहैं और बहार में नयेरंग निकलते हैं शेखरईस कहता है कि मोर का पालना दुःखदाई जानवरों से बचाता है (गुण) इसकी हड्डीका गूदा तिल्ली और शहद में खाना कूलंज की पीड़ा और पक्वाशय की पीड़ावाले को उपयोगी है जो कोई इसका ताजा लहू पिये बावलाहोजाय इसकापित्ता सिकंजबीन के साथ गरमपानीमें पीना अतीसारके रोगीको दूरकरताहै और जिह्वाका भारीपन भी नष्ट होता है इसका मांस चरबी समेत खाना जातुलजन्ब अर्थात् पृष्ठिपीड़ा को गुणदायक है और इसकामांस वीर्य अधिककर्त्ता है और घुटने की पीड़ा को लाभकरे इसकी चरबी पीड़ा में लगाना शांतिकरता है इसकीहड्डी जिसकेपासहो उसपर दुर्दृष्टिका प्रभाव न हो इसका चुंगल प्रसूति की पीड़ा में स्त्रीकी रानपर बांधना या योनिमें धूनीदेना बहुत गुणदायक है सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३२९

(तैहूज)अर्थात् तैहू इसकामांस पुष्टकर्ताहै और वीर्यके अधिक करने वाला भी है सूरत उसकीयह है ॥

तसवीर नम्बर ३३०

(असफूर) अर्थात् गोरय्या यहपक्षी दोप्रकारका होताहै एक जो दानाचुनता दूसरा मांस खाता है और यह टिड्डियों का शिकार करतेहैं यह पक्षी अपनी घोंसला बस्ती में बहुधा छत्तों में बनाता क्योंकि शिकारी पक्षियोंसे भयमान रहताहै जो शहर उजाड़होतो यहपक्षी कभी वहां न रहेगा इससे और सर्पसे शत्रुताहै जब सांप इसके बच्चोंके खानेको इसके घोंसलेमें जाना चाहताहै तो यह चिल्लाताहै और इसके साथी शब्दसुनकर इकट्ठेहोतेहैं और चिल्लातेहैं बहुधा सर्प को अवकाशपाकर घायल करतेहैं यदि घावहोगया तो सर्पकीमृत्यु है क्योंकि सर्प के घावपर मक्खी और च्यूंटी इकट्ठी होजातीहैं और सर्पमरजाताहै और यहपक्षी गधेका भी शत्रुहोती है क्योंकि गधेकेशब्दसे इसकेअंडे खराबहोतेहैं सो यहपक्षी अपनी चोंचसे गधेको घायल करता है उसपर मक्खी और मच्छड़ एकत्र होतेहैं और यहपक्षी बीमारी में गधेका मांस खाकर आरामपाता है इसके बराबर दूसरे किसी जीवधारी में मैथुनशक्ति नहींहै इसी कारण इसकी आयु थोड़ीहोती है इसकामांस बलवीर्य बढ़ानेवाला और बातघ्नहै क्योंकि गर्महै इसका अण्डाखाना मैथुनकीइच्छा का प्रेरकहै इसकाअण्डा पृथ्वीमें गाड़कर फिर निकालकर नासूर पर लगानागुणदायकहै इसकीबीट आंखमेंलगाना रतौंधी दूरकरे जो मद्यमेंडालकर किसीकोपिलावें मूर्च्छितहोकरगिरपड़े सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर ३३१

(उक़ाब) यह शिकारी पक्षीहै धरतीके छोटे २ पक्षियों का शिकार करताहै जैसे खरगोश और लोमड़ी और जिसका शिकार करता है केवल उसका कलेजा खा लेता है क्योंकि उसका कलेजा उसके रोगको गुणदायक है किसी समय इसपक्षी की चोंच लम्बी हो-

तसवीर नम्बर ३२७

(तायरुलबहर) यह दरियाईपक्षी सदा दरियामें उड़ताहै दरिया वाले कहतेहैं कि यह कभी घोंसला नहींबनाता परन्तु जब अण्डा देताहै तब बनाताहै और घोंसला समुद्रफेन का बनाता है इसके सिवाय सदा उड़ाकरता है और वायु पर जुफ़्ती भी खाता है यह अपने अंडोंको सेतानहीं है किन्तु उसमें अपने आप बच्चा पड़ताहै और जब बच्चा ताक़तदार होताहै उससमय अंडे को तोड़के वहभी अपनेमाता पिता के सदृश उड़ने लगता सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ३२८

(ताऊस) अर्थात् मोर यहपक्षी स्वरूप और सुन्दरतामेंसम्पूर्ण पक्षियोंसे उत्तम होताहै और अति विचित्ररंगों से रंजित बनाया गयाहै इसके परोंपर आश्चर्य्य आताहै कि हरपर में सुनहरी घेरा बनाहोताहै जो नीला सब्ज़ीलियेहै क्योंकि जो सोनेको सुर्खीजर्दी या सपेदी पर रक्खें इतना सुंदर न होगा जैसा कि नीलेरंग और सब्जीपर अच्छा मालूमहोताहै मोरकी आयु पच्चीसवर्ष की होती है और इसीसमयमें सबरंग उसमें उत्पन्नहोतेहैं इसकेपर पतझाड़ में झड़तेहैं और बहार में नयेरंग निकलते हैं शेखरईस कहता है कि मोर का पालना दुःखदाई जानवरों से बचाता है (गुण) इसकी हड्डीका गूदा तितली और शहद में खाना कूलंज की पीड़ा और पक्काशय की पीड़ावाले को उपयोगी है जो कोई इसका ताजा लहू पिये बावलाहोजाय इसकापित्ता सिकंजबीन के साथ गरमपानीमें पीना अतीसारके रोगीको दूरकरताहै और जिह्वाका भारीपन भी नष्ट होता है इसका मांस चरबी समेत खाना जातुलजन अर्थात् पृष्ठिपीड़ा को गुणदायक है और इसकामांस वीर्य अधिककर्त्ता है और घुटने की पीड़ा को लाभकरे इसकी चरबी पीड़ा में लगाना शांतिकरता है इसकीहड्डी जिसकेपासहो उसपर दुर्दृष्टिका प्रभाव न हो इसका चुंगल प्रसूति की पीड़ा में स्त्रीकी रानपर बांधना या योनिमें धूनीदेना बहुत गुणदायक है सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३२९

(तैहूज़) अर्थात् तैहू इसकामांस पुष्टकर्त्ताहै और वीर्य के अधिक करने वाला भी है सूरत उसकीयह है॥

तसवीर नम्बर ३३०

(असफ़ूर) अर्थात् गोरय्या यहपक्षी दोप्रकारका होताहै एक जो दानाचुनता दूसरा मांस खाता है और यह टिड्डियों का शिकार करतेहैं यह पक्षी अपनी घोंसला बस्ती में बहुधा छत्तों में बनाता क्योंकि शिकारी पक्षियोंसे भयमान रहताहै जो शहर उजाड़होतो यहपक्षी कभी वहां न रहेगा इससे और सर्पसे शत्रुताहै जब सांप इसके बच्चोंके खानेको इसके घोंसलेमें जाना चाहताहै तो यह चि-ल्लाताहै और इसके साथी शब्दसुनकर इकट्ठेहोतेहैं और चिल्लातेहैं बहुधा सर्प को अवकाशपाकर घायल करतेहैं यदि घावहोगया तो सर्पकीमृत्यु है क्योंकि सर्प के घावपर मक्खी और च्यूंटी इकट्ठी होजातीहैं और सर्पमरजाताहै और यहपक्षी गधेका भी शत्रुहोती है क्योंकि गधेकेशब्दसे इसकेअंडे खराबहोतेहैं सो यहपक्षी अपनी चोंचसे गधेको घायल करता है उसपर मक्खी और मच्छड़ एकत्र होतेहैं और यहपक्षी बीमारी में गधेका मांस खाकर आरामपाता है इसके बराबर दूसरे किसी जीवधारी में मैथुनशक्ति नहींहै इसी कारण इसकी आयु थोड़ीहोती है इसकामांस बलवीर्य बढ़ानेवाला और बातघ्नहै क्योंकि गर्महै इसका अण्डाखाना मैथुनकीइच्छा का प्रेरकहै इसकाअण्डा पृथ्वीमें गाड़कर फिर निकालकर नासूर पर लगानागुणदायकहै इसकीबीट आंखमेंलगाना रतौंधी दूरकरे जो मद्यमेंडालकर किसीकोपिलावें मूर्च्छितहोकरगिरपड़े सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ३३१

(उक़ाब) यह शिकारी पक्षीहै धरतीके छोटे २ पक्षियों का शिकार करताहै जैसे खरगोश और लोमड़ी और जिसका शिकार करता है केवल उसका कलेजा खा लेता है क्योंकि उसका कलेजा उसके रोगको गुणदायक है किसी समय इसपक्षी की चोंच लम्बी हो-

जाती है इससे शिकार से हार मानकर मरजाताहै साहबुलफ़ल्लाहा कहताहै कि चील उक़ाब और उक़ाब चील होजाता है जाहिज़ का बचनहै कि उक़ाबके चुंगलमें इतना बलहै कि भेड़ियेको फाड़डालता है और सदैव काल सेनाओं के साथ रहताहै कि निर्जीव मांसमिले शिकारियों का वाक्यहै कि उक़ाब अपने शिकारको डराता नहीं है किन्तु आपही किसी ऊंची जगह पर जा बैठताहै जब देखताहै कि कोई शिकार लियेउड़ा आताहै उसके सामने कूदताहै और शिका उसका छीन लेताहै और जब शिकारी जानवर उक़ाबको देखता उसका तो उद्योग नहीं करता किन्तु अपने छुटनेका उपाय करता है और अपने शिकारको उक़ाब के वास्ते छोड़ देता है कहते हैं कि जब उक़ाब बूढ़ा होता है उसके बच्चे उसको पालते हैं जब उसकी आंखें बुढ़ापे से अन्धी होजाती हैं या कमज़ोर होती हैं तोआकाश की ओर यहांतक उड़ता है कि सूर्य्य की गर्मी से उसके पर जल जाते हैं उस समय नीचे गिर पड़ता है जो पृथ्वी पर गिरा तो मरगया और जो दरियामें गिरा तो कई बार गोते लगाता है और जब दरिया से निकलताहै तो ईश्वर की इच्छासे युवा होजाता है बुढ़ापे के चिन्ह नहीं रहते और पर भी निकल आते हैं इसकी आयु बड़ी होतीहै और बहुत दिनों तक जवान रहता है और ऐसा तेज़ पर होताहै कि जो सुबह इराक़में है तो शामको यमनमें पहुँचताहै उक़ाबके बच्चेको भी बहुत स्वाभाविक अभ्यास होताहै बहुधा इसके घोंसले पहाड़ की चोटियों पर होते हैं और वह पहाड़ ऐसे तिरछे होतेहैं कि जो उनके बच्चे तनक भी घोंसलेमें हिलें तुरन्त पहाड़से नीचे आगिरें सो इसके बच्चे इसी परीक्षा के ज्ञानसे नहीं हिलते जबतक कि सब पर न निकल आवें और उड़नेकी शक्ति भलीभांति न आवे इसीकारण अरबके निवासियोंका बचनहै कि अमुकमनुष्य उक़ाबके बच्चेसे भी अधिक अभ्यासित है कदाचित् कोई पालूपक्षी अर्थात् मुर्ग़े चकोर और कबूतर आदि के बच्चे जंगली पक्षियों के घोंसले में रखदे तो तुरन्त हिलने में गिरपड़ते हैं विचित्रता यह है

कि उक़ाब का बच्चा जबतक कि उसके पर निकल कर ठीक और बराबर न होजावें नहीं हिलता और जानता है कि हिलनेमें गिर पड़ूंगा(गुण) कहतेहैं कि इसका भेजा हरी मूलीके रसमें गर्महम्माम के अन्दर बैठकर पीना ज़ातुल जनब अर्थात् पीठकी पीड़ाको गुण-दायकहै और नेत्रकी ज्योति भी अधिक करताहै और जिन स्त्रियों की छातियोंमें दूध जमगयाहो मर्दन करें दूधजारी होजाय इसका लहू सुखाकर पीले हड़के साथ पीसकर सुरमा बनाकर लगाना धुंधले को उपयोगी है इसकी चरबी तिलोंके तेलमें पिघलाकर पांव की हड्डीकी पीड़ा पर लगाना उपयोगी है और बन्दर२की पीड़ा को गुण दायक है इसकी हड्डीकी मींगी शहद और एलवे के साथ नासूरके लियेलाभकारीहै दो तीन बेरमें अच्छा करे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३८२.

(अक़अक़) एकप्रकारकाकव्वा फ़ारसी में इसको शमीर दुबा-अका और कुन्दश कहतेहैं यहबड़ा चोर होताहै चांदी सोनेके गहने और जवाहिरकी कोईचीज़ या सुन्दर वस्तुको देखता है तो उठा-लेजाताहै और दूसरी जगह फेंक देताहै और छत आदि के नीचे छायामें घोंसला बनाताहै और चिनारके पत्तोंको अपने घोंसले के गिर्द रखताहै कि चमगादर उसके अण्डे बच्चों का इरादा न करे क्योंकि बहुधा यह अपने अण्डे बच्चोंकोअकेला छोड़कर चलाजाताहै इसका भेजा पिघलाकर लक़वे और फालिज़ वालेकी नाकमें टप-कावें तो तुरन्त छींक आवे और रोग नाशहो इसका लहू छाया में सुखाकर गुलाबमेंपीना बाचालता उत्पन्न करताहै और जहां कांटा या तीर गड़के टूटजाय वहांइसकी चरबी मलदें तो सुगमता पूर्वक निकल आवे इसकी हड्डीकी मींगी लड़कों को खिलावें बाचालता उत्तमहो इसके परकी राख च्यूंटीके बिलमें छोड़नेसे च्यूंटियां भाग जातीहैं इसकेअण्डेकी ज़र्दीका हम्मामसे निकलकर सुरमालगाना रतौंधीको गुण दायकहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३३३

(उनक़ा) अर्थात् सीमुर्ग़ इसका सम्पूर्ण पक्षियों से शरीर बड़ा होताहै कि हाथी और भैंस को उठालेजाताहै कहते हैं कि पूर्व समयमें यह मनुष्यों में रहताथा जब इसकी दुष्टता यहांतक पहुंची कि एकदिन एक दुलहिनको जो भूषणों से अलंकृत थी उठालेगया सो एक पैग़म्बरके चेलेने शापदिया तो ईश्वरने उसे मध्यरेखाकेनीचे समुद्रकेकिसी टापूमें डालदिया कि मनुष्यकी ओर न पहुंचसके उस द्वीपमें हाथीगैंडे और भैंस आदि बहुतसे पशुहैं परन्तु उनक़ा उनका शिकार नहीं करता क्योंकि यह सब उसके आधीन हैं जब इनमें से कोई बाग़ी होता है तो उससमय उसका शिकार करताहै नहीं तो बड़ी मछली या अज़दहे को शिकार करता है और अपना जूठा अपने आधीनी अन्य पशुओं को खिलाता है और आपऊंचे बैठकर उनके खाने का तमाशा देखता है उसके उड़ने के समय परों की खड़खड़ाहट से ऐसा मालूम होताहै कि मानों बहाव आताहै कहते हैं कि इसकी उमर अठारह सौ वर्षकी होतीहै जब पांचसौ वर्षकी आयु होतीहै तब जुफ़्ती करताहै अण्डादेनेके समय इसकी मादाको बड़ा कष्ट होताहै उस समय इसका नर दरिया का पानीचोंच में लाकर हुकना करताहै और इस उपाय से अण्डा सुगमता पूर्वक निकलता है सो नर अण्डेकी रखवाली करताहै और मादानिकल कर शिकार में जाती है और एकसौ पच्चीस वर्ष में उस अण्डे से बच्चा निकलता है जब वह बच्चा जवान होता है तो जो वह मादा हुआ तो उसके मां बाप लकड़ियां इकट्ठी करके परस्पर अपनी २ चोंच को रगड़तेहैं और उस रगड़ने से आग निकलतीहै और वह लकड़ियां जलने लगती हैं उससमय मादा उस आग में जल कर राख होजाती है और वह नर अपने मादा बच्चे से जुफ़्ती खाता है कदाचित् बच्चा नर हो तो उसका बाप यूंही जल जाता है और वही नर बच्चा उसके स्थानापन्न होकर अपनी मां से जुफ़्ती खाता है इसके सिवाय बहुतसी कहानियां सीमुर्ग़ की हैं परन्तु

उनका विश्वास न होने से वर्णन नहीं कीगई सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३४

ग़राब अर्थात् एक प्रकारका कव्वा यहबड़ा सफ़र करनेवाला है और सुबहको सब पक्षियोंसे पहिले उड़ता है यह पक्षी अख़रोट को बहुत पसन्द करताहै किन्तु उसका संचय करताहै और अपनी चोंचसे अखरोट में छेद करताहै और मनुष्यों की आंख फोड़नेका इरादा करता है और भूखे होनेपर मारने सेभी भागता नहीं है और बड़े २ जानवरों से नहीं डरता यहां तक कि ऊंट और बैल की पीठ पर बैठता है और कछुवे की पीठमें चोंचसे छिद्र करता है और उसका मांस खाताहै और जब ऊंटकी पीठमें घाव होकर उसमें बदगोश्त होजाताहै तोलोग उसको जंगलमें छोड़ आतेहैं क्योंकि कव्वा उसके बदगोश्त को खालेताहै इसके नरके मरनेपर मादा दूसरा नरनहीं करती और मादाके मरनेपर नर दूसरी मादा नहीं करता जब इसका बच्चा अंडेसे निकलताहै सपेदरंग बिनापर के होताहै इसीसे मां डरतीहै और उसको छोड़ देती है सो ईश्वर मक्खियों को उसके कंठमें पहुंचाताहै जिसको खाकर बच्चाकाला होताहै और पर और बाज़ू निकालता है मकहूलका बचनहै कि हज़रत दाऊदका आशीर्वादथा कि ईश्वर उनचिड़ियोंको जो शि- कार नहीं करतीहैं घोंसलेमेंही भोजन पहुंचाताहै तो जब वहकाला और बड़ाहोजाताहै उसकी मां आनकर पालतीहै और मक्खी और मच्छड़ उससे दूरकरतीहै खल्फ़अहमर का बचनहै कि मैंने कव्वे के बच्चेको देखा कि कोई और सूरत बहुतबुरी उससे न देखी शिर बहुतबड़ा बदन छोटा चोंच लंबी पंखछोटे २ बेपरके जबयह बीमार होताहै मनुष्यकी विष्ठाखाकर आरामपाताहै बाज़ाकव्वा तोतेसेभी बढ़कर बातें साफ़ २ करताहै (गुण) इसकी दोनों आंख और उल्लूकी आंख सुखाकर जिसजाति के बीचमें जलावें सबमें विरोध होजाय बलैनासका बचनहै कि इसके दिलको मनुष्य सुखाकर पानीमें पीसकर गरमी की ऋतुमें पिये बहुत तपनसे भी ब-

मालूमनहो जो इसका पित्ता शराबमें डालकरपियें पहले प्यालेमें उन्मत्त होजायँ जो जंगली कव्वेकाशिर पकाकर बहुत दिनोंकी शिरपीड़ावाले को खिलावें गुणदायकहै जो इसका रुधिर शराबके साथ पीवें फिर कभी शराबकी इच्छानहो किन्तु उसकाबड़ा शत्रु होजाय इसकी बीट रेशमी रंगीन कपड़ेमें बांधकर खांसीकी बीमारी में हाथमें बांधे आराम पावें सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३३५

(गज़ीबक़) यह जानवर दरियाई परिन्दों से हैं और बोलने वालेहोतेहैं यह वे पक्षीहैं जो दरियाकिनारे रहते हैं और जब वायु ख़राब होजातीहै तो वहांसे शहरोंमें आतेहैं उससमय अपने समूह में कोतवाल और चौकीदार नियत करते हैं कि सबकीरक्षा अच्छी तरहसेहो उड़नेके समय बहुत ऊंचे होजातेहैं कि कोई शिकारीपक्षी इनसे न बोलसके जब बादल आकाशपरहो या रात्रिको बहुत अंधेराहो या पृथ्वीपर भोजन के लिये नीचे उतरें तो चुपरहें और कुछभी न चिल्लावें कि शत्रुको मालूमनहो जबसोनेकी इच्छा करते हैं अपने शिरको पंखके नीचे छिपातेहैं इस दृष्टिसे कि शिरकेलिये बहुतसी आफतेंहैं और यहजोड़ सर्वोत्तमहै जो इसमें कोई उपद्रव हो सम्पूर्ण शरीरमें हानिहो जबयह जानवर सोते हैं तो एकपांव धरतीपर रखतेहैं और एक उठाये रखतेहैं क्योंकि यहभय लगा रहताहै कि जोदोनोंपैर पृथ्वीपररक्खेंगे तो बेगसेनिद्राआजायेगी इनका रखवाला और कोतवाल कभी नहीं सोता और अपना शिर पंखके नीचेनहीं रखता किन्तुहर ओर दृष्टिलगाये रहताहै और जब शत्रु दिखाई देताहै तुरन्त चिल्लाकर अपने समूह को ख़बर देताहै (गुण) इसकी बीटमें बत्ती भिगोकर नाकमें रखना हरघाव को जो नाकके अंदरहो गुणदायकहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३३६

(गव्वाज़) इसको फ़ारसीमें माहीख्वार कहतेहैं बुसरे के श-हरोंमें दरिया किनारे होताहै इसके शिकार का यहहालहै कि पानी

में बड़ी देरतक गोता लगाताहै और मछली को पकड़ के बाहर निकालताहै विचित्रता यहहै कि शिर झुकाये पानीमें रहताहै और जलके वेगसे नहीं हिलता कोई कहतेहैं कि हमने माहीख्वारपक्षी को डुब्बी लगाकर मछली लाते देखाहै और कव्वेने इसकापीछा किया और उसपर प्रबल होकर मछली लेगया सो यहपक्षी दूसरी बार डुब्बी खाकर मछली लाया और कव्वेके साम्हने गया जब कव्वा मछली खानेलगा यह उसकी टांग पकड़के दरियामें लेगया और कव्वेको पानीमें मारके आप आनंदसे निकल आया इसका लहू आदमी के जलेहुये बालोंमें मिलाकर जिसको खिलायें प्रीति करने लगे और इसकी हड्डीमें भी यहीगुण है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३३७

(फ़ाख्ता) प्रसिद्धहै इसेलोग शुभजानते हैं इसके शब्दसे सर्प भागतेहैं एककहानी है कि किसी धरतीपर सर्प बहुत हुये और उन्होंने उपद्रव मचाया लोगोंने विचारा कि फ़ाख्ता मँगानी चाहिये और इस विचारसे सांपोंसे छूटे फ़ाख्ता और कबूतर के लहू और ज़फ़्तनामीगोंद और कतराननामी तैलको जलाकर धुंआँकरें जिस की नाकमें गंध पहुंचे निद्रानाश का रोग होजाय सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३३८

(क़ोह) अर्थात् चकोर यह सुन्दर विचित्र चित्रित होता है पहाड़ोंमें रहताहै जब शिकारी इसके पकड़ने की इच्छा करताहै यह बेचारा अपनाशिर बरफके अंदर छिपाताहै इसविचारसे कि जिस तरहमैं शिकारीको नहीं देखताहूं वैसाही शिकारीभी मुझको न देखताहोगा सो शिकारी सुगमता पूर्वक सबको पकड़ लेताहै इस पक्षीके नर बड़े लज्जा युक्त होतेहैं जो दो नर एकमादा पर लपकें बड़ी लड़ाईहो जबतक कि एक प्रबल और दूसरा भाग न जाय उससमय मादा प्रबल चकोरके आधीन होतीहै विचित्रता यहहै कि जब यहपक्षी बोलताहै और उसका शब्द मादाके कानमें पहुंचता है तुरन्त उसके पेटमें अंडा पैदा होजाताहै जैसा कि छुहारे का

दरख्तभी नरमादा होताहै और जब नरकी हवा मादाके दरख्ततक पहुंचतीहै तब फलदार होताहै और यहपक्षी पंद्रह अंडे देताहै और दोजगह रखकर एकजगह नर सेता है और दूसरी जगह मादा सेतीहै यहजानवर बस्तीमें जुफ़्ती नहींखाता और सुन्दर स्वरोंको प्यार करताहै बहुधा अच्छे शब्दसे यहांतक बिह्वल होताहै कि गिर जाताहै फिर शिकारी लोग उसको पकड़ लेतेहैं इसका शिर आंखमें लगाना ढलकाको लाभ कारक है हरमहीने की पहली तारीखमें इसकापित्ता नाकमें छोड़ना समझ बढ़ाताहै इसका पित्त खजल एकप्रकारका चकोरहोताहै उसकी बीट और अनबेधे मोती सब बराबर लेकर पीसकर सुरमा लगावें आंख की सपेदी जाती रहे इसका कलेजा भूनकर लड़कोंको खिलाना मिर्गी के रोगको दूर करताहै और इसका रुधिर नेत्रोंमें लगाना घाव और रतौंधी को लाभदायक है इसका मांसखाना पुष्ट करताहै और जलंधरकी बीमारी जाती रहतीहै और कामदेव के बढ़ानेवाला भी है और इसका अंडा सिरकेमें मिलाकर जंगली प्याजके साथ कच्चा खाना विषको गुणकारक है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३३९

(क़बरा) अर्थात् हुदहुद सुन्दर स्वरोंको प्रिय रखताहै इसके शिरपर मोरकी तरह एकचोटी होतीहै और बड़ा चैतन्य होताहै जहां उतरताहै दाहें बायें देखा करताहै और बहुत कठिनतासे शिकार होताहै इसका घोंसला अति विचित्रतासे बना होताहै अंगूरकी तीनलकड़ियोंसे घोंसला बनाताहै और घास उत्तम और सुंदर लाताहै और उनलकड़ियों के बीचमें रखताहै और उसमें बच्चा देताहै और घाससे छिपाताहै कि शिकारी पक्षी न देखपाये इसका मांस भूनकर खाना लकवेको गुणदायक है स्वरूप यहहै॥

तसवीर नम्बर ३४०

(क़ता) अर्थात् कतू जिसको लवा कहते हैं इसपक्षी का नाम इसके शब्दपर रक्खा गया है क्योंकि यहकता २ कहा करता है

अरब कहताहै कि अमुककता अर्थात् सचकहनेवालाहै और अधिक तरयहभी बचनहै कि अमुककता अर्थात् सीधा मार्ग जानता है और यह जानवर जंगलमें अंडेदेके पृथ्वीमें गाड़ताहै और आपगुप्त होजाताहै और कई दिनके पीछे आकर वहां अंडासेताहै इसपक्षी की चाल उत्तम होतीहै यहांतक कि इसकीगतिसे सुन्दरस्त्री पुरुषों की चालका दृष्टान्त देतेहैं इसका घोंसला पृथ्वीपर बहुत छोटा घासकेअन्दर होताहै पैग़म्बरसाहब ने दृष्टान्तकहाहै कि जो मनुष्य ईश्वरकेवास्ते मसजिद बनावे चाहेवह क़तापक्षी के घोंसलेकी तरह छोटीहो तो ईश्वर उसकेवास्ते बिहिश्तमें घरबनावेगा (गुण) इसका रुधिर शरीरमें मलना बालखोरेको गुणदायकहै यदि लिङ्गपरमलें वीर्य अधिककरे इसकामांस जलन्धर को लाभकरे और प्रकृति के उपद्रव और कलेजेके पकड़नेको सुधारे और इसकोजलाकर तेलमें मिलाकर जिसजगह बाल जमानाचाहें लगावें जल्दी निकलआवें इसके पेटके जोड़ उनस्थानोंपर पीसकर लगाना जहां कि हड्डियां इधरउधर होगईहों तो उन अस्थियोंको अपने मुख्यस्थानमें लाता है यदि नेत्रमेंलगावें घावको गुणदायक और रतौंधीको उपयोगीहै सूरत यहहै ॥ तसवीर नम्बर ३४१

(कुमरी) टोटरू प्रसिद्ध पक्षीहै बहुधा लोग इसको पालते हैं कहतेहैं कि इसकीमादा नरके मरनेपर दूसरे नरकेपास नहींजाती और सर्बदा अपनेमरेहुये नरको यादकरतीहै यदि कुमरीका अण्डा फ़ाख़्ताके नीचेरखदें या फ़ाख़्ताकाअण्डा कुमरीकेनीचेरखदें हरदशा में उसअण्डेसे कुमरीहीका बच्चा निकलेगा सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३४२

(क़ोक़नसअरज़) यहजानवर हिन्दमें अद्भुतहोताहै तोहफ़तुलगरायबका निर्मापक लिखताहै कि जब यह जानवर जुफ़्ती की इच्छाकरताहै तो पहले नर और मादा लकड़ीइकट्ठीकरके उसपर बैठकर जुफ़्तीकरतेहैं और फिर परस्पर चोंचरगड़के अग्निनिकालते हैं और उसआगमें जलजातेहैं और जब मेहबर्षताहै उसीमट्टीमें

से दो जानवर उत्पन्नहोतेहैं और उनके पर निकलतेहैं अन्तको बड़े होकर कोक़नस होजाते हैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३४३

(करकी)अर्थात् कुलंग हिन्दीमें कोंचकहते हैं इनमें बड़ीसम्मति होतीहै शायद कोई किसीका शत्रुहो और इनमें एक सर्दार होताहै जिसके सब आधीन होते हैं और बारी २ एक २ उनका रखवाला होकरइनकेगिर्दफिराकरताहै और रक्षाकरताहै और शत्रुकोदेखकर ऊंचे शब्दसे अपने साथियों को इत्तिला देताहै रात्रिको ऐसी जगह जातेहैं जो बस्ती से दूर होतीहै और अच्छी तरह पांव धरती में जमाकर नहीं सोते कि निद्रा का वेग न हो जाहिज़ कहता है कि कुलंग दोनों पांव पृथ्वी पर रखकर नहीं खड़ा होताहै इस भय से कि जो दोनों पावँ धरती पर रक्खूंगा तो ऐसा न हो कि बोझके कारण पृथ्वी के नीचे धँसजाऊं (गुण) इस की आंखको घिसकर सुरमा करना निद्रादूर करता है यदि इसका पित्ता मर-जनूजोश अर्थात् मरवाके साथ कजली करके जिसतरफ़ लक़वा हो उस ओरके नाकके छिद्रमें डालें और दूसरी ओर अखरोटका तेलडालें और सातदिनतक अँधेरे मकान में बैठावें तो लक़वादूर होजाय इसका मांस चरबी समेत पकाकर बहरे के कान में डालें अच्छा होजाय और भेजा सिरके और जंगली प्याज़केसाथ हम्माम में खाना तिल्ली के रोगी को गुण दायक है इसका मेदा सुखाकर चनोंके पानीके साथखावे तो अंडकोषकी पीड़ा और फुकने को गुण-दायक है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३४४

(करवान) यह एक पक्षी है जिसको फ़ारसीमें चोबीनिया कहते हैं इसका मांस चरबी समेत पकाकर खाना बहुतही वीर्य करता है यहां तक कि मनुष्य बेचैन होजाय सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर ३४५

(लक़लक़) इसका भी स्वरूप लवासे मिलताहै इसका भोजन

केवलसर्प है इसके दोघोंसले होते हैं एकठंढेदेशमें दूसरा गर्मदेशमें इसको रबीकी फ़सल पसन्द है और अपना घोंसला ऊंचे बनाता है और मज़बूत इतना होता है कि ख़राब करने से ख़राब नहीं होता इसकी बुद्धिमानी में शेख़रईसका बचन है कि महामारी पर यहपक्षी वहांका रहना छोड़देताहै इससे सम्पूर्ण कांटेदार कीड़े मकोड़े आदि भागते हैं इसका अंडा ख़िज़ाबके वास्ते उत्तम है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३४६

(मालिकुलहज़ीं) अर्थात् बगला इसकी गर्दन और पांवलम्बे होते हैं जाहिज़ कहता है कि यह जानवर नहरों के किनारे होता है और जो किसी कारण नहर का पानी कमहोजाता है तो अति चिन्तित होता है और फिर जल इस भयसे नहीं पीता कि जो मैं पीलूंगा तो पानी कम होजायेगा और लोग प्यासे रहेंगे यहां तक कि आपही प्याससे मरजाता है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३४७

(मका) इसको फ़ारसीमें शबानगरीब कहते हैं जंगलमें रहता है और विचित्र घोंसला बनाता है इसको सर्प से शत्रुता होती है क्योंकि वह उसके बच्चोंको खालेता है सालिम के पुत्र हुशामका वचन है कि एक सर्प उसके बच्चोंको खाताथा मका चिल्लाता था सर्प ने बच्चे छोड़कर इसकी ओर मुखखोला इसने उसके मुखमें एक कांटा उसी जगहसे तोड़कर डालदिया सांप उसी समय मर गया सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३४८

(नसर) अर्थात् करगस यहपक्षी भोजनका लोभी होताहै जब मुरदार पाताहै इतना खाताहै कि उड़नहीं सक्ता कहतेहैं कि हज़ार वर्षकी आयुपाता है बहुधा इसके घोंसले ऐसी जगह होते हैं जहां किसी जीवधारीकी पहुंच नहोसके कहते हैं कि जब इसकी मादा अंडे सेतीहै तो दलब अर्थात् चिनारके पत्ते लाकर घोंसलेमें रखती है कि चमगादड़से उसके अंडेको दुःखनपहुंचे जब बच्चा पैदा होनेका

समय आताहै इसकानर हिन्दुस्तानमें जाकर एकप्रकारका दरियाई पत्थर लाकर मादाके नीचे रखताहै कि सुगमतासे प्रसूवहो बीमारी में मनुष्यका मांस खाकर आराम पाताहै जबइसकी ज्योतिमें कुछ उपद्रव होता है तो मनुष्यके पित्तेको आंखोंमें मलकर आरामपाता है और इसको गुलाबकी सुगंध हानि करतीहै किन्तु सम्पूर्ण प्रकार कीसुगन्धनहींसहसक्ताहै क्योंकि निर्जीव जीवधारियोंकेखानेवाला है दुर्गन्धिकी रुचि रखता है लश्करोंके साथ मुरदार जीवोंके लोभ से रहताहै और हज्ज करने वालेके साथभी रहताहै क्योंकि बहुधा हज्ज करनेवाले बेकाम चारपायों को जंगलमें छोड़ देते हैं इसका पित्ता कानमें टपकाना बहरे को अच्छा करता है जो सातबेर सुरमेकी तरहपर लगावें कीचड़ आंखकी दूर करे और पानी उतरने को बंदकरे इसके मांसको नमक वरश (रूमीदवा) ज़ीरा और शहद के साथ खाना बिषको दूरकरे और चरबी इसकी बहरे के कानमें डालना गुणदायक है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३४३

(लगामा) अर्थात् शुतरमुर्ग़ यह कई पशुओं के संसर्गसे उत्पन्न होताहै इसकी गर्दन और पांव ऊंटसे मिलते हैं और चोंच और पंख पक्षीकेसे होते हैं इसके पक्वाशय में इतनी गर्मी होती है कि कंकड़ पत्थर जो पेटमें हो पच जाता है और इसमें सूंघने और सुनने की शक्तिबहुत तीक्ष्ण होतीहै और पचनेकी शक्तिको तो यह दशाहै कि जो सेरभरका पत्थरभी आगमें लालकरके उसके आगे डालदें तो यह खाले और उसके मुंह और पेटको कुछहानि न पहुंचे और वह पचजाय और कोई जानवर दौड़नेमें इसके आगे नहीं जासक्ता जब गर्मीमें छुहारा लालहोता है तो इसकी पिंडलीभी सुर्खहोती है जब अंडा देताहै और गिन्तीमें बीस होजातेहैं तो उनके तीनभाग करता है एक भाग सूर्यके साम्हने रखताहै दूसरा पृथ्वीमें गाड़ताहै एक अपने नीचे रखता है जब अपने नीचेके अंडोंके बच्चे निकलते हैं तो जो अंडे सूर्यमें रक्खेहैं उनको तोड़कर बच्चोंको खिलाताहै कि उन

को बलही और मल्लीवाले तोड़कर मैदानमें रखताहै कि मक्खीआदि उनपर इकट्ठीहों सो उन मक्खियोंकोभी बच्चोंको खिलाताहै अरब के निवासियोंके निकट यह अहमक़है क्योंकि बहुधा दूसरेका अंडा देखकर उसको सेताहै और अपना भूल जाता है और दूसरी निर्बुद्धि यहहै कि भोजनके विचारसे दोभाग अपने अंडोंको नष्टकरता है इसका पित्ता आंख में लगाना आंख की अंधेरीको दूर करता है और इसका मांस बात और श्लेष्माके रोगोंके दूर करने वाला है और इसकी चरबी सूजनोंको गलाती है जो इसके अंडेका छिलका मांसमें छोड़दें बहुतजल्दीपक जाताहै चाहे आंचकमभीहो सूरतयहहै

तसवीर नम्बर ३५०

(हुदहुद) यह प्रसिद्ध पक्षी है पैगम्बर साहबका बचन है कि हुदहुदको मतमारो क्योंकि उसने सुलेमानको सबान शहरमें मार्ग बतायाथा और मैं इसबातको प्रिय जानताहूं कि वह ईश्वरका भजन करता है जिसका साथीकोई नहीं है लिखा है कि हुदहुदने एकबेर हज़रत सुलेमानसे विनयकी कि आपमेरा न्यवता अंगीकार कीजिये हज़रतने कहाकि मैं अकेला आऊं या सेनासमेत हुदहुद ने विनय की आप सेनासमेत अमुकद्वीपमें सुशोभित हूजिये हज़रत नियमित दिवसको उसद्वीपमें गये हुदहुदने क्या कामकिया कि एकटिड्डी को पकड़कर गर्दन उसकी काट डाली और दरिया में डालदिया और हज़रत सुलेमान से विनय की कि आप सेना संयुक्त इसको खाइये यह दरिया नहीं है यह टिड्डी के मांस का शोरबा है इस बातसे आप और आपका लश्कर एक बर्ष तक हंसतेरहे हुदहुद के बच्चोंमें दुर्गंध आतीहै कइयोंका वचन है कि यहपक्षी अपने घोंसले को मनुष्यकी विष्टासे भरा रखता है इसी कारण यह दुर्गंध उनके शरीरसे आती है जब यह बूढ़ा होता है इसके बच्चे इसके पंख और पर उखेड़ डालतेहैं और उसको अपने परोंके नीचे रखतेहैं यहनये सिरे से जवान होजाता है इसकी बीमारी में जंगली बिच्छू खाना गुणकारी है जो इसके बच्चेको सरतान (पीठका फोड़ा जोगैंगटे के

रूपका होताहै) पर बाँधैतो यह फोड़ा जल्दी गलजावे (गुण) इसका ताजा शिरपर बांधना शिर पीड़ाको दूरकरता है बलैनासका निश्चयहै कि इसका शिर सुखाकर तेलके साथ मुखपर उबटन करना सृष्टिकी दृष्टिमें प्रियरखता है इसका शिरहाने रखना निद्रा नाश करता है और पास रखना भूली हुई बातको याद दिलाता है यदि कुष्ठीकी गर्दनमें बांधें गुणकरै इसकी जिह्वा निकट रखना शत्रु पर प्रबल करता है इसके दिलका यंत्र बनाना मैथुनकी इच्छा अधिक करता है यदि भूनकर एकरोटीके साथ दोमनुष्य खावें उन दोनोंमें प्रीति हो और इसका पित्ता अर्द्धांग रोगी को मलें गुणकरें इसका दाहना पंख शिरहाने के नीचे रखना निद्राका बेग करता है और बाँयां रखना नींद दूरकरताहै जो इसको कबूतरों के खानेमें जलावें सब कबूतर भागजावें इसके मांस को सुखा कर आटे में मिलाकर रोटी पकावें और जिसको खिलावें वह मित्रहोजाय जो इसकीहड्डी को घरमें धुआँकरें सम्पूर्ण दुःखदायी कीड़ेमकोड़े मरजावें जो इसके नख जलाकर उसकी राख जिस स्त्री को खिलावें और उससे मैथुन कियाजाय तुरन्त गर्भवतीहो यदि हुदहुदको इस्माईलनामी मनुष्य के दरवाज़ेपर मारें और उसके रुधिरको शक्कर और उबटन के साथ मिलाकर मलें सम्पूर्ण मनुष्य उसके मित्र होजायँ सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३५१

(वतवात) इसको फ़ारसीमें बालवाया और हिन्दीमें अबाबील कहते हैं बलैनासका बचन है कि जोकोई अबाबील पानीमें डूबकर मरजाय जोमनुष्य वह पानीपीवे एकमहीनेतक नींदनआवेजो किसी मनुष्य के बाल किसी अबाबील की गर्दनमें बांधकर उसको उड़ावें तो उस मनुष्यको नींद नआवेगी जबतक अबाबीलको मार नडालें या कि वह आप नमरजाय या उसकीगर्दनसे बाल खोल न लिये जायँ उसके शिरको शिरहाने के बीचमें रखना निद्राका बेगलाता है जो इसकाभेजा शहदकेसाथ आंखोंमेंलगावें ढलका बन्दकरदे जो उसको गुलाब तेल में पकाकर रांघन पर मलें पीड़ा ठहर जायगी

औरदो तीनबेर मलने से फिर पीड़ा न होगी उसकी सूरतयह है ॥

तसवीर नम्बर ३५२

(यराग़ा)अर्थात् पटबीजना यह पक्षी बहुत छोटा होताहै जब दिनको उड़ता है पक्षीके स्वरूपका दिखाई देता है और रात्रि को आगकी लपटके सदृश मालूम होता है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३५३

(यमामा) यह जोटीदार कबूतर है जो घरोंमें होता है और बहुत अंडे देता है और मनुष्योंके सदृश इस समूह में भी मादा से प्यार आदि होताहै वह अंडोपर बैठती है और नर बच्चों को पालता है इसमें विचित्रता यह है कि जब बच्चा अंडे में पूर्ण होजाता है उस समय उस अंडेको पहले अपनी चोंचसे तोड़ता है जिसमें नर होता है क्योंकि नर मादा से पहले अंडे में तय्यार होता है वह परमेश्वर शुद्ध है जिसने कबूतरके मनमें डालदिया कि वह अंडे को बच्चे के पूरे होजानेके समय तोड़ता है और आगे पीछे नहीं तोड़ता जब यह बीमार होताहै तो नरकुल की पत्ती खाकर आराम पाता है और इसके जोड़ोंका गुण कबूतर के बर्णन में होचुका ॥

छोटे २ कीड़े मकोड़ों का बर्णन

यह प्रकार जीवधारियों का ऐसा नहीं है कि मनुष्य उसे गिन सके कई बुद्धिमानोंने लिखा है कि जो कोई चाहे कि इनको मालूम करे तो रातको जंगल में आगजलावे उस समय देखे कि कितने प्रकार इन विचित्र जीवधारियों के इकट्ठे हैं जिनके स्वरूप अन्य२ हैं और जिनको न कभी देखाहो और बिचार नहीं होता कि ईश्वर ने ऐसी चीज़े भी पैदा कीहैं और वह जीवधारी पृथक् २ स्थानोंके रहने से अन्य २ होतेहैं जैसे पहाड़ दरिया बाग़ रेतीली जगह कूड़े के स्थान आदि हर जगह इनकी उत्पत्ति अन्य २ रीतिपर है और इनकी उत्पत्ति बिगड़ेहुये मल और दुर्गंध से होतीहै कि वायु उन दुर्गंधों से साफरहे इस बात का निश्चय है कि ईश्वरने कीड़े मकोड़ों को बिगड़ेहुये मल और सड़ीहुई दुर्गंधियों से उत्पन्नकिया

कि हवा में कोई उत्पात नहो और महामारी का कारण नहो जिससे जीवधारियों और वृक्षोंमें उत्पात होताहै यद्यपि इसउत्पत्ति में उनके काटने की भी हानि है परन्तु बहुत से लाभ भी हैं और यह बात समझने के लायक़ है कि मक्खी और कीड़े कस्साब और हलवाई की दूकानोंमें होतेहैं और बज़ाज और लुहारोंकी दूकानों में नहीं होते इससे सिद्धहोगया कि ईश्वरने कीड़े मकोड़ोंको उसी दुर्गंध से उत्पन्नकिया ईश्वरने छोटे कीड़ोंको बड़ोंका भोजनबनाया जो ऐसा न होता तो सम्पूर्ण पृथ्वी इस बलासे भरजाती सो निश्चयकरके जानना चाहिये कि ईश्वर के राज्यमें ऐसी बात नहीं है जिसमें ईश्वर की बुद्धिमानी मिली न हो इसप्रकार में यह आश्चर्यहै कि जो इनमें विष किसी जीवधारी की हानि का कारण है तो ईश्वरने इन्हीं के मांस में उसके दूर होनेका गुणभी रक्खा हकीमोंने सर्प के मांस से जो विषकी बराबरी में है सो तिर्य्यक की औषधियों में इसका मांस गिना तिर्याक ज़हर की औषधियों का नाम है और इस बातकी परीक्षा भी होचुकी है कि जिसको बिच्छू ने काटाहो जो वह बिच्छू को मारकर उसको बीटकी तरी घावपर लगावे तुरन्त पीड़ा दूरहोगी कई प्रकार इसके सर्दीमें मरजाते हैं जैसे मच्छड़ पिस्सू और कोईपृथ्वीके नीचे जाघुसते और कुछनहीं खाते हैं जैसे सांप और बिच्छू कोई इनमें से इस मौसमके वास्ते संग्रह रखते हैं जैसे च्यूंटी क्योंकि च्यूंटी बेखाये नहीं रहसक्ती है अब हम उनका वर्णन करते हैं जो इसप्रकार से संबन्धित हैं (अरज़ा) अर्थात् दीमक सपेदरंग छोटासा होताहै इसको फारसी में चोबख़्वार कहते हैं और च्यूंटी आदि शत्रुओं के भयसे अपने शरीरपर दहलीज़ की तरह बनाता है जब यह कीड़ा एक वर्ष का होताहै तब इसके दोपर लंबे निकलते हैं और उनसे उड़सक्ता है और यह वह कीड़ा है जिसने जिन्नोंको हज़रत सुलेमान की मृत्यु बताई अर्थात् हज़रत सुलेमान की लकड़ी को खालिया जब इस कीड़े का घर ख़राब होजाता है तो उसके साथी उसके मकान की

दुरुस्ती केलिये इकट्ठे होतेहैं और उसके छिद्रोंको थोड़ीदेरमें दुरुस्तकरदेते हैं कहते हैं कि इस जीवधारी की प्रकृति ठंढी और तर है और इसका शरीर खोखला रहता है और जहां इसके परोंकी जगह होती उसमें दोछिद्र होतेहैं और उसीसे वायु खींचताहै और वह हवा सरदी के सबबसे पानी होकर उसके शरीर से गिरती है और मट्टीके भाग जैसे गर्द आदि सदा उसपर गिरके जमजाते हैं सो वही उसके शरीरपर मैल होजाता है और वह उस मैल से अपने शरीरपर घरकीतरह बनालेता है उसके दोनों होंठ तेज़होते हैं जिनके कारण लकड़ी ईंट पत्थर को काटाकरता है इसकीशत्रु च्यूंटी होतीहै कि अपने घरतक उसको घसीट लेजाती है परन्तु जब च्यूंटी इसके पीछेसे आती है तो इसपर प्रबल होतीहै और जब इसके साम्हने से आती है तो निर्बल होजाती है जब इसके पर निकलते हैं तो चिड़ियों का भोग होताहै साहबुलमन्तक़ कहताहै कि पहले पहल इसने लोगोंके बहुत से मकान नष्टकिये थे उससमय ईश्वर ने च्यूंटीको उसपर बलवान् बनाया कहते हैं कि यह हरताल और गायके गोबर से भी दूर होताहै ॥

(अफई) छोटीपूछ का काला नाग यह सबसांपोंमें बुराहोताहै जब यह अंधा होजाताहै तो फिर पलक नहीं मारसक्ता और गर्मी के कारण चार महीने पृथ्वीमें छिपा रहता है फिर धरतीसे वैसाही अंधा बाहर आताहै तो सौंफके वृक्षमें आंख रगड़कर फिर आंखें अच्छी करलेता है जो इसकी दुम काटडाली जाय तो तीन दिनके पीछे फिर सुधर आती है जो इसको मारडाले तीनदिनतक हिला करता है और जंगली गाय इसकी काल है जहां वह सर्प को देखती है खालेती है यह काला सर्प मनुष्यों का महा बिरोधी है जाहिज़ कहता है कि भुजंग गरमी के दिनोंमें पिछलेपहर रातको जब गर्मी कम होजाती है प्रकट होताहै और बहुधा मार्गोंमें कुंडल बांधकर अपना शरीर पृथ्वी में गड़ोकर बैठता है और गर्दन ऊंची करता है मुख्य उसका यह प्रयोजन होता है कि मनुष्य या चार-

पाया जो उसपर पैररखकर निकले तुरन्त उसको काटखाये इसका विष तुरन्तही प्रभाव करता है कहते हैं किसी भुजंग ने ऊंटनी के होंठ में काटा उसका बच्चा दूध पीरहा था बच्चा पहले मरगया और ऊंटनी फिर मरी लोगोंने आश्चर्य किया कि इतना जल्दी प्रभाव दूधमें पहुंचगया कि मां से पहले बच्चामरा जब सर्पबीमार होता है तो ज़ैतून के वृक्ष के पत्ते खाकर आराम पाता है॥

गुण इसका पित्ता हलाहल विष है जो कोई पिये असाध्य है इसका रुधिर नेत्रकी ज्योति को बढ़ाता और रतौंधी को नष्टकरता है यदि आंख में लगावें आंख की अंधेरी और ढलके को उपयोगी है जो बग़ल के बाल उखाड़कर वहां पर इसका रुधिर लगालें तो फिर बाल न निकलेंगे बुक़रात हकीम इसके मांस के लिये लिखता है कि जो कोई खालेवे कठिन रोगसे निर्भयहो और पट्ठों को बलवान् करता है और बूढ़ा नहीं होने देता है और जलंधर रोग को गुण दायक है बलैनास कहता है कि इसका मांस पकाकर खाना कोढ़ और आंखकी अंधेरी को गुण दायकहै और मैथुन की इच्छा अधिक करता है इसके मांस की चरबी जिस जगह के बाल उखाड़कर मर्दन करें फिर बाल न निकलेंगे इसका मांस सांप और काले सांप के काटने में बहुतही लाभदायक है (कहानी) कोई मनुष्य वृक्ष के नीचे सोरहा था काला सर्प जो उधर से निकला उसके हाथ में काटा उसने जागकर जाना कि सर्प ने काटाहै सो उसपर मूर्च्छा और प्यास का बेगहुआ उसके निकट एकहौज़ था उसने उसमें से जल पिया तुरन्त पीड़ा दूरहोकर आरामपाया इससे उसको आश्चर्य हुआ एक लकड़ी हाथ में ली और पानी में ढूंढ़नेलगा अकस्मात् दो सर्प दिखाई दिये कि दोनों परस्पर लड़कर मरेपड़े हैं और उनका मांस सड़गया है सो वह समझा कि यह गुण उनके मांस का है शेखरईस कहता है कि इसकी खाल जलाकर उसकी राख मलना बालखोरे को गुण दायक है और यह भी कहता है कि काले सर्प को दो टुकड़े करके उसके

काटेहुये स्थान पर रक्खें पीड़ा ठहरे कहतेहैं कि जो कोई नीलेसूत्र के डोरे बनाकर काले सर्पकी गर्दनमें बांधे इस दिनसे कि सांपको दुःखपहुंचे फिर उस डोरेको खोलकर जिस मनुष्यके गलेमें पीड़ाहो उसके बांधदें तुरन्त पीड़ा जातीरहे स्वरूप यहहै॥

तसवीर नम्बर ६५४

(बरग़ोस) अर्थात् काला पिस्सू बहुत होताहै जब मनुष्य की दृष्टि उस पर जाती है इधर उधर कूदता है कि मनुष्य की दृष्टि गुप्त होजाय जाहिज़ कहता है कि इसकी सूरत हाथी कीसीहोती है और अण्डा देता है और उससे बच्चा निकलता है सफ़ियान सूरीकी कहावतहै कि मच्छड़ की उमर पाँच दिनकी होतीहै और यध्यमा यहध्याइन्न खालिदसे कहतेहैं कि जब पिस्सू के पर निकल आतेहैं तो दीपकका पतंगा होजाताहै कहते हैं कि पिस्सू कपड़ोंकी जूंको खाताहै और सुर्ख़ कनेरकी गंधसे मर जाता है महबूब बसीराबी एक कबि बुगदामें था जब उसने बहुत दुःख उठाया तो कुछ पद्य लिखे जिनका सारांश यहहै कि बुगदाद शहरमें पिस्सुओं की बहुतही अधिकताहै और मुझपर संसारके कामोंकी चिंताका बेगहै रात्रिके दोभाग होजातेहैं आधीरात तो मैं चिन्ता और दुःखशोकमें बिताता हूं और दूसरा हिस्सा आधीरात में पिस्सुओं के कारण सोना नहीं मिलता मानो इस खींचा खींच में मेरी सम्पूर्ण रात्रि गुजरती है (बावज़) अर्थात् मच्छड़ हाथीके रूपका होताहै बहुत छोटा ईश्वरने कुलजोड़ हाथीके मच्छड़में उत्पन्न किये और दो पंख हाथीसे भी अधिक इसमें उपजाये क्या ईश्वरकी मायाहै कि मच्छड़ को वह जोड़ कृपाकिये जो बड़े जीवधारियों को दिये यह मच्छड़ इतना छोटाहै कि जब किसी चीज़में गिर जाताहै तो मनुष्य बिवेक नहीं करसक्ता जब यह दशा उसके सम्पूर्ण शरीरकी है तब उसके शिर और भेजेका क्याअनुमान होसके परन्तु ईश्वरने उसकेब्रह्माण्ड में पाँचों शक्तियां कृपाकी और मालूम करनेवाली भी शक्तिदी कि वह जीव धारीकी ओर जाताहै दीवारकी ओर नहीं जाता उसको

ध्यानकीशक्तिभी दी कि जब उसको किसीजोड़से दूरकरें फिर उसी जोड़पर लपके इससे मालूमहुआ कि वह अपने भोजन के स्थान को पहिचानताहै और विचारका प्रमाणयहहै कि मनुष्यकेहाथहिलतेही भागताहै और चैतन्य रहनेका प्रमाण यहहै कि जब अपनी सूंडको काटनेके वास्ते गड़ोता है और लहू चूसनेमें प्रवृत्त होताहै तो अचैतन्य नहीं होता और बहुत जल्दी भागजाता है इस विचारसे कि जब उस मनुष्यको पीड़ाहोगी तो उसके मारडालनेका उपायकरेगा इसकी सूंड बालसे बहुत महीन होतीहै और इतनी महीन होने पर भी खाली होती है और तेज़ इतनी कि हाथी और बैलके चमड़े तक में सूंड चुभोकर रक्तपानकरताहै और हाथी और बैल इससेपानीमें भागते हैं सो यह जीवधारी छोटा होनेपरभी ईश्वरकी ऐसीबुद्धिमानीसे भराहुआ है सो उसमनुष्यकी मूर्खता पर रोना चाहिये जो कि कहता है कि परमेश्वरने मच्छड़ और मक्खी का वर्णन कुरान में किया है तो ईश्वरने इस बचनके रद्दकरनेमें यह आज्ञा दी है कि मैं मक्खी और मच्छड़के उपजानेमें लज्जा नहींमानता वास्तवमें कोई ईश्वरकी बुद्धिमानीको नहीं जानसक्ता कहते हैं कि जो बबूलके गोंद की तीन गोलियां बनाकर और हरगोलीमें एक २ मच्छड़ लपेटकर चौथिया तपवाला हर बारी के दिन एक २ निगल जाय तो तुरन्त ज्वर दूरहोजाय (साबान) अर्थात् अज़दहा यह जीव बड़ा भयानक रूप होता है शेखरईस कहताहै कि छोटेसे छोटा अज़दहा पांचगज़ का होता है और बड़ा तीस गज़का और इससे भी अधिक इसकी दोआंखें बड़ी होतीहैं और उसके दाढ़के नीचे एकगांठ होतीहै और दांत असंख्य होते हैं कई लोगोंका बचन है कि यह अज़दहा हिन्द और नोबेकी धरतीमें बहुत होता है इसका मुखपीला या कालेरंग का होता है और मुंह चौड़ा भवें बहुत लंबी यहां तक कि उसकी आंखें छिपजाती हैं और गर्दन मोटी शेखरईस कहता है कि मैंने एक अज़दहा देखा जिसकी गर्दनमें बहुत मोटे २ बालथे इनकेनर मादाओंसे बहुत बुरे होते हैं जिस जीवको पाते हैं निगल जाते हैं

और यह वृक्ष की जड़ या पत्थर में लिपटकर जोर करते हैं कि जिसको निगलाहै उसकीहड्डियां आदि टूटजायँ इसके अन्दर ऐसी गर्मी होती है कि जो चीज़खावे तुरन्तपचे बहुधा धरतीका पानी में रहने लगता है और फिर वह दरियाई अज़दहा कहलाता है और बहुधा दरिया के रहनेसे धरती का होजाता है और बहुधा बड़े २ पहाड़ोंपर चढ़जाताहै कि विषकी गर्मीके वेगसे ठंढी हवा में आराम पावे (गुण) इसका दिल खाना बहादुर करता है और इसकीखाल प्रेमीजनपर बांधनी प्रीतिके दूर करने वालीहै और इसकी खालका पास भी रखना सम्पूर्ण जीवोंको भगाता है और जहां इसकाशिर गाड़ें वहां केलोगोंकी दशा अच्छीहो और शुभकार्य हों आगे ईश्वर जाने स्वरूप यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३५५

(जराद) अर्थात् टिड्डी यहजीव दोप्रकार का होता है एक प्रकारको फारसक़हतेहैं और यह वायुमेंउड़ताहै और दूसरे प्रकार को राजल कहते हैं जो कूदतीहै और वसन्त ऋतुमें चरा करतीहै और नरम और श्रेष्ठ ज़मीनकी इच्छारखती है और वहींपर ठहरती है और अपनी दुमसे ज़मीन खोदकर अंडे रखकर छिपाती है और उड़जाती है कि गर्मी और शर्दी और दूसरे प्रकार का दुःख न पहुंचे पर तौभी कुछशर्दी और कुछ कई जानवरोंके कारण नाशहो-जातेहैं जब रबीकी फसल आतीहै टिड्डी उनबाकी अंडों को धरती से निकालकर तोड़ डालतीहै और उसमेंसे बच्चे छोटे २ सोने के टुकड़े की तरह निकलतेहैं और खेती आदिको खाकर पुष्टहोते हैं और उड़जातेहैं तोवह वहांसे और किसी दूसरी ओर मुखकरती है और वहांभी यही हालकरतीहै और अंडे रखती है साहबुलफलाहा कहतेहैं कि जब इससमूहको देखें कि किसगांवकी ओर ध्यानकिया वहांके रहने वालोंको उचितहै कि अपनेको छिपारक्खें और कोई बाहर न निकले जो टिड्डियां वहां किसीको न देखेंगी वहां से चली जावेंगी जो एक को भी इन जीवों में पकड़ के जलावें जब उसको

गंध उनकी नाकमेंपहुंचेगी तुरन्त सब मरजायेंगी या भाग जायेंगी (गुण) लंबे पांवकी टिड्डी को चौथिया तपवाले की गर्दन में बांधना उपयोगीहै और बवासीरमें धूनीलेनागुणकरे और जिसका मूत्रबंद होगयाहो उसको गुणदायकहै और इसकी राख नासूरको अच्छा करती है शेख़रईस कहताहै कि इस कीट का लेप करना मस्सों को दूरकरताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३५६

(हरबा) इसको फ़ारसीमेंआफ़ताब परस्त और हिन्दीमें गिरगिट कहतेहैं यहजीव जंगली छिपकलीसे बड़ा होताहै इसका मुख सूर्यकी ओर रहताहै और उसीओर फिरा करता है जबतक कि अस्त न हो इसका असलीरंग खाकीहोताहै फिर सूर्यकी गर्मी से कभीपीला और कभी सब्ज़होजाताहै जैसे एक आयतका मतलबहै किगिरगिट सूर्यकीगर्मीके कारणकभी पीला और कभी सब्ज और कभीसुर्खीलियेहोजाताहै और यहअपनामुख सूर्यके साम्हने रखता है जिस २ ओर सूर्य फिरता हैउस २ तरफ यहभी फिरता है और इसीकारण इसकानाम आफ़ताब परस्त अर्थात् सूर्य पूजक रक्खा गया निदान इसका रंग बदला करता है जब किसीको देखताहै कि उसका उद्योग करता है तो तुरन्त अपने शरीरको विस्तीर्ण करता है कि भयखाय और कुछ उसको इससे हानि नहीं होती कहते हैं कि जो उसकोधरतीमेंगाड़के उसकीखाल गांव या खेतमें किसीऊंची जगहपर लटकावें वहांपर शर्दी या टिड्डीकीआफ़त न आवेगी और जो इसको तीन दिनतक आगके नीचेगाड़े फिर मिर्गीवाले के गले में बाँधे तुरन्त आरामपावे सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर ३५७

(हरक़ूस) यह जानवर छोटा होता है परंतु पिस्सूसे कुछ बड़ा जब इसके पर निकलते हैं तो मानो इसकी मौत का संदेशा आता है इसकाकाटना पिस्सूसे अधिक दुखदायीहै कहते हैं कि यहजानवर बहुधा स्त्रियोंको काटताहै जिस तरह कि च्यूंटी पुरुषों के लिंग

को काटती है एक गँवारकी स्त्रीकीयोनिमें जब हरक़ूसनेकाटा उस समय उसने अपनेपतिकोपुकारा और कहा कि ऐमेरेपति ध्यानकर हरक़ूस ने मेरे ऐसे स्थान पर काटा कि संसार का आनन्द मुझसे जाता रहा सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर ३७८

(हलज़ून) हिन्दीमें शंख कहते हैं यह वह कीड़ा है जोपत्थर के भीतर उपजाता है और दरिया और नहरोंके किनारे मिलता है यह कीड़ा पत्थरके पेटमें सीपीकी तरहपर निकलताहै और अपने हाथों को उठाता है और दहिने बायें जाताहै और भोजन ढूंढ़ताहै तो जो तरी और नर्मी देखता है अपनेको विस्तीर्ण करता है जो कठोरता देखताहै अपने को समेटताहै और उसके पेटमें चला जाताहै और हरदुखदायीसे डरताहै जोकोई देखनेवाला उसकोदेखै तो समझता है कि एक सीपी पड़ीहुई है शेख़रईस का वचनहै कि इसको माथे पर मलें ठलका बन्दहोजाय सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३७९

(हिया) अर्थात् सर्प यह सबजीवधारी और दुखदायी जानवरों में बहुत बुरा और बहुत कठोर होताहै और कम खानेवाला और बड़ी उमरवाला होताहै कहतेहैं कि जीवधारियों में इससे बढ़कर कोई बुरानहीं और न कोई ऐसा विषैलाहै कि जिसका विष आकर्षण करनेवाला बहुतहो और सांपके सिवाय सट्टी खानेवाला कोई जीवधारी नहीं और यह ऐसादुखदायी है कि जिसका मारनाकाबे के स्थान में उचित है हज़रत पैग़म्बर साहब की आज्ञा है कि जो कोई सर्पको मारे भलाइयां पावे अब्बासके पुत्र अब्दुल्लाका वाक्य है कि मेरी समझ में सर्पका मारना नास्तिक के मारनेसभी उत्तम है और जोकि सांपको भागने का हथियार कृपा नहीं हुआ इसलिये ईश्वरने उसको एक ऐसा हथियार दियाहै जिससे उसके शत्रुभागते हैं जैसे कोई सुने कि अमुकस्थानपर सांपहै कभी उधर न जायेगा नहीं तो जो सर्पके दांत न होते तो लोग उसकी रस्सीबनाते और

लड़के खिलौना बनाते कहतेहैं कि जो मनुष्यकाबाल सीधा पानीमें गिरे और दरिया और सूर्य्यके बीच कोई चीज़ न हो तो वही बाल सांप होजाताहै और इसके प्रकार बहुतसेहैं और मनुष्यका शत्रुभी है और इसीसे भागताभीहैतो कोई तो ऐसेहैं कि वह उससमयतक नहींकाटते जबतक किसीका पांव उनपर न पड़े और कोई ऐसेहोतेहैं कि वह नहींकाटतेजबतक कि उनकेअगडे और बच्चेकोकुचल नडालें औरकई ऐसेहैं कि मनुष्यको दुःख नहींदेते कि जबतक उनको दुःख न पहुंचे कई उनमेंसे कालेहोतेहैं जो शत्रुतारखतेहैं और समय ढूंढ़ा करतेहैं बाज़े इनमेंसे सांपकी तरह पर होतेहैं परन्तु सांप नहीं और इनकी श्वासामें काले सर्पोंसे कठोरता होतीहै और यह दुःख नहीं पहुंचाते और न इनमें विष होता है बहुधा और सांप इनको मारडालते हैं कई इनमें से ऐसे होते हैं जिनको मलक कहते हैं इनकी लम्बाई एक बालिश्त या कुछ अधिक होतीहै और इनके शिर पर सपेद रेखा होती है जहां पर यह निकल जावें वहां की तर और सूखी चीज़ जल जाती है जो इन परसे कोई पक्षी उड़े तो गिर पड़े और जो पक्षी इनके निकटहोताहै भागजाताहै जो जीव इनका शब्द सुनले मरजाय और कभी यह जीव अपने शरीर को मोटाकरता है और उससे लहूबहताहै तो जो कोईजीव उसमेंसे खालेताहै मरजाता है अबुलफरहअबीदउल्लाका बचनहै कि इनके तीनप्रकार हैं पहिला प्रकार कि बहुत कठोर और उनका विष तुरन्त मारडालताहै दूसरा प्रकार कि उनका विष उपाय से दूर होसक्ता है तीसरा प्रकार कि उनकीइलाज सुगमहै इसकी विचित्रता यहहै कि जब इसको अपना माराजाना मालूम होजाता है अपने शिरकोशरीर में छिपा लेता है और शरीरका क़िला बनाता है इस विचारसे कि शिरपरचोट न पड़े क्योंकि इसकी जान शिरमें होतीहै सर्पकीहज़ार वर्षकीआयु होतीहै और हरवर्ष केंचुल छोड़ता है और हरबेर एकबिन्दु पीठ पर प्रकट करताहै वही बिन्दु उसकी आयुकी गिन्तीहै जो थोड़ा बिलकेअंदर और थोड़ा बाहर हो और कोई खींचता जाय तो कभी न खिंचेगा

बैलोंकी जोड़ीसे खींचे किन्तु कटजायेगा इसके तीनअंडे पस-
यों की हड्डियोंकेअनुसार होते हैं उनअंडोंपर च्यूंटी और मच्छड़
दि इकट्ठे होतेहैं और बहुधा अंडों को खराब करडालते हैं और
बिच्छू सर्पकोकाटताहै तो सांप नमकपर सोकर आरामपाता
जो नमक न पावे मरजाय बाज़े लोग कहतेहैं कि एक ऐसासर्प
ताहै कि जो उसको लकड़ी से मारे तो वह आदमी तुरन्त मर-
य और हवाज़ की पृथ्वी में एक सर्प होताहै लाल महीन जब
नुष्य को देखताहै उसपर कूदताहै और काटखाता है तो मनुष्य
रन्त मरजाता है अबूजाफ़र कहते हैं कि हमारे देश में एक ऐसा
ांप होताहै जो छोटे २ पक्षियों को एक विचित्ररीति से शिकार
रताहै और वह उपाय यह है कि गर्मीके मौसम में जब दोपहर
ी धूप तेज़होतीहै और मार्ग चलनेवालों से राह खाली होजाती
तो यह दुष्ट अपना सम्पूर्ण शरीर मट्टी में छिपाता है और शिर
ाहर निकाले रहताहै यह मालूमहोताहै कि किसी वृक्ष की जड़
निकलीहुई है तो जब कोईपक्षी गर्मीके ज़ोरसे उसको सूखीलकड़ी
ानकर उसपर आबैठता है यह उसको शिकार करताहै (गुण)
जो इसके दांत कि ज़ीतेहुये उखाड़े गये हों चौथिया तपवाले को
बांधना उपयोगीहै शेखुलरईस का वाक्य है कि इसका मांस बल
अधिक करताहै और इन्द्रियोंको दृढ़करता है और युवावस्था को
बहुत समयतक रखताहै और कोढ़ और बालखोरे को लाभदायक
है जो इसका मांस जलंधर का रोगीखावे आराम पावे बुक़रातका
बचनहै कि इसकामांस खाना कठोररोगों से बचाताहै जो इसकी
चरबीको नमकके साथ बवासीर पर लगावें गुणकरे इसकी केंचुली
जो जीने के समय गिरीहो सिरकेमें पकाकर कुल्लीकरना दांतों की
पीड़ा दूरकरता है जो इसकी खाल को तांबे के बरतन में जलाकर
लगावें हरप्रकार की नेत्रपीड़ा को लाभकरे और सब्ज़ आंख को
काला करताहै लोगों में प्रसिद्धहै कि जो एक खपड़ा उसका खावें
वर्षभर आंखमें पीड़ा न हो और जो दो खालें दोवर्षतक आनंद रहें

यदि गर्भवती स्त्री प्रसूति की पीड़ा में बांधे सुगमता से सन्तानहो इसका शरीर जलाकर उसकी राख का सुरमा लगाना सिल की बीमारी को गुणदायकहैऔर नजलेको भी दूरकरे जालीनूस कहता है कि इसकाशोरवा आंखमेंबल करताहै जो इसका अंडा ओखलीमें पीसकर सपेद कालेदागोंके कोढ़में लगावें गुणकरे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३६०

(खरातीन) यह एककीड़ा लम्बा सुर्ख रंगतर ज़मीनमें होताहै इसको भूनकर कमलवायु वालेको खिलावें आरामहो जो इसको सुखाकर पानीमें भिगोवें और गर्भवती स्त्री को पिलावें सुगमतासे प्रसूतिहो इसकी राखगुल रौगन अर्थात् गुलाब तेलमें मिलाकर लगाना बाल जमादेताहै जो शहदके साथ बालूमें लगावें गलेकी पीड़ाको गुणदायकहै जो उसको लेकर किसीस्त्री की चोटीमें बांधदें इसशर्तपर कि उसे मालूम न हो तो उसस्त्रीका स्वप्नमें वीर्य निकल जायेगा और रातभर शैतान उससे भोग करेगा और जो इसको अकरकरा और फरीफयूनके साथ जैतके तेलमें तलकर लिंगपर मलें मैथुनकी शक्ति अधिकहो सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३६१

(ख़नफसा) यहछोटा कीड़ा काले रंगका गोबरमें उपजताहै इसको हिंदीमें गोबरदरह कहते हैं और इसमें दुर्गंध होतीहै इसको तेलमें तलकर बवासीर पर मलना गुणदायक है जो इसको दो टूक करके उसकी तरीमें सलाई डुबोकर आंखमें लगावें आंखोंकी पीड़ाको लाभकरे और जोकिसी तेलमें तलकर कानमेंडालें कानका भारीपन दूरहो जो इसको ऊंटचारेमें खाय तो यह जानवर उसकी बिष्टामें जीता निकल आताहै जो हिरणके दोनों तरफ़से यहकीड़ा निकलजाय तो हिरण मरजाय इसकीड़ेमें एकप्रकार जालनामी होताहै जो बिष्टाकी गोली बनाकर अपने छिद्रमें लेजाताहै जो इस को कीचड़में डालदें तो नहीं हिलता मानो मुरदा होजाताहै जो गोबरपर डालें तो हिलता रहताहै(कहानी) किसी मनुष्यने इस

पशुको देखा और कहा कि ईश्वरने इसकी उत्पत्तिसे क्याप्रयोजन रक्खाहै कि उसका स्वरूप अच्छाहै या उसकी गंध अच्छीहै सो ईश्वरने उसकेघाव पैदाकिया जिसके इलाजसे अच्छे २ हकीम लाचारहुये सो उसने इलाजकरना बंदकिया एकदिन उसके कानमें वैद्यका शब्द सुनाई दिया उसको बुलवाया लोगोंने आश्चर्यकिया कि इतने बड़े हकीम इसरोग के इलाजसे हारगये इस गलियों के फिरनेवालेसे क्या होगा सोउसवैद्यने उसकोदेखकरकहा कि गोबर दरेको लाओ उसकी राख इस घाव पर छिड़को सो इसी औषधि से वह अच्छा होगया और उस रोगी को पहिली बात याद आई और ईश्वरकी बुद्धिमानीको माना सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर ३६२

(दूदअतफ़श) अर्थात् रेशमका कीड़ा यह छोटा कीड़ा होता है जब चरचुकता है अपने मकानमें जो दरख़्तों और कांटोंमें होता है आकर रहता है और अपनी लारसे महीन २ जाल काढ़ता है और अपने शरीरका उसको पहिनाव बनाता है कि गर्मी और शर्दी और मेह और गर्दसे बचे और एक नियमित समय तक सोताहै प्रकट रहे कि इस कीड़े का घर में रखना अति विचित्र है इसके पालने की यह रीति है कि बहारके प्रारम्भमें कि जब शहतूतके दरख़्त में पत्ते निकलते हैं इसकीड़के बीजको बहुतसा इकट्ठाकरे और कपड़े में लपेट कर स्त्री इसको अपनी छातियों के नीचे रक्खे कि शरीर की गर्मी उस बीजको पहुंचे एक सप्ताहतक ऐसाहीकरे सोउस बीजको किसी चीज़पर छिटकादें और तूतके पत्तोंको मिक़राज़से महीन २ काटकर डालदें सो वह बीज हिलकर उन पत्तोंको खालेंगे फिर एक सप्ताह तक खाना छोड़ देंगे तीन दिनके पीछे फिर सात दिन तक वह पत्तेखायेंगे फिर तीनदिन तक खाना बन्दकरदेंगे इसतरह तीन बेर होताहै चौथीबेर बहुतसाचारादें और इसबेर वह बहुतसा चारा खाते हैं उससमय उनके शरीरपर ऐसी चीज़ प्रकटहोती है जैसेकि मकड़ीका ज़ाला और जो उससमय मेह बरसे तो उनसबको मेहमें

रखदें कि खोल उनका नरमहोजाय सो वहकीड़े उनको छेद करके निकल आते हैं और कभी इनके दोपरभी निकलते हैं परन्तु परोंके कारण वह कीड़े उड़जाते हैं और रेशम नहीं मिलता और जोवर्षा न हो तो उनसबको धूपमेंरखदें कि सब मरजायँ फिर उनकोउठालें रेशम मिलेगा और जितनाबीजको रखनाचाहें धूपमें न रक्खें और पानीसे भिगोदें कि खोल नरम हो और कीड़े उसमें छिद्रकरें और निकलें और अंडेदेवें और उन अंडोंकी रक्षा आनेवाले वर्ष के लिये करें परन्तु उनको मट्टी के बरतन या शीशे में रक्खें रेशम के कपड़े पहिनना खुजलीको गुणकरें और इसमें जूंनहींपड़ती हैं इसी वास्ते मुसल्मानोंके शरह कहनेवाले इसका पहिनना खुजली और जूंवाले के वास्ते उचित जानते हैं सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३६३

(देकुलज़िन) यह छोटासा कीड़ा बहुधा बागोंमें होताहै बलैनास कहताहै कि इसको पुरानी शराब में डालें कि मरजाय फिर निकालकर मट्टीके बरतनमें रक्खें और शिरबन्द करके गाड़दें उस घरमें फिर दीमक न होगी और उसकी आफत से मकान की लकड़ियां बचीरहेंगी सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३६४

(मगस) अर्थात् मक्खी यह दुर्गंधसे उत्पन्न होतीहै कोई कहते हैं कि चारपायों की बिष्टा से उपजतीहै ईश्वर ने इसके पलक नहीं बनाये क्योंकि इसकी आंख छोटी हैं और पलकका गुण यहहै कि आंखकी स्याहीको गर्द आदिसे बचाये रक्खे सो इसीकारण मक्खी सदा अपने दोनों हाथसे आंखोंको साफ़किया करतीहै और उसके एक शूंड़ भी होतीहै कि जबलहू चूसना चाहतीहै तब बाहरनिकालतीहै जब उसकापेटभरजाताहै तो मुंह के अन्दर करलेतीहै बाज़ी मक्खी ऐसीहै कि भिन भिन्नातीहै और इससे एक शब्द निकलताहै जिसतरह कि नरसुलसे आवाज़ निकलती है और चलनहीं सक्ती क्योंकि उसके जोड़ नहीं होते परन्तु च्यूंटी और जूंकि इनके पांव

इतने कठोर होते हैं कि जो यह किसी बराबर ज़मीन के घाव पर गिरते हैं नहीं हटते और सदा मच्छड़ का शिकार करती हैं और इसकारण दिनमें मच्छड़ नहीं निकलता और रातको निकलता है जब कि मक्खी नहीं होती जाहिज़कहता है जो मक्खी मच्छड़ को न खाती तो हर एक मकान के कोने में मच्छड़ों की अधिकता हो जाती जब किसी जीवधारीके कोई घाव होताहै तुरन्त मक्खी उस पर बैठतीहै और वह बैठना उसकी मृत्युका कारण होता है परन्तु जो घाव ऐसी जगह परहो जहां उस जीवधारीका मुंह पहुंचताहै तो उसको चाटकर अच्छा करताहै और मक्खी का बैठना घावपर इसकारण मृत्युका कारणहै कि मक्खी जहां बैठती है वहां परबीट करतीहै और उसकी बीटसेकीड़े पैदाहोते हैं कहते हैं कि जो मक्खी सपेदी पर बीटकरे वहचीज़ तुरन्त काली होजाय जो कालेपर हगे वहसपेद होजाय क्योंकि मक्खीकी विष्ठा दोरंगकी होतीहै कालेको सपेद और सपेदको काला करतीहै जैसे कि गौरय्या पक्षीकी विष्ठा भी उससे विरुद्ध रंगपैदा करती है (गुण) जो इसका शिर काटकर जहां पर भिड़ने काटाहो मलदें पीड़ा दूरहो कहते हैं कि जोमक्खीके शिरको पकड़के एक सिरा शिरके बालका उसके पैरसे बांधें और दूसरा सिरा उसबालका आंखकी पीड़ा वाले के बांधें बहुत गुणकरे इसीतरह जो मक्खी को कपड़ेमें बांधकर आंख की पीड़ा के वास्ते बांधें लाभकरे जो इसको जलाकर शहदमें मिलाकर लगावें गंजेके बाल निकलआवें जो इसको सुखाकर सुरमेमें मिलाकर लगावें आंख में फ़ायदाकरे और आंखकी ज्योति बढ़ावे पलकें उगावे जो स्त्री यह सुरमा लगावे सुन्दर मालूम हो जो इसको भून कर खावें पथरी को उपयोगी है जो इसको दूधमें कजली करके बिच्छूके काटेहुये घाव पर लगावें पीड़ा शांतहो पैग़म्बर साहब का वचनहै कि जब मक्खी तुम्हारे खाने या पानी पीने में गिरे तो उसको निकाल कर खाना आदि खालो क्योंकि उसके एक परमें बीमारी और दूसरे परमेंदवा है इसप्रकारकी कई जाति होतीहैं एकप्रकारको गधेकी मक्खी और

एकको कुत्तेकी मक्खी और एक को शेरकी मक्खी बोलते हैं क्योंकि यह मक्खियां मुख्यकरके इन्हीं पशुओंपर बैठती हैं और जब इनके घाव पड़जाता है तो यह मक्खी उनसे अलग नहीं होतीं यहां तक कि वह पशु मरजाता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३६५

(ज़रहर्ज) यहकीड़े छोटे २ लाल काले रंगों से चित्रित होते हैं इनको फ़ारसी में कोजख़ार कहते हैं यह जीव बिषेला होता है जो कोई इसको पानीमें पीजाय उसके फुक्नेमें घाव पड़जाय और मूत्र बंद और आंख अंधीहोजाय और लिंग और पेडूपर सूजन आजाय इन सब दुःखोंके सिवाय उसकी बुद्धिमें भी भ्रमपैदाहो शेख़रईस कहताहै कि जिसपानीमें यह गिरताहै उसका स्वाद गोंद और गंधक के सदृश होजाता है यह पशु सुगंध से मरजाताहै और ऐसा लाल कीड़ा चौथिया तपवालेको बांधना रोग शांत करता है और जोयह जानवर क़बरिस्तानमें होता है उसके लगानेसे झाईं दूर होती हैं और मट्टीमें रहता है जो उसको तेलमें कई घड़ी डालदें कि रेज़ा २ होजाय तो उस तेलको उन हथियारोंपर मलें जिनसे अंगूर छांटते हैं तो उस वृक्षमें कीड़ा नलगेगा और न कोई जानवर उसके फल को खराब करेगा शेख़रईस का बचन है कि इसका सिरके के साथ मलना लंगड़े और फालिजवाले और छीपके रोगी और काले सपेद दागवाले कुष्टीको बहुत जल्दी गुणकरनेवाला है जो उसको इस्पंद के साथ महीन पीसें और बालखोरे पर लेपकरें बाल जमआवें जो सरत्वानके फोड़ेपर लगावें गलादेता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३६६

(रतीला) इसको फ़ारसीमें दीलमक कहतेहैं शेख़रईसका बचन है कि दीलमक मकड़ी की तरह पर होता है जिसको अरबवाले फ़हदभी कहते हैं इनमेंसे बहुत बुरासिसरीहै शिर और पेट इसका बड़ा होता है जिसको काटे बड़ी पीड़ाहोतीहै और नींद नहींआती है और रंग पीला होजाता है और बहुधा ऐसा होता है कि जिसको

काटे उसका लिंगखड़ा होजाताहै और विना इच्छा वीर्य निकलता है और दीलमक काटेहुये को वहुत जोरकी शिरपीड़ा पैदा होती है और उसीसे मरजाता है हकीमोंने इसकी चिकित्सा यह नियतकी है कि जो मनुष्यकी विष्ठा निचोड़कर पिये और उस काटे हुये जोड़ को तन्दूरमें लटकाये उससे पसीना टपके तो निश्चयहै कि आराम होजाय सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर ३६७

(जंबूर) भिड़ शहदकी मक्खीकेसदृश होताहै सर्दीमें अपने घर से नहीं निकलता और सम वायु में बाहर निकलता है और मक्खी को शिकार करता है जो कोई उसके छत्तेको छेड़े सब भिड़ें इकट्ठी होकर उसे डंक मारती हैं जब यह जानवर तेल में गिरता है मुरदे की सूरत होजाताहै जो फिर उसको तेलमें से निकालकर सिरके में डालदें हिलने लगता है क़तामी कहता है कि यहबात न जानीगई कि भिड़ किससे घर बनाती है हां इतना मालूम होता है कि वह कागज़की तरह होता है और यह जानवर सर्दीमें गरम जगह चला जाता है और वहां मुरदेकी तरह पड़ा रहता है और सर्दीके वास्ते कोई खानेकेलिये भोजन इकट्ठा नहींकरता परन्तु चींटी इकट्ठाकरती है और यह मक्खी सर्दीकी अधिकता और न खानेसे सूखीलकड़ी की तरह सूखजाता है जब बहारआती है उससमय ईश्वर उससूखी हुई लकड़ीमें जीव दौड़ाताहै कि नये सिरसे जीकर बाहर निकलता है और अपने छत्तेको बनाताहै और अंडे देकर पालताहै और जैसे उसके घर बनानेका हाल समझ में नहींआता उसीतरह मकड़ी का घर बनानाभी बुद्धिमें नहीं आता तो सिवाय ईश्वरकी बुद्धिमानीके क्या कहाजाय सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर ३६८

(सामअबरस) यह एक प्रकार का कीड़ा है छोटा लंबी पूंछ करके उमरका बेटा यहय्या कहताहै कि इसका मारना सौगुलामके छुड़ानेके बराबर है और यह पुण्य इसकारण है कि यह वहुत बुरा

होता है यह सांपका बिष पीताहै और लोगोंके बरतनोंमें डालता है तो मनुष्यको उसविषसे बड़ा दुःख पहुंचता है यह जानवर उस घरमें नहींजाता जहां केसर होता है जो इसको चौथिया तपवाले को बांधें गुणदायक है यह जानवर जहां नमक को पाता है उसमें लोटजाता है तो जो कोई उस नमक को खाता है काले और सपेद दागोंके कुष्ठमें पड़जाताहै जो इसको मारकर सांपकी बांबीमें डाल दें सब सांप वहांसे निकलभागेंगे जोउसके दोखंड करके ऐसी जगह पर बांधें जहां कांटा या गांसी गड़गईहो तो वह निकल जाय यदि मस्सोंपर इसका लेप करें दूर होजाय जो इसको सुखा कर तेलके साथ गंजमें लगावें बाल निकल आयें इसका मांस बिच्छूके घाव पर लगाना उपयोगी है॥

तसवीर नम्बर ३६६

(सलहफात) अर्थात् कछुआ यह जानवर धरती और पानी दोनोंका होताहै इसको फ़ारसीमें कशफ कहतेहैं जब खेती या बाग़ में पाला पड़ने का भय होता है लोग इसको लेकर उलटा लटका देते हैं फिर पालेकी हानिनहीं पहुंचती जो बड़े कछुवे खुश्की वाले को लेवें और उसके पेटकी सबचीज़ोंको बाहर निकालें और उसमें मिर्गीवाले लड़केको बिठादें आराम पावे अरस्तातालीस ने अपनी किताबुल हैवानमें लिखाहै कि मैंने पहाड़ी कछुवोंको देखा कि उन के दोनों हाथ कुत्तेकी तरह परथे और दोनोंहाथ हाथीकी तरह और शिर सांपकासा जोइनमेंसे एकभी दरियाकी ओर जाताथा तो और कछुवेभी उसकेसाथ जातेथे और जो एकपानी पीताथा तो और उस की ओर देखते थे सो देखनेहीसे उसकीप्यास दूरहोजातीथी इससे मुझे बड़ा आश्चर्यहुआ और जोहम उनको न देखते निश्चय न करते जो इसकी खालको जंगली जानवरकी खालके साथ बराबर रक्खें वह खाल फटजावे अब खुश्की वाले कछुवे का हम वर्णन करते हैं जो कोई जोड़ मनुष्य का पीड़ा करे और उसके सदृश कोई जोड़ कछुवे का लेकर उसपर बांधें पीड़ा दूरहोजाय परन्तु दाहनादाहने

पर और बायां बायें पर इसका पित्ता मिर्गीवाले की नाक में टप-
काना गुणदायक है यदि गलेको उससे भिगोवें गलेकी पीड़ा दूर
होजाय जो इसके लहू का धुवां देवें मिर्गीवाले को लाभकरे और
डंकदार जानवरके घावको फायदाकरे जो इसकी खाल को देगका
सरपोशबनावें तो उबाल न आयेगा चाहेकितनी बहुत आगदे इसका
पित्तापांवकी हड्डीकी पीड़ा पर बांधना पीड़ा दूर करता है इसका
अंडा खाना लड़कों की खांसी को गुणदायक है और मिर्गी और
पांवकी हड्डीकी पीड़ा और कूलंजको बहुतउपयोगीहै सूरत यहहै॥

तसबीर नम्बर ३७०

(सरर) पतंगाहै जिसको अरबनक्त वरदान कहतेहैं शेख़रईस
कहता है कि यह जानवर सम्पूर्ण बवासीर और दुखदायी जान-
वरोंकेघावोंको लाभकारकहै जो इसकोजलाकरपीसकर औरउसमें
सुरमेका पत्थर मिलाकर आंखमें लगावें आंखकी ज्योतिअधिक
करे जो गायके पित्तके साथ सुरमा लगावें नाखना दूरहोजाय॥

तसबीर नम्बर ३७१

(ज़ाजा) एक प्रकारका पशुहै जिसके शरीरकी लंबाई की
प्रशंसानहीं करसक्के जिसने नहींदेखा वह निश्चय न करेगा कहते
हैं कि मक्केकी ज़मीनमें होताहै और कोस भरके गिर्दमें अपनाघर
बनाताहै इसका स्वभाव यहहै कि जोपशुकी दृष्टि इसपर पड़े वह
तुरन्त मरजाय या इसकी दृष्टि किसी जानवरपर पड़जाय तो वह
जानवर तुरन्त मरजाय जोकि इस पृथ्वीके पशुओंने इसकी परीक्षा
कीहै इसलिये जब इसके साम्हनेसे जाते हैं और अपनी आंखेंबंद
करलेतेहैं सूरत उसकी यहहै॥

तसबीर नम्बर ३७२

(ज़ब) जिसको सूसमार और हिंदीमें गोहकहतेहैं यहपशुबुद्धि-
मान् होताहै कि और अपनाघर सिवाय सख़्त ज़मीनके और कहीं
नहीं बनाता कि चारपायोंके सुमसे दुःख न पहुंचे और ऊंचे स्थान
पर रहताहै किसीलन पहुंचे और किसी पहाड़या बड़े वृक्ष या बड़े

पत्थर के निकट घर बनाताहै कि उसके निशान से अपने घरको पहिंचानले क्योंकि इसजीवमें भूलबहुतहोतीहै बहुधा ऐसाहोताहै कि भूलके कारण दूसरे जीवके मकानमें चला जाताहै और उसका शिकार होजाताहै इसका अंडा कबूतरके अंडेके बराबर होताहै और अंडा रखने के लिये पृथ्वीपर घोंसला शुतरमुर्गकी तरह बनाता है और एकबेरमें अस्सी अंडे देताहै और ज़मीनमें गाड़कर चालीस दिन छोड़ देताहै चालीस दिनके पीछे देखताहै कि सब बच्चे अंडोंसे निकलकर दौड़ रहेहैं उससमय उनमेंसे जितने चाहताहै खालेता है और बाक़ी भागजाते हैं जाहिज़ का बचन है कि जब सूसमार अपने बच्चोंको खाना चाहताहै अपने मकान में तंगजगहपर खड़ा होताहै और सब राहें अपने दोनों हाथ से बंद करलेता है और फिर खानेलगता है कि कोई भाग न जाय और पेटभरने के पीछे कुछ बच्चे बचते हैं नहीं तो सब खाजाताहै एक कविका बचन है जिसके यह अर्थ हैं कि गोहके बच्चों की तरह मैंने भी सब तेरे बच्चों को खालिया और कुछ थोड़ों को छोड़दिया जब बिच्छू इसको डंक मारताहै एकप्रकार की घास जिसको अज़नुलफार कहते हैं खाकर आराम पाताहै बहार की मौसममें उत्तम वायु से आनंद पाता है इसकी रीति है कि जब मनुष्यको देखता है तो उसके पैरोंके बीच में आकर काटखाता हैजहां सूजन बहुत होजाती है अरबवालों का वाक्य है कि गोहके मार्ग से मतजाओ क्योंकि वह तेरे पांव काटखायेगी और तू राहसे न चलसकेगा (गुण) यदि सूसमार को शराब में मिलाकर बवासीर पर मलें दूर होजाय जो कोई इसका दिलखाय उन्माद रोग दूरहो जो कोई इसका कलेजा खाले कलेजेका दर्द दूरहो जो इसका लहू चनेके आटेमें मिलाकर उबटनकरे छीपको नष्टकरे और जो कचलोन के साथमलें झाईंको लाभ करे जिसका बदन चोटसे फटगयाहो या घाव होगयाहो उसको इसके मांसका शोरवाखाना लाभकरे और आंखकी ज्योति और वीर्यको बढ़ाताहै और जोकोई खावे मुद्दततक प्यासा न हो

इसके पीठकी हड्डी जिसके पासहो उसको भोगकी शक्ति अधिक हो इसका अंडकोष पास रखना नौकरोंकी दृष्टिमें प्रतिष्ठित करता है जिस घोड़ेकी हड्डी के गर्दन में इसके पांव की हड्डी को बांधे कोई घोड़ा उससे तेज़ न भागेगा जो इसकी खाल तलवार के कब्जेमें बांधें साहस प्राप्तहो जो इसकी खालमें शहद रक्खें और वह शहदकोई चाटे मैथुन की इच्छा अधिकहो और लिंगमें खड़ेहोनेकी शक्ति आये इसकी बिष्ठा सपेद कालेदागके कोढ़ और झाईंपर लगाना गुणदायकहै जो इसका सुरमा बनावें आंखकी सपेदी और पानीके गिरने को लाभकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३०३

(तरबान) यहछोटासा जानवर बिल्लीके बराबर दुर्गंधि युत होताहै इसकी दुर्गंधिके बराबर संसारमें कोई चीज़ नहीं जो इस की गंध ऊंटोंकी नाकमें जावे फैलजायँ और यह जानवर जिस कपड़ेपर अपशब्दकरे चाहे उसे पचासबार धुलावें गंधदूर न हो जबदो मनुष्योंके बीचमें कोई अपशब्द करताहै तोअरबके निवासी यह दृष्टांत कहतेहैं कि इनदोनों के बीच तरबान की गंध आती है यह जानवर सूसमारका शत्रुहै सदा उसको ढूंढ़ा करताहै और सू-समार अपने बिलको बहुत कठोर और मज़बूत बनाताहै क्योंकि तरबान बहुतही ढूंढ़ताहै जाहिज़ का वचनहै कि जबतरबान सूस-मारको खाना चाहताहै तो उसके छिद्रमें जाताहै और अपने वास्ते कोई तंगजगह ढूंढ़ताहै जिसमें अपनेको छिपा लेताहै और एक अपशब्द करताहै तो सम्पूर्ण स्थानमें उसकी गंधफैल जातीहै तो उसगंधसे सूसमार अपने बच्चों समेत निर्बल और दुःखी होजाताहै और दूसरे अपशब्दमें मूर्च्छित और तीसरेमें वह सब मरजाते हैं उससमय तरबान उनसबको खालेताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३०४

(अज़ाया) यह जानवर गिरगिटकी ज़ातिसेहै और बहुतही इसकी सूरत उससे मिलतीहै यह जानवर धीरेसे चलताहै और

बहुत चौकन्ना होता है कहते हैं कि जो इसको कपड़े में लपेटकर चौथिया तपवाले के बांधे तप जातीरहे इस जानवरका एक प्रकार किरानदेशमें होताहै लालरंग मानो सुर्ख़ याकूत मालूमहोताहै उस की दोनों आंखोंमें एकदरख़्तसा मालूमहोताहै इसका स्वभाव यहहै कि जो यहभोजनके वस्त्र परजावे और उसके किसी खाने में विष मिलाहुआहो तो उसकी आंखोंसे आंसू जारीहोंगे इसीकारण इस जानवरको भेंटकी रीतिपर बादशाहों के पास लेजातेहैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३७५

(अक़रब) अर्थात् बिच्छू यह सम्पूर्ण कीड़े मकोड़ोंमें बड़ा दुष्ट है जिसचीज़ को पाताहै उसपर डंक मारताहै इसके आठ पांवहोते-हैं और आंखें इसकी पेटमें होतीहैं और इसका बच्चा पीठसे निक-लताहै और जबपैदा होताहै तो मां उसकी मरजाती है और जब किसीको डंकमारताहै तुरन्त वहांसे भागजाताहै पहिलीरात अपने घरसे निकलताहै जिस जीव या निर्जीवको पाताहै डंकमारता है जाहिज़ लिखताहै कि सबीहके पुत्र खाक़ानने मुझसे कहा कि मैंने अपने घरमें एकशब्द पानीकी ठिलियाके पाससुना तो मैंने उठकर जो देखा तो बिच्छू ठिलियापर डंकमारताहै तो मैंने उसको मार-डाला फिर क्या देखा कि जिसजगह बिच्छू ने डंकमाराथा वहां छिद्र होगयाहै और पानी जारीहै बिच्छू सर्पको देखतेही डंकमारता है उससमय सर्प उसको ढूंढ़ताहै जो पाजाताहै तो खालेता है और अच्छा होजाताहै जो नहीं पाता तो मरजाता है मानो सर्पके लिये इसके विषकी औषधि इसीका मांसहै बाज़े हकीमोंने एक मनुष्यको सुना कि वह कहता था कि अमुक मनुष्य बिच्छूकी तरहपर है कि हानिके सिवायलाभ नहीं करता सो एक बुद्धिमान् वैद्यने उत्तरदिया कितू निर्बुद्धिहै क्योंकि बिच्छूभी लाभदायक है जबइसका पेटफाड़कर इसके डंकके घावपर रक्खें तो बिषदूरहोजाताहै जो बिच्छूको मिट्टी केबरतनमें रखकर सरपोशसे बंदकरके तन्दूरमेंरक्खें और जब वह जलकर मट्टीहोजायउससमय वह राख तीन रत्तीके अनुमान पथरी

व लेकाखिलावेंपथरीकोखंड२होवे यदि बिच्छू उसमनुष्यकोजिसको बहुतदिनसे तपआतीहो काटे तपनष्टहोजाय जो इसीतरह फालिज वालेको काटे फालिज दूरहो यदि बिच्छूको जलावें और घरमेंधूनी दें वहां कोई बिच्छू न रहेगा किन्तु सब मरजायेंगे यदिबड़े बिच्छू को पकड़कर सुखाकर सपेद कालेदाग के कोढ़पर लगावें दूर हों इसको राखतेलमें मिलाकर जिसजगह लगावें बाल फिर वहां न निकलेंगे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३०६

(अन्कबूत) अर्थात् मकड़ी इसको फारसी में देवपा कहते हैं यह जीव कई प्रकार का होता है इसमें विचित्र लम्बी टाँगवाला होताहै यह जीव शिकार से दीन होता है इसी वास्ते यह अपना घर जालकी तरह अपने मुख की लार से बनाता है जब चाहता है कि जाला तय्यार करे तो ऐसे दो स्थान के बीचमें तय्यार करता है कि जिनमें एक गज़भर की जगह खाली हो या कम जहांतक कि वह अपना जाल दोनों किनारों पर पहुंचासके और अपनाकाम शुरू करता है और अपने मुखकी लारका जो सूतकी तरह परहै अपनी ओर छोड़ताहै कि उससे मिलजावे और दूसरी ओरको दौड़ता है और इसी तरह पर इधर से उधर दौड़ २ कर बनाताहै और दोनोंके मिलनेका विचार रखताहै और अपनी बुनावटको बराबर२अधिक और दृढ़करताजाताहै और गिरह मज़बूत लगाताहै और आपउसके किसीकोनेमें ठहरताहै और उसजाले में शिकारकी राह देखा करताहै तो जबउसजालमें मक्खी या मच्छड़ गिरता है तुरन्त उसको पकड़ताहै इनमें एक प्रकार छोटेपांवकीहै जिसका नासफहदहै यह जब शिकार करना चाहतीहै तो घरके कोने में अपने मुखकी लारसे जाल बनाती है और उस जालमें शिकार पकड़तीहै यह बहुधा अपनी तारको छतोंपरसे शुरू करतीहै और आप उसके द्वारा उतर आतीहै और अपनी श्वासको उस तागेसे लटकाती है जब मक्खी उसके पाससे जातीहै तो वह तुरन्त उधर

जाकर शिकार कर लेतीहै और मज़बूत पकड़ के अपने मकान में लातीहै इसका तीसरा प्रकार लेसनामी है जिसकी छः आंखें होती हैं जब मक्खी को देखती है अपनाको धरतीमें चिपकातीहै और सब जोड़ ठहरातीहै फिर मक्खी पर कूदती है बहुधा यह चूकती नहीं चौथा प्रकार रतीला होताहै यह सर्व प्रकारों में बुरी होती है जो आदमी परसे जावे आदमी मरजावे और यह दुःख उसकीलार से पहुंचताहै न डंकसे इसका वर्णन पूर्व होचुका है इसको अक़रबुस्साबान भी कहतेहैं अर्थात् अज़देहका बिच्छू क्योंकि यह अज़देहकी शत्रुहै इनमेंसे पांचवीं प्रकार ऐसी है जो पत्थर या पृथ्वीपर जाला लगातीहै उसमें जोकोई मक्खीआदि आजातीहै तोशिकारकरलेती हैछठीप्रकार अपनाजाला सबसे बारीक बनातीहै और जहां जाल लगातीहै वहांसे चली जातीहै तो जब इसके जालमें मक्खी गिरती है तो घबरा जातीहै फिर मरजातीहै और यह मकड़ी दूरसे देखा करतीहै तोजो भूखी होवीहै तो मक्खीकी तरीको चाटतीहै नहीं तो ख़जानेकी तरह इकट्ठा करतीहै बहुधा सूर्यास्त के समय बहुतसी मक्खियां उसके जालोंमें गिर पड़तीहैं कोई कहतेहैं कि मकड़ी की मादा जाला बनाने का काम जानती है और नर नहींजानता और कइयोंके निकटदोनों मिलतेहैं और बाज़े कहतेहैं कि नर और मादा शागिर्द और उस्तादकी तरह परहैं यदि मकड़ीको काले कपड़े में लपेटकर तप वालेके बांधें दूरहोजाय बलैनासका बचनहै कि इसको घिसकर शराबमें पीना कफके ज्वर वालेको उपयोगीहै इसके जाले को जिस जगह लहू जारीहो लगावें तुरन्त बन्द होजाय जो इसका धुआँ मकानमें करें उस घरसे खटमल जातेरहतेहैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३७७

(फारह) चूहा यह बड़ा छली होताहै यह जानवर पांचपापियों में है जिसका मारना हल और हाममें उचितहै जिस तरह सर्प का हज़रत रसूलने इसके मारडालने पर आज्ञाकीहै क्योंकि यह बड़ा उपद्रवी होताहै बहुधा जलती हुई चिराग़ की बत्ती लेजाता है और

घरको मैभाळ और असबाबको जला देताहै और मनुष्यके उत्तम २ वस्त्र किताब और अन्न और खाने पीनेकी चीजों को खराब करता और बिथराताहै और उनमें बीट करताहै और बहुधा कुयें में गिर कर मरजाताहै और मनुष्यों को उसके साफ़करनेमें दुःख होताहै जब मनुष्य को चीता या बावला कुत्ता काटताहै तब यह जानवर उस मनुष्यको बहुत ढुंढ़ताहै और हर प्रकारके छलसे अपना कार्य करताहै यदि चीतेका घावहै तो उसपर मट्टी डालताहै यदि बावले श्वानका घावहै तो उसपर मूत्र करताहै और इससे मनुष्यकी मृत्यु होतीहै कई लोगोंका बचनहै कि इस पशुको स्मरणनहींहै क्योंकि जबबिल्लीदेखताहै अपनेबिलमें जाछिपताहै और तुरन्त फिरनिकल ताहै और इतनायादनहीं रखता कि बिल्ली छिद्रके दरवाज़ेपर खड़ी है और बाज कहते हैं कि इसके स्मरण शक्ति होने को क्योंकर कहसक्ते हैं क्योंकि यह अपने भोजन के विचारसे संग्रह करता है और बहुधा आनन्द के पदार्थों में उपाय करता है इस जीव के विचित्र उपाय होते हैं उनमेंसे एक यह है कि जब कोईतेल शीशे में डालता है तो जब वह तेल ऊपर तक होताहै तो उसको पीता है और जो उसका मुंह छोटा होता है या तेल ऊपर तक नहींहोता तो उसमें अपनी पूछ डालता है और उसको तेलमें डुबोकर निका-लता है और चाटता है यहां तक कि सबतेल पीलेता है कोई चूहा जब अंडा लेजानेको होता है तो अपने पेट के नीचे रखता है और अपने चारों हाथ पांवसे उसको पकड़ताहै और दूसराचूहा उसकी दुमको पकड़कर खींचता है कि वह अपने घर चलाजाय बाज़ चूहे जब चाहते हैं कि अख़रोट लेवें एकचूहा वह अख़रोट उठाकर दूसरे चूहेपर रखता है और वह अपनी दुमको उस अख़रोट पर लिपटा कर अपने सूराख़तक लेजाता है यह जानवर बिच्छूका शत्रु है जो इसको और बिच्छूको एकशीशेमें रक्खें इनदोनोंमें बड़ी लड़ाईहोगी क्योंकि बिच्छू चूहेको डंकमारेगा और चूहा चाहेगा कि इसकीदुम को किसीतरह काटलूं तो जो चूहेकी पकड़में उसकीदुम आजावेगी

तो प्रबलहोगा और जो बिच्छू उसको बहुत डंक मारेगा तो चूहा न जीतेगा जोकोई दो जंगली चूहोंकीदुममें इसतरहपर रस्सीबांधे कि कि एक इसकिनारे और एक उस किनारे पर तो दोनोंके बीचमें लड़ाई शुरूहोगी कि किसी पालू या जंगली जीवधारीमें न देखीगई होगी जब रस्सी खुलजायेगी तो एकदूसरेसे भागजायेंगे एकजाति इनकी आफरीनी नामी होती है यह प्रकार रुपये और असरफ़ी से प्रीति करती है जहां पाये चुराले जाय किसी ने वर्णन किया है कि उसके घरमें एकचूहा था कि उससे मैंने बड़ादुःखपायाथा सो मैंने उसको चूहेदानमें पकड़ा और उसके मारडालनेके विचारमें था कि उसका नर आया और अपनी मादाको क़ैदमें पाकर अपने बिलमें चलागया और वहांसे एक अशर्फ़ी लाकर चूहेदान के पास रखदी और आप राह देखतारहा कि शायद यह मनुष्य उसको छुड़ावेजब मैंने नछोड़ा तो कईबार उसी तरहकी अशर्फ़ी लाया जब उसनेदेखा कि अभी यह मनुष्य मेरी मादाको नहीं छोड़ता उस बेर एकटुकड़ा कपड़ेका लाया निदान मैंने समझा कि अब उसके पास अशर्फ़ियां नहीं रहीं तोउतनीही लेकर मैंने उसको छोड़दिया सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३०८

एकप्रकार इनमेंसे (हिल्द) नामी है ईश्वर ने इनको अंधा पैदा किया यहजाति जंगलों के सिवाय और कहीं नहींहोती परन्तु उन को सुननेकी शक्ति बहुत कृपाहुई है यहां तक कि दूरकी आहटपा- कर अपने बिलमें भागजाता है और घास की जड़ खाता है कहते हैं कि इसकी मादा जब जननेको होतीहै मर जातीहै जोकोई उस के शिकारकी इच्छाकरे उसके बिलमें थोड़ी प्याज़ डालदे जिसकी गन्धसे वहबाहर आवेगा और शिकार करलेवे सूरतउसकीयहहै॥

तसवीर नम्बर ३०६

एक प्रकार इनमें से (क़ारतुलमसक) होती है इसकी उत्पत्ति तिब्बतमें है इसचूहे की नाभिमें मुशक होता है जैसा कि हिरनमें तो शिकारी उसका शिकार करते हैं कि और उसकी नाभिको

बांधतेहैं कि लहू जमजाय और वह कस्तूरी हिरनसे दशगुनी तेज़ होती है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३८०

एकप्रकार इनमें (ज़ातुन्ताक़)है यह प्रसिद्ध चूहाहै इसकाआधा ऊपरका शरीर सपेद होताहै और नीचेकाकाला और इस चूहेको ऐसी स्त्री से उपमा देते हैं जो दो बस्त्र दुरंगेपहिने हो और कमर अपनी बांधे हो और ऊपर के कपड़ेको लटकाये हो सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३८१

और एक प्रकारका उनमें से (क़ारतुलवेश)है बाज़े कहतेहैं कि यह जानवर छोटासा चूहेके सदृश होताहै परन्तु चूहानहींहै बहुधा घासमें रहताहै और उसीको खाताहै यह घासहलाहल विषहै और हिन्दुस्तान की पृथ्वीमें है और उनमें एक प्रकार (यरबूअ़) होतीहै यह जंगली चूहाहै इसके दोबिलहोतेहैं एकको कासआ़कहतेहैं और दूसरेको नाफ़क़ा कहतेहैं और यहअपने मकानमें बहुतसे मकान बनाताहै इसके बिलकीबनावट ऐसीहोतीहै कि नीचे ऊपर दहनेबाँयें जमीनको खोदता है और अपनी जगहको छिपाता है तो जो शत्रु से सूसमार या नेवला इसकाउद्योगकरें तो उसपर प्रबल नहोसकें क्योंकि जब उसको कुछ भी खटका मालूम होता है तो दूसरेमार्ग सेनिकल जाता है इसके मकान में बहुत से दरवाज़े होते हैं और जंगली मूषकोंकाराजा होताहै जब जंगली मूस अपने२बिलसे निकलनाचाहतेहैं तो उनका राजापहिले निकलताहै औरचारों ओरदृष्टि करके जब शत्रुको नहीं देखताहै तो शब्द करताहै और उसके शब्द पर और चूहे निकलतेहैं और जो कोईशत्रु दिखाई देताहै तो तुरन्त छिद्रमें जाछिपताहै और अपने आधीनोंको भी मनाकरताहै नहीं तो सब बाहर निकलतेहैं और उनकाराजा किसीऊंचे टेकड़े पर जाकर बैठताहै और सबकी रक्षा करताहै और आधीनोंसे भोजन मांगता है तोजो कुछ इनके हाथमेवा आदि लगताहै अपने राजा के वास्ते लातेहैं और जब वह राजा किसी शत्रु को देखता है सबको चैतन्य

करताहै कि हर अपने २ बिलमें छिपजातेहैं यदि राजा शत्रुसे बे-खबर होजावे और शत्रुअकस्मात् उनपड़ टूटपड़े और कुछ उनको पकड़ले तो बाक़ी भागजाते हैं और फिर इकट्ठे होकर उस बेखबर राजाको अलग करते हैं वरन उसको मारडालतेहैं और दूसरे को उसका राज्य सौंपतेहैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३८२

इनमें एक प्रकारको (समन्दर) कहते हैं यहभी इसी स्वरूप का है परन्तु मूसनहीं है शौरके शहरोंमें पायाजाता है यह जानवर आग में जानेसे नहीं जलता है अग्निसे जीता जागता निकल आता है किन्तु उसके बदनका मैल जलकर रंगसाफ होजाता है और उसके बाल आदिको कुछभी दुःखनहीं पहुंचता बादशाहोंके भोजनके बस्त्र इसीके होते हैं क्योंकि बहुत नरम होताहै तो जब वह दस्तरख़्वान मैलाहोता है आगमें डालनेसे साफ होजाता है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३८३

कहते हैं कि जोकोई जंगली मूसको पकड़कर उसकी दुम काट डाले या उसको खस्सीकरे और छोड़दे तो वह दूसरे जंगली और घरवाले मूसोंको बहुत दुःखीऔर पीड़ित करेगा और कोई उसपर प्रबल नहोगा यहां तक कि बिल्ली और नेवले उससे हारजातेहैं उस चूहेमें ऐसी बीरता और पुरुषार्थ प्रकट होता है बहुधा खलि-यान वाले इस क्रियाको करते हैं (गुण) जोकोई चूहेके दोखंड करके बांधे गांसी या कांटा जो जोड़में गड़गयाहो निकलजाय जो इसको जलाकर इसकी राख तेलमें मिलाकर गंजमें लगावें बाल निकल आयें अलसीकेकपड़ेमेंबाँधकर बाँधना शिरपीड़ा और मिर्गीकोलाभ कारकहै जो इसकीआंख टोपीमें रक्खें चलनेका दुःख मालूम नहो औरजो किसीजातिमें वह मनुष्यजाय बहुतलोग उसजातिकेउससे बेख़बर होंगे यदि उसटोपी को ज्वरका रोगी पहने तुरन्त आराम पावे जो समन्दरके पत्तेको कोढ़ीपिये आरामहोजावे और समन्दर का लहू लिंगपर लगाना वीर्यबढ़ाताहै और सम्पूर्ण चूहोंके लहूमें

यह प्रभावहै कि आंखके प्रबालको उखेड़कर लगावें फिर कभी प्रबाल न निकलेंगे इसकी चरबी गुलरौग़न में पिघलाकर मलें मुख की झाइयां दूरहोजायँ और जो इसकामांस भूनकर लड़केको खिलावें उसकी लार बहना बन्दहोजाय इसका अण्ड स्त्रीकी रान में बांधना बांझकरदेताहै इसकी दुम मिर्गीवालेके बांधना बहुत गुणकारीहै और शिरपीड़ा में भी उपयोगीहै जो इसकीखाल सुबह को निकालकर घरमें लटकावें सब चूहे भागजावें इसकी बिष्ठा तेल में कजली करके शिरमें मलें बालखोरेकी बीमारी दूरहो यदि इसकी बिष्ठा और प्याज़ कचलोन और लालशक्कर और अशनान बराबर लेकर कूलंजका रोगी शाफाले लाभहोगा इसकीविष्ठा शहदमेंमिलाकरलगाना नाखना जो घोड़ेकोआंखमेंहोताहै बिल्कुलदूरहोगा और इसकाखाना लड़कोंकीपथरीकोभीउपयोगीहैऔर जिसकामूत्र बन्दहोगयाहो उसकोभी लाभकरे कदाचित् मूसकी बिष्टाकासुरमा बनावें आंखकीसपेदी नष्टहो इसकाजूठाखाना भूख बहुत करता है और पैग़म्बर साहबने कहा कि पांचचीज़ें मनुष्यके लिये बिस्मरण की कारण हैं एक उनमेंसे मूसका जूठा खाना है (फ़राश) परवाना अर्थात् पतंगा यह जीव अपनेको दीपकमेंजलाता है कहते हैं कि पहले यह जीव अमूज़ होता है जब पर निकलता है तब परवाना होजाता है अमूज़ एक सुर्ख़ रंगका छोटा कीड़ा बहुधा सागमें होता है इसके आग पर गिरने का यह कारण है कि इसकी आंख बहुत छोटी होती है तो जब रात को चराग देखता है तो उसको यह मालूम होता है कि मैं अंधेरेमेंहूं और चराग को रोशनदान समझता है इस विचारमें अंधेरेसे उस रोशनीकी ओर जाता है जब ज्योति के पास जाता है और गर्मी मालूम होती है तो लौट आता है और यह विचार करता है कि मैं रोशनदान तकनहीं पहुंचा फिर दूसरी बेर उसका उद्योग करता है निदान इसी आवागमनमें जलजाता है खलीफ़ समरकन्दीकी कहावत है कि एकदिन बहुतसे परवाने खलीफा मोतज़िदबिल्लाके साम्हने शमा की रोशनी पर इकट्ठे हुये तो

मैंने इकट्ठा करके सबको गिना तो उनमें उत्तम प्रकारथे (फिसाकिस) अर्थात् खटमल शेखरईसका बचन है कि यहजीव बुरी गंध वाला लकड़ीमें होता है जो इसको सिरकेमें पीसकर पियें जोंक जोकण्ठमें चिमट गईहो उसको बाहर निकालताहै जो इसको हाथसे मलकर सूंघे उदरकी पीड़ाको अति लाभ करें जो इसको घिस कर लिंगके छिद्रमें रखदें तो बन्द पेशाब जारी होजाय जो कोई सात खटमल चौथिया तपके आनेके पहले बाक़लेके साथ निगल जाय गुण करे जो इनको अकेला खाय तो दुःखदायी पशुओंसे बचा रहे (क़मल) अर्थात् जूं यह मनुष्यके पसीने और मैलसे उत्पन्न होती है क्योंकि पसीना मनुष्यके केश या बालों की गर्मीसे सड़ जाता है और यह उससे उपजती है और उसमें अंडेदेती है और उनको ऐसा मज़बूत चिपका देतीहै जो दूरनहीं होसक्के और यह जूं कालेबालों में काली सपेदमें सपेदी सुर्खमें सुर्ख और सपेद काले बालोंमें कुछसपेद और कुछ काली पैदाहोतीहै यदि गर्भवती स्त्री के बच्चे का नर और मादा मालूम करना हो तो उस स्त्री का दूध हथेली में लेकर उसमें इस जानवरको छोड़ें जो वह दूधसे निकल जाय तो गर्भवती के पेटमें बेटी है और इसके विपरीत बेटाहोगा क्योंकि बेटी का दूध पतला होता है और बेटेका गाढ़ा सो जूं पतले दूधसे निकलजाती है और गाढ़ेसेनहीं (क़नफ़ज़) इसे फ़ारसीमें ख़ारपुश्त और हिन्दी में सई कहते हैं इसकी पीठ पर कांटे होते हैं जिनके बीच अपने सम्पूर्ण शरीरको छिपा लेता है और यह जानवर अपने घरमें दो दरवाज़े रखता है एक उत्तरी पवनके साम्हने दूसरा दक्षिणके हवा के साम्हने यह सर्पका शत्रुहोताहै जोसांपकी गर्दन इसके मुख में आजातीहै तो सुगमतासे खाजाता है और जो सांपकीदुम इसकेमुखमें आई तो दुमको मज़बूत पकड़के अपने सम्पूर्ण शरीर को अपने कांटों में छिपा लेता है और उसकी ओर पीठ कर देता है जब सांप उसपर फनमार कर मरजाता है उससमय खालेता है अंगूरके वृक्ष पर भी चढ़जाता है और उसके गुच्छोंको तोड़कर ज़मीनमें गिरा देता है

फिर वृक्षसे उतरकर उन गुच्छों पर लोटता है और उनको अपने कांटोंमें छेदकर बच्चोंके वास्ते घरलेजाता है और एक प्रकार इनमें से बड़ीहोती है वह इस सईसे इस तरह पर है कि जिस तरह भैंस गायसे कहते हैं कि इस तरहकी सई अपनी पीठसे कांटा उखाड़कर शत्रुको मारतीहै और वह कांटा तीरकी तरहपर जाकर उसको मार डालता है और नहीं चूकता (गुण) इसकी बाईं आँख तेल में तल कर कानमें डालना भारीपन दूरकरता है जिस जोड़ के बाल नोच कर इसका पित्ता मलदे कभी वहां बाल न उगेंगे यदि गंधकमिला कर छीपपर लगावें गुण करे इसकी तिल्ली भूनकर तिल्ली की पीड़ा वालेको खिलावें लाभकरे इसकी गुरदा सुखाकर काले चनेकेपानी के साथ कि जिसे उबाल कर छान लिया हो मूत्ररोध के रोगी को पिलावें पेशाब बंद खुलजाय इसका रुधिर बावले कुत्तेके काटे हुये पर लगाना लाभकरे शेखरईस का बचनहै कि इसके मांसमें नमक मिलाकर खाना कोढ़ और पीलपांवको लाभकरे और अधिक उस लड़केको गुणदायकहै जो स्वप्नमें मूत्र करताहो और दुःखदायी पशु कोढ़ ऐंठन सिल और बातकी बीमारी को भी उपयोगी है इसकी खाल जलाकर ज़फ्तके तेलमें मिलाकर बाल खोरेपर मलना गुण करताहै एकप्रकार इनमेंसे दलूक होतीहै जो इसका अंडकोष पका कर शहदके साथपियें बीर्य बहुतही उत्पन्न करता है इसके दाहनी ओरके नखका धुआँ देना चौथिया तपदूर करता है जो इसजानवर को जलाकर उसकी राख नासूरपर लगावें लाभकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३७४

(नवह) एक छोटा सा कीड़ा होताहै जब ऊंटपर बैठताहै उसका बदन सूज जाता है और बहुधा ऊंट मरजाताहै सूरत यहहै॥ र

तसवीर नम्बर ३७५

(नहल) इसे हिन्दीमें शहदकी मक्खी कहते हैं यह जीव अति विचित्र रूप और सुन्दर होताहै इसकी कमर पतली होतीहै औ आधे शरीरसे चौकोण छीलाहुआ होता है और इसका शिर चौड़

और गोल परमेश्वरने इसके शरीरपर चारपर पैदा किये इस जाति में एकराजा भी होता है और उसकी सेवा इस प्रकार की सम्पूर्ण मक्खियां करतीहैं और यह राज्य उसको अपने बाप दादाकी थाती से मिलता है उसको अरबी में यासूब और हिन्दी में रानी मक्खी कहते हैं इनका राजा घरसे बाहर नहीं निकलता क्योंकि जो बाहर निकले तो सम्पूर्ण मक्खियां उसके साथ बाहर निकलें सोसब किया हुआ उनका वृथा जाय जो उनका राजा मरजाय तो सम्पूर्ण मक्खियां शहद बनना छोड़दें और हरएक इसी दुःखसे मरजाय इन का राजा बड़ा होता है दो मक्खीके बराबर और वह मक्खियोंको काम बताता है और हरएक को कार्यपर नियत करता है किसीको घर बनाने और किसीको शहद बनानेमें लगाता और जिसको यह काम करनहींआता उसको अपनेअधिकारसे बाहर करदेताहै और जहां कि शहद बनाया जाता है वहां इनका पहरा खड़ा रहता है कि वह ऐसी मक्खियोंको वहां न जानेदे जो मैलपर बैठती हैं और यह अपने घरों को छः कोनेका बनाती हैं और वह बराबर ऐसेहोते हैं कि बुद्धि उसमें कुंठित है और छःकोने का इसलिये बनाया कि ऐसा स्वरूप किसी तिकोनी चौकोनी पचकोनी और गोल में नहीं तो देखना चाहिये कि ईश्वरने उनको किस्तरहकी बुद्धि कृपा की कि ऐसे बराबर घर बनातीहैं कि जिनके पहलू और किनारे एक दूसरे सेनीचे और ऊंचे नहींहोते यदिकोई बड़ा कारीगरभी मिस्तर और परकारसे बनाना चाहे तो ऐसा बराबर नकरसकेगा यह मक्खियां पतझाड़ और बहार में कार्य करती हैं और हाथ और मुंहके द्वारा दरख़्तोंके पत्ते और कड़ियों की तरी चिकनाई लेकर घरके बनानेमें ख़र्च करती हैं इसके दोनोंहोंठ ऐसे तेज होते हैं कि दरख़्तों के मेवों से उनकी तरी जिसकी पहिचानमें बुद्धिमान आश्चर्य करते हैं जमा करतीहैं और ईश्वरने इनके उदरमें एक ऐसी शक्ति कृपा की है जो उसतरीके समूह को शहद बनादेतीहै कि वह और उसके बच्चे उस से पलें और जो कुछ बच्चों के भोजनसे बचताहै उसको किसी जगह

इकट्ठा करती हैं और उसके मुंहको महीन मोमके परदेसे बंदकरती हैं कि शहद मट्टी घट्टेसे बचारहे और सर्दीके वास्ते इकट्ठा रहे और अपने मकानके कईखानोंमें अंडेदेती है और उनको पालती हैं और कई खानोंका सोने और आराम करनेके वास्ते रखतीहैं जिनदिनों में शहदका कामनहीं करती जैसे कि सर्दी गर्मी और बरसातमें तो उससमय उस संग्रहमें से खर्चकरतीहैं परन्तु अतिसमभाव के साथ यहांतक कि सर्दीकी मौसम जाकर बसन्त ऋतु आती है और यह फिर अपने कार्य को आरम्भ करती हैं यह बात इसको ईश्वर की कृपाकी हुई है तथाच ईश्वर का बचन है कि तेरे ईश्वर ने शहद की मक्खी की ओर आज्ञा भेजी कि तू अपना मकान पहाड़ों दरख़्तों और मकानोंमें बना फिर सब फलोंको खा और ईश्वरकी राहमेंअति दीनतासे चल और मक्खियोंके पेटसे एकचीज़ पीनेको निकलतीहै जिसके कईरंग हैं अर्थात् शहद उसमें लोगोंकेरोग की शान्ति है दूसरी आयतके यह अर्थहैं कि वह परमेश्वरशुद्धहै जिसने मक्खि-योंके भोजनके फोगमें यह प्रभाव दिया कि शरीर की आरोग्यता उससे सम्बंधितहुई और उसकेमैल अर्थात् मोमकेद्वारा अंधेरी रात कीरोशनी सम्बन्धितहुई इसकी एकविचित्रता यहहै कि जब इसके छत्तेके नीचे शहद निकालने के वास्ते धुआँ करते हैं तो यह बात मक्खियां मालूम करके जहां तक होसका है खालेती हैं कहते हैं कि सपेद शहद जवान मक्खी का होता है और पीला अधेड़ म-क्खियोंका और सुर्ख़ बुड्ढियोंका और ईश्वरकी आज्ञानुसार शहद में बड़े गुण हैं तो जिसका स्वभाव गर्महो वह शहदको सिकंजबीन आदिके साथपिये कि उसकी गर्मी कमहो और ठंढे स्वभावको खा-लिस शहद खाना लाभ करता है और इसका स्वभाव यह है कि जो चीज़ देरतक रखछोड़नेसे खराब होजातीहै जोशहदमें उसको रक्खें तोखराब नहोगी जो कस्तूरीमें मिलाकर आंखमें लगावें पानी बहना बन्दहोजाय जो शरीरमें मलें जुयेंसब मरजायँ इसकाखाना बावले कुत्तेके घावको गुणदायक है एक प्रकार का शहद हलाहल

विसहोता है यहांतक कि उसकी गंधसे मनुष्य मूर्च्छित होजाता है और मोम इन मक्खियों के मकान की दीवारें हैं काला मोम उनके घोंसलेका मैलहै कांटेआदिको घावसे निकालताहै जोमोमको कोई साथरक्खे कभी उसे स्वप्नमें वीर्यपातनहो परन्तु चिन्ता और शोक का पैदाकरनेवाला है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३८८

(निमल) अर्थात् च्यूंटी यह जीव भोजनके इकट्ठाकरने में बड़ा लोभी होता है यहां तक कि अपने शरीरसे अधिक बोझ उठाता है और ऐसे समयमें यह जानवर एक दूसरेकी सहायता करता है और इतना खाना इकट्ठा करता है जो जीतारहे बरसोंको पूरा हो और इसकी एक बर्षसे अधिक आयु नहींहोती नस्साबा बकरी कहता है कि च्यूंटियां दो प्रकार की होती हैं एकको आज्वर कहते हैं और दूसरेको अक़वानआज़र आज़र कालेरंगकी और अक़वान लालरंग की होती है और च्यूंटीमें यह विचित्रताहै कि पृथ्वीके नीचे मकान बनाकर उसमें कोठड़ी और दरवाज़े और मकान आदि भी बनाती है और उसमें शीत काल के लिये संग्रह करती है कई मकान ऐसे बनाती है कि उसमेंपानी न पहुंचसके पैगम्बरसाहबकी कहावत है कि च्यूंटियोंको नमारो क्योंकि एक दिन हज़रत सुलेमान निमाज़ पढ़नेकेलिये बाहर निकले एक च्यूंटीको देखा किदोनों पैरोंसे खड़ी हुई हाथोंको उठाये ईश्वरकेलियेयहविनय कररहीहै कि हेपरमेश्वर मैंभी तेरी सृष्टिसेहूं मुझे तेरी कृपासे बेपरवाही नहीं है मुझको अपने अपराधी लोगोंके साथ दंडनदे और बर्षा ऐसी भेज कि वृक्ष फल समेतहों और खेती पैदाहो कि मेरे भोजन का कारण प्रकटहो सो सुलेमानने उस च्यूंटी की विनती को सुनकर अपनेसभ्योंसे कहा फिर चलो अब बर्षाकेलिये निमाज़ पढ़नेकी आवश्यकतानहीं क्योंकि इसकी विनयअंगीकारहुई इसकी विचित्रतामेंसे यहबात भीहै कि चाहे इसका इतना छोटा शरीरहै परन्तुइसको वह घ्राणशक्ति कृपाहुई है कि किसी जीवधारीको यहबलनहीं तो जहां मनुष्य के

हाथसे कोईचीज़ गिरे उसकी गंधपर च्यूंटियां बहुत जल्दी इकट्ठा होती हैं जो आप न उठासके तो औरोंको जल्दी खबरकरकेलेआती है और जो च्यूंटी उसके साम्हनेसे जाती है उसके मुख को सूंघती है कि उस गंधके द्वारा उस चीज़का पतापावे और हर एक समूह को खबर देताहै कि वह समूह उस बस्तुपर इकट्ठा होजाताहै और परिश्रम करता है जो उनको यहमालूम होजाय कि कोई उसके उठाने में आलस्य करता है तो सब च्यूंटियां उसके मार डालने पर मौजूद होजाती हैं और जब कुछदाना अपने घरमें इकट्ठा करलेती हैं और बिलमें तरीहोती है तो डरती हैं कि वहदाना नउगपड़े तो इसविचारसे हरएक दानेको दोखंड करके रखती हैं और धनियें के चार टुकड़े करती हैं क्योंकि धनियाँ दोटूकड़े करके बोया जाता है और जौ और बाक़लेकोछीलकर क्योंकि उसमें उगनेकीशक्ति छिल के उतारनेसे जाती रहती है क्या ईश्वरकी माया इनबातों से सिद्ध है किसी समय उससंग्रहको खराब और सड़जानेके भयसे धूपदेती हैं और बादलको देखकर धूपसे उठाकर उसे संचित स्थानमेंरखती हैं और जोकोई दाना पानीसे भीगजाता है तो जबधूप निकलतीहै उसको सुखालेती हैं इनको विचित्रतासे यहभी है कि जबतक कि कोई बस्तु वृक्ष मनुष्य या अन्य जीव जीता है नहीं छेड़तीं परन्तु जब उसमें हानि पहुंचतीहै तोवहां इकट्ठी होकर उसके मारडालने का कारण होती हैं यहांतक कि जो किसी अज़दहे या सांपके घाव पड़जाय तो उसके शरीर में इकट्ठी होजाती हैं चाहे वह कितना भयानकहो परन्तु जबतक वहजीताहै उससे अलगनहीं होतीं जो च्यूंटियोंको जलाकर धुआँकरें तो सब घरकी च्यूंटियां मरजावेंगी या भागजायेंगी जबइनके पर निकलते हैं तो मरनेका समयनिकट आता है चिड़ियां खालेती हैं अबुलकाहिया कहता है जब च्यूंटी में उड़नेकी शक्ति आती है तोउसकी मृत्यु निकट आजाती है जोइसके अंडेकोई आधा दिरम खायतो उसके उदरसे बिना इच्छा बात सरे जो इसके अंडों को पीसकर जहां पर मलें वहां बाल न उगेंगे जो

इसके अंडे को किसी समूहमें डालदें बिखरजावेंगे (वरल) अर्थात् गोई यह गोहसे छोटा और बिल्ली से बड़ा और कुत्ते से लम्बी पूछ किये छोटे शिरका जल्दी भागनेवाला जीव होताहै और सांप और सूसमारका शत्रुभी होताहै और सर्पका शिर अलग करके खाताहै कोई इस जानवरसे बढ़कर सांपको नहीं मारसक्ता और यह जानवर अपना घरनहीं बनाता वरन जिस सांपकी बांबी में चाहा घुस गया तो वह आपही अपनी जान बचाकर भागजाताहै (गुण) इस केमांस और चरबीको तबक़ातुलनिसा कहते हैं अर्थात् इसकेमांस खानेसे मुख्य करके स्त्रियां पुष्ट होती हैं यदि घाव पर रक्खें गांसी आदि घावसे बाहर निकल आती है इसकी चरबी शक्कर और जौ के आटेमें मिलाकर बकरीके मांस में पकाकर उसका शोरबा पियें बहुत मोटेहों और जो इसको जलाकर इसकी राख तेलमें मिलाकर फुकनेपर लगायें उसकी पीड़ा दूरहो जो इसकी विष्टा को लगावें मुखकी झाईं और मस्सों को दूरकरे और इसका सुरमा आंख की सपेदीको नाश करता है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३८७

अन्य २ स्वरूपों के जीवधारियों का वर्णन

इन जीवोंके स्वरूप नियमित पशुओं के विरुद्ध हैं और उनमें से कइयोंका वर्णन तीन प्रकारोंमें करते हैं (पहली प्रकार) यह अति विचित्र सृष्टि ईश्वरने द्वीपों और पृथ्वीकी ओरोंमें उत्पन्न की है (दूसरी प्रसार) यह वह हैं जो दो प्रकारके पशुओंके मैथुनसे उपजे हैं (तीसरीप्रकार) यह वह हैं जिनकी शकल और सूरत चित्र विचित्र है (प्रथमप्रकार) यह वह हैं जिनको ईश्वरने पृथ्वी की ओरों और द्वीपोंमें उत्पन्न किया है उनमें से याजूज और माजूज हैं यह जाति अधिकतासे है कि सिवाय ईश्वरके इनको कोईनहीं गिनसक्ताइनके ऊपरका आधा धड़ मनुष्योंके सदृश होताहै और इनके दांत जंगली दुःखदायी पशुओंकेसदृश होते हैं और नखकेबदले चुंगल और उन की दुम पर बाल होते हैं और कोई इनमें से नहीं मरता जबतक

कि एक हज़ार सन्तान अपनी पीढ़ीसे नहीं देखलेता सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३८८

उसमेंसे एकजाति (मन्सक)नाम होतेहैं और यह जाति पूर्वकी धरतीमें याजूज माजूजके निकट रहती हैं और यहलोग मनुष्यकी सूरत के होते हैं परन्तु इनके हाथीकी तौरपर कानहोते हैं सोनेके समय एक को चादर के तौरपर बिछाते हैं और दूसरे को ओढ़ते हैं सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३८९

(उसमेंसे) एक जाति है जोसद्दसिकन्दरी के निकट पहाड़ों में रहते हैं इनके डील छोटे और हरएककी लम्बाई पांच बालिश्तकी उन्हींके हाथसे होती है और उनके मुंहचौड़े और बदनकाला और उसपर सपेद और पीले नुक़ते होतेहैं मनुष्योंसे भागकर वृक्षों पर चढ़ जातेहैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३९०

(उसमेंसे) एकजातिहै कि ज़ंगियान द्वीपमें मनुष्यके स्वरूपकी होती है और उनके पर होतेहैं कि उनसे उड़तेहैं और पर उनके सपेद काले पीले रंगके होतेहैं और उनकी बातोंको सिवाय उनके और कोई नहीं समझसक्ता और मनुष्यों की तरहसे खाते पीते हैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३९१

(उसमेंसे) एक नंगीजाति रामी द्वीपमें रहतीहै इनकी लम्बाई चार बालिश्तकी उन्हीं के हाथों से होतीहै और बाल लाल और उनका बचन ढोलके शब्दकी तरह होताहै जिसको सिवाय उन के और कोई समझ नहीं सक्ता और खाना पीना उनका मनुष्यों के सदृश होताहै स्वरूप यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३९२

(उसमेंसे) एकजाति कई ज़ंगियों के द्वीपों में रहती है जिनका डीलडौल एक गज़का होताहै बहुत से उनमें एक आंखके होते हैं अज़ानीक़एकजानवरोंका प्रकारहै हरवर्ष यहजानवर इनके देश में आते हैं और इनसे बड़ी लड़ाई होती है सो वह जानवर इनको

चोंच सेमार एक लोचन करदेतेहैं सूरत और सकलउनकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३६३

(उसमेंसे) एक जाति बोजनी जंगके द्वीपोंमें होतीहैं इनके शिर कुत्तेकी तौर पर और बाक़ी बदन मनुष्य के सदृश होताहै और जंगली मेवे और पुष्टजीवोंको खातेहैं और दुबलेजीवोंको फलखिला कर मोटा करतेहैं फिर बड़ी रुचिसे खातेहैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३६४

(उनमें से) जज़ीरे रंग के कई द्वीपों में एक जाति होती है मनुष्य के स्वरूप कीसी और इनका सुन्दर रूप होता पर पांवमें हड्डी नहीं होती चलनेमें पैर घसिटतेहैं यदि किसी चलने वालेको पातेहैं तो उसको अपने पासबिठलाते हैं और जब वह बैठजाताहै तो कूदकर उसकी गर्दन पर सवारहोते हैं और दोनों अपने पांव उसकी गर्दनमें तस्मेकी तरह लपेटते हैं कदाचित् वह मनुष्य उसे अलग करनाचाहताहै तो वह अपने नखसे उसके मुखको घायल करते हैं और उसको इच्छानुसार इधर उधर घोड़ेकी तौरपर जिस ओर चाहतेहैं दौड़ाते हैं ॥

तसवीर नम्बर ३६५

(उनमेंसे) एकजात कईद्वीपों में होती है जिनके पर और सूंड़ होतेहैं और महीन २ बाल और कभी दो पैरसे चलतेहैं और कभी हवा पर उड़ते हैं परन्तु मनुष्यसे भागते हैं कई लोग कहते हैं कि यह मनुष्य के प्रकार से हैं और कई जिन्नों की जाति से बताते हैं आगे ईश्वर जाने चित्र यह है ॥

तसवीर नम्बर ३६६

(उनमेंसे) एकजाति लंबेक़द सब्ज़ आंख किये कम उड़नेवाले होतेहैं इनके सिर घोड़ेकी तरह और शेषसम्पूर्ण शरीर मनुष्य का सा सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३६७

उनमें से एक जाति है जिनके दोमुख होतेहैं और शरीरमनुष्य की सदृश और इनके लम्बे २ बाल होतेहैं सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३९८

(उसमेंसे) एकजातिहै जिनके दोशिर और बहुतसेपैरहोतेहैं और उनका शब्द पक्षियों की तरह टुमलुम्बी और शरीर मनुष्यकासा सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ३९९

(उसमेंसे) एक जातिहै जिसके शिरमनुष्यकी तरह और शरीर सर्पका और सर्पही की तरह पृथ्वीपर चलतेहैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ४००

(उसमेंसे) एक जाति चीनकेदरियाके कईद्वीपोंमें होतीहै उनके मुंह और आंखें हृदय पर होतीहैं लिखाहै कि इस जातिसे एकमनुष्य वहांके बादशाह के पास अपनी जातिकी ओर से भेजा हुआ आया था और लोगोंने अपनी आंखों देखाथा सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ४०१

(उसमेंसे) कईद्वीपोंमें एकजाति नसनासनामक होतीहै मनुष्य के रूपकी परन्तु हर एकके आधाशिर और एकहाथ और एक पैर होताहै और यहजातिएकहीपैरसे बहुततेज़ीसेदौड़तीहैसूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ४०२

(उसमेंसे) एकजाति ऐसीहै जिनकामुख मनुष्यकी सूरतपर और पीठकछुवेकी तरह और शिरपर लंबे २ सींगहोते हैं सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ४०३

(दूसरा प्रकार) उनजीवों का वर्णन जो दोअन्य २ पशुओं के भोगसे उत्पन्नहों जैसेखच्चर पर दृष्टिकरो तो उसके जोड़घोड़ और गधेके बीचमें पायेजातेहैं तो जो जुफ़्तीकेसमय गधानरहो तो उसका बच्चा घोड़ेकी शकल होगा और जोघोड़ानरहो तो इसके विरुद्ध और कोई प्रकार इनमेंसे ज़राफ़ा लिखाहै कि नरहुंडार और जंगली ऊंटनीके मैथुनसे एकपशु विचित्र रूपसे उत्पन्न होताहै तो जबवह जंगली गायसे जुफ़्ती करता है तो ज़राफ़ा उत्पन्न होता है सूरत ज़राफ़ेकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ४०४

और कई पशु जंगली घोड़े और गधेसे उपजते हैं इसपुस्तक

का निर्मापक लिखताहै कि मैंने अपनी आंखसे इसपशुको देखाहै इसजानवरकी सूरत अच्छी होतीहै किसरा अरदशेर के पास एक घोड़ाथा जिसको अजदर कहतेथे एकदिन वह भागकर जंगलमें चलागया और वहां एक जंगली गधीसे जुफ़्तीकी उससे संतान बहुत सुंदर उपजी उसको अजदरी कहतेहैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ४०५

(बाज़े) जानवर वहहैं कि ऊंट और ताज़ी घोड़ेसे उत्पन्न होते-हैं अरबवाले उनको बुख़्ती कहतेहैं और यह ऊंटोंके प्रकारमें उत्तम और श्रेष्ठ होतेहैं सूरत उनकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ४०६

(बाज़े) पशु मनुष्य और रीछके मैथुनसे उत्पन्न होतेहैं अजा-यबुलमख़लूक़ात का निर्मापक कहताहै कि मुझसे एकमनुष्यने इस प्रकारके पशुकाहाल यूं बयानकियाहै कि चाहे यहजानवर मनुष्य की सूरतपर होताहै और मनुष्यकी तरह बातभी करता है परन्तु रीछकी तरह शरीर पर बालोंकी अधिकता होतीहै सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ४०७

(कई) पशु भेड़िये और हुंडारसे उत्पन्न होतेहैं जो हुंडार नर हो तो उसके बच्चेको वस्मा कहते हैं और जो भेड़िया नरहुआ तो उसके बच्चेको अयार बोलतेहैं सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ४०८

(कई) पशु भेड़िये और कुत्तेकी जुफ़्तीसे पैदा होतेहैं जिस भेड़ियेको अरबवाले देसमकहतेहैं यह भेड़िया कुतियों के साथ सलूकाकीधरतीपर जो यमनमें है जुफ़्ती खातेहैं और वहां इसप्रकार की एकजाति होतीहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ४०९

(एक) प्रकारके पक्षी पालू और पहाड़ी कबूतरकी संगतिसे उपजतेहैं जिनकोराई कहते हैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ४१०

(तीसराप्रकारविचित्रपशुवोंकावर्णन) वैद्योंका वचनहै कि जब

स्वभाव सीधा होताहै तो सूरतभी सीधी पैदाहोतीहै और ज्योतिषियों का निश्चयहै कि ग्रहके अनुसार स्वरूप होताहै और मीना के पुत्र वहबने लिखाहै कि ऊक़का पुत्र ऊज सम्पूर्ण मनुष्यों में सुन्दर और स्वरूपवान्था जिसकी डीलकी लंबाई और शरीर की पुष्टता वर्णनसे बाहरहै ईश्वरने उसकी आयु इतनी दी कि नूहके समयसे उमरानके पुत्र मूसातक जीताथा और इसमनुष्यने हज़रत नूहसे तूफ़ानके समय विनयकीथी कि मुझकोभी अपनी किश्ती में जगह दीजिये परन्तु उन्होंने इन्कार किया उससमय यह मनुष्य निराशरहा परन्तु कहतेहैं कि तूफ़ान अर्थात् प्रलयके बहाव का जल उसकी कमर तकरहा यहमनुष्य बड़ा अन्यायी और अहंकारीथा खुश्की और तरीमें सबको दुःखदिया करताथा जबबनीइसराईल तेकी धरतीमें इकट्ठे हुयेथे तो यहमनुष्य उनके लश्कर को जोचारकोसके गिर्दमें पड़ाथा जानगया और एक पत्थर इस अनुमानका कि सम्पूर्ण सेना को टुकड़े २ करडाले अपने शिरपर उठाकर लेचला कि उनके शिरपर गिरावे और एकहीबेर सबमरजायँ उससमय ईश्वरकी आज्ञासे एक चिड़ियाने उसपत्थरके ऊपर बैठकर उसमें छिद्रकरदिया सो वह पत्थर हसलेकी तरह औजके गलेमें पड़गया और दोनों हाथभी उसके फँसगये तब परमेश्वर ने हज़रत मूसाको बताया कि तेराशत्रु क़ैदमें है अब उसको दंडदो उससमय मूसाने पहुंचकर उसको छड़ी मारकर मारडाला लिखा है कि उसके दोनों पांवकी पिंडलियां नीलदरियापर पुलकी तरह बहुत समयतक रक्खीरहीं आगे ईश्वरजाने सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ४११

(उसमेंसे) फ़ज़लानरसूलके पुत्र अहमदने लिखा है कि मैंने बलग़ार के बादशाह से पूछा कि मैंने सुना है कि आपके पास कोई मनुष्य अतिविचित्र और बड़ेडीलका है बादशाहने उत्तर दिया कि वह मनुष्य हमारे देशका नहींथा किंतु एकबेर दरिया में बहाव आयाथा वह मनुष्य उसमें बह आयाथा तो जबलोग उसको पकड़

कर हमारे सामने लाय देखा कि वह बारह गज़का लम्बाथा और शिरबड़ी देगके बराबर और नाकउस की हमारे हाथ से अधिक थी और आंखें बड़ी २ और उसकी हर उंगली हमारे हाथकी बराबर थी उससे हमने बहुत बातेंकीं परन्तु वह न बोला और न हमारी बात समझा फिर उसको उसके स्थानपर लेगये और वह एकसमय तक जीता रहा फिर मर गया यह मालूम न हुआ कि वह किस जाति सेथा और कहांसे आया था सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ४१२

(उसमेंसे) मवस्सल के फ़क़ीरोंकी कहानीहै कि मवस्सलके कई पहाड़ों में मनुष्य रहतेहैं एकबेर उस जातिके लड़केको हमने देखा कि उसका डील नौगज़का था और उमर उसकी पन्द्रह वर्षसे कम थी और उसमें इतना बलथा कि हममेंसे बलयुक्त पुरुषको उठाकर अपनी पीठपर लादलेता था सूरत यह है

तसवीर नम्बर४१३

(उसमेंसे) शाफ़ईने कहाहै कि आज हमने यमनके शहरोंमें ऐसा मनुष्य देखा जो कमरसे नीचे स्त्रीके सदृशथा और ऊपरका शरीर उसका दुशाख़ा अलग था दो शिर दो मुंह चार हाथ और दोनों मुखसे खातापीता था और परस्पर लड़ता था और फिर सुलह कर लेता था दो वर्षके उपरान्त जबहम फिर उस स्थान पर गये उस मनुष्यको देखा कि एक शरीर उसका बाक़ी है लोगोंसे हमने पूछा मालूम हुआ कि शरीर उसका ऊपर वाला मरगया था उसको कटवाडाला विचित्रता यहथी कि वह अपने शरीरसे पूर्ववत् अच्छी तरह चलता फिरता था सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ४१४

(उसमेंसे) अबसाद सराने लिखाहै कि अक्तमके पुत्र क़ाज़ी यहयाके पास एकदिन मेरे जानेका संयोग हुआ अकस्मात् मैंनेदेखा कि उसके पहलूमें एक पिंजड़ा रक्खाहै और उसमें एकजानवर कव्वे की शकलका मनुष्यका मुखकिये बन्द है और उसकी छाती और पीठ पर दो निशान चिन्हों की तरह परहैं तो मैंने क़ाज़ी से पूछा

क़ाज़ीने कहा कि तुम आप उससे पूछोसो मैंने उस पक्षी से पूछा कि तू कौनहै उसने खड़े होकर अति वाचालता पूर्वक कुछ पद्यपढ़े जिनके अर्थ खूब समझमें न आये तो जब वह पढ़ चुका तो तुरन्त चिल्लाने लगा और अपनेको पिंजड़े में गिरादिया तो मैंने कहा कि ऐक़ाज़ी यह पक्षी प्रेमी मालूम होताहै क़ाज़ी ने उत्तर दिया कि जो तुझे मालूमहो परन्तु में इसके भेदको नहीं जानता और उनपद्यों के अर्थ जानताहूं किन्तु खलीफाके पास एक किताब मोहर कीहुई है उसमें इसका हाल पूरा लिखाहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४१५

(उनमेंसे) संजाबके हाकिम अबूरैहान ख्वारज़मी ने मन्सूरुस्सा मानीके पुत्र नूहको एक लोमड़ी भेजी थी जिस के दो पर थे जब मनुष्य उसके निकट जाता था तो दोनों अपने पर बिछादेती थी और जब मनुष्य अलग होजाताथा तो दोनों परोंको अपने पहलूमें चिपका लेतीथी सोअबूरैहान ख्वारज़मीने कहाकियह कुछविचित्रता नहींहै क्योंकि क्यानीके बादशाहों के पास गतसमयमें इससेउत्तम उड़ने वाली लोमड़ियां थीं जो आज्ञा पर उड़तीथीं और फिर चली आतीथीं स्वरूप यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४१६

(उसमेंसे) एक यह भी कहावत है कि खुरासान की पृथ्वी के अन्तर्गत मौज़े गुलाबसाभान में एक स्त्री ऐसा बच्चा जनी जिस के दो शिरथे जैसा किइस समयमें अण्डोंसे बहुधा दो शिर या चार पैर के बच्चे पैदाहुआ करतेहैं बुद्धि मानोंका बचनहै कि यह बात अति विचित्रहै सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४१७

(उनमेंसे) एक कहानी अबूरैहान ख्वारज़मी ने लिखाहै कि कई बाद शाहोंने मन्सूरके पुत्र नूको एक घोड़ा सौगातकी तरहपर भेजा था जिसके शिर पर एक सींग था और यह उस रीतिके विपरीत है जैसा बुद्धि मानों ने लिखा है कि सींग और सुम दोनों सिवाय

गैंड़ेके एक जानवर में नहीं होते परन्तु ईश्वर की कारीगरी और उसकी पैदा कीहुई अद्भुत वस्तु इतनीहैं कि कोई उसको नहीं गिन सक्ता स्वरूप उसका यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४१८

इति ॥

इस पुस्तक को पंडित रामबिहारी व पंडित रामसेवक व पंडित बंदीदीन व पण्डित कृष्णबिहारी ने शुद्धकिया ॥

—※—

नामकिताब

रामायण गीतावली मूल
श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण
कांडकांडभी मिलसक्तीहै
रामचन्द्रिका सटीक
अद्भुत रामायण
रामायण रामबिलास
अध्यात्मरामायण सटीक
रामायण अध्यात्मविचार
बिनयपत्रिका मूल
बिनयपत्रिका सटीक
विजयदोहावली
ब्रजबिलास
ब्रजबिलास सारावली
गर्गसंहिता
अवतारकथाऽमृत
सीतावनबास
श्रीरामव्याहोत्सव
कृष्णबाललीला
नाममाहात्म्य
मिथिलामाहात्म्य
गोकर्णमाहात्म्य
कालिंजरमाहात्म्य
मिश्रितमाहात्म्य
विजयचन्द्रिका
रामकलेवा
अवतारसिद्धि
कृष्णसागर
बिश्रामसागर
प्रेमसागर
भक्तमाल
शनिश्चरकी कथा
बलिचरित्र
कथा श्रीगंगाजी की

नामकिताब

रासलीला
हनूमन्नाटक
चौरासीवार्तिक
शिवबिवाह व वंशावली
सुदामाचरित्र
दुर्योधन नवकांड
बिजयमुक्तावली
शंकरदिग्विजय

भाषापुराण

देवीभागवत भाषा
लिंगपुराण
सुखसागर
गरुड़पुराण
ब्रह्मोत्तरखण्ड
विष्णुपुराण
भविष्यपुराण
स्कन्दपुराण
श्रीवाराहपुराण
शिवपुराण भाषा
शंकरचरितसुधा

वेदान्त

योगवाशिष्ठ भाषा
सांख्यतत्त्वकौमुदी
श्रीभगवद्गीतापंचरत्न
श्रीमद्भगवद्गीता भाषा
टीका सहित
तथा मूलउर्दूटीकासहित
रामगीता
कैवल्यकल्पद्रुम
बीजककबीरदास
पारसभाग
ब्रह्मप्रकाश
ज्ञानतरंग

नामकिताब

आनन्दाऽमृतवर्षिणी
अद्वैतप्रकाश
युगलसम्वाद
सुन्दरविलास
सत्यनामविहारवृन्दावन
समयविहारवृन्दावन

काव्य

नानार्थनवसंग्रहावली
कृष्णप्रिया
छन्दोर्णवपिंगल
रसराज
कविकुलकल्पतरु
सतसई बिहारीलाल
सभाबिलास
तुलसीशब्दार्थप्रकाश
प्रेमरत्न
चित्रचन्द्रिका
पीयूषलहरी
गंगालहरी
यमुनालहरी
जगद्विनोद
भारतीभूषण
रसचन्द्रोदय व रसवृष्टि
अनुरागबर्द्धिनी
नवीनसंग्रह
मनमोहनी
सुन्दरीतिलक
कुण्डलियागिरिधरदास
भुवनेशभूषण
शृंगारलतिका
भुवनेशविलास
शिवसिंहसरोज

नामकिताब

राग

रागप्रकाश
रागसंग्रह
मनमोहन
युगलविलास
लावनी बनारसी
शृंगारबत्तीसी
भजनमाला
श्रीकृष्णलीलावली
नवरत्नभाष्य
वीणाप्रकाश
बंशीलीला
प्रेमाऽमृतसार
सांगीतप्रह्लाद
बारहमासा बलदेवप्रसाद
बारहमासा अलाबख्श
बारहमासी कृष्णचन्द्र
सूरसागर

क़िस्से

बैतालपच्चीसी
सिंहासनबत्तीसी
पद्मावतीखण्ड
शुकबहत्तरी
सौदागरलीला
बकावलीसुमन
क़िस्साचहारदरवेश
क़िस्साहातमताई
अपूर्वकथा
क़िस्सेगुलसनोबर
शहसूरजनीचरित्र
राबिंसन्क्रूसोकाइतिहास
पद्मावत भाषा

नामकिताब

मसनवीमीरहसन
मनोहरकहानी
दास्तानअमीरहमज़ा
क़िस्सा औरत और मर्द
मोतीबिनोलेकाझगड़ा
सोनेलोहेका झगड़ा
सोनेस्त्रीकाझगड़ा
मनमौजचरित्र

वैद्यक

निघण्टभाषा
अमरविनोद
वैद्यजीवन
औषधसंग्रहकल्पवल्ली
अमृतसागर बड़ा
तथा छोटा
वैद्यमनोत्सव
इलाजुलगुरबा
वैद्यप्रिया
कवितरंग
दिल्लगनवैद्यक
रसमंजूषा

ज्योतिषभाषा

जातकचन्द्रिका
जातकालंकार
दैवज्ञाभरण
रमलसार
रमलनवरत्न
इन्द्रजाल
ज्ञानस्वरोदय
पत्रा सं० १९४३
ज्योतिस्सारावली

अन्य उत्तम पुस्तकें

ज्ञानमाला

नामकिताब

गोपीचन्दभरथरी
भरथरीचरित्र
भरथरीगीत
गुरुसुमिरण
काशीभजनावली
दानलीला व नागलीला
दोहावली, रत्नावली
हनुमान्बाहुकतुलसीकृत
अयोध्याविंशतिका
जनकपच्चीसीहनुमानाष्टक सहित
वनयात्रा
कल्पभाष्य व कल्पसूत्र
विनयप्रकाश
हरिहरसगुणनिर्गुणपदा०
हरिनामरत्नावली
शिवसहस्रनामउर्दूटी०स०
महारामायण
प्रश्नोत्तरी
जलझूलन
हीरशंका
छोधेश्वरमाहात्म्य उर्दू व नागरी
रसायनप्रकाश
व्याजकीपुस्तक
विश्वविनय
विसातिनलीला
शिक्षापत्र
वचनाऽमृत
गुरुउपकारकथा व भजन
विनयप्रकाश

और भी अन्य उत्तम उत्तम पुस्तकें हैं ॥